मुकदमे की कारवाई के विवरण का अनुवाद मैक्स हेवर्ड ने;
रूसी भाषा के अन्य लेखो और पत्रादि का मान्या हारारी
और मैक्स हेवर्ड ने तथा फ्रांसीसी भाषा के लेख और
पत्रादि का मार्जोरी विलियर्स ने किया है।

मुकदमा

सिन्यावस्की (टेरट्ज) और डेनियल (अर्जहक) का

सम्पादक

लियोपोल्ड लाबेड्ज

और

मैक्स हेवर्ड

अनुवादक

विजयश्री भारद्वाज

प्रकाशक

नेशनल एकाडमी

६, अन्सारी मार्केट, दरियागंज, दिल्ली–६

घोषणा

आधुनिक काल मे किसी भी विख्यात मुकदमे का बुद्धिवादी ससार पर उतना गहरा प्रभाव नही पडा, जितना सोवियत लेखको, आन्द्रेय सिन्यावस्की और यूली डेनियल के मुकदमे का पडा है, जिन्हे क्रमशः ७ वर्ष और ५ वर्ष की सजा दी गई। पूर्व और पश्चिम के देशो के बुद्धिवादियो ने जिस प्रकार इस मुकदमे के विरुद्ध विरोध प्रकट किया और इन लेखको को क्षमादान देने का अनुरोध किया, उससे लेखको के अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय की एकता स्पष्ट हो जाती है। यह बात महत्वपूर्ण है कि मुकदमे की कारवाई का पूरा विवरण प्रकाशित हो। केवल मुकदमे की कारवाई ही पर्याप्त नही है, बल्कि मुकदमे और दोनो कैदियो की, व्यक्ति और लेखक के नाते, पृष्ठभूमि को भी प्रकाशित किया जाना चाहिये। इस पुस्तक मे इन लेखको के बारे मे उनके मित्रो की राय और विचार तथा सोवियत अधिकारियो से उनकी पत्नियो और अनेक बुद्धिवादियो ने जो अपील की और जो अब तक अप्रकाशित रही हैं, उन्हे इस पुस्तक मे रखा गया है। ये दस्तावेज़ आतरिक स्वतत्रता, वफादारी और साहस के प्रभावशाली और हृदयस्पर्शी उदाहरण है।

जब तक सिन्यावस्की और डेनियल जेल मे है, उनके मामले को समाप्त नही समझा जा सकता। उनके दुर्भाग्य के प्रति ससार भर के बुद्धिवादी अत्यधिक चिंचित हैं और वे निरन्तर इन लेखको को क्षमादान दिलाने पर इस आशा से जोर देते रहेगे कि कभी न कभी विवेक की विजय होगी और इन दोनो लेखको को रिहा कर दिया जायेगा।

गुन्टर ग्रास
ग्राहम ग्रीन
फ्रैंकोई मोरिया
आर्थर मिलर
इगनाज़ियो साइलोन

विषय सूची

प्रकाशक इस पुस्तक मे दिये गये चित्रो के लिये श्रीमती ज़ामोयस्का का आभारी है ।

प्राक्कथन

क्रीटो : क्या तुमने यह भी नही सुना कि इस मुकदमे की कारवाई किस तरह हुई ?
इचेक्रेट्स : हा, किसी ने मुझे, इसके बारे मे बताया था......

अफलातून, दि लास्ट डेज आफ सोक्रेटीज

इस बात मे जरा भी सदेह नही है कि सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे को विख्यात मुकदमो के इतिहास मे स्थान मिलेगा।

जिस समय यह मुकदमा संसार भर के समाचारपत्रो के आकर्षण का केन्द्र बना था, उसकी तुलना मे आज इसके महत्व को कही बेहतर ढग से देखा-समझा जा सकता है। इस मुकदमे की सुनवाई मास्को मे १० और १४ फरवरी, १९६६ के बीच हुई। सुनवाई के समय किसी भी सामान्य व्यक्ति को या विदेशी प्रेक्षक को मौजूद रहने की अनुमति नही थी और मुकदमे के दौरान जो बयान हुए तथा अदालत के कमरे मे जो नाटक हुआ, उसके कुछ अंश ही बाहरी दुनिया को प्राप्त हो सके। इस पुस्तक मे मुकदमे की कारवाई का कही अधिक विस्तृत विवरण दिया गया है और इस प्रकार इस मुकदमे के कही अधिक पूर्ण मूल्याकन को संभव बनाया गया है।

मुकदमे सम्बन्धी कागजपत्रो से यह प्रकट होता है कि सिन्यावस्की और डेनियल का मुकदमा इस प्रकार चला कि ससार के इतिहास मे विचार और अभिव्यक्ति की स्वतत्रता के शत्रुतापूर्ण उत्पीड़न के मामलो से इसकी तुलना करना अनिवार्य है। अन्य उल्लेखनीय विश्व विख्यात मुकदमो मे, सुकरात पर चलाया गया मुकदमा, जियोर्डानो ब्रूनो को मृत्यु दण्ड, गैलिलियो पर ईसाई धर्म की मान्यताओ के विरुद्ध आचरण करने के लिए चलाया गया मुकदमा, वाल्टेयर का "ल' अफेयर केलस" और टेनेसी का "मकी ट्रायल" शामिल है।

इस मुकदमे से सम्बन्धित दस्तावेजो से यह भी प्रकट होता है कि ससार के प्राय प्रत्येक देश मे इन दो लेखको के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई और स्वयं उनके देश मे भी ऐसा हुआ; यद्यपि इसे रूस मे प्रकट कर पाना बडा कठिन था। लेकिन जब इन दोनो लेखको ने, मुकदमे के दौरान, नैतिक आधार पर अपने विचारो को सही बताने और अपनी बात पर डटे रहने का साहस दिखाया, उस समय उन्हे इस तथ्य की बिल्कुल जानकारी नही थी कि उन्हे इतना व्यापक समर्थन और सहानुभूति प्राप्त है (क्योकि उन्हे गिरफ्तारी के समय से ही तनहाई मे रखा गया था)। पर वे यह जानते थे कि यह रवैया अपनाने से उन्हे कही अधिक कड़ा दण्ड मिल सकता है।

यह बात सच है कि अपनी साहित्यिक गतिविधियो के कारण उनके समक्ष मृत्यु दण्ड का भय नहीं था, जिस प्रकार सुकरात को एक दार्शनिक के रूप मे अपनी गतिविधियो के कारण इस भय का सामना करना पडा था, लेकिन अन्य दृष्टियो से इन लेखको का मुकदमा कही अधिक कठोर था। सुकरात को एथेन्स के नागरिको की ५०० सदस्यो वाली जूरी को प्रभावित करने का सच्चा अवसर प्राप्त था और यदि ३० और सदस्य उनके पक्ष मे मतदान करते तो उन्हे मुक्त कर दिया जाता। यद्यपि सुकरात के मामले मे भी न्याय की हत्या हुई, लेकिन कम-से-कम यह मुकदमा खुले रूप से और उस समय लागू कानूनो के अन्तर्गत ही चलाया गया। सम्भवत. मास्को के इस मुकदमे मे कानून के हनन का सर्वोत्तम उदाहरण न्यायाधीश स्मिरनोव का वह कथन है जिसमे उन्होने बडे क्रोध से सिन्यावस्की की, अपनी पुस्तक "दि ट्रायल बिगिन्स" मे, खुफिया पुलिस द्वारा लोगो के घरो के भीतर बातचीत सुनने के लिये लगाये गये गुप्त यन्त्रो का उल्लेख करने के लिये, कडी भर्त्सना की। न्यायाधीश ने कहा

"यह बात धारा ७० के अन्तर्गत आती है और यह बदनामी करने का मामला है। क्या तुम्हारी इन बातो मे हमारी जाति, हमारे समाज और हमारी प्रणाली की निन्दा नही होती ?"

लेकिन इसके बावजूद माननीय न्यायाधीश महोदय के मन मे उस समय कोई शका नहीं उठी, जब उन्होने सिन्यावस्की की एक बातचीत की टेप मुकदमे मे प्रमाण के रूप मे सुनाने की अनुमति दी और सिन्यावस्की की इस बातचीत को उनके फ्लैट मे गुप्त रूप से लगे यन्त्रो की सहायता से ही रिकार्ड किया गया था।

एक दृष्टि से इन दो लेखको और सुकरात के मुकदमे मे समानता है। दोनो मामलो मे अदालत के पूर्वाग्रहो ने उसे अभियुक्तो के स्पष्टीकरणो का मूल्यांकन करने से रोका और एक मामले मे यह स्पष्टीकरण रचनाओ के साहित्यिक पक्ष और दूसरे मामले मे दार्शनिक पक्ष को समझाते हुए दिया गया था। लेकिन इन दोनो मामलो मे यह हुआ कि प्रतिवादियो के तर्कों का पूर्वाग्रहग्रस्त अदालत पर कोई असर न हो सका।

अपने मुकदमे का फैसला सुन कर—अफलातून के अनुसार—सुकरात ने कहा : "मेरे तर्कों की प्रभावशालिता मे कमी के कारण मुझे दण्डित नही किया गया, बल्कि इस कारण से मुझे यह दण्ड दिया गया है कि मैने आप को (जूरी के सदस्यों को) उस रूप मे सम्बोधित करने से इनकार किया, जिस रूप मे आप अपना सम्बोधन चाहते थे।" २४ शताब्दी बाद सिन्यावस्की ने भी इसी शिकायत को प्रतिध्वनित किया : "इस्तगासे के तर्कों को सुनकर मन मे यह भाव उत्पन्न होता है कि आप एक खाली दीवार के सामने खड़े हैं और जिस पर आप जितना चाहें सिर पटकें पर कोई असर नहीं होता और जिसे पार कर आप किसी प्रकार भी न्याय तक नहीं पहुंच सकते।" डेनियल ने भी यही बात कही : "मुझे यह नहीं कहा गया कि 'तुम झूठ बोल रहे हो, यह बात सच नहीं है'—मेरे शब्दो की तो बस इस

प्रकार उपेक्षा की गई, मानो मैंने उन्हे कभी कहा ही न हो···· 'हम जो बाते कहते थे, उनको सुनने से इन्कार करना, हमारे स्पष्टीकरणो पर ज़रा भी कान न देना, इस पूरे मुकदमे की विशिष्टता रही।'

लेकिन सिन्यावस्की और डेनियल का मुकदमा रूस और सोवियत इतिहास के अपने ढांचे और पृष्ठभूमि मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिखाई पडता है।

१९ वी शताब्दी से ही रूस के जीवन मे राजनीतिक मुकदमो का विशेष स्थान और योगदान रहा है। क्रान्तिकारियो ने इन मुकदमो का उपयोग युवको और बुद्धिवादियो को उत्साहित और प्रेरित करने के साधन के रूप मे किया। अदालत के कमरे मे उनका आचरण उनके आदर्शों के प्रति निष्ठा की गहनता का द्योतक होता था। स्तालिन इस परम्परा से अच्छी तरह परिचित थे और उन्होंने अपनी अदालतो मे पोतेमकिन प्रणाली को लागू किया। उन्होने मुकदमों के नाटको को जिस तरह सार्वजनिक रूप से इस्तेमाल किया, जिनमे अभियुक्त अपने अपराधो को स्वीकार करते और इन अपराधो के लिये खेद प्रकट करते, उससे केवल स्तालिन की सर्वोपरि सत्ता को प्रदर्शित करने मे ही सहायता नही मिली, बल्कि इससे रूस के लोगो को एक विचारधारा के माचे मे ढालने और उनकी मनोवृत्ति को शासक वर्ग के अनुकूल बनाने मे भी बहुत सहायता मिली। इसका यह परिणाम हुआ कि अब अधिकारियो के विचित्र से विचित्र दावो को बिना किसी प्रतिवाद के स्वीकार किया जाने लगा, चाहे इनमें वास्तविकता की जड पर ही प्रहार क्यो न किया गया हो। जो लोग यह जानते थे कि "शहशाह ने कपडे नही पहन रखे है" उन्हे केवल चुप ही नही रहना था, बल्कि अपने अन्त.करण मे भी इस [illegible] जानते है। साहित्य के क्षेत्र मे शासक वर्ग द्वारा प्रेरित विचित्र कल्पनाओ को "समाजवादी यथार्थ" के सिद्धान्त के माध्यम से लागू किया गया, जो एक और उपदेशात्मक प्रणाली थी, जिसमे कट्टरपंथी मान्यताओ और अति-यथार्थवादी प्रकृतिवाद का समन्वय किया गया था।

एक सोवियत लेखक के लिये इन बन्धनो को तोडना उतना आसान नही है जितना एन्डरसन की कहानी के उस निर्बोध बालक के लिये था, जिस ने कहा कि "शहशाह ने कपडे नही पहन रखे हैं।" बाह्य रूप से उसे उन्ही बाधाओं का सामना करना पडता है और उन्ही दुखद परिणामो को भोगना पडता है, जो उन सब लोगो को सच कहने के लिये भोगने पडे, जिन्होंने तत्कालीन मान्य विचारधाराओ को चुनौती देते हुए अपने विचार प्रकट किये। जैसा कि वॉलटेयर ने डीडेरोट को (२६ जून १७५८ को) लिखते हुए कहा . "यह वस्तुतः बहुत दुखद बात है कि हम दर्शन और यहा तक कि इतिहास के बारे मे भी कोई सच्ची बात नही कह सकते······हमे झूठ बोलने के लिये बाध्य किया जाता है और इसके बाद भी हमे इसलिये सताया जाता है कि हमने पर्याप्त झूठ नही बोला।" लेकिन आन्तरिक रूप से आज समस्या कही अधिक जटिल है, क्योंकि आज समूहवादी विचार नियत्रण के गहरे मनोवैज्ञानिक परिणामो और "वन्दी मनो" के सास्कृतिक अलगाव का भय कही गहरा और व्यापक है।

अपनी जाति और अपने देश से गद्दारी करने के अभियोग लगाये जाने का जो भयकर भय सामने रहता है, उसके कारण लेखकों के लिए इस समस्या का परोक्ष रूप से सामना करना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आसान होता है। यह भी स्वाभाविक है कि जो सोवियत लेखक सच्चाई मे दिलचस्पी रखते हैं, उन्हें सबसे पहले अनिवार्य संकल्पनाओं और कड़ाई से लागू सैद्धांतिकता के चंगुल से छुटकारा पाने के तरीके निकालने होंगे। सिन्यावस्की ने अपनी कलात्मक मान्यताओं की परिभाषा देते हुए कहा कि यह एक ऐसा प्रश्न है कि "मिथ्या और सच्चाई से दूर तथा कल्पना पर आधारित बातों की सहायता से किस प्रकार सच्चाई के रास्ते पर चला जा सकता है।" उनके लिये अति काल्पनिक की अभिव्यक्ति का अधिकार उस कारवाई की पहली शर्त है, जिसके माध्यम से उस विकृत एकरूपता की प्रतिक्रिया को समाप्त किया जा सकता है, जिसे शहंशाह ने अपने दरबारियो और प्रजाजनो पर और एक स्थापित व्यवस्था ने "सोवियत प्राणी और सोवियत लेखक" पर थोपा।

स्तालिन की मृत्यु के समय से और विशेष रूप से ख्रुश्चेव के "गुप्त भाषण" के समय से इस अनिवार्य अतियथार्थवादी एकरूपता की यन्त्रवत् संचालित प्रणाली मे विशृंखलता आने लगी थी। अपना अपराध स्वीकार करने से इनकार कर यन्त्रचालित पुतलों की तरह नही, बल्कि सामान्य लोगो की तरह आचरण कर गढ़े-गढ़ाये सूत्रों के स्थान पर सच्चे विचार और भाव प्रकट कर, उनसे जिन परम्परागत मिथ्या बातो की आशा की जाती थी उसके स्थान पर अपने विवेक के अनुसार सच बोल कर, सिन्यावस्की और डेनियल ने वस्तुत. इस "अनिवार्य और अतियथार्थवादी एकरूपता" के कृत्रिम स्वरूप को प्रकट कर ... ... ——— मे जो आचरण किया, उससे इससे पहले चलाये जाने वाले 'मास्को के मुकदमों' की जादू भरी शक्ति सामाप्त हो गई। उन्होंने यह दर्शा दिया कि— वर्षों के एक सिद्धांत और विचारधारा के साँचे मे ढालने के प्रयासो और मनोवैज्ञानिक अभियानों के बावजूद—विवेचनात्मक बौद्धिकता, विचारो की स्वतंत्रता और इन विचारो को प्रकट करने का साहस आज भी जीवित है। इन लेखको की नियति का केवल रूस के साहित्य जगत के "उदारतावादियों" और 'कट्टरपंथियो' के बीच संघर्ष पर ही नही, बल्कि सोवियत संघ के व्यापक आन्तरिक विकास पर भी असर पड़ेगा।

—लियोपोल्ड लाबेद्ज

१. कदम की पृष्ठ भूमि

प्रस्तावना

मैक्स हेवर्ड

दो सोवियत लेखकों आन्द्रेय सिन्यावस्की और यूली डेनियल ('एब्राम टेरट्ज' और 'निकोलाई अर्जेक') पर फरवरी १९६६ मे चलाया गया मुकदमा, कुछ दृष्टियो से केवल रूस के ही नहीं, बल्कि विश्व साहित्य के इतिहास मे अपूर्व है। इस मुकदमे ने सोवियत बुद्धिवादियो को, सन् १९५६ मे सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की २० वी बैठक मे, स्तालिन के अत्याचारो के बारे मे दी गई जानकारी के बाद अत्यधिक भयकरता से झकझोर दिया।

इस पुस्तक मे, अदालत की कारवाई की प्राय पूरी रिपोर्ट दी गई है और मुकदमे से सम्बन्धित अनेक दस्तावेज और मुकदमे के परिणामो का भी विवरण दिया गया है। इसमे से अधिकाश सामग्री पश्चिम के देशो मे अप्रकट माध्यमो से पहुची और सोवियत समाचार-पत्रो मे प्रकाशित कुछ बातो को छोड कर, इसमे से कुछ भी सोवियत सघ मे प्रकाशित नही हुआ।

लिये, उद्धरण के पहले कुछ शब्द या जिस सम्बन्ध मे ये उद्धरण दिये गये उसका संक्षिप्त विवरण उपलब्ध होने के कारण इन्हे ढूढा जा सका।)

अन्य दस्तावेजो मे, जो मास्को के बुद्धिवादियो के बीच व्यापक रूप से प्रचारित हुए, दोनों प्रतिवादियो की पत्नियो के पत्र, मुकदमे की सुनवाई से पहले समाचारपत्रो में प्रतिवादियो पर किये गये प्रहारो के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन, प्रतिवादियो की ओर से गवाही के रूप में पेश किये गये कागजपत्र और कुछ खुली चिट्ठियां, जिन मे इन दोनो लेखको को दी गई सजाओं के प्रति विरोध प्रकट किया गया, शामिल हैं। इनमे एक प्रतिवादी, डेनियल, द्वारा समाचार-पत्र इजवेस्तिया को कठोर श्रम शिविर से लिखा गया पत्र भी शामिल है। मुकदमे की कार-वाई के दौरान, डेनियल ने आशिक रूप से अपना जो दोष स्वीकार किया था, यह पत्र उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप था। अन्त मे, मास्को विश्वविद्यालय के कुछ सदस्यो की एक टोली ने सफाई पक्ष के एकमात्र गवाह को, गवाही देने के लिये सताने के प्रयासो के प्रति विरोध प्रकट करते हुए जो पत्र लिखा वह मुकदमे के परिणामों और वातावरण पर प्रकाश डालता है।

इस प्रस्तावना का उद्देश्य इन दो लेखको के साहित्य के बारे मे अधिक से अधिक जानकारी देना है, जिससे मुकदमे की कारवाई को पाठक बेहतर ढग से समझ सकें और इस प्रस्तावना मे सिन्यावस्की और डेनियल के 'मामले' की पूरी रूप-रेखा प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया गया है।

प्रतिवादी और उनका साहित्य

दोनो प्रतिवादियो का जन्म १९२५ मे हुआ। आंद्रेय दोनातोविच सिन्यावस्की रूसी है। उनकी पत्नी कला इतिहासकार है और उनका एक दो वर्षीय पुत्र है। यूली मार्कोविच डेनि-यल रूसी यहूदी है और यिद्दिश कहानीकार मार्क डेनियल-मीरोविच के पुत्र हैं, जिनकी मृत्यु १९४० मे हुई। यूली डेनियल भी विवाहित हैं और उनका एक १५ वर्षीय पुत्र है। जैसा कि मुकदमे की कारवाई के विवरण से स्पष्ट होता है, डेनियल दूसरे महायुद्ध के दौरान सेना मे काम कर चुके है, जिसके अन्त मे उन्हे भयंकर रूप से घायल होने के कारण सैनिक सेवा के लिये नाकरा घोषित कर, पेन्शन देकर, रिटायर कर दिया गया। युद्ध के दौरान सिन्या-वस्की का क्या योगदान रहा, उस सम्बन्ध मे पर्याप्त जानकारी नही है—यद्यपि न्यायाधीश ने परोक्ष रूप से यह कहा (देखिए मुकद्दमे के दूसरे दिन का विवरण) कि युद्ध के दौरान सिन्या-वस्की का समय अपेक्षाकृत आराम से बीता, लेकिन उन्होने सेना मे काम तो किया ही, कम-से-कम युद्ध के अन्तिम दिनो मे, और हेलेन पेल्लियर-जामोयस्का की साक्षी के अनुसार. "यद्यपि अपनी कम उम्र के कारण वे युद्ध मे बहुत कम समय ही हिस्सा ले सके, लेकिन यह उनका पहला अवसर था, जब वे रूस के सामान्य लोगो के सम्पर्क मे आये और उनके मन मे उन सीधे-सादे, गैर-बुद्धिवादी लोगो के प्रति, एकता और भाईचारे का भाव जगा, जिनके साथ उन्हे युद्ध के दौरान रहने और काम करने का मौका मिला।"[1]

१—ल मोद, १७ अप्रैल, १९६६

युद्ध के बाद के वर्षों मे, जब सिन्यावस्की मास्को विश्वविद्यालय के भाषा-विज्ञान संकाय के विद्यार्थी थे, उनका मदाम जामोयस्का से पहली बार परिचय हुआ, जिनके पिता उस समय मास्को स्थित फ्रांसीसी दूतावास के नौसैनिक सहचारी थे। मदाम जामोयस्का उन दो-तीन विदेशियो मे थीं, जिन्हे उन वर्षो मे, मास्को विश्वविद्यालय मे अध्ययन की अनुमति मिल सकी थी और वे ही अपनी बाद की रूस यात्राओ के दौरान, जिनका समारम्भ १६५६ में हुआ, 'एब्राम टेरट्ज' की पहली रचनाएं रूस से बाहर लाईं और विदेश में उनके प्रकाशन की व्यवस्था की

सिन्यावस्की ने 'कैंडीडेट आफ फाइलोलाजिकल साइंसेज' (जो प्राय. डाक्टर की उपाधि के समकक्ष मानी जाती है) कि डिग्री प्राप्त की और अपनी गिरफ्तारी के समय तक, पिछले कुछ वर्षों से वे मास्को मे गोर्की विश्व साहित्य सस्था में अनुसधान फेलो के रूप मे काम कर रहे थे। सिन्यावस्की का साहित्य अध्ययन असाधारण रूप से गहन और व्यापक है और उनकी कला के इतिहास मे विशेष रुचि है। मास्को के बुद्धिवादियों मे उनकी एक शिक्षक, विद्वान और समालोचक के रूप मे पर्याप्त प्रतिष्ठा है। उनकी एक महत्वपूर्ण रचना क्राति के आरम्भिक वर्षों की कविता का समालोचनात्मक सकलन है (जिसे उन्होने ए. मेनशुतिन के सहयोग से तैयार किया)[२]

फ्रांसीसी विद्वान, माइकेल ओकूतूरियर ने लिखा है[३] कि सिन्यावस्की ने उन्हे एक बार बताया कि उनके लिये 'स्तालिनवाद की समाप्ति के अभियान' का अर्थ अन्य सब बातों से अधिक, उस रचनात्मक शक्ति को उन्मुक्त करना है, जिसे क्राति ने जन्म दिया था। टेरट्ज के नाम से विदेश मे प्रकाशित अपनी पहली रचना मे उन्होंने लिखा: 'क्राति का स्वरूप उन लोगो के लिये, जिन्होने इसमे भाग लिया और उनके लिये भी जिनका जन्म इसके बाद हुआ, उतना पवित्र है, जितना एक मृत माता का होता है।' इस बात मे संदेह नही कि उनके विचार सोवियत शासकों द्वारा प्रचारित मान्यताओ के अनुरूप नहीं हैं, लेकिन उनकी प्रकाशित रचनाओ में ऐसा कुछ भी नही है, जिसके आधार पर उन्हें सोवियत विरोधी या 'क्राति विरोधी' कहा जा सके और इन शब्दो की किसी भी तर्कसंगत परिभाषा के आधार पर. उन पर यह दोषारोपण नही किया जा सकता।

होना स्वाभाविक थी, जिसने स्तालिन के शासनकाल के कार्यों के औचित्य मे, यद्यपि कुछ बुद्धि और अन्तःकरण सम्बन्धी सदेहों के रहते हुए भी विश्वास किया हो। यह अनेक युवक रूसियो के जीवन का एक नया मोड था, जो अब तक स्तालिन के शासनकाल के अत्याचारो को यह कह कर क्षमा करते रहे कि क्रान्ति की सफलता के लिए इनकी आवश्यकता थी।

हाल के वर्षों के अनुभवो के परिणामस्वरूप, सिन्यावस्की ने, अन्य अनेक युवक सोवियत बुद्धिवादियो की तरह मार्क्सवाद को 'अस्तित्ववादी' समस्याओ के सदर्भ मे, अधिकाधिक बेमौजू पाया, जो समस्याए स्वय उनके जीवनकाल की भयकर दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओ के कारण स्पष्ट रूप से सामने आ खडी हुई थीं। मार्क्सवाद मे इस प्रकार विश्वास का अभाव कहना न होगा, १९१७ की रूसी क्रान्ति के स्वीकरण और यहा तक कि उसके प्रति गहरे श्रद्धाभाव और उस 'साम्यवाद' मे सामान्य आस्था के विपरीत नही हैं, जिसकी एक मोटी परिभाषा मे कहा गया है कि इसका उद्देश्य पूर्ण नैतिक मूल्यो के ढाचे मे सामाजिक और आर्थिक समानता कायम करना है। मुकदमे के दौरान सिन्यावस्की ने बडे स्पष्ट रूप से अपना विश्वास गैर-मार्क्सवादी साम्यवाद मे प्रकट किया और विशेष रूप से अपनी अन्तिम गवाही मे, जब उन्होने यह कहा कि उन्होने सदा 'एक आदर्शवादी' (दार्शनिक अर्थों मे) की दृष्टि से लिखा है। मार्क्सवाद या भौतिकतावाद को स्वीकार न करना, सोवियत सघ मे अपराध नही है। केवल पार्टी के सदस्यो के लिये ही मार्क्सवाद मे आस्था या केवल मौखिक आस्था प्रकट करना अनिवार्य है। अपने व्यापक दर्शन मे सिन्यावस्की मोटे तौर पर पास्तरनेक जैसे मूल्यो को स्वीकार करते है, उन्होने कभी इन मूल्यो के प्रति अपने लगाव को नही छिपाया और उनका यह लगाव उस समय प्रतीक रूप मे प्रकट हुआ, जब वे (डेनियल सहित) पास्तरनेक की अर्थी को कन्धा देने वालो मे शामिल हुए। अपनी आस्था और विश्वास का, इससे अधिक सार्वजनिक रूप से स्वीकरण, सभव नही था।

अनेक रूसियो के लिये अब उनका नाम वस्तुत. पास्तरनेक के नाम से जुडा हुआ है, क्योकि सिन्यावस्की ने ही सन् १९५६ मे, मास्को मे प्रकाशित पास्तरनेक के एक महत्वपूर्ण कविता सग्रह की लम्बी और विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखी। इस कविता सग्रह का प्रकाशन इस बात पर लम्बी बहस के बाद हुआ कि इसमे किन कविताओ को शामिल किया जा सकता है और किन को नही।[४] इसके बावजूद इस कविता सग्रह मे झिवागो दौर की 'हेमलेट' जैसी महत्वपूर्ण कविता शामिल नही है। लेकिन फिर भी यह सग्रह १९६१ मे प्रकाशित एक और कविता सग्रह से कही अधिक बेहतर और कही अधिक अग्रगामी है, जिसमे पास्तरनेक की कविताओ का बडी कृपणता से चुनाव किया गया था। सिन्यावस्की पहली बार उस समय एक समालोचक के रूप मे सामने आये जब उन्होने साहित्यिक पत्रिका नोवी मीर के मार्च

४—बोरिस पास्तरनेक, स्तिख़ोतवोरेनिया आइ पोएमी, वस्तुपितेलनाया स्तात्या ए० डी० सिन्यावस्कोगो, मास्को—लेनिनग्राद, १९६५

१९६२ के अंक मे १९६१ मे प्रकाशित उक्त कविता सग्रह की समालोचना की। उन्होने कहा कि यह कविता संग्रह पूर्वाग्रहग्रस्त है, और इसमे कवि की प्रतिनिधि रचनाओं को शामिल नही किया गया है और विभिन्न कविताओ का सेंसर किया गया है : 'अनेक स्मरणीय कविताएं इसमें नहीं दी गई हैं, कुछ अन्य को बदल दिया गया है, कुछ कविताओं में तो अन्तिम पंक्तिया हैं ही नही।' इस कविता संग्रह के हाल के संस्करण मे, संभवतः कुछ सीमा तक सिन्यावस्की के प्रयासो के फलस्वरूप, अधिकांश क्षति को पूरा कर लिया गया है और उदाहरण के लिये, पास्तरनेक की ब्लोक सम्बन्धी प्रसिद्ध कविता के पहले पद इसमे दिये गये हैं, जिन्हें १९६१ के संस्करण मे तारा चिन्ह लगा कर छोड दिया गया था। अब ये कविताएं रूस के लेखको को बिना काट छाट के सुलभ हुई है।[५]

सिन्यावस्की ने पास्तरनेक की रचनाओ की जो व्याख्या की है, जिसका पहली बार १९६२ के लेख मे और बाद मे १९६५ की कविता सग्रह की भूमिका मे विस्तार से प्रतिपादन हुआ है, यह सभवतः अब तक किसी भी भाषा मे प्रकाशित व्याख्याओ मे सबसे अधिक परिष्कृत है। ये दोनो लेख, अपूर्व विद्वत्ता और समालोचनात्मक सवेदनशीलता से पास्तरनेक की दुरूह कविता को पाठको के समक्ष अत्यधिक सरल और सुगम रूप से प्रस्तुत करते है। इन लेखों में बताया गया है कि पास्तरनेक किस प्रकार दैनिक जीवन की मामूली गतिविधियो में, गहन, पर मनुष्य को आक्रान्त करने वाले नहीं, काव्य उपदेशो को ढूंढते थे। वे इन्ही उपदेशों को, अव्यवस्थित घटनाओं और सामान्य बातों मे, प्रकृति मे तथा उन अन्य क्रिया कलापो में भी ढूढते थे, जिन्हे मनुष्य अपनी 'ऐतिहासिक' उपलब्धियो की दौड मे, अनिवार्य रूप से सिद्ध मान लेता है। यह दिलचस्प बात है कि सिन्यावस्की ने यह देखा कि अनेक दृष्टियों से पास्तरनेक और राबर्ट फ्रास्ट की कविता मे समानता है, जिन पर उन्होने नोवी मीर (जनवरी १९६४) मे एक कल्पनाशील और विवेचनात्मक लेख लिखा।

सिन्यावस्की ने "प्रभावशाली खुशामदियो" को, जो उस समय भी रूस के साहित्यिक प्रतिष्ठानों के नियामक थे (और सभवत. जिन्होंने मुकदमे की प्रेरणा दी और जिनका प्रयास तथा प्रभाव मुकदमे की पूरी कारवाई पर छाया रहा) केवल पास्तरनेक के मूल्यो के कुशलता पूर्ण समर्थन से ही नहीं, बल्कि इन मूल्यो के स्वाभाविक शत्रुओ से यदाकदा बहस कर क्रुध कर दिया। उदाहरण के लिये, उन्होंने नोवी मीर के दिसम्बर १९६४ के अंक मे एक

५—इन पदों मे पहला पद है

फेवल प्रभावशाली खुशामदी ही जानते हैं कि
समालोचकों को किन का प्रचार करना है
प्रशंसा से और किन की आलोचना करनी है
समाप्त करने की दृष्टि से।

(पोएम्स, १९५५-५६, बोरिस पास्तरनेक, अनुवादक माइकेल हारारी, कोलिन्स एण्ड हारविल प्रैस।)

अकल्पनीय रूप से निन्दात्मक उपन्यास, "दि ब्लाइट" लेखक आइवान शेवतसोव, की आलोचना की। इस उपन्यास मे सन् १९६२ मे मास्को मे एक कला प्रदर्शनी देखने के बाद खु्श्चेव ने अपने जो कुख्यात विचार प्रकट किये थे, इस उपन्यास मे उन्ही को आधार मान कर कलाकारो पर प्रहार किया गया था। यह उपन्यास यद्यपि कुछ देर से अक्तूबर ९६४ मे खु्श्चेव के पतन के आस-पास प्रकाशित हुआ और इस उपन्यास का उद्देश्य उन सोवियत कलाकारो के विरुद्ध व्यापक जनमत भडकाना था, जो "समाजवादी यथार्थ" से "विमुख" हो गये थे।

पहली नजर मे आप, सिन्यावस्की द्वारा इस विशेष रूप से नव स्तालिनवादी और विद्रूपपूर्ण रचना की आलोचना को, सोवियत सघ मे वर्षों से चल रहे "उदारतावादियो" और "कट्टरपथियो" (या अन्य किसी भी नाम से आप इन्हे पुकार सकते हैं) के सघर्ष का एक और प्रहार कह सकते हैं। दोनो गुटो के इस सघर्ष को "सास्कृतिक" सत्ताधारियो ने कानूनी बना दिया है। केवल १९६२ के अन्त और १९६३ के आरम्भ के महीनो को छोड़ कर, जब खश्चेव ने अस्थायी रूप से इन दोनो पक्षो के सतुलन को बिगाड दिया था, शब्दो की यह लडाई पिंगपाग के एक ऊबा देने वाले मैच की तरह निरन्तर चलती रही है। "उदारतावादियो" ने सामान्यत. तर्कसम्मत बाते कह कर, अपने पक्ष का निर्वाह किया है। शेवत्सोव के उपन्यास की अपनी आलोचना मे सिन्यावस्की ने प्रकारातर से कहा कि "उदारतावादियो" का वस्तुत. उन लोगो से पाला पड रहा है, जिनके मस्तिष्क तर्कसगत बातो के लिये बन्द हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि उन से शब्दो की लडाई लडने के स्थान पर उदारता दिखाना कही बेहतर होगा। "सम्भवत., आइवन शेवत्सोव पर प्रहार करने के स्थान पर, उस पर दया करना बेहतर होगा। उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करना अच्छा होगा।… …" अपने "कानूनी रूप से" प्रकाशित अन्तिम लेख मे, जिसमे उन्होने ई० दोलमातोवस्की (नोवी मीर मार्च १९६५) के कविता सग्रह की समालोचना की है, सिन्यावस्की ने "कट्टरपथी" गुट के इस प्रतिनिधि की रचनाओ का क्रोध से नही बल्कि दुख से विवेचन किया है और उनका यह लेख साधारण दर्जे की कविताओ का कुशलता और विद्वतापूर्ण विवेचन है।

विदेश मे प्रकाशित अपने कथा साहित्य और निबन्धो मे–आन सोशलिस्ट रियलिज्म, दि ट्रायल बिगिन्स, दि आइसिकल एण्ड अदर स्टोरीज (फैंटास्टिक स्टोरीज), दि मेकर्पास एक्सपेरीमेंट (ल्यूबीमोव) थाट अनअवेयर (अनगार्डेड थॉट्स) और 'पखेनत्ज'—उन्होंने सोवियत रूस मे अपने वास्तविक नाम से प्रकाशित रचनाओ मे निहित विचार क्रम को एक कदम और आगे बढाया है। उन्होने पिकासो (मास्को मे आइ० गोलोमश्तोक के सहयोग से प्रकाशित)[7] के अध्ययन से आधुनिक कला मे अपनी रुचि को प्रकट किया है और उनके कथा

६—देखिए सदर्भ ग्रन्थो की सूची

७—न्यूयार्क टाइम्स के ४ मई, १९६६ के अक मे प्रकाशित मास्को से प्राप्त एक समाचार के अनुसार गोलोमश्तोक को सिन्यावस्की के विरुद्ध गवाही देने से इन्कार करने पर ६ महीने की सजा सुनाई गई लेकिन इसे स्थगित कर दिया गया।

साहित्य मे अक्सर साहित्य मे अति-यथार्थवादी शिल्प को उतारने का सचेतन प्रयास दिखाई पड़ता है।[8] जहां तक कथावस्तु का प्रश्न है उनकी रचनाओ मे ऐसी अनेक बातें हैं, जिनसे "सही विचारों वाले" सोवियत नागरिको की समवेदनाओं को आघात पहुंच सकता है। उनकी भाषा परम्परा के पीछे नही चलती और वे खुफिया पुलिस जैसे विराट सगठनो की मज़ाक भी उड़ाते हैं। लेकिन उनकी रचनाओ मे, तर्कसगत कानूनी दृष्टि से कोई भी बात विद्रोह या देशद्रोह जैसी नहीं है।

उनके ऊपर जो अभियोग लगाये गये थे उनमे केवल उनकी तीन रचनाओ का ही उल्लेख हुआ है—दि ट्रायल बिगिन्स, आन सोशलिस्ट रियल्ज़िम और ल्यूबिमोव। उनकी फैंटास्टिक स्टोरीज़[9] उनका विचार संग्रह, अनगार्डेड थॉट्स और एक अपूर्ण लेख "ऐसे इन सेल्फ-एनेलाइसिस" उनके घर की तलाशी के दौरान ज़ब्त किये गये, लेकिन ये रचनाए पश्चिम मे उपलब्ध नहीं हैं और उनकी कहानी "पखेनत्ज़" (जिसका प्रकाशन पश्चिम मे पोलिश और अंग्रेजी भाषाओ मे, सिन्यावस्की की गिरफ्तारी के बाद हुआ) का मुकदमे के दौरान उल्लेख किया गया और कभी-कभी इनके उद्धरण इस्तग़ासे की ओर से और स्वयं प्रतिवादी द्वारा प्रस्तुत किये गये। लेकिन जैसा कि एक अवसर पर स्वयं न्यायाधीश ने जोर देते हुए कहा ये रचनाए अभियोग सूची मे शामिल नही थी। हम यहा पहली तीन रचनाओ पर, उनके पश्चिम मे प्रकाशन के तिथि क्रम के अनुसार विचार करेंगे।

आन सोशलिस्ट रियलिज्म (१९५९), सोवियत रूस की सरकार द्वारा प्रचारित और मान्य साहित्यिक सिद्धात का अध्ययन करने का प्रयास है और यह अध्ययन रूसी साहित्य के अतीत और वर्तमान से इसके सम्बन्धो को ध्यान मे रख कर किया गया है। इसमे एक प्रकार से स्वय लेखक की साहित्यिक मान्यता के भी दर्शन होते है। जिसके उदाहरण हैं, उनके बाद के लघु उपन्यास और कहानिया। "समाजवादी यथार्थ" सोवियत सघ मे सन् १९३४ से एक अनिवार्य साहित्यिक सिद्धात रहा है, जब सोवियत लेखको का पहला सम्मेलन हुआ और जब इसको स्वीकार करना, सब सोवियत लेखको के लिए अनिवार्य घोषित किया गया और वस्तुत. यह सोवियत लेखक सघ का सदस्य बनने की पहली शर्त थी।

वस्तुत. सिन्यावस्की के निबन्ध का मुख्य तथ्य यह है कि १९ वी शताब्दी का यथार्थवादी तरीका, समाज के सामाजिक और राजनीतिक लक्ष्यो की दिशा मे उद्देश्यपूर्ण रूप से आगे बढने की दृष्टि से उपयोगी नही है। उन्होने इस निबन्ध मे कहा है कि सोवियत समाज टेलियोलॉजिकल अर्थात् उद्देश्यपूर्ण है (मुकदमे की अभियोग सूची मे इस शब्द को

८—इस का सर्वोत्तम उदाहरण उनकी कहानी "दि आइसिकल" है, जो दि आइसिकल एन्ड अदर स्टोरीज़ मे शामिल है।

९—ल्यूबीमोव के अंग्रेजी भाषा के सस्करण का शीर्षक दि मेकपीस एक्सपैरीमेंट और फैंटास्टिक स्टोरीज का दि आइसिकल एण्ड अदर स्टोरीज है।

थियोलाजिकल अर्थात् "धार्मिक" समझने की गलती की गई और इसी आधार पर सिन्यावस्की पर गलत बयानी का आरोप लगाया गया) । टेलियोलॉजिकल अर्थात् उद्देश्यपूर्ण (यह शब्द ग्रीक भाषा के 'टेलोज"—से बनाया गया है, जिसका अर्थ "उद्देश्य" होता है) का यह अभिप्राय होता है कि व्यक्ति या पूरा समाज किसी एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए सचेतन रूप से प्रयास करे । सिन्यावस्की का तत्सम्बन्धी उद्देश्य से अर्थात् एक साम्यवादी समाज की स्थापना से कोई झगडा नही है । न तो इस निवन्ध मे और न ही मुकदमे के दौरान अपनी गवाही मे उन्होने इस लक्ष्य के प्रति कोई शका प्रकट की है । यद्यपि वे यह कहते है कि यह बात इतिहास के घटनाक्रम से प्रमाणित होती है कि इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये, जो तरीके अपनाये गये उनसे इस की मुश्किल से ही प्रतिष्ठा बढी ।[१०]

वे सबसे अधिक चितित इस बात के प्रति है—और यही उनके निबन्ध का मुख्य विषय है—कि यदि किसी व्यक्ति के सामने कोई उद्देश्य होता है और यदि कोई व्यक्ति एक उद्देश्यपूर्ण समाज मे रहता है, जहा कला और साहित्य अनिवार्य रूप से इस उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक साधन मात्र होते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त विधाओ को ढूढा जाये । १९ वी शताब्दी के रूस का साहित्य अविश्वास, सदेह और गहरे व्यग्य का साहित्य था और महान् यथार्थवादी लेखको (जिनका अनुसरण करने की सोवियत सघ के वर्तमान यथार्थवादियो से आशा की जाती है) के सामने कोई उद्देश्य नही था, वल्कि वे प्रकट रूप से अगम्य आत्मिक प्रश्नो के उत्तर ढूढने के त्रास से ग्रस्त थे और उनके सामाजिक तथा राजनीतिक उद्देश्यो का उल्लेख विशेष आवश्यक नही है । १९ वी शताब्दी के ये रूसी लेखक आत्म-सशय से ग्रस्त थे, अपनी आत्मा को टटोलते थे । और जहा तक उस समाज का सम्बन्ध है, जिसमे वे रहते थे तो यही कहना होगा कि उनके व्यग्य और सदेह गहरे प्रहार करते थे । अत. सिन्यावस्की यह प्रश्न उठाते हैं कि एक ऐसे समाज के साहित्य और कला मे इस शैली का इस्तेमाल कोई कैसे कर सकता है जिस समाज के बारे मे यह समझा जाता हो कि वह निश्चित रूप से यह जानता है कि किस दिशा मे आगे बढ रहा है और जहा आत्म-विवेचन की जरा भी गुजायश नही है और न ही ऐसे आध्यात्मिक प्रश्नो पर विचार की कि महान् उद्देश्य के पूरा हो जाने के बाद क्या होता है ? दूसरे शब्दो मे, उस तरीके के, जिसे अपनाना सोवियत कलाकारो और लेखको के लिए अनिवार्य है तथा उस "सदेश" के जिसे अपनी कृतियो मे उतारने की उनसे आशा की जा सकती है, बीच अन्तर विरोध मौजूद है ।

सिन्यावस्की कहते हैं कि कला को केवल इसी कारण से क्षति नही पहुचती कि उसे

१०—अर्थात् . "इसलिए कि रक्त की एक बूद भी न गिरे, हमें हत्या करते गये, करते गये, करते गये ।" इस वाक्य का और कुछ अन्य वाक्यो का सिन्यावस्की के "सोवियत विरोधी" दृष्टिकोण को "सिद्ध" करने के लिए इस्तगासे की ओर से बार-बार उल्लेख किया गया ।

किसी उद्देश्य के साथ जोड़ दिया गया है। लेकिन असह्य और वस्तुत. घातक बात एक्लेक्टिसिज़म (सार-संग्रहवाद) अथवा उन साधनो को खोज निकालने की असफलता है, जो अन्तिम लक्ष्य की पर्याप्त अभिव्यक्ति मे सहायक बनते हैं। वे इस बात पर खेद प्रकट करते है कि सोवियत युग को, १९३० के बाद के वर्षो मे एक पहले से गढी-गढायी यथार्थवादी शैली को कृत्रिम रूप से थोपने के कारण, उपयुक्त सौंदर्यानुभूति पर आधारित अभिव्यक्ति खोज निकालने मे सफलता नही मिली है—एक शब्द मे यह कहा जा सकता है कि इस युग ने अपनी शैली को जन्म नही दिया है। इसे तो केवल, जैसा कि सिन्यावस्की कहते हैं, एक "भयकर खिचडी" तैयार करने मे ही सफलता मिली है, जिसमे विषय वस्तु का कलात्मक विधा से जरा भी मेल नही बैठता :

"[सोवियत कथा साहित्य के] पात्र प्राय. एक दोस्तोएवस्की की तरह त्रास-ग्रस्त दिखाई पड़ते हैं, वे प्रायः एक चेखव की तरह उदास हो जाते है, प्राय. एक तोलस्तोए की तरह अपने पारिवारिक जीवन की व्यवस्था करते है, लेकिन फिर भी इसके साथ ही वे सोवियत समाचारपत्रो के माध्यम से एक दूसरे से इस बात मे होड करते हैं कि शासको द्वारा मान्य नारो को कौन अधिक तेज़ी से लगाता है . "समस्त ससार मे शान्ति चिरजीवी हो" और "युद्ध-पिपासुओ का नाश हो।" यह न तो प्राचीन परम्परा का निर्वाह है और न ही यथार्थवाद। यह अधकचरी कला का अधूरा, परम्परागत निर्वाह है और यह समाजवादी अर्द्धयथार्थवाद का ही रूप है।"

वे व्यग्यपूर्वक यह निष्कर्ष निकालते है कि यदि समाजवादी युग की कला को किसी अन्य बात का पिछलग्गू होना ही है, तो अच्छा हो कि यह १८ वी शताब्दी मे पीछे जाये और तत्कालीन रूसी राज कवि देरझाविन की पुरानी शैली का अनुसरण करे। देरझाविन अपने काल के रूस के बारे मे अत्यधिक उत्साहपूर्वक और आत्म विश्वास से लिखने मे सक्षम थे और यह एक ऐसी शैली थी जो सदेह से ग्रस्त तथा व्यग्य से भरे १९ वी शताब्दी के यथार्थवादियों के लिये एकदम अजनबी थी। और उन्हे मानव आचरण के अधिक गुह्य पहलुओं से भी कोई वास्ता नहीं था। जैसा कि सिन्यावस्की कहते है, देरझाविन की कविता मे उस समय जब वे कैथेरीन महान् की प्रशंसा मे गीत गाते है, वर्तमान सोवियत कविता के दर्शन होते हैं :

"समाजवादी व्यवस्था की तरह ही १८ वी शताब्दी का रूस भी अपने आप को सम्पूर्ण सृष्टि का केन्द्र विन्दु समझता था। अपने महान् गुणो के आधिक्य से प्रेरित हो कर जिन्हें "स्वयं उसने ही जन्म दिया था और स्वय अपनी कल्पना द्वारा सीचा था"—इसने स्वयं को ससार भर के लोगों के लिए, सब युगो के लिए एक महान् उदाहरण के रूप मे घोषित किया। इसकी धार्मिक आत्मवचना इतनी प्रबल थी कि इसने अन्य मानको और आदर्शों के अस्तित्व की सभावना तक को स्वीकार नही किया।"

सिन्यावस्की अनुभव करते हैं कि मायाकोवस्की ने सोवियत युग को पर्याप्त

अभिव्यक्ति दी है और वे मायाकोवस्की को ही एकमात्र ऐसा सोवियत कवि मानते हैं, जिसने युग के अनुरूप एक शैली का निर्माण किया। और जहा तक स्वय उनकी साहित्यिक मान्यता का प्रश्न है सिन्यावस्की कहते है कि वे केवल यही आशा कर सकते है कि .

"व्यापक कल्पना पर आधारित कला, जिसके समक्ष उद्देश्य के स्थान पर केवल कुछ कल्पनाए या प्रमेय ही हो। एक ऐसी कला, जिसमे विलक्षणता, सामान्य जीवन के यथार्थवादी विवरण का स्थान लेगी। एक ऐसी ही कला हमारे युग की भावना के सर्वाधिक अनुरूप हो सकती है। सभवत' होफमन, और दोस्तोएवस्की, गोया, चगाल और मायाकोवस्की (जो सबसे बड़े समाजवादी यथार्थवादी थे) की कल्पनाशीलता और अन्य अनेक यथार्थवादियो तथा गैर यथार्थवादियो की कल्पना की उडान, हमे यह सिखाती है कि हम अर्थहीन और काल्पनिक बातो की सहायता से किस प्रकार सत्यकथन कर सकते है। ईश्वर मे अपना विश्वास खो देने के बाद भी, हमने ईश्वर के विभिन्न रूपो मे प्रकट होने के प्रति अपने उत्साह को नही खोया है और यह घटना हमारी आखो के सामने ही घट रही है, उसके अन्तरतम और उसके मानसिक त्रास का विलक्षण परिवर्तन हम देख रहे है। हम यह नही जानते कि हम क्या करें। लेकिन यह अनुभव कर लेने पर कि इस सम्बन्ध मे कुछ नही किया जा सकता, हम सोचना शुरू करते है, अपने सामने पहेलिया प्रस्तुत करते है, हम कुछ बातो को मानकर, उन्हे आधार बनाकर आगे बढते हैं। हो सकता है कि हम इस प्रकार किसी अद्भुत बात का अनुसधान कर लें? सभवत ऐसा हो। लेकिन यह समाजवादी यथार्थवाद नही होगा"[११]।

दि ट्रायल बिगिन्स, उनका "अतिशय काल्पनिक" को अपनी रचनाओ मे उतारने का पहला प्रयास है। वस्तुत, भयभीत कर डालने वाले अयथार्थ का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए, केवल उन्हे यही करना था—और यही उन्होने किया भी—कि पर्याप्त यथार्थवादी तरीके से स्तालिन के जीवन के अन्तिम वर्षों के घटनाक्रम और वातावरण को प्रस्तुत करते। कहानी "डाक्टरो के षडयत्र" (१९५२) के काल मे शुरू होती है। यह घटना उस समय की एक भयकरतम घटना थी और जैसा कि ख्रु इचेव ने हमे बताया है कि उस समय रूस पर एक पागल व्यक्ति का शासन था, जिसके आचरण मे एक विक्षिप्त के लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई पडते थे। इस उपन्यास के अधिकाश पात्र अत्यधिक अरुचिकर हैं, जैसे यहूदी विरोधी सरकारी वकील ग्लोबोव, जो एक झूठा मुकदमा तैयार करने मे लगा है, और यह मुकदमा एक यहूदी डाक्टर राबिनोविच के खिलाफ गर्भपात कराने के अभियोग पर चलाया जा रहा है। इसी प्रकार अरुचिकर है, सब बातो में बुराई ही बुराई देखने वाला वकील, कार्लिन्स्की, जो उन मतली पैदा करने वाली कल्पनाओ मे ही उलझा रहता है, जिन्हे

११—आन सोशलिस्ट रियलिज़म, पैंथियन बुक्स, पृष्ठ ९४-५ (इस पुस्तक में सब पृष्ठ संख्याए पैंथियन सस्करण के अनुसार ही दी गई हैं और यही सिन्यावस्की के निबन्ध का अंग्रेजी मे प्रकाशित एक मात्र अनुवाद है)।

सरकारी पक्ष ने सिन्यावस्की के विरुद्ध मुकदमे के दौरान इस प्रमाण के रूप मे प्रस्तुत किया कि वकील कार्लिन्स्की के मुह से लेखक ने जो वाते कहलाई हैं और कार्लिन्स्की की जो भावनाए हैं, वे वस्तुतः स्वयं लेखक की अपनी भावनाए है। विशेष रूप से निम्नलिखित उद्धरण का वार-वार हवाला दिया गया :

"अचानक कार्लिन्स्की को मतली आने लगी। अपना ध्यान इस ओर से हटाने के लिये उसने मैल्थुस के वारे मे सोचना शुरू किया। प्रत्येक सिद्धान्त मे कुछ न कुछ सचाई अवश्य होती है : आप मानव जाति को निरन्तर वढते रह कर, अनन्त रूप से किस प्रकार वढने दे सकते है। एक दिन एन्टार्कटिक मे लोगो की वस्तिया वस जायेंगी और यही हाल सहारा का होगा। लेकिन इसके वाद क्या होगा ? इस समस्या का कोई न कोई व्यापक हल ढूंढना होगा। अव, यह सव जानते है कि एक समय अपने विकास के आरम्भिक चरण मे मानव भ्रूण की, मछली से वहुत अधिक समानता थी। तो देश अपने मछली के इन भण्डारो का उपयोग क्यो न करे ? महान् भविष्य मे मछली जैसे भ्रूणों का अच्छा उपयोग किया जाएगा। गर्भाशय से वडी सावधानी से इन्हे निकाल कर, विशेष रूप से वनाये गये तालावो मे डाल कर, इन्हे अलग अस्तित्व का आदी वनाया जायेगा। जहा इन तालावो मे राज्य की निगरानी मे, इन भ्रूणों के मछलियो की तरह पख निकलेगे और इन तालावो का अध्यक्ष ग्लोवोव का कोई सहयोगी होगा। और गर्भपातागार के वरावर ही एक कारखाना होगा, जो भ्रूणो से तैयार मछली को, वडी मात्रा मे डिब्वावन्द कर वाजार मे विक्री के लिये भेजेगा। कुछ भ्रूणो को सार्डीन मछलियो मे और कुछ को स्प्राट मछलियो मे वदला जायेगा—यह काम उनके जातीय उद्गम के अनुरूप होगा। और यह पूरा कार्य मार्क्सवाद की मान्यताओ के अनुरूप किया जायेगा। यह स्वीकार करना होगा कि इसका अर्थ मनुष्य-भक्षण का फिर प्रचार करना है। लेकिन यह कार्य आदिम जातियो मे प्रचलित अपने साथी मनुष्यो को खा जाने जैसा नही होगा, वल्कि यह कही अधिक परिष्कृत और ऊचे स्तर का मनुष्य-भक्षण होगा—यह तो ऊर्ध्व विकास होगा।"[१२]

ऐसे भौंडे दिवास्वप्न, जैसा कि सिन्यावस्की ने सरकारी पक्ष के तर्कों के उत्तर मे कहा, उन स्वार्थी लोगो के चरित्र चित्रण के लिये आवश्यक है, जिनका स्तालिन के जीवन के अन्तिम वर्षो मे वोलवाला था। सिन्यावस्की ने जोर देते हुए कहा कि यह वात किसी भी पूर्वाग्रह से मुक्त पाठक को स्पष्ट हो जायेगी कि लेखक का अपनी कल्पना के इन जीवो के प्रति जो दृष्टिकोण है वह कभी भी सहानुभूति पूर्ण नही कहा जा सकता। यद्यपि इस पक्ष पर मुकदमे के दौरान कोई विचार नही हुआ, लेकिन जो लोग वहा मौजूद थे, यह वात उन पर स्पष्ट हो गई होगी कि यह पूरा का पूरा प्रसग, स्तालिन के शासनकाल मे मैलथुस विरोधी, आशावादी सम्वन्धी सिद्धान्त के ऊपर एक तीखा व्यग्य था और ये मैलथुस विरोधी

---

१२ दि ट्रायल विगिन्स, कोलिन्स एण्ड हार्विल प्रैस, पृष्ठ ३२-३३ (वाद की सव पृष्ठ सख्या इसी सस्करण के अनुसार दी गई हैं)।

लोग पश्चिम के जनसंख्य विशेषज्ञो को मैलथुसवादी "मनुष्य भक्षी" कहते थे।

सिन्यावस्की की तीसरी पुस्तक, ल्युबिमोव (जिसका अग्रेजी मे दि मेकपीस एक्सपैरिमेंट शीर्षक से अनुवाद किया गया है) उनकी सर्वोत्तम रचना है, जिसमे वे प्रथम कोटि के रूसी लेखक के रूप मे सामने आते हैं। यद्यपि उनकी आरम्भिक रचनाओ मे सोवियत गद्य के लिए सर्वथा अपरिचित, कुशाग्रता और कल्पनाशील प्रयोगो की क्षमता के दर्शन हुए हैं, लेकिन फिर भी ये रचनाए कुछ सीमा तक जबरदस्ती गढे गये घटना क्रम की खामी से ग्रस्त थी और संभवत. इस कारण से इनमें प्रवाह नही रहा था, क्योकि इन रचनाओ के माध्यम से लेखक, आन सोशलिस्ट रियलिज्म के अन्त मे उल्लिखित साहित्यिक फार्मूले के उदाहरणस्वरूप रचना प्रस्तुत करने का प्रयास करतो हुआ दिखाई पड रहा था। ल्युबिमोव कही अधिक सारपूर्ण रचना है, जिसमें व्यंग्य, कल्पनाशीलता और चुटिल उक्तियो के दर्शन होते हैं और इनका प्रयोग केवल भाषा का चमत्कार दिखाने के लिये ही नही, (जैसा कि फैंटास्टिक स्टोरीज़ की कुछ कहानियो मे दिखाई पडता है) वल्कि पाठक को कल्पना जगत के गभीर प्रागण मे ले जाने के लिए किया गया है।

ल्युबिमोव नामक कस्बा एक अत्यधिक सुन्दर कस्बा है और सभवत. इसकी कल्पना लेखक के किसी परिचित कस्बे के आधार पर की गई है। हो सकता है कि यह वही कस्बा हो जिसका उल्लेख माइकेल ओकूतूरियर ने अपने सस्मरणो मे किया है (देखिए भाग ४ के उपसहार मे)

सिन्यावस्की ने मुकदमे के दौरान बताया कि इस कस्बे का काल्पनिक नाम 'प्रिय" शब्द के आधार पर रखा गया है और उनका इस कस्बे और इसके निवासियो के प्रति दृष्टिकोण पूरी तरह से प्रेमपूर्ण है। सरकारी पक्ष ने यह अभियोग लगाया था कि लेखक ने सोवियत सघ और इसके लोगो पर व्यग्य कसे है तथा उनके बारे मे अपमानजनक बातें कही है। ठीक उसी तरह जिस प्रकार साल्तिकोव-शचेद्रिन ने ज़ार के जमाने के रूस पर अपनी पुस्तक हिस्ट्री आफ ए टाउन (१८६९-७०) मे व्यग्य किये है। यदि इन दोनो रचनाओ मे, कथावस्तु मे, बाहरी समानता दिखाई पडती है तो भी यह स्पष्ट है कि दोनो लेखको का स्वर एकदम भिन्न है। जैसा कि सिन्यावस्की ने अदालत को वताया कि शचेद्रिन की पुस्तक मे "ग्लूपोव" (जिसे ग्लपी अर्थात मूर्ख शब्द के आधार पर रखा गया है) स्वय इस बात का सूचक है कि इन दोनो रचनाओ मे कितनी भिन्नता है। साल्तिकोव की रचना मे अत्यधिक तीखा व्यग्य है और यह पुस्तक निकोलस प्रथम के काल तक का रूस का क्रूरतापूर्ण इतिहास है, जिसमे शासक और शासित दोनो ही वड़े आलोचना योग्य रूप मे प्रकट हुए है। (लेकिन इसके वावजूद ज़ार के सेसर अधिकारियो ने इसके प्रकाशन की अनुमति दी)।

कोई भी निष्पक्ष पाठक यह देख सकता है कि सिन्यावस्की की रचना इतनी महत्वपूर्ण है कि वह उस काल और स्थान की सीमाओ मे नही वधती जिसमे उसकी कथावस्तु

को बाधा गया है। यह तो सामान्य रूप से इतिहास के अर्थ पर एसपवादी टिप्पणी है और इसमें उस समय डाक्टर झिवागो की प्रतिध्वनि हुई है जब लेखक यह कहता है कि जब मनुष्य अपने युग का बन्दी हो तो स्वय वह और उसका इतिहास अनन्त मे खो जाता है।

ल्युविमोव मे सिन्यावस्की एक प्रचलित तरीका अपनाते है, जिसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति को आधिभौतिक शक्तिया प्राप्त होती है (जिस प्रकार फैंटास्टिक स्टोरीज की एक कहानी "दि आइसिकल" मे कहानी के नायक को अचानक भविष्य-कथन और लोगों के विचार पढ़ लेने की शक्ति प्राप्त हो जाती है और वे इस बात से बेहद कठिनाई मे पड़ जाता है) लेन्या तिखोमिरोव (अंग्रेजी अनुवाद का लेनी मेकपीस) अपने जीवन का समारम्भ एक मामूली साइकिल मेकेनिक के रूप मे करता है, लेकिन कुछ विचित्र परिस्थितियों के कारण उसे सम्मोहन शक्ति प्राप्त हो जाती है और वह दूसरे लोगो पर अपनी इच्छा थोपने मे सफल होता है। वह मई दिवस के समारोहो के दौरान स्थानीय सोवियत अधिकारियों से सत्ता छीन लेता है, स्वय को नया शासक घोषित करता है, ल्युविमोव को (चारों तरफ से सम्मोहन शक्ति के पर्दे से घेर कर इसे बाह्य ससार की दृष्टि से ओझल कर देता है) सोवियत यथार्थ की, स्थान और कार्य की, निरन्तरता से अलग कर देता है और ल्युविमोव के "स्वतत्र नगर" मे अपना शासन कायम करता है। इस नगर के निवासियो पर उसका प्रभाव—और इस कारण से लोगो का उसमे विश्वास असीम भौतिक समृद्धि के आश्वासन पर निर्भर करता है और अपनी असाधारण शक्तियो के बल पर वह लोगो के मन मे यह बात बैठाने मे सफल होता है कि वे अकल्पनीय समृद्धि का उपभोग कर रहे हैं—जहा पानी का स्वाद शैम्पेन जैसा मालूम पड़ता है और बेहद तीखी लाल मिर्च, जिन्हे मुंह मे रखना भी मुश्किल है, अत्यधिक स्वादिष्ट व्यंजनो मे बदल जाती है। केवल कुत्तो को ही धोखा देने मे सफलता नहीं मिलती।

जहा तक इस रचना के 'राजनीतिक' पक्ष का सवाल है, यह सामान्य रूप से राज-नीतिक कट्टरता का उपहास करती है और जैसा कि सिन्यावस्की ने मुकदमे के दौरान कहा, इसमें 'इच्छाशक्तिवाद' पर विशेष रूप से व्यग्य किये गये हैं। 'इच्छाशक्तिवाद' उन अनेक बुराइयों में से है, जिनका आरोप वर्तमान सोवियत नेता अपने पूर्ववर्ती, ख्रुश्चेव पर लगाते हैं। इच्छाशक्तिवाद की यह परिभाषा दी जा सकती है कि यह एक ऐसी मिथ्या कल्पना है, जिसमें यह मान लिया जाता है कि इच्छाशक्ति के उपयोग से निरपेक्ष समस्याओ को सुल-झाया जा सकता है। उदाहरण के लिये, ख्रुश्चेव का यह विश्वास था कि किसानो को और अधिक मक्का उगाने की प्रेरणा देकर—जहा तक कि आर्कटिक क्षेत्र के उस पार भी मक्का की खेती करने की प्रेरणा देकर—सोवियत सघ के अनाज के सकट को समाप्त किया जा सकता है। अतः यदि कोई तिखोमिरोव द्वारा लोगो को जादू भरे तरीके से भोजन देने के दृश्य मे कोई प्रत्यक्ष और सम-सामयिक राजनीतिक अर्थ ढूंढना चाहे तो भी इससे अधिक अर्थ नहीं निकलता, जो वर्तमान सोवियत नेता ख्रुश्चेव के बारे में कहते हैं। अब क्योंकि

तिखोमिरोव के विवाह के अवसर पर पानी शैम्पेन मे वदल जाता है, तो कोई व्यक्ति किसी प्रकार इस घटना को काना [एक नगर का नाम] के विवाह भोज का व्यग्य चित्रण वता सकता है।

यह वात कुछ महत्वपूर्ण है, क्योंकि सिन्यावस्की-टेरट्ज़ की रचनाओ मे —विशेष रूप से ल्युबिमोव के अन्त मे और अनगार्डेड थॉट्ज मे—इसका प्रमाण दिखाई पडता है, कि किसी व्यक्तिगत धार्मिक विश्वास के अलावा (निःसंदेह जो पास्तरनेक की तरह रूस के आर्थोडॉक्स चर्च के विश्वासों पर आधारित है), सिन्यावस्की के मन मे धार्मिक विश्वास और ईसाई धर्म के प्रति आदर का भाव है। लेकिन इसके वावजूद वे ऐसे दृश्यो का समावेश करने से नही हिचकते जो सिद्धान्त रूप से, किसी भी ईसाई को अत्यधिक धर्म विरुद्ध दिखाई पडेंगे (एक ऐसा ही उदाहरण दि आइसिकल और अन्य कहानियो मे मिलता है, जिसमे एक ईसाई संत और उसके शव-प्रेम का उल्लेख हुआ है)।[13] अपने विश्वास के स्रोतो (चाहे वह रूसी क्रांति हो या धर्म) के प्रति इस प्रकार का दृष्टिकोण सबसे अधिक स्पष्ट तरीके से सिन्यावस्की के व्यग्य के स्वरूप को स्पष्ट करता है। यह एक ऐसा विषय है जिसका उल्लेख मुकदमे के दौरान एक वार भी नही हुआ और जहा प्रत्येक विनोद और कल्पना की उडान को अपमानजनक सिद्ध करने का और इनके आधार पर अभियोग सिद्ध करने का प्रयास किया गया।

सिन्यावस्की के विपरीत, डेनियल की—मुकदमा शुरू होने तक—सोवियत सघ मे एक लेखक के रूप मे विशेष ख्याति नही थी। उनका नाम काव्यानुवादक के रूप मे ही जाना जाता था (विशेष रूप से यिद्दिश, काकेशियन और स्लाव भाषाओ से अनुवाद) और जैसा कि हम मुकदमे की कारवाई के पहले दिन के विवरण मे देखते हैं सोवियत सघ मे 'कानूनी रूप से' अपनी एक मौलिक रचना प्रकाशित कराने का उनका प्रयास सफल नही हुआ था। उनके आरम्भिक साहित्यिक जीवन सम्वन्धी अन्य वुनियादी तथ्य, मुकदमे की कारवाई के विवरण मे दिये गये हैं।

उन्होने अपने छद्म नाम—'निकोलाई अर्जेहक'—से विदेशो मे चार कहानिया प्रकाशित की 'दिस इज़ मास्को स्पीकिंग'[14], 'हैंड्स', 'दि मैन फ्राम मिनाप' और 'एटोनमेंट।' इस्तगासे ने उनके विरुद्ध अभियोग सिद्ध करने के लिए इन चारों कहानियो का उपयोग खुल कर किया।

डेनियल एक लेखक के रूप मे सिन्यावस्की से वहुत भिन्न हैं, यद्यपि उनकी रचनाओ मे सिन्यावस्की का प्रभाव दिखाई पड़ता है, विशेष रूप से उनकी पहली रचना, "दिस इज़ मास्को

१३—कोलिन्स एण्ड हार्विल प्रैस पृष्ठ १२५ (बाद की सव पृष्ठ सख्याएं इसी सस्करण के अनुसार है)।

१४—"दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" डिसोनेंट वायसेज़ से—प्र. एलेन एण्ड अनविन, १९६४।

स्पीकिंग" में और हास्यपूर्ण रचना "दि मैन फ्राम मिनाप" में, जिन्हे सिन्यावस्की की 'विलक्षण यथार्थवाद' की साहित्यिक शैली का उदाहरणबताया जा सकता है । अपनी अन्य रचनाओं मे डेनियल ने कही अधिक स्पष्ट और यथार्थवादी तरीके से लिखा है, जो शैली की दृष्टि से उन्हे युवक सोवियत कथाकारो की नयी लहर की कोटि मे रखती है । पिछले कुछ वर्षों मे कुछ विशेष समयो पर, जब वातावरण उदार लेखको के लिये अधिक अच्छा रहा (उदाहरण के लिये १९६२ की गर्मियो और शरद ऋतु मे जब सोल्झनित्सीन की रचना 'वन डे इन दि लाइफ आफ आइवन डेनिसोविच' का प्रकाशन हुआ, जिसमे स्तालिन के शासनकाल के यातना और वलात् श्रम शिविरो के जीवन का विवरण दिया गया है, को प्रकाशन की अनुमति दी गई), सोवियत सघ की किसी साहित्यिक पत्रिका मे 'हैड्स' जैसी कहानी का प्रकाशन कोई विशेष चौंका देने वाली घटना न होती । यह निश्चित है कि इस कहानी मे राजनीतिक दृष्टि से स्तदन्यूक की 'कानूनी तौर पर' प्रकाशित रचना 'पीपुल्स आर नाट एजेल्स' जैसी रचनाओ से अधिक स्पष्ट कथन नही किया गया है । स्तदनयूक की इस रचना मे १९३० के बाद के आरम्भिक वर्षों के अकाल के कपा देने वाले विवरण दिये गए हैं और इसी प्रकार निर्दोष लोगों पर पुलिस के वर्वर अत्याचारो का भी उल्लेख हुआ है । इसके अलावा बोंदारयोव की रचना "साइलेंस" मे भी कही अधिक स्पष्ट कथन हुआ है, जिसमे स्तालिन के जमाने मे, लोगो पर झूठे अभियोग लगाये जाने और पुलिस द्वारा झूठे मुकदमे चलाने की बातें स्पष्ट तौर पर कही गई हैं ।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि डेनियल-अर्जहक, सिन्यावस्की की तुलना मे कही अधिक गभीरता पूर्वक लिखते हैं और उनके व्यंग्य मे बहुत अधिक कटुतापूर्ण तीखापन है, जो अधिक शान्त सिन्यावस्की-टेरट्ज की रचनाओ मे मौजूद नही है । मुकदमे की कारवाई का विवरण लिखने वाले अज्ञात लेखक ने, "अच्छे स्वभाव वाला भूत" कह कर सिन्यावस्की का जो विवरण दिया है, वह उनकी शैली और उनकी शक्ल सूरत दोनो के अनुकूल दिखाई पडता है ।

इस्तगासे ने डेनियल-अर्जहक के विरुद्ध सबसे बडे प्रमाण के रूप मे उनकी कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" को पेश किया, जो इटालियान फिल्म, दि टेन्थ विक्टिम की तरह, अत्यधिक विलक्षण और काल्पनिक कहानी है । जैसा कि डेनियल ने अदालत को बताया, उन्होंने कहानी मे वर्णित स्थिति की कल्पना अशत इसलिए की कि वे "व्यक्ति पूजा" (इस बार ख्रुश्चेव की) के फिर सिर उठाने वाले अभियान के विरुद्ध अपने विचार प्रकट करने और उसकी आलोचना करने के लिये तथा अशत साहित्यिक विधा के माध्यम से यह [illegible] करने के लिये की कि यदि लोगो को सरकारी आदेश के अनुसार हत्या करने की छूट दे दी जाये तो वे कैसा आचरण करेंगे । उस कहानी का समारम्भ मास्को रेडियो पर इस घोषणा से होता है कि सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष मण्डल ने यह आदेश दिया है कि १० अगस्त १९६० का दिन (मुकदमे मे अपनी गवाही मे डेनियल ने यह बताया कि यह कहानी १९६०-६१ मे लिखी गई थी) "सार्वजनिक हत्या दिवस" के रूप मे मनाया जायेगा । उस दिन, सोवियत

संघ के १६ वर्ष से अधिक उम्र के सब नागरिकों को, सुबह ६ बजे से मध्य रात्रि के बीच, किसी भी अन्य नागरिक की हत्या करने का अधिकार होगा। लेकिन कुछ श्रेणियो के लोगो की हत्या नही की जा सकेगी जैसे पुलिस और सेना के सदस्य और अन्य लोग जिनका आदेश के परिशिष्ट मे उल्लेख हुआ है। इस घोषणा के प्रति आरम्भिक अविश्वसनीयता से लेकर उदासीनता तक की प्रतिक्रिया होती है। कोई व्यक्ति यह सुझाव देता है कि अन्य सब बातो की तरह इजवेस्तिया के किसी सम्पादकीय मे इस बात को भी समझाया जायेगा। (इस्तगासे ने अभियोग सिद्ध करने में इस विवरण का विशेष रूप से इस्तेमाल किया)। जब निर्धारित दिन आता है तो इसके प्रति लोगो की उदासीनता प्रकट होती है—जैसा कि अन्य सब सरकारी अपीलो और अभियानो के सम्बन्ध मे होता है। काकेशस मे जार्जियावासियो द्वारा आर्मीनियावासियो की हत्याए होती है और इसी प्रकार आर्मीनियावासी जार्जियावासियो को मारते हैं। युक्रेन मे कम्युनिस्ट पार्टी की स्थानीय शाखा के पदाधिकारी, इस दिवस के सम्बन्ध मे मूर्खतापूर्ण कारवाइया करते हैं, मास्को मे केवल छिटपुट घटनाए होती है और बाल्टिक राज्यो मे एक भी व्यक्ति की हत्या नही होती। कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति सार्वजनिक हत्या दिवस के परिणामो का निष्कर्ष निकलाते हुए और इससे जो सबक मिले, उनका उल्लेख करते हुए एक परिपत्र जारी करती है, जिसमे युक्रेन मे इस दिवस की पूर्ण असफलता की निन्दा की जाती है और बाल्टिक राज्यो मे इस दिवस के सम्बन्ध मे जनता का एकदम समर्थन न मिलने की बात को कार्यक्रम को क्षति पहुचाने का जानबूझ कर किया गया प्रयास बता कर उसकी भर्त्सना की जाती हे।

कहना न होगा कि यह एक तीखा राजनीतिक व्यग्य है और डेनियल ने मुकदमे की सुनवाई के दौरान, कहानी के राजनीतिक पहलुओ के महत्व को घटा कर दिखाने का प्रयास नही किया। लेकिन उन्होने तथा सिन्यावस्की ने भी यह कहा कि समग्र दृष्टि से यह कहानी अपने आप मे हिंसा का विरोध है। सिन्यावस्की ने अपनी अन्तिम अभियुक्ति मे कहा: "यह (कहानी) तो इस कथन को उच्च स्वर मे दोहराती है कि 'तू किसी की हत्या नही करेगा।'" इस कहानी मे एक महत्वपूर्ण अश है, जिसका अन्य अशो की तुलना मे मुकदमे के दौरान अधिक बार उल्लेख किया गया। यह प्राय इस्तगासे के मामले की बुनियाद ही था और इस्तगासे ने यह कहा कि इन दोनो लेखको की रचनाए—जिन्हे "उनके खतरनाक विचारो" के लिये सयुक्त रूप से दोषी बताया गया था—वास्तविक अर्थों मे तोड-फोड की प्रवृत्ति और विद्रोह की भावना से भरी हुई है। स्वय डेनियल की तरह कहानी का नायक महायुद्ध मे सेना मे काम कर चुका है। सार्वजनिक हत्या दिवस से कुछ दिन पहले ही वह अपने मन मे सोचता है कि जो लोग सन् १९३७ (स्तालिन द्वारा भयकर शुद्धि अभियान छेडने का वर्ष) के बर्बर दुष्कृतियो के लिये जिम्मेदार हैं और जिनके ऊपर युद्ध के बाद की अवधि के पागलो जैसे व्यवहार की जिम्मेदारी है और जो, उनके शब्दो में, आज भी न्याय पीठ पर बैठे है और जिनका शासन चलता है अर्थात् सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार

के सर्वोच्च पदाधिकारी, उनकी हत्या कर दी जाये। लेकिन इस विचार के तुरन्त बाद उसके मन मे तुरन्त युद्ध की एक याद ताजा हो जाती है। उसकी आंखों के समक्ष यह दृश्य आ खड़ा होता है कि जब लोगो के शरीर के हथगोले फटने से टुकडे-टुकड़े हो जाते हैं, जब मशीनगनों की भयंकर गोलीबारी से लोग घास-फूंस की तरह कट कर गिरने लगते हैं और जब भारी भरकम टैंक उन्हे कुचलते हुए निकल जाते है। तो क्या होता है। अचानक आने वाली यह याद डेनियल के स्वय अपने युद्धकालीन अनुभवो पर आधारित है, जो युद्ध के दौरान स्वय गभीर रूप से घायल हुए थे। इस अंश की समाप्ति अस्पष्ट रूप से होती है, लेकिन इस बात मे सदेह नही कि यदि पूरी कहानी की सामान्य जटिलताओं को ध्यान मे रखा जाये कि अचानक युद्ध की विभीषिकाओ का जीवन्त दृश्य उपस्थित करने का लेखक का उद्देश्य अपने नायक द्वारा (और स्वय अपना भी) आतंककारी तरीकों या हत्याओ द्वारा राजनीतिक उद्देश्यो की पूर्ति के प्रति गहरा घृणा भाव प्रकट करना था। अब क्योकि इस उद्धरण का मुकदमे के दौरान बार-बार उल्लेख हुआ, अतः इसे यहा इसके व्यापक संदर्भ मे देना उपयुक्त होगा—इस्तगासे ने हमेशा सदर्भ को अधिक से अधिक काट कर और इस उद्धरण को प्रतिवादियों के लिये अधिक से अधिक हानिप्रद बना कर प्रस्तुत करने की निरन्तर कोशिश की।

यह उद्धरण कहानी के नायक के स्वगत कथन के रूप मे है.

"घृणा व्यक्ति को हत्या का अधिकार देती है। घृणा के कारण मैं स्वयं भी······ क्या मैं वस्तुत ऐसा कर सकता हू? हां स्पष्ट है कि मैं ऐसा कर सकता हूं। मैं निश्चित रूप से ऐसा कर सकता हूं। मैं किससे घृणा करता हूं? मैंने अपने जीवन मे किससे घृणा की है? हा, स्कूल के दिनो का कोई महत्व नही है। लेकिन जब मैं बडा हुआ तब मैंने किससे घृणा की। मैं कालेज गया...मैं एक अध्यापक से घृणा करता था जिसने मुझे जान-बूझ कर चार बार परीक्षा मे फेल किया। खैर मरने दो उसे यह बहुत पुरानी बात है। जिन विभागो मे मैंने काम किया उनके मेरे अफसर। हा, वे धूर्त थे। उन्हे देख कर मेरा खून खौलने लगता था। उन हरामजादों के मुंह पर तो घूंसा जमाना चाहिये। तो और कौन रह जाता है? लेखक के; जो ब्लैक हड्डस[15] की शैली और भावना के अनुरूप लिखता है। हां मुझे याद है, मैं यह कहा करता था कि यदि मुझे इस बात का विश्वास हो जाये कि मेरा कुछ नही होगा तो मैं इस लेखक को मार डालू। उस सूअर को सच-मुच सबक सिखाना ही चाहिये। कुछ ऐसा करना चाहिये कि वह फिर कभी अपना कलम न उठा सके······और मोटे चेहरो वाले हमारे भाग्य विधाताओ का क्या किया जाये, हमारे नेताओ

१५—यह इशारा साहित्यिक मासिक ओक्त्यावर के सम्पादक और सोवियत समाज के उदारतावादी तत्वों की "काली भेड" वसेवोलोद कोचेतोव की ओर है। ब्लैक हड्ड्रेड्स नामक गुट अत्यधिक उग्र राष्ट्रवादी, यहूदी विरोधी और बुद्धिवादी विरोधी था और इन गिरोहों के सदस्य शताब्दी के आरम्भ मे आतंककारी कारवाइया करते थे।

और शिक्षकों, जनता के सच्चे बेटों का क्या किया जाये, जिन्हें रियाज़न क्षेत्र के सामूहिक खेतो के किसानों, क्रिवोईरोग क्षेत्र के धातु कारखानो के मजदूरों, इथियोपिया के सम्राट, अध्यापको के सम्मेलन, संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति और सार्वजनिक पाखानो के मेहतरो से बधाई और शुभकामना सदेश प्राप्त होते हैं।[16] जो सोवियत रूस के खिलाडियों, लेखको, कपडा कारखानों के मजदूरों, वर्णांध लोगों और पागलो के सर्वोत्तम मित्र हैं। इन लोगों के साथ क्या व्यवहार किया जाना चाहिये ? क्या इन्हे माफ कर देना चाहिए ? सन् १९३७ के बारे मे क्या किया जाये ? युद्ध के बाद के वर्षों के पागलपन का क्या किया जाये, जब पूरे देश पर शैतान छाया हुआ था, जो अपने उन्माद मे इधर-उधर सर्वत्र प्रहार करता था और जिसका पागलपन विक्षिप्तता की हर सीमा को पार कर गया और वह स्वय अपने आप को खाने लगा ? क्या वे यह समझते है कि एक बार मुछन्दर[17] की कब्र को अपमानित करने के बाद उनका काम पूरा हो जाता है और आगे कुछ करना शेष नही रहता ? नही, नही, नही, इन लोगो से भिन्न व्यवहार होना चाहिये। क्या तुम्हे अभी भी याद है कि इनके साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए ? फ्यूज़···पिन को बाहर खीचो····· फेंको। जमीन पर मुंह के बल लेट जाओ। लेटे रहो! अब यह फट गया है और तुम आगे दौड सकते हो। अपने कूल्हे पर लगी रायफल से एक के बाद एक, एक के बाद एक, गोली छोडते हुए।······ वे लोग वहा पडे है, उनके चिथडे उड गए है और गोलियो ने उनके शरीरों को क्षत-विक्षत कर डाला है। ज़मीन खून से एकदम भीग गई है और पाव फिसलने लगते है। यह कौन है ? वह तो पेट के बल घिसट कर चल रहा है और अपनी आतो को प्लास्टर के टूटे हुए टुकड़ो के ऊपर घसीटता हुआ आगे बढ रहा है। और यह कौन व्यक्ति है, पदको से सजा हुआ, जो अध्यक्ष के साथ उसकी यात्राओ पर जाता था ? वह इतना दुबला क्यो है ? वह रूई भरा हुआ कोट क्यों पहने हुए है ? मैंने उसे एक बार पहले भी देखा था, सडक पर घुटनो के बल चलते हुए, और अपने नीले और लाल पेट (आतो) को धूल मे घसीटते हुए। और ये लोग ? मैंने इन्हे पहले भी देखा है। केवल फर्क इतना था कि उस समय ये लोग जो पेटिया बाधे थे, उनके बकसुओं पर जर्मन भाषा मे खुदा था—गोट मिट बन्स, (ईश्वर हमारे साथ है) इनकी टोपियों पर लाल सितारे लगे थे, ये घुटनो तक ऊचे बूट पहने थे, ये थे रूसी, जर्मन, जार्जियन, रूमानियन, यहूदी, हगरीवासी, कोट, विज्ञापन की तख्तिया,

---

१६—यहा "मजदूरो और किसानो" द्वारा घिसी-पिटी और एक निश्चित भाषा मे लिखे गये उन पत्रो की ओर सकेत है—जिनकी अब स्तालिन और ख्रुश्चेव के शासनकाल की तुलना मे कमी हुई है—जिन्हे महत्वपूर्ण अवसरो पर प्रावदा और इजवेस्तिया मे प्रकाशित किया जाता है।

१७—स्तालिन—उसकी कब्र को अपमानित करने की बात को लाक्षणिक रूप मे समझना चाहिये, क्योकि यह कहानी, लेनिन के मकबरे से स्तालिन के शव को हटाये जाने से पहले लिखी गई थी।

ट्रैक्टरों की टुकड़ियां, कुदालें; शरीर के ऊपर से एक स्टुडीबेकर, दो स्टुडीबेकर, आठ स्टुडीबेकर, ४० स्टुडीबेकर गुजर जाती हैं और तुम वहां एक मेंढक की तरह पिचके हुए पड़े रहते हो। हमने पहले यह सब सहा है। मैं अपने बिस्तर से उठ खड़ा हुआ, खिड़की के पास गया और पसीने से भरे अपने माथे को पर्दे से पोंछा।"[१८]

मेरे विचार से "हेंड्स" डेनियल-अर्जहक की सर्वाधिक सफल रचना है। यह अत्यधिक कुशलता से लिखी गई कहानी है और कथावस्तु तथा शैली के निरालेपन के कारण यह आल्फ्रेड दादेल की रचनाओं की कोटि मे आ सकता है। मुकदमे के दौरान डेनियल ने कहा कि यह कहानी एक सच्ची घटना पर आधारित है, जिसे उसके एक परिचित और खुफिया पुलिस के पुराने सदस्य ने सुनाई थी। इस कहानी का नायक एक व्यक्ति को जिससे उसका संयोगवश ही परिचय हुआ था, यह बताता है कि उसके हाथ इस प्रकार निरन्तर क्यों कांपते रहते हैं। वह कहता है कि इसका कारण शराबखोरी नही है, बल्कि अपनी युवावस्था के एक अनुभव के कारण यह हुआ है। उस समय जब वह चेका (खुफिया पुलिस) का और क्रांति विरोधियों को समाप्त करने के लिए गठित दण्ड देने वाली टोली का सदस्य था। उस समय के एक अनुभव के कारण उसके हाथ इस प्रकार निरन्तर कापते रहते है। एक दिन उसे पादरियों की एक टोली को गोली से उडाना था, लेकिन उसके साथियों ने उसके साथ बडा भयकर मजाक किया और उसकी राइफल मे खाली कारतूस भर दिये। जब वह पहले पादरी पर गोली दागता है, तो पादरी अपने दोनो हाथ फैलाए हुए आगे उसकी ओर बढता चला आता है ऐसा लगता है मानो गोलियो का उस पर कोई असर नहीं हो रहा है। कहानी सुनाने वाले इस व्यक्ति पर इस घटना का, एक प्रकार से अध-विश्वास पर आधारित इतना भयकर प्रभाव पडा कि इस दृश्य के आघात ने उसकी स्नायुओ को ही बुरी तरह से विश्रृंखलित कर दिया। इसके परिणामस्वरूप उसे अपनी नौकरी छोडनी पडी और उस समय से निरन्तर उसके हाथ कापते रहते है। जैसा कि डेनियल ने मुकदमे की सुनवाई के दौरान, अपनी अन्तिम सफाई मे कहा कि प्राय. बिल्कुल ऐसी ही एक घटना शोलोखोव के उपन्यास "एण्ड क्वाइट फ्लोज दि डोन" मे भी है, जिसके लिये लेखक को नोबेल पुरस्कार दिया गया और उसने स्वय सोवियत सरकार के अधिकृत आशीर्वाद से इसे ग्रहण भी किया।

"दि मैन फ्राम मिनाप" डेनियल की सबसे कमजोर रचना है और उन्होंने मुकदमे की सुनवाई के समय स्वयं यही बात कही : "मुझे यह कहानी पसन्द नही है; यह बहुत मामूली ढग से लिखी गई है, यह अपरिष्कृत है और रुचि की दृष्टि से भी इसे अच्छा नही कहा जा सकता। लेकिन इसमें कोई सोवियत विरोधी बात नही है।" कहानी जिस विचार

१८—डिसोनेंट वॉयसेज इन सोवियत लिटरेचर से उद्धृत, लन्दन, एलिन, एण्ड अनविन, १९६४, पृष्ठ २७८-९। यहां अंग्रेजी अनुवाद की भाषा मे थोडा सा अन्तर कर दिया गया है।

पर आधारित है, वह अपने आप मे अच्छा है, लेकिन इसमे एक प्रकार से कुछ भद्दा मज़ाक है और इसे कलात्मक दृष्टि से सफल बनाने के लिये इसका अनुशीलन गैलिक (फ्रांसीसी) नज़ाकत से करना आवश्यक है। यह कहानी एक ऐसे व्यक्ति के बारे मे है जो अपनी इच्छानुसार लड़का या लडकी पैदा कर सकता है और बस इतना करना होता है कि यदि वह लडका चाहता है तो सम्भोग के समय वह कार्लमार्क्स का स्मरण करता है और यदि लडकी चाहती है तो क्लारा जेत्किन[19] का। उसकी इस असाधारण क्षमता का पता सोवियत अधिकारियो को चलता है और वे अनेक हास्यपूर्ण तरीको से इसका उपयोग करते हैं। कहना न होगा कि कार्ल मार्क्स के "पवित्र" नाम के इस संदर्भ मे उपयोग मे जो विनोद छिपा था, वह न्यायाधीश और सरकारी वकील और इसी प्रकार अदालत के कमरे मे मौजूद और सावधानी से चुने गये लोगो मे से अधिकाश को पसन्द नही आया।

"एटोनमेट" की पृष्ठभूमि १९६३ का वर्ष है और यह एक ऐसे व्यक्ति के अनुभवो की भयानक कहानी है (इसके बारे मे भी डेनियल ने मुकदमे की सुनवाई के समय दावा किया कि यह कहानी एक सच्चे मामले पर आधारित है, जिसमें स्वय उनका एक परिचित फसा हुआ था) जिस पर गलत रूप से यह संदेह किया जाता है कि उसने स्तालिन के शासनकाल में, लोगों पर झूठे अभियोग लगाने का काम किया है। वह समाज बहिष्कृत हो जाता है और उसका त्रास इस कारण से और बढता है कि इस सदेह पर वह व्यक्ति भी विश्वास करता है, जिसे झूठे अभियोग के कारण सजा मिली थी और और जो लम्बी कैद काट कर वापस लौटा है। इस कहानी का नायक व्यापक अपराध भावना का केन्द्र बिन्दु बन जाता है और उसके सब परिचित (विशेष रूप से मास्को के बुद्धिवादी) इस बात की उपेक्षा नही कर पाते, यद्यपि उनमे से कुछ ही इस बात को स्वीकार करने या उसका सामना करने को तैयार है कि उनमे से कोई भी व्यक्ति उन कार्यों के नैतिक दायित्व से नही बच सकता, जो स्तालिन के शासनकाल मे हुए। इस प्रकार कहानी का नायक, जिस पर झूठा सदेह किया जाता है, एक प्रकार से अन्य लोगो के अपनी अपराध भावना से बचने का साधन बनता है और अपने पहले के मित्रो द्वारा बहिष्कार किये जाने के कारण, उसके हृदय को ऐसी चोट पहुचती है कि वह पागल हो जाता है। जैसा कि डेनियल ने मुकदमे के दौरान कहा, इस कहानी का मुख्य तथ्य यह है कि समाज के सब सदस्यों को व्यक्तिगत और समग्र रूप से, उस कार्य की जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिये, जो उनके नाम से किया जाता है।

१९—क्लारा जेत्किन (१८५७-१९३३) जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल (कोमिन्टर्न) के सस्थापक सदस्यो मे से थी।

मुकदमे का पूर्वरंग

दोनों लेखकों को सितम्बर १९६५ मे गिरफ्तार किया गया था। अक्तूबर के शुरू में उनकी गिरफ्तारी की अफवाहे पश्चिम के देशो मे पहुंचने लगी थीं और यूरोपीय लेखक संघ के महामत्री मियान कार्लो वीगोरेली ने पहली बार सार्वजनिक रूप से इन प्रश्न को रोम मे ६ अक्तूबर को अपने सगठन की एक बैठक मे सोवियत प्रतिनिधियो की उपस्थिति मे उठाया। अगले दो महीनों मे, पश्चिम के प्रमुख लेखको और सगठनो ने सार्वजनिक रूप से और निजी तौर पर अनेक पूछताछ की और कोसीगिन, सुरकोव (सोवियत लेखक संघ के मंत्री) और अन्य सोवियत अधिकारियो को पत्र लिख कर इन लेखको के बारे मे जानकारी मागी। इन सब पत्रो के उत्तर मे केवल मौन ही प्राप्त हुआ। केवल २२ नवम्बर १९६५ को, सुरकोव ने पेरिस मे एक पत्र प्रतिनिधि सम्मेलन मे इन लेखको की गिरफ्तारी की बात को स्वीकार किया और इसके साथ ही गंभीरतापूर्वक यह आश्वासन भी दिया कि मुकदमे में "कानून" का पूरी तरह से पालन किया जायेगा।[२०]

सोवियत जनता को तो, सिन्यावस्की और डेनियल की गिरफ्तारी के समाचार की पहली बार सरकारी तौर पर जानकारी के लिये दो महीने और प्रतीक्षा करनी पडी। १३ जनवरी १९६६ को इजवेस्तिया ने इसके बारे मे दमित्री इरेमिन का लिखा हुआ एक लेख प्रकाशित किया। इस लेख का शीर्षक था "दो विश्वासघाती लेखक" और इस लेख ने मुकदमे के पहले के अभियान और स्वयं मुकदमे की भी दिशा निर्धारित की। यदि इस लेख को पूर्वाग्रहग्रस्त कहा जाये तो यह लाघव कथन होगा। इरेमिन ने अपने लेख मे यह खेद प्रकट किया कि पश्चिम के कुछ बुद्धिवादी (उनके नामों का उल्लेख नही किया गया) सिन्यावस्की और डेनियल की गिरफ्तारी के विरुद्ध विरोध प्रकट कर रहे है, जिन्हे उसने पश्चिम के सोवियत विरोधी प्रचार का दोमुंहा दलाल बताया। इरेमिन ने अपने लेख मे आगे कहा कि कानून सम्मत और खुली गतिविधियो की आड मे इन लेखकों की "हमारी समाज व्यवस्था के प्रति घृणा और हमारी मातृभूमि और हमारे देशवासियों को प्रिय प्रत्येक वस्तु का उपहास" छिपा था। यह कहना किसी पवित्र स्थान या मान्यता को भ्रष्ट करने जैसा आरोप है। "दुरंगी चाल चलना" या "दोमुंहा" होना सोवियत दण्ड सहिता के अन्तर्गत अपराध नहीं है। छद्म नाम से लिखना, विदेशों में अपनी रचनाए प्रकाशित करना, या एक नाम से एक बार और दूसरे नाम से कोई अन्य बात लिखना अपराध नही है और इस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया है।

लेकिन किसी पवित्र मान्यता के विरुद्ध लिखने की बात पर दण्ड संहिता की धारा ७० के अन्तर्गत अभियोग लगाया जा सकता है। यह धारा इस प्रकार है :

"सोवियत शासन को क्षति पहुचाने या उसे कमजोर बनाने के उद्देश्य मे या राज्य के विरुद्ध विशेष रूप से खतरनाक अपराध करने के उद्देश्य से प्रचार, इन उद्देश्यों की पूर्ति

२०— २३ नवम्बर १९६५ के ह्यूमेनाइट और फिगारो मे प्रकाशित रिपोर्ट देखिए।

के लिये अपमानजनक झूठी बातो का प्रचार, जो सोवियत राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध हो या उसको बदनाम करती हो, तथा, इन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए किसी प्रकार का साहित्य तैयार करना, उसका प्रचार करना या ऐसा साहित्य रखना, छह महीने से सात वर्ष तक की कैद और दो वर्ष से पाच वर्ष तक के निष्कासन सहित या निष्कासन के बिना या दो से पाच वर्ष तक के निष्कासन द्वारा दण्डनीय है।"[21]

जैसा कि स्पष्ट है यहा प्रत्येक वात अभियुक्त के इरादे को साबित करने पर निर्भर करती है। इरेमिन ने और उसके बाद मुकदमे के दौरान सरकारी वकील ने, इस आरोप पर अपना मामला आधारित किया कि लेखको की रचनाओ का उद्देश्य जान-बूझकर सोवियत व्यवस्था को क्षति पहुचाना और उसे कमजोर बनाना था। दूसरे शब्दो मे, उनकी साहित्यिक रचनाओ को, देशद्रोह भडकाने वाले इश्तिहार या घोषणाओ के समकक्ष बताना है, यद्यपि यह साहित्य सोवियत जनता को उपलब्ध नही था और इसका वितरण देश के भीतर नही हुआ था और इस कारण से ऐसे लोगो की भावनाओ को भडकाने और लोगो की भावनाए भडका कर सोवियत समाज व्यवस्था को क्षति पहुचाने का काम कैसे हो सकता था और इसे कैसे सिद्ध किया जा सकता था। यह सिद्ध करने के लिये कि सिन्यावस्की और डेनियल की रचनाए विषय वस्तु की दृष्टि से पवित्र मान्यताओ के लिये अपमानजनक और इरादे की दृष्टि से देशद्रोहपूर्ण थी, इरेमिन और सरकारी वकील ने, इन लेखको की रचनाओ के उद्धरण, उन्हे सदर्भ से अलग हटा कर, निरन्तर दिये।[22]

इरेमिन ने अपने लेख मे कहा कि "इन लेखको की रचनाए पढ़ कर आप के मन मे जो पहला भाव उत्पन्न होता है वह है अत्यधिक घृणा और जुगुप्सा का। जिन अश्लील बातो से इन रचनाओ के पृष्ठ भरे पडे है, उनका उद्धरण देना किसी भी परिष्कृत व्यक्ति के लिये सभव नही है। अत्यधिक घृणा योग्य तरीके से ये दोनो लेखक, सेक्स और मनोविकृति सबधी "समस्याओ" का वर्णन करते है। ये दोनो ही पूर्ण नैतिक पतन की तस्वीर प्रस्तुत करते है...... यह डेनियल-अर्जहक की एक रचना का विशिष्ट उदाहरण है : तुम स्त्रियो को देखते हो जो सडको पर हिजडो की तरह घूमती रहती है—जो छोटी टागो वाली गर्भणी डाक्सहुन्ड

२१—देखिए ऊगोलोवनी कोदेक्स आर एस. एफ. एस. आर. मास्को, १९६२, पृष्ठ ४७-८ "निष्कासन" (ससिल्का) का अर्थ, कैद की अवधि को पूरा करने के बाद या कैद के एवज मे, किसी निर्धारित इलाके मे अनिवार्य रूप से रहना। सिन्यावस्की को धारा ७० के अन्तर्गत निर्धारित अधिकतम कैद की सजा सुनाई गई थी, लेकिन न तो उन्हे और न ही डेनियल को "निष्कासन" का दण्ड दिया गया, जिसकी माग सरकारी वकील ने की थी।

२२—इस्तगासे ने अपने पक्ष को मजबूत बनाने के लिये यह और ऐसे जो अन्य तरीके अपनाये उनका डेनियल ने अपनी अन्तिम सफाई मे स्पष्ट रूप से विवरण दिया है और उनकी वास्तविकता बताई है।

कुतियाओ की तरह विलक्षण तरीके से घिसटती हुई चलती हैं या शुतुरमुर्गों की तरह अत्यधिक दुबली होती हैं, या उनके सूजे हुए शरीर होते हैं, नीली शिराए बाहर उभरी रहती है, वे रूई भरी चोलियां या शरीर का उभार प्रदर्शित करने वाले अधोवस्त्र पहनती हैं।"

आपको यह उद्धरण ढूंढने पर भी डेनियल-अर्जहक की रचनाओं मे नही मिलेगा, क्योंकि यह वस्तुत: सिन्यावस्की टेरट्ज की रचना "दि ट्रायल बिगिन्स" का है।[23] उक्त उद्धरण का अर्थ केवल उसके संदर्भ मे ही स्पष्ट हो सकता है, जिसका सकेत भी इरेमिन ने नही किया। इस कथा की नायिका एक आइने के सामने बैठी, अपना रूप निहार रही है, और वह अपने मन मे अपनी तुलना अपने समय की अन्य स्त्रियो से करती है। और उक्त उद्धरण मे जो बातें कही गई हैं, वे इस नायिका का स्वगत कथन हैं।

इरेमिन आगे लिखते है: "वे हमारे देश की किसी भी वस्तु को किसी बात को पसन्द नहीं करते, उनके लिये यहां कुछ भी पवित्र नही है...... हमारी जन्म भूमि की बहुराष्ट्रीय संस्कृति मे उनके लिये कोई भी बात पवित्र नही है और वे सोवियत व्यक्ति को प्रिय प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक बात की निन्दा करने, उसका अपमान करने और उसका महत्व घटाने के लिये तत्पर है। और यही बात अतीत और वर्तमान की प्रत्येक बात पर लागू होती है। क्या आप कल्पना कर सकते है कि उन्होने ऐंटन पावलोविच चेखोव के बारे मे क्या लिखा: "चेखव को तो उसकी भद्दी नुकीली दाढी से पकड़ कर घसीटना चाहिये और उसकी नाक उसके अपने क्षय रोग के थूक मे रगड़ देनी चाहिये।"

यह उद्धरण टेरट्ज के कहानी सग्रह फैंटास्टिक स्टोरीज[24] से दिया है और यह एक अर्द्ध-विक्षिप्त व्यक्ति के प्रलाप का अश है, जो पुराने बडे लेखकों और उनके गौरव-ग्रन्थो से भयकर ईर्ष्या करता है।

सिन्यावस्की पर यह भी आरोप लगाया गया कि उसने सोवियत सेना के बारे मे अपमानजनक और अपवाद फैलाने वाली बाते कही। लेकिन इस कथन की पुष्टि मे कोई भी उद्धरण प्रस्तुत नही किया गया। अन्त मे, और जो भयकरतम आरोप था, इरेमिन ने लिखा कि इन लेखको ने लेनिन के बारे मे ऐसी भयंकर बाते लिखी हैं, जिनका उद्धरण वे यहा देने का साहस भी नही कर सकते। पश्चिम मे सिन्यावस्की की जो रचनाए उपलब्ध है और जिनमे लेनिन के बारे में "सर्वाधिक भयकर" बाते हैं उन मे आन सोशलिस्ट रियलिज्म का एक अंश है, जिसमे उन्होंने कहा है कि लेनिन की पूजा के स्थान पर स्तालिन की पूजा शुरू करना असंभव है, क्योकि "लेनिन एक सामान्य व्यक्ति से अत्यधिक समानता रखते है और उनका स्वरूप अत्यधिक यथार्थवादी है: छोटा कद, गजा सिर, और नागरिक वस्त्र[25]" और एक स्थान पर दि मेकपीस एक्सपेरीमेंट मे लेनिन का उल्लेख हुआ है, लेकिन उसे लेनिन की प्रतिष्ठा के

२३—"दि ट्रायल बिगिन्स", पृष्ठ २७।

२४—दि आइसिकल एण्ड अदरस स्टोरीज पृष्ट १८८

२५—आन सोशलिस्ट रियलिज्म पृष्ट ९२

विरुद्ध नही कहा जा सकता और यह बात उस व्यापक विश्वास के अनुरूप है कि अपने जीवन के अन्तिम दिनों मे "वे चन्द्रमा की तरफ देखकर भौंकते थे, हमारे इलिच, यह जानते हुए कि उनका अन्त समीप है।"[२६] (सिन्यावस्की के लेनिन सम्बन्धी विचार के सम्बन्ध मे देखिए मुकदमे की दूसरे दिन की कारवाई)

सदर्भ से अलग हटा कर दिये गये ऐसे उद्धरणो के द्वारा ईरेमिन ने नैतिक पतन का मामला तैयार करने की कोशिश की, जो एक ऐसा अभियोग है, जिस पर कानून के अन्तर्गत कोई कारवाई नही की जा सकती। इस मामले को फिर दण्डनीय आचरण मे बदलने के लिये, इरेमिन ने जोर देते हुए यह बात कही कि सिन्यावस्की और डेनियल ने अपनी रचनाओं के द्वारा सोवियत सघ के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध छेड़ा है और इस प्रकार उन लोगो को सहायता पहुचाई है जो अन्तर्राष्ट्रीय सघर्ष की आग भडक ने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार ये लोग, इरेमिन के अनुसार, केवल नैतिक दृष्टि से । पतित नही है, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद के जासूस भी है और—अदालत के निण य का पूर्वानुमान लगाते हुए यह सिफारिश की कि इनके प्रति "दया या उदारता नही व तो जानी चाहिये।"

इरेमिन के लेख से—यदि यह इसके इरादो मे से एक रह। हो तो—पश्चिम मे फैली चिन्ता को समाप्त करने मे कोई सहायता नही मिली। यह बात अविश्वसनीय दिखाई पड़ रही थी कि सोवियत अधिकारी एक ऐसे मामले के बारे मे मुकदमा चलायेंगे, जिसे अदालत मे पेश होने से पहले ही इस प्रकार पूर्वाग्रह के प्रदर्शन से क्षति पहुचाई जा सकती है। इन लेखको की गिरफ्तारी के विरुद्ध निरन्तर बढते विरोध प्रदर्शन के कारण कुछ हिचकिचाहट के चिह्न वस्तुत. दिखाई पडे।[२७] सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के मुख पत्र "प्रावदा" ने इस सम्बन्ध मे कुछ नही कहा। "इजवेस्तिय" ने इस मामले को आगे बढाने और लेखकों के विरुद्ध कृत्रिम रोष के अभियान को जीवित रखने के लिये यह लिखा कि इरेमिन के लेख के प्रकाशन के बाद लोगो ने "व्यापक और जबरदस्त क्रोध प्रकट किया है लेकिन इसके प्रमाण स्वरूप वह मुश्किल से तीन पत्र ही प्रकाशित कर सका और ये पत्र भी प्रान्तो के अज्ञात बुद्धिवादियो के पत्र थे, जो किसी भी रूप से निर्णायक महत्व के नही थे। उनके तर्क प्रभावहीन थे और ये तीनो पत्र एक सकलन की दृष्टि से भी बडे विचित्र थे। ऐसे मामलों में पहले जैसा होता था और बहुत बडी सख्या मे विरोध पत्र लिखे जाते थे और चारो ओर विरोध की आवाज उठाई जाती थी, उसका पूरी तरह अभाव था।

२६—दि मेकपीस एक्सपेरीमेंट, कोलिन्स एण्ड हार्वेल प्रैस, पृष्ठ १४२ (बाद की सब पृष्ठ सख्याएं इसी सस्करण के अनुसार है)। लेनिन सम्बन्धी एक अन्य उल्लेख को, जिस पर इस्तगासे ने आपत्ति की पृष्ठ १२६ पर देखा जा सकता है।

२७—सोवियत सरकार को इन लेखको की रिहाई के लिये जो अपीलें भेजी गई, उनमे सबसे अधिक प्रभावशाली अपील यूरोप और अमरीका के ४६ प्रमुख लेखको की अपील थी, जिसका प्रकाशन लन्दन टाइम्स के ३१ जनवरी १९६६ के अक मे हुआ।

२२ जनवरी १६६६ को साहित्यिक गजट[28] मे एक लेख प्रकाशित हुआ, जो इरेमिन के लेख से अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत था, लेकिन यह पूर्वाग्रहग्रस्त आलोचना की दृष्टि से किसी भी रूप में कम नहीं था। इसकी लेखिका जोया केदरीना थी (मुकदमे के दौरान केदरीना तथाकथित जन अभियोक्ता के रूप मे पेश हुई अर्थात् इस्तगासे की तरफ से एक "विशेषज्ञता प्राप्त" गवाह के रूप मे पेश हुई)। इरेमिन की तरह ही केदरीना ने भी अपने तर्कों को संदर्भ से अलग हटा कर दिये गये उद्धरणो की सहायता से प्रभावशाली बनाने की चेष्टा की और डेनियल अर्जेहक के एक उद्धरण का बार-बार उल्लेख किया और इसे आतंक फैलाने के लिये लोगो को उकसाने का प्रमाण बताया। केदरीना ने कहा कि यह उद्धरण सोवियत शासन के विरुद्ध आतंक फैलाने का खुला आह्वान है और डेनियल-अर्जेहक को एक फासिस्ट बताया, जो रक्त रंजित युद्धो और कानून सम्मत सरकारो का तख्ता उलटने के कार्यक्रम, साम्यवाद मे आतकवादी तरीको से मुक्ति के एक कार्यक्रम का प्रचार और समर्थन करता है।

केदरीना के लेख का शेष भाग, लेखको के विरुद्ध नैतिक या दण्डनीय कदाचार को सिद्ध करने से सम्बन्धित नही था (केवल सिन्यावस्की पर यहूदी विरोध का एक नया आरोप लगाया गया—सिन्यावस्की की कहानियों के यहूदी-विरोधी पात्रो के शब्दो को, स्वयं लेखक के यहूदी-विरोधी विचार बता कर इस बात को प्रमाणित करने की चेष्टा की गई), बल्कि यह दर्शाने से सम्बन्धित था कि ये दोनो लेखक, लेखक के रूप मे एकदम घटिया है। इनकी रचनाओं को आदिम जमाने जैसी और ऊबा देने वाली बताया गया और सिन्यावस्की के बारे मे तो यह विशेष रूप से कहा गया कि वह चौथे दर्जे के, किराये पर लिखने वाले, लेखक जैसे है और इनकी रचनाए क्रांति से पहले के अश्लील साहित्य लिखने वाले लेखको से गहराई से प्रभावित है। केदरीना ने सिन्यावस्की पर काफका, साल्तीकोव और सोलोगुब की रचनाओ से चोरी करने का आरोप भी लगाया। सिन्यावस्की (टेरटज) के साहित्यिक महत्व और उपलब्धि के बारे मे मदाम केदरीना से बहस मे हिस्सा लेने की आवश्यकता नही है लेकिन इस ओर ध्यान देना आवश्यक है कि उन्होने सिन्यावस्की पर इस प्रकार प्रहार किया जिसका स्पष्ट उद्देश्य सिन्यावस्की के प्रति सोवियत लेखको की सहानुभूति को समाप्त करना था, जो उन्हे एक महत्वपूर्ण और योग्य समालोचक के रूप मे ही जानते थे, लेकिन जिन्हे विदेशो मे दूसरे नाम से प्रकाशित उनकी रचनाए प्राप्त नही थी। केदरीना की आलोचना की भाषा, अत्यधिक आपत्तिजनक थी और उसमें दोनो लेखको को स्मरद्याकोव का उत्तराधिकारी बताया, जो पूरे रूसी साहित्य के सबसे घृण्य पात्रो मे से हैं।

मुकदमा

मुकदमा १० फरवरी १६६६ को शुरू हुआ और चार दिन चला। इस मुकदमे के बारे मे अनेक असामान्य बातें थी और एक दृष्टि मे तो यह अभूतपूर्व था। अर्थात् सोवियत-

२८—लीतेरातुरनाया गोजेता।

सघ के इतिहास मे पहली बार लेखको पर उनकी रचनाओ के कारण मुकदमा चलाया गया। इससे पहले अनेक सोवियत लेखको को जेलों मे डाला गया, निष्कासित किया गया, गोली से उड़ाया गया या उनका किसी न किसी तरीके से मुंह बन्द कर दिया गया। लेकिन यह कार्य कभी भी किसी मुकदमे के बाद नही हुआ, जिसमे उनके विरुद्ध प्रमुख साक्षी और प्रमाण स्वय उनकी रचनाए ही रही हों। कभी गुमिलयोव को इसलिये गोली से उडा दिया गया कि उसने कथित क्राति विरोधी षड्यन्त्र मे हिस्सा लिया था। बोरिस पिलन्याक की, तीसरे दशक के उत्तरार्द्ध मे, विदेश मे अपनी पुस्तक प्रकाशित करने के लिये भर्त्सना की गई, लेकिन उन पर मुकदमा नही चलाया गया। लेकिन जब अन्तत १९३७ मे उन्हे गिरफ्तार किया गया और न जाने कहा गायब कर दिया गया, तब उनके विरुद्ध किसी भी अभियोग का उल्लेख नही हुआ। आइज़क बाबेल को १९३९ मे गिरफ्तार किया गया और यह गिरफ्तारी प्रकट रूप से उनकी किसी रचना के कारण नही—उन्होने कई वर्षों से शायद ही कोई रचना प्रकाशित की थी—बल्कि गैर-साहित्यिक कारणो से की गयी, लेकिन इन कारणो का कभी भी उल्लेख नही किया गया। १९४६ मे अखमातोवा और ज़ोशचेनको की सोवियत विरोधी भावना से लिखने के लिये भर्त्सना की गई। लेकिन उनके विरुद्ध मुकदमा नही चलाया गया और न ही कोई प्रशासनिक कारवाई की गई। बस उन्हे सोवियत लेखक सघ से निकाल दिया गया। बोरिस पास्तरनेक, जिन्होने सोवियत शासको की स्पष्ट अवहेलना करते हुए विदेश मे डा० झिवागो का प्रकाशन किया, पर प्रहार किये गये और उन्हे सताया गया, उन्हें सूअर और प्रतिक्रियावादी कहा गया। लेकिन उनके विरुद्ध कोई कानूनी कारवाई नही की गई। एक लेखक के विरुद्ध मुकदमा चलाये जाने का एक हाल का उदाहरण, जो सिर्फ ब्रोदस्की का है, जिनके विरुद्ध लेनिनग्राद मे मुकदमा चलाया गया। पर उन पर "परजीवी होने यानी दूसरे की आय पर जीने" का आरोप लगाया गया और उनकी रचनाओ का, उनके विरुद्ध प्रमाण रूप मे प्रस्तुत करने मे उपयोग नही किया गया।

सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे की दूसरी असाधारण बात यह थी कि अभियुक्तो ने अपना अपराध स्वीकार नही किया। इस बात से सरकारी पक्ष स्पष्ट रूप से चकित रह गया और मुकदमे की कारवाई मे जो असगत और विचित्रता दिखाई पडती है उसका अशत यह कारण हो सकता है। तास समाचार एजेंसी के अनुसार[२९] इन दोनो लेखको ने आरम्भिक जाच के दौरान अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। यह जाच पाच महीने चली थी, लेकिन उन्होने अदालत मे अपनी अपराध की स्वीकारोक्ति को वापस ले लिया। यह निश्चित है कि स्तालिन के शासनकाल मे यह बात कभी नही हो सकती थी, क्योंकि किसी भी व्यक्ति पर उस समय तक खुले रूप से मुकदमा नही चलाया जाता था, जब तक अधिकारी इस बात से पूरी तरह आश्वस्त नही हो जाते थे कि पहले से तैयार प्रत्येक विवरण के अनुसार ही मुकदमे की कारवाइ सम्पादित होगी। इस सम्बन्ध मे यह

२९—प्रावदा, ११ फरवरी १९६६।

कहा गया है कि इस मुकदमे में अभियुक्तो द्वारा "अपना अपराध स्वीकार न करने" से यह प्रकट होता है कि सोवियत न्याय-व्यवस्था मे सामान्य सुधार हुआ है। सोवियत न्याय-व्यवस्था मे सुधार के बारे मे बेहतर उदाहरण सम्भवत. प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

इस मुकदमे और इसके सचालन के सम्बन्ध मे जो सर्वोत्तम बात कही जा सकती है वह यह है कि—नि.सदेह उनके अप्रत्याशित साहस के कारण—अभियुक्त अपनी बात कह सके और अपनी इच्छा के अनुरूप तर्कों से अपनी सफाई दे सके। शुद्ध तकनीकी दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि मुकदमे की जो व्यवस्था थी, वह इन दोनों लेखकों के लिये अत्यधिक अनुचित थी—प्रतिवादियो की ओर से जो लिखित बयान दिये गये उनमे से एक भी अदालत मे पेश नहीं किया गया, जिनमे प्रसिद्ध लेखक कान्सतान्तिन पौस्तोवस्की का बयान भी शामिल है और केवल प्रतिवादियो की ओर से केवल एक गवाह को ही पेश करने की अनुमति दी गई। सरकारी पक्ष ने दोनो लेखको के अनेक मित्रो और परिचितो को गवाह के रूप मे पेश किया। ये सब गवाह मुकदमे से पहले ही या अधिकारियो द्वारा, तैयार कर लिये गये थे और इनसे बडी सावधानी से पूछताछ की गई थी और इनसे यह आशा थी कि वे अदालत मे प्रतिवादियो का आरोप सिद्ध करने के लिये आवश्यक गवाही देकर अपनी भूमिका निभायेगे। इन गवाहो की इस बात के लिये प्रशसा की जानी चाहिये कि उन्होने ऐसी बातो के अलावा अन्य कुछ नही कहा जिनका खण्डन किया जा सकता था और उस प्रकार आचरण किया जो पूरी तरह से प्रतिवादियो के लिये लाभप्रद था। सरकारी पक्ष के दो सबसे बडे गवाह, रेमेजोव और खमेलनित्स्की, जो सरकारी गवाह के रूप में पेश किये गये थे, सहायक सिद्ध नही हुए। मुकदमे से पहले उन्होने चाहे कितना भी सहयोग क्यो न दिया हो, लेकिन वे अदालत मे वह भूमिका निभाने के लिये तैयार नही थी, जिसकी उनसे आशा की गई थी। यह सोवियत संघ मे उदार नीतियो और उदार जनमत की निरन्तर बढती शक्ति का प्रमाण है कि ये लोग अधिकारियो की इच्छा के अनुरूप कार्य न करने के कारण, उनके विरुद्ध अधिकारी जो कारवाई कर सकते थे, उसकी तुलना मे लोगों की घृणा का पात्र बनने मे कही अधिक भयभीत थे।

सोवियत सघ के समाचारपत्र उन मुकदमो की कारवाई के समाचार देने के अभ्यस्त नही हैं, जिनमे प्रतिवादी अपना अपराध स्वीकार नही करते। और जिनमे प्रतिवादियो और वादियो के बीच बहस होती है, जिसकी कल्पना पहले कभी नही की गई और जिसका कभी उल्लेख नही हुआ। प्रावदा, इजवेस्तिया और साहित्यिक गजट मे इस मुकदमे की कारवाई सम्बन्धी समाचार इस प्रकार छपे मानो यह मुकदमा सरकारी पक्ष के लिये न्यायिक और नैतिक दृष्टि से महान् विजय रहा हो। ये समाचार रूसी व्यंग्य की परम्परागत शैली मे लिखे गये और अदालत के निर्णय से पहले ही दोनो लेखको के अपराध को स्वय सिद्ध मान लिया गया। इन लेखको पर गहरे व्यग्य किये गये या हास्यास्पद सीमा तक बढ़ा चढ़ाकर प्रकट किये गये क्रोध का उल्लेख किया गया और इन्हे कायर अपराधियो के रूप मे प्रस्तुत किया गया, जो इस्तगासे के भयकर प्रहार और अकाट्य तर्कों के समक्ष असहाय रूप से

गिड़गिड़ा रहे हो। इन अत्यधिक पूर्वाग्रहग्रस्त और अतिरंजित रिपोर्टों से, सोवियत पाठको के लिये यह अनुमान लगाना असंभव था कि मुकदमे की कारवाई वस्तुत: कैसे चली।

मुकदमे के बाद

इस मुकदमे की विदेशो मे क्या प्रतिक्रिया हुई, उसका विस्तार से विवरण देना आवश्यक नही है। निम्नलिखित, अपेक्षाकृत कम उग्र उदाहरण ही पर्याप्त होगा

"मुकदमे की सुनवाई से पहले अभियुक्तो पर सोवियत समाचारपत्रो मे जो प्रहार हुए उनमे यह मान कर आलोचना की गई, मानो अभियुक्त वस्तुत अपराधी हो। इसी प्रकार तास समाचार एजेंसी ने मुकदमे की सुनवाई के जो विवरण जारी किये उनसे भी यही भाव प्रकट होता था। मुकदमे की कारवाई का निरपेक्ष और पूरा विवरण प्राप्त न होने के कारण, बाहर के लोग मुकदमे की कारवाई के बारे मे सही अनुमान नही लगा सकते। अदालत ने अभियुक्तो को अपराधी पाया है, लेकिन इस्तगासे और सफाई पक्ष के जिन प्रमाणो और गवाहियो के आधार पर अदालत इस निर्णय पर पहुची, उन्हे प्रकाशित नही किया गया है। यह ही आवश्यक नही है कि न्याय किया जाये, बल्कि यह भी आवश्यक है कि सब लोग यह अनुभव करें कि न्याय हुआ है। दुर्भाग्यवश, यह बात इस मुकदमे के सम्बन्ध मे नही कही जा सकती।"

ये उद्गार ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के महामन्त्री जॉन गोलान ने प्रकट किये।[३०]

यहा तक कि लुई एरागो ने भी, जिन्होने इससे पहले कभी भी सोवियत रूस के प्रति अपनी अटल निष्ठा मे जरा सी भी कमी, सार्वजनिक रूप से प्रकट नही होने दी थी, इस मुकदमे को असह्य पाया और फ्रास की कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष वालदेक-रोचेत से परामर्श के बाद एक वक्तव्य जारी किया, जो ह्यूमेनाइट मे प्रकाशित हुआ, जिसमे मुकदमे की सुनवाई के तरीके की निन्दा की गई थी। पी० ई० एन० ने इस मुकदमे पर "गहरा आघात और भय" प्रकट किया। स्वीडन की नोबेल पुरस्कार समिति ने, राष्ट्रपति पोदगोर्नी को तार भेज कर अभियुक्तो को क्षमादान देने का अनुरोध किया। इस समय तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस मुकदमे और इसके परिणाम के प्रति चिन्ता की अभिव्यक्ति मे अत्यधिक मतैक्य कायम हो चुका था और यह मतैक्य समस्त राजनीतिक सीमाओ को पार कर कायम हुआ था।

पर स्वय सोवियत सघ के भीतर क्या प्रतिक्रिया हुई? विदेशो मे हुई आलोचना के प्रति सरकारी तौर पर विशेष विरोध प्रकट नही किया गया। विदेशो के कम्युनिस्टो और वामपथी क्षेत्रो द्वारा जो विरोध प्रकट किया गया था, उसका प्रत्यक्ष रूप से कोई उल्लेख नही किया, लेकिन प्रावदा[३१] ने अस्पष्ट रूप से यह कहा कि पश्चिम के "कुछ प्रगतिवादियो" को

३०—डेली वर्कर, १५ फरवरी, १९६६

३१—२२ फरवरी, १९६६

यह सोचने के लिये गुमराह किया गया है कि सिन्यावस्की और डेनियल पर उनकी रचनाओ के कारण मुकदमा चलाया जा रहा है, जबकि तथ्य यह है कि उनके ऊपर "सोवियत शासन और सोवियत क्रांति के विरुद्ध किये गये अपराधों" के कारण मुकदमा चलाया जा रहा है। इन लोगों को उनकी रचनाओ की "आलोचनात्मक भावना के लिये नही" बल्कि "अपमान-जनक बातें कहने और अपवाद फैलाने" के लिये दण्ड दिया गया है। प्रावदा ने यह बात भी जोर देकर कही कि मुकदमा निष्पक्ष रहा, इसकी सुनवाई का तरीका सही था और फैसला न्यायसगत · "यह मुदकमा जिस सावधानी से और जिस निरपेक्ष तरीके से चलाया गया, वह सोवियत शासन के लोकतन्त्री स्वरूप का प्रत्यक्ष उदाहरण है। यह बात बडी विचित्र है कि अदालतो से, शत्रु के उन विचाग्धारा सम्बन्धी एजेटो के प्रति "नरम दृष्टिकोण" अपनाने की आशा की जाये, जिन्हे अपवाद फैलाने के कार्य मे रगे हाथो पकड़ा गया है।" यहा "विचारधारा सम्बन्धी" शब्द का प्रयोग बडा दिलचस्प है। इस शब्द के प्रयोग से यह बात प्राय: सिद्ध हो जाती है कि सोवियत शासक यह स्वीकार करते हैं कि सिन्यावस्की और डेनियल पर "विचार-धारा सम्बन्धी" अतिरेको के कारण मुकदमा चलाया गया और उन्हे सजा दी गई या दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि उन्हे सोवियत शासको द्वारा मान्य विघारधारा से भिन्न विचार प्रकट करने के लिये दण्डित किया गया।

इस बात के प्रमाण है कि इस मुकदमे की तुरन्त प्रतिक्रिया स्वरूप सोवियत शासन के कुछ सदस्यो ने भी जो बाते कही, वे उलझनभरी और इस सम्बन्ध मे खेद प्रकाशन जैसी थी कि इस मामले के बारे मे ऐसा रवैया अपनाया गया। सोवियत शासन से सबधित ये वे व्यक्ति है, जिन्हे विदेशियो के सम्पर्क मे आने का विशेषाधिकार प्राप्त है। लन्दन सण्डे टाइम्स के विदेश विभाग के सम्पादक, फ्रैंक गाइल्स, जो फरवरी १९६६ मे श्री हैरोल्ड विलसन की तीन दिन की मास्को यात्रा के दौरान मास्को गये थे, यह समाचार दिया .

"मैंने जिन लोगो से बातचीत की उनमे से किसी ने भी इस बात को ठीक नही बताया कि इन दोनो लेखको ने विदेशो मे छद्म नामो से अपना साहित्य प्रकाशित किया। लेकिन उदार विचारो वाले अनेक लोगो ने मुकदमे और कठोर दण्ड के प्रति खेद प्रकट किया। एक अधेड उम्र के बुद्धिजीवी ने कहा कि इस मामले के सम्बन्ध मे कही बेहतर तरीके से कारवाई की जा सकती थी। इन लोगो की, इनके दोमुहे कार्यों के लिये समाचारपत्रों मे कड़ी आलोचना की जा सकती थी और इसके बाद समाज मे उन्हे जिस अपमानजनक स्थिति मे रहना पड़ता, उसमे रहने के लिये उन्हे छोड़ दिया जाना चाहिये।"[३२]

सम्भवत इस दृष्टिकोण मे विवेकपूर्ण मत प्रकट होता है और सभवत अधिकारियो को यही दृष्टिकोण अपनाना चाहिये था और न्यायाधीशो तथा यहा तक कि पुलिस के एक भाग मे भी मुकदमे की सुनवाई से पहले पाच महीनो मे हुई आरम्भिक जाच के दौरान यह दृष्टिकोण अपनाने की बात कही गई। अधिक उदार दृष्टिकोण रखने वाले अधिकारियो ने

३२. सण्डे टाइम्स, लण्डन, फरवरी १९६६।

यह कहा होगा कि बन्द कमरे मे इन दो लेखको पर मुकदमा चलाना और मुकदमे से पहले उन्हे बदनाम करने के लिये समाचारपत्रो मे अभियान छेडना, अच्छी बात नही होगी, क्योकि इससे स्वदेश और विदेश मे जनमत, सोवियत सरकार के विरुद्ध हो जायेगा और इससे एक बार फिर सोवियत न्याय-व्यवस्था की प्रतिष्ठा को धक्का पहुचेगा।

इस पुस्तक मे जो विभिन्न दस्तावेज़ दिये गये है (अध्याय ४ मे अप्रकाशित पत्र) उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सोवियत रूस के बुद्धिवादियों मे इन दोनो दण्डित लेखको के प्रति व्यापक सहानुभूति है। पहले समय मे, जैसा कि पास्तरनेक के मामले मे हुआ, जब उन पर १९५८ मे नोबेल पुरस्कार स्वीकार करने के लिये सोवियत अधिकारियों द्वारा चारो ओर से प्रहार किये जा रहे थे, नैतिक समर्थन देने का एक मात्र व्यावहारिक तरीका केवल यह था कि ये उदार बुद्धिवादी मौन रहे और अधिकारियो द्वारा सचालित निन्दा अभियानो मे हिस्सा न लें। लेकिन उस समय से सोवियत बुद्धिवादी अपनी बात अब कही अधिक स्पष्ट रूप से कह सकते हैं और उन्हे एक समुदाय के रूप मे अपनी शक्ति का भी कही अधिक भान हो गया है। सिन्यावस्की और डेनियल के मामले ने बुद्धिवादियों मे अब तक अकल्पित एकता को जन्म दिया। लेखको और बुद्धिवादियों द्वारा मुकदमे के विरुद्ध पत्र लिखना और उन्हे प्रचारित करना, एक ऐसी महत्वपूर्ण बात है, जिससे यह प्रकट होता है कि अधिकारीगण लेखको और बुद्धिवादियों का समर्थन प्राप्त करने मे असफल रहे। मुकदमे के बाद सामूहिक रोष की जो पहली अभिव्यक्ति प्रकाशित हुई, वह प्रभावशाली नही थी। छ उज़बेक लेखको ने इजवेस्तिया को एक तार भेजा जिसमे अत्यधिक चयनीय सीमा तक पुरानी घिमीपिटी शैली मे अन्य बातो के अलावा यह कहा गया · "हमे इस समाचार से बडा सतोष हुआ कि देशद्रोहियो को जनता की अदालत मे पेश किया गया और उन्हे उचित दण्ड मिला।"[33] दण्ड के समर्थन मे साहित्यिक गजट[34] मे एक खुले पत्र के रूप मे अत्यधिक घटिया भाषा मे "लेखक सघ के सचिव मण्डल" की ओर से एक अनाम वक्तव्य प्रकाशित हुआ। इसके अलावा सामूहिक रूप से हस्ताक्षरित[35] जो एक अन्य पत्र लिखवाने मे अधिकारी सफल हुए, वह अभियुक्तो के सहयोगी लेखकों की ओर से नही था, बल्कि मास्को विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान सकाय के १८ प्रोफ़ेसरो और अध्यापको की ओर से था, जहा एक समय सिन्यावस्की विद्यार्थी रह चुके थे। लेकिन इस पत्र ने मास्को विश्वविद्यालय के विद्यार्थियो मे भयकर प्रतिक्रिया को जन्म दिया। ये विद्यार्थी उक्त पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले एक प्रोफेसर की कक्षा से उस समय बाहर निकल आये, जब उसने यह स्वीकार किया कि उसने पत्र पर स्वेच्छा से हस्ताक्षर किये थे।[36] बहुत कम बुद्धिवादी ही इरेमिन, केदरीना और अरकादी वासिमयेव, एक कम जाना माना

३३—२३ फरवरी १९६६

३४—२२ फरवरी १९६६

३५—साहित्यिक गजट १५ फरवरी १९६६

३६—२७ जून १९६६ के न्यूयार्क टाइम्स मे प्रकाशित समाचार देखिए।

उपन्यासकार जो जन-अभियोक्ता के रूप में अदालत में पेश हुआ, के सुर में सुर मिला कर नैतिक अलगाव की जोखिम उठाने के लिये तैयार नहीं थे। अभिनेत्री ई० गोगोलेवा ने ईवनिंग मास्को[37] को एक पत्र भेज कर मुकदमे के फैसले को अपना समर्थन दिया और एक साहित्यिक समाचारपत्र के सम्पादक के० पोजदन्ययेव ने भी स्वयं इसकी पुष्टि की।[38] एक अन्य मामूली व्यक्ति द्वारा मुकदमे को समर्थन देने की बात भी उल्लेख आवश्यक है। जून १९६६ में साहित्यिक पत्रिका ओकत्यावर ने यह समाचार दिया कि इन दोनो, प्रतिक्रियावादियों पर रूसी सोवियत समाजवादी गणराज्य के लेखक संघ की महासभा में अनेक वक्ताओं ने प्रहार किया और कवि एस० वी० स्मिरनोव ने निम्नलिखित कविता पढी, जो उन्होने मुकदमे का फैसला सुनाये जाने के तुरन्त बाद लिखी थी :

मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हूं,
यह उजागर है, जग जाहिर है,
कि 'पंचमाग' की कल्पना,
आग भी सामयिक है,
और जब ऐसे पशु सडाध फैलाते है,
जो देश के शत्रुओं को आकर्षित करती है,
तब भी कमजोर अथवा अंतर्धान नहीं होते ?
हमारी प्रिय तानाशाही।

अधिकारियो को विख्यात लेखको में से केवल माइखेल शोलोखोव से ही समर्थन प्राप्त हुआ। पार्टी के २३ वें अधिवेशन में शोलोखोव ने इन दो "प्रतिक्रिया वादियो" पर ही प्रहार नहीं किया बल्कि उन सोवियत बुद्धिवादियो पर कहीं अधिक प्रबल प्रहार किया, जिन्होने इन दोनों लेखको की ओर से हस्तक्षेप करने की कोशिश की थी— मैं उन लेखको में से हू, जो अन्य सोवियत नागरिको की तरह, इस बात पर गर्व करते हैं कि वे एक महान् और गौरवपूर्ण राष्ट्र का एक छोटा सा अंग है' ' ' हम अपनी सोवियत मातृभूमि को अपनी मा कहते हैं। हम सब एक महान् परिवार के सदस्य है। अतः हमें उन देशद्रोहियो के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिये, जिन्होने उन सब बातो पर प्रहार किया है, जो हमें सर्वाधिक प्रिय हैं ? एक रूसी कहावत है, जिसमें यह कटु सत्य कहा गया है कि "प्रत्येक परिवार में एक गद्दार होता है।" लेकिन अलग-अलग किस्म के गद्दार है। मैं समझता हू कि प्रत्येक व्यक्ति यह जानता और समझता है कि अपनी मा के लिये झूठी बातें कहना, उसका अपमान करना और उसके ऊपर हाथ उठाने से अधिक निन्दनीय और घृणित बात कोई नहीं हो सकती······मुझे उन लोगो के आचरण के लिये लज्जा है, जिन्होंने हमारी मातृभूमि के बारे में झूठी बातें कही हैं, और हमें जो कुछ प्रिय है उस पर कीचड उछाला है। ये लोग अनैतिक

३७—वही। १५ फरवरी १९६६

३८—लितेरातुरनाया रोसिया, १८ फरवरी, १९६६

हैं। मुझे उन लोगो के लिये लज्जा है, जिन्होने इन लोगो को बचाने की कोशिश की और कोशिश कर रहे हैं, चाहे इन्हे बचाने के उद्देश्य कुछ भी क्यो न रहे हों। मुझे उन लोगो के लिये दोहरी लज्जा है, जो इन दण्डित प्रतिक्रियावादियो का जामिन बनने को तैयार है। कुछ लोग मानवतावाद सम्बन्धी शब्दावली का प्रयोग कर दण्ड की कठोरता का रोना रोते है। यहा हमारी प्रिय सोवियत सेना के पार्टी सगठन के प्रतिनिधि मौजूद हैं। मैं उनसे पूछता हूं कि यदि उनकी किसी टुकडी मे कोई देशद्रोही दिखाई पडते, तो वे उनके साथ क्या सलूक करते ? हमारे सैनिको से बेहतर अन्य कोई भी व्यक्ति यह बात नही जानता कि मानवतावाद का अर्थ, निरर्थक कोमलता नही है······यदि इन धूर्तों को उनके काले अन्त करण सहित स्मरणीय तीसरे दशक मे गिरफ्तार किया गया होता, जब लोगो के ऊपर दण्ड सहिता मे स्पष्ट रूप से वर्णित धाराओ के आधार पर नही, बल्कि "क्रातिकारी न्याय के अनुरूप," मुकदमा चलाया जाता था, तो मैं समझता हू इन दोमुहे देशद्रोहियो को कुछ और ही प्राप्त होता। लेकिन अब हालत यह है कि लोग दण्ड की कठोरता की बात करते हैं[३६]।"

इस भाषण के उत्तर मे, लीदिया चुकोवस्काया यह कहती हैं कि इन शब्दो मे अपना मत व्यक्त करने के बाद शोलोखोव ने स्वय को सोवियत लेखको के एक बडे बहुमत से ही अलग नही किया, बल्कि उन्होने जानबूझ कर रूसी साहित्य की सर्वोत्तम परम्पराओ का भी उल्लंघन किया।

इस मुकदमे के सम्बन्ध मे दुखद बात केवल यह नही है कि दो लेखको को मान्य विचारधारा के विरुद्ध आचरण करने, अपवाद फैलाने और अपमानजमक बातें कहने के लिये ही दण्ड नही दिया गया बल्कि सोवियत न्याय व्यवस्था मे—जिसे अक्सर स्तालिन की विरासत मे प्राप्त "न्याय की हत्या" की परम्परा को समाप्त करने की इच्छा के रूप मे व्यक्त किया जाता था—सुधार के जो लक्षण दिखाई पड रहे थे उसे इस मुकदमे से गहरा आघात पहुचा। सिन्यावस्की और डेनियल का मुकदमा यह दर्शाने के लिये एक कसौटी का काम कर सकता था कि वस्तुत. "समाजवादी वैधानिकता" की स्थापना हो चुकी है और हाल के वर्षों मे सोवियत न्यायविदो मे कानूनी तरीके का सच्चे मायनो मे पालन करने की आवश्यकता के बारे मे जो बहस चली है, उसका वस्तुतः महत्व और अर्थ है। लेकिन जब इन अच्छे इरादो को एक राजनीतिक मुकदमे की कसौटी पर परखने का समय आया, तो हम देखते हैं कि स्तालिन के शासनकाल की तरह ही, शासन की आवश्यकताओ के समक्ष, कानून का शासन या कानून का पालन गौण बन गया। मुकदमे से पहले ही, यह निर्णय कर लिया गया था कि इन दोनो लेखको को एक मिसाल बना दिया जायेगा और वस्तुत उन्हे एक मिसाल बनाया भी गया—तथा कानून की खुल्लमखुल्ला उपेक्षा की गई। इस घटना से सोवियत जनता को आघात पहुचा है और वह भयभीत भी हुई है।

मुकदमे के विरुद्ध विरोध प्रकट करते हुए जो एक पत्र भेजा गया उसमे इजवेस्तिया

३६—प्रावदा २ अप्रैल, १९६६

के दिसम्बर १९६४ के अन्क मे प्रकाशित लेख का हवाला दिया गया है—इसी समाचारपत्र मे एक वर्ष बाद इरेमिन के निन्दापूर्ण लेख के द्वारा सिन्यावस्की और डेनियल के विरुद्ध सार्वजनिक अभियान का समारम्भ हुआ। उक्त लेख "समाजवादी न्याय के बारे मे" शीर्षक मे प्रकाशित हुआ था और यह एक लम्बा और अपने विषय का अधिकृत लेख था तथा इसके लेखक सोवियत संघ सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष, ए० गोर्किन थे। इस लेख मे ऐसे उदाहरणो को, जिनमे किसी व्यक्ति के अपराध को पहले से ही निर्णीत मान लिया जाता है "अतीत की पुनरावृत्ति" बताया "जब तक अदालत अपना निर्णय नही दे देती, जब तक अदालत अपना अन्तिम निर्णय नही सुना देती, किसी भी प्रतिवादी को दोषी नही मान लिया जा सकता और उसे अपराधी नही कहा जा सकता, चाहे उसके विरुद्ध कितने ही भारी और गहरे प्रमाण मौजूद क्यो न हो।" गोर्किन ने अपने लेख मे पुलिस और उन लोगो द्वारा जो मामले की आरम्भिक जाच करते हैं, अभियुक्त के अपराध को स्वयसिद्ध मान लेने की व्यापक व्यवस्था पर गभीर प्रहार किया। उन्होंने समाचारपत्रो द्वारा अदालतो के फैसले से पहले ही मामलो पर अपना निर्णय दे देने की प्रथा की विशेष रूप से आलोचना की और इसे सोवियत कानून के बुनियादी तत्वों के एकदम विपरीत बताया

"कभी-कभी समाचारपत्रो मे ऐसे लेख प्रकाशित होते हैं, जिनमे अदालत मे मामलों की सुनवाई से पहले ही अभियुक्तो को दोषी घोषित कर दिया जाता है और इस प्रकार उनके दण्ड के प्रश्न पर भी पूर्व-निर्णय दे दिया जाता है। समाचारपत्रो मे अदालतो की कार्य-प्रणाली की खामियो की आलोचना करना सभव और आवश्यक है। लेकिन अदालत के निर्णय का पूर्वानुमान लगाना और इस प्रकार उस पर दबाव डालने का अर्थ, अदालत की गलतियो को दूर करना नही, बल्कि इन गलतियो को जारी रखने मे सहायता देना है"।

अनेक रूसियो को इस बात पर भी सदेह है कि क्या सोवियत शासन द्वारा मान्य विचारधारा के विरुद्ध आचरण करने वालो और शासन के विरुद्ध अपमानजनक बातें कहने वालो के एक मामले मे सारे ससार के सामने सोवियत न्याय व्यवस्था को एक बार फिर अपमानित करने की आवश्यकता थी। यह सदेह सोवियत समाचार पत्र में प्रकाशित एक सवाद मे भी देखा जा सकता है, जिसे केवल ऐसपवादी टिप्पणी के रूप में ही समझा जा सकता है। कोमसोमोलस्काय प्रावदा ने १२ फरवरी के अपने अंक मे विशिष्ट रूप से एक लेख प्रकाशित किया। सिन्यावस्की—डेनियल मुकदमे के अन्तिम दौरे की रिपोर्ट जिस पृष्ठ पर प्रकाशित हुई उसमे दूसरे पृष्ठ पर एक लेख छापा गया। प्रकट रूप से यह लेख १८२८ में पुश्किन द्वारा सम्राट निकोलस प्रथम को लिखे गये एक पत्र के बारे में था। हाल ही मे इस पत्र की प्रमाणिकता सिद्ध हुई थी और कोमसोमोलस्काया प्रावदा के सवाददाता के

४०---ए० गोर्किन "ओ सोतस्थिया लिस्टेमकोम प्रावोसुदी," इजवेस्तिया, २ दिसम्बर, १९६४।

अनुसार, इस बात से पुश्किन का अध्यन करने वाले विद्वानो में हलचल मच गई थी।

सन् १८१८ मे पुश्किन ने दि गैवरिलियाद शीर्षक से एक लम्बी कविता लिखी, जिसे अनाम रूप मे प्रचारित किया गया। यह काव्य भयंकर रूप से धार्मिक मान्यताओ के विरुद्ध है, जिसमे यह दिखाया गया है कि लुसिफर और आर्चएंजेल (फरिश्ता) गैवरियेल एक दूसरे से विर्जिन मेरी (ईसा मसीह की माता) को पाने के लिये होड करते है, जिसके परिणामस्वरूप यह सवाल उठता है कि आखिर ईसा मसीह का पिता कौन था। जार सम्राटो के शासन काल मे रूस मे आर्थोडाक्स चर्च का अनुगमन होता था और इस चर्च द्वारा मान्य विचारधारा को ही, राज्य की मान्य विचारधारा समझा जाता था और उसका बड़ी कडाई से पालन होता था। सिन्यावस्की ने लेनिन के बारे मे जो मामूली सी धृष्टता-पूर्ण बाते कही हैं वे स्पष्टत· पुश्किन के इस भयकर धर्म विरुद्ध कथन और कल्पना के सामने तुच्छ है। इस कविता के लेखक का पता लगाने के लिये १८२८ मे एक सरकारी आयोग नियुक्त किया गया और व्यापक रूप से यह कहा जाता था कि पुश्किन इस कविता के लेखक हैं और उन्होने आरम्भ मे इस बात से स्पष्ट इन्कार किया कि उनका इस कविता से कोई सम्बन्ध है। इसके बाद सम्राट निकोलस प्रथम ने आयोग की उपेक्षा करते हुए पुश्किन को सीधे उनसे सम्पर्क कायम करने को कहा। पुश्किन ने निम्नलिखित पत्र लिखा, जिसे निकोलस प्रथम के पास पहुंचाया गया·

"सरकार द्वारा पूछताछ किये जाने पर मैंने यह नही समझा कि इस खिलवाड को जो लज्जाजनक होने के साथ-साथ कानून विरुद्ध भी है, स्वीकार करने के लिये मैं बाध्य हू· ··· लेकिन अब जबकि मेरे सम्राट मुझ से सीधे तौर पर यह बात पूछते है तो मैं यह कहता हूं कि सन् १८१८ मे मैंने दि गैबरिलियाद शीर्षक काव्य लिखा। मैं अपने आप को अपने सम्राट की दया और उदारता पर छोडता हू। महामहिम सम्राट का तुच्छ सेवक एलैक्जेडर् पुश्किन, १८२८।"

आयोग द्वारा लिखित रूप से यह पूछने पर कि उन्हे अपनी कारवाई आगे कैसे करनी चाहिये और क्या उसे भविष्य मे भी या और आगे पुश्किन से पूछताछ करनी चाहिये। निकोलस प्रथम ने अपनी यह विशिष्ट (कोमसोमोलस्काया प्रावदा के सवाददाता ने इसी शब्द का प्रयोग किया है) टिप्पणी लिखी "मैं इस मामले के बारे मे सब कुछ जानता हूं और यह समझता हूं कि अब इस सम्बन्ध मे आगे कारवाई की कोई आवश्यकता नही है[४१]।"

४१—लन्दन के डेली वर्कर के सम्पादकीय विभाग मे काम करने वाले किसी व्यक्ति ने इस तथ्य को समझा, क्योकि रूस के साहित्यिक इतिहास की इस गवेषणा के परिणाम को सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे के फैसले की उसके मास्को सवाददाता द्वारा भेजी गई रिपोर्ट के साथ ही एक स्थान पर छापा गया।

दोनो लेखक, मोदवीनियन 'स्वशासी गणराज्य" में पोतमा नामक स्थान पर अपनी सजा काट रहे हैं, जहा एक विशाल बलात् श्रम शिविर है। (अब शिविरो को "बस्तियां" कहा जाता है, जिससे इन्हे, कम से कम शाब्दिक रूप मे "स्तालिन की वीर पूजा के युग" की व्यवस्था से भिन्न रूप मे दर्शाया जा सके)। यह वही क्षेत्र है, जहां ओलगा आइविन्सकाया को, जो बोरिस पास्तरनेक की मित्र थी और जिनके आधार पर डाक्टर झिवागो की नायिका लारा का चरित्र-चित्रण हुआ, चार वर्ष तक कैद रखा गया था। सन् १९६० मे पास्तरनेक की मृत्यु के बाद खुफिया पुलिस द्वारा लगाये गये आरोपो पर, आइविन्सकाया को यह सजा दी गई थी। यहां ये दोनो लेखक इस तथ्य के उन कम जाने-माने मूक गवाहो के साथ रह रहे हैं कि आज भी रूस मे सोवियत शासन के अन्तर्गत साहित्यिक व्यवसाय उससे कही अधिक खतरनाक है, जितना जार सम्राटो के शासनकाल मे था।

सोवियत शासको ने अपने घनिष्ठतम विदेशी मित्रो की विवेकपूर्ण सलाह को भी सुनने से कडाई से इन्कार किया है। कम्युनिस्ट पार्टी के २३ वें अधिवेशन का वातावरण, जो अप्रैल १९६६ मे हुआ, निश्चित रूप से बुद्धिवादियो के विरुद्ध था और यह प्रायः पर्याप्त स्पष्ट दिखाई पडता है कि ख्रुश्चेव के बाद के नेता, चाहे उनके मन मे सिन्यावस्की डेनियल के मुकदमे जैसे शर्मनाक काम करने की बुद्धिमता के प्रति सदेह हो, लेकिन वे फिलहाल अपने देश के अधिक कट्टरपंथी और यहा तक कि स्तालिनवादी तत्वो को भी संतुष्ट रखने की नीति को जारी रखने का निर्णय कर चुके हैं। लेकिन इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिये कि इन नेताओ ने स्तालिन की पुनर्प्रतिष्ठा कर के इन तत्वों के समक्ष घुटने नही टेके, यद्यपि अधिवेशन शुरू होने से पहले के कुछ सप्ताहों में इस बात की संभावना बहुत अधिक दिखाई पड रही थी। कुछ हद तक बुद्धिवादियो के दबाव के कारण यह हुआ जो अब यह अनुभव करने लगे हैं कि सरकार से सौदेबाजी करने की उनमे कुछ क्षमता है। अधिवेशन शुरू होने से एकदम पहले इनमे से कुछ ने, जिनमे भौतिकी विज्ञानी पीतर कापित्सा, ग्राइगोर ताम्म, नृत्य नाट्य नर्तकी माया प्लीस्तरकाया और ब्रिटेन मे रूस के भूतपूर्व राजदूत, आइवन मायस्की शामिल थे, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम सचिव, लियोनिद ब्रेझनेव को एक पत्र भेजा और यह चेतावनी दी कि "स्तालिन की पुन. प्रतिष्ठा की दिशा मे कुछ भी कारवाई करने" के गभीर परिणाम होगे।[४२] अत अभी भी उन लोगों के बीच, जो पुराने जमाने को वापस लाना चाहते हैं और जो उदारतापूर्ण नीतियां और सुधार लागू कराना चाहते हैं, "शक्ति संतुलन" कायम है। सुधार चाहने वाले, न्यायपालिका को अधिक स्वतन्त्रता देकर खुफिया पुलिस आदि सगठनो के अधिकारो मे कमी कर के ऐसी व्यवस्था कराना चाहते हैं जिससे सिन्यावस्की और डेनियल जैसे मुकदमो के द्वारा न्याय का स्पष्ट उपहास कर पाना आसान न रहे।

४२—देखिए न्यूयार्क टाइम्स, २१ मार्च, १९६६।

जहां तक इस मामले का सम्बन्ध है, रूस के उदार नीतियो के समर्थक कुछ भी कर पाने मे सफल नही हो पाये हैं, लेकिन अभी भी इन उदारतावादियो का प्रभाव समाप्त नही हुआ है। साहित्यिक पत्रिका नोवी मीर, जिसमे सिन्यावस्की और डेनियल दोनो की रचनाएं प्रकाशित हुईं, अब तक एलैक्जेंडर त्वारदोवस्की के सम्पादन मे ही प्रकाशित हो रही है। यद्यपि हाल के अधिवेशन मे उनका कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य के रूप में फिर चुनाव नही हो सका, लेकिन वे निरन्तर "सच्ची साहित्यिक रचनाओ" के प्रकाशन के लिये कार्यरत है। नोवी मीर के मार्च १९६६ के अक मे अपने सम्पादकीय मे, इस अक की मास्को मे पार्टी अधिवेशन की समाप्ति के बाद बिक्री शुरू हुई, त्वारदोवस्की ने लिखा कि ऐसी रचनाए साम्यवाद के उच्च हित मे है और यह बात महत्वपूर्ण है कि "यथार्थ को उसके सच्चे रूप मे देखा जाये, उसे उसकी समस्त जटिलताओ मे देखा जाये और उसे उसके वास्तविक विरोधाभासो और विकास के सदर्भ मे देखा जाये।" उन्होंने चेतावनी दी कि "जब इस यथार्थ का सरलीकरण किया जाता है या इसे योजनाबद्ध बनाया जाता है तब कला कला नही रहती।" नोवी मीर के इस अक मे त्वारदोवस्की ने महान् रूसी कवयित्री अन्ना अखमातोवा को श्रद्धाजलि अर्पित की, जिनकी ५ मार्च को मृत्यु हुई थी। अन्ना अखमातोवा को निरन्तर अधिकारियो के अत्याचार सहने पडे। उनके भूतपूर्व पति, कवि गुमलियोव को सन् १९२१ मे गोली से उडा दिया गया, उनके पुत्र को १९३७ मे गिरफ्तार किया गया और ११४६ मे स्तालिन के सास्कृतिक अधिकारी, आन्द्रे झदानोव ने स्वय उनकी उग्र आलोचना की और उन्हे "आधी पादरिन और आधी वैश्या" बताया। त्वारदोवस्की ने अन्ना अखमातोवा की मृत्यु सम्बन्धी समाचार मे स्पष्टत झदानोव की उक्ति की ओर सकेत करते हुए लिखा .

"कवयित्री की ताजा कब्र के सामने खडे होकर, इन कटु आलोचनाओ के बारे मे मौन रहना पाप होगा, क्योकि अखमातोवा की साहित्यिक और भौतिक नियति सामान्य नही थी। उन्होने सब कठिनाइयो का, सब अग्नि परीक्षाओ का, उस गरिमा से सामना किया, जिसके प्रति केवल श्रद्धा ही उपज सकती है ····और कवयित्री पर जो प्रहार किये गये वे क्या है? जीवन ने स्वय इन प्रहारो को झुठला दिया है और वस्तुत इन आलोचनाओ ने पाठको के मन मे वह प्रतिक्रिया उत्पन्न की, जो आलोचक उत्पन्न नही करना चाहते थे—यह एक ऐसी बात है जो किसी भी झूठी और पूर्वाग्रहग्रस्त या निरपेक्षता रहित आलोचना से उत्पन्न होती है।"

एक बाहरी प्रेक्षक को इस क्षण एक ऐसे नेतृत्व का आभास मिलता है, जो परस्पर विरोधी प्रवृत्तियो के बीच बटा हुआ हो और जो सोवियत समाज मे, चाहे स्वय पार्टी के भीतर नही, एक दूसरे का उग्र विरोध करने वाले गुटो को यदि सतुष्ट नही तो कम से कम उन्हे नाराज न करने का प्रयास कर रहा हो। यह सम्भव है कि सिन्यावस्की और डेनियल का मामला—पार्टी के २३ वें अधिवेशन मे इस बात के कुछ सकेत भी मिले—"प्रगतिवादी" और "कट्टरपथी" विचारधारा के उग्र सघर्ष का केन्द्र बिन्दु बन गया है।

सिन्यावस्की—व्यक्तित्व और कृतित्व

लेखिका—हेलेन ज़ामोयस्का

सिन्यावस्की से मेरा पहला परिचय उस समय हुआ, जब मैं मास्को विश्वविद्यालय मे १९४७ से १९५० तक छात्रा रही। उन दिनो मेरे पिता फ्रासीसी दूतावास मे नौसैनिक सहचारी (अटेची) के पद पर काम कर रहे थे। सिन्यावस्की उन्ही दिनो सेना की लामबंदी खत्म होने पर सेवा मुक्त किये गये थे और तव तक सेना की वर्दी ही पहनते थे। हम लोग घडे घनिष्ठ मित्र बन गये। जब मैं फ्रास वापस लौटती तो हम एक दूसरे को पत्र लिखते और मैं जब कभी रूस जाती तो हमारी अवश्य मुलाकात होती।

उन्होने वाद मे मेरिया रोज़ानोवा-क्रुगलीकोवा से विवाह कर लिया। वे उम्र मे सिन्यावस्की से कुछ छोटी थी। वे एक विदुषी महिला है। कला मे उनकी गहरी अभिरुचि है, वे समवेदनशील, दूसरे के भावो को समझने वाली और अत्यधिक ईमानदार हैं। उन्होने कला के इतिहास का अध्ययन किया है और पुराने धार्मिक चित्रो को सुधारने मे विशेषज्ञता प्राप्त की है। वे कई वर्ष तक अत्यधिक सुन्दर और मौलिक गहनो का डिजाइन बनाने और उन्हें तैयार करने का काम करती रही है। वे मुझे अत्यधिक प्रिय हो गईं और मैं जव कभी मास्को जाती, वे और सिन्यावस्की सदा अपने घर मे मेरा स्वागत करते।

सिन्यावस्की दम्पति, एक सामूहिक फ्लैट मे एक कमरे मे रहते थे और उन्हे रसोई घर और नहाने के कमरे का इस्तेमाल, चार अन्य परिवारो के साथ मिल कर करना पडता था। नीचे तहखाने मे भी उन्हे एक छोटा सा कमरा मिला था, जिसका इस्तेमाल वे अध्ययन कक्ष के रूप मे करते थे। उनके रहने के कमरे की दीवारो पर केवल पुस्तकें और उत्तर रूस में संग्रहीत पुराने सुन्दर धार्मिक चित्र ही लगे हुए दिखाई पडते थे। उनके पास किसान कला का भी एक शानदार संग्रह था। कमरे में जो कुछ भी था, उससे सिन्यावस्की दम्पत्ति का अपने देश की मूलभूत संस्कृति के प्रति प्रेम मुखर होता था—और कमरे मे कदम रखते ही आप इस बात का अनुभव कर सकते थे।

मैंने हमेशा प्रसन्नतापूर्वक उनके आतिथ्य का लाभ उठाया। हम लोग प्रायः प्रत्येक विषय पर चर्चा करते, लेकिन विशेष रूप से साहित्य और कला की चर्चा होती क्योंकि ये ही ऐसे विषय थे, जिनमें हमारी सबसे अधिक दिलचस्पी थी। वहां मेरी मुलाकात उनके कई मित्रो से हुई, जिनमे यूली डेनियल भी थे। मेरे कुछ फ्रांसीसी मित्र डेनियल से मिलचुके थे और उन्होंने मुझे उनके आकर्षक व्यक्तित्व, सादगी और सम्भ्रांतता के बारे मे बताया था।

डेनियल ऐसे ही निकले। लम्बे, पतले दुबले, गहरे काले रग के बाल, हंसमुख और हाजिर जवाब यद्यपि कुछ शर्मालु भी। वस्तुत डेनियल के व्यक्तित्व मे कुछ बहुत आकर्षक अवश्य था। वे असाधारण रूप से अच्छे चुटकले निरन्तर सुनाते रह सकते थे, लेकिन जब वे कुछ विषयो जैसे १९२० के बाद के वर्षों की सोवियत कविता, के बारे मे बात करते तो अत्यधिक गभीर हो उठते, लेकिन उनकी इस गभीरता मे बनावट न होती। ऐसा लगता था कि स्वय उन्हे भी, उसी युग का होना चाहिये था, जिसे वे क्रातिकारी रूमानियत के प्रकाश से जगमगाता हुआ देखते थे। उनकी पत्नी, लारिसा, गभीर सौदर्य वाली युवती थी और उनमे बहुत अधिक कार्य शक्ति और मानवीयता थी। वे उस समय भाषा विज्ञान पर एक शोध-प्रबन्ध लिख रही थी, जिसके लिए उन्हे दो वर्ष बाद डिग्री मिली।

डेनियल दम्पति ने मुझे अपने नये फ्लैट मे आमत्रित किया। उन्हे इस पर बडा गर्व था—उनके पास अपने और अपने छोटे पुत्र के लिये दो कमरे थे और उन्हे केवल एक अन्य परिवार के साथ ही रसोईघर का इस्तेमाल करना पडता था।

सिन्यावस्की और डेनियल परिवार एक दूसरे से खूब मिलता और कम से कम सिन्यावस्की के बच्चे के जन्म तक मुलाकातो का यह क्रम इसी प्रकार चलता रहा। उनकी यह मित्रता आश्चर्यजनक नही थी, यद्यपि ये दोनो लेखक स्वभाव मे एक दूसरे से बहुत भिन्न थे (सिन्यावस्की कही अधिक तीखे और गहरे चुटल व्यग्य करने वाले थे और डेनियल कही अधिक भावुक), लेकिन कला और इतिहास के प्रति उनका समान अनुराग था, अपने देश के प्रति उनमे समान निष्ठा थी, वे समान रूप से नि स्वार्थ थे और उनमे हास्य-विनोद और ईमानदारी की भावना भी समान रूप से मौजूद थी।

यदा-कदा इनमे से कोई अपने घर पर, किसी जन्म दिन आदि पर, पार्टी देता। पार्टी मे इनके मित्र गोलोमश्तोक जिन्होने सिन्यावस्की के साथ मिल कर पिकासो पर एक पुस्तक लिखी है और कभी-कभी प्रोफेसर दुआकिन[1] भी—आते जो सिन्यावस्की को अपना सर्वाधिक मेधावी विद्यार्थी समझते थे और उन्हे अत्यधिक स्नेह करते थे। इसके अलावा अन्य बहुत से व्यक्ति भी पार्टी मे आते। पार्टी बहुत रात गये तक चलती रहती। कभी-कभी तो पूरी रात ही, गीत गाते हुए, कहानी सुनाते हुए और इनसे भी अधिक पास्तरनेक, मेंडेलशताम और स्वेताएवा की कविताओ का सस्वर पाठ करते हुए बीत जाती। वस्तुत. कविता को ही सर्वोच्च स्थान दिया जाता। यद्यपि इन पार्टियो के बारे मे कुछ भी अत्यधिक औपचारिकताबद्ध या विद्वता से ग्रस्त बात नही थी, लेकिन इनमे अविस्मरणीय आनन्द और मानवीय सहृदयता रहती।

एक दृष्टि से इनमे से कोई भी बात असाधारण नही थी। पहली नजर मे, सिन्यावस्की और डेनियल मेरे परिचय के अधिकाश युवक सोवियत बुद्धिवादियो जैसे ही दिखाई पडते। ये लोग बहुत साधारण जीवन बिताते और अक्सर इनके लिये अपनी आवश्यकताओ को

१—गोलमश्तोक और दुआकिन पर टिप्पणी के लिए अध्याय तीन देखिए।

पूरा कर पाना कठिन होता । लेकिन ये कठिनाइयां उन्हे उदारतापूर्वक आतिथ्य करने या अन्य सब बातो से अधिक अध्यात्मिक और कलात्मक मूल्यो को महत्व देने से न रोक पाती। इस दृष्टि मे और इस सीमा तक वे अपने परिचय के अन्य लोगो जैसे ही थे। लेकिन जो बात उन्हे असाधारण बनाती थी, वह थी उनकी व्यापक संस्कृति और सभ्रान्तता तथा बौद्धिक अपरिष्कार का पूर्ण अभाव । यही कारण था कि उन्हे हम जो थोडे बहुत विदेशी जानते थे, उनके परिचय को अत्यधिक मूल्यवान और लाभप्रद समझते थे और परिचय के माध्यम से हमारा उनके देश के प्रति निरन्तर लगाव बढता जाता था ।

२० बरस पहले, जब मैं मास्को गई, उस समय विदेशियो को इस प्रकार के मूल्यवान और उत्साहवर्द्धक सम्पर्क कायम करने का अवसर नही मिल पाता था। मैं इस प्रकार भाग्यशाली अपवाद कैसे बन पाई, इसका यह कारण था कि मुझे मास्को विश्वविद्यालय मे प्रवेश मिल सका । अत एक युवक के रूप मे सिन्यावस्की की मेरी स्मृति, केवल विद्यार्थी जीवन तक ही सीमित नही है, बल्कि मास्को के विद्यार्थी जगत की अत्यधिक दिलचस्प खोज और सिन्यावस्की की पीढी के बुद्धिवादियो के विचारो और दृष्टिकोणो के परिचय की स्मृति भी है ।

मैं सदा सोवियत सघ के प्रति आकर्षित रही । मैंने युद्ध के दौरान रूसी भाषा सीखी । इसका कारण जितना रूसी साहित्य के प्रति प्रेम था, उतना ही स्तालिनग्राद की रक्षा करने वालो की वीरता के प्रति प्रशसा भाव । और मैं उस देश के बारे मे अधिक जानने के लिये बहुत उत्सुक थी, जिसके बारे में अनेक परस्पर विरोधी बाते कही जाती । उस समय भी मैं युद्ध के समय की असहिष्णुता और घृणा के कारण हुए विनाश और अत्यधिक भयकारी विभीपिकाओ के प्रति सजग थी और मैं इस बात के लिये भी कृतसकल्प थी कि मैं किसी भी सैद्धातिक पूर्वाग्रह से मुक्त हो कर, एकदम नये और मित्रतापूर्ण दृष्टिकोण से ही देखूगी ।

राजनीतिक वातावरण मुश्किल से ही उत्साहवर्द्धक था । देश के पुनर्निर्माण की कमर-तोड़ समस्याओ के मुकाबले "पूंजीवादी देशो द्वारा घेर लिये जाने" के भय से आक्रात, देश के लोग युद्ध के कारण बुरी तरह से हिले हुए और चिताग्रस्त थे तथा इसके शासक देश को पूरी तरह से और कड़ाई से अपने हाथो मे रखने के लिये कृतसंकल्प इन कारणो से रूस अपने सीमित दायरे के भीतर सिमट आया था । विजय के बाद, सब कुछ ठीक हो जाने का जो भाव जगा था, उससे बहुत कम समय तक ही लोगों को राहत मिली, लेकिन अब शीत युद्ध अपने असत्य, घृणा; सदेह और जासूसी के उन्माद सहित शुरू हो चुका था । झदानोव बुद्धिवादियो को धार्में दिखाता, पश्चिम के ह्रास और पतन की बड़े-बड़े शब्दो मे आलोचना होती । विदेशी बातो और वस्तुओं की "दासता" के पाप का उल्लेख किया जाता और इसी प्रकार "सार्वभौमवाद" और "नियमानुवर्तनवाद" को भी पाप ही बताया जाता । इस निर्जीव वातावरण मे कला और साहित्य की धारा प्रवाहहीन हो जाने के कारण मलिन होने लगी ।

लेकिन १६४७ मे मुझे तुरन्त इन बातो की जानकारी नही मिली। मास्को विश्व-विद्यालय मे प्रवेश मिल जाने के कारण, मै अत्यधिक आनदित थी, क्योकि यह प्रवेश मिलने की मुझे आशा नही थी और मुझे प्रत्येक वस्तु नयी और दिलचस्प लग रही थी। मेरे अनेक सहपाठी सहृदय थे और उनसे विचार विनिमय किया जा सकता था। वे मुझे अपने घरो मे आमत्रित करते। उन्होने मुझे अपने विश्वविद्यालय की शिक्षा-प्रणाली और व्यवस्था को समझने मे मदद दी, क्योंकि यह शिक्षा प्रणाली उससे बेहद भिन्न थी, जिसकी मै अभ्यस्त थी। अपने सहपाठियो मे मेरे अनेक मित्र बन गये, जिनमे मुझे सिन्यावस्की सब से अधिक मेधावी और प्रबुद्ध दिखाई पडते थे।

हमारी पारिवारिक पृष्ठभूमि की भिन्नता शायद ही इससे अधिक हो सकती थी। मैं सैनिक परिवार की थी, जिसकी अपनी सैनिक सम्मान की परम्पराए थी और जिसमे धर्म और राजनीति के प्रति उपेक्षा और घृणा भाव था मै जन्म और आस्था से ईसाई थी और मुझे साम्यवाद के बारे मे प्राय कोई जानकारी नही थी। सिन्यावस्की एक सक्रिय क्रातिकारी के पुत्र थे, और उन्हे अपने परिवार की क्राति मे आस्था और एक वर्ग के रूप मे सेना के अफसरो के प्रति घृणा भाव प्राप्त हुआ था। वे युवक कम्युनिस्ट लीग के सदस्य थे और कहना न होगा, अनीश्वरवादी भी थे। हम स्पष्ट रूप से इन सब बातो की चर्चा करते और हमारी इन बातचीतो से मुझे सोवियत दृष्टिकोण के बारे मे, विश्वविद्यालय के भाषणो से कही अधिक जानकारी प्राप्त हुई।

सिन्यावस्की पूरी तरह से आस्थावान कम्युनिस्ट थे। इसके कई कारण थे। उनके लिये "क्राति" का उसी प्रकार भावनात्मक महत्व था, जिस प्रकार फ्रासीसियो के लिये "स्वतत्रता" शब्द का है। क्राति के जिन वीर नायको—झेल्याबोव, सोफिया पेरोवस्काया, दजेर-झिस्की—ने उन्हे प्रेरणा दी उनकी क्राति के प्रति पूरी आस्था थी। उनके विचार समान नही थे, लेकिन ये सब वीर नायक, समान रूप से समझौता न करने वाले, और अपने आदर्शों की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व, जिसमे स्वय उनका अपना और उनके अपने देशवासियो का जीवन भी शामिल था, बलिदान करने के लिये तत्पर थे··· यदि सिन्यावस्की के मन मे साम्यवाद के प्रति इतना गहरा लगाव और आकर्पण था तो इसका अधिकाशत. यह कारण था कि इसने उन निष्ठावान स्त्री-पुरुपो की इस उन्मादपूर्ण जाति को जन्म दिया है, जिन्होने अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का बलिदान दे कर अपने विश्वासो की रक्षा की।

उनके पिता का परिवार, पोल जाति का था, जो इतनी अधिक पीढियो से रूस मे रह रहा था कि पोलैंड से उसका कोई सम्बन्ध नही रह गया था। उनकी माता वोल्गा क्षेत्र की थी और बच्चो के पुस्तकालय मे काम करती थी और उनके पति कोई बहुत मामूली सा काम करते थे। उग्र व्यवहार की बाह्य परत के भीतर, अत्यधिक सहृदयता और सम्भ्रातता छिपाये रखने वाले और चुपचाप रह कर कार्य करने वाले, सिन्यावस्की के पिता सन् १६१७ से पहले के गैर-बोलशेविक क्रातिकारी आदोलनों मे सक्रिय रहे थे। बाद मे उन्होंने एक

स्वयं-सेवक के रूप मे खेतो के समूहीकरण अभियान मे हिस्सा लिया और गाव वालो के हाथो उनके प्राण बाल-बाल बचे, क्योकि ये गाव वाले, स्पष्ट था कि उनके तर्को से आश्वस्त नही हुए थे। इस बात का सिन्यावस्की पर गहरा प्रभाव पडा। उनके पिता, जो खतरनाक जीवन जी रहे थे, उससे उन आदर्शों को रूमानियत का जामा प्राप्त हुआ, जिनके लिये उन्होंने सघर्ष किया था और इसके परिणामस्वरूप आन्द्रेय के लिये क्राति ने जिस सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया था, वह पवित्र बन गई। सन् १६१७ का वर्ष आन्द्रेय सिन्यावस्की के मन मे एक कही अधिक न्यायसगत समाज के समारम्भ, निजी सम्पत्ति—जिसे सब बुराइयो की जड बताया जाता—मनुष्य के मनुष्य द्वारा शोषण की समाप्ति, और मानव गरिमा के प्रति एक नये सम्मान के भाव के जन्म के समारम्भ का प्रतीक था। ये वे नैतिक आधार थे, जो क्राति और उसके बाद जो कुछ हुआ, उसको न्यायोचित ठहराते थे।

लेकिन यह दृष्टिकोण केवल भावनात्मक ही नही था, इस पर उनके बौद्धिक प्रशिक्षण की गहरी छाप थी। मार्क्सवाद, जीवन का, उसकी समग्रता मे दर्शन कराता था और इस प्रकार उनकी पूर्ण सत्ता और सामाजिक न्याय की आवश्यकता के युक्तिसगत आधार की आवश्यकता को पूरा करता था। उन्हे मार्क्सवाद के कथित वैज्ञानिक नियमो की तार्किकता ने उतना अधिक आकर्षित नही किया, जितना इसकी द्वन्द्वात्मकता ने, मन और विचारो के उस लचकीलेपन ने, जिसका यह समर्थन करता था। इसके अलावा मार्क्सवाद के ऐतिहासिक दर्शन ने, उन्हे सबसे अधिक आकर्षित किया। सत्य ऐतिहासिक था और हमारे युग मे यह साम्यवाद मे मूर्त हुआ है। क्या यह बात युद्ध के समय सोवियत सघ की उपलब्धियो और ससार मे एक विश्व शक्ति के रूप मे उसके उदय से पर्याप्त रूप से सिद्ध नही हो जाती ? सभवत यह बात उनकी देशभक्ति के अनुरूप होने के कारण, उन्हे सर्वाधिक प्रभावित करती थी।

मैंने अपने अन्य बहुत से सहपाठियो का भी यही दृष्टिकोण पाया। जब वे साम्यवाद का पृष्ठ-पोषण करते, तो क्या वे अपने देश की प्रशसा मे केवल मार्क्सवादी भाषा का प्रयोग करते अथवा यह बात एक सिद्धात के समर्थन तक ही सीमित होती ? मैं कभी भी इस बात को निश्चयपूर्वक नही जान सकी। उनमे से एक भी व्यक्ति ने, स्वय अपने विचार निर्धारित नही किये थे और न ही उनमे से किसी भी व्यक्ति को, अपने परिचय के लोगो से अपने विचारो की रक्षा के लिये विवाद करना पडा था, जैसा कि पश्चिम के कम्युनिस्टो को अक्सर करना पडता है। उन लोगो का जन्म ही इन विचारो के साथ हुआ और इन्ही विचारों के वातावरण मे वे पले। वे अन्य कुछ नही जानते थे और उन्हे दूसरे पक्ष की बात सुनने का कभी भी अवसर नही मिल सकता था। संभवत यह उनकी सच्ची आस्था थी और एक विदेशी के रूप मे मैं जहा तक समझती हू, उनकी यह आस्था निर्विवाद थी।

लेकिन सिन्यावस्की जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। उनका मन-मस्तिष्क दूसरो से प्राप्त विचारो को, उसी रूप म स्वीकार कर प्रसन्न हो जाने वाला नही था, चाहे उनके मन म

अपने देश के प्रति कितना भी गहरा प्रेम-भाव क्यो न रहा हो। उनके सामने जो अनेक गहन समस्याए थी, वे उनसे कतराते नही थे।

उनके युग की परिस्थितियो मे क्रातिकारी रूमानियत के पनपने के लिये बहुत कम सामग्री मौजूद थी। प्रबल आशाए, वीरतापूर्ण निष्ठुरता या जारशाही के शासकवर्ग और इसको मूर्त करने वाले सम्राट के विरुद्ध वीर नायको जैसा सघर्ष, ससार को एक नया रूप देने के लिये सघर्ष और एक ऐसी कला और साहित्य की सृष्टि, जिसके इससे पूर्व कभी दर्शन नही हुए ऐसी बाते थी, जो बहुत पुराने ज़माने की बाते बन गई थी, जो उनके पिता की जवानी के ज़माने की बाते थी। यह बात विरोधाभासपूर्ण है कि पिता क्रातिकारी थे, पुत्र नही। अब युवक १९२० के बाद के वर्षों को, आदर्श रूप मे प्रस्तुत कर सकते थे, लेकिन उन्हे पार्टी और शासक वर्ग द्वारा निर्धारित नीति के पीछे चलना था, उन योजनाओ मे अपनी शक्ति लगानी थी, जिन्हे उनके पिताओ ने उनके लिये तैयार किया था और इसके अलावा इन युवको को इनकी पूर्ण सत्ता को चुनौती भी नही देनी थी। यह इन लोगो के लिये सम्भव नही था कि गलतिया करने की जोखिम उठा कर नये रास्ते निकाले। विदेशो मे भी क्राति के लिये सघर्ष करने की कोई गु जाइश नही थी। मेरे अनेक मित्र कोरिया के युद्ध मे स्वय-सेवक के रूप मे जाने के लिये अपनी सेवाए अर्पित करने के लिये तैयार थे। वे पूर्व मे "साम्राज्यवादी आक्रमण" के विरुद्ध लडने को तत्पर थे, लेकिन इस बात का सवाल ही नही उठता था। उद्देश्य या आदर्श के लिये सघर्ष करने के अवसर के अभाव ने युवको मे सर्वाधिक निष्ठावान कम्युनिस्टो को निरुत्साहित कर दिया था। यद्यपि उन्होने कभी भी यह बात मेरे समक्ष स्वीकार नही की, पर सिन्यावस्की भी इस निराशा के भाव मे सहभागी थे।

क्या स्तालिन के युग की घटनाओ ने, उनकी आस्थाओ को हिला दिया था ? जब मैं पहली बार उनसे मिला या जब मैंने उन्हे पहली बार जाना, तब यह बात निश्चित रूप मे नही थी। एक कारण यह था कि उस समय उन्हे इस बात का ज्ञान नही था कि स्तालिन ने स्वय को सत्तारूढ रखने के लिये, किस पैमाने पर हिंसा का प्रयोग किया। मुझे यह देख कर सदा बडा आश्चर्य होता कि अधिकाश विद्यार्थी उन बातो से इतने अनभिज्ञ हैं जो उनके देश मे हो रही हैं। वे लोग किसी सर्वविदित घटना (जैसे यूक्रेन या बाल्टिक राज्यो मे शुद्धि अभियानो के अन्तर्गत बडे पैमाने पर लोगो की हत्याए क्रीमिया के तातारो या वोल्गा क्षेत्र मे बहुत पुराने समय से रहने वाले जर्मनो को सुदूर स्थानो पर निष्कासित करने जैसी घटनाए) के बारे मे कोई सकेत करने से पहले वे मुझ से यह वचन लेते कि मैं इस बात को केवल अपने तक ही सीमित रखू। और जब मै उन्हे यह बताती कि पश्चिम के समाचारपत्रो मे इन बातो पर लम्बे अरसे तक खुल कर विचार हुआ है तो वे स्तम्भित रह जाते।

यह याद रखना आवश्यक है कि सिन्यावस्की बचपन से ही हिंसा के अभ्यस्त रहे है। खेतो का समूहीकरण, शुद्धिकरण अभियान, और युद्ध—ये ऐसी बाते है, जो उनके लिये परिचित, सामान्य वातावरण जैसी है और वे इनके अलावा अन्य किसी वातावरण की कल्पना

नहीं करते थे। वस्तुत युद्ध के बाद के वर्ष, चौथे दशक के अंत के अत्यधिक भयावह वर्षों की तुलना में प्राय. शातिपूर्ण थे। हम कुछ लोगो की गिरफ्तारियो की बात सुनते, लेकिन बडे पैमाने पर शुद्धिकरण अभियानो की नही और कम से कम मास्को के बारे मे यह बात नही थी।

उन्हे इस बात से इन्कार करना स्पष्ट आत्म-वचना दिखाई पड़ती थी कि हिंसा अनिवार्य है। यह इतिहास का अग थी। इससे स्वय जीवन की शान बढती थी—केवल क्षुद्र बुर्जुआ ही सुरक्षा को आदर्श मान सकते थे।

इसके बावजूद जब मैं यह प्रतिवाद करती कि हिंसा केवल हिंसा को जन्म देती है और चाहे अन्तिम लक्ष्य कैसा भी मानवीयतापूर्ण क्यो न हो, इसके नाम पर जानबूझ कर निर्दोष लोगो को यातनाए देने और उनकी हत्याए करने को कभी भी न्यायोचित नही ठहराया जा सकता, तो मैं यह अनुभव करती कि मैं केवल उनके अपने सदेहो को ही प्रतिध्वनित कर रही हू। वे इतिहास के विकास-क्रम के घिसेपिटे नारे को स्वीकार करने के लिये अत्यधिक ईमानदार थे और वे इसे इस सनातन प्रश्न का उत्तर नही मानते थे कि साध्य, साधन का औचित्य सिद्ध करता है। वे कभी भी एक ऐसी यथार्थवादी नैतिकता से आश्वस्त नही हो सकते थे, जिसके अन्तर्गत राजनीतिक सुविधाओ के अनुरूप, सत्य और असत्य, अच्छाई और बुराई की परिभाषा दी जाये और यह समस्या हमेशा उनके हृदय को कचोटती रहती। लेकिन यह समस्या कुछ हद तक सैद्धान्तिक ही रही, क्योकि उस समय तक उन्होने अपने व्यक्तिगत जीवन मे वास्तविक तथ्यों को नही देखा था।

हिंसा से भी अधिक विचलित ने झूठ से होते। वे झूठ को कही अधिक बडी बुराई मानते। ऐसा नही था कि पार्टी और शासन जिन बातो को झूठ होते हुए भी सत्य प्रमाणित करने और दर्शाने के लिये विधिवत् अभियान चलाते, उनसे उन्हे भी उतना ही आघात पहुचता जितना मुझे और अन्य विदेशियो को, यद्यपि ये अभियान स्वयं सोवियत नागरिको को भी झूठे दिखाई पडते। वे प्रचार या मिथ्या प्रचार को एक परम्परा मानते जिसका सत्य से प्राय: कोई सम्बन्ध नही होता। जब तक विषय राजनीति का या अर्थशास्त्र का होता, जिसके सम्बन्ध मे उन्हे कोई तात्कालिक चिंता दिखाई नही पड़ती, वे प्रचार की कुछ बातो को, शैली सम्बन्धी प्रयोग, और यथार्थ का कल्पना के आधार पर पुनर्निर्माण कह कर उसे स्वीकार कर सकते थे।

लेकिन जब झूठ उन बातो के बारे मे होता, जिनको वे महत्वपूर्ण समझते या यह झूठ उन लेखको और कवियो की प्रतिष्ठा के बारे मे होता, जिनके प्रति वे श्रद्धाभाव रखते थे, तो वे अत्यधिक क्रोधित हो उठते। मुझे कवि मायाकोवस्की पर एक प्रोफेसर के भाषण की याद है, जिसमे भाषण कर्ता ने मायाकोवस्की के भविष्यवाद की उपेक्षा कर, उन्हें एक परम्परावादी समाजवादी यथार्थवादी और गोर्की का एक मित्र ही नहीं प्राय उनका शिष्य भी बताया। भाषण के बाद सिन्यावस्की और एक अन्य मित्र मेरे पास आये और वे अत्यधिक

क्रोधित थे "ये बाते कितनी अपमानजनक और झूठी है। हम इस बात के लिये बेहद शरमिन्दा है कि तुम्हे ये बाते सुननी पडी। इन वातो से तुम्हे मायाकोवस्की[१] के बारे मे कितनी गलत जानकारी मिली है।"

प्राचीन लेखको और कविग्रो की रचनाओ को अपने मनमाने ढग से प्रस्तुत करने, तथ्यो को तोडने-मरोडने और यहाँ तक कि कभी-कभी मूल रचनाओ मे परिवर्तन करने या नकली रचनाओ को मूल रचनाओ के रूप मे प्रस्तुत करने की आदत ने देश के बौद्धिक जीवन को विषाक्त बना दिया था। मार्क्सवादियो के अलावा अन्य किसी भी स्रोत से प्रामाणिकता का पता लगा पाना प्राय असभव था। विश्वविद्यालय के पुस्तकालयो मे, ऐसी अनेक पुस्तके थी, विद्यार्थियो को जिन्हे पढने की अनुमति नही थी और जिन्हे स्वय प्रोफेसर भी उच्चाधिकारियो की अनुमति के विना नही ले सकते थे।

अन्य अनेक प्रबुद्ध व्यक्तियो की तरह सिन्यावस्की उन कट्टरपथी विचारो को हम विद्यार्थियों के ऊपर थोपे जाने को रोकने का प्रयत्न करने के लिये उत्सुक थे। वे सदा यह चाहते थे कि तथ्य सही हो और वे उनके आधार पर स्वय अपने निर्णय करे। कठिनाई जितनी अधिक होती वे उसकी चुनौती से उतने ही अधिक प्रेरित होते। वे यह जानते थे कि किन स्रोतो को देखना चाहिये और किन पत्रिकाओ मे गोर्की के बारे मे कम कट्टरपथी लेख प्रकाशित हुए हैं। वे पहले ही सन् १९२० के बाद के सोवियत साहित्य से बहुत अधिक परिचित थे और मान्य लेखको तथा अत्याचार के शिकार लेखको--वावेल मियरहोल्ड, गुमिलयोव मे समान रूप से रुचि रखते थे।

उन्हें पश्चिम के वारे मे भी बहुत जिज्ञासा थी। सोवियत सघ मे प्रचार अभियानो मे निरन्तर पश्चिम की निन्दा की जाती और इसे गलत तरीके से पेश किया जाता। पश्चिम की सामाजिक बुराइयो के जो विवरण जोला, बालजक या मोपासा ने दिये है वे सोवियत सवाददाताओ की कल्पना के सामने तुच्छ सिद्ध होते हैं। मुझे वन्दा वासीलेवस्का के एक लेख का स्मरण है, जिसमे सन् १९४८ मे फ्रास की श्रमजीवी स्त्रियो को इतना अधिक गरीब पीडित और कार्य के भार से दबा हुआ बताया गया कि उन्हें बाध्य होकर मेट्रो मे उबले हुए आलू छीलने पडते। इन स्त्रियो के कष्ट से द्रवित होकर मेरे कुछ अधिक विश्वासी सहपाठी मेरे पास आये और सच्चाई जाननी चाही। उन्होने मुझ से पूछा क्या यह सच है?

१— उन्हे इतना दुख होने की आवश्यकता नही थी। मुझे विक्टर दुआकिन के साथ मायाकोवस्की का अध्ययन करने का सौभाग्य मिला था। दुआकिन बहुत बडे विद्वान हैं और उनकी ईमानदारी निर्विवाद है। वे ऐसे व्यक्ति नही है जो तथ्यो को तोड-मरोड कर प्रस्तुत करें और यह तो निश्चित ही है कि उन्होंने मायाकोवस्की को समाजवादी यथार्थवाद के एक स्तम्भ के रूप मे गलत तरीके से प्रस्तुत करने की सरकारी नीति का अनुसरण नहीं किया। उन दिनो सत्य के प्रति, ऐसी निष्ठा रखना एक ऐसी बात थी, जो अत्यधिक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है।

जहा तक आधुनिक लेखको का सम्बन्ध है, रूसी विद्यार्थियो को जिस फ्रासीसी उपन्यास को पढने की सबसे अधिक सिफारिश की गई है वह है किसी ज्या लाफीत का उपन्यास पिकिंग डैफोडिल्स (मुझे अभी एक ऐसे फ्रासीसी से मिलना शेष है, जिसने इस उपन्यास का नाम भी सुना हो)। रूस के साहित्यिक अधिकारियो के लिये मॉरिया या वर्नानो, गियानो या कामू का अस्तित्व तक नही है।

सिन्यावस्की इन विचित्र हास्यास्पद प्रयासो से प्रभावित नही होते थे (और सौभाग्य का विषय है कि इस बात मे अकेले नही थे।) वे पश्चिम के बारे मे और अधिक जानना चाहते थे, उनकी पश्चिम के बारे मे प्रतिक्रियाए मिलीजुली थी।

उनके लिये पश्चिम उस कला और साहित्य की जन्मभूमि था, जिसे वे प्यार करते थे। और जो कला और साहित्य आज भी निरन्तर विकसित हो रहा है। उन्होने विश्वविद्यालयो मे फ्रासीसी भाषा का अध्ययन शुरू किया, क्योंकि वे विलो, बादलेयर और रिम्बो की कृतिया मूल भाषा मे ही पढना चाहते थे। उन्हे इनकी बहुत सी कविताए कठस्थ थी। उनकी अति-यथार्थवाद (सुर-रियलिजम) मे रुचि थी और उन्होने ब्लेज सेन्द्रार को पढा था। गद्य लेखको मे उन्हे मालरो और सीलीन (एल्सा त्रायोलेत का अनुवाद) प्रिय थे। फ्रैंच भाषा के बाहर उन्हें वाल्ट व्हिटमन और वेरहीरेन प्रिय थे। हा वस्तुत उनकी जानकारी मे बहुत से शून्य थे, जो अनिवार्य भी था—उन्होने काफ्का या पिरानदेलो अथवा प्राऊस्ट या जायस की कोई रचना नही पढी थी।

वे पश्चिम के साहित्य की तरह ही पश्चिम की चित्रकला की ओर भी बहुत अधिक आकर्षित थे। वे जिन पुस्तको के उपहार को सर्वाधिक पसन्द करते वे ब्राक, राडल्त और विशेष रूप से पिकासो के बारे मे लिखी गई पुस्तकें होती थी और उसका कारण यह था कि वे यह अनुभव करते थे कि इन कलाकारो के जीवन मे उनके जीवन से बहुत समानता है। पिकासो के नीले युग (ब्लू पीरियड), के एक चित्र की एक अनुकृति उन की मेज के ऊपर टगी थी। सब आधुनिक चित्रकारो मे उनकी आस्था पिकासो पर ही थी, क्योकि उन्हे पिकासो की अनुसधानशीलता, प्राजलता, भ्राति के सर्वथा अभाव, विलक्षणता के सटीक उपयोग, बहुत प्रिय थे और उनका यह विश्वास था कि इन सब कारणो से पिकासो ही हमारे युग की भावना को सर्वोत्तम तरीके से मूर्त करते है।

पश्चिम की दुनिया उनके लिये ऐसी दुनिया थी, जिसके बारे मे मुश्किल से ही कल्पना कर पाते थे। इस ससार की समस्त बौद्धिक स्वतन्त्रता, कला और साहित्य के क्षेत्र मे प्रयोग करने की स्वतंत्रता जिसकी, उन्हें अत्यन्त आवश्यकता थी और जिनका कष्टप्रद अभाव उनके सामने मौजूद था, ऐसी बातें थी, जो उनकी कल्पना के बाहर थी।

फिर भी, यद्यपि यह विरोधाभासपूर्ण लगता है, उन्हें व्यक्ति की स्वतत्रता को सर्वोच्च लक्ष्य मानने के पश्चिमी विचारो के प्रति वितृष्णा ही थी। वे समझते थे कि इससे स्वार्थ बुद्धि को प्रोत्साहन मिलता है। उनके लिये समुदाय की सेवा का विचार ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण

था। वे इसी विचार के वातावरण मे पले थे और यह उनके लिये थोथा सिद्धात नही था इसने उनके पूरे जीवनक्रम को ही प्रभावित किया था। वे विशेषाधिकारपूर्ण व्यवहार चाहने को गलत मानते थे। "मुझे आराम मे आपत्ति नही है, लेकिन यदि दूसरो को आराम न मिले तो मै इसे नही चाहूगा।" यद्यपि एक छोटे सामूहिक फ्लैट मे रहना उनके लिये बडा कष्टप्रद था, लेकिन फिर भी वे इसकी सब कठिनाइयो को बडी प्रसन्नता से बर्दाश्त करते थे, क्योंकि इसका अर्थ अपने देशवासियो की सामान्य कठिनाइयो मे हिस्सा बटाना था। यह विशिष्ट रूप से रूसी दृष्टिकोण था। यह वैसा ही दृष्टिकोण था, जिसने तोलसतोये को उनके जीवन के अन्तिम क्षण तक पीडित किया।

कला और साहित्य के अलावा, उन्हें पश्चिम के बारे मे यह जानने की दिलचस्पी थी कि क्या इसके पास ससार को देने को कोई नया दृष्टिकोण, कोई नयी विचारधारा है, जो अन्तत' साम्यवाद का विकल्प बने और जो "पूरे ससार को नया स्वरूप प्रदान करे" और जो एक ऐसी विचारधारा हो, जिसके लिये लोग अपने प्राण उत्सर्ग करने के लिये तत्पर हो।

यह विचार कि ईसाई धर्म एक जीवन्त शक्ति ही नही है, बल्कि उसने अपने पुनर्निर्माण की महान क्षमता भी प्रकट की है, उनके लिये विश्वास योग्य नही था। वे प्रत्येक आदर्श की शक्ति और क्षमता को कला के माध्यम से उसकी अभिव्यक्ति के द्वारा आकते थे। वे कहते, "यदि यह बात सही होती, तो आधुनिक कैथड्रेल (विशाल गिरजाघर) और आधुनिक इसाई कला होती, जो मध्य युग की कला की तरह ही महत्वपूर्ण होती। लेकिन वास्तविकता यह है कि प्राय सब आधुनिक चित्रकार, धर्म मे विश्वास नही रखते।" (इस पर मैं यह टिप्पणी करने से न रुक सकी कि साम्यवाद ने भी महान् आधुनिक चित्रकला को जन्म देनें की प्रेरणा नही दी है।) इसके उत्तर मे वे बोले, "चाहे कुछ भी हो, पुनर्जागरण के समय से, उसी समय से, जब इसने व्यक्तिगत मुक्ति को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वीकार किया, ईसाई धर्म निरन्तर गर्त मे जा रहा है। आधुनिक ईसाई धर्म व्यक्तिवादी है, साम्यवाद का सम्बन्ध मानवता की भलाई से है और इस प्रकार इसका नैतिक अर्थ ऊचा है।"

स्वाभाविक था कि हम इस बात पर असहमत रहे। अक्सर मैं उनके जल्दबाजी मे किये गये निर्णयो और अपनी बात को अन्तिम मानने की उनकी आदत से बेचैनी और चोट का अनुभव करती। लेकिन वे "व्यक्तिवाद", पर जितना उग्र प्रहार करते, मुझे उतना ही अधिक यह अनुभव होता कि वे मुझ से नही, ईसाई धर्म से नही, पश्चिम से नही, बल्कि स्वय अपने आप से तर्क कर रहे हैं। मेरे विचार उनके विचारो के विपरित थे और मैंने कभी अपने विचारो को छिपाया भी नही। अतः वे मेरे माध्यम से, स्वय अपने विचारो का स्पष्टीकरण करने और उन्हे अपने अन्तरतम की गहराइयो से बाहर निकालने के लिये और अपने मन के सघर्ष को, जो आगे चलकर अत्यधिक तीव्र हुआ, प्रकट करने का प्रयास करते।

बुनियादी-मसला, समजा के सदर्भ मे व्यक्ति और उनके स्थान का था। वे पूरे हृदय

मे कम्युनिस्ट थे, लेकिन इसके बावजूद वे जिस मन-मस्तिष्क या विचार के प्रति आकर्षित होते, वे मान्य विचारों और परम्पराओं के विरुद्ध चलने वाले ही होते। साहित्यिक रचनाओ के जो पात्र उनकी कल्पनाशीलता पर गहरी छाप छोडते, वे समाज से सघर्ष करते हुए एकाकी व्यक्ति होते—इनमे एक छोर पर आवारा और चोर होते और दूसरे पर क्रातिकारी वीर नायक और पहले से ही तैयार और स्वीकृत विचारों के विरुद्ध सघर्ष करने वाले, धार्मिक सम्प्रदायवादी।

अपने व्यक्तित्व के इन दो पक्षो के बीच सघर्ष मे, जो दोनो पक्ष समान रूप से बलशाली थे, उनके मन की भावनाए अपनी पूरी गहनता से फसी हुई थी—कला के प्रति उनका दृष्टिकोण और स्वयं एक कलाकार के रूप मे उनकी आकाक्षाए इसके दो पहलू थे। वे कहा करते थे, "साहित्य जीवन मे कही अधिक महत्वपूर्ण है।" यद्यपि वे उस समय तक, पूरी तरह यह निर्णय नही कर पाये थे कि वे साहित्यिक समालोचक होगे या एक उपन्यासकार, लेकिन वे यह जानते थे कि वे एक लेखक अवश्य हैं।

उन्होने आरम्भ मे कविता लिखनी शुरू की। हमारे विद्यार्थियो के दायारे मे उनकी कविताएं बहुत अधिक पसन्द की जाती। लेकिन उन्होने जल्दी ही कविता लिखना छोड दिया। जब मैंने उनसे इसका कारण पूछा तो वे बोले, "आप कविताए लिखें और ईमानदार भी बने रहे, यह सभव नही है। अब मैं फिर कभी कविता नही लिखूगा।" वे इतने अधिक दुखी दिखाई पड रहे थे कि मैंने उनसे इस कथन का अभिप्राय बताने का आग्रह नही किया। लेकिन मैं समझती हूं कि जब मैंने मायाकोवस्की की "एट दि टॉप आफ माई वॉयस" शीर्षक कविता पढी तो मुझे उनका अभिप्राय स्पष्ट हो गया : "मैंने अपने मन को दबाया। मैंने अपने गीत का गला घोट दिया।" ऐसा लगता था कि इसी उदाहरण का अनुसरण करना सिन्यावस्की को अनिवार्य लग रहा था। अपनी कविता और अपनी आस्था के बीच सघर्ष मे, उन्होंने अपनी आस्था को ही चुना।

यदि इससे उन्हें शान्ति मिली तो वह अधिक समय के लिये नही थी। कहावत है, तेन्दुए के शरीर पर जो गोल निशान होते है, वह उन्हे बदल नही सकता। बहुत जल्दी ही सिन्यावस्की बोले "यदि मैं कभी लिखूगा तो यह केवल गद्य मे ही होगा।" हर बात के बावजूद साहित्य उनके जीवन मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था। वे शैली की मौलिकता को बडा महत्व देते थे। यह कला का वह पहलू था जिसके महत्व को समालोचक निरन्तर घटा कर दिखाते रहे थे, क्योकि वे इस बात से डरते थे कि उन पर "फार्मेलिज्म" (नियमानुकरणवाद) का आरोप न लगाया जाये। लेकिन विधा अपने आप मे एक अन्त नही होती। वे एक ऐसी शैली की खोज में थे, जो हमारे युग की मन स्थिति के अनुरूप हो। वे इस बात के प्रति अत्यधिक समर्पित थे। वे अतृप्त जिज्ञासा और उत्कंठा से जीवन को देखते, इसके बडे-बडे लक्ष्यों और कुख्यात आचरणो, उदारता और नीचता, वीर नायको जैसे साहस, गुलामो जैसे आचरण और नौकरशाही के प्रभाव के अविश्वसनीय मिश्रण के तत्वो को अलग-

अलग करने और उनके सच्चे स्वरूप को देखने का प्रयास करते। जीवन को जानने, जीवन को समझने की अपनी उत्सुकता के कारण वे इसे एक चिकित्सक की नजर से देखते। स्तालिन को देवता मानने या जनता का एक कृपावान पिता मानने का विचार उनके लिये केवल एक हसी की बात ही था। लेकिन तानाशाही की शैली, इसकी क्रूरता, इसकी मानव मे केवल बुराइया देखने की ही प्रवृत्ति, इसका यह भयावह और विद्रोहरूपपूर्ण दावा कि यह अपनी इच्छा के अनुसार मनुष्यो के जीवन को समाप्त कर सकती है और विज्ञान तथा कला के लिये कानून बना सकती है ऐसी बाते थी जो एक लेखक के रूप मे उनकी विचारशीलता को उत्प्रेरित करती और उन्हे लगता कि यह एक ऐसा विषय है, जिसके समग्र अनुशीलन के लिये किसी पिकासो की भयकर क्षयकारी शक्ति या किसी साल्लीकोव-शचेद्रिन की अम्लदग्ध लेखनी की आवश्यकता है।

ऐसे थे सिन्यावस्की और सन् १९४७ और १९५० के बीच मैंने उन्हे इसी रूप मे देखा। मैंने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप मे देखा, जिसका आन्तरिक द्वन्द्व और चिन्ताए उसकी पीढी की समस्याओ और आशाओ को प्रतिबिम्बित करती है, एक पूरी तरह से आश्वस्त और निष्ठा-वान मार्क्सवादी, लेकिन उन्मादी मार्क्सवादी नही। यद्यपि वे अपने गैर-रूमानी युग और तीसरे दशक के आदर्श स्वरूप के बीच के अन्तर और विरोधाभास को देखते, यद्यपि वे अशत सोवियत शासन की अमानुषिकता को देखते और अक्सर बौद्धिक क्षेत्र के मिथ्या प्रचार और शासक वर्ग द्वारा निर्दिष्ट नियमो के अनुसार साहित्यिक क्षेत्र मे आचरण को असह्य पाते, फिर भी उन्होने अपने युग के विरुद्ध विद्रोह नही किया और न ही इस से बाहर निकल आने की चेष्टा ही। उनके लिये और जिन रूसियो को मैं जानती थी, प्राय उन सब के लिये भी, स्तालिन की तानाशाही मार्क्सवाद का तर्कसंगत परिणाम थी। यह एक एतिहासिक आवश्यकता थी और "इतिहास की गतिशीलता" का एक अश और इस कारण से उन्नति का एक अश भी। अत आज्ञाकारिता, क्रांति और सोवियत सघ के प्रति निष्ठापूर्ण कर्त्तव्य था। यदि आवश्यक हो तो, इसके लिये व्यक्तिगत अभिरूचिया और विश्वासो को त्यागा जाना चाहिये।

लेकिन इस स्थिति को स्वीकार करने के बदले, उन्हे मानसिक तनाव ही मिला और एक ऐसी चिन्ता, जो समय के साथ निरन्तर बढती ही गई। वे जन्मजात लेखक थे, जन्म-जात सैनिक नही। एक बार १९४७ मे मैंने उनसे पूछा कि उनका जीवन में अपना व्यक्तिगत लक्ष्य क्या है? उनका उत्तर था "अपने युग की धुरी पर पहुचना और उनका वर्णन करना।" युद्ध के बाद के उन वर्षो मे इस लक्ष्य की पूर्ति असभव दिखाई पडती थी, लेकिन वे अपना मार्ग चुन चुके थे।

यह स्वीकार करना होगा कि केवल इस समय ही, जब मे उन सब बातो को देखती हूं, मेरी समझ मे सब जटिलताए आती हैं। उस समय मैं उनकी निष्ठा और उनके आदर्श-वाद को प्रशसा के भाव से देखती थी। यह जानते हुए कि इसकी उन्हे कितनी कीमत चुकानी

रह रही है। उनके विश्वासों मे हिस्सा बटाये बिना ही, मैं उनका आदर करती थी, क्योंकि यह विचार मात्र मेरे लिये भयावह था कि जीवित स्त्री-पुरुषों का बलिदान एक अमूर्त भविष्य एक अमूर्त मानवता के लिये इतनी विचारहीनता से दिया जा रहा है, और यह देखकर मेरा दिल बैठ जाता कि मेरे कितने अधिक मित्र ईश्वर द्वारा प्रदत्त अपनी प्रतिमाओं और अपने अच्छे इरादों का, उस नैतिक और बौद्धिक भ्राति मे ग्रस्त होने के कारण बलिदान दे रहे हैं, जिसने उनके पूरे देश को ग्रस रखा है। फिर भी सिन्यावस्की की ईमानदारी और सत्य जानने की उनकी जिज्ञासा और सत्य के साक्षात का मार्ग ढूढने की उनकी उत्कठा मे मेरा विश्वास था। उन्होंने सत्य को बहुत अधिक पीडा और कष्ट सह कर देखा, जिसने उनके लेखन व्यवसाय को सदा के लिये एक निश्चित दिशा दे दी।

सन् १९५१ मे किसी मूर्खतापूर्ण बहाने से उनके पिता की गिरफ्तारी से उन्हे गहरा आघात पहुंचा। पहली बार अन्याय, कानून विरुद्ध आचारण, निर्दोष लोगो के कष्टो और यातनाओं की समस्या उनके अपने पारिवारिक जीवन मे सामने आई। आन्द्रेय अपने पिता के प्रति बहुत निष्ठा रखते थे और उन्हे क्रातिकारी सम्मान और नि स्वार्थता का मूर्त रूप मानते थे। उस समय मैं सोवियत सघ मे नही थी और जब मैं उन से मिली, उन्होने मुझे इस बारे मे बहुत कम बताया कि इस अवधि मे उन्हे किन-किन कष्टो से गुजरना पडा है। लेकिन उनकी मन स्थिति उनकी कहानी, "दि आइसिकिल" मे प्रतिबिम्बित होती है, जिस मे पुलिस के जासूसो, घरो की तलाशियो और गिरफ्तारियो के भयंकर स्वरूप का चित्रण है।

यह अनुभव उनके लिये भावी घटनाक्रम का पूर्वाभास था—जो पूरे सोवियत सघ के लिये अत्यधिक चिंताजनक और झकझोर देने वाली घटनाए थी। ये घटनाए १९५३ और १९५६ अर्थात् स्तालिन की मृत्यु और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के २० वें अधिवेशन के बीच की हैं। इस अधिवेशन मे ख्रुश्चेव ने स्तालिन के भयकर अपराधो के बारे मे जो "गुप्त" भाषण किया था, वह कारखानो, सरकारी कार्यालयो, तथा विश्वविद्यालयो मे पढा गया और इससे पूरे देश मे उन्मादपूर्ण उत्तेजना फैली। इसका प्रभाव उस समय और भी तीखा हुआ जब उन निष्कासित व्यक्तियो को रिहा किया गया और उन्हे फिर दोषमुक्त कर प्रतिष्ठित किया गया, जो उस समय तक जीवित थे (इन लोगो मे सिन्यावस्की के पिता भी थे। अपनी रिहाई के कुछ समय बाद ही, उनकी मृत्यु हो गई)। लोग आश्चर्यचकित, आतंकित और अत्यधिक शरमिन्दा थे। सिन्यावस्की ने मुझ से कहा : "यह समाचार सुनने के बाद मेरे मन मे जो लज्जाभाव उत्पन्न हुआ, उसकी गहराई से ही मुझे यह पता चला कि मेरे लिये सोवियत संघ का कितना अधिक महत्व है।"

अपने राष्ट्रीय गर्व पर इस प्रकार आघात पहुंचने से मेरे सब मित्रो की प्रतिक्रिया समान थी। यह प्रतिक्रिया विशिष्ट रूसी तरीके की ही प्रतिक्रिया थी। उन्हे अपने देश के लिये लज्जा थी—उस देश के लिये जिसने पूरे ससार के समक्ष मानवतावाद का एक उदाहरण प्रस्तुत करने का दावा किया था और जिसने इसके स्थान पर एक अमानुषिक तानाशाही की

स्थापना की और हजारो निर्दोष लोगो को, जिनमे सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न कलाकार और लेखक भी थे, गोली से उडाये जाने या बलात् श्रम शिविरो मे-तिल-तिल कर मरने दिया—य लोग स्वय अपनी निष्क्रियता के लिये इससे अधिक शरमिन्दा थे, यद्यपि यह निष्क्रियता इस कारण उत्पन्न हुई थी कि उन्होने उदासीनता और निष्क्रियता को देशभक्ति समझने की भ्राति की थी। पर अचरज इस बात का था कि उनमे से कोई भी इसके लिये सरकार को दोष नही देता था, वे स्वय को इसका दोषी ठहराते थे, क्योकि उन्होने ये घटनाए होने दी, वे यह अनुभव करते थे कि उनके मौन का अर्थ था सहमति और इतना ही नही सच्चा अज्ञान या गैर जानकारी भी उस समय क्षम्य नही थी, जब पूरे देश को ही पीसा जा रहा था।

डेनियल की कहानियो मे इस सामूहिक दोषभाव की समस्या का जो अनुशीलन हुआ है, वह उनकी पीढी के लोगो की एक विशिष्टता है। (२० वे अधिवेशन के समय, वे ३० वर्ष के थे)। इससे अनेक लोगो के समक्ष अन्त करण सम्बन्धी और मूल्यो के पुनर्मूल्याकन का गहरा सकट उपस्थित हुआ—अब उन्हे मानसिक और भावनात्मक निष्क्रियता, अपने सब दुर्भाग्यो की जड दिखाई पड रही थी। देशभक्ति की एक नयी सकल्पना और कार्य करने के एक नये सकल्प ने जन्म लिया था। ऐसा कुछ किया जाना चाहिये या करना होगा जिससे फिर कभी इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना की पुनरावृत्ति न हो। लेकिन वे कर क्या सकते थे ?

मैं जिन अनेक बुद्धिवादियो को जानती थी, उनमे से किसी एक ने भी राजनीतिक कारवाई की कल्पना तक नही की थी। उनके मन मे अपने शासको के प्रति न तो घृणा थी और न ही कोई अन्य भाव। कुछ ऐसे नेताओ को छोड कर, जिनकी प्रतिष्ठा क्राति अथवा युद्ध के कारण बनी थी—जैसे वोरोशिलोव, बुदयोनी, मोलोतोव, भुकोव, कोनेव—इन लोगो को शासको या नेताओ के मूल्यो का कोई ज्ञान नही था। उनके नाम, उनके चेहरे ऐसे थे, जिन्हे एक दूसरे से बदला जा सकता था। ये ऐसे लोग थे जो भिन्न ससार मे रहते थे, ये उन परिस्थितियो मे रहते थे, जो सामान्य लोगो की परिस्थितियो से कल्पनातीत सीमा तक भिन्न थी। यह सर्वाधिक विचित्र विरोधाभासो मे से था कि इतने तीव्र राजनीतिक वातावरण मे नेतागण सामान्य नागरिक के लिये अज्ञात ही नही थे, बल्कि स्वय राजनीतिक गतिविधि को ही देश की समस्याओ के समाधान का पूरी तरह से सदर्भहीन और निरर्थक तरीका समझा जाता था और यह विचार प्रबुद्ध और परिष्कृत बुद्धिवादियो तक का था।

इन लोगो का विचार था कि समस्या का समाधान अशत आर्थिक क्षेत्र मे होना है (और इसकी जिम्मेदारी तकनीशियनो पर थी) लेकिन मुख्यत समस्या नैतिकता की है . और नैतिकता के क्षेत्र मे ही समस्याओ का समाधान ढूना जाना चाहिये, क्योकि स्वय क्राति के आदर्श ही, जैसे मानवतावाद, जिसने उनके विश्वास के अनुसार क्राति की प्रेरणा दी और इसका औचित्य सिद्ध किया, दाव पर लगे थे और इस बात का खतरा था कि ये समाप्त हो जायेंगे। इस दृष्टि से ख्रु श्चेव का भाषण, इसमे निहित सब खतरो के बावजूद, एक समारम्भ ही समझा जाता था। इस भाषण ने झूठ के पर्दे मे एक झिर्री बना दी थी और

अन्य सब वस्तुओ से अधिक सत्य के अभाव के कारण ही सोवियत स्त्री-पुरुष अपना दम घुटता हुआ अनुभव कर रहे थे।

इसके साथ ही पहल करने की क्षमता का फिर जन्म हो रहा था। अब यह बात विशेष रूप से युवक-युवतियो के बारे में सही थी। नये तरीको और थोथे सिद्धान्तो के भार के प्रति उग्र कटुता थी, जिन्होने विज्ञान, कला और बौद्धिक जीवन को कुचल दिया था। अब अन्तत: एक नये युग के समारम्भ की आशा दिखाई पडी थी और समस्त भयकर सकट-पूर्ण वर्षों के बाद, युवक बाहरी दुनिया से स्वस्थ सम्पर्क कायम करने के लिये व्यग्र थे। वे इस बाह्य ससार के दृष्टिकोण, इसकी अभिरुचियो की जानकारी पाने के लिये उत्सुक थे। इस आदोलन को मास्को मे आयोजित विश्व युवक समारोह से प्रेरणा मिली।

सिन्यावस्की जैसे युवा बुद्धिवादियो के लिये—वस्तुत. सब युवक बुद्धिवादियो के लिये (और इनकी संख्या काफी बडी है) केवल उनको छोड कर जिन्हे २० वें अधिवेशन के आघात ने सब बात मे केवल बुराई ही देखने वालों और हेत्वाभासवादियो मे बदल दिया—अब उनका कर्तव्य स्पष्ट हो चुका था अब उन्हे एक बार फिर सत्य बोलने का साहस करना था, चाहे इसकी कितनी बडी कीमत क्यो न चुकानी पडे। अब वे कानून विरुद्ध शासन के समक्ष घुटने टेकने को तैयार नही थे। अब वे एक नये जीवन क्रम के अनुसंधान मे लगे थे। क्या रूस के बुद्धिवादियो ने सन् १९१७ से पहले, देश के अन्त:करण की भूमिका नही निभाई थी ? अब इन युवको को उन्ही के चरण-चिन्हो पर चलना था और तीसरे दशक के ऊर्ध्वगामी और अन्तर्राष्ट्रीयतावादी परम्परा को फिर जीवित करना था। यह बात कहने के लिये तो बडी आसान थी, लेकिन स्तालिन के उत्तराधिकारी उसकी मृत्यु के बाद भी जीवित थे और लोगो की बौद्धिक और भावनात्मक निष्क्रियता की आदतें मुश्किल से ही छूटती हैं।

यह कहना गलत होगा कि शासक वर्ग इस नयी भावना से पूरी तरह अछूता ही रहा। बहुत धीरे-धीरे, वातावरण मे परिवर्तन आया; अब लोग पहले से कम भयभीत थे। उनकी प्रतिक्रियाएं कही अधिक सामान्य थी। अब कुछ तथ्यो को स्वीकार कर पाना सम्भव होने लगा था—बहुत लम्बे अरसे तक यह न्यूनतम ईमानदारी भी "निरपेक्षता" का पात्र बताई जाती थी। विदेशी पर्यटको के आने से भी बौद्धिक जिज्ञासा, अनुसंधान और यात्रा को प्रोत्साहन मिला। शासन ने शिकंजे में जो ढील दी, उसके महत्व को कम नही किया जाना चाहिये। लेकिन इसका उद्देश्य आर्थिक था और इसका प्रभाव मुख्यत: विज्ञान, अर्थ-व्यवस्था और टैक्नोलॉजी के क्षेत्र मे दिखाई पडा—इसका साहित्य और कला पर प्रभाव इतना नहीं था।

यह बात सच है कि सेंसर व्यवस्था कुछ कम उग्र हुई। स्तालिन की मृत्यु के तुरन्त बाद ऐसे उपन्यास और लेख प्रकाशित हुए, जिनके नाम और शीर्षक अपनी कहानी आप कहते हैं और इनमें पोमेरान्त्सेव का 'सिंसियरिटी इन लिटरेचर' एहरन-बर्ग का 'दि थॉ'

और दुदिन्तसेव का 'नॉट बाई ब्रैड एलोन' उल्लेखनीय है। लेकिन ये नाम और शीर्षक उपन्यासो के कथ्य से कही अधिक नाटकीय है और इनका सतर्कतापूर्ण साहसी दृष्टिकोण सोवियत जनता की, स्तालिन के जमाने की दुखद स्वप्न जैसी स्मृतियो को उद्घाटित कर, शान्ति और आश्वासन प्राप्त करने की विस्फोटक आवश्यकता के अनुरूप नही था।

यद्यपि ख्रुश्चेव ने स्तालिन के शासनकाल के अत्याचारो का बडी निष्ठुरता से उद्घाटन किया, लेकिन लेखको को उनके उदाहरण पर चलने की अनुमति नही थी। उन्होने जो तथ्य प्रकट किये, वे लेखको के लिये निषिद्ध ही रहे। बलात् श्रम शिविरो के बारे मे पहली कहानी, सोल्झनित्सीन की 'वन डे इन दि लाइफ आफ आइवन देनिसोविच,' स्तालिन की मृत्यु के दस वर्ष बाद प्रकाशित हुई। शासन के सैद्धांतिक आधार को चुनौती देना ही सम्भव नही था, जैसा कि पास्तरनेक ने अनेक कष्ट उठा कर जाना। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि जो नैतिक समस्याए युवको को उद्वेलित कर रही थी, उनकी उपेक्षा करनी थी। ये समस्याए अत्यधिक महत्वपूर्ण, अत्यधिक चुनौती भरी थी और इनके साथ ऐसे बहुत से लोगो की प्रतिष्ठा जुडी हुई थी, जो उस समय भी सत्तारूढ थे। सब बातो से अधिक अन्त करण के सकट को छिपाना था।

इस दृष्टिकोण का एक विशिष्ट उदाहरण वह सरकारी स्पष्टीकरण है, जो एक प्रसिद्ध उपन्यासकार तथा सोवियत लेखक संघ के अध्यक्ष, फादेयेव की आत्महत्या पर दिया गया, जिसने २० वे अधिवेशन के तुरन्त बाद आत्म-हत्या कर ली थी। व्यापक रूप से यह विश्वास किया जाता था कि २० वे अधिवेशन ने उसे यह अनुभव करने के लिये बाध्य किया कि सन् १९५२ मे जिन सोलह यहूदी लेखको को "आधारहीन सार्वभौमिकतावादी" कह कर फासी पर चढा दिया गया था, उनके प्रति उसका दृष्टिकोण मुख्यत इन लेखको को फासी दिये जाने के लिये उत्तरदायी था और फादेयेव ने आत्महत्या से पहले लिखा· "एक मनुष्य के रूप मे फादेयेव उस फादेयेव को मृत्यु दण्ड देता है, जिसके उत्तेजनात्मक कार्यो के कारण, लोगो को जान से हाथ धोना पडा।" लेकिन सरकारी स्पष्टीकरणो मे बताया गया कि फादेयेव ने अत्यधिक शराब पीने के बाद उत्पन्न निरूत्साह के दौरे के समय आत्महत्या कर ली। फादेयेव का यह दुख चाहे कितने ही विलम्ब से क्यो न प्रकट हुआ हो, लेकिन इसका साहित्यिक क्षेत्रो मे गहरा प्रभाव हुआ और उसकी स्मृति पर जो अपमानजनक धब्बा था उससे उसके सब मित्रो को आघात पहुचा। इससे उन जमे हुए लेखको की प्रतिष्ठा को भी धक्का पहुचा, जिनके बारे मे यह कहा जाता है कि उन्होंने इन सब अभियानो की शुरूआत की।

उस समय जबकि नैतिक समस्याओ के प्रति गहरी और प्रबल सवेदनशीलता जगी थी, इसका और भी अधिक गंभीर प्रभाव हुआ। युवा जनो की आखो मे पहली पीढी के लोगो की प्रतिष्ठा पहले ही घट चुकी थी, जो अब यह विश्वास करने लगे थे कि नैतिक सत्ता को, किसी व्यक्ति को, उसके सरकारी पद के कारण नही सौंपा जा सकता, बल्कि यह

नैतिक सत्ता तो व्यक्ति को, स्वय अपने कार्यो से प्राप्त करनी चाहिये। जैसाकि स्वाभाविक था, इस स्थिति में युवा जन उन कुछ गिने चुने लेखको की ओर आकर्षित हुए, जिन्होने कभी भी स्तालिन के जूते न चूमने का साहस दिखाया था। ये लेखक थे नेकरासोव, त्वारदोवस्की, पौस्तोवस्की, पास्तरनेक, अख़मातोवा और कुछ अन्य। इन युवको की रुचि बावेल मजेलशतम, स्वेताऐवा और कुछ ऐसे ही उन अन्य लेखको मे बढी, जो स्तालिन के अत्याचारो के शिकार हुए थे। दुर्भाग्यवश साहस और सम्पादकीय पद का यदा-कदा ही समन्वय होता था (नोवी मीर के सपादक त्वारदोवस्की इसका एक सुखद अपवाद थे) क्योकि सेंसर व्यवस्था और प्रकाशन प्रतिष्ठानो मे अभी भी महत्वपूर्ण पदो पर वही व्यक्ति काम कर रहे थे जो स्तालिन के जमाने मे भी उन पर नियुक्त थे। जैसा कि अनिवार्य था युवाजन उन लोगो के अच्छे इरादो पर अविश्वास करते थे, जो हाल मे ही झदानोव की सास्कृतिक नीति के संचालन मे स्वेच्छा से सहायक बने थे।

यदि विषय वस्तु के चुनाव की सीमाएं बंधी थी, तो शैली के उन प्रयोगो पर भी प्रतिबन्ध थे, जिनके लिये युवाजन बहुत अधिक उत्सुक थे। वे एक ओर तीसरे दशक की भावना का अनुसंधान कर रहे थे और दूसरी ओर उन पर पश्चिम का प्रभाव बढ रहा था : हेमिंग्वे, जाज़ सगीत, इतालवी फिल्मो का नव-यथार्थवाद आदि—रूस के युवा बुद्धिवादी इन सब प्रवृत्तियो और प्रयोगो को आत्मसात कर रहे थे। इस के फलस्वरूप एक नयी अभिरुचि उत्पन्न हुई, जो बहुत सामान्य रूप से ही मौलिक थी, लेकिन जो वस्तुत. और जानबूझकर उस समाजवादी यथार्थवाद की थोथी महिमा और गौरव के प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हुई थी, जो २० वें अधिवेशन के आघात और विदेशी पर्यटको से मुलाकातो के कारण अचानक उपहासपूर्ण और पुरातनपंथी दिखाई पडने लगी थी। २० और ३० वर्ष के बीच की उम्र के कवि थे (वर्षों से ऐसे युवा कवि दिखाई नही पडे है) : इवतुशेंको, वोज़नेसेंस्की, जो मान्य मानदण्डो के अनुरूप रचना करने को तैयार नही थे; ऐसे नये लेखक भी थे जो पूरी तरह से नये प्रयोग करते थे जैसे अनुभूतिवादी कज़ाकोव और अत्यधिक आधुनिक, ग्राम्य शब्दावली का प्रयोग करने तक आधुनिक, अक्सयोनोव। ये कवि और लेखक जो बातें कहते थे वे अत्यधिक हानिरहित होती थी, लेकिन वे जिस रूप मे ये बातें कहते थे वे प्रकाशको और उन लोगो या जनता की अभिरुचि को आघात पहुंचाती, जिनकी मन.स्थिति और अभिरुचि का निर्माण स्तालिन के जमाने मे कडाई से सरकारी नीति के अनुरूप लिखे जाने वाले साहित्य के द्वारा हुआ था या यह कहा जा सकता है कि जिनकी अभिरुचि इस साहित्य के कारण विकृत हुई थी। विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता अभी भी एक ऐसा पुरस्कार थी, जिसके लिये सघर्ष करने की आवश्यकता थी और युवा-जनों के सामने सस्कृति के नियामको की तानाशाही आदतो और पुरातनपथी अभिरुचियो के विरुद्ध लम्बा संघर्ष मौजूद था।

यह युवाजन अत्यधिक व्यग्र थे और उनकी मन.स्थिति प्रतीक्षा की नही थी। २० वें

अधिवेशन से पहले ही बुद्धिवादियो पर आत्माभिव्यक्ति की आवश्यकता का उन्माद छा गया था (टेरट्ज ने इसका वर्णन अपनी कहानी "ग्राफोमेनियास्क[३]" मे किया है)। फिर गुप्त लेखन की परम्परा का जन्म हुआ। प्राय हर प्रकार की पाण्डुलिपि, जो टाइप होती अथवा जिसकी प्रतिलिपि हस्तलेख मे तैयार की जाती, लोग चोरी-छिपे एक दूसरे को पढने को देते, और कविताए कठस्थ करते। उत्साह और साहस की अविश्वसनीय लहर आ गई थी।

कुछ उदाहरणो के रूप मे कुछ रचनाओ का उल्लेख किया जा सकता है। सन् १६५४ मे मुझे किसी ने त्वारदोवस्की की एक टाइप की हुई कविता "त्योरकिन इन दी नैक्स्ट वर्ल्ड" दिखाई, जो स्तालिन के जमाने के रूस पर एक तीखा व्यग्य थी और इसका केवल १६६४ मे ही प्रकाशन हो सका, लेकिन तब भी काट-छाट और सशोधन के बाद ही यह प्रकाशित हुई। मुझे यह कविता केवल एक रात के लिए दी गई और वह भी इस शर्त पर कि मैं न तो इसकी प्रतिलिपि तैयार करूगी और न ही इसके बारे मे कोई भी जानकारी विदेश भेजूगी क्योकि यह कविता सोवियत बुद्धिवादियो को भयकर रूप से विस्फोटक दिखाई पडती थी। बाद मे, सभवत १६५६ मे, एक विद्यार्थी ने मुझे झीवागो क्रम की कुछ कविताए दिखाई जो इसी प्रकार प्रचारित हो रही थी।

विदेशी पुस्तके भी इसी प्रकार चोरी-छिपे प्रचारित होती और छपी हुई पुस्तके नही बल्कि उनकी हस्तलिखित प्रतिलिपिया होती। अमरीका मे हेमिग्वे के उपन्यास 'दि ओल्ड मैन एण्ड दी सी' के प्रकाशन के तुरन्त बाद इसका गुप्त रूप से रूसी भाषा मे अनुवाद किया गया। एक बार फिर मुझे यह वचन देना पडा कि मैं इस सम्बन्ध मे किसी को नही बताऊगी। इस गोपनीयता पर मुझे हसी आ रही थी और मैंने उस विद्यार्थी से जिसने मुझे यह प्रति दिखाई थी, पूछा कि क्या वह वस्तुत इसे क्राति विरोधी रचना मानता है? उसने उत्तर दिया "यह न भूलिए कि अमरीका की हर वस्तु सिद्धात रूप मे सदेहास्पद है।" उसका यह भय मुझे उसकी अन्तर्चेतना मे अज्ञात रूप से स्थापित एक भाव दिखाई पडा और वस्तुत. इस उपन्यास का अधिकृत सस्करण बहुत जल्दी ही प्रकाशित हुआ।

इन परिस्थितियो मे वर्षो से जो कष्टप्रद सघर्ष या द्वन्द्व सिन्यावस्की को सालता रहा था, वह प्रबल रूप से सामने आया। सन् १६५६ मे २० वें अधिवेशन के वर्ष मे, उन्होने अपना प्रबुद्ध प्रबन्ध 'आन सोशलिस्ट रियलिजम' और अपना उपन्यास 'दि ट्रायल बिगिन्स' लिखा। समय और वातावरण को देखते हुए यह आश्चर्यय जनक बात नही थी कि उन्होने उन विचारो को कागज पर उतारने का अन्तत. निश्चय किया, जो उनके मन मे लम्बे अरसे से पनप रहे थे। उन्हे अभी भी अपनी रचनाओ को प्रकाशित करना शेष था।

सन् १६५६ मे उन्हे यह बात स्पष्ट थी कि सोवियत सघ मे इनके प्रकाशन की कोई गुजायश नही थी। यदि उनका प्रकाशको से कम सम्पर्क होता तो सम्भवत उनकी भ्राति

३—दि आइसिवल एण्ड अदर स्टोरीज़, पृष्ठ १५५,

कुछ अधिक हो सकती थी। लेकिन एक साहित्यिक समालोचक और इतिहासकार के रूप मे, गोर्की संस्था मे शोधकार्य करते हुए और इस संस्था के तत्वावधान में प्रबन्ध लिखते हुए, उन्हे बहुत अधिक सम्पादकीय दबाव का सदा सामना करना पडा। यदि विषय उनकी रुचि का न होता तो उन्हें इस बात की बहुत कम चिन्ता होती। लेकिन जब उन लेखको के बारे मे, जिन्हे वे पसन्द करते थे, अपने विचारो को सरकारी नीति के अनुरूप बदल कर पेश करने की बात आती तो वे इन्कार कर देते। उन्हे बार-बार सेंसर अधिकारियो का सामना करना पडता। उन्होने बाबेल[4] पर जो लम्बा शोधपूर्ण लेख लिखा, वह कभी प्रकाशित नही हुआ। सन् १९६० मे पास्तरनेक की मृत्यु से पहले, उन्होने उनकी कविता संग्रह की जो भूमिका लिखी थी, वह केवल १९६५ मे ही प्रकाशित हो सकी और उस समय भी इस भूमिका मे से वे अश निकाल दिए गये, जिन्हे वे महत्वपूर्ण समझते थे। नोवी मीर ही एकमात्र एक ऐसी साहित्यिक पत्रिका थी, जिसने उन्हे अधिक स्वतन्त्रता से लिखने दिया। लेकिन वे १९५६ के काफी बाद ही, इसमे अपनी रचनाए प्रकाशित करा सके।

यदि साहित्यिक अध्ययनो का प्रकाशन ही इतना कठिन था तो एक ऐसे प्रबन्ध और उपन्यास के प्रकाशन की कितनी सभावना थी, जो अपने कथ्य, अनुशीलन और शैली की दृष्टि से इतने असाधारण थे? और न जाने उन्हे कितने समय और प्रतीक्षा करनी होगी? त्वारदोवस्की की तरह दस वर्ष, या पन्द्रह या बीस वर्ष? लेकिन क्या एक तीस वर्षीय लेखक से यह आशा की जा सकती है कि वह एक अच्छे बच्चे की तरह दस या बीस वर्ष तक, उस समय तक प्रतीक्षा करता रहे, जब सेंसर अधिकारी कुछ उदारता और कृपा भाव दिखाए। और क्या इतनी लम्बी प्रतीक्षा के बाद भी यह सभव है? कम से कम सिन्यावस्की को इतना सब्र नही था।

उनका विश्वास लेखक के इस अधिकार मे था कि वह अपने पाठको के समक्ष अपनी रचनाए रख सकता है और उन्हें पास्तरनेक के उदाहरण से प्रोत्साहन मिला था। विद्यार्थी जीवन मे उनके प्रिय कवि ब्लोक, मायाकोवस्की और बाग्रितस्की थे। लेकिन १९५६ मे उन्हे शिकागो मे प्रकाशित कविताए पढने का सौभाग्य मिला। ये कविताए उनके लिये ऐसी थी मानो कोई गहन रहस्य उनके सामने उद्घाटित हो गया हो। उन्होने सुपरिचित आधुनिक रूसी शब्दावली मे, जिसमे बाइबिल की भाषा की गरिमा और शैली मौजूद थी, हव्वा (ईव), ईसामसीह, मेरी, मैगदालेन के बारे मे कविताए पढी और यह देखा कि सोवियत संघ मे रहने वाले एक आधुनिक कवि को ईसाई धर्म से किस सीमा तक प्रेरणा मिल सकती है।

ऐसा हुआ कि उन्ही दिनो, मेरी मुलाकात पास्तरनेक से हुई और उन्होंने बहुत

४—मैं समझती हू कि उन्हे प्रोयूब्लिज एत ओपिनियन्स (मास्को से प्रकाशित) मे बाबेल के बारे मे एक छोटा लेख प्रकाशित करने मे सफलता मिली। देखिए अक ८, अगस्त १९६४।

अधिक स्नेहवश मुझे अपने उपन्यास डा० झिवागो की एक प्रति पढ़ने के लिये दे दी। मैंने इसे अत्यधिक पसन्द किया और सिन्यावस्की को पढने के लिये दिया। उन पर इस उपन्यास का गहरा प्रभाव पडा, यद्यपि वे लेखक के दृष्टिकोण से पूरी तरह सहमत नही थे। उन्होने ईसाई धर्म और इतिहास मे व्यक्तित्व के स्थान और योगदान के बारे मे, लेखक के विचारो से उग्र विरोध प्रकट किया। उनका यह भी विचार था कि पुस्तक का गठन और शिल्प अच्छा नही है और कुछ अश बहुत लम्बे है, लेकिन चाहे इस उपन्यास की उनकी व्यक्तिगत आलोचनाए कुछ भी क्यो न रही हो, लेकिन वे इस उपन्यास की ताज़गी, प्रभावशालिता, शक्ति, इसके स्वर और रूस के "विराट और अमिट" चित्र से बहुत गहराई से प्रभावित हुए।

कुछ समय बाद, सन् १९५६ या १९५७ मे वे पास्तरनेक से मिलने पेरेदेलकीनो गये। वे उनसे लेखक से अधिक एक व्यक्ति के रूप मे प्रभावित हुए और यह बात बहुत बडी है। पर यह कोई आश्चर्य की बात नही थी, क्योकि यदि पश्चिम मे परम्परा और उसके अनुसरण से मुक्ति, एक असाधारण बात है तो यह स्तालिन की मृत्यु के तुरन्त बाद, सोवियत सघ मे कही अधिक विरल और असाधारण थी। पास्तरनेक ने अपने बचाव की समझदारी नही दिखाई। उन्होने अपने विचारो को परोक्ष रूप से या राजनीतिक आवश्यकताओ के अनुरूप और परम्परागत तथा घिसी-पिटी शब्दावली मे प्रकट करने का ज़रा भी प्रयास नही किया। इस बात का भय कि अन्य लोग क्या सोचेगे, अविश्वास, स्तालिनवाद के कारण उत्पन्न भय और आतंक लगता था, उन्हे अछूता ही छोड गया है और वे सदा की तरह जीवन के सुख को भोगने और अपने साथी मनुष्यो मे आस्था से सदा की तरह ही पूरित थे। उनमे अपना सच्चा स्वरूप बनाये रखने का साहस था और इसके साथ ही काव्य मे अटूट आस्था तथा रूस के प्रति प्रेम के साथ-साथ राजनीतिक लेबलो से मुक्त रहने की क्षमता भी उनमे थी।

विदेश मे अपने उपन्यास की पाण्डुलिपि भेजने का पास्तरनेक का साहस, उनकी यह गहरी आस्था कि यह करने का उनका पूरा अधिकार है और अपने युग का साक्षी बनने के अपने निश्चित कर्तव्य मे विश्वास और बाद मे स्वयं अपने सहयोगियो द्वारा उनके विरुद्ध छेडे गये अपमानजनक अभियान, इन सहयोगियो की भद्दी ईर्ष्या, उन्हे "आन्तरिक प्रवासी" और देशद्रोही आदि बताकर उनकी ख्याति को समाप्त करने के उनके प्रयासो ने केवल उनकी प्रतिष्ठा को ही बढाया और अन्य लोगो को उनके उदाहरण का अनुसरण करने की प्रेरणा दी। निश्चित था कि सिन्यावस्की उस व्यक्ति के उदाहरण से प्रभावित हुए, जिसकी वे एक महान् देशभक्त और एक महान् कवि के रूप मे प्रशसा करते थे।

इसी समय सिन्यावस्की ने अपनी पुस्तके विदेश मे प्रकाशित कराने मे मेरी सहायता मागी। यह उनके जीवन का एक नया दौर था। उनके जीवन मे एक नया मोड़ आया था। जिन

मूल्यो मे उनकी गहरी आस्था थी, उनके अनुरूप कार्य करने के निश्चय के लिये, सम्भवत उससे कही अधिक साहस की आवश्यकता थी, जो बाहरी खतरों के मुकाबले के लिए आवश्यक था।

खतरा पर्याप्त बड़ा था और सिन्यावस्की इस बात से परिचित थे। उन्हे निकट भविष्य में सास्कृतिक वातावरण और सरकारी नीतियो मे सच्ची उदारता आने की संभावना मे विश्वास नही था और पास्तरनेक के मामले ने उन्हे आश्वस्त कर दिया कि उनका विचार सही है। वे यह निश्चयपूर्वक जानते थे कि उनके समक्ष पास्तरनेक से बडा खतरा मौजूद है, क्योकि वे विख्यात लेखक नही है और यह आशा नही कर सकते कि उनके समर्थन के लिये जनमत तैयार किया जा सकता है।[५] वे यह आशा करते थे कि इन रचनाओ के प्रकाशन का यह परिणाम होगा कि वे किसी यातना और बलात् श्रमशिविर मे फेंक दिये जायेंगे और फिर उनके बारे मे कभी कोई कुछ न सुन सकेगा। कहना न होगा कि उन्होने इस सम्भावना को महत्वहीन नही समझा। यह उनके लिये कोई मामूली बात नही थी—वे विवाहित थे और उनके कार्यों मे उनका परिवार सकट मे पड सकता था, लेकिन यह खतरा एक चुनौती भी था। जहा तक स्वय उनका सम्बन्ध था कि वे उसके लिये जो उन्हे अवश्य करना था, हर कीमत चुकाने को तैयार थे। वे यह समझते थे कि स्वतन्त्रता की इच्छा करना और इसके लिये कष्ट उठाने को तैयार न होना परस्पर विरोधी बाते है।[६]

लेकिन विदेशी प्रकाशको से सम्पर्क करने मे एक और कठिनाई थी। सिन्यावस्की के निर्णय मे राजनीति का कोई अश नही था, उसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नही था। यदि कोई बात थी तो यह कि वे अब पहले की तुलना मे कम पश्चिम समर्थक थे। वर्षो तक पश्चिम की निन्दा करने के बाद, देश मे अचानक विदेशी तौर तरीको का जो फैशन शुरू हुआ था उसकी उच्छृखलता से उन्हे खीझ हुई थी और वे "स्लाव जाति की महान् सस्कृति और परम्पराओ के प्रबल समर्थक" बन गये थे। उन्हे विदेश मे स्वतन्त्रता और जीवन की सुरक्षा के प्रति जरा भी आकर्षण नही था। सुरक्षा ने स्वतन्त्रता के आकर्षण को

५—मेरे परिचय के युवा सोवियत बुद्धिवादी, इस बात से आश्वस्त थे कि पास्तरनेक के विरुद्ध आगे बदले की कारवाई इसलिये नही की गई कि विदेश मे उनका बड़ा नाम था। पास्तरनेक का भी यही विचार था।

६—मुझे उनके एक विद्यार्थी ने एक घटना के बारे मे बताया कि सन् १९५८ मे पास्तरनेक की निन्दा के लिये लेखको की एक सभा बुलाई गई। जब सिन्यावस्की की बारी आई तो वे खड़े हुए और बोले, "मुझे खेद है कि मुझे कुछ नहीं कहना है क्योंकि उनके बारे मे मेरे केवल अच्छे ही विचार है," और यह कहकर वह सभा भवन से बाहर चले गये। इस विद्यार्थी ने मुझे बताया कि "उनके परिचय मात्र से व्यक्ति के मन मे साहस आ जाता है। आप यह अनुभव करते है कि आपको मर्द बनना है।"

घटा दिया था, लेकिन इसके बावजूद वे उस सुदूर और मुश्किल से ही कल्पना के दायरे मे आने वाले ससार की ओर सहायता के लिये झुके जिसमे साहित्य और कला का मूल्य केवल कला की दृष्टि से ही होता है, राजनीति मे उनके उपयोग के लिये नही। उन्हे आशा थी कि एक लेखक के रूप मे, उनके प्रयास को समझा जायेगा।

सबसे अधिक वे यह चाहते थे कि उनके साहित्य का पश्चिम मे सोवियत विरोधी प्रचार करने वाले प्रकाशको और सगठनो द्वारा उपयोग न किया जा सके और उन्होने बडे स्पष्ट रूप से मुझ से कहा कि मैं उनकी रचनाओ के प्रकाशन के लिये ऐसा प्रकाशक न चुनू जो इस दृष्टि से पहले ही प्रतिभूत हो। और यही बात डेनियल ने उस समय कही, जब उन्होने मुझ से विदेश मे अपनी रचनाओ के प्रकाशन की बात की।

यह जानने के लिये कि इस बात का उनके लिये कितना महत्व है, मैंने सिन्यावस्की से यह प्रश्न पूछा कि क्या वे माइलोज की अपने आप मे विशिष्ट पुस्तक "दि कैप्टिव माइड" की तरह सोवियत बुद्धिवादियो के बारे मे कोई प्रबन्ध लिखना पसन्द करेंगे। मैंने उन्हे बताया कि सोवियत साहित्य के पश्चिमी पाठक अब सोवियत पुस्तको मे वह गहराई, आध्यात्मिकता और दर्शन तथा वेदान्त के प्रति रुझान नही पाते, जो उन्होने तोल्सतोय और दोस्तोएवस्की की रचनाओ मे पाया और जिससे वे प्रभावित हुए। पश्चिम के ये पाठक अब यह सोचते हैं कि क्या वस्तुत रूस का बौद्धिक जीवन अब इतना हीन हो गया है और अब इसमे उतनी गहनता नही रही है। उन्हे यह विचार पसन्द आया और उन्होने कुछ लिखा—लेकिन यह क्या था मुझे कभी पता न चला क्योकि उन्होने मुझे इस प्रबन्ध को पढने के लिये देने से भी इन्कार कर दिया। उन्होने कहा कि यह प्रबन्ध पर्याप्त विचार के बाद नही लिखा गया है, इसमे अत्यधिक कटुता है और इस बात की सभावना है कि इसे सोवियत विरोधी बताया और समझा जा सके। इस प्रबन्ध के स्थान पर उन्होने "अनगार्डिड थॉट्स" लिखा।

उन्होने अपनी इन रचनाओ के लिये एक काल्पनिक नाम अपनाने का निश्चय किया। इस बात के बारे मे बहुत अटकले लगाई ग- है कि उन्होने एक यहूदी नाम क्यो चुना। उन पर तो यहूदी विरोध तक का आरोप लगाया गया। यदि कोई बात थी, तो ठीक इसके विपरीत, सदा उनके अनेक मित्र यहूदी रहे हैं, जिनमे डेनियल और गोलोमस्तोक भी शामिल हैं। लेकिन मुझे इस बात मे सदेह है कि नाम का चुनाव जान बूझकर यहूदी समर्थन की कोई कारवाई था। अपने विद्यार्थी जीवन की पार्टियो मे हम अक्सर चोरो और जेलो के गीत गाते थे (बलातन्ये पेसनी)। उस समय इन गीतो का गाना वर्जित था, अत. यह हमारे लिये कुछ हद तक उत्तेजनाजनक खेल की तरह थे। सिन्यावस्की को ऐसे अनेक गीत याद थे। उन्हे इन गीतो की अपरिष्कृत या ग्राम्य भाषा और समाज विरोधी पात्र हमेशा प्रिय रहे। इनमे से एक गीत, जो विद्यार्थियो मे काफी लोकप्रिय था, किसी एब्राम टेरट्ज के बारे मे था। यदि सिन्यावस्की इस नाम को अपना कर कुछ दर्शाना चाहते थे तो सभवत.

यह इस तथ्य की अभिव्यक्ति था कि वे अपने जीवन मे कभी भी मान्य परम्पराओ के पीछे या घिसीपिटी लीक पर नही चले।

काल्पनिक नाम से लिखने का एक कारण यह भी था कि इससे जोखिम कुछ कम हो जाती थी—उनके लिये इन दो बातो मे अन्तर था कि वे जेल जाने का जोखिम उठाते अथवा जान बूझकर शेर के मुह मे अपना सिर डालते। लेकिन उन्हे विलक्षण बातें करने का जो शौक था उनके मन के उस भाव को इस कल्पना ने आकर्षित किया। वे इस बात की भिन्नता और विरोधाभास के प्रति आकर्षित थे कि स्वदेश मे उनका जीवन कितना कठिन, कितनी सीमाओ मे बंधा था। उन्हे सेंसर अधिकारियो से किस प्रकार कभी खत्म न होने वाला सघर्ष करना पड रहा था और विदेश मे उनकी पुस्तकें बिना किसी सेंसर के, बिना किसी काट-छाट के ठीक वैसे ही प्रकाशित हो सकती है मानो किसी ने जादू के जरिये इन्हे प्रकाशित कर दिया हो। कम से कम आरम्भ मे उन्हे इस बात से प्रसन्नता और आनन्द मिला कि वे बिना किसी असुविधा के या आर्थिक लाभ के अथवा विख्यात लेखक के रूप मे प्रतिष्ठा के लाभ के बिना ही एक जाने-माने लेखक बन जायेंगे।

यह बात पूरा तरह से उनके स्वभाव और चरित्र के अनुरूप थी। मैं उन परिस्थितियो का अनुमान लगा सकती हू जिन मे वे रूस के भीतर भी अपने उपन्यासो के प्रकाशन के लिये काल्पनिक नाम का प्रयोग कर सकते है। वे व्यर्थ की उलझनो मे फंसना पसन्द नही करते थे। वे उनके व्यक्तिगत जीवन मे अनावश्यक बातो के प्रवेश या किसी के हस्तक्षेप, ऊबा देने वाले दायित्वो, और विख्यात व्यक्ति बन जाने पर जो समय की बर्बादी होती है उससे घृणा करते थे। वे अपने अवकाश और शान्ति का एक-एक क्षण लेखन कार्य मे उपयोग करना चाहते थे और वे अपने व्यक्तिगत जीवन की गोपनीयता को पसन्द करते थे। उन्हे अनगार्डेड थॉट्स की पाण्डुलिपि मुझे देने मे बहुत हिचकिचाहट थी: "यह सौभाग्य की बात है कि मेरे पास एक छद्म नाम है। मैं इस बात से घृणा करूगा कि मेरे मित्रो को यह पता चले कि यह पुस्तक मैंने लिखी है। मुझे इससे एकदम अनावृत्त और नग्न होने जैसी अनुभूति होगी। वैसे मुझे इस बात की चिन्ता नही है कि इसके प्रकाशन मे कितना समय लगता है। मुझे इसे लिखना ही था, लेकिन इसका जितना कम प्रचार हो उतना अच्छा।"

सिन्यावस्की द्वारा काल्पनिक नाम के प्रयोग ने उनके विकास मे जो योगदान दिया, वह मुझे अत्यधिक महत्वपूर्ण दिखाई पडता है। एक प्रकार से टेरट्ज उस रूप की छाया था, जो वे स्वय होना चाहते थे। स्वतन्त्र अभिव्यक्ति का जो अवसर उन्हे इस प्रकार प्राप्त हुआ, उसने उनके अन्त करण पर यह दायित्व थोप दिया कि वे ऐसी कोई बात नही लिखे, जिसे स्वीकार करने को टेरट्ज तैयार न होता और वस्तुत. सोवियत सघ मे प्रकाशित उनके लेखो और विदेशो मे प्रकाशित उनकी कहानियों मे सर्वाधिक विशिष्ट और स्पष्ट समानताए दिखाई पडती है।

उन्होने अभिव्यक्ति के दो माध्यमो का प्रयोग किया, जिन्होने एक ऐसे कथोपकथन का समारम्भ किया, जिनमे विरोधाभास नही थे। उनका पिकासो का अध्ययन उनकी कहानी दि आइसिक्ल के शैली के प्रयोगो को समझने की कुंजी है। उन्होने पास्तरनेक के कविता सग्रह की जो भूमिका लिखी उसकी प्रतिध्वनि अनगार्डेड थॉट्स मे सुनाई पडती है। टेरट्ज ने सिन्यावस्की को निर्मल वना दिया और उन्हे अपने ऊपर हावी रहने वाले भावो और अनुभूतियो से मुक्ति पाने मे सहायता दी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि टेरट्ज ने एक नैतिक उत्प्रेरणा के रूप मे उन्हे अपनी स्वतन्त्रता प्राप्ति के योग्य वनने का साहस दिया और यही कारण है कि मुकदमे से वहुत समय पहले उन्होने अवसर आने पर अपनी स्वभावगत गभीरता और मौन को विना किसी हिचक के त्यागा और स्पष्ट रूप से वह दृष्टिकोण अपनाया जिसके लिये वडे साहस की आवश्यकता थी।

सिन्यावस्की की आरम्भिक रचनाओ मे स्तालिनवाद के भयकर अनुभवो की छाप है। 'दि ट्रायल विगिन्स' नौकरशाही पर आधारित राज्य-सत्ता और पुलिस के अत्याचारो पर उग्र प्रहार है जवकि दादी और सेरियोझा ऐसे पात्र है (जिसकी लेखक से बहुत समानता है) जो यह दर्शाते है कि क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों के आदर्शवाद के प्रति सिन्यावस्की के मन मे कितना गहरा मोह है। 'दि आइसिकल' मे संग्रहीत कहानिया अपने तीखेपन, अपने प्रवल और करारे व्यग्य के कारण उस आतक के वातावरण को मूर्त करती है, जिसमे एक व्यक्ति का वन्य पशु की तरह पीछा किया जाता है, उसे वेघरवार वनाया जाता है और उसे अपने साथी मनुष्यो से अलग कर जेल मे फेक दिया जाता है या कुचल दिया जाता है। सोवियत समालोचको ने, उनकी जुगुप्सा और घृणा पैदा करने वाले कथ्यो के चुनाव के लिये कटु आलोचना की है। यदि स्तालिनवाद जुगुप्सापूर्ण नही था तो क्या था? हाल की सोवियत पुस्तके—एहरनबर्ग के सस्मरण, वोन्दारयोव के उपन्यास—पुलिस के जासूसो और गिरफ्तारियो के सर्वव्याप्त भय को प्रकट करती है। बस अन्तर केवल इतना है कि टेरट्ज ने इन वातो का उल्लेख कुछ वर्ष पहले किया और उनके विवरण कही अधिक प्रभावशाली हे। जव कोई फोडा फूटता है तो इससे गुलाव जल नही, वल्कि मवाद निकलता है। दि आइसिकल, वस्तुत:, एक कठोर और व्यग्यात्मक पुस्तक है। इसमे कहानियो के खलनायको के प्रति लेखक ने जो शेष दयाभाव दिखाया है, उससे वह भाव नही उत्पन्न होता जो अत्यधिक निराशा के कारण उत्पन्न होता है (यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो उस सिन्यावस्की को पूरी तरह प्रकट करता है, जिसे हम जानते हैं) लेकिन इससे भी अधिक महत्व की वात यह है कि यह एक व्यक्ति की उन सामूहिक शक्तियो के प्रति विरोध प्रदर्शन हैं, जो एक स्वतत्र व्यक्तित्व के रूप मे उसके लिये खतरा वनी हुई हैं।

यदि टेरट्ज, सिन्यावस्की के भावनात्मक तनाव को हल्का करने, उसे अभिव्यक्त करने का माध्यम वना तो उसने सिन्यावस्की को स्वय अपनी शैली का अनुसधान करने मे भी सहायता दी। इस पक्ष की विस्तार से चर्चा के लिये बहुत स्थान की आवश्यकता है।

लेकिन यह कहना पर्याप्त होगा कि वे स्पष्टत स्तालिनवादी तरीके की भावुकता और उपदेशात्मकता से एकदम विपरीत हैं। उन्होंने अपनी शैली मे जानबूझ कर जो स्पष्ट और तीखी परपता अपनाई है, वह अपरिष्कृत वातो के प्रति स्वाभाविक रुझान का परिचायक नही है बल्कि ५ वें और ६ ठे दशक के आरम्भिक वर्षो के आलस्य भरे जीवन के प्रति तीखी प्रतिक्रिया है। वे जो विलक्षण कल्पनाए करते है, वे जो विचित्र तस्वीरें पेश करते हैं और इन्हे जिस वातावरण मे और जिस ढाचे मे रखा जाता है वह कोई साहित्यिक विधा या पलायन नही है, बल्कि यह उनका यथार्थ की व्याख्या का अपना निराला तरीका है। अपने युग के पुराने लेखको के निर्जीव नव-यथार्थवाद को त्याग कर उन्होने रूस के महान् स्वप्नदर्शियो—गोगोल, दोस्तोएवस्की—की परम्परा को पुनरुज्जीवित किया है। इस के साथ ही वे जिस सावधानी से अपनी रचना का निर्माण करते है, वे उन्हे तीसरे दशक के लेखकों की कोटि मे ला बैठाती है।

अन्त मे, टेरट्ज ने सिन्यावस्की को एक पूरी तरह से नये प्रकार की पुस्तक लिखने की क्षमता प्रदान की और यह पुस्तक थी 'दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट'। सिन्यावस्की इस पुस्तक को सबसे अधिक पसन्द करते थे। वे इससे पूर्व भी भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर चुके थे और अब उन्होने इस पुस्तक मे वाक्य रचना की नयी समस्याओ के प्रयोग किये और उन्होंने कथा-शिल्प मे भी तिथिक्रम को त्याग कर नये प्रयोग किये। इस रचना मे उनका स्वर कहीं अधिक शान्त, अधिक असपृक्त और व्यग्य कम कटु है। अब विषय एक व्यक्ति के विरोध प्रदर्शन तक ही सीमित नही रह जाता बल्कि यह एक काल्पनिक नगर और उसके तानाशाह, मेकपीस—जो शुरु मे साइकिलो की मरम्मत करने वाला मिस्त्री था और बाद मे राजनीतिज्ञ बन गया था, जो इस प्रकार आदर्शवादी कम्युनिस्ट का प्रतिरूप था और जिसका विवरण पर्याप्त हास्य विनोद से और कुछ हद तक सहानुभूति से किया गया है—की प्रतीकात्मक कहानी है, जबकि इस पुस्तक के वास्तविक नायक रूस के लोग हैं, जिनकी विलक्षणताओ को उन्होंने इस रचना मे उतारा है।

कथ्य और विषय का यह परिवर्तन महत्वपूर्ण है। पहले कुछ वर्षों से सिन्यावस्की दम्पति अपनी गर्मियो की छुट्टिया उत्तर रूस मे बिता रहे थे। इस अत्यधिक कठोर प्रदेश मे, जिसके गाव अत्यधिक सीधे सादे और कठिन वातावरण मे जीवन यापन कर रहे हैं और जिसकी शानदार लकड़ी के गिरजा घर हैं, आज भी किसानो की प्राचीन परम्पराए अपने प्रबलतम और सर्वोत्तम रूप मे विद्यमान हैं। उनका अपना समग्र जीवन-क्रम उसी रूप मे मौजूद है और इनके ऊपर आधुनिक सभ्यता का प्राय: कोई प्रभाव नही पड़ा है। सिन्यावस्की दम्पति ने यहा प्राचीन धार्मिक चित्र इकट्ठे किये और उन्हे सुधारा, इसके अलावा उन्होंने कसीदे, कढ़ाई किये हुए वस्त्र एकत्र किये, जो एक ऐसी संस्कृति के चिह्न थे, जो यही नष्ट होने का अभिशाप प्राप्त कर चुकी थी।

सिन्यावस्की के लिये ये यात्राए एक रहस्य से साक्षात्कार थी। इनसे उन्हें एक

ऐसी दुनिया का परिचय मिला, जिसके बारे मे ये कुछ भी नहीं जानते थे। शहर मे ही पैदा हुए और पले, शहर के प्रेमी सिन्यावस्की अचानक देहाती इलाको, किसानो और उनके माध्यम से सोवियत मघ के आज भी जीवित अतीत का अनुसधान कर अचानक स्तब्ध रह गये। २० वे अधिवेशन से उन्हे जो आघात पहुचा था, उसके बाद इन यात्राओं से अधिक अन्य किसी भी बात ने उनके मन की शान्ति और सतुलन को इस प्रकार दृढ़ नही किया। वे अनन्त समय तक, अपनी इन यात्राओं के बारे मे बात करते रह सकते थे और उन्होने जो विलक्षण बाते देखी और सुनी उनके कभी खत्म न होने वाले किस्से सुनाते रहते थे।

इसी समय रूस के इतिहास मे, उसके साहित्य के उद्गमो मे, धार्मिक चित्रो मे और जिन दृष्टिकोणो और विचारो को ये अभिव्यक्त करते है उनमे सिन्यावस्की की अत्यधिक गहरी रुचि उत्पन्न हुई। उन्हे जो शिक्षा मिली थी, उसमें उन्हे इस बात का कोई आभास नही मिला था कि धार्मिक परम्परा इतनी समृद्ध और विविधतापूर्ण है। वह दुनिया जिसने उनके पुरखो के जीवन को पूर्ण बनाया था, उसे सार्थकता दी थी और उनकी विलक्षण कला कृतियो को जन्म दिया था, सिन्यावस्की के लिये पूरी तरह से अजनबी और नयी थी। धीरे-धीरे इतिहास और इससे भी अधिक कला के अनुसधान से या उसके माध्यम से उन्होंने उस सूत्र को देखा, जो अनेक पीढियो को, एक के बाद एक पीढी को अपने मे पिरोये हुए था—यह सत्य का केवल ऐतिहासिक या अदृश्य विचार ही नही था बल्कि संसार की सब बातो से ऊपर और शाश्वत सत्य का साक्षात था। इन अनुसधानो का परिणाम 'अनगार्डेड थॉट्स' है। इसका कथ्य एक ओर तो अपने देश को समझने की उत्कट अभिलाषा है और दूसरी ओर मृत्यु, अनन्तता और ईश्वर की मकल्पना को समझने का उनका अध्यवसाय।

उन्होने अतीत को अपने समक्ष एक आदर्श रूप मे रखा और न ही उनकी इच्छा इसे फिर जीवित करने की थी। वे तो इसे केवल वर्तमान और भविष्य का जीवन्त स्रोत मानते थे। यदि उनके लिये "क्रांति" सदा रूसियो की सामाजिक न्याय की स्थापना की भूख का पर्याय रही तो अब उन्होने पहले से कही अधिक स्पष्ट रूप से यह देखा कि उनकी सत्य को जानने और समझने की आवश्यकता उतनी ही बडी है और इन दो बातो को अलग नही किया जा सकता। प्रावदा का अर्थ, सत्य और न्याय दोनो है और प्रावदा ही देश को उस मानसिक और नैतिक भ्रांति के व्यामोह से बाहर निकालने का एक मात्र रास्ता था, जो स्तालिन की मृत्यु के बाद उत्पन्न हुआ था।

यद्यपि यह बात विरोधाभासपूर्ण लगेगी, लेकिन अतीत और धार्मिक परम्पराओ से उनके परिचय ने उन्हे प्रतिदिन के जीवन और उसकी वास्तविकताओं से अलग-थलग करना तो दूर, उन्हे इन वास्तविकताओ के उससे भी कहीं अधिक समीप पहुचा दिया, जितना वे युवक कम्युनिस्ट संगठन, कोमसोमोल के निष्ठावान सदस्य के नाते थे।

मानवीयता से पूर्ण, ईमानदार, कला के प्रति संवेदनशील, सिन्यावस्की मुझे पहली ही मुलाकात मे एक ऐसे शुद्ध बुद्धिवादी दिखाई पड़े, जिसे विचारो मे खेलने का मोह होता

है। अब टेरट्ज के रूप मे स्वय को अभिव्यक्त कर, वे अपनी आरम्भिक कटुता से मुक्त हो चुके थे और उन्हे एक नया आयाम प्राप्त हुआ था। इसका कारण अन्तत मुक्त और स्वतन्त्र रूप से लिखने का अनुभव और अशत उनका किसानो के ईसाई रूस का, उसकी समस्त जटिलताओ और सद्‌भावनाओ सहित अनुसधान था।

मेरे परिचय के सब बुद्धिवादी ख्रुश्चेव की खिल्ली उडाते थे। सिन्यावस्की ने भी उनकी कमजोरियो और उनके व्यक्तित्व के हास्यास्पद पक्ष को देखा था। लेकिन उन्होने ख्रुश्चेव की उपलब्धियो को भी देखा समझा था। "आपको उन्हे इस बात का श्रेय देना होगा कि उन्होने सार्वजनिक जीवन मे सामान्य विवेक का फिर समावेश किया है। वे सिद्धातकारो के विरुद्ध है, जो लोगो को, विचारो के अनुरूप ढालने के प्रयास मे निरन्तर लगे रहते है। आप उन्हे अनेक बातो का दोषी ठहरा सकते है। लेकिन उन्होने हमे शान्ति और स्थायित्व के दस वर्ष दिये है—इस शताब्दि के आरम्भ से हमे कभी ऐसी कोई वस्तु उपलब्ध नही हुई। दस वर्ष और प्रतीक्षा कीजिए और फिर देखना कि हम कैसी पुस्तके निकालते है। और केवल पुस्तकें ही नही, रूस के लोग असाधारण प्रतिभा सम्पन्न है। बस उन्हे केवल अवसर चाहिये।" अपने देश के जीवन और परम्परा मे इतनी गहरी निष्ठा के कारण उन्हे इसके उज्ज्वल भविष्य पर पूरा विश्वास था। वे अत्यधिक आश्वस्त दिखाई पडते थे और उनका मन भी शान्त था। उन्हे इस बात का निश्चय हो चुका था कि उन्होने अपना मार्ग ढूढ निकाला है। अब एब्राम टेरट्ज को उसके सही रूप मे प्रकट किया जा सकता है। सिन्यावस्की अब अपने मुकदमे का सामना करने के लिये तैयार थे।

इन पृष्ठो मे डेनियल के बारे मे इतना कम कहने का कारण यह है कि मेरा सिन्यावस्की की तुलना मे उनसे अपेक्षाकृत कम परिचय था, उनसे कम मिलने का अवसर मिलता था। वैसे ये दोनो लेखक मेरे मस्तिष्क मे अलग-अलग रूप मे विद्यमान नही है और मैं निश्चयपूर्वक यह अनुभव करती हूं कि मैंने सोवियत रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के २० वें अधिवेशन मे उद्‌घाटित रहस्यो का सिन्यावस्की पर जिस प्रभाव का उल्लेख किया है, वही उसी सीमा तक, डेनियल के बारे मे भी सच है। वे भी अपने लेखन व्यवसाय को एक ऐसी आवश्यकता समझते थे, जिससे दूर नही भागा जा सकता और यह उनके लिये अपने अन्त करण के प्रति एक कर्तव्य भी था। यह बात उस नैतिक रुझान से पर्याप्त रूप से सिद्ध हो जाती है जो वे अपनी रचनाओ मे प्रकट करते हैं।

इन दोनो लेखको में से प्रत्येक ने अपने-अपने तरीके से अपनी पीढी की कठिन समस्याओ का समाधान ढूढने का प्रयास किया है.—देश भक्ति की आवश्यकता और अपने नेताओ के विचारो और अभिरुचियो के अन्धानुकरण को सही और भिन्न रूप मे देखना समझना, यह अनुभव करने की आवश्यकता कि शासको द्वारा निर्धारित विचारो के पीछे आंख बन्द कर चलने मे निष्क्रियता और प्रवाहहीनता उत्पन्न होती है, सोवियत सघ मे विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अधिकार को प्रबल रूप मे प्रकट करने की

आवश्यकता। ये दोनो लेखक इस निष्कर्ष पर पहुचे कि इन समस्याओ का समाधान ढूढने के लिये, इन प्रश्नो का उत्तर पाने के लिये, यदि उन्हे स्वय अपनी स्वतन्त्रता का भी बलिदान देना पडे तो उचित होगा।

सिन्यावस्की और डेनियल जो जोखिम उठा रहे थे उसके विचार ने मुझे अत्यधिक चिंतित कर दिया था। मैने बिना सोचे समझे ही इनकी मदद करने का निश्चय नही किया था। यह कार्य करते हुए मेरा मन बडा भारी था, लेकिन मित्रता की अपनी जिम्मेदारिया होती हैं और इसके लिये मैं इन्कार भी कैसे कर सकती थी ? यह बात स्पष्ट थी कि मुक्त रूप से लिखना सिन्यावस्की की सबसे बडी आवश्यकता थी।

मुझे उनकी प्रतिभा पर भरोसा था। उनकी आरम्भिक रचनाए भी अत्यधिक उद्रेक और क्रोधपूर्ण व्यग्य के बावजूद, पर्याप्त शक्तिशाली थी और उनकी विशिष्टता स्पष्ट दिखाई पडती थी। ये रचनाएं जल्दबाजी मे और अत्यधिक जोश मे लिखी गई थी और इसका कारण वे परिस्थितिया थी, जिसमे यह लिखा गया, अक्सर इन रचनाओ का पर्याप्त सशोधन नही हो सका, लेकिन इन मे जो व्यग्रता थी, जो छटपटाहट थी, वह उस सकट और त्रास की सही अभिव्यक्ति थी, जिससे होकर वे गुजर रहे थे। और इन रचनाओ मे एक महान् लेखक की छाप दिखाई पडती थी। यह कल्पना कर पाना भी असम्भव था कि ऐसी प्रतिभा को इस प्रकार अज्ञात और उपेक्षित रहने दिया जाये।

इसके अलावा यह भी महत्वपूर्ण बात थी कि सिन्यावस्की और डेनियल की पुस्तके पश्चिम के देशो मे पहुचे, जिससे पश्चिम के लोगो को रूस की पीढी के विचारो का परिचय मिले। यदि रूस के लोगो को बहुत लम्बे अरसे से परिश्चम का जो परिचय मिल रहा है, वह विचित्र व्यग्य-चित्रो जैसे चित्रणो के माध्यम से ही प्राप्त है और वे आज भी कुछ हद तक इस चित्रण से प्रभावित है, और यही बात अशत सोवियत रूस के बारे मे पश्चिम के लोगो के विचारो के सबध मे सही है। केवल रूस का अपना स्वर ही रूसियो की समस्याओ और उनके विचारो तथा दृष्टिकोणो को समझने में सहायक बन सकता था।

यह बात सही है कि हाल मे सोवियत रूस मे जो पुस्तके प्रकाशित हुई है, उनसे हमे रूस की कही अधिक सच्ची तस्वीर देखने को मिलती है और कभी-कभी तो इन रचनाओ मे इसके आन्तरिक जीवन की गहराई भी हमारे समक्ष उद्घाटित होती है। (उदाहरण के लिये सोल्झनितमीन की रचनाओ का उल्लेख किया जा सकता है)। लेकिन जो रचनाए निजि और गुप्त तौर पर हाथो-हाथ प्रसारित होने के कारण सेसर से बच जाती है या जो पुस्तके विदेशो मे प्रकाशित होती हैं, वे एक प्रकार से सोवियत मानस का कही अधिक सच्चा परिचय देती हैं और इन पुस्तको को लिखने मे जो खतरा रहता है, वह हमारे हृदय को और गहराई से छू लेता है। पास्तरनेक, ब्रोदरस्की, टेरट्ज और अर्जहक के बिना आधुनिक सोवियत साहित्य अधूरा ही रह जाता।

इसके अलावा मेरे मित्रो का, शासको द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलने से इनकार करना,

मुझे उनके देश के लिये एक स्वस्थ और आशाप्रद लक्षण दिखाई पडा । स्तालिनवाद के व्यू से बाहर निकलने के लिये साहसी लोगो की आवश्यकता है और इन्ही साहसी लोगो के हाथ में भविष्य है । ये ही वे लोग हैं, जो उदार नीतिया लागू कराने के कार्य को गतिशील बनाते हैं क्योकि यह कार्य बिना प्रयास के अपने आप नही हो सकता । यह कार्य करने के लिये कोई आकाश से उतर कर नही आयेगा और न ही मात्र "ऐतिहासिक आवश्यकता" ही इस कार्य को पूरा करा सकती है । इसके लिये तो बड़ी गहराई से पैठी हुई निष्क्रियता की आदतो को समाप्त करने के लिये कठोर संघर्ष कर, विजय प्राप्त करनी होगी । यह संघर्ष अपनी बलि अवश्य लेगा । लेकिन जो लोग, सोवियत संघ मे स्वतत्रता के सकल्प को और दृढ बनाने के प्रयास मे अपने हाथ जला बैठते हैं, वे इस कार्य मे उन लोगो से कही अधिक योगदान करते हैं, जो शासको द्वारा इसकी स्वीकृति और घोषणा की प्रतीक्षा करते रहते है ।

जैसाकि टेरट्ज कहते हैं, मुझसे तो समुद्र मे एक बोतल फैंकने के लिये कहा गया । दोनो पक्षो पर विचार के बाद, मैंने अनुभव किया कि मैं इससे इनकार नही कर सकती । शेष ईश्वर के हाथों मे था । लेकिन व्यवहार मे इस बात पर चलना आसान नही था । मैं वस्तुत अपने मित्रो के इस अनुरोध के प्रति वचनबद्ध थी कि मैं किसी सोवियत विरोधी प्रकाशक को ये रचनाए नही दूगी । इसका क्या अर्थ होता है ? यह एक अस्पष्ट शब्द है । मैंने इसे अपने ज्ञान और जानकारी के अनुसार, सही रूप से समझने और व्याख्या करने की कोशिश की । मैंने एक ऐसे प्रकाशक की तलाश की, जिसका दृष्टिकोण सोवियत विरोधी पूर्वाग्रहो से ग्रस्त न हो और जो इसी प्रकार सोवियत सरकार का अन्धानुकरण भी न करता हो । मैं चाहे कुछ भी करती, कोई न कोई उसकी अवश्य आलोचना करता और मेरे लिये प्रकाशको के राजनीतिक विचारो से अधिक उनकी ईमानदारी और उनके विवेक का महत्व था ।

मैं जैसे प्रकाशको की तलाश मे थी, उन्हे प्राप्त करने का मेरा सौभाग्य रहा और पश्चिम को सर्वप्रथम टेरट्ज और फिर अर्जहक का परिचय देने का श्रेय उनको है । केवल मेरे यह कहने पर कि ये पुस्तकें सोवियत रूस मे लिखी गई हैं, उन्होने रचनाओ के साहित्यिक महत्व और इन अज्ञात लेखको की अभिव्यक्ति की स्वतत्रता की आवश्यकता के प्रति सहानुभूति रखते हुए, इन पुस्तको के प्रकाशन की जोखिम उठाई । और जब ये दोनो लेखक अचानक बहुत प्रसिद्ध हो गये, तब भी उन्होंने (प्रकाशको ने) अपना महत्व दर्शाने के लिये इनका रहस्य नही खोला ।

पहले प्रकाशक थे 'एस्प्रित' के सम्पादक जे० एम० दोमेनाक । उन्होने सिन्यावस्की का प्रबन्ध आन सोशलिस्ट रियलिज्म देखा और उसकी मौलिकता तथा गहराई से वे प्रभावित हुए और अपनी सामान्य उत्साहपूर्ण उदारता से इसे तुरन्त प्रकाशन के लिये स्वीकार कर लिया । तुरन्त ससार भर मे इस पुस्तक को ख्याति मिली ।

'दि ट्रायल बिगिन्स' बहुत लम्बी रचना थी और यह एस्प्रित में प्रकाशित नही हो
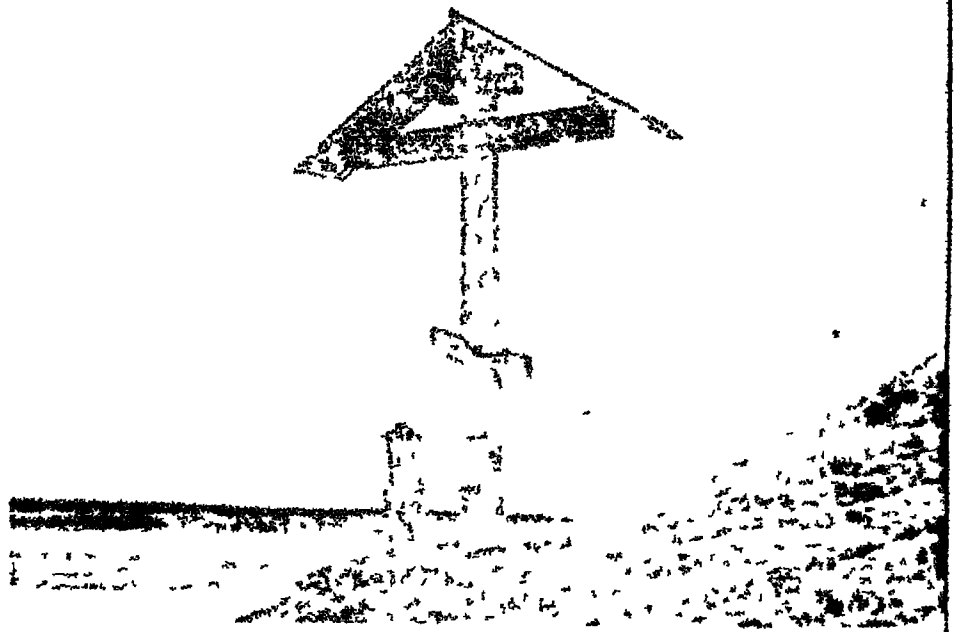
अज्ञेय और माशा सिन्यावस्की
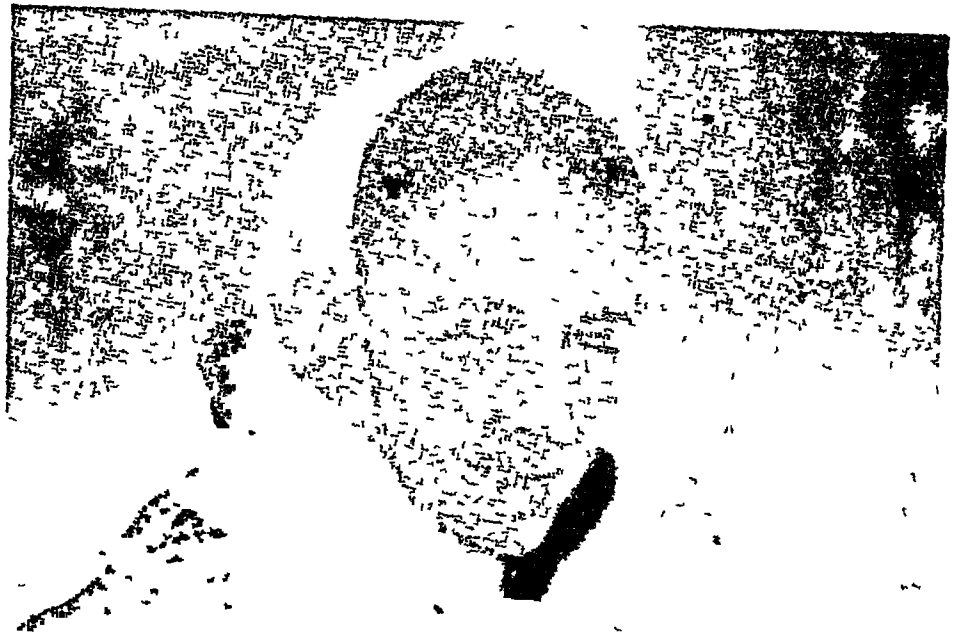
सिन्दावस्की दम्पत्ति ने देखा कि सुदूर उत्तर के गावों में आज भी रूस के लोगों ने कताई और बुनाई की कला को त्यागा नहीं है।
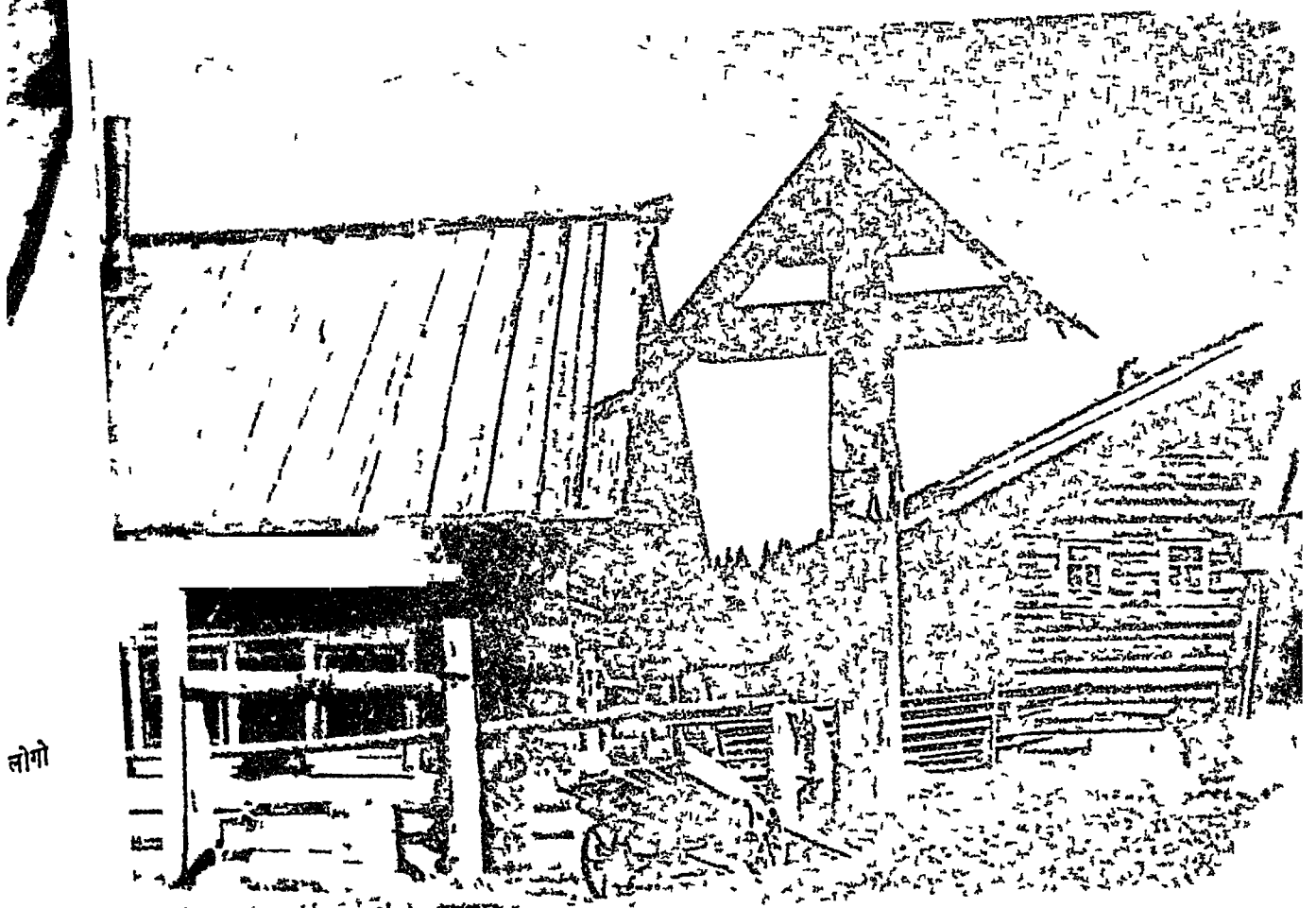
सिन्यावस्की 'बाएं' मेजन नदी मे नौका खेते हुए।

'बाएं' नदी तट का एक गाव।

मेजेन जिले के ग्रामीण अपने क्षेत्र की परम्परागत पोशाक मे। एक समय उत्सवो के अवसर पर ये पोशाक पहनी जाती थी। सिन्यावस्की दम्पत्ति को दिखाने के लिए ग्रामीणो ने ये पोशाकें पहनी, जिनके चित्र यहा दिए गए है।

बीच मे—क्षेत्रीय पोशाक पहने माशा सिन्यावस्की
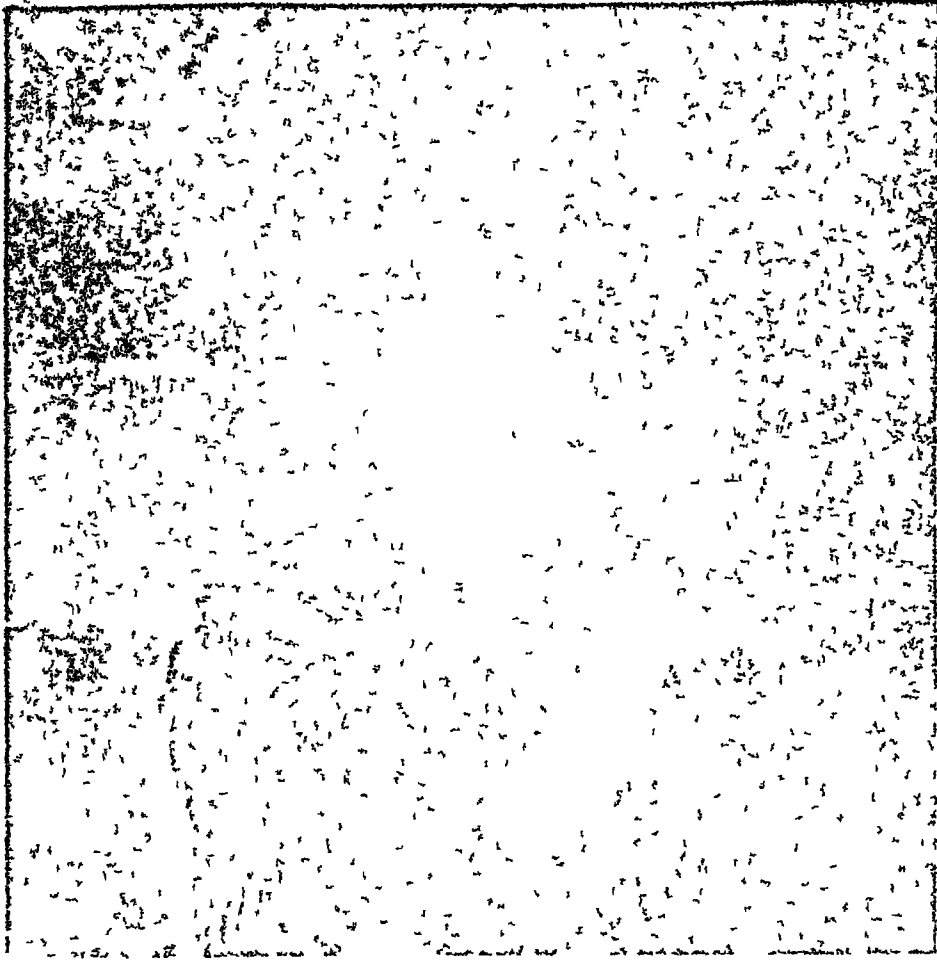
सकती थी और दोमेनाक पुस्तक प्रकाशक नही थे, अतः पोल भाषा की पत्रिका कुलतुरा के सम्पादक एम. जी. ग्रोयक और उनकी प्रकाशन संस्था इन्स्टीट्यूट लीतेरेरी ने इसे प्रकाशन के लिये स्वीकार किया ।

उन्हे यह पुस्तक प्रकाशन के लिये देने मे मुझे इस बात का भय था कि उनका प्रवासी लोगो की पत्रिका से सम्बन्ध होने के कारण, किसी दिन इससे सिन्यावस्की और डेनियल को हानि पहुच सकती है । मैं इन लेखको से तो अब परामर्श नही कर सकती थी । मैंने स्वय निर्णय किया और अपने निर्णय पर पश्चात्ताप करने का मुझे कोई कारण दिखाई नही पडता ।

मेरा जी ग्रोयक से परिचय अपने पति, पोलैंड के मूर्तिकार ज़ामोय्स्की की मार्फत हुआ और मैं यह जानती थी कि मैं उनकी विवेकपूर्ण ईमानदारी पर भरोसा कर सकती हूं । मेरा जापस्की पर भी इतना ही विश्वास था, जो उनके साथ काम करते थे, जो एक चित्रकार थे और मेरे पति के पुराने मित्र भी । उनका कातीन मे जीवित बच जाना एक चमत्कारिक घटना ही थी और वे एक प्रशसनीय पुस्तक 'दि इनह्यूमन लैंड' के लेखक थे । मैंने इन दोनो मे जो एक दुर्लभ गुण देखा, उससे भी मैं बहुत प्रभावित हुई । अन्य अनेक पोलैंडवासियो की तरह इन दोनो को भी रूसियो के हाथो बहुत कष्ट उठाने पडे थे । यह स्पष्ट था कि वे कम्युनिस्ट नही थे । लेकिन मैंने कभी भी इन लोगो के मु ह से, रूस के लोगो के विरुद्ध एक भी कटु शब्द नही सुना । वस्तुत वे मित्रता की उस परम्परा को फिर कायम करने की अदम्य आशा करते थे, जिसने माइकीविक्ज़ और पुश्किन को एकता के सूत्र मे पिरोया था ।

विवाह के कारण पोल जाति से और भावनाओ से रूस से गहराई से सम्बद्ध होने के कारण मुझे इन लोगो के इस दृष्टिकोण ने बहुत प्रभावित किया । मुझे यह बात ईश्वर की कृपा ही दिखाई पडी कि सोवियत लेखन के बीज इस मित्रतापूर्ण भूमि पर पड रहे है और पोल (पोलैंड निवासी) तथा फ्रासीसी पूर्व और पश्चिम के कलाकारो और लेखको को समीप लाने मे सहायक बन रहे हैं । मैंने इस दृष्टि से इन बातो को देखा और मेरा विश्वास था कि मेरे मित्र (सिन्यावस्की और डेनियल) मेरे इस चुनाव पर सहमति प्रकट करेंगे ।

मुकदमा खत्म हो चुका है । सिन्यावस्की और डेनियल बलात् श्रम शिविरो मे पडे हैं, लेकिन मुझे उनके साहस से जो हर्ष मिला है, वह उस मानसिक कष्ट से कही अधिक है, जो उनकी मुसीबतो के कारण मुझे हुआ है । अपना दोष स्वीकार करने से इनकार कर, उन्होने एक मनुष्य के रूप मे, अपने साहस और निष्ठा को प्रकट किया है और उनके इस कार्य का प्रतीकात्मक महत्व उन्हे व्यक्तियों के रूप मे बहुत ऊपर उठा देता है । वे अपनी पीढी और अपने देश की नयी भावना और स्वतत्रता की प्रबल इच्छा के प्रतीक हैं और विदेशो मे उन्हे इसी रूप मे देखा समझा गया है । इनकी गिरफ्तारी और मुकदमे त । सजा के विरुद्ध हृदय को छू लेने वाली सीमा तक, तात्कालिक और ससार व्यापी प्रतिक्रिया हुई है । वस्तुतः

विदेशों के लोग, सोवियत लोगो पर अपने विश्वास और उनके प्रति अपनी सहानुभूति का, इन दो लेखको के मामले को उठा कर, उनके स्वतन्त्रता प्रेम मे अपना विश्वास प्रकट करने से अधिक बडा क्या प्रमाण दे सकते है।

सिन्यावस्की और डेनियल केवल अपने देश की आकाक्षाओ को ही प्रतिध्वनित नही करते। वे हम सब लोगों को, जो सुरक्षा और आराम के कारण उपेक्षा के गर्त मे गिर गये हैं, इस बात का स्मरण दिलाते हैं कि कलाकार का व्यवसाय पूर्ण सत्ता को अर्पित है और कला पास्तरनेक के शब्दो मे, हमारा बलिदान मागती है।

२. मुकदमे से पहले की जाँच

अभियुक्तों की ओर से अपील

यहा जो चार पत्र दिये गये हैं, और जिन्हे दिसम्बर १९६५ मे श्रीमती सिन्यावस्की और श्रीमती डेनियल ने अपने विवाह से पहले के नामो से लिखा, यह दर्शाते है कि अभियुक्तो के रिश्तेदारो और मित्रो पर, ८ सितम्बर को सिन्यावस्की की और १२ सितम्बर १९६५ को डेनियल की गिरफ्तारी के समय से ले कर १० फरवरी १९६६ को उनका मुकदमा शुरू होने के बीच की आरम्भिक सुनवाई और छानबीन के ५ महीनो मे कितने दबाव डाले गये।

सोवियत कानून के अन्तर्गत आरम्भिक जांच (प्रेदवारितेलनोये स्लेदस्तवी) एक जांच-मजिस्ट्रेट (स्लेदोवातेल, यहा इस शब्द को अनुवाद जाच-अधिकारी किया गया है) करता है, जिसकी नियुक्ति सरकारी वकील का कार्यालय (प्रोकुरातुरा) करता है या जिन मामलो मे राष्ट्रीय सुरक्षा की वात सम्बद्ध समझी जाती है (जैसा कि सिन्यावस्की और डेनियल के मामले मे समझा गया) जाच-मजिस्ट्रेट की नियुक्ति राज्य सुरक्षा समिति (के० जी० बी०) करती है। जाच अधिकारी से एक महीने के भीतर अपना काम पूरा करने की अपेक्षा की जाती है। स्थानीय सरकारी वकील, इस अवधि को अधिक से अधिक दो महीने और बढा सकता है और इससे आगे अवधि वढाने के लिये आर. एस एफ एस. आर[1] के सरकारी वकील या सोवियत संघ के सबसे बडे सरकारी वकील से अनुमति लेनी पडती है। इस बात का कोई सकेत नही है कि यह अनुमति प्राप्त की गई या नहीं, लेकिन अन्य तरीको से अधिकारियो द्वारा कानून का उल्लघन करने के प्रमाण मौजूद हैं। इस प्रकार, रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड प्रक्रिया सहिता की धारा ३१९, जिसका स्तालिन के बाद संशोधन किया गया, अभियुक्त के मुकदमे से पहले निर्दोष होने के सिद्धात को स्वीकार करती और इस पर जोर देती है (लेकिन इस बात का पालन नही किया गया) जबकि धारा २०९ की व्यवस्था के अनुसार यह आवश्यक है कि सरकारी वकील को भेजी गई शिकायतो का उत्तर तीन दिन के भीतर अवश्य प्राप्त होना चाहिये। लेकिन श्रीमती सिन्यावस्की ने ९ फरवरी १९६६ को जो पत्र लिखा, उसका कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।

१—रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य, जिसकी राजधानी मास्को है। जिन गणराज्यो से मिलकर सोवियत समाजवादी गण राज्य संघ का निर्माण होता है, उनमे यह सबसे बडा गणराज्य है।

श्रीमती सिन्यावस्की का पत्र

सेवा मे
सोवियत रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव[2]
सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के बडे सरकारी वकील
राज्य सुरक्षा समिति के अध्यक्ष
"प्रावदा", "इजवेस्तिया" और "साहित्यिक गजट" के सम्पादक गण[3]

इस वर्ष (१९६५) ८ सितम्बर को मेरे पति, आन्द्रेय दोनातोविच सिन्यावस्की को राज्य सुरक्षा समिति (के० जी० बी०) ने गिरफ्तार किया। मुझे जो तलाशी का वारट दिखाया गया, उसमे कहा गया था कि उन पर "सोवियत विरोधी साहित्य लिखने, इस साहित्य को रखने और प्रचारित करने" का सदेह है।

विभिन्न और अनेक जाचो और "मुलाकातो" के दौरान मुझसे जो प्रश्न पूछे गये और सास्कृतिक मत्रालय की कला इतिहास सस्था[4] की पार्टी की खुली बैठक मे कामरेड कुनितसीन ने जो वक्तव्य दिये, उनसे मुझे यह पता चला कि मेरे पति पर विदेश मे एब्राम टेरट्ज के नाम से अपनी रचनाए प्रकाशित करने का आरोप लगाया गया है।

जाच के दौरान मुझे सिन्यावस्की द्वारा हस्ताक्षरित एक बयान दिखाया गया, जिसमे उन्होने इस तथ्य को स्वीकार किया है। पहली बात यह है कि कोई भी व्यक्ति जो १९३७ की घटनाओ को देख चुका है, जिसने १९५३ मे "डाक्टरो के षड्यत्र[5]" के मामले को देखा है और स्तालिन के दौर मे दमन की अन्य मनमानी कारवाइयो को देखा है वह यह समझ सकता है कि शुरू मे मेरा भय और चिता इतनी अधिक थी कि मै यह भूल गई कि हमारे देश मे कानून है—ऐसे कानून जिन्हे लिपिबद्ध किया गया है और जिनका समारम्भ बुनियादी कानून—सविधान—से होता है और इन सब कानूनो मे निहित बातो की ठोस अभिव्यक्ति अंततः दण्ड सहिता मे हुई है।

जब मैं इस आरम्भिक आघात के ऊपर, जो इन परिस्थितियो मे स्वाभाविक था, काबू पा सकी तो मैंने यह अनुभव किया कि मेरे सामने कानून के भयकर उल्लघन का

२—लियोनिद ब्रेझनेव।

३—प्रावदा—कम्युनिस्ट पार्टी का मुख-पत्र, ईजवेस्तिया सरकार का मुख-पत्र, साहित्यिक गजट (लितेरातुरनाया गजेता) सोवियत लेखक सघ का मुख-पत्र। न तो श्रीमती सिन्यावस्की का और न श्रीमती डेनियल का पत्र प्रकाशित हुआ।

४—वह सस्था जिसमे श्रमती सिन्यावस्की काम करती थी। "कामरेड कुनितसीन' सभवत सस्था के पार्टी सगठन के अध्यक्ष हैं।

५—देखिए सफाई पक्ष की ओर से प्रस्तुत प्रमाण जिनका उपयोग नही किया गया' के अन्तर्गत टिप्पणी न० ९.

मामला है। मैंने यह सोचते हुए कुछ समय प्रतीक्षा की कि राज्य सुरक्षा समिति और सरकारी वकील अपनी गलती मे सुधार कर लेंगे। लेकिन अब जाच शुरू हुए तीन महीने से अधिक समय बीत चुका है और कोई भी यह नही कह सकता कि यह जाच कब खत्म होगी और क्योकि गिरफ्तारी और जाच दोनो ही निराधार हैं, अत. आप को पत्र लिखने के अलावा मेरे सामने अन्य कोई रास्ता नही रहा।

यह हो सकता है कि यह पत्र लिखने के परिणामस्वरूप स्वय मुझे ही गिरफ्तार कर लिया जाये (मुझे निरन्तर इस बात की धमकी दी जा रही है और पहले जिस प्रकार कानून का उल्लघन किया जा चुका है उसको ध्यान मे रखते हुए मुझे ऐसी किसी भी बात के लिये तैयार रहना चाहिये)। यद्यपि मैं, जैसा कि स्वाभाविक है, इस मुकदमे की कारवाई से भयभीत हूं, लेकिन जब बुनियादी न्याय और मानव-गरिमा को पावो तले रौंदा जा रहा हो तो मैं चुपचाप बैठी नही रह सकती।

१. मैंने एब्राम टेरट्ज के नाम से प्रकाशित सब रचनाए पढी हैं और चाहे इन्हे सिन्यावस्की ने लिखा हो या किसी अन्य व्यक्ति ने, मैं जोर देकर यह बात कहती हूं और सदा और सर्वत्र यह जार देकर कहती रहूगी कि इनमें कुछ भी सोवियत विरोधी नही है—यह सीधा-सादा साहित्य है और इसमे न तो राजनीतिक आक्षेप है और न ही सोवियत विरोधी प्रचार।

२. टेरट्ज के गद्य, उनके लिखने के तरीके, उनकी शैली, उनकी भाषा, उनके कुछ दार्शनिक विचारो को (जिनका, यह उल्लेखनीय है कि, राजनीति से कोई सम्बन्ध नही है) पसन्द या नापसन्द किया जा सकता है, लेकिन साहित्यिक असहमति किसी लेखक की गिरफ्तारी का पर्याप्त कारण नही है।

कम से कम २० वे अधिवेशन के बाद मेरा यह विश्वास अवश्य बन गया है।

मैं यह बात समझ सकती हूं कि किसी लेखक की आलोचना की जाये और यह आलोचना चाहे कितनी कटु हो, चाहे कितनी निष्ठुर हो, क्योकि शब्दो, और केवल शब्दो के द्वारा किसी साहित्यक रचना पर प्रहार किया जा सकता है शब्द ही—न कि लेखक की गिरफ्तारी, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, सही तरीका है और मैं लेखक की गिरफ्तारी के विरुद्ध कडे से कडे शब्दो मे अपना विरोध प्रकट करती हू, क्योकि यह हमारे सविधान मे निहित, विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता और समाचारपत्रो की स्वतत्रता के अनुच्छेद का उल्लघन है। मै इस कारण से और भी कड़े रूप से विरोध प्रकट करती हू क्योकि विदेशो मे अपनी रचना प्रकाशित कराने वाले सिन्यावस्की पहले सोवियत लेखक नही हैं। इससे पहले के उदाहरणो से सब परिचित है: गोर्की, स्तानिमलावस्की, पास्तरनेक, ईवतुशेंको और अन्य[६]।

६—मैक्सिम गोर्की ने बर्लिन मे (१९२२) 'आन दी रशियन पेजेंट्री' शीर्षक लेख प्रकाशित किया था। ईवतुशेंको ने अपनी पुस्तक "ए प्रीकाशियस आटोबायोग्राफी" को (१९६३ मे) पेरिस के एक्स्प्रेस मे प्रकाशित किया और बाद मे ख्रुश्चेव ने उनकी इस बात के लिये कटु आलोचना की।

यदि इन सब लेखको को हमारे सविधान से सरक्षण मिला तो सिन्यावस्की ही इसके अपवाद क्यो है ? क्या ऐसे गैर-कानूनी आचरण से हमारे राज्य की प्रतिष्ठा को धक्का नही पहुचता ? मैं यह जानती हूं कि गलती स्वीकार करना सदा कठिन होता है, लेकिन इससे पूर्व कि सिन्यावस्की का मामला झिवागो सम्बन्धी मामले और ब्रोदस्की[7] के मामले की तरह, हमे पूरे ससार की आखो के समक्ष अपमानित करे, इस गलती को स्वीकार करना बेहतर होगा।

मैं यह जानती हू कि मुझसे यह कहा जायेगा कि मैं शुद्ध व्यक्तिगत कारणों से सिन्यावस्की का इस प्रकार समर्थन कर रही हू, "आखिरकार वे तुम्हारे पति है। हम यह बात समझते हैं, हम भी मनुष्य है............"

इस प्रकार की बात का पूर्वानुमान लगाते हुए मैं टेरट्ज की एक विशिष्ट कहानी "टेनेट्स"[8] को सलग्न कर रही हू। आपमे से जो लोग सामूहिक फ्लैटो मे रहते हैं, वे यह जान जायेंगे कि यह कहानी किस विषय के बारे मे है और आप स्वय यह निर्णय कर सकेंगे कि क्या यह अपमानजनक अथवा सोवियत विरोधी है। (व्यक्तिगत रूप से मैं स्वय इन परिस्थितियो मे ३५ वर्ष रही हूं और सिन्यावस्की ४० वर्ष)। क्या लेखक को "सोवियत विरोधी साहित्य लिखने, उसे अपने पास रखने और प्रचारित करने के लिये" गिरफ्तार किया जा सकता है ? मेरी राय मे यह नही किया जा सकता। और टेरट्ज की कोई भी रचना इससे अधिक "सोवियत विरोधी" नही है।

मैं इसका उत्तर भी जानती हू मुझे यह बताया जायेगा कि 'टेरट्ज़ की रचनाए' हो सकता है कि अपने आप मे सोवियत विरोधी न हो लेकिन यह एक प्रकार का रहस्यवादी कूडाकर्कट है और इसका बहुत लाभ उठाया जा रहा है--इसे अनेक सोवियत विरोधी प्रकाशक छाप रहे है और इस प्रकार ये रचनाए, "हमारी मातृभूमि" को गहरी क्षति पहुचा रही है। 'लेकिन इसके बावजूद प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि कोचेतोव का उपन्यास "दि रीजनल कमेटी सेक्रेटरी"[9] को एक ऐसे प्रकाशक ने प्रकाशित किया, जिससे

७—फरवरी १९६४ मे कवि जोसेफ ब्रोदस्की को लेनिनग्राद की एक अदालत ने "सामाजिक परजीवी" होने का आरोप लगाकर ५ वर्ष के सश्रम कारावास का दण्ड दिया। ससार-व्यापी विरोध प्रदर्शन के बाद, उन्हे १९६५ मे चुपचाप रिहा कर दिया गया।

८—दि आईसिकिल एन्ड अदर स्टोरीज़ मे सकलित एक कहानी।

९—साहित्यिक मासिक 'ओक्त्यावर' के सम्पादक, वीसेवोलोद कोचेतोव अत्यधिक कट्टरपथी है और वे सोवियत उदारतावादियो पर लिखे गये अत्यधिक अपमानजनक और निन्दापूर्ण उपन्यास 'दि ब्रदर्स एरशोव' के लेखन से कुख्यात हुए। डेनियल की कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" और सिन्यावस्की के 'मेकपीस एक्सपेरिमेट' मे उनके नाम का उल्लेख हुआ है।

अधिक सोवियत विरोधी प्रकाशक मिलना मुश्किल है और इसे सोवियत व्यवस्था का भण्डा-फोड़ करने वाली और उसकी बुराइयों को प्रकट करने वाली पुस्तक के रूप मे पेश किया। यह भी सर्वविदित है कि साहित्यिक गजट के एक पृष्ठ, जिसमें उस समय पास्तरनेक की कटु आलोचना की गई थी जब उन्हे अनेक तरीको से सताया जा रहा था[10], विदेशो मे अनेक समाचारपत्रों मे पूरे का पूरा फिर छापा गया। लेकिन यदि लेखक पर इस बात का दायित्व होता है या उसे अन्य लोगो के कार्यों का जो उसकी रचनाओ का अपनी इच्छा के अनुसार उपयोग करते हैं जिम्मेदार और दोषी ठहराया जा सकता है तो कोचेतोव, साहित्यिक गजट के सम्पादको और पास्तरनेक के बारे मे उस पृष्ठ की सामग्री लिखने वाले लेखको को भी अवश्य गिरफ्तार किया जाना चाहिये था। लेकिन उन पर मुकदमा चलाने का सवाल ही कहा उठता है।

इन सब बातो को ध्यान मे रखते हुए, क्या सिन्यावस्की की गिरफ्तारी कानूनसम्मत थी ? नही नही और एक बार फिर नही।

३. गिरफ्तारी के सम्बन्ध मे जो और अनेक कारवाइया की गई वे गैर कानूनी थी।

(क) तलासी के वारंट मे सोवियत विरोधी साहित्य को जब्त करने का हुक्म शामिल था। लेकिन स्वेताएवा, मैंडलशैंतम, पास्तरनेक, अक्मातोवा, गुमलियोव, रेमेजोव और अन्य लेखको की रचनाए भी जब्त कर ली गई, जिन्होने कभी भी कोई भी सोवियत विरोधी बात नही लिखी। हा, कुछ इसके अपवाद अवश्य है, बिना कोई फहरिस्त बनाये हुए पुस्तको और पाण्डुलिपियो को जब्त कर लिया गया और मुझे यह देखने तक नही दिया गया कि क्या-क्या चीजें जब्त कर, ले जाई जा रही हैं।

(ख) जाच के दौरान जो तरीके अपनाये गये, वे कानून मे निर्दिष्ट तरीको से एकदम मेल नहीं खाते, मुझे डराने धमकाने के निरन्तर और योजनाबद्ध प्रयास किये जा रहे हैं। बार-बार इस बात के आक्षेप किये जाते है कि मेरी स्वतंत्रता अस्थायी है और मुझे किसी भी क्षण गिरफ्तार कर लिया जायेगा। और मुझसे अन्तिम बार पूछताछ के दौरान जाच अधिकारी ने स्पष्ट रूप से मुझसे कहा कि वह मुझे मास्को से निष्कासित करा देगा। मेरी हर बातचीत को सुना जाता है, मेरे प्रत्येक पत्र को खोल कर पढा जाता है (फिर इन पत्रो और वार्तालापों को जाच के दौरान मेरे और अन्य गवाहो के समक्ष शब्दश: उद्धरणो के रूप मे पेश किया जाता है); मेरा एक-एक कदम पर पीछा किया

१०—साहित्यिक गजट के २५ अक्तूबर १९५८ के अंक मे, पास्तरनेक द्वारा नोबेल पुरस्कार स्वीकार करने की घोर निन्दा की गई और नोवी मीर के सम्पादको द्वारा पास्तरनेक को लिखे गये पत्र को प्रकाशित किया, जिसमे उन्होने डा० झिवागो को प्रकाशित करने से इनकार करने के कारण बताये थे।

जाता है, मेरे अनेक मित्रो को बुलाकर यह चेतावनी दी गई है कि मुझसे मिलने का अर्थ, यदि बहुत उदारता बरती जाये तो, उनके कार्य या नौकरी या व्यवसाय के लिये कष्टप्रद बन सकता है और जहा वे काम करते है, वहा से उन्हे हटाया जा सकता है।

(ग) यदि ऐसे दबाव मुझ पर डाले जाते है, यद्यपि मुझे गिरफ्तार नही किया गया है, तो सिन्यावस्की पर जो जेल मे है, कितने दबाव डाले जा रहे होगे, इसकी कल्पना की जा सकती है। मुझे यह सदेह करने के अधिकाधिक मात्रा मे कारण मिल रहे है कि उनके विरुद्ध बल प्रयोग किया जा रहा है। मै इस बात पर व्यक्तिगत रूप से केन्द्रीय समिति के किसी सचिव या बडे सरकारी वकील से बात-चीत करना चाहूगी। मुझे इस बात का ठीक-ठीक ज्ञान नही है कि उनके साथ क्या किया जा रहा है, लेकिन मैं सिन्यावस्की को दस वर्षो से जानती हू और अब मुझे जाच-अधिकारी उनके बारे मे जो बाते बताता है या मुझे उनकी ओर से कोई जानकारी देता है, वह उनके स्वभाव के इतने विपरीत होती है कि मेरे मन मे यही विश्वास उठता है कि वे निश्चित ही अत्यधिक कठिन स्थिति मे होगे। मैंने जब कभी भी उनसे मिलने की अनुमति मागी है (जाच खत्म हो जाने के बाद भी) मुझे यह अनुमति देने से साफ इनकार कर दिया गया है और इस कारण से मेरी उनके बारे मे चिंता और अधिक गम्भीर हो उठती है ....

अन्त मे मैंने ए० टेरट्ज की पुस्तके पढी है :

मैंने उन्हे अत्यधिक पसन्द किया है और मुझे उनमे कुछ भी सोवियत विरोधी दिखाई नही पडता; उनमे जो कुछ लिखा है, एब्राम टेरट्ज ने (वे चाहे कोई भी क्यो न हो) जो कुछ भी लिखा है, मैं उसके एक-एक शब्द से सहमत हू।

यदि यह अपराध है तो मुझे भी सिन्यावस्की के साथ जेल मे डाल दिया जाये क्योकि यदि मैं उनके साथ नही रह सकती तो मेरे लिये स्वतत्रता व्यर्थ है और यदि मै जो सोचती हूं उसे स्पष्ट शब्दो मे और ईमानदारी से नही कह सकती तो मेरे लिये स्वतत्रता व्यर्थ है।

मेरे पास साधन नही है और मेरे पास प्रभावित करने का कोई माध्यम भी नही है। मेरे पास देहात मे बना कोई मकान नही है, कार, फ्लैट, शानदार फर्नीचर या ऐसी ही कोई अन्य मूल्यवान वस्तु नही है। मैं कभी भी किसी बडे पद पर नियुक्त नही रही। इन दिनो तो मेरे पास कोई काम भी नही है, मै बेरोजगार हू ...

इस समय मेरे पास, इस पूरे ससार मे, मेरा एक वर्ष का पुत्र और मेरी पुस्तके ही है।

जैसा कि आप इस विवरण से देखते है, मेरे पास खोने को बहुत कम है और इसी प्रकार मुझे बहुत अधिक चिन्ता भी नही करनी है। अत. मैं आपको, जो मैं सोचती हू, उससे

स्पष्ट रूप से अवगत करा देना चाहती हू, और बहुत कम सोवियत जन ही ऐसा कर पाते हैं। बहुत से लोग मेरी तरह ही सोचते हैं, लेकिन बहुत कम में यह कहने का साहस है। व्यक्ति पूजा के वर्षो ने अपना कार्य किया है। हमारे देश के लोगो को आतंक फैला कर मौन कर दिया गया है और सिन्यावस्की तथा डेनियल का मुकदमा उनकी स्मृति मे अतीत के आतंकों और अत्याचारों को फिर स्पष्ट रूप से ताजा कर देता है।

यह पत्र सहायाता और संरक्षण के लिये लिखे जाने वाले पत्र के सही रूप मे नही लिखा गया है, लेकिन इस क्षण मेरी जो स्थिति है, उसमे मेरे लिये शब्दो का चुनाव बड़ा मुश्किल हो गया है।

माया वासिलयेवना रोजानोव-क्रुगलिकोवा

२४ दिसम्बर, १९६५

श्रीमती डेनियल के पत्र

सेवा मे
सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव
सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के बडे सरकारी वकील
'प्रावदा', 'इजवेस्तिया' और 'साहित्यिक गजट' के सम्पादकगण

१२ सितम्बर, १९६५ को मेरे पति यूली मार्कोविच डेनियल को राज्य सुरक्षा समिति ने गिरफ्तार किया। उन पर विदेश मे निकोलाई अर्जहक के नाम से अपनी रचनाए प्रकाशित करने का आरोप है। जाच अधिकारी ने मुझे बताया है कि मेरे पति ने इन रचनाओ का लेखक होना स्वीकार किया है और यह पुष्टि की है कि विदेश मे इनका प्रकाशन किया गया और इतना ही नही, स्वीकार करने के अलावा यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुकी है कि वे इन रचनाओ के लेखक हैं। मुझे यह भी बताया गया है कि निकोलाई अर्जहक की रचनाए अपमानजनक और सोवियत विरोधी है और इस कारण से वाई० एम० डेनियल के ऊपर रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड संहिता की धारा ७० के अन्तर्गत कानून का उल्लघन करने के आरोप लगाये जा रहे है।

मुझ से पूछताछ के दौरान, मुझे निकोलाई अर्जहक की रचनाओ का एक संक्षिप्त विवरण दिया गया। लेकिन इस पूर्वाग्रहग्रस्त और जानबूझकर किसी बात को सिद्ध करने के प्रयास मे तैयार किये गये संक्षेप से भी, इन्हे सोवियत विरोधी नही समझा जा सकता। मैने हाल मे अर्जहक द्वारा लिखी चार पुस्तकें पढ़ी हैं—प्राय. इस नाम से जो कुछ भी प्रकाशित हुआ है मैंने पढा है—और इन मे ऐसा कुछ भी नही है, जिसे सोवियत विरोधी आदोलन और मिथ्या प्रचार कहा जा सके। मैं यह बात यहा जोर देकर कहती हू और मैं निजी वार्तालाप और सार्वजनिक विचार विमर्श मे अपने इस दृष्टिकोण का समर्थन और

रक्षा करूगी। मेरा विश्वास है कि स्वतत्र विचार, स्वतन्त्रवाद-विवाद (वशर्ते जो लोग इसमे हिस्सा ले, उन्होने इन सब रचनाओ को पूरा का पूरा पढा हो और उन्हे केवल विशेष रूप से किसी निश्चित उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए चुने गये अशो और उदाहरणो के माध्यम से ही इनकी जानकारी प्राप्त न हो) ही एकमात्र ऐसा तरीका है, जिसमे निरपेक्ष और पूर्वाग्रहमुक्त तरीके से विचार होगा चाहिये, जिससे किसी साहित्यिक रचना के सिद्धात या विचारधारा का निर्णय किया जा सकता है और यदि लेखक पर कोई दबाव डालना आवश्यक ही हो तो, उस पर दवाव डालने का यही एकमात्र तरीका है।

अपनी रचनाओ के लिये सृजनात्मक लेखको को यातनाए देना, चाहे इन रचनाओ मे छिपा राजनीतिक स्वर क्यो न हो, और चाहे १९ वी शताब्दी मे रूस मे इन कारणो से लोगो को यातनाए क्यो न दी गई हो, हमारे साहित्यिक इतिहासकारो ने हमेशा इसे आतक फैलाने वाली उच्छृखलतापूर्ण कारवाई कहा है। आज तो इसे और कम बर्दाश्त किया जा सकता है। मैने सदा इस बात को प्रकट और स्वय सिद्ध माना है। लेकिन अव मेरे पति को गिरफ्तार कर लिया गया है। तीन महीने से वे जेल मे है और इसका कारण हे, उनकी साहित्यक रचनाए। उनकी पुस्तको की जाच की जा रही है और जाच और मूल्याकन का यह कार्य, विशेष रूप से चुने हुए लोगो की एक छोटी सी टोली कर रही है, जिसमे स्वय जाच-अधिकारी भी शामिल है, जो जैसा कि मैने अपने से पूछताछ के समय अनुभव किया—अतिशयोक्ति और तथ्यो पर आधारित वर्णन का, एक व्यग्यपूर्ण या अत्यधिक कल्पनाशील और विभिन्न तथ्यो पर आधारित विवरण का अन्तर नही समझता। इसके अलावा मेरे पति की गिरफ्तारी और पूछताछ के साथ ही उनकी रचनाओ की आलोचना शुरु हो गई है।

मेरे पति ने, जैसा कि मैं अब जानती हू, अपनी रचनाए विदेश मे प्रकाशित कराई है। नैतिक दृष्टिकोण से इसके बारे मे चाहे कुछ भी क्यो न समझा जाये, लेकिन यह दण्डनीय अपराध नही है। हमारी दण्ड सहिता मे ऐसे कार्यों को अपराधो की कोटि मे नहीं रखा गया है और "मानव अधिकार घोषणा का" जिस पर हमारे देश ने हस्ताक्षर किये है, अनुच्छेद १९ यह घोषणा करता है कि "अपने विचारो को स्वतन्त्र रूप से और किसी भी माध्यम से और विभिन्न देशो की सीमाओ से स्वतन्त्र रह कर अर्थात् इन से बाहर भी प्रचारित करने का अधिाकर है।" इन शव्दो की पुष्टि करते हुए हमारे देश ने इस अधिकार को एक नैतिक मानदण्ड के रूप मे स्वीकार किया। लेकिन अव इस अधिकार का उपयोग करने वाले लोगो पर, सामान्य अपराधियो की तरह मुकदमा चलाया जा रहा है।

मेरे पति की गिरफ्तारी का अन्य कोई कारण नही दिया गया है।

जेल मे नजरवन्द रखने की कारवाई एक "प्रतिवन्धात्मक करवाई" है और जाच अधिकारी के विवेक के अनुसार, आवश्यकता पडने पर, आरम्भिक जाच के दौरान किसी भी अभियुक्त के विरुद्ध की जा सकती है। लेकिन इस मामले मे यह कारवाई करने की कहा आवश्यकता थी? किस वात को रोकने की आवश्यकता थी? पुस्तको का लेखन?

ये सव वाते समझ के बाहर है, और केवल मेरे लिये ही नही। अब गिरफ्तारी को तीन महीने वीत चुके है और इस पूरी अवधि मे राज्य सुरक्षा समिति ने मामले के बारे मे या अभियोग के वारे मे कोई जानकारी नही दी है। कोई भी सार्वजनिक बयान न दिये जाने के कारण, स्वभावत अनेक झूठी बाते और अफवाहे फैली हैं, इन मे सम्भव वातो से लेकर अत्यधिक मूर्खतापूर्ण और न हो सकने योग्य बाते शामिल है। इसके साथ ही, महत्वपूर्ण पदो पर नियुक्त व्यक्ति, सरकारी बैठको मे सिन्यावस्की और डेनियल के बारे मे इस प्रकार वातें करते है मानो वे दोषी हो और इनकी दण्डनीय गतिविधिया और यहा तक कि अपराधी प्रवृत्ति मानो निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुकी हो। इस वात से अभियुक्त को निर्दोष मानने के बुनियादी कानूनी सिद्धात का उल्लघन होता है. ...तथ्यों द्वारा समर्थित न होने के वावजूद यह अधिकृत वक्तव्य बदनाम करने वाली अफवाहो और गप्पो को प्रभावशाली वनाते है, अदालत के निर्णय की पहले से ही कल्पना कर, इन वक्तव्यो से सिन्यावस्की और डेनियल के प्रति लोगो की भावनाओ को प्रभावित करते है और यह हो सकता है कि इन वक्ताओ का स्वयं अदालत के निर्णय पर भी असर पडे। यह स्वाभाविक ही है कि मैं अपने पति की गैर-कानूनी गिरफ्तारी और उनके चरित्र को कालिमामय दर्शाने के प्रयास के विरुद्ध विरोध प्रकट करू। लेकिन इसके विपरीत जाच, अधिकारियो ने, विना किसी आधार के मेरे जवानी विरोध प्रदर्शन को जांच के दौरान प्राप्त प्रमाणो को प्रकट करने की वात कही है और महत्वपूर्ण गवाहो पर दवाव डालने का प्रयास किया है।

सिन्यावस्की और डेनियल पर उन कार्यों के लिये अभियोग लगाया गया है, जिन्हे हमारे कानून मे अपराध नही समझा जाता। उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया है। यद्यपि इस कारवाई को केवल अभियुक्तो को आतंकित करने के उद्देश्य से की गई कारवाई के अलावा अन्य कुछ नहीं समझा जा सकता। उन्हे जेल मे पड़े तीन महीने हो गये है और मुझे अव तक अपने पति से मिलने की अनुमति नही दी गई है। जाच के दौरान राज्य सुरक्षा समिति ने अनेक गैर-कानूनी कारवाइया की है—मैंने वड़े सरकारी वकील और राज्य सुरक्षा समिति के अध्यक्ष के समक्ष जो वयान दिया है, उसमे मैंने इनका उल्लेख किया है। (इसकी एक प्रति सलग्न है)।

इन वातो से और सरकारी चुप्पी के कारण, मेरे मन मे (और सभवत. अन्य अनेक लोगो के मन मे) यह भय उत्पन्न होता है कि कानून के प्रति प्राय नही के वराबर सम्मान दिखाया जायेगा और मामले की सुनवाई मे निष्पक्षता और न्याय का भी वहुत कम पालन होगा। क्या किसी व्यक्ति ने कानून को ध्यान मे रखे विना ही, पहले ही मन माने तरीके से मेरे पति के भाग्य का निवटारा कर दिया है? उनकी गिरफ्तारी और जाच का यह पूरा व्यापार—प्रारम्भ से लेकर आज तक—लोकतत्र के सिद्धान्तो के विरुद्ध है, भयकर चिन्ताए उत्पन्न करता है और व्यक्तिपूजा के उस युग की याद ताजा करता है, जिसकी पार्टी ने निन्दा की है।

मै अपने पति और सिन्यावस्की की जेल से तुरन्त रिहाई की माग करती हूं।

लारिसा आयोसिफोवना बुखमन

[दिसम्बर, १९६५]

सेवा मे
सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के वडे सरकारी वकील
राज्य सुरक्षा समिति के अध्यक्ष

इस वर्ष १२ सितम्बर को मेरे पति, यूली मार्कोविच डेनियल को राज्य सुरक्षा समिति ने एन० अर्जहक के नाम से मुद्रित अनेक रचनाओ को लिखने और विभिन्न अवसरो पर विदेश मे प्रकाशित करने के आरोप पर गिरफ्तार किया है। इन अभियोगो पर उनकी गिरफ्तारी, रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड सहिता मे वर्णित कानूनो के विरुद्ध है और मैंने सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति, प्रावदा, इजवेस्तिया और साहित्यिक गजट, तथा सोवियत सघ के वडे सरकारी वकील को विरोध प्रदर्शित करते हुए पत्र लिखा है। मैं इस पत्र की एक प्रति सलग्न कर रही हू।

मेरे पति के विरुद्ध गैर-कानूनी कारवाई के अलावा राज्य सुरक्षा समिति के जाच अधिकारियो ने शब्द और भावना मे, तथा अन्य तरीको से, हमारे कानूनो का उल्लघन किया है।

जब तक जाच जारी है, मेरे पति को दोषी नही माना जा सकता, उन्हे अपराधी नही माना जा सकता। केवल एक अदालत ही यह निर्णय कर सकती है कि क्या आरोप सिद्ध हो चुके है, क्या मेरे पति के कार्य कानून के अन्तर्गत दण्डनीय हैं और यदि वे दोषी है तो किस सीमा तक। इसके बावजूद वरिष्ठ जाच अधिकारी, लैफ्टिनैंट कर्नल जी० वी० कानतोव ने मुझ से जाच के दौरान बातचीत मे यह कहा कि मेरे पति दोषी है और उन्हे अवश्य दण्ड दिया जायेगा। यह बात जाच अधिकारी की व्यक्तिगत राय के रूप मे नही कही गई, बल्कि इसे एक स्पष्ट तथ्य के रूप मे कहा गया। जांच के दौरान इस प्रकार किसी मामले के पूर्व-निर्णय से मेरे मन मे यह सदेह उत्पन्न होता है कि क्या मुकदमे की कारवाई मे निरपेक्षता बरती जायेगी और क्या बाद मे कानूनो का पालन होगा। इसके अलावा, मैं इस प्रकार के वक्तव्य को अपने ऊपर, और मैं इस मामले मे एक गवाह हू, नैतिक दबाव समझती हूं और मैं निश्चयपूर्वक यह अनुभव करती हूं कि मेरे पति पर जो दबाव डाला जा रहा है, वह इससे कम नही है और सभवत इससे कही अधिक है। कोई सार्वजनिक घोषणा न किये जाने से; जाच के दौरान सफाई पक्ष के वकील के उपस्थित न होने के कारण, जाच अधिकारी के लिये मनमानी और गैर-कानूनी कारवाई करना पूरी तरह से सभव हो गया है।

जी० वी० कानतोव ने मुझसे कहा 'तुम्हारे पति दोषी है और उन्हे दण्ड दिया जायेगा।" उन्होने मुझे आगे यह भी सलाह दी कि मैं निम्नलिखित कारणों से अपने पति की सफाई के लिये वकील की व्यवस्था न करू (क) यह मेरे लिये सभव नही होगा और (ख) इस मामले मे सफाई पक्ष का वकील वैसे भी बेकार होगा और वह किसी भी रूप मे अदालत मे मुकदमे की सुनवाई या उसके फैसले पर कोई प्रभाव नही डाल सकता। जाच-अधिकारी ने मुझसे यह बात मामले के अदालत मे पेश होने से पहले ही कही।

लेकिन इसके बावजूद मैंने जाच अधिकारी से कहा कि वे मेरे पति से यह पूछे कि क्या वे इस बात पर सहमत है कि मैं उनकी सफाई के लिये किसी वकील से बात करू। मैंने जाच-अधिकारी से कहा कि वे मेरे पति से यह कहे कि वे इस सम्बन्ध मे पैसे की चिन्ता न करें और यह निर्णय लेने मे वकील की फीस के भुगतान की बात को ध्यान मे न रखें। मेरे पति को इस रूप मे, इन शब्दो मे यह बात बताई गई, "तुम्हारी पत्नी अपने मित्रो के सामने हाथ पसार कर भीख मांगने जायेगी।"

जाच-अधिकारी ने परोक्ष रूप से धमकिया भी दी : यदि मैं बुरा व्यवहार करती हूं ("तुम समझ गई होगी कि इससे मेरा क्या अभिप्राय है"—यद्यपि मुझे इस बात का जरा भी अनुमान नही है कि जांच-अधिकारी का इस बात से क्या तात्पर्य है) तो मुझे अपने काम मे, अपने कार्यालय मे उस समय कठिनाई का सामना करना पड़ेगा, "जब उन्हें इस बात का पता चल जायेगा।" लेकिन उन्हे जब किस बात का पता चल जायेगा? यही न कि मेरे पति के विरुद्ध जांच हो रही है? लेकिन अभी तक उन्हे दोषी नहीं ठहराया गया है। लेकिन यदि उन्हे दोषी भी ठहराया जाये, तो मुझे कैसी कठिनाई का सामना करना पड सकता है, और क्यो? मैं समझती हूं कि हम एक बार फिर, उस दौर मे वापस नही जा रहे हैं, जब दण्डित, अभियुक्त या अपराध का सदेह वाले व्यक्तियों के परिवारो को अनेक कष्ट दिये जाते थे? लेकिन इसके अलावा मैं किस रूप मे जांच-अधिकारी की धमकियो का अर्थ समझू? जाच-अधिकारी मुझसे इस तरह बात करता है, मानो मैं ही अभियुक्त हूं। मैं इनसे या अन्य धमकियो से भयभीत नही हूं, इसका कारण यह नही है कि मैं इन्हे गंभीर नही समझती। (क्योकि मेरे पति की गिरफ्तारी मेरी अपनी सुरक्षा को सदेहास्पद बना देती है) बल्कि इसलिये कि मुझे किसी बात से डरना नही है। मेरे पास ऐसा कुछ नही है, जिसको खोने से मैं भयभीत होऊं। अपने पूरे जीवन मे मैंने भौतिक सुख का कोई साधन नही बटोरा है और मैंने यही सीखा है कि ये चीजें महत्वहीन हैं जबकि भावना संबंधी वस्तुए, जिन्हे मैं मूल्यवान समझती हूं, सदा मेरे पास रहेगी चाहे कैसी भी परिस्थितिया क्यो न हो। इसके बावजूद मैं इस बात से अत्यधिक क्रोधित हूं कि आज, हमारे इस युग मे, ऐसी धमकियां दी जा सकती है।

मैं किसी भी व्यक्ति से अनुग्रह करने की या विशेषाधिकार देने की याचना नही कर रही हूं। मैं तो केवल यही माग करती हूं कि मानवीयता और न्याय के सामान्य मानदण्डो

का पालन हो। मुझे जाच-अधिकारी से यह जानने का अधिकार है या कम से कम मुझे यह जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है कि मैं किस स्थान पर या किस स्थान से, अपने पति की स्थिति और जाच की अवधि के अनुमान के बारे मे जानकारी प्राप्त कर सकती हू। लेकिन यह बडा कुटिल चक्र है, जाच अधिकारी मुझसे राज्य सुरक्षा समिति के पास जाने को कहता है और राज्य सुरक्षा समिति, मुझे फिर वापस जाच अधिकारी से ही यह जानकारी प्राप्त करने को कहती है। राज्य सुरक्षा समिति कहती है कि उसके पास कोई जानकारी नही है, और जाच अधिकारी यह बात जोर देकर कहता है—यदि वह मेरे प्रश्नो का उत्तर देता है तो—कि यह मेरे साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार करना होगा और वह यह करने के लिये बाध्य नही है और न ही यह कार्य करना चाहता है।

लारिसा आयोसिफोवना बुखमन

[दिसम्बर, १९६५]

सेवा मे

सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ के सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष

राज्य सुरक्षा समिति मे कोई न कोई व्यक्ति ऐसा होना चाहिये, जिसके ऊपर मेरे पति के भाग्य सम्बन्धी स्वाभाविक और कानूनी प्रश्नो के उत्तर देने का दायित्व हो—वह व्यक्ति कौन है?

जाच अधिकारियो के पास मेरे और मेरे पति के निजी जीवन के बारे मे सब तथ्य मौजूद हैं। इस जानकारी का मामले से कोई सम्बन्ध नही है और राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से इनका कोई महत्व नही है। यह जानकारी मेरे निजी पत्र व्यवहार और हमारे घर मे चोरी छिपे और यन्त्रों की सहायता से हमारी बातचीत को सुन कर गैर-कानूनी तरीके से इकट्ठी की गई है। लेकिन सबसे अधिक घृणित और उत्तेजनाजनक बात यह है कि यह जानकारी बाहरी लोगो को, मेरे पति के और स्वयं मेरे परिचितो को, दी गई है। इस प्रकार जाच के दौरान, मेरे पति के मुकदमे के एक गवाह, याकोव लेज़ारेविच गार्बूजेको को मेरे निजी जीवन के बारे मे बाते बताई गई हैं। जैसे, मेरा किस-किस समय और किस-किस से घनिष्ठ परिचय रहा। कानून के इस प्रकार खुल्लम-खुला उल्लघन को न्यायोचित सिद्ध करना तो दूर, यह भी स्पष्टीकरण नही दिया जा सकता कि यह करना किन कारणो से आवश्यक था। यह कार्य केवल यह दर्शाने के लिये किया गया कि जाच अधिकारी सब बातो से कितनी गहराई से परिचित हैं और इस उद्देश्य से भी कि मैं अपने मित्रो और परिचितो की निगाह मे गिर जाऊं और गवाहो के मन मे नैतिक आघात की स्थिति उत्पन्न की जाये।

मैं मुकदमे के सचालन मे इन और ऐसे ही अन्य गैर-कानूनी तरीको का विरोध प्रकट करती हूं। मैंने जिन तथ्यो का उल्लेख किया है, वे यह प्रकट करते है कि जाच

अधिकारी जी० वी० कानतोव केवल कानून का ही इस प्रकार पूरी तौर से उल्लघन नही कर रहे है, वल्कि जाच विभाग और सरकारी वकील के कार्यालय की ओर से जांच के निरीक्षण की उचित व्यवस्था नही है।

कानून और मानवीयता के सामान्य मानदण्डों का इस प्रकार उल्लंघन होने से और मेरे पति की गैर-कानूनी गिरफ्तारी और उन्हे तीन महीने तक गैर-कानूनी तौर पर जेल मे रखने से, मेरे मन मे आशका और भय के कारण उत्पन्न होते हैं। क्या अन्य गैर-कानूनी कारवाइया भी की जा रही है—ऐसी कारवाइया जिनके वारे में मैं कुछ नही जानती क्योकि मेरे पति जेल मे हैं और मैने इस पूरी अवधि मे उन्हे एक बार भी नही देखा है ? इस वात की क्या गारटी है कि मेरे पति के ऊपर शारीरिक और नैतिक दवाव नही डाले जा रहे हैं ? इस बात की क्या गारटी है कि ऐसी ही गैर-कानूनी कारवाइया अन्य मामलो मे भी नही की जायेंगी ?

मैं इस पत्र की एक प्रति सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति, वडे सरकारी वकील और समाचारपत्रो को भी भेज रही हूं।''

—लारिसा आयोसिफोवना वुखमन

इन दो लेखको की गिरफ्तारी का समाचार न तो सोवियत रेडियो ने और न ही सोवियत समाचारपत्रों ने दिया। लेकिन यह स्पष्ट लगता है कि यह समाचार काफी व्यापक रूप से मालूम हो चुका था। अभियुक्तो के प्रति सहानुभूति के लक्षण दिखाई पड रहे थे जो नीचे दिये गये पत्र से और इसमे उल्लिखित पुश्किन चौक मे २०० विद्यार्थियों के प्रदर्शन (दि टाइम्स, २० दिसम्वर, १९६५) से स्पष्ट हो जाता है।

ए० गिन्जबर्ग का पत्र[12]

सेवा मे
सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ की मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष, कामरेड ए० एन० कोसिगिन

प्रिय अलेक्सी निकोलायेविच,

मैं आपको, सरकार का अध्यक्ष होने के कारण, एक ऐसे मामले के वारे मे यह पत्र लिख रहा हूं, जिनके कारण मैं पिछले कई महीनो से अत्यधिक उद्विग्न रहा हूं। ५ दिसम्बर

११—देखिए पृष्ठ ९०। वस्तुत इस वात का पत्र मे पहले कोई उल्लेख नही है। सभवत: पत्र का आरम्भ का हिस्सा उपलब्ध नही है।

१२—एलिक गिन्जवर्ग एक युवक सोवियत कवि है जिन्हें पहली वार १९६० में उस समय ख्याति मिली, जब इज्वेस्तिया (२ सितम्वर का अंक) ने उनके ऊपर माइमोग्राफ में मुद्रित सिनटेक्स शीर्षक, कविता-पत्रिका का सम्पादन करने के लिये प्रहार किया। उस समय गिन्जबर्ग को "जालसाजी" के अभियोग पर दो वर्ष की

को, जो हमारा संविधान दिवस है, मैंने यह अनुभव किया कि केवल मैं ही नहीं, बल्कि सैंकडो अन्य लोग भी लेखक आन्द्रेय सिन्यावस्की और लेखक यूली डेनियल के भाग्य के बारे मे अत्यधिक चिंतित हैं, जिन्हे राज्य सुरक्षा समिति ने सितम्बर मे गिरफ्तार किया था ।

इन लेखको की गिरफ्तारी से ऐसे अनेक प्रश्न उठते है, जो सरकार के अध्यक्ष के कार्य और अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं ।

१—"सोवियत वीरोधी प्रचार" की संकल्पना के स्वरूप और इस संकल्पना के व्यावहारिक उपयोग के बारे में ।

सिन्यावस्की और डेनियल पर, जिनके ऊपर टेरट्ज और अर्जहक के छद्म नामो से विदेश मे अपनी रचनाएं प्रकाशित करने का आरोप है, रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्डसहिता की "सोवियत विरोधी प्रचार" सम्बन्धी धारा ७० के अन्तगत मुकदमा चलाया जा सकता है । लेकिन सोवियत व्यवस्था के ४६ वें वर्ष मे "सोवियत विरोधी प्रचार" से क्या अभिप्राय समझा जाना चाहिये ।

मैं यह प्रश्न इसलिए पूछ रहा हूं क्योकि स्वय मेरे ऊपर इस धारा के अन्तर्गत दो बार अभियोग लगाये गये है और इन दोनो अवसरो पर मेरे मामले के जाच-अधिकारियो ने मुख्यतः मुझे इस बात से आश्वस्त करने की चिंता दिखाई कि मेरे सब कार्य सोवियत व्यवस्था और प्रणाली के विरुद्ध थे । पहली जाच के अन्त तक (१९६०-१९६१) मैं इस बात से सह-

---

कैद की सजा दी गई । जून १९६५ मे मास्को के सन्ध्याकालीन सामाचारपत्र 'ईवनिंग मास्को' ने उनका एक पत्र प्रकाशित किया ("मिस्टर ह्यूग्स को उत्तर") जिसमे उन्होने अपनी पहले की गतिविधियो पर खेद प्रकट किया और विदेशो मे रहने वाले प्रवासी रूसियो और "पश्चिम के जासूसी सगठनो" की उनके मामले का प्रचार मे उपयोग करने के लिये निन्दा की । अब उनका यह कहना है कि यह पत्र उनसे डरा धमका कर और दवाव डालकर लिखवाया गया और यह पत्र लिखवाने मे राज्य सुरक्षा समिति ने हिस्सा लिया तथा यह पत्र १९६४ मे उनकी दूसरी बार गिरफ्तारी के बाद लिखवाया गया । ऐसा लगता है कि एलैग्जेंडर एसेनिन-वोलपिन (कवि सरगेई एसेनिन के पुत्र) के साथ उन्होने ५ दिसम्बर १९६५ के प्रदर्शन का आयोजन किया, जिसका उन्होने कोसीगिन को लिखे अपने पत्र मे उल्लेख किया था । 'ली मोदे' ने अपने २४ नवम्बर १९६६ के अंक मे यह समाचार दिया कि गिन्जवर्ग ने सिन्यावस्की-डेनियल के मुकदमे के बारे मे एक "श्वेत पुस्तिका" तैयार की और उसे १९ अक्तूबर को राष्ट्रपति पोदगोर्नी को दिया । जनवरी १९६६ मे प्राप्त समाचार एजेंसी की रिपोर्टों के अनुसार उन्हे फिर गिरफ्तार कर लिया गया है । सम्भवत उन्हें इन दो लेखको को हिरासत मे रखने के विरुद्ध प्रदर्शन का आयोजन करने के आरोप पर गिरफ्तार किया गया है ।

मत होने को तैयार था, क्योकि मेरे जाच-अधिकारी (सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ की मंत्रिपरिषद् की राज्य सुरक्षा समिति के विशेष रूप से महत्वपूर्ण मामलो के वरिष्ठ जाच-अधिकारी मेजर ऊपकोव) ऐसा लगता था कि सोवियत व्यवस्था को व्यक्ति के उत्पीडन के लिये की गई व्यवस्था से अधिक कुछ नही समझते थे, लेकिन इसके बाद के वर्षों की घटनाओ ने मुझ पर यह प्रकट किया कि उनकी यह सूझ-बूझ अत्यधिक सकीर्ण थी। विशेष रूप से इस कारण से कि वे सब कविताए जो मुझ से छीन कर जब्त कर ली गई थी और जिन्हे "सोवियत विरोधी" बता कर राज्य सुरक्षा समिति की फाइलो मे रखा गया था, बाद मे सोवियत पत्रिकाओं, समाचारपत्रो और कविता सग्रहो मे प्रकाशित हुईं।

दूसरी जाच मे (१९६४ मे) विचाधारा सम्बन्धी क्षेत्र मे कुछ परिवर्तनो को ध्यान मे रखना पडा और यह जांच विदेशियो से मेरे सम्पर्क को समाप्त करने तक ही सीमित रही। इसका परिणाम ईवनिंग मास्को के ३ जून, १९६५ के अक मे सार्वजनिक आत्म-निन्दा का मेरा पत्र था और यह पत्र "मिस्टर ह्यूग्स को उत्तर"[13] शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। जाच अधिकारी को मुझे इस बात पर सहमत करने मे सफलता मिली थी कि यदि पश्चिम मे आपको सोवियत शासन का विरोधी समझा जाये तो यह बुरी बात है। दो वर्ष पहले प्राप्त एक पत्र का सार्वजनिक रूप से उत्तर देने मे जो मूर्खता छिपी थी, उसके प्रति राज्य सुरक्षा समिति के अधिकारी जरा भी चिंतित नही थे, जिन्होने मुझे इस पत्र को लिखने और इनके प्रकाशन मे सक्रिय सहायता दी।

सन् १९६४ के बाद से और अधिक परिवर्तन हुए हैं। पहले जिन रचनाओ को "सोवियत विरोधी" समझा जाता था अब वे पूरी तरह सोवियत बन गई है और प्रकाशन के योग्य समझी जाती है। पश्चिमी संसार से सम्पर्क के प्रति दृष्टिकोण मे भी अन्तर हुआ है।

इन सब बातो से "सोवियत विरोधी प्रचार" की संकल्पना के अस्थायी स्वरूप का पता चलता है। यदि कुछ बुराइयो की आलोचना नीचे के स्तर पर होती है तो इसे "सोवियत विरोधी प्रचार" कहा जाता है। लेकिन यदि इन्ही गलतियो की आलोचना ऊपर के स्तर पर होती है, और इन्हे पार्टी के अधिवेशनो और महासभाओ के प्रस्तावो मे रखा जाता है, तो इन्हें "देश के जीवन का मार्गदर्शन करने वाली बातें" कहा जाता है। लेकिन नीचे से यह आलोचना होने पर इसे "सोवियत व्यवस्था को क्षति पहुंचाने या कमजोर बनाने का आह्वान" बताया जाता है। और यही बात ऊपर के स्तर पर होने से "सोवियत राज्य प्रणाली की शक्ति को मजबूत बनाने वाली" कही जाती है।

लेकिन कानून का प्रयोग अपरिवर्तनीय और सब बातों के ऊपर है। एक ऐसा व्यक्ति जो अपने देश के सम्मान और गरिमा की रक्षा के लिये, अन्य लोगो की तुलना मे पहले

१३—सन् १९६३ में फ्रास से गिन्जबर्ग को एक पत्र लिखा गया था और उस पर "मिस्टर ह्यूग्स" के हस्ताक्षर थे।

अपनी आवाज उठाता है, वह अपराधी है, उसकी कानून की भावना और शब्दश व्यवस्था के अनुसार निन्दा करना "उचित" है और ऐसा व्यक्ति वह सजा प्राप्त करता है, जिसके वह "योग्य" था। इस दिन तक वे लोग जेलो में पडे हुए है, जिन्होने सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के मिथ्याकरण, उसमे झूठी बातों का समावेश करने के विरुद्ध आवाज उठाई थी, जिन्होने एन० एस० ख्रुश्चेव द्वारा सत्ता के दुरुपयोग के विरुद्ध आवाज उठाई थी और अब जब कि इन सब बातो की बहुत समय पहले ही अधिकृत रूप से निन्दा की जा चुकी हैं।

अत यदि सिन्यावस्की और डेनियल के जाच अधिकारियो को, उन्हे इस बात से आश्वस्त करने मे सफलता मिलती है कि उनकी रचनाए पार्टी के वर्तमान सिद्धातो के विरुद्ध है तो उन्हे उस दिन तक जेल मे रहना होगा जब तक इन सिद्धान्तो मे सशोधन नही हो जाता।

२—साहित्य पर "सोवियत विरोधी प्रचार" की संकल्पना को लागू करने के बारे मे।

मैं टेरट्ज की कहानी 'दि ट्रायल बिगिन्स', उनके कहानी सग्रह "फेन्टास्टिक स्टोरीज", उनके प्रबन्ध 'आन सोशलिस्ट रियलिजम' के बारे मे जनता हूं और मुझे अर्जेहक की कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग' का भी जानकारी है। मुझे उन अन्य अनेक रचनाओ के बारे मे भी मालूम है, जिनके प्रकाशन ने विभिन्न अवसरो पर राज्य सुरक्षा समिति को क्रोधित किया और इसके परिणामस्वरूप जिन्हे जब्त कर लिया गया। राज्य सुरक्षा समिति के "क्रोध" का यही एक मात्र कारण मेरी समझ मे आता है कि इन रचनाओ के लेखको का यथार्थ और इसके साहित्यिक अनुशीलन के प्रति एक नया दृष्टिकोण था। इसका एक उदाहरण बोरिस पास्तरनेक का डा० झिवागो है। यह एक महान् उपन्यास है, जिसे नोबेल पुरस्कार प्राप्त होना उचित ही था। (स्पष्ट है कि राज्य सुरक्षा समिति के विशेष कर्तव्यो मे इस पुस्तक की सब प्रतिया जब्त करना भी शामिल है)।

यह सभव है कि सिन्यावस्की और डेनियल के आचरण मे कोई ऐसी बात हो, जिससे किसी ऐसे दायित्व का उल्लंघन होता हो, जिसे उन्होने स्वेच्छा से स्वीकार किया हो। यह सभव है कि सोवियत लेखक सघ, जिसके वे स्पष्टतया सदस्य हैं[१४], के कानून "समाजवादी यथार्थवाद" की सिन्यावस्की के प्रबन्ध से भिन्न व्याख्या करते हो। सभवत "दिस इज मास्को स्पीकिंग" का लेखन भी इन कानूनों मे उल्लिखित कुछ नियमो का उल्लघन करता हो। यह भी सभव है कि यदि कोई लेखक छद्म नाम का प्रयोग करता हो, तो उसकी सूचना लेखक संघ को दी जाये। इन लेखको द्वारा इन दायित्वों को न निभाना वस्तुत गलत बात है। लेकिन यह ऐसी गलती है, जो सोवियत लेखक संघ के अधिकार क्षेत्र मे आती है, यदि वे

१४—वस्तुत केवल सिन्यावस्की ही सोवियत लेखक सघ के सदस्य थे।

उसके सदस्य हैं तो, या यह सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकार क्षेत्र मे आती है, यदि वे पार्टी के सदस्य है तो, या किसी अन्य सेवा संगठन या स्वेच्छिक संगठन के अन्तर्गत आती है, जिसके वे सदस्य हो और जिसके नियमो का उन्होने उल्लघन किया हो। लेकिन इन कार्यों का राज्य से कोई सम्बन्ध नही है। (दण्ड सहिता की धारा ७० राज्य के विरुद्ध किये गये अपराधो के बारे मे है।)

यह तथ्य कि उनका जन्म सोवियत सघ मे हुआ, उन्हे अपने आप मे स्वतंत्र रूप से विचार करने के अधिकार से वचित नही करता। अपने विश्वासो के प्रति निष्ठावान होने का, अपने देश के लिये क्या सर्वोत्तम है, इसका अपनी बुद्धि के अनुसार निर्णय करने का एकाधिकार केवल उन लोगो का नही है, जो सत्तारूढ़ हैं। सिन्यावस्की और डेनियल को भी पहले जमाने के अपराधों पर क्रोध प्रकट करने का, अपने देश की परम्पराओ से प्रेम करने का और अपने देश के भविष्य के बारे मे अपने विचार कायम करने का अधिकार है। अपने देश के भीतर सिन्यावस्की की साहित्यिक गतिविधि (नोवी मीर मे प्रकाशित उनके लेख, पिकासो के बारे मे उनकी पुस्तके और क्रांति के आरम्भिक वर्षों की कविता सम्बन्धी उनकी पुस्तक, पास्तरनेक के कविता सग्रह की उनकी भूमिका) यह दर्शाती है कि टेरट्ज को अपनी व्याख्याए करने, उदाहरण के लिये, समाजवादी यथार्थवाद की व्याख्या करने का अधिकार है।

अत: ऐसे मामलो के बारे मे कारवाई करने का सही तरीका—लेकिन दुर्भाग्यवश अब तक इस तरीके का उपयोग नही किया गया है—अदालतों मे न जा कर बल्कि सार्वजनिक सगठनो जैसे लेखक सघ, पार्टी और व्यावासायिक संघो के माध्यम से कारवाई करने का है। साहित्य के लिये यह सौभाग्य का विषय है कि इन संगठनो को सुधार करने वाले श्रम शिविरो के एक जाल की सेवाए प्राप्त नही हैं, बल्कि इन्हे सार्वजनिक दबाव डालने का सावधानी से प्राप्त तरीका ही सुलभ है।

३—देश के सार्वजनिक जीवन मे राज्य सुरक्षा समिति के योगदान के बारे मे

यह वस्तुत. स्तालिन का शासनकाल नही है, लेकिन फिर भी, आज भी राज्य सुरक्षा समिति सार्वजनिक जीवन के विकास के मार्ग मे गंभीर बाधा है। इसका सबसे हाल का उदाहरण ५ दिसम्बर को पुश्किन चौक मे आयोजित एक शातिपूर्ण प्रदर्शन मे राज्य सुरक्षा समिति के सदस्यो द्वारा "हिस्सा लेना" है। एक ऐसी तख्ती के प्रदर्शन का प्रयास जिस पर यह माग लिखी हुई थी कि सिन्यावस्की और डेनियल के विरुद्ध की गई कारवाई को सार्वजनिक रूप से बताया जाये और एक दूसरी तख्ती का प्रदर्शन जिसपर "सविधान का पालन हो" लिखा था, तथा ये बातें उच्च स्वर मे कहने (लेकिन इससे अधिक कुछ नही) का अनिवार्य रूप से यह अर्थ होता है कि प्रदर्शन मे हिस्सा लेने वालो को समीपतम मिलीशिया

केन्द्र या द्रुझीना[15] मुख्यालय को घसीट कर ले जाया जाता है। इस पूरी घटना को राज्य सुरक्षा समिति की मास्को शाखा के अधिकारियो ने देखा, जिस पर उनकी सहमति रही होगी। यह सबसे हाल का एक ऐसा उदाहरण है। बारीकी से गौर करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सिन्यावस्की और डेनियल की गिरफ्तारी और उन्हे जेल मे हिरासत मे रखना, जिसे अब करीब तीन महीने गुजर चुके है, सार्वजनिक जीवन मे हस्तक्षेप के अलावा अन्य क्या हो सकता है ?

यदि यह तथ्य सिद्ध हो गया हो कि ये रचनाए (टेरट्ज और अर्जहक की रचनाए) उन्ही की है और उन पर उनकी रचनाओ के आधार पर मुकदमा चलाया जाना हो तो मुकदमा समाप्त होने तक, उन्हे जेल मे रखने की कोई आवश्यकता नही है। यदि यह मान लिया गया है कि इस क्षण दण्ड सहिता की धारा ७० उनकी रचनाओ पर लागू होती है, तो भी उनके अन्य सब कार्य (जैसे छद्म नामो का प्रयोग या विदेशो मे पाण्डुलिपिया भेजना) सोवियत कानून के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध नही है। लम्बी अवधि तक तनहाई मे रखना, जैसा कि स्वय मैं अपने अनुभव से जानता हू, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यधिक हानि-प्रद होता है।

सिन्यावस्की और डेनियल को जेल मे रखना और इस मामले के बारे मे कोई भी सार्वजनिक वक्तव्य न देना (जैसा कि राज्य सुरक्षा समिति द्वारा चलाये जाने वाले "सोवियत विरोधी प्रचार" सम्बन्धी अधिकाश मामलों मे होता है) लोगो के लिये अभियुक्तो के कार्यों और राज्य सुरक्षा समिति की कारवाइयो की वैधानिकता, जिस पर इस मामले मे सदेह न करना गलत होगा, जनता को अपना स्वतन्त्र विचार कायम करने के मार्ग मे बाधक बनता है।

४—अन्तर्राष्ट्रीय करारो के पालन के बारे मे

सयुक्त राष्ट्र सघ द्वारा स्वीकृत और १६४८ मे सोवियत सघ द्वारा अनुमोदित "मानव अधिकारो की सार्वभौम घोषणा" के अनुच्छेद १६ मे कहा गया है "प्रत्येक व्यक्ति को अपनी स्वतत्र राय रखने और इसकी स्वतत्र रूप से अभिव्यक्ति का अधिकार है, इस अधिकार मे, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राय पर बिना किसी हस्तक्षेप या दबाव के कायम रहने का और प्रत्येक माध्यम से तथा विभिन्न देशो की सीमाओ से स्वतत्र रह कर, हर प्रकार की जानकारी और विचार जानने, उन्हे प्राप्त करने और उनको प्रचारित करने की स्वतत्रता का अधिकार भी शामिल है।"

क्या इन शब्दो का सिन्यावस्की और डेनियल के मामले मे प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही है ?

मैं आपके समक्ष यह प्रश्न प्रस्तुत करने का अपना अधिकार और अपना कर्तव्य दोनो समझता हू। मुझ इस बात का निश्चय नही है कि क्या मेरे इन प्रश्नो को ही "सोवियत

१५—'गुण्डागर्दी" की रोक थाम के लिये गठित एक सहायक पुलिस दल।

विरोधी" नही मान लिया जायेगा। मेरे इस अनिश्चय के ठोस आधार है। मेरे ऊपर जानकारी के विदेशी स्रोतो के उपयोग का आरोप लगा कर मुकदमा चलाया जा सकता है और मुझे दण्ड दिया जा सकता है। (क्योकि अब तक हमारे देश मे सिन्यावस्की और डेनियल के मामले के बारे मे कुछ भी प्रकाशित नही हुआ है और मैं इस सम्बन्ध मे विदेशी प्रसारण सुनता हूं), इन दोनों लेखको की पुस्तके पढने और उन पर अपनी सहमति प्रकट करने, ५ दिसम्बर के प्रदर्शन मे हिस्सा लेने,—यदि कोई व्यक्ति इन्हे सोवियत विरोधी कह कर इन की निन्दा करने की बात सोच बैठे—और मैंने जो कुछ इस पत्र मे लिखा है उसे उच्च स्वर मे कहने के लिये मुझ पर मुकदमा चलाया जा सकता है और मुझे दण्डित किया जा सकता है। सन् १९३७ मे, सन् १९४९ मे और यहा तक कि सन् १९६१ में भी लोगो को इससे बहुत कम कहने-करने के लिये जेलो मे डाल दिया गया है।

लेकिन मैं अपने देश को प्यार करता हूं और मैं राज्य सुरक्षा समिति की हाल की निकृश्ट कारवाइयो के द्वारा, अपने देश के नाम पर कालिमा लगाते हुए नही देखना चाहता।

मैं रूसी साहित्य से प्यार करता हूं और मैं यह नही देखना चाहता कि दो और सोवियत लेखको को, सशस्त्र सतरियो के पहरे मे, पेड काटने के लिये भेज दिया जाये।

मैं आन्द्रेय सिन्यावस्की का, एक विशिष्ट आलोचक और गद्य लेखक के रूप में सम्मान करता हूं।

ए० गिन्जबर्ग
मेरा पता:
वी० पोलाआका, डी ११।१४, केवी० २५
मास्को, जेड एच—१८०

सरकारी पक्ष

इन लेखको की गिरफ्तारियो के बारे मे सबसे पहले सोवियत जनता को इजवेस्तिया के १३ जनवरी के अक मे प्रकाशित इरेमिन के लेख से पता चला। इसके बाद २२ जनवरी को साहित्यिक गजट मे केदरीना का लेख प्रकाशित हुआ।

"दो सिद्धांतघाती लेखक" ले० दमित्री इरेमिन[1]

इजवेस्तिया, १३ जनवरी १९६६

साम्यवाद के शत्रु भयभीत नही हैं। सोवियत विरोधी क्षेत्रो मे उन्हे जो भी "सनसनीखेज" बाते उपलब्ध होती है, उनका वे कितनी प्रसन्नता से अनुचित लाभ उठाते है। हाल मे इनके हाथ एक अच्छा मौका लगा है। बुर्जुआ समाचारपत्र और रेडियो, मास्को मे दो 'साहित्यकारो" की "अनुचित गिरफ्तारी" की चर्चा कर रहे है, जिन्होने विदेश मे सोवियत विरोधी गन्दा साहित्य प्रकाशित किया है। पश्चिम के मिथ्या प्रचारको की दूषित आत्मा और इससे भी अधिक दूषित कल्पना के लिये यह कितना अच्छा अवसर है। बडी-बडी बातें बना कर लम्बे-चौडे बयानो से वे "सोवियत साहित्यिक क्षेत्रो मे शुद्धि अभियान" की थोथी और काल्पनिक तस्वीर खीच रहे है और यह कहने का स्वाग कर रहे हैं कि वे "इस नये अभियान के भय से अत्यधिक चिंतित है" जिसे "असतुष्ट लेखको" और व्यापक दृष्टि से "उदारतावादी बुद्धिवादियो" के विरुद्ध छेडा गया है ·· · लेकिन असलियत क्या है, वास्तव मे हुआ क्या है ? सोवियत सघ के शत्रुओ के दुष्टतापूर्ण सहायको और सहयोगियो के बीच यह उत्तेजना क्यो है ? और कुछ विदेशी बुद्धिवादी, जो इस टोली मे बडे विचित्र दिखाई पडते हे, इनके चुगुल मे क्यो फस गये हैं ? कुछ भद्र पुरुष हमारे सुधारकर्त्ता, हमारे नैतिक मानदडो के सरक्षण होने का क्यो स्वाग करते हैं और सोवियत बुद्धिवादियो के नाम पर इन

---

१ —दमित्री इरेमिन (जन्म १९०४) रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य के लेखक सघ की मास्को शाखा के मण्डल के सचिव है। उन्होने कई उपन्यास और कहानिया लिखी हैं, जिनमे 'स्टार्म ओवर रोम' भी शामिल है, जिस पर उन्हे १९५२ मे स्तालिन पुरस्कार मिला। १९६४ मे उन्होने सोल्झनित्सीन को 'वन डे इन दि लाइफ आफ आइ डेनिसोविच' पर लेनिन पुरस्कार दिये जाने का विरोध किया (देखिए साहित्यिक ग फरवरी १९३४।)

दो प्रतिक्रियावादियो की रक्षा करने का दावा क्यो करते है ? इसका केवल एक ही स्पष्टीकरण है : दोनो संसारो के विचारधारा सम्बन्धी युद्ध मे, नये समाज के शत्रुओ के मन मे इस संबध मे कोई शंका नही उठती कि वे कौन से साधनो और तरीको का इस्तेमाल करते हैं, और जब दो प्रतिक्रियावादी उनकी खन्दको मे जा पहुंचते है तो वे उन्हे बेहतर पुरस्कार न मिलने की बात कह कर उनकी प्रशंसा करते हैं।

भावना से दिवालिये लोगो के लिये, ऐसे सिद्धात और पक्षघाती लोग एक मूल्यवान खोज होते है। वे इन लोगो को जनता को गुमराह करने और सैद्धातिक उदासीनता, हेत्वाभास और कही अधिक निन्दित और तुच्छ "जीवन की समस्याओ" मे जुगुप्सापूर्ण दिलचस्पी लेने के लिये सहायता देते है।

सक्षेप मे, साम्यवाद के शत्रुओ को वह मिल गया है जिसकी वे तलाश मे थे,—दो प्रतिगामी, जिनके लिये दुरगी चाल चलना और निर्लज्जता, आस्था और विश्वास बन गये हैं। अपने छद्म नामो एब्राम टेरट्ज़ और निकोलाई अर्जहक की आड मे छिप कर ये दोनो वर्षों से विदेशी प्रकाशन गृहो को अपनी रचनाए भेजने रहे है और अपने देश, अपनी पार्टी और सोवियत व्यवस्था पर अपने गन्दे प्रहार को प्रकाशित करते रहे हैं। उनमे से एक है ए० सिन्यावस्की उर्फ "ए० टेरट्ज" और उसने सोवियत पत्रिकाओ मे भी कुछ साहित्यक ममालोचनाए प्रकाशित की है और किसी प्रकार सोवियत लेखक सघ मे घुस आया है। ऊपर से तो उसने लेखक सघ के कानूनो की आवश्यकताओ को पूरा करने का स्वाग किया है अर्थात् "लोगो की सेवा करने कम्युनिस्ट आदर्शों की महानता को उच्च कलात्मक विधाओं मे प्रकट करने" और "अपने समस्त साहित्यिक और सामाजिक कार्य को केवल साम्यवाद के निर्माण के कार्य के लिये सक्रिय रूप से अर्पित करने" का वचन दिया है।

दूसरा, वाई० डेनियल, उर्फ "एन० अर्जहक" एक अनुवादक हैं। लेकिन उसका यह कार्य केवल एक धोखे की टट्टी था, जिसके पीछे कुछ और ही छिपा था—हमारी व्यवस्था के प्रति घृणा, हमारी मातृभूमि और देशवासियो को प्रिय प्रत्येक वस्तु का कुटिलतापूर्ण उपहास।

इनकी रचनाओ को पढ कर, मन मे जो पहला भाव उठता है, वह है अत्यधिक घृणा और जुगुप्सा का। जिन गन्दी बातो से इन रचनाओं के पृष्ठ के पृष्ठ भरे पडे हैं, उन्हे उद्धृत करना भी किसी सुसंस्कृत व्यक्ति के लिये सभव नही है। अत्यधिक घृण्य तरीके से इन दोनो ने सैक्स और मनोविकृति सम्बन्धी "समस्याओ" का विवरण प्रस्तुत किया है। ये दोनों पूर्ण नैतिक पतन की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। इन दोनों की पुस्तको के पृष्ठ अत्यधिक कुटिलतापूर्ण और निन्दनीय गन्दगी से भरे पडे हैं।

यहा उनकी पुस्तको के कुछ विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत हैं : "तुम स्त्रियो को देखते हो" डेनियल लिखता है : "जो सडको पर हिजडों की तरह घूमती रहती है—जो छोटी टागो और भारी-भरकम शरीरो वाली गर्भणी डाक्सहून्ड कुतियाओं की तरह विलक्षण तरीके से

घिसटती हुई चलता है या शतुरमुर्गों की तरह अत्यधिक दुबली होती है, या उनके सूजे हुए शरीर होते है, नीली शिराए बाहर उभरी रहती है, वे रूई भरी चोलिया शरीर का उभार प्रदर्शित करने वाले अधोवस्त्र पहनती है[२]।

हम एक अकादेमिशिन के बारे मे पढते है कि वह "दो गिलास शराब पीता है और यह जानने से पहले कि आप कहा है, वह चम्मच आदि चुराकर अपनी जेबो मे भरने लगता है।" या एक समाचारपत्र के कार्यालय की एक सेक्रेटरी के बारे मे कहा गया है कि वह "एक वैश्या है और कोई भी प्रूफ रीडर उसे प्राप्त कर सकता है।" किसी सोलोमन मोइसेयेविच को छोड कर उसकी पत्नी भाग गई है, 'एक कामुक रूसी कुल्टा, जो एक सोलह वर्षीय नाई के साथ अपना मुह काला करने के बाद भाग गई है। वह स्त्रियो से परिचित है और उनसे भय मानता है और इसका हर सभव कारण मौजूद है। लेकिन वह सोलोमन मोइसेयेविच रूसी राष्ट्रीय चरित्र के बारे मे क्या जानता है[३] ?" और निम्नलिखित उद्धरण की भी उपेक्षा कर पाना संभव नही है आन्द्रेय सिन्यवस्की ने, जो जन्म से रूसी है, स्वय को एब्राम टेरट्ज के नाम के पीछे छिपाया। क्यो ? स्पष्टतया एक उत्तेजना फैलाने वाले कारण से। विदेशो मे एब्राम टेरट्ज के नाम से सोवियत विरोधी कहानिया प्रकाशित कर के, सिन्यावस्की यह प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास कर रहा था कि समारे देश मे सोवियत विरोध मौजूद है और एब्राम टेरट्ज नाम से एक लेखक को सोवियत जीवन के बारे मे "स्पष्ट रूप से लिखने" के लिये पश्चिम के प्रकाशको की तलाश करनी पडी। यह एक बडा गन्दा, उत्तेजना फैलाने का प्रयास है, जो इसके लेखक और उसके बुर्जुआ समर्थको और प्रचारको, दोनो के उद्देश्यो का भण्डाफोड कर देता है।

उन्हे हमारे देश के बारे मे कुछ भी पसन्द नही है, हमारे देश की बहुराष्ट्रीय सस्कृति मे उनके लिये कुछ भी पवित्र नही है और वे सोवियत जन को प्रिय, अतीत मे और वर्तमान मे सोवियत जन को जो कुछ भी प्रिय रहा है, उसकी निन्दा करने और उसका अपमान करने को तैयार है। कल्पना कीजिए कि उन्होने महान् रूसी मानवतावादी एन्तन पावलोविच चेखव के बारे मे क्या लिखा है, जिनकी महान् रचनाए मनुष्य के अन्तरतम की सर्वोत्तम भावनाओ को जागृत करती है। केवल अत्यधिक निर्लज्जता ही किसी लेखनी को ये पक्तिया लिखने के लिये प्रेरित कर सकती है· "चेखव की नाक को तो, उसे उसकी भद्दी नुकीली दाढी से पकड कर, उसके अपने क्षयरोग के थूक मे रगड देनी चाहिये।" और रूस के गौरव ग्रन्थ—विश्व साहित्य की गर्व योग्य रचनाए—उनके बारे मे क्या कहा गया

२—यह उद्धरण वस्तुत सिन्यावस्की की रचना का है, देखिए प्रस्तावना पृष्ठ ३८।

३—इस पैराग्राफ मे दिये गये उद्धरण सिन्यावस्की के कहानी सग्रह "दि आइसीकल एण्ड अदर स्टोरीज" पृष्ठ ११५,१६१ और ६७ से दिये गये है।

है ? "मैं सबसे अधिक इन गौरव-ग्रन्थों से ही घृणा करता हूँ।"

ये "लेखक" हमारी सोवियत सेना के बारे मे प्रवाद फैलाने और उसे अपमानित करने का प्रयास करते हैं, जिसके अमर बलिदान और कार्यों ने यूरोप के लोगों को नाज़ियो के हाथो विनाश से बचाया[4]।

सोवियत जन के लिये, ससार के समस्त राष्ट्रो के लिये, समस्त प्रगतिशील मानवता के लिये, हमारी क्राति के नेता ब्लादिमिर इलिच लेनिन के नाम से अधिक पवित्र नाम कोई अन्य नही है। लेनिन का नाम, समाजवादी क्रातियो और राष्ट्रीय मुक्ति आदोलनो के युग का पर्याय है। यह वैज्ञानिक साम्यवाद और जिनके द्वारा, जिन महान मानवीय प्रयासो के द्वारा यह मूर्त होता है, लेनिन का नाम उनका पर्याय है। इतना ही नही प्रमुख पूजीवादी नेताओ ने भी लेनिन के नाम के समक्ष अपना सिर झुकाया है; उन्हे बाध्य होकर अनेक बार यह स्वीकार करना पडा है कि लेनिन २० वी शताब्दी के महानतम् परिवर्तनकारी नेता है।

एक ऐसे नाम पर जो हमारे लिये पवित्र है, कीचड उछालने के लिये एक तथाकथित लेखक को, अपनी कलम को घृणा के कीचड के कैसे गर्त मे डुबाने की आवश्यकता पडी होगी, यह बात कल्पना के बाहर है। लेखक ने इस सम्बन्ध मे जो बाते कही है, उनका उद्धरण यहा देना असभव है, क्योकि उनका यह प्रलाप इतना द्वेषपूर्ण है, इतना निन्दनीय और गदा है। इन अत्यधिक मिथ्या और झूठी बातो से ही, इन लेखकों ने स्वयं को सोवियत समाज से काट कर एकदम अलग कर लिया है।

डेनियल-अर्जहक की भद्दी कहानी "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" मे ऐसी, वचकतापूर्ण बाते कही गई है कि "विदेशो मे सोवियत विरोधी प्रकाशको द्वारा रचनाए प्रकाशित होना, इतनी अच्छी बात नही है।" लेकिन यह लेखक स्वय को सोवियत व्यवस्था पर गन्दा कीचड उछालने के अवसर से कैसे वचित कर सकता है ? अपने गन्दे और द्वेषपूर्ण "दार्शनिक" विवेचन को समाप्त करते हुए लेखक अपने 'नायक" के माध्यम से कहता है, पाठक की ओर उन्मुख हो कर निम्नलिखित कारवाई का सुझाव देता है - "फ्यूज़ ··पिन को बाहर खीचो ·फैको· · ·जमीन पर मुह के बल लेट जाओ। लेटे रहो। अब यह फट गया है और तुम आगे दौड सकते हो। अपने कूल्हे पर लगी राइफल से एक के बाद एक, एक के बाद एक गोली छोडते हुए। वे लोग वहा पडे है, उनके चिथडे उड गये है और उनका शरीर गोलियो ने उनके शरीरो को क्षत-विक्षत कर डाला है।"

जैसा कि हम इन उद्धरणो से देखते है, सोवियत वस्तुओ के प्रति उनके क्रोध की कोई सीमा नही है। यह उद्धरण वस्तुत. आतक फैलाने को प्रोत्साहन देता है।

सिन्यावस्की-टरट्ज की गन्दी रचना ल्यूबिमोव मे लेखक इस बात को सिद्ध करने

४—देखिए प्रस्तावना पृष्ठ ३८।

५——वही।

से छोटा उद्देश्य अपने समक्ष नही रखता कि साम्यवाद द्वारा समाज म आमूल परिवर्तन का विचार ही एक भ्राति है, एक निराधार सपना है। जिस यथार्थ का पूरी विकृतपूर्ण कहानी मे मज़ाक उडाया गया है और जो रुग्ण कल्पनाशीलता के ताने बाने मे किसी हुई है, उसको पार कर उस यथार्थ को देख पाना सम्भव नही है, जिसका इसमे उपहास करने का प्रयास किया गया है। लेकिन इसका सैद्धातिक, राजनीतिक सदेश पूरी तरह से स्पष्ट है।

यह इतिहास के नियमो और विकासक्रम का अनर्गल उपहास है। यह उन लोगो का मजाक है, जिन्होने महान् लक्ष्यो की पूर्ति के लिये अपने जीवन का वलिदान दिया। यह हमारे देश और हमारे राष्ट्र का मजाक है। यहा लेखक की धृष्टता और बुद्धिहीनता वस्तुत होमर की विराट कल्पनाशीलता के मुकावले मे पहुच जाती है। यह सिद्ध करने के लिये कि कम्युनिस्ट सिद्धात, और व्यवहार मे उसे लागू करने के तरीके, केवल भ्राति है, वह किसी भी साधन के उपयोग की उपेक्षा नही करता। हमे ल्यूबीमोव नामक एक नगर, वह नगर जिसमे तिखोमिरोव नामक एक व्यक्ति सार्वभौम सुख के लिये व्यापक सम्मोहन की मदद से प्रयास करता है, का पतन दिखाने के लिये बुर्जुआ द्वेष की किसी भी ऊचाई को पार करने से नही हिचकता। वह कितनी प्रसन्नता से साम्यवादी "प्रयोग" की असफलता और ल्यूवी-मोव नगर द्वारा फिर पुराने जीवन-क्रम को अपनाने की बात का वणन करता है। वह इस महत्वपूर्ण प्रसग पर विशेष जोर देता है। "एक उदास किसान खुले रूप से और सव लोगो की नज़रो के सामने, एक नयी इमारत की, सीमेट से आधी भरी नीव के सामने रुकता है और इस नीव मे पेशाव करता है"—यह कथन ऐसा है मानो यह किसान निश्चित रूप से यह जानता था कि इन सव वातो के बारे मे उसका क्या दृष्टिकोण है और उसे क्या करना चाहिये[६]।

डेनियल—अर्जेहक की जिस कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" का उपर उल्लेख किया गया है, उसका स्वर भी अपने किस्म का निराला ही है। सक्षेप मे इसकी कथा इस प्रकार है. रेडियो पर यह आदेश की घोषणा की जाती है कि "श्रमजीवी वर्ग और जन-समुदायो की और अधिक भलाई को ध्यान मे रखते हुए, तथा उनकी इच्छाओ के अनुसार" (लेखक मे किसी भी बात का मजाक उडाने की क्षमता है?) "रविवार १० अगस्त १९६० को"—क्या आप उससे आगे की कल्पना कर सकते है?—"सार्वजनिक हत्या दिवस घोषित किया जाया है"—यह बात खनिक दिवस, शिक्षक दिवस आदि के नमूने पर ही है। इसके वाद उस जीवन-क्रम के पाशविक दृश्य चित्रित किये जाते है, जिन्हे लेखक सोवियत जीवन प्रणाली वताने की कोशिश करता है। इसमे पूरे समाज की शासको के आदेशानुसार व्यापक हत्याकाण्ड के "विचार" के प्रति निष्ठा को दर्शाया गया है। लोग एक दूसरे को मारते है, पति और पत्नी अपने बदले निकालते है, पूरे देश मे आतक का राज हो जाता है। और

६—दि मेकपीस एक्सपेरिमेट, पृष्ठ १७७।

इतना ही नही, इस पूरे चित्र को भद्दी कामुकता, मदिरा के नशे में धुत्त लोगो के व्यभिचार, उन्मुक्त अनैतिकता और मानव जाति के प्रति घृणा के उदार उपयोग से और अधिक घृणित बनाया गया है।

सिन्यावस्की-टेरट्ज और डेनियल—अर्जहक, उन सब सब लोगो को, जो अपनी पुस्तको मे कम्युनिस्ट विचारधारा का खुले रूप से और निष्ठापूर्वक प्रचार करते है, अवसरवादी और "ब्लैक हड्रेड" बताते है। ये उन लोगो का मजाक उड़ाते है, जो पार्टी के सक्रिय और निष्ठावान मददगारों और अपने देश की जनता के सच्चे सपूतो के रूप मे लिखते है। इस प्रकार सिन्यावस्की ने कुछ सोवियत पत्रिकाओ मे जो जेसुइटवादी छोटी-मोटी आलोचनाएं प्रकाशित की है, उनमें उसने अन्य लेखको की रचनाओं मे उन बातो को ढूढने का प्रयास किया है, जो स्वय उसकी रचनाओ को एक दम भिन्न कोटि मे ला खडा करती है . सैद्धातिक अस्पष्टता, हेत्वाभासवाद, अपमानजनक प्रवाद की सीमा तक तथ्यो को विकृत कर प्रस्तुत करना। यहा उससे गन्दे शब्दो का प्रयोग करने मे भी कृपणता नही दिखाई "वह हमारे जीवन और सस्कृति के बारे मे प्रवाद फैलाता है", वह "कुटिलतापूर्ण प्रवाद फैलाता तथा विद्वेषपूर्ण और मूर्खतापूर्ण दोषारोपण करता है, वह जिन भयावह परिस्थितियो का वर्णन करता है, उनका कोई अस्तित्व नही है, जबकि उसके पात्र—यद्यपि वह समझता है कि पाठक इन पात्रो को पहचान लेंगे—पहचाने न जाने वाले विचित्र व्यग चित्र हैं" और वस्तुत. यह सब "हमारी कला के समक्ष उपस्थित सैद्धातिक सघर्ष के वास्तविक कार्यों से बहुत दूर है[७]।"

हमारे लेखको का मार्गदर्शन करने और उनका शुभचितक होने का स्वाग करने वाला यह व्यक्ति, प्रत्येक सोवियत वस्तु का शत्रु है—कितना शर्मनाक है यह सब। कितनी बुद्धिहीनतापूर्ण वचना है। नैतिक पतन का कैसा उदाहरण है। वह अपना एक हाथ अपना समर्थन देने के लिये उठाता है और अपने दूसरे हाथ को अपनी जेब मे डालकर भद्दे इशारे करता है।

हम सोवियत लेखक, जिन्होंने कम्युनिस्ट आदर्शों के अनुरूप जीवन के पुनर्निर्माण को अपना जीवन अर्पित कर दिया है, और जो लेनिन की पार्टी को अपना विश्वसनीय सहायक और विवेकपूर्ण मार्गदर्शक, (सार्वभौम) शाति और सुख की स्थापना के निःस्वार्थ सघर्ष मे अपना मार्गदर्शक मानते है, सोवियत भूमि के हम सब लोग, सिन्यावस्की-टेरट्ज और डेनियल—अर्जहक की रचनाओ पर केवल जुगुप्सा और क्रोध का ही अनुभव कर सकते है। इन प्रतिगामियो का समुद्र पार रहने वाला सहायक और समर्थक, श्वेत रूसी

७—इस पैराग्राफ मे सिन्यावस्की द्वारा आइवन शेवस्तोव के ब्लाट्ट (देखिए प्रस्तावना, पृष्ठ २१) का उल्लेख है। इस लेख मे सिन्यावस्की का स्वर बड़ा सयत है और एरेमिन ने जिन "उद्धरणो" को सिन्यावस्की का बताया है, वे वस्तुत शेवस्तोव की पुस्तक से है। 'कुटिल प्रवाद, विद्वेषपूर्ण और मूर्खतापूर्ण आरोप आदि" शब्द सिन्यावस्की के नही शेवस्तोव के है। (देखिए नोवी मीर, दिसम्बर १९६४, पृष्ठ २२९)

प्रवासी कवि, वी० फिलिपोव[८] इन लेखको की गन्दी पुस्तिकाओ की अपनी भूमिकाओ मे इन्हे "प्रसिद्ध सोवियत लेखक" बताकर इनका प्रचार करने की निरर्थक कोशिश करता है—वस्तुत सोवियत साहित्य मे ऐसे व्यक्तियो का कही कोई स्थान नही है।

इन प्रवाद फैलाने वाले लेखको के पश्चिमी सरक्षको के बारे मे इतना कहना पर्याप्त है कि यदि ये लोग किसी बात पर निर्भर कर सकते थे तो केवल इस तथ्य पर कि विदेशियो को सोवियत जीवन के बारे मे बहुत कम सच्ची जानकारी है। लेकिन झूठ के पाव नही होते और वह बहुत समय तक नही चल सकता। मुझे इस बात का विश्वास है कि पश्चिम का प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति, सोवियत सघ के बारे मे वह जो कुछ भी जानता है, उसे एक तरफ रख कर और इन दो प्रतिगामियो के झूठे प्रलापो को दूसरी ओर रखकर जब विचार करेगा तो उसे असलियत मालूम हो जायेगी और वह सिन्यावस्की-टेरट्ज और डेनियल—अर्जहक की गन्दी रचनाओ को कूडे के डोल मे फैंक देगा जो उनका उचित स्थान है।

इससे भिन्न कोई बात नही हो सकती, क्योकि यह मिथ्या प्रचारक केवल सोवियत समाज पर ही प्रहार नही करते—ये पूरी प्रगतिशील मानवता के विरुद्ध भी विषवमन करते है। वे प्रगतिशील लोगो द्वारा, सामाजिक उन्नति, लोकतत्र और शाति के लिये किये जाने वाले पवित्र सघर्ष के विरुद्ध ही विष उगलते है।

आज अनेक बुर्जुआ पत्रकार भी, जो हमारे सैद्धातिक विरोधी है, समाजवाद की प्रबल शक्ति का सम्मानपूर्वक उल्लेख करते है, वे इसे अफ्रीका, एशिया, लेटिन अमरीका, वस्तुत: पूरे ससार को आकर्षित करने वाला चुम्बक कहते है।

सिन्यावस्की और डेनियल का लालन-पालन सोवियत सघ मे हुआ। उन्हे समाजवाद के सब लाभ प्राप्त हुए। हमारे पिताओ और हमारे बडे भाइयो ने क्राति और गृहयुद्ध के भयकर वर्षों मे, पहली पच-वर्षीय योजना के कठिन समय मे, सघर्ष कर हमारे लिये जो सुविधाए और जो वस्तुए उपलब्ध की वे सब इन्हे उपलब्ध थी।

सिन्यावस्की और डेनियल के इस अभियान की शुरूआत छोटे पैमाने पर हुई उन्होने ईमानदारी के बदले बेईमानी को अपनाया, सोवियत जनता, जिसे साहित्यिक गति-विधि समझती है उसके स्थान पर दुरगी चाल को अपनाया; जीवन के प्रति एक निष्ठावान दृष्टिकोण के स्थान पर, हेत्वाभासवाद को अगीकार किया, लोगो की उनकी पीठ पीछे खिल्लिया उडाई, लोगो पर पीछे से प्रहार किये और उनके आस-पास जो लोग मौजूद थे उनकी धज्जिया उडाई, लेकिन एक बार, इन क्षुद्र बातो से शुरू कर, वे रुके नही। उनका निरन्तर पतन जारी रहा। अन्त मे वे उस सीमा तक नीचे गिरे कि उन्होने सोवियत शासन के विरुद्ध अपराध किये। ऐसा कर उन्होने स्वय को हमारे साहित्य और सोवियत जन-

---

८—देखिए तीसरे अध्याय की टिप्पणी न० १३

समुदाय से अपने आप को अलग कर दिया। क्षुद्रतापूर्ण बातो से लेकर, भयकर विश्वासघात तक इन लोगो का जीवन क्रम चला।

युद्ध के दौरान अनेक रूसी प्रवासी नाजियो के विरुद्ध, फ्रासीसियो के प्रतिरोध आदोलन मे शामिल हुए और उन्होने नाजियो के विरुद्ध हथियार उठाये। गेस्टापो की गोलियो से बिन्ध कर मरते समय उनके होठो पर रूस के प्रति प्रेम भरे शब्द ही थे—ये अपनी सुदूर मातृभूमि के प्रति प्रेमपूर्ण शब्द थे, जिसके प्रति वे अपने हृदय मे सदा वफादार रहे। और इन दो व्यक्तियो की क्या बात है? ये एक अन्य प्रकार के प्रवासी है . देश के भीतर रहने वाले प्रवासी। इन लोगों ने अपने आपको अपने एक छोटे से ससार के भीतर, एक पूरी तरह से दूषित और गन्दे ससार के भीतर बन्द कर लिया है। वे इस संसार मे पडे रहकर अपने क्रोधपूर्ण राग द्वेषो मे डूबते उतराते रहे। यहा उन्होने अपनी लेखनियो को विष मे बुझाया। अपनी इस दुनिया में पडे रह कर उन्होने यह कल्पना की कि यही वास्तविक जीवन है।

भाग्य का कैसा व्यग्य है, एक फ्रासीसी बुर्जुआ प्रकाशक, हाशेत, एक "दि यू० एस० एस० आर० इन दि ईयर टू थाउजैंड," शीर्षक पुस्तिका प्रकाशित करता है और इसकी प्रशस्ति मे कहा गया है, "यदि आप अधुनातम जानकारी रखना चाहते हैं तो आप को अपने चारो ओर घटने वाली घटनाओं को समझना चाहिये।" इस पुस्तक के लेखक इस कथन का अभिप्राय जानते है और एक महान् देश की तस्वीर प्रस्तुत करते है। यह तस्वीर हमारे युग के मार्गदर्शको की तस्वीर है, जिनकी साम्यवाद के प्रति निष्ठा को वे चाहे पसन्द न करें, लेकिन वे इन लोगो को प्रशसा के भाव से देखे बिना नहीं रह सकते। लेकिन इन दो प्रतिगामियों ने, उनके चारों ओर जो कुछ घट रहा था, उसे केवल गलत ढंग से समझने का ही निश्चय नही किया, वल्कि उसके विरुद्ध सक्रिय रूप से प्रवाद और झूठी बातें फैलाने का सकल्प किया।

लेकिन सभवत· भाग्य के इस व्यंग्य की चर्चा करना गलत है। सच्चे अर्थों मे, सामान्य सूझ-बूझ और नैतिक विकृति की तुलना नही की जा सकती। एक निष्ठावान लेखनी और जूडास की लेखनी समान नही हो सकती। इन सिद्धांतघातियो के उद्गारो मे किन्ही अलग दृष्टिकोणो का प्रतिपादन नही हुआ है, वल्कि इनके सैद्धातिक पतन, इनके मिथ्याभिमान और किसी भी सिद्धात के प्रति निष्ठा के अभाव का ही प्रदर्शन हुआ है।

लेकिन क्या बात यहीं समाप्त हो जाती है? हम केवल दो गुण्डो के नैतिक पतन के मामले पर ही विचार नही कर रहे हैं। हम उन दो प्रतिगामियों के मामले पर विचार कर रहे हैं, जिन्होने साम्यवाद के सर्वाधिक उन्मादपूर्ण और भयंकर शत्रुओं की सेवा स्वीकार की है। ये शत्रु जो सिन्यावस्की और डेनियल की कहानी को, पश्चिम में इस कारण से बढा-चढ़ा कर पेश कर रहे हैं कि सिन्यावस्की और डेनियल ने सोवियत संघ के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध के संचालन में एक सहायक माध्यम के रूप में अपनी सेवाएं अर्पित की हैं।

पश्चिम के भद्र पुरुषो ! तुम ग्रन्न देखने मे पूर्व ही आनन्द मना रहे हो। तुम्हारे इन सिद्धातघातियो का भण्डा फूट चुका है। उन्हे वेनकाब कर दिया गया है और उनका सच्चा चेहरा लोगो के सामने पेश हो गया है। ये केवल नैतिक विकृति से ग्रस्त ही नही है, वल्कि उन लोगो के सक्रिय सहायक है, जो अन्तर्राष्ट्रीय तनाव की भट्टी को दहका रहे हैं, जो शीत युद्ध को गर्म युद्ध मे वदल देना चाहते है और जो आज भी अपने मन मे सोवियत सघ के विरुद्ध हाथ उठाने का उन्मादपूर्ण सपना सजोये हुए है। ऐसे सहायको के प्रति कोई उदारता नही दिखाई जा सकती। हमारे देशवासियो ने अक्तूवर क्राति की उपलब्धि के लिये, फासिस्टवाद पर विजय के लिये, वहुत वडे वलिदान दिये है और अपनी मातृभूमि के लिये इतना खून पसीना वहाया है कि इन प्रतिगामियों के प्रति उपेक्षा भाव नही दिखायाजा सकता।

जैसा कि हम देख चुके हैं, इन प्रतिगामियो की "रचनाए" हमारी सामाजिक व्यवस्था और हमारे राज्य के विरुद्ध द्वेषपूर्ण प्रवाद से ओत-प्रोत है और ये सोवियत विरोधी मिथ्या प्रचार के आदर्श नमूने है। इन रचनाओ का उद्देश्य विभिन्न देशो के बीच शत्रुता को भडकाना और युद्ध के खतरे को वढाना है। ये वस्तुत उन लोगो की पीठ मे गोली मारने जैसी बात है, जो पृथ्वी पर शाति और सार्वभौम सुख की स्थापना के लिये सघर्ष कर रहे हैं। ऐसे कार्यों को मातृभूमि के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण कारवाई के अलावा अन्य कुछ नही समझा जा सकता।

कुछ समय गुजर जाने के वाद कोई भी इनका स्मरण नही करेगा। विद्वेष और निकृष्ट कल्पना से पूरित ये पृष्ठ, कूडे के ढेर पर पडे सड जायेगे। इतिहास ने वार-वार इस तथ्य की पुष्टि की है कि प्रवाद, चाहे यह कितना ही भयकर और विद्वेषपूर्ण क्यो न हो, अनिवार्य रूप से सत्य की फुंकार से जलकर, भाप बनकर उड जाता है।[9] इस बार भी यही होगा।

"स्मरद्याकोव के उत्तराधिकारी[10]"
लेखिका जैड० केदरीना[11]
"साहित्यिकगजट", २२ जनवरी १९६६

९—यह मई १९३८ मे वुखारिन के मुकदमे मे विशिस्की के भाषण के अन्तिम अश की अनुकृति ही मालूम पडती है।

१०—स्मरद्याकोव, दोस्तोएवस्की के उपन्यास दि ब्रदर्स कारामाजोव के वृद्ध कारामाजोव का औरस पुत्र है। यह पतित व्यक्ति अपने पिता की हत्या करता है। इसका नाम रूसी भाषा के "सडाध" शब्द के आधार पर रखा गया है। दोस्तोएवस्की के जघन्यतम पात्रो मे यह है और रूसी जिस व्यक्ति को सशोधन या सुधार के परे समझते हैं या अत्यधिक पतित मानते हैं, उसे स्मरद्याकोव कहकर सवोधित करते हैं।

११—मदाम केदरीना 'साहित्यिक प्रश्न' जैसी सोवियत साहित्यिक पत्रिकाओं मे यदा-कदा लेख लिखती रहती है। ऐसा लगता है कि वे सोवियत सघ की गैर रूसी जातियो

इस बात की जानकारी प्राप्त होने से पहले कि ए० सिन्यावस्की और वाई० डेनियल विदेश मे एब्राम टेरट्ज और निकोलाई अर्जहक के छद्म नामो से गुप्त रूप से अपनी रचनाएं प्रकाशित कर रहे हैं, उनसे सोवियत विरोधी "साहित्यिक मनोरंजन" के लिये पूछताछ किये जाने से पहले ही विदेशी पूंजीवादी समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविज़न उनकी रचनाओं की प्रशसा मे जमीन आसमान एक कर रहे थे। उदाहरण के लिये, दि लन्दन टाइम्स ने टेरट्ज़ की रचनाओ को "व्यग्य लेखन का एक प्रतिभापूर्ण प्रयोग······सर्वोत्तम रूसी परम्पराओ के सर्वथा अनुरूप" घोषित किया और न्यूयार्क टाइम्स ने अपना यह विश्वास प्रकट किया कि "रूस का कोई भी लेखक एब्राम टेरट्ज़ जैसे प्रबन्ध, कहानिया और अन्य रचनाएं लिखकर वस्तुतः गर्व का अनुभव कर सकता है।"

सन् १९६२ मे "रेडियो लिवर्टी" पहले ही अपने प्रसारणो मे कहने लगा था कि एब्राम टेरट्ज़ "सोवियत यथार्थ का मजाक उडाता है······"हाल मे अमरीकी समाचार एजेंसी यूनाइटेड प्रेस इन्टरनेशनल ने घोपणा की कि "सिन्यावस्की ने ऐसी रचनाओ के लेखन मे विशेपज्ञता प्राप्त की है, जो सोवियत जीवन का मज़ाक उड़ाती हैं।" और इटली का समाचारपत्र जीयोर्नो हमे महाकाव्यो जैसी गम्भीरता और शान्ति से बताता है कि "१९५९ से ही अमरीका और पश्चिम के अन्य देशों में 'एब्राम टेरट्ज़" के हस्ताक्षर से ऐसी पुस्तिकाए और पुस्तकें······प्रकाशित हो रही हैं, जो सोवियत विरोधी है।"

वही समाचारपत्र और पत्रिकाए जो कल तक "एब्राम टेरट्ज़ पकड के बाहर" जैसे भडकीले शीर्षको के अन्तर्गत, विचित्र लेख प्रकाशित कर रही थी, अब इन छद्म नामो के पीछे छिपे वास्तविक नामो को वडी धृष्टता से प्रकाशित करती हैं और टेरट्ज़—सिन्यावस्की और डेनियल—अर्ज़हक के बारे मे लिखती हैं।

बुर्जुआ मिथ्या प्रचार ने कभी भी इस सम्बन्ध मे कोई छिपाव नही किया कि वह टेरट्ज़-सिन्यावस्की और अर्ज़हक-डेनियल की रचनाओं को कितना राजनीतिक महत्व देता है। यह बात और भी अधिक आश्चर्यजनक है कि पिछले कुछ सप्ताहो मे इन लोगो के पश्चिम मे स्थित "शुभचिंतको" ने सिन्यावस्की और डेनियल के भाग्य के बारे मे वडी चिन्ता प्रकट की है और जोर देकर यह कहा है कि इनकी गिरफ्तारी का कोई आधार नही है। सिन्यावस्की और डेनियल के ये पृष्ठपोपक और प्रशसक अब इनकी रचनाओं के सोवियत विरोधी स्वरूप के बारे मे एकदम चुप्पी साधे हुए हैं।

के साहित्य की विशेषज्ञ हैं। वे रूसी साहित्य के बारे मे जो कुछ लिखती है (उदाहरण के लिये, देखिए उनका अगस्त १९६३ की 'साहित्यिक प्रश्न' नामक पत्रिका मे प्रकाशित लेख, जिसमे उन्होंने सोल्झेनित्सीन के "मात्र्योनाज द्वोर" की आलोचना की है) उसमें वे कट्टरपंथी व्यवस्था और दृष्टिकोण का स्पष्ट रूप मे समर्थन करती है और अपने निर्णयो के लिये "पक्की" मान्य साहित्यिक प्रतिमाओ का उल्लेख करती हैं और अधिक कट्टरपंथी लेखकों के प्रति अत्यधिक स्पष्ट पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण प्रदर्शित करती है।

इन दो व्यक्तियो ने, विदेशो मे काल्पनिक नामो से, गुप्त रूप से जो रचनाए प्रकाशित की हैं उनमे क्या लिखा है ? उन्हे किस बात ने, पश्चिम के प्रतिक्रियावादी प्रकाशको का, जिनमे रूसी प्रवासी तक शामिल है, समर्थन प्राप्त करने की प्रेरणा दी । मेरे सामने एब्राम टेरट्ज और निकोलाई अर्जहक की पुस्तकों के वाशिगटन सस्करण रखे हुए हैं । मैंने उन्हे बडी सावधानी से पढा है और मुझे यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो गई है कि ये पुस्तकें स्पष्ट रूप से और खुल्लम-खुल्ला सोवियत विरोधी हैं, जिसे समाजवादी व्यवस्था के प्रति घृणा से प्रेरणा मिली । मैं वस्तुत. इस बात का वर्णन प्रस्तुत करने नही जा रही हूं कि अर्जहक और टेरट्ज किस सीमा तक कानून की दृष्टि से दण्डनीय हैं--यह काय न्याय-पालिका का है । मैं तो इस मामले के दूसरे पक्ष पर विचार करना चाहती हूं । क्या यह सभव है कि, अपनी रचनाओ मे हमारे प्रति अत्यधिक विरोध प्रकट करने के बावजूद लेखक वस्तुतः प्रतिभाशाली हैं, जैसा कि इनके विदेशी समर्थको ने बताने की कोशिश की है ? नही । इन पुस्तको मे ऐसी बातें होने के अलावा, जिनसे प्रत्येक व्यक्ति को सोवियत नागरिक होने के कारण जुगुप्सा उत्पन्न होती है । ये रचनाए अरुचिकर है और इन्हे पढते-पढते व्यक्ति ऊब उठता है—कभी-कभी इनकी अपरिष्कृत विशिष्टता, उद्देश्य और साहित्यिक कमजोरी दोनो कारणो से, और कुछ अन्य मामलो मे जानबूझ कर उत्पन्न की गई भ्राति के कारण और एक के बाद एक विक्षिप्त और घृणित चित्रो के चित्रण के कारण, आप यह सोचने लगते हैं कि ये रचनाए असम्बद्ध प्रलाप के अलावा अन्य कुछ नही है ।

जब पाठक, प्रकट रूप से कभी समाप्त न होने वाली लाक्षणिक वर्णनो की इस ऊसर भूमि मे से गुजरता है, जब वह प्रतीको, रूपको विभिन्न पात्रो के एक दूसरे रहस्यात्मक उत्परिवर्तनो के बारे मे पढता है, तो उसके समक्ष एक सीधी-सादी, स्पष्ट और तर्कसगत योजना प्रकट हो जाती है—इन दोनो व्यक्तियो की सब रचनाए, सैद्धान्तिक दृष्टि से भ्रष्ट है । टेरट्ज ने अपनी रचनाओ मे जिस अत्यधिक अभेद्य विद्या का प्रयोग किया है, वह अपने 'बुनियादी विचारो" को छिपाने की एक चमकदार धोके की टट्टी है और जब हम एक बार इन रचनाओ के ऊपर से यह नकाब उठा देते है, तो आपको इन रचनाओ मे निहित विचारो की भयकर दरिद्रता से आघात पहुंचता है और आप अपने आपसे पूछते हैं . क्या बस सब कुछ यही है—इनमे अत्यधिक क्षुद्र सोवियत विरोधी विचार की दो या तीन पक्तियो से अधिक कुछ नही है, जिससे हम पुराने जमाने से परिचित हैं ?

एन० अर्जहक की पूरी तरह प्रवादपूर्ण कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिग" विचार दारिद्रय का विशिष्ट उदाहरण है । इस "रचना" का विषय उतना ही सीधा-सादा है, जितनी यह विद्वेषपूर्ण है : रेडियो-से यह घोषणा की जाती है कि सरकार ने "सार्वजनिक हत्या दिवस" मनाने का आदेश दिया है । और यह दिवस रेल श्रमिक दिवस और ऐसे ही अन्य दिवसो के अनुरूप है । इस दिन कोई भी व्यक्ति जिसकी चाहे हत्या कर सकता है, केवल कुछ विशेष प्रशासनिक श्रेणियों के लोगों की ही हत्या नहीं की जा-सकती । यह "कारवाई"

जिसका उद्देश्य जनता को "आतंकित" करना था पूरी तरह से असफल रहती है ।

पाठक यह पूछ सकता है कि ऐसी मूर्खतापूर्ण कथावस्तु का अनुसंधान करने की क्या तुक थी । वास्तविकता यह है कि इस कथावस्तु की कल्पना का उद्देश्य प्रमुख "सकारात्मक" पात्र को अनेक "उत्तेजनात्मक" भाषण करने का अवसर प्रदान करना था और इनमे वह भाषण भी शामिल है, जिसमे उसने यह राय जाहिर की कि उसकी समझ से किन लोगों की वस्तुत हत्या की जानी चाहिये । अपनी रखेल के सुझाव पर विचार करने और उसे अस्वीकार करने के वाद कि उसे उसके (रखेल के) पति की हत्या कर देनी चाहिये, क्योंकि वह अव उससे प्रेम नही करती (यद्यपि, प्रसगवश यह कहा जा सकता है कि उसने अपनी रखेल को इस सुझाव के लिये इस आधार पर क्षमा कर दिया कि वह अपने पति से घृणा करती है) "नायक" अपने मन मे अपने सव शत्रुओं के वारे मे एक-एक करके सोचता है, वह उन सव व्यक्तियों के वारे मे, जिन्होंने वचपन से लेकर उस समय तक उसके खिलाफ़ कुछ किया, सोचता है और यह निश्चय करता है कि इन लोगों को एक सवक सिखाना तो उचित होगा, लेकिन इनकी हत्या करना ठीक नही है । इसके वावजूद वह हत्या करना चाहता है । वस प्रश्न यह है : वह हत्या के लिये किस का चुनाव करे ?......अन्ततः जिन लोगों की हत्या करना आवश्यक समझा जाता है, वे वे लोग हैं, जो समाजवादी व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं और जो राज्य की नीति को लागू करते हैं—और इस कहानी का "नायक" इन लोगों का वर्णन अत्यधिक द्वेषपूर्ण और अपमानजनक शब्दो में करता है । "इन लोगों के साथ क्या व्यवहार किया जाना चाहिये ?" यहां वर्णन कर्त्ता नायक की आंखों मे खून का ज्वार आ जाता है और वह अपना प्रलाप शुरू करता है · "क्या तुम्हे आज भी याद है कि इसे कैसे किया जाता है ? फयूज...पिन को खीच कर वाहर निकालो...फैंको... जमीन पर मुह के वल लेट जाओ, लेटे रहो । अव इसका विस्फोट हो गया है और तुम आगे दौड सकते हो, अपनी राइफल को अपने कूल्हे पर लगा कर गोली वरसाते हुए एक के वाद एक गोली और फिर एक के वाद एक, एक के वाद एक !" और गोलियो की मार से क्षत-विक्षत शरीरो और घायलो की वाहर निकली हुई आतो के भयकर दृश्य, एक ऐसे रक्त रंजित दृश्य जिसमे प्रत्येक वस्तु का सम्मिश्रण हो चुका है, को देखकर अपनी आंखो को तृप्त करते हुए वह कहता है "रूसी, जर्मन, जार्जियन, रूमानियन, यहूदी, हगरीवासी, कोट, तख्तिया, डाक्टरी टुकडिया, कुदालें," सव एक दूसरे से मिली पटी हैं और इस प्रकार "सकारात्मक नायक" को शवो को रौंदते हुए निकलने वाली स्टुडीवेकरो का दिवा-स्वप्न आता है, वह एक, दो, आठ, चालीस स्टुडीवेकर देखता है ।

आप कहेंगे यह तो शुद्ध फासिस्टवाद है ? हा शुद्ध फासिस्टवाद ही है—ये इसके रक्त-रंजित युद्धो और विद्रोहों के कार्यक्रम के उदाहरण हैं, ये ऐसे उदाहरण हैं, जो केवल तथ्य की दृष्टि से ही मानवता विरोधी नही हैं, वल्कि ये हिंसा और सामूहिक हत्या की अपनी "सौंदर्य भावना" की दृष्टि से भी, शुद्ध फासिस्टवाद के उदाहरण हैं । "नायक" अपने

"साम्यवाद और सोवियत व्यवस्था से "मुक्ति" के कार्यक्रम को यह कह कर सही सिद्ध करने की कोशिश करता है कि सार्वजनिक हत्या का विचार समाजवादी सिद्धात मे सार रूप मे" निहित है और लोगो का परस्पर विरोध समाज के स्वभाव का अग है । अत ठोस बात यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना प्रबल शत्रु माना जाये, क्योकि "प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को एक चम्मच भर पानी मे डुबाने का अवसर ढूढने का प्रयास कर रहा है ।"[12] और "बहुत जल्दी मनुष्यों के बीच...सम्पर्क की एक मात्र कडी, केवल पशु ही रह जायेगे ।" कहानी का विषय मानव सम्बन्धों के पूरी तरह से विश्रृंखलित हो जाने के विचार को मूर्त करता है ।

मैं समझती हूं कि पाठक इस बात से सहमत होंगे कि जब ऐसा विषय सामने हो तो विधा के प्रश्न का अधिक महत्व नही रह जाता । स्पष्टतया लेखक की भी यही भावना है और उसके प्रकाशकों की भी, जो एक प्रस्तावना मे कहते हैं कि "कहानी का बुनियादी विचार" (सार्वजनिक हत्या दिवस की घोषणा) "केवल एक साहित्यिक विधा" ही है और इसका उपयोग वाछित तरीके से सोवियत समाज को चित्रित करने के लिये किया गया है । प्रस्तावना का लेखक आगे कहता है कि "यूरोपीय यथार्थवाद के मानदण्डो और मानकों को आप सोवियत जीवन पर लागू नही कर सकते · जो बात गैर-साम्यवादी संसार मे पूरी तरह से असंभावित दिखाई पडती है, वह "समाजवादी यथार्थवाद" की दुनिया मे पूरी तरह से संभव है ।" दूसरे शब्दो मे जो चाहे जी भर कर सोवियत समाज के बारे मे झूठ बोल सकता है—जब तक समाजवाद के विरुद्ध बात कही जाये, तब तक प्रत्येक बात सही है ।

एब्राम टेरट्ज़ ने भी इसी विचार-क्रम को अपनाया है । बस अन्तर केवल इतना है कि उसने अपने सोवियत विरोधी विचारों को छिपाने की अधिक चिन्ता दिखाई है । एब्राम टेरट्ज़ की कहानियो का लेखक, भाषा-विज्ञान का डाक्टर ए० सिन्यावस्की, जिसे विदेशी प्रतिक्रियावादी समाचारपत्रों ने "रूसी परम्परा का उत्तराधिकारी" बता कर प्रशसा की है, हाथ की सफाई मे कमाल रखता है और जब अन्य लोगो की पुस्तको से कुछ सामग्री उडाने की बात आती है, तो उसे कोई हिचक नही होती । उसका अन्त करण उसे ऐसे कार्यों के लिये जरा भी नही टोकता । एब्राम टेरट्ज़ की नैतिक नग्नता, और सोवियत विरोधी विचार जिन्हे अपनाकर, उसने अपने विचार बना लिये है और जिनका व्यापक प्रचार करने के लिये वह अत्यधिक व्यग्र है, अनेक प्रकार के साहित्यिक सस्मरणो और ऐसी ही रचनाओ से उधार मागी गई शब्दावली मे लपेट कर प्रस्तुत किये गये हैं । अन्य लोगो की रचनाओ से बड़े पैमाने पर चोरी के बाद, इन्हें पूरी तरह से उलट कर और अपनी सोवियत विरोधी रचनाओ के विविध रंगों के टुकडों से बने गद्दे पर लगाया गया है । ये बातें एब्राम टेरट्ज़ की साहित्यिक शैली की विशेषताए हैं, जो एक परजीवी कीडे की तरह हमारी साहित्यिक परम्परा

१२—मदाम केदरीना की व्याख्या पर डेनियल की अपनी टिप्पणी के लिए देखिए अध्याय ३ मे चौथे दिन की कार्यवाही ।

का खून धृष्टता से पी रहा है ।

एब्राम टेरट्ज का प्रबन्ध "ग्रान सोशलिस्ट रियलिज्म" उसके "दोहरे व्यक्तित्व" का स्पष्ट और विस्तृत उदाहरण है । यह उसकी घृणास्पद दुरंगी चाल का उदाहरण है क्योंकि इस प्रबन्ध में सिन्यावस्की उन सब बातो के बारे मे विष उगलता है, जिन पर उसने सोवियत संघ मे अपने साहित्यक अध्ययन प्रकाशित किये हैं ।

यह तो हुई बात "सिद्धातकार" सिन्यावस्की के बारे मे । अब आइए, हम यह देखें कि वह जिस प्रकार अपने सिद्धातो को—यदि इस शब्द का प्रयोग किया जा सकता है तो, साहित्य मे, व्यवहार रूप मे, मूर्त करता है । इस समय मेरे सामने एब्राम टेरट्ज का कहानी सग्रह फैंटास्टिक स्टोरीज रखा हुआ है, जो सोवियत जीवन के दैनिक जीवन के बारे मे है । कहानिया पाठक को कहा "पहुंचाती" है ? हमारी आखों के समक्ष किस प्रकार का ससार उपस्थित होता है ? "एट दि सर्कस" शीर्षक कहानी मे हमारे सामने चारो ओर अत्याचारो की एक विविध टोली मौजूद है, जो अपनी पाप की कमाई को एक रैस्टोरेंट मे शराबखोरी मे उडा रही है और मास्को के पुराने जमाने के व्यापारियो की तरह वैश्याओ पर पैसा बहा रही है । "टेनेंटस" शीर्षक कहानी स्वय को विभिन्न रूपो मे बदल लेने वाले, जादूगर-निया, जल-प्रेत और सब प्रकार के भूतप्रेत मौजूद है, जो पीने के पानी के नलो के सहारे, शहर मे घुस आये हैं और एक सामूहिक फ्लैट[13] मे कटु शत्रुता की स्थिति मे रह रहे हैं । "दि ग्राइसिकल" कहानी एक ऐसे व्यक्ति के बारे मे है, जिसमे अनचाहे ही भविष्य कथन की क्षमता आ गई है और जिसे सुरक्षा सेवा अपनी नौकरी में रखती है और जो एक मूर्ख कर्नल तारासोव के साथ मिल कर, इतिहास के सुधार का प्रयास करता है, जिसका अर्थ संसार के विरुद्ध कम्युनिस्ट आक्रमण की योजनाए तैयार करना है । इस अत्यधिक लम्बी और भ्राति-पूर्ण कहानी का यही सार है, जो एक ऐसे महामानव के असफलतापूर्ण अभियानों के बारे मे है, जो पहले से ही भविष्य मे होने वाली प्रत्येक बात को देख पाने की तो क्षमता रखता है, लेकिन जिसमे भविष्य की किसी भी बात को बदलने की, स्वय अपने अन्त को भी बदलने की, क्षमता नही है । मनुष्यो के बीच सदा कायम रहने वाले पारस्परिक विरोध के "विचार" को कहानी के माध्यम से दर्शाने के लिये "दि ग्राइसीकिल" की रचना हुई ।

लेकिन चाहे आप को यह सब बातें कितनी भी विचित्र क्यों न लगें, लेकिन निरन्तर आप के मन मे यह भाव रहता है कि—यद्यपि आपने ऐसी निन्दनीय द्वेषपूर्ण भावना नही देखी, यद्यपि ऐसी भयकर कुटिलता का परिचय नही पाया—आप इन कहानियों के ढाचे, शैली और विषय वस्तु की प्रमुख दिशाओ से परिचित हो गये हैं । पददलित, कटुता से भरे और अपमानित लोगों की, गन्दगी मे भरी झोपड़ियों के सामने से गुजरने से पहले ही आप को दि स्लम्स आफ सैंट पीटर्सबर्ग[14] का स्मरण हो आता है । स्वय एब्राम टेरट्ज और उनके

१३—सामूहिक फ्लैटो का यह विवरण सही नहीं । रूस मे यह सामान्य स्तर के फ्लैट होते हैं जहां रसोई और गुसलखाने सांझे होते है ।

१४—वीसेवोलोद क्रैतोव्स्की (१८४०-९५) नामक एक लेखक का, जिन्हें अब प्राय पूरी तरह मे भुला दिया गया है, एक लम्बा और अतिनाटकीयतापूर्ण उपन्यास । यह

पश्चिम के प्रचारक फैंटास्टिक स्टोरीज मे सग्रहीत कहानियो का सम्बन्ध दोस्तोएवस्की के प्रभाव से जोडने के लिये शक्ति भर हर सम्भव प्रयास कर रहे हैं। आपको इन रचनाओ मे एब्राम टेरट्ज़ के इस स्वाग का, कि (वह दोस्तोएवस्की के उत्तराधिकारी हैं) उसमे पददलित और शोषित लोगो के प्रति करुणाभाव की शक्ति है, कि उसमे लोगो की आत्मा के भीतर झाक कर देखने और अत्यधिक गहराई से मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने की क्षमता है, कोई प्रमाण नही मिलता टेरट्ज़ के पास करुणा या किसी सामान्य मानवीय भावना के लिये समय नही है और वह रोग-विकृति को मनोविज्ञान का स्थान देता है। आप टेरट्ज़ के इस दावे को (कि वह दोस्तोएवस्की जैसा है) उसके सीलन से भरी गन्दी झोपडियो के सतही और बडे भद्दे ढग से दूसरे की रचनाओ से चुराये गये विवरणो के आधार पर ही देख सकते है। आप उन शारीरिक और नैतिक अन्धकूपो के द्वारा ही यह देख सकते हे, जो फैंटास्टिक स्टोरीज की कहानियो के पात्रो की चेतना की गदली धारा मे तैर रहे हैं।

ऊपर 'आन सोशलिस्ट रियलिज़्म' नामक जिस प्रबन्ध का उल्लेख किया गया है, उसमें एब्राम टेरट्ज यह घोषणा करता है कि दोस्तोएवस्की का "दृष्टिकोण इतना व्यापक था कि उन्होने अपने भीतर कट्टरपथी विचारधारा और हेत्वाभास का समन्वय किया और वे अपनी आत्मा के भीतर एक साथ कारामाजोव परिवार के सब सदस्यों—अल्योशा, मित्या, आइवन, फ्योदोर (और कुछ कहते हैं—स्मरद्याकोव को भी) को समाहित कर सके और वस्तुत यह कहना असम्भव है कि उनके भीतर इनमें से सब से अधिक किस का हिस्सा है।" जहा तक स्वय टेरट्ज़ का सम्बन्ध है, जिस किसी ने भी उसकी रचनाए पढी है, उसे यह स्पष्ट है कि टेरट्ज़ की आत्मा मे स्मरद्याकोव ही व्यापक रूप से छाया हुआ है। यदि दोस्तोएवस्की स्मरद्याकोव की सृष्टि न करते और उसके व्यक्तित्व मे मानव-आत्मा को भ्रष्ट करने वाले सब लोगो के प्रति अपनी पूर्ण घृणा को पूजीभूत न करते और यदि स्मरद्याकोव उपन्यासकार होता और वह अपने उपन्यासो मे "स्मारद्याकोववादी" दृष्टिकोण से लिखता तो टेरट्ज़ का एक साहित्यिक पूर्ववर्ती से सम्बन्ध जोड़ना बहुत आसान हो जाता; क्योकि नैतिक पतन की ऐसी कोइ सीमा नही है ऐसा कोई गत नही ह, जिसकी थाह पाने के लिये, स्मरद्याकोव के योग्य उत्तराधिकारी पूरा प्रयास न करे, जिसस वे सोवियत व्यक्ति के प्रत्येक मानवीय गुण को, अपन पैरो तले रौद सक और उसे दूषित कर सक। वे सावियत व्यक्ति की मित्रता, प्रेम, मातृत्व और परिवार की मानवीय भावनाओ को दूषित करने की अपनी व्यग्रता मे सब कुछ करने को तैयार हैं। केवल एक स्मरद्याकोव का आतरजित कल्पना ही मानव के पारस्परिक सम्बन्धो, ऐसी परिस्थितियो, उदाहरण के लिय,

---

उपन्यास अत्यधिक रक्त रजित और भयकर घटनाओ से पूर्ण है और इस पर यूजीन सू के उपन्यास सीक्रेटस आफ पेरिस का प्रभाव है और पिछली शताब्दी के ७ वे दशम मे यह बहुत लोकप्रिय था। इस बात की कोई सभावना दिखाई नही पड़ती कि एब्राम टेरट्ज की कहानिया पढ़ते समय किसी व्यक्ति को इस उपन्यास की याद आ सकती है।

जिनमे एक स्त्री अपने पति और अपने प्रेमी दोनों के प्रति एक साथ विश्वासघात करती है, जबकि ये दोनो भी उसके प्रति वफादार नही थे, और इसके साथ ही नैतिक आचरण के सर्वाधिक बुनियादी और आरम्भिक मानकों को विकृत कर के प्रदर्शित करने का काम, इतनी खूबी के साथ कर सकती है। और यह बात उस समय स्पष्ट रूप से सामने आती है, जब यह पात्र अपने व्यक्तिगत और गोपनीय अनुभवों का एक दूसरे को "आदान प्रदान" करते है।[15] केवल एक स्मरद्योकाव का मस्तिष्क ही, टेरट्ज के एक पात्र को मानव भ्रूणों को डिब्बा-बन्द मछलियो के रूप मे इस्तेमाल करने की प्रेरणा दे सकता है, जिसके द्वारा पृथ्वी पर आवश्यकता से अधिक आबादी का बढना रोका जा सके।[16]

सिन्यावस्की-टेरट्ज के साहित्यिक विद्रूप और संस्मरण उस समय की सब संस्थाओं, लोगो और जीवन प्रणाली के प्रति कुटिलतापूर्ण घृणा प्रदर्शित करते है, जिसमें सिन्यावस्की रहता है। और जिसे वह प्रत्येक उपलब्ध साधन के द्वारा कलंकित करने की कोशिश करता है और इसे घृणित दैत्यो के एक समुदाय के रूप मे चित्रित करता है।

जैसे ही आप उसके "सामूहिक" फ्लैट मे प्रवेश करते है, जिसमे जादूगरनियां और भेड़िए रहते हैं, आपको अपनी आंखों के सामने सोलोगुब[17] के उपन्यास के पात्र तैरते हुए दिखाई पड़ते हैं, आपको क्लाइचकोव के उपन्यास प्रैटलर आफ चेरतूखिनो के भूत-प्रेत दिखाई पड़ते है।[18] और यह है उसका एक "किरायेदार", जो काफ्का की रचनाओं से उतरा. एक पात्र

१५—स्पष्टतया इसका संकेत "दि आइसिकल" की ओर है।

१६—दि ट्रायल बिगिन्स ।

१७—फ्योदोर सोलोगुब (१८६३-१९२७) 'दि पेटी डेविल' (१९०७) उपन्यास के लेखक होने के नाते प्रसिद्ध है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र पेरेदोनोव, दोस्तोएवस्की के स्मरद्याकोव और साल्तीकोव के युदुष्का की कोटि मे, दुष्टता और नीचतापूर्ण आचरण के मूर्त रूप मे आता है।

१८—सरगेई क्लाइचकोव (१८८९ मे जन्म) रूसी कवि और गद्य लेखक हैं। उनका उपन्यास प्रैटलर आफ चेरतूखिनो (चेरतूखिन्स्की वालाकीर), १९२६, क्रांति से पहले के कृषक जीवन सम्बन्धी तीन उपन्यासो मे से एक है। ग्लेब स्ट्रूव ने अपनी पुस्तक, सोवियत रूसी साहित्य १९१७-१९५० मे लिखा है :

"समृद्ध भाषा मे लिखे ये उपन्यास अत्यधिक अलकृत और काव्यमय दिखाई पड़ते है। इनमें जन सामान्य की भाषा के दर्शन होते हैं। इनमें ग्राम्य जीवन और उनमें पात्रो का यथार्थवादी चित्रण हुआ है, जो लोकप्रिय कथानकों की उन्मुक्त कल्पना मे गहराई से पैठे हुए हैं और इनमे हर प्रकार के परिचित भूत-प्रेतो, जंगल में रहने वाले भूतो और अन्य ऐसे ही विलक्षण जीवों की भरमार है और इनके साथ ही वे किसान पात्र भी मौजूद हैं, जिनके उच्चारण और बोल चाल की अपनी विशिष्टता बहुत अच्छे ढग से चित्रित और प्रदर्शित हुई

दिखाई पड़ता है, जो एक भूत है और दरवाजा खटखटाये बिना ही दरवाजे के नीचे की एक दरार से गुजरता हुआ, कमरे मे घुटनो के बल चलता हुआ, घुस आता है : "मैं अपनी इच्छा के अनुसार इस पूरे फ्लैट मे जहा चाहूं घूम सकता हूं। मैं अगर चाहूं तो, दीवारो और छत पर भी घूम सकता हू। लेकिन मैं देहली पार कदम नही रख सकता। मेरी शारीरिक बनावट मुझे यह करने से रोकती है।" लेकिन सोलोगुब, पेरेदोनोव से घृणा करते थे, जिसकी उन्होने स्वय रचना की थी। काफ्का, मनुष्य जीवन के प्रति अपनी समस्त कुंठाओ के बावजूद, धन बटोरने वाले बुर्जुआ ससार से घृणा करते थे, जो एक मनुष्य को एक सर्प मे बदल देता है।[19] लेकिन दूसरी ओर टेरट्ज का अपने पात्रो के पतित ससार से अलग कोई अस्तित्व दिखाई नही पडता।

एक रूसी कहावत है, "यदि आप प्रत्येक व्यक्ति से एक-एक धागा जुटाये तो आप एक नगे व्यक्ति के लिये एक कमीज तैयार कर सकते है।" काफ्का की रचनाओ से सामग्री चुराने के बाद टेरट्ज़ बिना पलक झपके और बड़े यथार्थवादी तरीके से त्रोइका[20] (त्रिमूर्ति) सम्बन्धी गोगोल के प्रसिद्ध उद्धरण की घृणापूर्वक नकल प्रस्तुत करता है—और यह कार्य उसी उद्देश्य से, एक बार फिर सोवियत समाज पर प्रहार करने के लिये किया जाता है :

है। इन उपन्यासो मे सर्वोत्तम उपन्यास चेरतूखिन्स्की बालाकीर है, जिसमे क्लाइचकोव ने अपनी कल्पना को अनर्गल कर दिया है। कम्युनिस्ट समालोचको ने, कृषक स्काज- (विशिष्ट शैली मे लिखी गई कहानी) पर क्लाइचकोव के असाधारण अधिकार, रूस की लोक-कथाओ के प्रति उनकी भावनात्मकता, कथ्य को बडी चतुरता से विकसित करने की कला को स्वीकार करने के साथ-साथ उनके "परम-प्रतिक्रियावादी सेमेटिसिज़्म" की, और प्रचीन रूस को आदर्श रूप मे प्रस्तुत करने की कटु आलोचना की है। क्लाइचकोव के साहित्यिक जीवन का अन्त, साहित्य से अन्तर्धान होकर हुआ और यह विश्वास करने के कारण हैं कि एक श्रम शिविर मे उनकी मृत्यु हुई।"

१६—ये सकेत काफ्का की रचना "मेटामॉरफीसिस" की ओर है, जिसका नायक एक कीड़े से बदल जाता है। सोलोगुब और काफ्का से सिन्यावस्की की तुलना करने मे, केदरीना पर्याप्त चतुरता नही दिखा पायी। सोवियत समालोचको ने कभी भी इन लेखको की प्रशसा नही की है और हाल तक काफ्का का उल्लेख केवल घृणापूर्वक ही किया जाता था। उसकी कुछ रचनाए हाल मे सोवियत सघ मे पहली बार प्रकाशित हुई है।

२०—यह उद्धरण "डेड सोल्स", के प्रथम खण्ड के अन्त मे दिया गया है और यह प्रसिद्ध गीतात्मक वर्णन है, जिसमे गोगोल, रूस की तुलना एक तीन घोड़ो वाली गाडी से करता है, जो बडी तेज़ी से एक अज्ञात दिशा मे आगे बढती जाती है। दि आइसिक्ल एण्ड अदर स्टोरीज, पृष्ठ ४४—५।

"रेलगाडी चिडियाओ जैसे पखो वाली रेलगाड़ी ! किसने तुम्हारा आविष्कार किया! अन्य किसी ने नही, उस तीव्र बुद्धि वाली जाति के अलावा अन्य कौन तुम्हे जन्म दे सकता था ! यद्यपि तुम्हारा जन्मदाता तुला या यारोस्लावल का कोई कुशल कारीगर नही था, वल्कि धूर्त अंग्रेज स्टीफेंसन था, ऐसा वे कहते हैं, उसने ही तुम्हे अच्छे कार्यों के लिये बनाया। चाहे कुछ भी हो, तुम हमारे विस्तृत रूसी मैदानो के लिये सर्वथा उपयुक्त हो और तुम ऊची पहाड़ियो पर चढ़ती जाती हो और फिर नीचे घाटियो मे उतरती हो, टेलीग्राफ के खम्वों के पास से तेजी से गुजरती हो, अब तुम्हारी गति तेज और तेज होती जाती हैं और तुम्हारी रफ्तार उस वक्त तक वढती रहती है, जव तक सिर चक्कर खाने लगता है और आंखो मे दर्द होने लगता है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति और गहराई से और नजदीक से देखे तो तुम पहियो पर सवार एक चूल्हे से अधिक कुछ नही हो या किसान का एक ऐसा समोवर हो, जिस मे कई डिब्बे जुड़े हुए हो ? पहली नजर मे यह गाड़ी एक क्रुद्ध जीव जैसी दिखाई पड़ती है, लेकिन यह वस्तुतः उदार और सहृदयता पूर्ण है। यह तुम्हारी इच्छा के अनुसार किसी भी पहाडी के ऊपर हाफती हुई और भाप के गुब्बार छोडती हुई, ऊपर चढती जाती है, वीच-बीच मे यह अपना असतोष भी प्रकट करती जाती है, मानो चेतावनी दे रही हो, लेकिन जब यह कानो को वेधने वाली, किसी की परवाह न करने वाली, सीटी वजाती है, तो आप समझ जाते हैं कि यदि आप इसके नीचे पिस कर एक दम चिपटा नही हो जाना चाहते तो सावधान रहना वेहतर होगा।"

टेनेन्ट्स' कहानी के विभिन्न रूपों मे बदल जाने वाले जीवो के बारे मे जब एब्राम टेरट्ज यह कहता है, तो उसके साथ सहमत होना पड़ता है . "नही.. आप को हमारे किरायेदारों में एक भी जीवित व्यक्ति नही मिलेगा।" हां, यह सही है कि एब्राम टेरट्ज जिस जीवन को चित्रित करने का दावा करता है, उससे एक भी व्यक्ति नही लिया गया है—ये सव व्यक्ति अन्य लोगों की पुस्तको से लिये गये है और इनका अन्य युगों से सम्वन्ध है। और इतना ही नही, ये अन्य अन्य देशो के जीवन से भी है। इन सव पात्रो को इन सब घटनाओ को, इसलिए उधार लिया गया है, जिससे इसका लेखक अपने विलक्षण टेरट्जवादी तरीके से, प्रत्येक सोवियत वस्तु मानवीयतापूर्ण प्रत्येक वस्तु को, विकृत कर सके, दूषित कर सके और उस पर कीचड उछाल सके और इसके साथ ही उन स्रोतो पर भी कीचड़ उछाल सके, जिन से इन्हे उधार लिया गया है।

ऐसे स्थलो पर भी जहा टेरट्ज की विषय-वस्तु अत्यधिक कल्पना पर आधारित नही है, लेकिन जहा यह सामान्य जीवन से संवन्धित दिखाई पड़ती है (जैसा कि दि ट्रायल बिगिन्स मे है), कहानी का विकास, निर्माण और जिस प्रकार विभिन्न पक्षो के समर्थक एक दूसरे से नफरत के लिये सम्बद्ध रहते है, ये सब घटनाए अत्यधिक विविध साधनो से उधार ली गई है, जिसमे वह साहित्य भी शामिल है, जिसे हमारे देश मे भुला दिया गया है—घटिया किस्म

के लघु उपन्यास। उदाहरण के लिये, इसी साहित्य की भावना के अनुरूप, सरकारी वकील की पत्नी, कामुक स्त्री, मैरिना पावलोवना को प्रस्तुत किया गया है। टेरट्ज की यह रचना पढते समय हमारे समक्ष अत्यधिक स्पष्ट रूप से कूडा कर्कट साहित्य के "गौरव ग्रन्थ" आ जाते हैं, क्योकि इसमे भी उन्ही की तरह अत्यधिक उत्साह से लोगो को फसाने वाली एक स्त्री की भद्दी सुन्दरता को खुल कर प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा सम्बन्धित पात्र के परिचय के लोगो के तौर-तरीको और रीति-रिवाजो का विस्तृत विवरण भी, उन्ही के अनुरूप है और यह परिचय के लोग हैं 'ऐसे सहृदय व्यक्ति, जिनसे सभवत' आधा ससार आतकित था।[21]" इसके अलावा यह अश हमारे समक्ष प्रतिक्रिया के वर्षों और इससे पहले के युगो के लेखकों जैसे सोलोगुव और आर्तसीबाशेव[22] को खडा करते है। टेरट्ज की रचना मे इन सब का "योगदान" मौजूद है और यह सब पात्र और घटनाक्रम टेरट्ज को अनायास ही सब तथ्यो और चित्रणो की सामग्री प्रस्तुत करते है।

एक सोवियत व्यक्ति के मुख से यह जेसुइटवादी सिद्धात कहला कर कि लक्ष्य साधनो का औचित्य सिद्ध करता है, और साम्यवादी आदर्शों की शक्तिभर खिल्ली उडा कर, एब्राम टेरट्ज इस अपमानजनक और अत्यधिक सामान्य सोवियत विरोधी प्रचार को मूर्त करने का प्रयास करता है कि 'अच्छा समाजवाद" "स्वेच्छा से स्वीकार की गई गुलामी" के अलावा कुछ नही है। (दि ट्रायल विगिन्स)।

उपन्यास, दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट का उद्देश्य भी इसी मान्यता को सिद्ध करना है। यह उसकी सबसे लम्बी रचना है, जिसमे उसका "सदेश" और "साहित्यिक शैली" पूरी तरह से अभिव्यक्त हुई है। यदि अपनी पहली रचनाओ मे टेरट्ज ने हमारे आदर्शो और हमारे समाज के कुछ अगो पर ही कीचड उछालने का प्रयास किया तो यह कहा जा सकता है कि वह दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट मे साम्यवाद के निर्माण की पूरी समस्या को उसके ऐतिहासिक

२१—अर्थात् दि ट्रायल विगिन्स के खुफिया पुलिस मैन, पृष्ठ ९०।

२२—माइखेल आर्तसीबाशेव (१८७८-१९२७) एक रूसी उपन्यासकार थे और उन्हे अपने उपन्यास 'सानिन' के लिये ख्याति मिली थी और सोवियत आलोचको ने सदा इस उपन्यास को पतन और ह्रास के चरम उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास सन् १९०१ और १९०७ के बीच लिखा गया। यद्यपि इसे "अश्लील" कह कर इसकी निन्दा की गई है। लेकिन यह वैसी रचना नही है जैसी इसे मदाम केदरीना बताने का प्रयास करती है

१९०५ की क्रान्ति के बाद के वर्षो के बारे मे सोवियत आलोचक "प्रतिक्रिया के वर्ष" शब्दो का प्रयोग करते है क्योकि इस अवधि मे गुप्त क्रान्तिकारी गतिविधियो में कुछ कमी आई थी। इसके अलावा इसी अवधि मे रूस मे ससदीय लोकतत्र की बुनियादी आवश्यकताओ का विकास भी शुरू हुआ था और राजनीतिक पार्टियो को कानूनी मान्यता दी गई थी।

आधार सहित, पूरी तरह से, अपनी इच्छा के अनुसार विकृत कर के प्रस्तुत करने का प्रयास करता है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये वह एक देश मे समाजवाद की स्थापना के विचार की नकल के रूप मे, एक सुदूर नगर ल्यूबीमोव मे समाजवाद की स्थापना के असफल प्रयास का उदाहरण प्रस्तुत करता है । यह नगर एक जगल के बीच स्थित है और चारो ओर से दलदल से घिरा है, बाहरी समार की सभ्यता से अलग-थलग और बहुत दूर है । एक प्रवासी रूसी वी० फिलीपोव ने इस पुस्तक के वाशिगटन सस्करण की भूमिका मे लिखा है : "जगल के बीच स्थित ल्यूबीमोव नगर का इतिहास, हमारे समक्ष मानो एक बूंद के रूप मे पूरे विशाल कम्युनिस्ट संसार के इतिहास को, विशेष रूप से सोवियत संघ के इतिहास को प्रस्तुत करता है । लेकिन यह साल्तीकोव-शचेद्रिन का हिस्ट्री आफ दि टाउन आफ ग्लूपोव नही है । साल्तीकोव का यह उपन्यास अत्यधिक क्रोध से लिखा गया, सकारात्मकवादी व्यग्य चित्रण है, यह पूरी तरह से यथार्थवादी और नीरस है, और यह स्थिति की सतह को वेध कर गहराई मे नही पहुंचता ।" वह आगे कहता है, "टेरट्ज का ल्यूबीमोव अधिक सामयिक और अधिक गहरा है......" वस्तुत' ! टेरट्ज का यह उपन्यास इस कारण से अधिक सामयिक है, क्यों कि उसने शचेद्रिन की रचना की बाहरी रूप रेखा को, उसकी अत्यधिक काल्पनिक अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन शैली को ही लिया है और इसमे उसने ओकुरोव[२३] से उधार लेकर कुछ रंग मिलाये हैं, लेकिन इस पूरी खिचडी के मुख्य अश, जिनका उद्देश्य क्षुद्र बुर्जुआ वर्ग की घटिया अभिरुचि को ही तृप्त करना है, जाम्यातिन के सग्रह टेल्सफ्राम प्रोविन्शयल लाइफ[२४] से चुराये गये हैं । जगल के बीच स्थित इस छोटे नगर का चित्रण करने के लिये लेखक ने तीसरे दशक में प्रकाशित सोवियत साहित्य के कुछ ग्रन्थो से भी अश चुराये है, जिसमे एन.ई.पी. युग के रूस का चित्रण है और जिस मे "अलकृत" गद्य[२५] में जो शाब्दिक चालाकिया बरती जाती हैं, उनका भी खूब उपयोग किया गया है ।

२३—ओकुरोव एक प्रान्तीय नगर का काल्पनिक नाम है, जिसका मैक्सिम गोर्की की कुछ कहानियो मे वर्णन आया है ।

२४—ईवजेनी जाम्यातिन (१८८४-१९३७) एक रूसी लेखक हैं, जिनसे पश्चिम के पाठक उनके उपन्यास "वी" के माध्यम से सर्वाधिक परिचित हैं । यह उपन्यास हक्सले के ब्रेव न्यू वर्ल्ड और ओरवेल के १९८४ की तरह ही रामराज्य की कल्पना का विरोधी है । यह उपन्यास केवल विदेशो मे ही प्रकाशित हुआ (यह इगलैंड मे १९२४ मे छपा) और बाद मे जाम्यातिन को जिस तरह सताया गया उसके कारण वे १९३१ मे रूस से चले आये और पेरिस मे बस गये, जहा उनकी मृत्यु हुई । उनका कहानी सग्रह टेल्स फ्रान प्रोविंशियल लाइफ यूयेजदनोए १९१३ मे प्रकाशित हुआ और इसमें रूस के प्रान्तों के आदिमकाल जैसे जीवन पर व्यग्य किया गया है ।

२५—"अलकृत" शब्द का प्रयोग कुछ सजी सवरी, और अत्यधिक विशिष्ट शैली में लिखी गई भाषा के लिये किया जाता है और एलैक्से रैमीजोव, आन्द्रे बेली और कुछ

टेरट्ज़ को इस बात से कोई लज्जा नही है कि उसने जिन शैलियो, चित्रो और कथानकों को चुराया है, वे एक दम भिन्न, वस्तुत. विपरीत विचारधारा सम्बन्धी और कलात्मक उद्देश्यो के लिये कल्पित किये गये थे और उन्होने पूरी तरह से विरोधी सामाजिक लक्ष्यों की सेवा की थी। अत्यधिक धृष्टता की भावना से (वाशिंगटन मे उन्हे इस बात का कभी पता नही चलेगा और यदि उन्हे पता चला भी तो वे इसकी कोई परवाह नही करेंगे।) इस दुस्साहसी साहित्यिक चोर ने, इन सब वस्तुओ को पीसा, एक साथ मिलाया, इनमे अधुनातम पश्चिमी आधुनिकतावाद की कुछ चाशनी दी, रेमीजोव[26] से ले कर चुटकी भर मिर्च डाली और अपने स्मरद्याकोववादी छनने मे से छान कर, उसने इसे अपने ग्राहको और प्रत्येक सोवियत वस्तु के प्रति अपनी असीम घृणा की आवश्यकताओ के अनुरूप बना लिया।

भूतपूर्व जमीदार प्रोफेरान्सोव की रहस्यात्मक पुस्तक "दि साइकिक मैगनेट" पढने के बाद और इसमे अपनी आवश्यकता और भलाई के लिये अत्यधिक सामग्री उपलब्ध करने के बाद साइकिल मिस्त्री तिखोमिरोव मे, लोगो को सम्मोहित करने की क्षमता आ जाती है और वह अपने नगर की कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओ से सत्ता छीन लेता है। फिर उसी सम्मोहन के तरीके से, तिखोमिरोव सब नागरिकों को, जिनमे दूधमुहे बच्चे भी शामिल हैं, इस बात के लिये राजी कर लेता है कि वे उसे अपना "जार" बनाना चाहते हैं। और वह एक स्थानीय कुलटा, सेराफीमा पेत्रोवना से अपने विवाह का समारोह मनाता है और फिर उसी सम्मोहन के तरीके से पास की नदी के पानी को शैम्पेन मे बदल देता है।

(दूसरो की रचनाओ से चोरी करने मे चतुर एक लेखक की नज़र से, बाइबिल के गोस्पेल भी नही बचे)। दूसरो को सम्मोहित करने की इसी क्षमता के द्वारा तिखोमिरोव खनिज मिले पानी को शुद्ध शराब मे बदल देता है, और सडी-गली चीज़ो को खाने के स्वादिष्ट व्यजनो मे। प्रत्येक व्यक्ति इस बात पर विश्वास करता है—वे व्यंजन खाते है, शराब पीते हैं, और इस अपने नव-प्राप्त चमत्कारी पुरुष की प्रशसा करते हैं। लेकिन केवल कुत्तो को ही धोखा देने में सफलता नही मिलती। ये कुत्ते चमत्कारी स्वादिष्ट व्यजनो को खाने को तैयार नही है।

इस प्रकार एक जमीदार की पुस्तक को, अपना मार्गदर्शक बना कर, एक अनधिकृत रूप से सत्ता हथियाने वाला व्यक्ति ल्यूबीमोव पर शासन करता है। इसके नागरिको को सम्मोहन

आरम्भिक सोवियत लेखक जैसे बोरिस पिलन्याक इस अलकृत भाषा शैली में लिखते थे। यह एक ऐसी शैली है, जिसका समारम्भ गोगोल और लेसकोव से माना जाता है।

२६—इलैंग्जे रैमीजोव (१८७७-१९५७) एक रूसी उपन्यासकार थे और जो अपनी विलक्षण शैली और रूस की लोक कथाओ के विशेष उपयोग के लिये विख्यात थे। यद्यपि वे १९२१ के बाद रूस छोड कर चले गये थे लेकिन उनकी रचनाओ मे आरम्भिक सोवियत गद्य पर पर्याप्त प्रभाव डाला और वे "अलकृत" भाषा शैली का प्रयोग करने वालो मे अपना विशिष्ट स्थान रखते थे।

क्रिया के द्वारा इस बात का विश्वास दिला देता है कि वे उस समय तक निरन्तर अपनी इच्छा से काम करना चाहते हैं, जब तक वे पस्त हो कर गिर न जाये और इसके बदले उन्हे केवल कुछ मिलता ही नही, बल्कि उसे भी त्याग देते है जो पहले उनके पास था। महामानव तिखोमिरोव, अपने पिट्ठू और इतिहासकार (एक "भूतपूर्व पादरी" और जमीदार प्रोफेरान्तोव का वंशज, जिसे स्वय तिखोमिरोव का एक सभावित पूर्वज बनाया जाता है) अपने रहस्यमय शासक और स्वामी की इच्छाओं को आंख बन्द कर पूरा करता है। अनधिकृत रूप से सत्ता छीनने वाला तिखोमिरोव, लोगो के विश्वास का अनुचित लाभ उठाते हुए, जिसके वह योग्य नही था, प्रत्येक कार्य स्वय अपनी इच्छा के अनुसार करता है—जिसमे "मास्को से" भेजे गये एक दण्ड देने वाले दल के विरुद्ध नगर की रक्षा भी शामिल है। इस दल को पर्यटको की एक टोली के रूप मे छिपा कर भेजा गया था। अन्तत: उसकी जादू भरी शक्ति मे ह्रास शुरू होता है और अपनी इच्छा के विरुद्ध उसे एक स्त्री को एक झाड़ू पर सवार कर आकाश मे उड़ाने का प्रदर्शन करने के लिये तैयार होना पडता है, लेकिन उसकी जादूभरी शक्ति उस क्षण उसका साथ नही देती, जब उसे इसकी आवश्यकता शत्रु के आक्रमण को विफल करने के लिये होती है। तिखोमिरोव की तानाशाही का अन्त हो जाता है। बोरिस फिलीपोव बडे सतोष से यह कहता है कि "जादू भरा भौतिकतावादी स्वाग समाप्त हो गया है, सम्मोहन शक्ति के द्वारा सुखसमृद्धि और आनन्द की भावना से पूरित नगर ल्यूबीमोव छिन्न-भिन्न हो गया है।" लेकिन वह इसके साथ ही इस बात पर खेद प्रकट करता है कि "पूरे साम्राज्य मे" अभी तक समाजवादी जीवन व्यवस्था समाप्त नही हुई है। अत अब केवल "गुप्त और अर्द्ध-प्रतिबधित साहित्य" की "शक्ति" पर ही आशा लगाई जा सकती है और इसी प्रकार तथाकथित टेरट्ज सिन्यावस्की पर भी।

एब्राम टेरट्ज के "ग्राहको" द्वारा प्रदत्त, विदेशी सोवियत विरोधी प्रचार के विकृत के ढाचे मे ठीक बैठती हुई, उसकी विकृत रचनाए बुनियादी तौर पर दूसरो की रचनाओ पर आधारित, सैद्धातिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से पूरी तरह दरिद्र हैं। इसके बावजूद इन रचनाओ मे कुछ ऐसा भी है, जो नि सदेह केवल उसका ही है, जो "उसे अत्यधिक प्रिय है।" इसके अन्तर्गत, सबसे पहले, अश्लीलता आती है और एब्राम टेरट्ज के सर्वाधिक अश्लील अशो के समक्ष आर्तसीबाशेव का अश्लील साहित्य, स्कूली बच्चो के लिए तैयार साहित्य जैसा दिखाई पडता है। दूसरा स्थान, निरन्तर मौजूद यहूदी विरोध का है, जिसे उत्तेजनात्मक रूप से छद्म नाम "एब्राम टेरट्ज" के चुनाव मे देखा जा सकता है। उस की "रचनाओं" मे सर्वत्र—और यह बात बिना किसी योजना के सम्भव नही है—ऐसी छोटी-छोटी उमदा टिप्पणिया देखी जा सकती हैं—"सब यहूदियो की तरह ढीठ और ईमानदार अपने काम मे जुटा हुआ" 'लेकिन यह सोलोमन मोइसेयविच किस प्रकार रूस के राष्ट्रीय चरित्र को समझ सकता है[28]?" आदि। इन सब बातो से एक विशेष प्रकार की

२८ · सिन्यावस्की और दानियल ने मुकदमे की सुनवाई के दौरान गवाह फेदरीना द्वारा लगाये गये यहूदी विरोध के आरोप का उत्तर दिया है। यह बात इस दृष्टि से विशेष

"बू" आती है। इस "गुलदस्ते" की कभी नष्ट न होने वाली और उत्तेजना फैलाने वाली गन्ध को, व्यग्य की अनेक परते समाप्त करने मे सफल नही हुई हैं, जिनका उद्देश्य केवल यह रहा है कि आवश्यकता पडने पर लेखक यह कह सके कि उसने जो कुछ लिखा है, उसमे वह स्वय "तटस्थ" है।

तीसरा और अन्तिम स्थान निरन्तर दोहराई जाने वाली इस बात का है और जो उसकी सब कहानियो मे दिखाई पडती है कि लेखक को गिरफ्तारी का भय और इसकी अनिवार्यता का पूरा आभास है। इस विषय पर एक पूरी कहानी ही है—"यू एण्ड आई" —जिसमे गिरफ्तारी के पागलपन भरे भय के कारण "नायक" आत्महत्या कर लेता है। सभवतः एब्राम टेरट्ज़ की ऐसी एक भी रचना नही है, जिसमे ल्यूवीमोव के इतिहासकार द्वारा बहुत समय पहले मृत जमीदार प्रोफेरानसोव को सम्बोधित कर किये गये, भयग्रस्त और अत्यधिक गीतात्मक प्रलापो जैसे उद्धरण मौजूद-न हो। प्रसगवश, इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सिन्यावस्की अपनी रचनाओ के सोवियत विरोधी स्वरूप से भली भाति परिचित था '

"मैं इस भय से निरन्तर कापता रहता हू कि वे एक दिन मेरे घर की तलाशी ले सकते हैं और उस पाण्डुलिपि को फर्श के तख्तो के नीचे से निकाल सकते हैं और इसके वाद वे हम मे से प्रत्येक को चुन-चुन कर पकड लेंगे, सुनो प्रोफेसर तुम ने मेरे साथ मिल कर यह पुस्तक लिखी है क्या तुम कुछ समय के लिये इस पुस्तक को छिपा लोगे। फिलहाल इसे तुम्हारी किसी अभेद्य तिजौरी मे रखना ही होगा··· · तुम्हारे पास कोई गुप्त स्थान है, छिपाने के लिये किसी प्रकार की जगह है। कुछ समय के लिये इसे वही रख दो। क्या यह तुम्हारी भी नही है[२८] ?"

हा, टेरट्ज़ और अर्जहक की रचनाएं "पुराने ससार की हैं, जैसा कि हम अक्सर जानते ही हैं और यही पुरानी दुनिया उनकी पाण्डुलिपियो को सहर्ष स्वीकार और प्रकाशित करती है और उच्च स्वर मे सब लोगो के सुनने के लिये यह घोषणा करती हैं कि वे इन लोगो पर यह अनुग्रह क्यो कर रही है। एसप्रैस्सो पत्रिका मे एक लेखक ने लिखा है, "सिन्यावस्की-टेरट्ज़ का बुद्धिवादी चित्र, उसके नाम की तरह ही दोमुहा है। एक साहित्यिक इतिहासकार और समालोचक के रूप मे खुली गतिविधिया ······ ··और विदेशो मे गुप्त कहानियो का प्रकाशन।"

महत्व रखती है क्योंकि केदरीना ने इस आरोप को रूस के उदारतावादी बुद्धिवादियो की आखो मे सिन्यावस्की को गिराने का सर्वोत्तम साधक समझा जो ज़ार के शासनकाल की तरह ही आज भी यहूदी विरोध से घृणा करते हैं और इस कारण से यह घृणा और भी अधिक वढ गई है कि यहूदी विरोध मे शासन की साठगाठ है।

२८—यह उद्धरण दि मेकपीस एक्सपेरिमेट का अन्तिम पैरा है।

हमे इन "आन्तरिक प्रवासियो" के साहित्यिक चित्रो को पूर्ण करने के लिये इस विस्तृत विवरण मे और कुछ जोडने की आवश्यकता नही। स्मरद्याकोव के उत्तराधिकारियो ने, जिन्हें हम अपने बीच बर्दाश्त नही कर सकते, विदेशो मे प्रतिक्रियावादी शक्तियो मे अपने प्रशंसक, प्रकाशक और भक्त पा लिये हैं, जिन्होने अब तक "सोवियत साहित्यिक गुप्त दलों," का गठन करने की अपनी आशा को नही त्यागा है। भद्र पुरुषों! आपकी आशाएं कभी भी पूरी नही हो सकती।

अप्रकाशित विरोधपत्र

जो चार दस्तावेज आगे के पृष्ठो मे दिये गये है, उनसे इरेमिन और केदरीना के लेखों के प्रति उदारतावादी बुद्धिवादियों की प्रतिक्रिया प्रकट होती है। ये पत्र कभी प्रकाशित नही हुए। यह निश्चित है कि इजवेस्तिया और साहित्यिक गजट को ऐसे ही अन्य पत्र भी प्राप्त हुए हैं, जो उन्होने प्रकाशित नही किए। इजवेस्तिया के १७ जनवरी के अंक के एक अग्र-लेख में यह कहा गया कि उसे "अनेक पत्र मिल रहे हैं, जिनमे इस मुकदमे के बारे मे टिप्पणिया की गई हैं। लेकिन इजवेस्तिया ने केवल तीन पत्र ही प्रकाशित किए और इन तीनो पत्रो मे सिन्यावस्की और डेनियल की भर्त्सना की गई थी ." दोनो देशद्रोहियो पर मुकदमा चलाओ "सुलेमान रुस्तम, अजरबेजान का जनवादी कवि" : "इन नैतिक राक्षसो की गन्दी रचनाएं केवल जुगुप्सा ही जगा सकती हैं" (ए० ल्युदमीलिन, रूसी-सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य का जनवादी कलाकार और उसके अन्य दो साथी); "हम आशा करते हैं कि सोवियत न्याय इन अपराधियो को उचित दण्ड देगा "(जैड गुलवित, कृषि वैज्ञानिक")

"इजवेस्तिया" को वाई० आई० लेविन का पत्र

प्रिय सम्पादक जी,

डी० इरेमिन द्वारा लिखित "दो सिद्धातघाती लेखक" शीर्षक लेख, जो आपके समाचारपत्र मे प्रकाशित हुआ, अत्यधिक कष्टप्रद और आश्चर्य मे डाल देने वाला है। इस लेख मे हमारे सास्कृतिक इतिहास की खेदजनक घटनाओ का फिर स्मरण किया गया है। जैसे जे० ब्रोदस्की के विरुद्ध हाल में चलाया गया मुकदमा, बोरिस पास्तरनेक को सताये जाने का मामला और इससे पहले अखमातोवा जोशचेन्को के साथ ऐसा ही दुर्व्यवहार, "सार्वभौमवादियो" के विरुद्ध अभियान और, एक भिन्न क्षेत्र मे वासखनिल[1] का अधिवेशन।

१—"सार्वभौमवादियो के विरुद्ध १९४८-९ मे अभियान शुरू किया गया और इसके अन्तर्गत अनेक बुद्धिवादियों, विशेष रूप से यहूदी जाति के बुद्धिवादियो को गिरफ्तार किया गया और सताया गया। वासखनिल (वोसेसोयुजनाया अकादेमिया सेल्सकारोजये-स्तवेनिख नौक आइनेमी लेनिना) लेनिन कृषि विज्ञान अकादमी है। इसके एक अधिवेशन मे १९४८ मे, लाइसेन्को ने कट्टरपथी "प्रजनन विज्ञानियो की निन्दा की (उसने इन वैज्ञानिको को।" विस्मनवादी, मोगनेवादी बताया) और यह दावा किया कि स्वय उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो को स्तालिन का व्यक्तिगत समर्थन प्राप्त है। अनेक सोवियत

यदि और पीछे जाया जाये तो मुझे मैंडलशर्तेंग, वावेल, आई० कातायेव और अन्य अनेक व्यक्तियो की मृत्यु का स्मरण हो जाता है। यहा इरेमिन के लेख मे, जिसकी शब्दावली विचारक्रम, पाठकों के नागरिक होने के दायित्वो का उद्‌बोधन का उन्हे भड़काने के प्रयास से हम बहुत परिचित है और हमे १९३७, १९४६ से लेकर १९४९ तक की अवधि और फिर १९५३ के बाद के वर्षों का अच्छी तरह स्मरण है।

इसके बावजूद इरेमिन ने इन लेखको का अपराध सिद्ध करने का जो तरीका अपनाया है, वह भ्राति पैदा करने वाला है अथवा झूठी मान्यताओं पर जानबूझ कर आधारित किया गया है। वह अपने मुख्य तर्कों को टेरटज और अर्जेहक की रचनाओ के उद्धरणो पर आधारित करता है। सदर्भ से अलग हटाकर दिये गये उद्धरण कभी भी पूरी तस्वीर प्रस्तुत नही कर सकते, यह बात सर्वमान्य सत्य है, इसकी जानकारी तो स्कूल मे पढने वाले प्रत्येक बच्चे तक को होती है। इसके बावजूद इरेमिन छिटपुट अंशो के उद्धरण देता है। वह पात्रो के कथन को या अधिक से अधिक वर्णनकार के कथन को, सीधा उसी रूप मे, एक उद्धरण के रूप में प्रस्तुत करता है। कहानी के किसी भी पात्र या पात्रो को (यहा तक कि वर्णनकार को भी) स्वय लेखक का प्रतिरूप बताना, उनके विचारों को लेखक के विचार बताना एक ऐसी बुनियादी गलती है, जो पूरी तरह हास्यास्पद है (आप इसके उदाहरण स्वरूप दोस्तोएवस्की का उपन्यास "अण्डरग्राउंड मैन या स्वीडन के प्रगतिशील लेखक सारा लिडमन का उपन्यास "माइ मन एण्ड आई" देख सकते है, जिसमे वर्णनकार एक जातीय भेदभाव मे उन्माद की सीमा तक विश्वास रखने वाला व्यक्ति है): यह भी एक ऐसा तथ्य है जिससे स्कूल मे पढने वाला प्रत्येक बच्चा परिचित है और जब यह गलती लेखक डी० इरेमिन करता है तो यह और भी अधिक अक्षम्य हो जाती है। इरेमिन का "तरीका" अपनाकर किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध कुछ भी सिद्ध करना आसान है (ओनेमिन से उद्धरण देकर यह सिद्ध किया जा सकता है कि पुश्किन, अपने* चाचा की मृत्यु की प्रतीक्षा की अवधि मे स्त्रियो की टागो और उरोजो की कामुकतापूर्ण कल्पनाओ मे खोया रहता है और इसी प्रकार 'ह्वाइट फ्लोज दि दोन' से ऐसे उद्धरण दिये जा सकते हैं, जिन्हे "सोवियत विरोधी" कहा जा सकता है और ये उद्धरण ऐसे हो सकते है, जिन्हे देखकर रेडियो फ्री यूरोप (स्वतंत्र यूरोप रेडियो) ईर्ष्या मे भर सकता है।

आइए हम स्वयं इस लेख पर ही विचार करें—"उपन्यास", "कहानियां" जैसे शब्दो को उद्धरण चिन्हो मे हर बार देकर, इरेमिन यह कहना और दर्शाना चाहता है कि ये रचनाए बिल्कुल बेकार और कूटाकर्कट हैं और इन्हें लेखको को सोवियत शासन के प्रति घृणा से ही प्रेरणा मिली है। मै बाद मे इस "घृणा" की चर्चा करूगा। फिलहाल मैं यही कहना चाहता हूं कि इन लेखकों की शैली के निरपेक्ष विश्लेषण मे यह स्पष्ट हो जाता है

जीवविज्ञानियों को गिरफ्तार कर लिया गया और इन वैज्ञानिको को सताने के लिये जो अभियान चला उसके दौरान उन्हें उनके पदों से हटा दिया गया।

कि ये रचनाए चाहे अन्य कुछ भी क्यों न हो, पर साहित्य की प्रतिभासम्पन्न सम्पदा हैं। कोई व्यक्ति चाहे तो इन रचनाओ के साहित्यिक महत्व अथवा खामियो के बारे मे विचार और तर्क कर सकता है, कोई व्यक्ति शैली को पसन्द या नापसन्द कर सकता है। लेकिन यह बात निर्विवाद है कि ये रचनाएं साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं और इनके लेखक प्रतिभासम्पन्न है। टेरटज का रचना क्षेत्र बडा व्यापक है—दि ट्रायल विगिन्स के यथार्थवादी गद्य से लेकर 'दि मेकपीस एक्सपेरिमेट' के अलकृत और अपनी विशिष्ट प्रकार की वर्णन शैली इस बात को सिद्ध करती है, और लेखक की बहुमुखी प्रतिभा उनकी विशिष्ट योग्यता का लक्षण है। अर्जेहक की प्रमुख रचनाओ, "अटोनमेट" और "दिस इज मास्को स्पीकिंग" की शैली, नवीन सोवियत साहित्य की धारा की विशिष्ट शैली है। इस शैली के प्रमुख लेखक वी० अक्समोनोव, ए० कुजनित्सोव[२] आदि हैं और अर्जेहक की शैली इन लेखकों से किसी भी रूप मे हीन नही है। इसके साथ ही यह भी आभास मिलता है कि इस शैली के कारण लेखक की रचना प्रतिभा सीमित हो गई है : यह बात अटोनमेट मे प्रतीकात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के प्रयासो, अत्यधिक कुशल कहानी "हैण्ड्स" की वर्णन शैली और शुद्ध व्यग्य रचना "दि मैन फ्राम मिनाप" से प्रकट होती है।

इरेमिन के लेख मे बडे योजनाबद्ध तरीके से टेरटज और अर्जेहक की रचनाओं की कथावस्तु को गलत ढंग से पेश किया गया है। इस लेख मे इन लेखकों के "सेक्स" और मनोवैज्ञानिक विकृतियों सम्बन्धी "समस्याओ" के बारे मे अत्यधिक घृणित आकर्षण का उल्लेख किया गया है। यह सफेद झूठ है। गोर्की, शोलोखोव, बाबेल—यदि कुछ लेखकों का ही उल्लेख किया जाये (और बुकासियों, राबेलेस या डी० एच० लारेंस की चर्चा न की जाये) बडे स्पष्ट रूप से काम सम्बन्धी समस्याओ पर विचार करते है और उन्हे इसी प्रकार इतनी ही आसानी से अत्यधिक घृणित रूप से सेक्स से आक्रात कहा जा सकता है। जहा तक मनोवैज्ञानिक विकृति का सम्बन्ध है, टेरटज और अर्जेहक बहुत कम सीमा तक ही जीवन के इस पक्ष मे दिलचस्पी रखते है (टेरटज "यू० एण्ड आई" मे, अर्जेहक "अटोनमेट" मे)—और यह निश्चित है कि उनकी यह दिलचस्पी बोगोल, होफमन, बुलगाकोव (दियावोलियादा[३]) या फॉकनर से किसी भी रूप मे अधिक नहीं है और यहां मैंने उन्ही लेखको का उदाहरण दिया है, जो मुझे तुरन्त याद आ सके।

२—वासिली अक्समोनोव (१९३२ मे जन्म)। एक लोकप्रिय युवक उपन्यासकार और कहानीकार। अनातोली कुजनित्सोव (१९२९ मे जन्म)। अपने वृत्तात्मक उपन्यास बाबीयार के लिये सर्वाधिक प्रसिद्ध। यह उपन्यास १९६६ मे प्रकाशित हुआ। मुकदमे की दूसरे दिन की कारवाई मे टिप्पणी ७३ भी देखिए।

३—माइखेल बुलगाकोव (१८९१-१९४०) प्रसिद्ध सोवियत नाटककार और उपन्यासकार। अपने नाटक दि डेज आफ दि तुरबिन्स के लिये सर्वाधिक प्रसिद्ध। जब यह नाटक पहली बार १९२६ मे मच पर प्रस्तुत किया गया, तो इसकी भयंकर आलोचना हुई

"वे हमारे देश की किसी भी वस्तु को पसन्द नही करते। उनके लिये हमारे देश का कुछ भी पवित्र नही है'—यह अत्यधिक कट्टरपंथी अचारण का एक और उदाहरण है। इस दावे के समर्थन मे (उपरोक्त तरीके से ही) चेखोव और अन्य प्राचीन रूसी लेखकों सम्वन्वी दो उद्धरण दिये गये हैं—ये ऐसे उद्धरण है, जिन्हे अत्यधिक विलक्षण पाठक ही शायद स्वयं लेखकों के विचारो की अभिव्यक्ति मानने की गलती कर सके। इस लेख मे बडी सावधानी से ऐसे उद्धरणो की उपेक्षा की गई है जैसे उदाहरण के लिये, "दिस इज मास्को स्पीकिंग" की अन्तिम पंक्तियां, जिनसे मास्को के प्रति लेखक के प्रेम की गहराई और निष्ठा प्रकट होती हैं—इसके आलावा टेरट्ज और अर्जहक की पुस्तकों मे ऐसे अनेक उद्धरण हैं।

ये "लेखक" हमारी सोवियत सेना के विरुद्ध प्रवाद फैलाना चाहते हैं और उसकी निन्दा करने का प्रयास करते हैं,—यह कथन भी एक दम झूठ है। टेरट्ज या अर्जहक की किसी भी रचना, किसी भी कथन मे, ऐसी कोई वात नही।

इरेमिन ने टेरट्ज के उपन्यास "दि मेकपीस एक्सपेरिमेट" के कथानक को गलत ढंग से पेश किया है "बस देखिए सिन्यावस्की-टेरट्ज किस प्रकार साम्यवादी "प्रयोग" की असफलता और ल्यूवीमोव मे फिर पुराने जीवनक्रम के समारम्भ पर कैसी प्रसन्नता प्रकट करता है" लेकिन इस वात का जिक्र तक नही किया गया कि यह "पुराना जीवनक्रम" स्वयं हमारी वर्तमान सोवियत व्यवस्था के अलावा अन्य कुछ नही है। वस्तुत इस कहानी मे यह कहने का प्रयास किया गया है कि केवल एक व्यक्ति की इच्छा के वल पर, एक आदर्श समाज की स्थापना के प्रयास असफल सिद्ध होते है। यह मेरे विचार से, इस पुस्तक का मुख्य कथ्य है : यह इच्छाशक्तिवाद आलोचना है। और मैं इस वात मे कोई भी कानून विरुद्ध वात नही पाता।

इरेमिन का कहना है कि अर्जहक की कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" मे "तथा-कथित सोवियत जीवन के भयावह दृश्य चित्रित किये गये है। इसमे व्यापक पैमाने पर हत्याकाण्ड के "विचार" के प्रति सामूहिक भक्तिभाव के व्यापक पागलपन को दर्शाया गया है और देश मे फैले आतक को चित्रित किया गया है।" यह वात भी एकदम झूठी है। इस कहानी मे कोई "भयावह" दृश्य नही है—यहा तक कि अत्यधिक काल्पनिक स्थिति के चित्रण का जो तरीका अपनाया जाता है, उसको देखते हुए भी इसमे ऐसी कोई वात नही है। सोवियत जीवन का चित्रण, यथार्थवादी तरीके से हुआ है, केवल एक व्यक्ति की हत्या होती है। इस कहानी मे कोई व्यापक पागलपन नही है, "वडे पैमाने पर हत्याकाड"

क्योंकि लेखक ने इसमे श्वेत रूसी अधिकारियो का सहानुभूति से चित्रण किया था। दिया-वोलियादा (१६२५) व्यंग्यात्मक कहानियो का एक संग्रह था और इसके प्रकाशन के समय इसकी भी बहुत निन्दा की गई थी। लेखक की हाल की रचना मास्टर एण्ड मारगेरीटा की ओर बहुत ध्यान आकृष्ट हुआ है।

नही है "आतंक" नही है—और इसी प्रकार इस कहानी मे "गन्दी रूमानियत, और अन्धाधुन्ध शराबखोरी और व्यभिचार" या "अनर्गल अनैतिकता" जैसी कोई बात नही है। इस लेख के सर्वाधिक आश्चर्य मे डालने वाले अश इसके अन्त के पैराग्राफ हैं, जिनमे यह दावा किया गया है कि टेरट्ज और अर्जेहक उन लोगो को सहायता देते है, जो शीतयुद्ध को गरम युद्ध मे बदल देना चाहते हैं, जो लोग सोवियत संघ के विरुद्ध हाथ उठाने के उन्मादपूर्ण स्वप्न को अपने मन मे संजोये हुए हैं "और यह भी कि उनका यह पुस्तके लिखने का उद्देश्य" विभिन्न राष्ट्रो के बीच शत्रुता बढाना और युद्ध का खतरा बढाना था। (एक पहले के पैराग्राफ मे इन लेखको पर "समस्त प्रगतिशील मानवता पर विष वमन करने...और इस मानवता के सामाजिक उन्नति, लोकतन्त्र और शान्ति की स्थापना के पवित्र सघर्ष पर जहर उगलने" का आरोप लगाया गया है)। ऐसे वक्तव्य, जो टेरट्ज और अर्जेहक की रचनाओं के ऊपर किसी भी रूप मे लागू नही होते, शुद्ध रूप से, द्वेषपूर्ण, गैर-जिम्मेदारी से भरे, और लोगो को भडकाने का प्रयास करने वाले मिथ्या आरोप हैं।

इरेमिन के तरीके के बारे मे एक और बात। इस लेख के अनुसार सिन्यावस्की "किसी प्रकार चालाकी से" लेखक सघ मे घुस आया। लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि हाल के वर्षों मे सिन्यावस्की को हमारे समाचारपत्रो और पत्रिकाओ मे युवा पीढी के सर्वाधिक प्रतिभासम्पन्न साहित्यिक समालोचको मे से बताकर उनकी प्रशसा की गई है और उनकी पिकासो पर लिखी पुस्तक (जिसे एक अन्य लेखक के सहयोग से लिखा गया है) की व्यापक प्रशसा हुई है।

इरेमिन ने सिन्यावस्की को एक ऐसी दुरगी चाल चलने वाले व्यक्ति के रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जो सोवियत पत्र-पत्रिकाओ मे एक बात, और ठीक इसके विपरीत दूसरी बात, विदेशो मे प्रकाशित कराता है। यह एक और झूठ है। यह आरोप सिन्यावस्की द्वारा ए० शेवतसोव के उपन्यास 'दि ब्लाइट' की समालोचना पर आधारित है। यह उपन्यास सोवियत बुद्धिवादियो के विरुद्ध एक अत्यधिक जुगुप्सापूर्ण प्रचार अभियान का अंग है। दि ब्लाइट जैसी रचनाओ के विरुद्ध सिन्यावस्की के सघर्ष और टेरट्ज की रचनाओ मे हमारे समाज के कुछ पहलुओ की आलोचना के बीच इस प्रकार स्पष्ट सम्बन्ध स्थापित होता है—इस बात से यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि सिन्यावस्की और टेरट्ज परस्पर विरोधी बाते नही कहते।

अन्त मे हम सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख करेगे: टेरट्ज और अर्जेहक की रचनाओ को "गन्दगी से भरा प्रचार" बताया गया है, यह कहा गया है कि इस साहित्य मे "हमारी मातृभूमि और हमारे देशवासियो को प्रिय प्रत्येक वस्तु" का मजाक उडाया गया है, यह दावा किया गया है कि लेखक हमारी व्यवस्था के विरुद्ध घृणा से भरे हुए हैं और उन्होने "साम्यवाद के सबसे भयकर शत्रुओ की सेवा स्वीकार कर ली है।" दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि इरेमिन यह समझता है कि टेरट्ज और अर्जेहक की रचनाएं

सोवियत विरोधी और देशभक्ति की भावना के विरुद्ध है। वह इन लेखको को हमारी व्यवस्था के शत्रु और ऐसे व्यक्ति वताता है जिन्हे अपने देश से प्रेम नही है।

जहा तक उनका देशभक्ति की भावना के विरुद्ध होने का सवाल है, मैं सबसे पहले यह कहना चाहूंगा कि एक व्यक्ति का अपने देश के प्रति प्रेम उसके लिये इतनी गहन और स्वयं अपने तक ही सीमित भावना है, जैसे किसी स्त्री या कला के प्रति प्रेम की भावना होती है। किसी भी व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति को यह कहने का अधिकार नही है : "अपनी मातृभूमि से प्यार करो।" यह कहना दूसरी वात है कि जो व्यक्ति अपने देश के प्रति उदासीन है जो इसकी भाषा, इनके लोगों, इसकी भूमि के प्रति उदासीन है—वह आध्यात्मिक दृष्टि से हीन है और वह स्वयं अपने आप पर डाका डालता हे और वह उसी व्यक्ति की तरह आध्यात्मिक दृष्टि से पंगु है, जैसे वह व्यक्ति जिसके लिये कला का कोई महत्व नही होता। लेकिन—मैं फिर दोहराता हूं कि—यह प्रेम भावना एक पूर्णत· व्यक्तिगत भावना है, जिस का विज्ञापन नही किया जाना चाहिये और जिसका जोर-शोर से प्रचार करना या जिसके वारे मे समाचारपत्रों मे लेख लिखना शोभनीय नही है। इस विषय पर जो भावना पूर्ण वातें, वढा-चढाकर कही जाती है वे जैसा कि पास्तरनेक ने कहा है, "नैतिक दृष्टि से सदिग्ध" व्यक्तियो की वातें होती हैं ? नियमत· यह वातें प्रेम के अभाव और प्रवल आत्महित की भावना से अस्तित्व को सिद्ध करती हैं। यह वात निश्चित है कि पुश्किन, छादाएव[4], लेरमोनतोव—ये ऐसे व्यक्ति है, जिन्होने कभी भी अपनी देशभक्ति का प्रदर्शन नहीं किया और जिन्होने रूस के वारे मे अनेक कटु वातें कही—वुलगारिन या वेनकेनछोर्फ[5] से कही वेहतर देशभक्त थे।

छादायेव ने लिखा : "मैंने अपनी आंखें मूंद कर अपने देश से प्रेम करना नही सीखा। मैं समझता हूं कि कोई भी व्यक्ति उस समय तक अपने देश के लिये उपयोगी नही हो सकता जब तक वह आखें खोल कर इसे पूरी तरह नही देखता······अन्धभक्ति का समय समाप्त हो चुका है······मैं समझता हूं कि हम लोगो का जन्म, कुछ अन्य लोगो के वाद इस लिए हुआ है कि हम उनसे वेहतर काम करें, हम उनकी गलतियो से वचें, हम उनकी भ्रांतियों और उनके अन्धविश्वासों से दूर रहे।" इन शब्दों को प्रतिध्वनित करना हमारे

४—प्यांत्र छादायेव (१७६४-१८५६) पुश्किन के मित्र थे, जिन्हें उनके ग्रन्थ फिलॉसाफिकल लैटर्स (१८२६-३०) के प्रकाशन के वाद, सरकारी तौर पर पागल घोषित किया गया, क्योकि उन्होने अपनी इस पुस्तक मे, रूस की स्थिति पर कडा प्रहार किया था।

५—फादेई वुलगारिन (१७८९-१८५९) उग्र राष्ट्रवादी लेखक और पत्रकार, जिसने पुश्किन और गोगोल की कटु आलोचना की और खुफिया पुलिस के समक्ष लेखकों के ऊपर अभियोग लगाये। काउंट एलैग्जेंडर वेनकैनदोर्फ, जो निकोलस प्रथम के शासनकाल में पुलिस और तीसरे विभाग (खुफिया पुलिस) के अध्यक्ष थे।

अनेक महानतम लेखकों के लिये सभव था। सिन्यावस्की और डेनियल भी इन शब्दो को दुहरा सकते है। यथार्थ की उत्साहवर्द्धक तस्वीर खीचने का एक मात्र सभव कारण अपने देश के प्रति उदासीनता है और जिसमे अपने हित की प्रबल भावना छिपी होती है। २० वां अधिवेशन और व्यक्ति पूजा की भर्त्सना ने, स्तालिन के शासन काल मे, वैधानिकता के उल्लघन के प्रति, देश की आखे खोलने से कही अधिक व्यापक और गहरा कार्य किया। इनसे यह भी प्रकट हो गया कि हमारे वर्तमान जीवन के अनेक क्षेत्रो मे बहुत सी खामिया है। आज प्रति दिन, हमारे समाचारपत्रो मे इन बातो के बारे मे लिखा जाता है और आज हमारे साहित्य मे कही अधिक बुनियादी महत्व के प्रश्न उठाये जाते है। लेकिन दुर्भाग्यवश, लिखित शब्दो के प्रति भय एक ऐसी बात है, जो व्यक्ति पूजा के युग के अनेक परिणामो मे से एक परिणाम के रूप मे आज भी कायम है। हाल के वर्षो मे अनेक विषय वर्जित विषयो की कोटि मे नही रहे और इन विषयो पर पुस्तके प्रकाशित हुई हैं। लेखकों (सृजनात्मक लेखको और पत्रकारो ने भी) ने गावो की घटनाओ, स्तालिन के शासनकाल मे भयकर शुद्धि-अभियानो आदि के बारे मे लिखा है और यह साहित्य हमारे देश की स्थिति मे सुधार करने मे बहुत अधिक सहायक हुआ है। लेकिन अनेक विषय आज भी ऐसे हैं, जिन्हे छूआ नही जा सकता—यहूदी विरोधी या स्तालिन के शासनकाल मे अपराध करने की जिम्मेदारी, जिन लोगो पर है तथा उन लोगो के बारे मे भी, जिन्होने इन अपराधो को रोकने के बारे मे कुछ नही किया (यह अर्जहक की कहानी "अटोनमेट" का विषय है) या हमारे बुद्धिवादी वर्ग के एक भाग के नैतिक पतन की समस्या (जिसका प्रश्न अर्जहक ने "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" और टेरट्ज ने "दि ट्रायल बिगिन्स" मे उठाया है, इन विषयो के अन्तर्गत आने वाले कुछ विषय है। यदि ऐसे और अन्य निषेधो को समाप्त कर दिया जाता है, तो इससे हमारे देश का हित ही होगा। ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार २० वे अधिवेशन से देश की भलाई ही हुई।

इन सब कारणो से मेरी यह मान्यता है कि टेरट्ज और अर्जहक की रचनाए, अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति प्रेम, इसके अतीत के दुर्भाग्यो के प्रति दुख और भविष्य मे इनकी पुनरावृत्ति को रोकने की इच्छा तथा इसके साथ ही इस बात के प्रति प्रबल चेतना कि आज हमारे सामने जो कठिन परिस्थितिया मौजूद है उनके लिये कौन उत्तरदायी है, आदि बातो से प्रेरित है। अत्यधिक निष्ठापूर्ण और नागरिक कर्तव्य की उच्चतम भावना से पूरित, उनका साहित्य देशभक्ति का सच्चा साहित्य है।

एक सोवियत पाठक, जिसने अधिकाशतया मात्र आशापूर्ण साहित्य ही पढ़ा है, उसे इन रचनाओ की बहुत सी बातो से आघात पहुच सकता है। आखिरकार किस व्यक्ति ने कभी सार्वजनिक हत्या दिवस की बात सुनी है? लेकिन यह भी निश्चित है कि इस बात को समझने के लिये, एक क्षण के विचार की ही आवश्यकता है कि 'यह दिवस" व्यापक रूप से प्रयुक्त, एक साहित्यिक विधा का उदाहरण भर है : इसमे पात्रो को एक अतिवादी

स्थिति में रखा गया है, जिसमें उनकी छिपी नैतिक, अच्छी और बुरी भावनाएं पूरी तरह से उद्घाटित होती हैं। (दोस्तोएवस्की ने भी इस तरीके का बारम्बार उपयोग किया।) लेकिन आखिरकार ऐसी भयावह "सोवियत विरोधी" कल्पना, हमारे दौर और युग मे, हमारे वर्तमान समाज मे, सार्वजनिक हत्या दिवस की कल्पना की क्यो? इसका कारण स्पष्टतया यह है कि यह एक व्यंग्य रचना है और यह कहना एक सर्वमान्य सत्य को दुहराना ही है कि अतिशयोक्ति का प्रयोग केवल वैध ही नही है, बल्कि यह व्यग्य रचना के लिये आवश्यक भी है। आखिरकार क्या कभी किसी ने एक ऐसा मेयर देखा है जिसके सिर मे भूसा भरा हो। लेकिन इसका उल्लेख शचेद्रिन ने किया[६] है। लेकिन इसकी तुलना मे सार्वजनिक हत्या दिवस इतना अधिक काल्पनिक नही है—कोई भी व्यक्ति सन् १६३७ या सन् १६५३ के आरम्भ के समाचारपत्रों को देखकर, यह बात समझ सकता है और क्या यह भी स्पष्ट नही है कि इस कहानी का उद्देश्य ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकना है?

क्या यह सच है कि टेरट्ज और अर्जेहक की रचनाएं सोवियत विरोधी हैं? हा, यदि किसी ऐसे विषय पर लिखना सोवियत विरोधी है, जिस पर लिखने की "अपेक्षा नही की जाती।" लेकिन इस तरीके से किसी भी बात को सोवियत विरोधी बताया जा सकता है—या अन्य किसी भी बात को कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार प्रकट कर सकता है—और इस कोटि के अन्तर्गत वे इश्तिहार भी आ सकते हैं, जिनमें किसी कैन्टीन की कमियो की शिकायत की गई हो। क्या आखिरकार यह हमारी कैन्टीन नहीं है? क्या यह हमारी सोवियत कैन्टीन नही है? मेरी समझ से, सोवियत विरोधी गतिविधि, वह गतिविधि है, जिसका उद्देश्य सोवियत राज्य और आर्थिक व्यवस्था की बुनियादों को क्षति पहुंचाना हो। जिसका उद्देश्य सोवियत सविधान मे वर्णित आधारों को क्षति पहुचाना हो। टेरट्ज या अर्जेहक की रचनाओं मे ऐसी कोई भी बात दिखा पाना प्राय. असभव है। वे हमारी कुछ सस्थाओं और हमारे समाज की कुछ बातो की आलोचना करते हैं। सामान्यत. उन्होने पिछले जमाने की आलोचना की है—उन्होने व्यक्ति पूजा के युग (जैसे दि ट्रायल बिगन्सि मे); की आलोचना की है; कभी-कभी उन्होंने वर्तमान दौर पर भी नजर डाली है (जैसे "दिस इज मास्को स्पीकिंग" मे, जिसमें लेखक का चिन्ता का विषय, साहित्यिक क्षेत्रो की घटनाए ही रहा है।) लेकिन उनकी रचनाओं मे सोवियत राज्य की बुनियाद या समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के आधार पर संशोधनवादी प्रहार या वस्तुत किसी भी ऐसी बात को देख पाना असभव है—जैसे पूंजीवाद की पुर्नस्थापना की इच्छा का कोई सकेत—जिससे उनकी रचनाओं को सच्चे मानो में सोवियत विरोधी सिद्ध किया जा सके।

वाई० आई० लेविन
भौतिकी और गणित
विज्ञान का डाक्टर

६—यह सकेत शचेद्रिन की हिस्ट्री आफ ए टाउन की ओर है।

"इजवेस्तिया" के नाम लाई० गेरचुक का पत्र

प्रिय सम्पादक जी,

आपके १३ जनवरी के अक मे प्रकाशित डी० इरेमिन के लेख "दो सिद्धातघाती लेखक" और उसके ऊपर हुई प्रतिक्रिया के बारे मे १७ जनवरी के अक मे पढकर, मैं आपको यह पत्र लिखना अपना कर्त्तव्य समझता हूं, क्योकि मैं उन लोगों से घनिष्ठ रूप से परिचित हूं, जिनका इस लेख मे उल्लेख हुआ है और इस लेख मे उल्लिखित रचनाओ को भी मैंने पढ लिया है।

अनेक वर्षों के बाद, अब हमारे किसी समाचारपत्र मे ऐसा एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमे भद्दी गालिया, उन्मादपूर्ण व्याख्याए और सदर्भ से हटाकर प्रस्तुत उद्धरणो का इस प्रकार लज्जाजनक उपयोग किया गया हो। उद्धरणो का इस प्रकार दुरुपयोग, उस स्थिति मे और भी आसान है क्योकि इनके कथित लेखक जेल मे हैं और इसका प्रतिवाद करने की कोई संभावना नही है और यह कहना न होगा कि आपके अधिकाश पाठक इन लेखको की रचनाओ से परिचित नही हैं, क्योकि यह सोवियत संघ मे प्रकाशित नही हुई हैं·· ···

इरेमिन ने एक सीधे-सादे तरीके का इस्तेमाल किया है ··· ·वह किसी कहानी के खल नायक के कुछ शब्द चुन लेता है, जिसका बडी कठोरता से कहानी मे व्यग्य चित्रण हुआ है और इन शब्दो को लेखक के मुंह से कहलवाता है और इन्हे बिना किसी हिच-किचाहट के लेखक की अपनी राय के रूप मे प्रकट करता है। टेरट्ज की कहानी "ग्रेफो-मेनियाक्स" से तीन उद्धरण दिये गये है, यह कहानी स्वय पात्र द्वारा घटनाओ का विवरण देने की शैली मे लिखी गई है और इसमे एक असफल और प्रकाशको की माग पर किसी भी विषय पर लिखने वाला दरिद्रता से ग्रस्त लेखक कहानी कहता है और उसके मन मे 'भाग्यवान" लेखको, सम्पादको और गौरव ग्रन्थो के प्रति गहरी ईर्ष्या और घृणा है। कहानी का लेखक नही, बल्कि यह व्यक्ति, चेखव और सब गौरव ग्रन्थो के प्रति घृणा भाव प्रकट करता है और यही पात्र एक सम्पादक की उस सेक्रेटरी से मिलता है, जिसे वह "प्रत्येक प्रूफ रीडर को उपलब्ध वेश्या" कहता है।

क्या कोई व्यक्ति, यह विश्वास कर सकता है कि लेखक इरेमिन इस बात को नही समझते थे ? इस लेख का पूरा स्वर, यह स्पष्ट कर देता है कि उद्धरणो का इस प्रकार उपयोग करने वाला व्यक्ति, यह बात अच्छी तरह से जानता है कि वह क्या कर रहा है और वह बड़ी कुटिलता से इस बात का लाभ उठा रहा है कि उसके लेख के पाठक उन रचनाओ को नही पढ सकते, जिनकी वह भर्त्सना कर रहा है।

इसके अलावा उद्धरण देने का एक और तरीका है, जो इसी प्रकार अनैतिक है। अर्जहक की कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" का नायक, जिसे कहानीकार की सहानुभूति प्राप्त है और जो स्पष्टतया बहुत हद तक उनके विचारो का प्रतिनिधित्व करता है, ऊचे

स्वर में बुराइयो और अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष करने के तरीको पर विचार करता है ।

वह सोचता है कि क्या बल प्रयोग किया जा सकता है 'तुम पिन खीच कर निकालते हो, हथगोला फैंक कर जमीन पर लेट जाते हो ······ 'आदि········ लेकिन इस विचारक्रम के अन्त में कहानी का नायक आतकवाद को ठुकरा देता है । वह खून बहाने और हत्याकाण्ड को पसन्द नही करता ।

इरेमिन, कहानी के नायक के विचार के इस मोड से पहले ही अपने उद्धरण को समाप्त कर देता है और इस प्रकार यह निष्कर्ष निकालने मे सफल होता है कि स्वय उसके शब्दो मे "वस्तुत. आतंक फैलाने का आह्वान है ।"

इस प्रकार मनमाने ढग से, उद्धरणो के उपयोग के बाद इरेमिन रचनाओ के व्यापक अर्थ की व्याख्या मे स्वय को कही अधिक स्वतत्र पाता है, जैसा कि स्वाभाविक है ।

टेरट्ज़ का दि मेकपीस एक्सपैरिमेंट एक दुरूह रचना है, जिसकी सरलता से व्याख्या संभव नही है । इसके सार को तुरन्त, एक वाक्य में प्रस्तुत करने का प्रयास अनिवार्य रूप से असफल होगा । लेकिन इरेमिन के लिये तो कोई भी बात इससे अधिक सरल नही हो सकती ········"लेखक अपने समक्ष, कोई मामूली नही, बल्कि यह सिद्ध करने का लक्ष्य रखता है कि साम्यवादी तरीके से समाज मे आमूल परिवर्तन का विचार ही, एक भ्राति, एक निरर्थक स्वप्न है ।" लेकिन यह निष्कर्ष भी स्पष्टतया उन लोगो के लिये ही निकाला गया है, जिन्होने यह रचना नही पढी है और जिनके पास इरेमिन के कथन की सच्चाई का पता लगाने के लिये कोई साधन नही है ।

यह सच है कि टेरट्ज की यह कहानी एक व्यग्य रचना है । यह अत्यधिक अतिशयोक्ति पूर्ण कल्पना की उडान है और इसमे काम के द्वारा नही बल्कि केवल बातो से "विशाल पैमाने पर सम्मोहन की क्रिया के माध्यम से" "सार्वभौम सुख" की स्थापना के प्रयासो की असफलता की चर्चा की गई है । लेकिन इरेमिन के अनुसार······क्या यह एक वैसा ही प्रयास नही है, जिस पर इस कहानी के प्रकाशन के बाद व्यापक रूप से चर्चा हुई है और जिसको 'सापेक्षतावाद और इच्छाशक्तिवाद" कह कर निन्दा की गई है ? और यदि कहानी के अन्त मे ल्यूबीमोव नगर फिर "अपने पुराने जीवनक्रम" मे लौट आता है तो इसका अभिप्राय सोवियत प्रकार के या सोवियत जीवनक्रम से ही है । यह स्वीकार करना होगा कि ल्यूबीमोव नगर का जीवन, हमारे उन छोटे नगरो के लिये ईर्ष्या योग्य नही है, जो सड़क से बहुत दूर स्थित हैं और जिनमे उद्योग आदि नही हैं और जिनके विकास की बहुत कम सभावना है । यह आश्चर्य का विषय नही है क्योकि "छोटे नगरो" की समस्या पर, इस समय अनेक सोवियत लेखक लिख रहे हैं और यदि कोई यह दर्शाने का प्रयास करता है कि इस समस्या को केवल "इच्छा के द्वारा ही" नही सुलझाया जा सकता, तो क्या इसे एक अपराधी सिद्ध करने का पर्याप्त प्रमाण है ।

यही बात सार रूप मे, अर्रहक की कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" पर लागू

होती है। यह तीखी व्यग्य रचना है और अत्यधिक काल्पनिक कथा वस्तु के वावजूद इसमे उन समस्याओं पर विचार किया गया है, जो दुर्भाग्यवश हमारे दिन प्रति दिन जीवन की अत्यधिक वास्तविक समस्याए हैं। और इनमे वह समस्या भी शामिल है, जो पिछले कुछ दिनो मे एक प्रवल उदाहरण के रूप मे, हमारे सामने आई है और यह समस्या उन अनेक लोगो की है, जो विना किसी हिचक के वडी व्यग्रता से किसी भी अभियान का समर्थन करने को तैयार हो जाते हैं—जैसे, उदाहरण के लिये, उन दो लेखको के विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव स्वीकृत करना, जिनकी रचनाए उन्होने नही पढी है और जिनका परिचय उन्हे केवल उन आधा दर्जन उद्धरणो से ही प्राप्त हुआ है, जिन्हे सदर्भ से हटाकर एक समाचारपत्र मे पेश किया गया है। (देखिए इज्वेस्तिया १७ जनवरी का अक।)

यह वात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि इरेमिन ने अर्जेहक और टेरट्ज की एक या दो रचनाओ पर ही विशेपरूप से अपना ध्यान केन्द्रित किया है और अन्य रचनाओ की, जो कम महत्वपूर्ण नही है, उपेक्षा की है जैसे टेरट्ज का उपन्यास "दि ट्रायल विगिन्स" यह उपन्यास "व्यक्ति पूजा के युग" मे न्याय की हत्या के वारे मे है और इस उपन्यास में यह दर्शाया गया है कि इस कारवाई से केवल उन लोगो पर ही भ्रष्टात्मक प्रभाव नही पडा, वल्कि उन लोगो पर भी जिनका इससे कुछ सम्वन्ध नही था। अर्जेहक की कहानी "अटोनमेंट" भी ऐसे ही विषय पर लिखी गई है इसी व्यक्ति पूजा के युग के वाद के आध्यात्मिक प्रभाव और व्यापक उलभन, जिन्हे अभी भी सुलझाना शेष है, पारस्परिक सदेह और एक दूसरे की निन्दा करने के प्रयास तथा शुद्धि अभियानो और लोगो पर झूठे आरोप लगा कर जो अत्याचार किये गये हैं, उनके प्रति हमारी सामूहिक जिम्मेदारी, इस कहानी की कथावस्तु है। इन दोनो रचनाओं से हमे पर्याप्त स्पष्ट आभास मिल जाता है कि अर्जेहक और टेरट्ज की रचनाओ मे इतने व्यग्य का पुट क्यो है और हम यह भी देखते हैं कि हमारे जीवन के कौन से पहलू, अतीत की कौन सी शक्तियो और वातो पर इन पुस्तको मे विचार हुआ है। लेकिन डी० इरेमिन के लिये अतीत की अन्धकारपूर्ण विरासत को सार्वजनिक नैतिकता के अव तक उलझे हुए प्रश्नो को सुलझाने की इच्छा केवल "जीवन की गन्दी समस्याओ मे भद्दी और कुण्ठापूर्ण दिलचस्पी है। "क्या यह वात अजीव नही लगतीकि वही समाचारपत्र जो अक्सर इन भद्दी समस्याओ" के लिये स्थान देता रहा है—यह समस्याए नैतिकता सम्वन्धी कठिन वातो और न्याय व्यवस्था के वारे मे हैं—अव अपने पृष्ठो मे इस भडकाने वाले लेख को स्थान दे? नि सदेह स्वय अपने तर्कों की अपर्याप्तता से परिचित होने के कारण, जिसमे इन दो लेखको की गिरफ्तारी के कारण समझाने का प्रयास किया गया है, और स्वय उनकी निन्दा मे लिखे गये अपने लेख की प्रभावहीनता के कारण इरेमिन अधिक व्यापक अभियोग लगाने पर उतर आता है और ये अभियोग ऐसे हैं, जिनकी पुष्टि मे कोई प्रमाण प्रस्तुत नही किया गया है और इन अभियोगो को उन रचनाओ के माध्यम से सिद्ध नहीं किया जा सकता, जिनके उद्धरण उसने अपने लेख मे दिये हैं। उदाहरण के लिये, वह सेना की निन्दा की चर्चा करता

है, जिसकी "अमर वीरता और साहस ने यूरोप के लोगों को नाजियों के हाथो विनाश से बचाया।" लेकिन वह यहां यह उल्लेख करना भूल जाता है कि अभियुक्तो मे से एक, डेनियल ने सेना के इन अमर और वीरतापूर्ण कार्यों मे हिस्सा लिया और इस युद्ध मे वह घायल हुआ। उस ने एक मामूली सैनिक के रूप में अपनी सेवाए अर्पित की थी। इसके अलावा "विभिन्न राष्ट्रो के बीच शत्रुता भड़काने" के बारे मे भी कुछ कहा गया है। लेकिन इसके समर्थन मे भी कोई प्रमाण नही दिया गया है। /

एक बात और उल्लेखनीय है जो इरेमिन की अपनी विशिष्टता है। वह लिखता है : "जन्म से रूसी, आन्द्रेय सिन्यावस्की स्वयं को एब्राम टेरट्ज़ के नाम के पीछे छिपाता है। क्यो ? इसका उद्देश्य केवल उत्तेजना फैलाना ही है..." मैं ऐसे अनेक सोवियत यहूदी लेखको को जानता हूं, जिनके साहित्यिक नाम पूरी तरह से रूसी ही मालूम पड़ते हैं। लेकिन किसी ने भी इस बात पर आपत्ति नही की और मुझे अभी भी इन लेखको द्वारा इन नामो के उपयोग के ऊपर आरोप लगाये जाने की जानकारी पाना शेष है। अतः क्या करण है कि यदि कोई रूसी लेखक यहूदी जैसा दिखाई पड़ने वाला नाम रख लेता है तो इससे इतना अधिक क्रोध भड़कता है और उस पर यहूदी विरोध का आरोप सिद्ध करने के लिये इस बात का उल्लेख किया जाता है ? दूसरी ओर, इरेमिन का यह अभियोग कि जन्म से रूसी एक व्यक्ति को यहूदी जैसा नाम रखना शोभा नही देता; अपने आप मे यहूदी विरोध के अस्तित्व का पर्याप्त प्रमाण है और यहूदी विरोध की यह भावना अन्यत्र कही नही केवल इजवेस्तिया के लेखको मे ही मौजूद है।

अत्यधिक भावुकता स इरेमिन ने सिन्यावस्की द्वारा किसी लेखक की आलोचना का उत्तर दिया है और इरेमिन के इच्छानुसार यह कथित लेखक "पार्टी का एक सक्रिय और वफादार मददगार है, यह अपने देश का सच्चा सपूत है।" इरेमिन ने बडे क्रोध से सिन्यावस्की की रचना से उद्धरण दिया है। लेकिन इस बात का उल्लेख नही किया कि यह उद्धरण किस लेखक के बारे में है। और इस बात मे भी कोई आश्चर्य नही है कि आइवन शेवत्सोव का नाम, जिनका उपन्यास "दि ब्लाइट" सम्बन्धित लेख के विषय से सम्बन्ध रखता है, ग्राह्य नही है और सब सोवियत समालोचको ने, अनेक समाचारपत्रो और पत्रिकाओ में प्रकाशित अपने लेखो के माध्यम से एक स्वर से इस पुस्तक की निन्दा की है और यह निन्दा इस पुस्तक द्वारा प्रकृतिवादी कला और अपने विरोधियों पर गन्दे प्रहारों के कारण की गई है। इस उपन्यास का "रचनात्मक नायक" अपने उन विरोधियो से लड़ने का अन्य कोई तरीका नहीं जानता। केवल वह उन लोगो के बारे मे निरन्तर झूठी शिकायतें करता है जो उससे कला सम्बन्धी विषयों पर सहमत नही होते। एक ऐसे लेखक के बारे मे क्या बात वंचनापूर्ण हो सकती है, जिसने सदा इस प्रकार के साहित्य के विरुद्ध स्पष्ट रूप से अपनी राय प्रकट की हो।

यद्यपि अधिकांश पाठकों को अर्जहक और सिन्यावस्की की विदेश में प्रकाशित

रचनाओं की विषय वस्तु के बारे मे इरेमिन द्वारा दी गई जानकारी पर ही निर्भर करना होगा, लेकिन उसने आलोचक के रूप मे सिन्यावस्की के बारे मे जो कुछ कहा है उसकी सत्यता और औचित्य को आसानी से परखा जा सकता है।

यद्यपि मैं साहित्य का विशेषज्ञ नही हूं लेकिन मुझे इस बात का निश्चय है कि सिन्यावस्की के अनेक, और महत्वपूर्ण समालोचनात्मक लेख और साहित्य के इतिहास के उनके अध्ययन, उनके पक्ष के समर्थन के पर्याप्त प्रमाण हैं। बोरिस पास्तरनेक के हाल के कविता संग्रह की उनकी लम्बी भूमिका का उल्लेख करना ही पर्याप्त होगा। यह, वस्तुत., हमारे युग के विशिष्टतम कवियो मे से एक कवि के काव्य का पहला अध्ययन है।

सिन्यावस्की को पास्तरनेक के काव्य की जो विशिष्ट अन्तरदृष्टि और नये दृष्टिकोण से मूल्याकन की क्षमता प्राप्त है, उसके बल पर वह इस महान् कवि की जीवन के प्रति भावना की गहराई और जटिलता को स्पष्ट कर सके।

मैंने इरेमिन के लेख को बार-बार पढा है—यह चार कालमो में छपा है—और यह समझने की कोशिश की है कि, जब इतना कुछ कहा और किया गया है, इस सबके बावजूद आज ये दोनो लेखक कई महीने से जेल मे क्यो पडे हुए हैं। क्या इसका यह कारण है कि उन्होने विदेश मे अपनी रचनाए प्रकाशित की ? लेकिन हम यह जानते है कि यह अपने आप मे कोई अपराध नही हैं, कि सोवियत कानून मे ऐसी कोई व्यवस्था नही है, जिसमें इसका निषेध किया गया हो। क्या इसका यह कारण है कि उनकी रचनाए व्यग्यपूर्ण है ? लेकिन व्यग्य तो समाज को स्वच्छ करने का अनिवार्य साधन है। यह एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा अनेक खामियो को दूर किया जा सकता है और शिथिलता को समाप्त किया जा सकता है। इसके अभाव मे समाज मे सडाध उत्पन्न हो जाती है। मेरे मन मे अर्जहक और टेरट्ज़ की रचनाओ की उच्च साहित्यिक प्रतिभा के बारे मे कोई सदेह नही है और यह बात स्पष्ट है कि उनके समालोचनात्मक दृष्टिकोण के पीछे जो गहरी भावना छिपी है, वह उनके इस देश के प्रति गहरे स्नेहभाव की उपज है। इसके अलावा, मैं यह भी नही समझता कि किसी साहित्यिक रचना की विषय वस्तु पर किसी अदालत मे विचार किया जाना चाहिये। यह सच है कि अर्जहक और टेरट्ज़ ने सरकारी राय और नीति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए अपने व्यग्य के तीखेपन को समाप्त नही किया (लेकिन इसी प्रकार न तो स्विफ्ट ने और न ही साल्तीकोव-शचेद्रिन ने ही ऐसा किया) और इस कारण से उन्हे बाध्य हो कर विदेश मे इन्हे प्रकाशित कराना पडा। क्या इसी कारण से उनके ऊपर प्रवाद फैलाने और निन्दा करने का अभियोग लगाया जा सकता है ? प्रवाद फैलाना एक कानूनी शब्द है। यह एक ऐसा शब्द है, जिसे सिद्ध करने की आवश्यकता है। लेकिन इसे विद्वेष या अज्ञान के कारण साहित्यिक अतिशयोक्ति या व्यग्य मे किसी बात को बढा-चढा कर कहने का समानार्थक नही समझ लिया जाना चाहिये। इरेमिन के लेख मे प्रवाद के उदाहरण ढूढ निकालना कही आसान है, क्योकि यह लेख उद्धरणो को सदर्भ से अलग हटाकर प्रस्तुत करने और उनके

अर्थों को तोडने-मरोडने की मिथ्या शैली मे लिखा गया है।

इस लेख के इस समय प्रकाशित होने के कारणो के प्रति भी, किसी भी व्यक्ति के मन में स्वभावत. चिन्ता उठ सकती है क्योकि जब सिन्यावस्की और डेनियल चार महीने से अधिक समय से जेल मे है और जब स्पष्टतया उनका मुकदमा शुरू होने वाला है, तब यह लेख प्रकाशित क्यो किया गया। उन लोगो की "प्रतिक्रिया" छापने का क्या कारण है, जो केवल इरेमिन के लेख मे दिये गये उद्धरणो के माध्यम से ही इन लेखको की रचनाओ से परिचित है और जो इन दोनो लेखको के बारे मे अपनी राय केवल उन अशो के आधार पर ही कायम कर सकते है, जिन्हे इरमिन ने तोड़ मरोड कर प्रस्तुत किया है ? मुकदमे के तुरन्त पहले एक प्रकार से वैसा उन्मादपूर्ण वातावरण तैयार करने का क्या उद्देश्य है, जिससे हम पास्तरनेक के विरुद्ध, "जहर देने वालो डाक्टरो," "नाटक समालोचको की देशभक्ति विरोधी टोली"[७] आदि के विरुद्ध छेडे गये कुख्यात अभियानो से आवश्यकता से अधिक परिचित है। यह एक ऐसा वातावरण है, जो किसी भी रूप में अदालत के लिये सत्य का निर्णय कर पाने और न्याय देने मे सहायक नही हो सकता ?

यह भी प्रश्न उठता है कि क्या यह लेख उस सामग्री पर आधारित नही है, जो आरम्भिक जांच के दौरान उपलब्ध हुई और क्या, इस कारण से, वे अभियोग भी जो अदालत मे प्रस्तुत किये जायेगे, उसी प्रकार निराधार और पूर्वाग्रह ग्रस्त नही होंगे, जिस प्रकार इरेमिन द्वारा लगाये गये आरोप है ?

इन बातो पर चिन्ता के कारण ही मै यह पत्र लिखने को बाध्य हुआ यद्यपि जिस रूप मे सिन्यावस्की और डेनियल के मामले को तैयार किया जा रहा है, उससे मुझे इस बात की आशा नही है कि मेरा यह पत्र प्रकाशित होगा और जिस मनमाने तरीके से आपके इस लेखक ने इन लेखको की रचनाओ के अशो का उपयोग किया है उससे मेरे मन मे यह भय उत्पन्न होता है कि मेरे पत्र की भी यही नियति हो सकती है। इस सब के बावजूद मैं आपको इसलिए यह पत्र लिख रहा हूं क्योकि मै यह कहना आवश्यक समझता हू कि सोवियत बुद्धिवादियो मे (मैं समझता हू कि मुझे केवल अपनी ओर से ही नहीं बल्कि उन लोगों की ओर से भी बोलने का अधिकार है, मुझे इस मामले मे जिनकी राय मालूम है) ऐसे लोग है, जो इरेमिन की इन बातो के बावजूद, लेखको की उनकी साहित्यिक गति-विधियो के कारण गिरफ्तारी से अत्यधिक चिन्तित है और उन लोगो के विरुद्ध समाचारपत्र मे छेडे गये अभियान से उन्हे आघात पहुंचा है, जो अपने अभियोग लगाने वालों को उत्तर देने की स्थिति में नही है। यह बात इस कारण से विशेष रूप से चिन्ताजनक है, क्योकि उन लोगो के समक्ष भी इरेमिन के लेख की बेईमानी स्पष्ट है, जो पूरी रचनाओं को पढकर तथ्यों को पूरी तरह से समझने की स्थिति मे नही हैं।

७—'विष देने वाले डाक्टर'। देखिए "सफाई पक्ष की ओर से प्रस्तुत प्रमाण जिनका उपयोग नही किया गया" मे टिप्पणी ६ "नाट्य समालोचको की देशभक्ति विरोधी टोली" की २८ जनवरी १९४९ के प्रावदा में निन्दा की गई। यह 'सार्वभौमवादियो' के विरुद्ध पहला प्रहार था।

जब मैं यह पत्र प्राय पूरा लिख चुका था, अर्जहक और टेरट्ज के साहित्य पर एक और लम्बा लेख साहित्यिक गजट के २२ जनवरी के अक मे प्रकाशित हुआ, जिस की लेखिका जैड० केदरीना है। पहली नजर मे ऐसा दिखाई पड सकता है कि यह इन लेखको के साहित्य पर कही अधिक ठोस और उचित आधार पर विचार करने का प्रयास है। यह लेख "शुद्ध रूप से साहित्यिक", प्राय विद्वतापूर्ण परीक्षण है और इस लेख मे इन लेखको के ऊपर पडे साहित्यिक प्रभावो की चर्चा करने का प्रयास किया गया है। लेकिन गहराई से देखने पर यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि यह विद्वतापूर्ण स्वर केवल एक स्वाग है। लेखक को यह जान लेना चाहिये कि अभियुक्तो के भाग्य का फैसला, बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करेगा कि अदालत उनकी रचनाओ के बारे मे क्या दृष्टिकोण अपनाती है और लेखिका ने इन्हे साहित्य मे स्थान न देने के लिये हर सभव प्रयास किया है। अत यह दिखाने के लिये कि यह किस परम्परा का पालन करते है—और हमारे अधिकाश लेखको के विपरीत ये लोग रेमीजोव जाम्यातिन और अन्य लेखको से प्रभावित हुए है और इस सूची मे आर्तसीबाशेव का नाम भी केवल उन्हे निन्दा का पात्र बनाने के लिये ही शामिल किया गया है—केदरीना यह सिद्ध करने का प्रयास करती है कि टेरट्ज की रचनाए पूरी तरह से मौलिकता से रिक्त है और यह अन्य लेखको की रचनाओ से लिये गये अशो को जोड कर तैयार की गई है, आदि। वे यह भी नही देखती की टेरट्ज की "बहुमुखी व्यग्यात्मकता" के बारे मे स्वय उनके अपने शब्द उस बात के विरोधी है, जो उन्होने टेरट्ज की रचनाओ की नीरसता और साहित्यिकहीनता के बारे मे कहीं हैं।

इरेमिन की तरह ही, लेखिका ने भी बडे लज्जाजनक और निन्दात्मक तरीके से उद्धरणो को तोडा-मरोडा है और विशेष रूप से 'दिस इज मास्को स्पीकिंग' के उस अश को, जिसका उपयोग एक ऐसा वीभत्स निष्कर्ष निकालने के लिये किया गया है, जो इस पूरी कहानी की भावना के एकदम विपरीत है, और जिसका उद्देश्य लेखको को दण्डित कराना है। इन सब बातो से किसी भी व्यक्ति के मन मे यह बात उठती है कि केदरीना का लेख इन गिरफ्तार लेखको के विरुद्ध प्रवाद फैलाने के उद्देश्य से छेडे गये अभियान का एक और कदम है। इससे इन लेखको के बारे मे चिन्ता और बढ जाती है।

यु० गेरचुक, कला इतिहासकार

एन० किशिलोव और ए० मैनशुतिन का पत्र[८]

साहित्यिक गजट के सम्पादको के नाम

प्रिय सम्पादकगण,

आपके समाचारपत्र मे जैड० केदरीना के हस्ताक्षर से "स्मरद्याकोव के उत्तराधिकारी

८—एन० किशिलोव कलाकार हैं और एन्ने केराईव उनकी फ्रासीसी पत्नि हैं। ए० मैनशुतिन ने सिन्यावस्की के साथ एक पुस्तक पर कार्य किया।

शीर्षक से जो अभियोगात्मक और प्रवादजनक लेख प्रकाशित हुआ है उसके विरुद्ध कडे से कडे शब्दो मे अपना विरोध प्रकट करना हम अपना कर्तव्य समझते है। यह लेख, जिसे लेखको को बदनाम करने और जनता को भड़काने के उद्देश्य से लिखा गया है, उन लोगों के ऊपर, जो इन दो लेखको की रचनाओ से परिचित है, साहित्यिक हत्या का अत्यधिक लज्जाजनक प्रभाव छोडता है। और ये लोग यह अनुभव करते है कि यह कार्य एक पहली परम्परा के समस्त नियमो के अनुसार किया गया है और हम यह समझते थे कि यह परम्परा मर चुकी है, इसे दफनाया जा चुका है।

कोई भी व्यक्ति जैड० केदरीना और आपके समाचारपत्र के, किसी भी साहित्यिक रचना के बारे मे अपनी राय रखने के अधिकार के सम्बन्ध मे प्रश्न नही उठा सकता। लेकिन गलत बात यह है कि उचित और खुली आलोचना के स्थान पर, जानबूझ कर तथ्यो को तोड-मरोड कर प्रस्तुत करना, किसी लेखक को उसके पात्रो के विचारों के लिये उत्तर-दायी बताकर या इन पात्रो के विचारों को स्वय लेखक के विचार बताकर अभियोग लगाना, सदर्भ से हटाकर कुछ अंशो को उद्धृत करना, जिससे उनका वह अर्थ अपनी समग्रता मे प्रकट न हो सके जो लेखक स्पष्ट करना चाहता था, और इस प्रकार मनमाने ढग से उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये इनका इस्तेमाल करना, जिसे पूरा करने के लिये आलोचक प्रयास कर रहा हो, गलत बाते हैं।

हम इस प्रकार तथ्यो को आलोचक की सुविधा के अनुसार तोड-मरोड कर गलत ढग से प्रस्तुत करने के कुछ उदाहरण देंगे। डेनियल की कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" पर प्रहार करते हुए, केदरीना एक उद्धरण देती हैं, जिसमे कहानी का नायक अपने से यह प्रश्न करता है कि क्या राजनीतिक हत्या उचित है ? नायक के स्वगत कथन के इस अंश की आलोचक द्वारा इस प्रकार व्याख्या की गई है, मानो यह कोई राजनीतिक घोषणा पत्र हो, और जिसमे हिंसा और आतंक फैलाने का आह्वान किया गया हो, जबकि तथ्य यह है कि यह अंश कहानी के नायक की युद्ध सम्बन्धी स्मृतियों के बारे मे है (प्रसगवश यह उल्लेखनीय है कि स्वय लेखक ने भी इस युद्ध मे हिस्सा लिया था) और इन स्मृतियो के आधार पर कहानी का नायक इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि किसी भी व्यक्ति को कभी भी किसी को नही मारना चाहिये। जान-बूझ कर इसके अन्तिम अश को छोडकर केदरीना ने कहानी के नायक के स्वगत कथन को, एक घोषणापत्र मे बदल दिया और लेखक के आशय के ठीक विपरीत भावना को प्रकट किया।

सिन्यावस्की के "दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट" का सार देते हुए, आलोचक ने एक विशिष्ट शैली के गीतात्मक अतिरेक का उद्धरण दिया है, जो दि टैउसोल्स मे आइका के एक ऐसे ही विवरण का व्यंग्य चित्रण है। केदरीना अपने लेख का समारम्भ सिन्यावस्की पर साहित्यिक चोरी का आरोप लगा कर करती है, जो एकदम मूर्खतापूर्ण बात है क्योंकि इस शैली का उपयोग करना चोरी नही कहा जा सकता। यदि यह चोरी है तो हमारे अधिकांश

वडे लेखक और कवि भी, इस आरोप से मुक्त नही रह सकते। वे आगे यह आरोप लगाती है कि इस अंश मे सिन्यावस्की सोवियत जन जीवन की खिल्ली उडाने मे "आनन्द लेते है" हम उनसे तभी सहमत हो सकते है, जब उनकी गोगोल के आइका सम्बन्धी अश के वारे मे भी यही राय हो। इस स्थिति मे यह प्रकट होगा कि न तो गोगोल का ही और न ही सिन्यावस्की का, अपने देश के जीवन पर कीचड उछालने के अलावा अन्य कोई उद्देश्य था।

आलोचक की वचना, लेख के अन्त मे अपनी चरम सीमा पर पहुच जाती है जब वह एक सरकारी वकील जैसे स्वर मे यह घोषणा करती है कि इस दुष्ट लेखक को उसके पात्रो के विचारो के दायित्व से मुक्त नही किया जा सकता। अब हम यदि केदरीना की विचारधारा और परम्परा के अनुसार सोचें तो हमे दोस्तोएवस्की पर, पर-पीडन से सुख प्राप्त करने और व्यभिचार करने का, चेखव पर मानसिक विकृति का और वाबेल पर लूटमार और डकैती का आरोप लगाना होगा।

जब केदरीना सिन्यावस्की पर यहूदी विरोधी होने का आरोप लगाती है, तब वे बडी सावधानी से इस तथ्य को छिपा लेती है, कि यूली डेनियल एक यहूदी है, कि सिन्यावस्की ने पिकासो पर गोलोमश्तोक के सहयोग से पुस्तक लिखी है, और ये गोलोमश्तोक क्रेत[9] जाति के है और इनके अलावा भी अन्य अनेक यहूदी सिन्यावस्की के मित्रो मे है।

हम इस बात से आश्वस्त हैं कि सोवियत विरोधी और मानव विरोधी शब्दो का जो पूर्ण अर्थ होता है, उसके अनुसार इन दो लेखको की रचनाए किसी भी रूप मे इन कोटियो मे नही आती, लेकिन इसके विपरीत जैड० केदरीना का लेख इन कोटियो के अन्तर्गत आता है और यह सोवियत समाचारपत्र जगत के लिये अत्यधिक अपमानजनक बात है। यह लेख सन् १९३७ के भ्रष्टाचार की गन्ध और व्यापक पैमाने पर हत्याकाण्ड की भावना को वापस ला कर, हमारे समाज की भयकर कुसेवा करता है, जबकि हम यह समझते थे कि ये बाते सदा के लिये समाप्त हो चुकी है।

मुकदमे की कार्यविधि के पूर्वानुमान और उसके क्रम को निर्धारित करने की पाशविक इच्छा ने आलोचक को प्रवाद फैलाने, तथ्यो को गलत ढग से पेश करने और जानबूझकर असत्य कथन के लिये प्रेरित किया है। हमारे समाचारपत्रो मे ऐसी बातो की अक्सर निन्दा की गई है और सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष के, इजवेस्तिया मे, १९६४ मे, प्रकाशित लेख के बाद इनका प्रत्यावर्तन असभव दिखाई पडने लगा था।[10]

९—क्रेत एक छोटा यहूदी सम्प्रदाय है (कभी-कभी इसे धार्मिक अल्पसख्यक सम्प्रदाय नही, बल्कि एक जातीय सम्प्रदाय समझा जाता है), जो वाइबिल के ओल्ड-टेस्टामेट को तो मानता है, लेकिन इसकी तालमुद जैसी व्याख्याओ को स्वीकार नही करता।

१०—ए० गोर्किन का इजवेस्तिया के २ सितम्बर १९६४ के अक मे लेख प्रकाशित हुआ। इस लेख मे, अदालतो मे विचाराधीन मामलो पर समाचारपत्रो मे लेख आदि लिखने और विचार प्रकट करने की निन्दा की गई थी।

प्रिय सम्पादक गण, हम यह सोचते हैं कि केदरीना के लेख का प्रकाशन, एक मूर्खता पूर्ण गलती थी और आपका समाचारपत्र स्वय को इमसे अधिकृत रूप से असम्बद्ध करके अपने नाम पर कलक लगने से बचेगा या कम से कम आपको इस लेख के प्रति विरोध प्रकट करते हुए जो पत्र भेजे गये हैं, उन्हे प्रकाशित कर अपनी परम्परा की रक्षा करेगा।

यदि सम्पादकगण इस लेख की लेखिका के विचारो से सहमत हैं तो उन्हे सन् १९३७ के उन अन्धकारपूर्ण दिनो का स्मरण कर लेना चाहिये, जब मंडेलशतम, क्लीचकोव, वावेल, कोल्तसोव और अन्य अनेक, असख्य लेखको की "समाप्ति" के साथ, हमारे साहित्य का सर्वोत्तम अग नष्ट कर दिया गया और उन परिणामो को भी समझने की कोशिश करनी चाहिये जो जैड० केदरीना जैसी साहित्यिक कब्र खोदने वालों को सहायता और समर्थन देने के परिणामस्वरूप निकलेगे।

एन० किशिनोव, कलाकार और पुनर्नवीकरणकर्त्ता
मास्को ई—३९२, गोलनोवो, कोर, ५० केवी, ८४
ए० मेनशुतिन, साहित्य विशेषज्ञ
विश्व साहित्य संस्था
मास्को, यू० एल० सेमश्को, के० १० केवी, ६

आई० रोदन्यान्सकाया का पत्र

सेवा में,

सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्ष मण्डल
प्रतिलिपि— सम्पादक "साहित्यिक गजट'

हाल मे इजवेस्तिया और साहित्यिक गजट ने ए० सिन्यावस्की और वाई० डेनियल के ऊपर मुकदमा चलाने के कारणो के बारे मे एक एक लेख प्रकाशित किया है—इनमे से एक लेख डी० इरेमिन का और दूसरा जैड० केदरीना का है। इस मामले की किस प्रकार जांच की जा रही है इस सम्बन्ध मे कोई भी जानकारी प्रकाशित करना वस्तुत. एक ऐसा तथ्य है, जिसका स्वागत किया जा सकता है (यदि इस जानकारी का किसी अधिकृत स्रोत से प्रकाशन होता तो यह एक बेहतर बात होती)। लेकिन इन दोनो लेखो का स्वर ऐसा है, जिसके कारण मुझे अपने विस्मय और गहरी चिता के फलस्वरूप, एक इतनी ऊंची सत्ता (सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल जैसी सत्ता) की ओर उन्मुख होना पड़ा है।

मैं इरेमिन के लेख की शैली की चर्चा पर अपना समय बर्बाद नहीं करूंगी। मैं केवल इतना कहना चाहूंगी कि इस अपशब्द कहना ("जुगुप्सा का तलहीन, गन्दगी भरा गर्त" "प्रवाद का गन्दा कीचड", "विष वमन" आदि) कटु से कटु शाब्दिक संघर्ष में भी मुश्किल

से ही सुसंस्कृत और शोभनीय बात हो सकती है। इसी प्रकार यह बात अत्यधिक स्पष्ट निन्दा मे भी उचित नही ठहराई जा सकती। ये शब्द केवल उस लेखक की प्रतिष्ठा को ही धक्का पहुंचाते हैं, जो अपनी भावनाओ को व्यक्त करने के लिये इनका इस्तेमाल करता है। इसके अलावा इरेमिन की भाषा की उस भाषा से समानता के कारण, जिसका इस्तेमाल हमारे समाचारपत्रो मे उन वर्षों मे हुआ था, जब लोगों को गैर-कानूनी ढग से यातनाएं दी जाती थी, पाठक के मन मे अनिवार्य रूप से वितृष्णा पैदा होगी और वह लेख के उद्देश्य के प्रति सतर्क हो जायेगा। अन्तत ये सब बातें बुनियादी तौर पर नैतिकता का प्रश्न हैं।

लेकिन मैं आपका ध्यान एक अन्य बात की ओर आकृष्ट करना चाहती हू। अर्थात् इन दोनो लेखों के लेखको के प्रयासो की ओर—मुकदमे से पहले और उन लोगो के स्थान पर जो इस मुकदमे का संचालन करेंगे—आकृष्ट करना चाहूंगी, जिसमे उन्होने स्वयं अपने निर्णय दिये हैं, और यह कहा जा सकता है कि ये पहले से तैयार निर्णय हैं और इन्हे अदालत मे मुकदमे की सुनवाई को प्रभावित करने के उद्देश्य से प्रकाशित किया गया है।

इरेमिन ने अपने अभियोग स्पष्ट रूप से और सटीक ढग से निर्धारित किये है: आतंक फैलाने का प्रोत्साहन देना, सोवियत शासन के विरुद्ध अपराध, साम्यवाद के सर्वाधिक उन्मादपूर्ण और क्रूर शत्रुओ को सहायता और समर्थन देना, युद्ध लिप्सुओ को सहायता देना। केदरीना, जो यह दावा करती हैं कि वे सिन्यावस्की और डेनियल के अपराध की व्याख्या कानूनी शब्दावली मे प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं कर रही हैं, केवल कुछ पैराग्राफो के बाद ही "सोवियत विरोधी प्रचार" और "रक्त रजित युद्धो और सत्ता हथियाने के षडयन्त्रो के फासिस्ट कार्यक्रम का एक उदाहरण" जैसी बाते कह कर केवल यही करती हैं। अदालत को अभी यह निर्णय करना है कि क्या अभियुक्तो की गतिविधिया सोवियत व्यवस्था और इसके कानूनो के विरुद्ध अपराध हैं, सरकारी वकील, सफाई पक्ष के वकील, गवाह और वे सब लोग जो जटिल न्यायिक कार्यविधि मे हिस्सा लेते हैं, वे सब ऐसी "परिष्कृत बातो" को अनावश्यक समझते है, क्योकि उनके लिये प्रत्येक बात पहले से ही स्पष्ट है। मेरी समझ से यह अदालत का खुल्लम-खुल्ला अपमान है और उस महत्वपूर्ण कार्य का भी, जो उसके समक्ष प्रस्तुत है—यह असम्मान इस हेत्वाभासवादी दृष्टिकोण की सीमा तक पहुच जाता है कि न्याय व्यवस्था एक थोथी औपचारिकता भर है। मुझे इस बात पर आश्चर्य है कि राष्ट्रीय समाचारपत्र-जगत के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण समाचारपत्रो ने ऐसे लेखो को, इन पर किसी कप्रार की सम्पादकीय टिप्पणी या विचार के बिना, प्रकाशित किया।

एक अन्य बात को भी मैं जोर देकर कहना चाहती हू। यह बात उन लोगों पर भी स्पष्ट है, जिन्हे कानूनी मामलो का नही के बराबर ज्ञान है, कि किसी लेखक पर मिथ्या प्रवाद फैलाने के आरोप पर केवल इसलिए मुकदमा नही चलाया जा सकता कि उसने अपनी रचनाए विदेश मे प्रकाशित की (इसके लिए उपयुक्त अदालत, जनमत की अदालत है) बल्कि लेखक पर उसकी रचना के तोड़-फोड को प्रोत्साहन देने वाले और गैर-कानूनी स्वरूप पर ही

मुकदमा चलाया जा सकता है। अतः अदालत के समक्ष अत्यधिक ध्यान देने योग्य, गम्भीर और दायित्वपूर्ण कार्य यह है कि वह महत्वपूर्ण प्रमाणो और गवाहियों के स्वरूप की व्याख्या करे। इसी बात पर पूरी जांच आधारित है और इसी पर अभियुक्तो के भाग्य का निपटारा निर्भर करता है और इसी कारण से यह बात विशेष रूप से गलत है कि इस सम्बन्ध मे अदालत के सदस्यों को प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है। आखिरकार अदालत स्वयं अपने विशेषज्ञो का चुनाव करती है और सदा उनकी सहायता प्राप्त कर सकती है।

इसके बावजूद अपने लेखों में, इरेमिन और केदरीना ने यह प्रभाव उत्पन्न करने की चेष्टा की है कि यहा ऐसी कोई समस्या मौजूद नही है। वे कथा साहित्य को (चाहे इसका कलात्मक महत्व कुछ भी क्यों न हो) उत्तेजना फैलाने वाले या मिथ्या प्रचारात्मक साहित्य, नारो और आह्वानों का समानार्थक बताते है और वे यह कार्य इतने हल्के दिल से करते हैं, मानों इन सब बातों को एक दूसरे के समान बताना पूरी तरह से स्वाभाविक और उचित हो। इस प्रकार केदरीना, टेरट्ज़ की सब कलात्मक विधाओ (और इन बातों में वह अत्यधिक कल्पना पर आधारित कथ्य, एक साथ कई स्तरो पर होने वाले व्यंग्य चित्रण, विशिष्ट शैली में विवरण और विख्यात लेखकों की शैली के व्यंग्यात्मक अनुकरण का उल्लेख करती हैं) को एक साथ लेती हैं और बिना किसी संकोच और शका के, इन्हे सोवियत विरोधी प्रचार के दो या तीन नपे तुले विषयों को छिपाने के लिए इस्तेमाल की गई धोखे की टट्टी बताती हैं। अपनी बात को सिद्ध करने के लिये, केदरीना एक ऐसे माध्यम का सहारा लेती हैं, जिसे साधारण साहित्यिक शब्द विद्रूप की कोटि मे भी नही रखा जाता। जहां केवल सम्बन्धित लेखक की साहित्यिक प्रतिष्ठा ही दाव पर लगी होती है, किसी अदालत का निर्णय नही, वह लेखक की रचनाओ के पात्रो के शब्दो और कार्यों को स्वयं लेखक के विचार और उनकी प्रवृत्तियां बताती हैं। वे बस इस सम्बन्ध मे इतना भर कहना पर्याप्त समझती है : "टेरट्ज को उसके पात्रों के घृणित ससार से किसी भी हालत मे अलग नहीं किया जा सकता।" इरेमिन ने भी अर्जाहक के विरुद्ध यही तरीका अपनाया है: अपने "नायक" के मुंह से लेखक, पाठक की ओर उन्मुख होता है और उन्हे निम्न तरीका अपनाने का सुझाव देता है......" अपने दृष्टिकोण के समर्थन मे केदरीना ने भी एक गवाह का उद्धरण दिया है, लेकिन यह गवाह पूरी तरह से पूर्वाग्रहग्रस्त एक श्वेत रूसी प्रवासी फिलीपोव है। हम यह जानते हैं कि पेरिस मे प्रकाशित ए० कुज्नित्सोव की पुस्तक 'कन्टीन्यूएशन आफ ए लीजेंड' की भूमिका भी ऐसी है, जिससे फिलीपोव की भूमिका का स्मरण हो आता है।[११] हम सब लोगों के मन मे आज भी उस युग की स्मृति ताजा है, जब लोगों को पेरेवेरजेव का अनुयायी होने के कारण अथवा "वीसमनवाद-मोरगनवाद"[१२] के लिये सताया जाता था और

११—देखिए मुकदमे की दूसरे दिन की करवाई मे टिप्पणी नम्बर ७३

१२—वालेरियन पेरेवेरजेव (जन्म १८८२) एक मार्क्सवादी साहित्यिक विद्वान। १९३० के बाद के आरम्भिक वर्षो मे उनकी रचनाओ को मार्क्सवाद से विमुख बताया गया

जब साहित्यिक, वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक रचनाओं में कुछ राय प्रकट की जाती थी, तो उन्हें "सोवियत विरोधी नकाब" बताया जाता था और यह कहा जाता था कि इन लोगों को बेनकाब करना आवश्यक है। यह बात सोवियत वैधानिकता और सोवियत सामाजिक व्यवस्था के हित में है कि ऐसा प्रत्येक प्रयास किया जाये—और संभवतः अत्यधिक विशेष प्रयास किया जाये—जिससे फिर ऐसी घटनाएं हमारे जीवन में कभी न घट सकें।

जिन लेखकों पर मुकदमा चलाया जा रहा है, मैं उनसे परिचित नहीं हूं। मैंने उनकी रचनाएं भी नहीं पढ़ी हैं (सोवियत समाचारपत्रों में प्रकाशित सिन्यावस्की के निबन्धों को छोड़ कर) और कहना न होगा कि मैं उनके दोष के स्वरूप या गम्भीरता की न्यायाधीश होने का दावा नहीं करती। लेकिन इसी प्रकार मैं अदालत की कारवाई में टांग अड़ाने और न्यायाधीशों पर मनोवैज्ञानिक दबाव डालने के अकुशल और विवेकहीन प्रयासों के विरुद्ध अपना बुनियादी विरोध प्रकट किये बिना भी नहीं रह सकती।

आई० रोवन्यान्सकाया

सोवियत लेखक संघ की सदस्या

१ फरवरी, १९६६ — २८, स्तुदेनचेस्काया, उल., क्वे. २६, मास्को।

और उनके नाम से साहित्यिक समालोचना का जो वाद सम्बद्ध था, उसे पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया। "वीसमनवाद-मोरगनवाद" के लिये पृष्ठ १२७ पर दी गई टिप्पणी देखिए।

सफाई पक्ष की ओर से प्रस्तुत प्रमाण

(जिनका उपयोग नहीं किया गया)

नीचे प्रमाणपत्रों के रूप में जो चार पत्र और वक्तव्य दिये गये हैं, वे सफाई पक्ष की ओर से विशेषज्ञों की गवाही के रूप मे पेश किये गये थे, लेकिन अदालत ने इन्हे मन्जूरी नही दी। सिन्यावस्की के वकील ने, आईवानोव से वक्तव्य देने का अनुरोध किया था। गोलोमश्तोक को सरकारी वकील ने इस्तगासे के गवाह के रूप मे बुलाया था, लेकिन बाद मे स्वयं उन पर ही ऐसी गवाही देने से इनकार करने के आरोप पर मुकदमा चलाया गया, जिसके आधार पर सिन्यावस्की को दण्डित किया जा सकता था। डेनियल के वकील ने याकोवसन का नाम सफाई पक्ष के गवाह के रूप मे दिया था, लेकिन उन्हे बुलाया नही गया।

वी० डी० मैनीकर का पत्र

सेवा मे,
मास्को नगर न्यायालय,
प्रतिलिपि सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति
रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य का सर्वोच्च न्यायालय
"इज्वेस्तिया" के सम्पादक

मुझे सोवियत और विदेशी समाचारपत्रो मे प्रकाशित लेखो से यह पता चला है कि लेखक ए० सिन्यावस्की और लेखक वाई० डेनियल को सोवियत विरोधी प्रचार के अभियोग पर गिरफ्तार कर लिया गया है।

इनके मुकदमे की सुनवाई के दौरान इनके अभियोग को सिद्ध करने के लिये जिन दस्तावेजो का इस्तेमाल किया जायेगा (रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा ८८ और ८३) वे संभवतः विदेशो मे उनके साहित्यिक नामों "एब्राम टेरट्ज" और "निकोलाई अर्जाक" से प्रकाशित साहित्यिक रचनाएं होंगी और क्योंकि मैं इन रचनाओ से परिचित हूं अत: इसे मैं अपना अधिकार (धारा ७०, भाग २ और ३) और दायित्व (रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा ७३) समझता हूं कि मैं इस मामले के बारे मे जो कुछ भी जानता हूं उसे आपके सामने प्रस्तुत करूं। मैं आशा करता हूं कि रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड

प्रक्रिया सहिता की धारा ७०, भाग ३ और धारा १६२ के अनुसार अदालत मेरे निम्नलिखित बयान को सार्वजनिक रूप से घोषित करेगी अथवा मुझे ऐसा करने की अनुमति देगी।[1]

"ए० टेरट्ज़" और "एन० अर्जहक" के साहित्यिक नाम से प्रकाशित रचनाओ का सूक्ष्म निरीक्षण करने से पता चलता है कि .

(क) यह साहित्यिक रचनाए है,

(ख) इन रचनाओ मे जो राजनीतिक विषय वस्तु है वे व्यक्तिपूजा और उसके दुष्परिणामो की आलोचना से पूर्ण है, जो बात पार्टी के २० वे अधिवेशन के समय से लागू सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और पूरे देश की नीति के अनुरूप है,

(ग) उक्त रचनाओ के (चाहे पूरी रचनाओ के अथवा उनके कुछ अंशो के) सोवियत विरोधी प्रचार के उद्देश्य से कथित उपयोग के लिये (पुस्तिकाओ, समाचारपत्रो मे प्रकाशित लेखो, प्रसारण आदि के रूप मे इनके उपयोग) लेखको को उस समय तक दोषी नही ठहराया जा सकता जब तक उन्होने इसके लिये अपनी अनुमति न दी हो।

इन तीन बातो मे से पहली के सम्बन्ध मे मैं एक औसत पाठक से अधिक योग्य होने का दावा नही कर सकता लेकिन मैं अदालत का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हू कि इन रचनाओ के प्रति अपने अत्यधिक कटु और कठोर दृष्टिकोण के बावजूद न तो साहित्यिक गज़ट ने (२२ जनवरी, १९६६ का अक), जो सोवियत लेखक सघ का मुख पत्र है, और न ही डी० इरेमिन के लेख मे (इजवेस्तिया, १३ जनवरी १९६६) इन्हे साहित्यिक रचनाओ के अलावा अन्य कुछ नही माना गया है। यहा तक कि साहित्यिक विशेषज्ञ, जैड केदरीना ने भी "अपने प्राय कभी भी समाप्त होते न दिखाई पड़ने वाले शब्दाडम्बर की समाप्ति के बाद" इन रचनाओ की "प्रचारात्मक क्षमता" को अत्यधिक कम महत्व दिया है और लेखको के दोष की व्याख्या करने से स्वय को बचाया है और उन्होंने यह काम जिस सतर्कता से किया उसे समझा जा सकता है।

यह बात ऐसे प्रत्येक पाठक पर स्पष्ट है, जो हमारे देश के सच्चे सम्मान और हित की चिन्ता रखता है।

टेरट्ज और अर्जहक की कहानियो का काल वे वर्ष है जब स्तालिन, पार्टी और सरकार के अध्यक्ष थे और राज्य सुरक्षा सेवाए बेरिया के अधीन थी। इनमे उन वर्षो का भी विवरण है जब इच्छाशक्तिवाद और सापेक्षतावाद हमारे देश की राजनीति, अर्थशास्त्र और सस्कृति पर बुरा प्रभाव डाल रही थी।

१—यहा दण्ड प्रक्रिया सहिता की जिन धाराओ का उल्लेख किया गया है, उन मे दस्तावेजों के प्रमाण के रूप मे उपयोग (धारा ८८ और ८३), प्रमाण और गवाही प्रस्तुत करने के प्रत्येक व्यक्ति के अपनी निजी हैसियत मे अधिकार और दायित्व (धारा ७० और ७३) तथा प्रमाणो और बयानो के रूप मे प्रस्तुत दस्तावेजो को सार्वजनिक रूप से घोषित करने की व्यवस्था (धारा १९२) का विवरण है।

जहां तक मेरी जानकारी है पार्टी का कोई भी ऐसा दस्तावेज नही है, जिसमें यह दावा किया गया हो कि स्तालिन की मृत्यु और बेरिया को अपदस्थ करने के बाद व्यक्ति पूजा सम्बन्धी सब अभिव्यक्तिया समाप्त हो गई। वस्तुतः, केन्द्रीय समिति की अक्तूबर[2] (१६६४) मे हुई महासभा की कारवाई का विवरण ठीक इससे विपरीत बात प्रकट करता है। इसी प्रकार १६६५ में आयोजित महासभाओं की कारवाइयो के विवरणो से भी यही पता चलता है तथा ३० जून १६५६ को केन्द्रीय समिति ने जो प्रस्ताव स्वीकृत किया और जो आज भी लागू है उसका यह शीर्षक भी इस बात को स्पष्ट करता है : "व्यक्ति पूजा और इसके परिणामों को समाप्त करने के बारे मे।" मुझे इस बात का संदेह है कि कोई भी अदालत कामरेड पामीरो तोलियाती पर सोवियत विरोधी प्रचार करने का इसलिए आरोप लगा सकती है क्योंकि उन्होंने यह लिखा कि सोवियत संघ मे "व्यक्ति पूजा के शेष चिन्हों को जिस गति से समाप्त किया जा रहा है, वह अत्यधिक धीमी है" (प्रावदा, १८ अगस्त १६६४)।

टेरट्ज और अर्जहक ने व्यक्ति पूजा सम्बन्धी अभिव्यक्तियो के किन विशेष पहलुओं पर प्रहार किया? संक्षेप मे इस प्रश्न का उत्तर दे पाना कठिन है। सोल्झनित्सीन या एहरिनबर्ग ने भी उन लोगो का इतना सजीव चित्रण नही किया है, जो व्यक्ति पूजा के अपने विशिष्ट गुणो से सम्पन्न हैं। और इसके बावजूद लेखकों ने इन विशेषताओं को कभी भी सोवियत जीवन अथवा पूरे सोवियत समाज के ऊपर लागू नही किया। प्रत्येक मामले में केवल एक अलग-थलग ऐसा पात्र है, जो इन विशेषताओ को मूर्त करता है, मुझे ऐसा लगता है कि टेरट्ज और अर्जहक ने इन्ही पात्रो की अत्यधिक प्रभावशाली साहित्यिक कुशलता से निन्दा की है। उदाहरण के लिये राजनीतिक हठधर्मी लेन्या तिखोमिरोव है (टेरट्ज की रचना दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट मे) अथवा कुटिल और वचनापूर्ण आचरण करने वाला ग्लोबोव है (टेरट्ज के उपन्यास दि ट्रायल बिगिन्स मे), जो यह उपदेश करता है कि "साध्य, साधन का औचित्य सिद्ध करता है" (जैसा कि आप देखते हैं, इसका अभिप्राय एक विशिष्ट "सोवियत व्यक्ति" से नहीं है, जैसा कि केदरीना ने जोर दे कर कहा); इसके अलावा वोलोद्या जालेस्की (अर्जहक की कहानी "दि मैन फ्राम मिनाप" मे) भी है, जो सामाजिक प्रश्नो के प्रति जैसा अनैतिक दृष्टिकोण रखता है वैसा ही अपने दैनिक जीवन मे भी; या कर्नल तारासोव है, जो राजनीति मे इच्छाशक्तिवाद का उदाहरण है (टेरट्ज की कहानी दि प्राइसिकल मे); और अन्य पिच्छलगू तथा मुखबिर है, जो इन लोगो के

२—यह वह महासभा है, जिसमें ख्रुश्चेव को बरखास्त किया गया था। उस समय समाचारपत्रों की टिप्पणी मे (जैसे १७ अक्तूबर १६६४ का प्रावदा का अंक) इस बात पर जोर दिया गया कि "व्यक्ति पूजा" के विरुद्ध संघर्ष जारी रखने की आवश्यकता है और परोक्ष रूप से ख्रुश्चेव की इच्छाशक्तिवाद और "सापेक्षतावाद" के लिये निन्दा की गई थी।

आस-पास पनपते हैं तथा कायर और प्रत्येक वस्तु मे बुरी बातें ही देखने वाले बुद्धिवादी भी (जैसे वकील कार्लिस्की या इतिहास अध्यापक टेरट्ज़ के उपन्यास दि ट्रायल बिगिन्स में)[3]।

लेकिन, जैसा कि हम जानते हैं "व्यक्ति पूजा हमारी समाजवादी व्यवस्था के स्वरूप को न तो बदल सकती थी और न ही उसे इस काम मे सफलता मिली" (सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के प्रस्ताव, ७ वा सस्करण, खण्ड ४, पृष्ठ २३१)। इसी प्रकार टेरट्ज़ और अर्जहक ने भी ऐसे पात्रो का चरित्र चित्रण किया है जो सोवियत जन के सर्वोत्तम गुणो को मूर्त करते हैं—ऐसे पात्र जो व्यक्ति पूजा की भावना और इसकी समस्त अभिव्यक्तियो के विरुद्ध सघर्ष करते है। ऐसा ही एक ईमानदार युवक सेरयोझा ग्लोबोव है, जिसे लेनिनवादी कृषक—व्यवहार के उल्लघन से आघात पहुचता है और जिसे इस विचार से आश्चर्य होता है कि शामिल का विद्रोह[3] जनमत के विरुद्ध था; ऐसी ही एक अन्य पात्र पुरानी बोलशेविक सेरयोझा की चाची है (टेरट्ज़ के उपन्यास दि ट्रायल बिगिन्स मे)। ऐसा ही एक पात्र अनातोली कार्तसेव है (अर्जहक की कहानी "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" मे)—इस व्यक्ति ने दूसरे महायुद्ध की भयकर विभीषिका को देखा है और वह उसके बीच से गुजरा है तथा विवेकहीन हत्याकाण्ड के विरुद्ध अपना विरोध प्रकट करता है। यदि वह कुछ लोगो को समाप्त करना चाहता है तो इसका कारण उन लोगो के प्रति इसलिए घृणा नही है कि वे "समाजवादी व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं और राज्य की नीति को लागू करते हैं"—बल्कि वह उनसे इसलिए घृणा करता है कि उन्होने देश को कितनी गहरी क्षति पहुचाई है।

बार-बार इस विषय की पुनरावृत्ति—अर्थात् व्यक्ति पूजा के समर्थको द्वारा सच्चे क्रातिकारी आदर्शों के कुटिल दुरुपयोग के प्रति घृणा—ए० सिन्यावस्की और वाई० डेनियल को पूरी तरह से दोष मुक्त करती है। आइए हम देखें कि इन लेखको ने क्या विचार स्पष्टतापूर्वक प्रकट किए हैं

"क्राति की तस्वीर, उन लोगो के लिये, जिन्होने इसमे हिस्सा लिया और उन लोगो के लिये भी, जिनका जन्म इसके बाद हुआ वैसी ही पवित्र है जैसी एक मृत माता की तस्वीर किसी भी व्यक्ति के लिये होती है। हमारे लिये इस बात पर सहमत होना आसान है कि क्राति के बाद जो कुछ भी हुआ, वह क्राति के प्रति विश्वासघात था। लेकिन हम किसी भी

३—दि ट्रायल बिगिन्स पृष्ठ १७। शामिल (१७९८-१८७१) रूसी जाति के विरुद्ध काकेशस मे विद्रोह का नेता था। सोवियत अधिकारियो का इसके प्रति अधिकृत दृष्टिकोण अक्सर बदलता रहा है। १९३० के बाद के वर्षों मे उसकी यह कह कर प्रशसा की जाती रही कि उसने जारशाही के अत्याचारो के विरुद्ध विद्रोह किया। लेकिन ५ वे दशक के अन्तिम वर्षों मे उसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद का खरीदा हुआ, रूस विरोधी गुलाम बता कर उसकी निन्दा की गई।

स्थिति मे निन्दा और सदेह के द्वारा क्राति की स्मृति को अपमानित नहीं कर सकते।" (ए० टेरट्ज ग्रान सोशलिस्ट रियलिज्म, डिसेन्ट के १९६० सख्या १ के अक से उद्धृत)

"यदि किसी प्रकार हमारे शत्रु हमारे ऊपर विजय प्राप्त कर लेते हैं और हमे क्राति से पहले की जीवन प्रणाली अपनाने के लिये बाध्य करते हैं (या हमें पश्चिम के लोकतत्र के अधीन रखते हैं, जो कार्य भी वैसा ही होगा), तो मुझे इस बात का पूरा निश्चय है कि हम एक बार फिर वही से अपना कार्य शुरू करेंगे, जहा से हमने पहले किया था। हम क्राति से समारम्भ करेंगे।" (वही।)

"......हमे सच्चे सोवियत शासन की उन विकृतियो से रक्षा करनी होगी जो क्राति के बाद उत्पन्न हुई है।" (एन० अर्जहक "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग", दि रिपोर्टर के १६ अगस्त १९६२ के अक से उद्धृत)।

ऐसे ही बुनियादी दृष्टिकोण इन रचनाओ मे प्रकट किये गये है।

कहना न होगा कि सोवियत विरोधी प्रचारक किसी भी वस्तु का इस्तेमाल, यहा तक कि सोवियत समाचारपत्रो मे प्रकाशित अनेक बातो और विवरणो का इस्तेमाल अपने प्रचार मे कर सकते हैं। यहा हम एक बार फिर २० वे अधिवेशन के बाद प्रकाशित पार्टी के वक्तव्यो का उल्लेख कर सकते है। इस विषय पर सर्वोत्तम टिप्पणी केन्द्रीय समित के ३० जून १९५६ के प्रस्ताव मे हुई, जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। यह टिप्पणी इस प्रकार है :

"मार्क्सवाद-लेनिनवाद की क्रातिकारी परम्परा मे दीक्षित होने के कारण, सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने पूरे सत्य को प्रकट किया है, यद्यपि यह बडा कटु सत्य था। यह कारवाई करने मे पार्टी केवल सिद्धान्तो से ही प्रेरित हुई है। इसने यह निर्णय किया कि चाहे छोटी अवधि की दृष्टि से, स्टालिन के व्यक्तित्व की पूजा की निन्दा से, कुछ कठिनाई सामने आ सकती है, लेकिन लम्बी अवधि की दृष्टि से, श्रम जीवी वर्ग के बुनियादी हितो की दृष्टि से, इसके बहुत बडे और व्यापक लाभ होगे।" (सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रस्ताव, ७ वा संस्करण, खण्ड ४, पृष्ठ २२४–५)।

पार्टी के इस स्पष्ट निर्देश को देखते हुए ए० सिन्यावस्की और वाई० डेनियल के कार्य रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड सहिता की धारा १४ के अन्तर्गत आते हैं[४]। और इस कारण से इन्हे अपराध नही बताया जा सकता, क्योंकि व्यक्ति पूजा ने जो क्षति पहुंचाई और इसके जो दुष्परिणाम हुए वे इन लेखको की रचनाओ के विदेश मे प्रकाशन से हुई कथित क्षति से कही बडे और व्यापक है।

४—धारा १४ के अन्तर्गत आपातकालीन स्थिति मे किये गये कार्यो और राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के इरादे से किये गये कार्यों के लिये सम्बन्धित व्यक्ति को दण्डनीय अपराधो से मुक्ति देने की व्यवस्था है।

मै आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करने की अनुमति चाहता हू कि विदेशो मे टेरट्ज और अर्जेहक की रचनाओ को बहुत सक्षिप्त सवादो या समाचारो मे ही सोवियत विरोधी बताया गया है, और ये समाचार भी सिन्यावस्की और डेनियल की गिरफ्तारी के बाद प्रकाशित हुए। इसका एकमात्र अपवाद श्वेत रूसी प्रवासी फिलीपोव के लेख ही है।

जहा तक उन ब्रिटिश और अमरीकी समीक्षको का सवाल है, जिन्होने पूरे ध्यान से टेरट्ज और अर्जेहक की रचनाए पढी है वे ठीक इसके विपरीत राय प्रकट करते है.

"इस बात मे कोई सदेह नही है कि लेखक (टेरट्ज--बी० मेनीकर) सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की उपज हैं और वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद की विचारधारा को स्वीकार करते है • •" (सोवियत स्टडीज १९६०, सख्या ४, पृष्ठ ४३४)।" लेखक (टेरट्ज— वी० मेनीकर) क्राति को पूरी तरह स्वीकार करता है। यह नही चाहता कि क्राति से पहले की जीवन प्रणाली फिर कायम हो और वह पश्चिमी लोकतत्र की विचारधारा से भी सहमत नही है। वह केवल सोवियत जीवन और साहित्य के कुछ छिटपुट कार्यो और वातो से ही असहमत है।" (रशन रिव्यू, १९६४, सख्या ४, पृष्ठ ४११)।

"इस बात मे सदेह नही है कि अर्जेहक उन दवावो का कडाई से विरोध करता है जो एक समूहवादी राज्य मे उत्पन्न होते है। लेकिन जैसा कि टेरट्ज के वारे मे सही है, अर्जेहक की रचनाओ मे केवल इसी वात को देखने का अर्थ, बहुत अधिक वातो की उपेक्षा कर देना है।"

"अर्जेहक की रचनाओ मे प्रवल सोवियत समर्थक स्वर है" (न्यू लीडर, ८ नवम्वर १९६५, पृष्ठ १८)।

इतना ही नही, पोलैड के प्रवासी जेसलाव माइलोज भी यह कहते है कि अर्जेहक स्वय को सोवियत जीवन और साहित्य से अलग-थलग नही मानते और इनकी चर्चा करते समय वे "हम", "हमारी", आदि शब्दो का प्रयोग करते है। माइलोज के अनुसार आन सोशलिस्ट रियलिज़म शीर्षक निबन्ध "सोवियत लेखको द्वारा स्वदेश मे चलाई जाने वाली बहस का ही एक हिस्सा है···· " (डिसेन्ट, १९६०, सख्या ४)।

ऐसे ही विचार दि न्यू लीडर के १३ मई १९६३ और १९ जुलाई १९६५ के अको, दि स्लाविक रिव्यू, सख्या ३, १९६१, दि न्यूयार्क टाइम्स की ८ नवम्वर १९६४ की पुस्तक समीक्षा मे भी एसे ही विचार प्रकट किये गये है।

अन्त मे मैं अदालत का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हू कि इज़वेस्तिया के १२ जनवरी १९६६ के अक मे "दो सिद्धातघाती लेखक" शीर्षक से जो लेख प्रकाशित हुआ है, वह कानून का उल्लघन है। यह लेख रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड सहिता की धारा १८१ के अनुसार केवल "किसी अभियोग के समर्थन मे

झूठे प्रमाण और बयान" देने अर्थात् झूठा अभियोग लगाने के ही अन्तर्गत नही आता, बल्कि महत्वपूर्ण बात यह है कि इज़वेस्तिया, सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ के अध्यक्ष मण्डल का मुख-पत्र है और सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ सर्वोच्च न्यायालय के माध्यम से देश की सब निचली अदालतो की गतिविधि पर नियत्रण रखता है (सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के सर्वोच्च न्यायालय सम्बन्धी निर्देश, अनुच्छेद १ और २)। अतः, मुकदमा शुरू होने से पहले ही, रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड संहिता की धारा १६ का उल्लघन हुआ है, जिसके अनुसार न्यायाधीशों और जनवादी असेसरो को जो दण्डनीय अपराधो के मामलों की सुनवाई कर रहे हों, ऐसे वातावरण और परिस्थितियो मे अपने निर्णय लेने चाहियें, जिनमे उनके बाहर से प्रभावित होने की ज़रा भी गुन्जायश न हो।

वी० डी० मेनीकर,
सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी
की अर्थ-शास्त्र संस्था के अनुसंधान फेलो

(फरवरी १९६६ का आरम्भ)

वी० वी० आइवानोव द्वारा कानूनी सहायता कार्यालय को भेजा गया वक्तव्य

सेवा मे

वोमन जिले का कानूनी सहायता कार्यालय (कार्यालय की पूछताछ के उत्तर मे)

हाल मे एब्राम टेरटज की रचनाए पढने के बाद, जो रचनाए ए० डी० सिन्यावस्की विरुद्ध लगाये गये आरोप का आधार है, मैं यह कहता हू कि इन रचनाओं मे ऐसी कोई बात नही है, जिसके आधार पर लेखक के विरुद्ध दण्डनीय अपराध के लिये कानूनी कारवाई की जा सके।

ए० टेरट्ज की अधिकाश रचनाए, स्काज (यहा मैं इस शब्द का इसके पारिभाषिक अर्थों मे उपयोग कर रहा हू) की शैली मे लिखी गई हैं, जो हमारे साहित्य की एक परम्परागत विधा है। स्काज की एक विशिष्टता यह है कि कहानी के पात्रो मे से एक पात्र कहानी कहता है और उसे स्वय लेखक का प्रतिरूप नही बताया जा सकता। अतः, दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट जैसी कहानी मे जो वक्तव्य उत्तम पुरुष मे दिये गये है, वे उस पात्र के समझे जाने चाहियें जो कहानी कहता है न कि स्वयं लेखक के।

दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट मे लेखक ने इस पात्र के प्रति अत्यधिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया है और उपन्यास के अन्तिम अश मे यह बात विशेष रूप से स्पष्ट हो

५—युरिदिचेस्काया कोनसुल्तात्सिया : सोवियत सघ में निजी तौर पर कार्य करने वाले वकील नही हैं, और जिन लोगों को कानूनी सहायता की जरूरत होती है, वे इन कार्यालयों को आवेदन करते हैं, जो न्याय मत्रालय के अन्तर्गत काम करते हैं।

जाती है। जैसा कि स्काज़ शैली के उपन्यासों और कहानियो मे सामान्यत होता है, कहानी कहने वाले पात्र के कुछ वक्तव्य जानबूझ कर इस उद्देश्य से रखे जाते हैं, जिससे पाठक को यह पता चल सके कि कहानी कहने वाला पात्र, लेखक से बहुत अधिक भिन्न है। दि ट्रायल बिगिन्स मे भी काल्पनिक लेखक (अर्थात उपन्यास का वह पात्र जिसके शब्दो मे कहानी कही जाती है और विवरण प्रस्तुत किये जाते है) और वास्तविक लेखक के बीच का अन्तर एकदम स्पष्ट हो जाता है। इस दृष्टि से उपन्यास का उपसहार विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस कारण से, इन दो रचनाओ से लिये गये छिटपुट उद्धरणो को, चाहे इन्हे उत्तम पुरुष में ही क्यो न लिखा गया हो, एब्राम टेरट्ज़ के विचार नही बताया जा सकता और उनके विरुद्ध दण्डनीय अपराध के मुकदमे की कारवाई मे तो इनका किसी भी रूप मे इस्तेमाल नही किया जा सकता। इस बात को समझने की असफलता का अर्थ केवल साहित्य की विशिष्ट विधाओ, और विशेष रूप से स्काज़ शैली को समझने की अक्षमता (या समझने से इन्कार करना) ही कहा जा सकता है, क्योकि यह शैली रूस के गद्य साहित्य की विशेष परम्पराओ मे से है।

स्काज़ की परम्परा, जिसमे एक काल्पनिक पात्र कहानी कहता है और जो लेखक से बुनियादी तौर पर भिन्न होता है, पुश्किन के समय से शुरू होती है, जिनके कहानी सग्रह टेल्स आफ बेलकिन और दि हिस्ट्री आफ दि विलेज आफ गोर्जुखिनो मे प्रत्येक कहानी को रूसी पात्र के मुह से कहलाया गया है।

गोगोल और उनके उत्तराधिकारियो ने, विशेष रूप से दोस्तोएवस्की (जिन्होने अपने पत्रो मे इस बात का उल्लेख किया कि उनकी एक कहानी मे स्वय वे नही, बल्कि उनका एक पात्र बोल रहा था) और लेसकोव ने इसे और आगे विकसित किया। यह वर्णन शैली आगे चल कर १९२० के बाद के वर्षो के सोवियत गद्य मे, अपने विकास के चरम शिखर पर पहुची, जब इसके सैद्धातिक आधार की व्याख्या वी० एम० आईखे बाम, एम० एम० बाखतिन और साहित्यिक भाषा के अन्य शोधकर्ताओ ने प्रस्तुत की। मुझे इन सैद्धातिक अध्ययनो और सोवियत साहित्य मे स्काज के व्यावहारिक उपयोग के सम्बन्धो के बारे मे लिखने का अवसर मिला है (वी० गोदस्की की पुस्तक साइकोलॉजी आफ आर्ट, मास्को, १९६५; पृष्ठ ३९२ पर मेरी टिप्पणिया देखिए)। इन सोवियत विद्वानो द्वारा किये गये बुनियादी शोधकार्य और साहित्य की भाषा के विषय पर उनके सोवियत और विदेशी साहित्य मे योगदान के बाद, इस बात को निर्णीत समझा जा सकता है कि स्काज़ शैली के साहित्यिक गद्य मे "किसी अन्य के भाषण" (बाखतिन की अभिव्यक्ति) को जानबूझ कर प्रमुख स्थान दिया जाता है अर्थात् कहानी कहने वाले पात्र को जो लेखक से भिन्न होता है, प्रमुखता दी जाती है। आधुनिक विद्वत अध्ययनो के इस सामान्य तथ्य को एब्राम टेरट्ज़, जो एक प्रतिभाशाली लेखक हैं और जो रूस की इस विशिष्ट साहित्यिक परम्परा को आगे बढा रहे हैं और उसका विकास कर रहे हैं, की रचनाओ के विश्लेषण मे निरन्तर ध्यान मे रखा जाना

चाहिए। शब्द शास्त्र की दृष्टि से, यह बात ध्यान देने योग्य है कि स्काज़ शैली मे (और इसी प्रकार तथा इसी कारण से टेरट्ज़ की रचनाओ मे) सर्वनाम "मैं" और इसके साथ प्रयुक्त होने वाली क्रिया का अभिप्राय, कहानी के लेखक से नही होता। यहा मैं रूस के गौरवपूर्ण गद्य साहित्य से एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूं और यह सोचना मूर्खतापूर्ण होगा कि दि हिस्ट्री आफ दि विलेज आफ गोर्जुखिनो की इन पंक्तियों मे पुश्किन स्वय अपने विचार प्रकट कर रहे हैं : "मुझे साहित्य रचना का कार्य सदा ईर्ष्या योग्य लगा। मेरे माता-पिता जो हर दृष्टि से अच्छे लोग थे, लेकिन पुराने ढग से पले सीधे-सादे लोग थे, कभी भी कुछ भी नही पढते थे और हमारे पूरे घर मे वर्णमाला की उस पुस्तक को जो, मेरे लिये खरीदी गई थी, कुछ पचाग और हाल मे प्रकाशित एक पत्र लेखन कला पुस्तक को छोडकर अन्य कोई पुस्तक नही थी। या इसी प्रकार इस उद्धरण को भी लिया जा सकता है : "इस प्रकार रूसी साहित्य के प्रति अपने सम्मान के कारण, मुझे तीस कोपेक से हाथ धोना पडा, अपने वडो की डाट सुननी पडी और इस कार्य के लिये मुझे गिरफ्तार भी किया जा सकता था, और ये सब बातें व्यर्थ ही हुई।" इसी प्रकार यह सोचना भी मूर्खतापूर्ण होगा कि, उदाहरण के लिए, दि ट्रायल बिगिन्स का उपसहार उपन्यास के लेखक की गिरफ्तारी का विवरण प्रस्तुत करता है या यह कि दि मेकपीस एक्सपेरिमेट और "ग्रैफोमेनियाक्स" मे हमारे सामने स्वय लेखक के विचार प्रस्तुत हैं।

स्काज शैली के गद्य सम्बन्धी ये निर्विवाद तथ्य, इस बात को पूरी तरह स्पष्ट कर देते है कि ऐसे गद्य साहित्य के अशो का इस्तेमाल, उसके लेखक के विरुद्ध किसी दण्डनीय मुकदमे की सुनवाई मे प्रमाण के रूप मे नही किया जा सकता। इसके अलावा ऊपर जो विद्वत्तापूर्ण तर्क दिये गये है, ये प्रकट करते है कि इस शैली मे लिखा गया गद्य, अपने इस स्वरूप के कारण, एक ऐसे कानून के अन्तर्गत मुकदमे का आधार नही वन सकता, जिसमें "साहित्य" शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थो मे किया गया हो और जिसमे इस बात का उल्लेख न किया गया हो कि स्काज की बात तो दूर यहा यह सृजनात्मक लेखन पर लागू होता है। इस प्रकार, साहित्यिक सिद्धातो की दृष्टि से लेखक के विरुद्ध मुकदमा चलाने का विचार मात्र भी न्याय और तर्कसंगत नही है।

दि ट्रायल बिगिन्स और "दि आइसिकल" मे सुरक्षा सेवाओ के कुछ सदस्यो और सरकारी वकील के कार्यालय के कुछ सदस्यो के व्यग्यात्मक चित्रण है और ये सब सन् १९५३ से पहले के हैं (उपसहार को छोडकर जिसका मैंने ऊपर जिक्र किया है)। इन संगठनो की उक्त अवधि की गतिविधियो की हमारे समाचारपत्रो में वाद मे इससे कही अधिक कटु आलोचना हुई है। इस प्रकार एब्राम टेरट्ज की रचनाओ के ये अंश, अन्य अनेक साहित्यिक रचनाओ, सस्मरणो और लेखो से किसी भी रूप मे भिन्न नही हैं, जिनका हमारे देश मे १९५६ से प्रकाशन हुआ है। यदि एब्राम टेरट्ज की रचनाओं के लेखक पर सन् १९५३ से पहले की सुरक्षा सेवाओ और सरकारी वकील के कार्यालय की गतिविधियों की आलोचना

के लिये मुकदमा चलाने का इरादा है तो यह बात स्पष्ट रूप से कही जानी चाहिये। तब यह बात साफ-साफ कहनी होगी कि सिन्यावस्की के मामले की जाच, पिछले दस वर्षों मे हमारे जनमत द्वारा इन विषयो पर निर्धारित मत को उलटने का प्रयास है।

दि मेकपीस एक्सपेरिमेट कोई राजनीतिक रचना नही है और कल्पना की चाहे कैसी भी उडान क्यो न भरी जाये, इसे एक राजनीतिक रचना सिद्ध नही किया जा सकता। कहानी की कथावस्तु पूरी तरह से काल्पनिक बातो पर आधारित है, जिनका वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नही है। कहानी के नायक की चमत्कारिक मनोवैज्ञानिक शक्तियो और उनके आधार पर जो चमत्कार दिखाए जाते हैं, उनका स्मरण भर करना पर्याप्त है। अथवा इसी प्रकार कहानी मे एक प्राचीन पुस्तक के मृत लेखक का समावेश, जो कहानी के नायक की जादू भरी शक्तियो का स्रोत है, इस बात का प्रमाण है। यह सभव है कि कोई व्यक्ति, साहित्य मे इस प्रकार अतिशय काल्पनिक कथावस्तु के उपयोग का विरोध करे, लेकिन किसी भी व्यक्ति पर इस बात के लिये मुकदमा नही चलाया जा सकता। लेकिन यदि कोई इसके बावजूद इस कहानी को शुद्ध गल्प के अलावा अन्य कुछ बताने पर जोर ही देता है तो इसकी एक वैकल्पिक व्याख्या यह हो सकती है . यह कहानी हमारे एक छोटे कस्बे मे एक दुस्साहसी युवक द्वारा राजनीतिक व्यवस्था को बदलने के असफल प्रयास की कहानी है। स्वय इस युवक का चरित्र चित्रण भी बडे व्यंग्यात्मक ढग से और स्पष्ट नकारात्मक पात्र के रूप मे हुआ है। हमारे शासन के एक शत्रु के इस प्रकार चरित्र चित्रण को स्वय हमारे शासन के प्रति खतरा कैसे समझा जा सकता है ? कोई व्यक्ति चाहे तो यह तर्क कर सकता है कि लेखक को तिखोमिरोव के चरित्र-चित्रण मे सफलता मिली है अथवा नही, लेकिन यहा भी अदालत मे मुकदमा चलाने का कोई आधार नही है।

दि ट्रायल बिगिन्स मे भी अतिशय काल्पनिकता के तत्व है यह उपन्यास अतिशय काल्पनिक कहानियो के क्रम की एक कडी है और यही तथ्य इस उपन्यास की शुद्ध यथार्थवादी शब्दावली मे व्याख्या करने का निषेध करता है। हमे केवल मल-निकासी व्यवस्था मे फैलाये गये व्यापक जाल का स्मरण करना ही पर्याप्त है, जिससे उपसहार स्पष्ट हो जाता है और इसके यथार्थ और काल्पनिक स्वरूप को पूरी तरह स्पष्ट कर देता है। ऊपर जिन रचनाओ का उल्लेख हुआ है और "फेन्टास्टिक स्टोरीज" (दि आइसिकल एण्ड अदर स्टोरीज), जो स्काज शैली मे लिखी गई कहानियो के प्रतिभापूर्ण उदाहरण हैं और जिनका राजनीति से कोई सम्बन्ध नही है, एब्राम टेरट्ज को आन सोशलिस्ट रियलिज्म (मैंने इस लेख को फ्रासीसी पत्रिका "एसप्रित" मे प्रकाशित सस्करण मे १९५९ मे पढा है, और उस समय लेखक का नाम नही दिया गया था) शीर्षक निबन्ध लिखने का भी श्रेय दिया जाता है। यह निबन्ध १९ वी और २० वी शताब्दी मे हमारे साहित्य की समस्याओ के विवेचनात्मक अध्ययन के बारे मे है, जिसमे "सघर्ष के अभाव के सिद्धात"[६] के उद्गम पर व्यापक

६—"तओरिया वेजकोनफिलक्तनोस्ती" सन् १९५२ मे समाजवादी यथार्थवाद की

रूप से विचार हुआ है और जिस सिद्धात की हमारे देश मे १९५० के बाद के आरम्भिक वर्षो मे वडी कडी आलोचना हुई थी। इस निवन्ध में एन० एस० ख्रुश्चेव के कला और साहित्य सम्वन्धी कुछ वक्तव्यों पर सयत रूप से विचार किया गया है। लेकिन यह वात भी अपने आप मे लेखक के विरुद्ध मुकदमा चलाने के लिये काफी नही है। लेखक ने व्यक्ति पूजा के दौर मे मार्क्सवाद की अनेक विकृतियों की भी चर्चा की है और वार-वार इस वात पर जोर दिया है कि उनका सोवियत व्यवस्था के वुनियादी सिद्धातों से कोई मतभेद नही है, जो उनके लिये क्रातिकारी रूमानियत की आभा से दीप्त हैं। यह भी निश्चित है कि लेखक द्वारा इस विषय का प्रतिपादन दण्डनीय अपराध के लिये मुकदमा चलाने का आधार नही वन सकता। यह वात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि निवन्ध मे हमारे युग मे मार्क्सवाद की विजय और किसी भी अन्य ऐसी विचार धारा से सफलतापूर्वक होड कर सके।

इस प्रकार न, तो एब्राम टेरट्ज का गल्प साहित्य और न ही यह निबन्ध, कानूनी कारवाई का आधार वन सकता है। यदि ए० सिन्यावस्की इन रचनाओ के लेखक हैं तो उन्हे एक अदालत मे इन रचनाओं के लिये कोई सफा नही देनी है।

जहा तक ए० सिन्यावस्की के हमारे समाचारपत्रों में प्रकाशित साहित्य और कला सम्बन्धी लेखो का सवाल है, उनके वहुत ऊचे महत्व के वारे मे कोई संदेह नहीं हो सकता। क्राति के आरम्भिक वर्षों की रूसी कविता का जो संग्रह हाल मे प्रकाशित हुआ है, और ए० सिन्यावस्की जिसके सह-लेखक हैं, वस्तुतः इस विषय पर किया गया पहला गम्भीर अध्ययन है—और यह विषय सोवियत कविता के आरम्भिक युग के साहित्यिक महत्व को समझने की दृष्टि से असाधारण महत्व का है। इसी प्रकार इसकी उपलब्धियों को जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करने का भी असाधारण महत्व है। इस रचना के अलावा,

---

"विकृति" बताकर इसकी निन्दा की गई। इस सिद्धान्त के प्रतिपादक यह तर्क देते थे कि सोवियत समाज में वुनियादी संघर्ष न होने के कारण साहित्य में भी गम्भीर संघर्षों का विवरण देने की आवश्यकता नही है। सोवियत साहित्यिक समीक्षा की शब्दावली मे उपन्यासो और नाटको आदि के पात्रों (जिन्हे "नायक") कहा जाता है को सकारात्मक नकारात्मक मे विभाजित किया जाता है। "समाजवादी यथार्थवाद" के सरकार द्वारा निर्दिष्ट सिद्धांत में यह वात निहित है कि "सकारात्मक" नायकों को अपने सार्वजनिक और निजी जीवन में अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये और उन्हें कम से कम नैतिक दृष्टि से, "नकारात्मक" पात्रो पर विजय प्राप्त करनी चाहिये। स्तालिन के जीवन के अन्तिम वर्षों मे इस नियम के कड़ाई से पालन के परिणामस्वरूप, प्रत्येक उपन्यास और कहानी की मानक कथावस्तु वन गई, जिसमें अनिवार्यरूप से "सुखद समापन" होता और इससे पहले "नकारात्मक" और "सकारात्मक" पात्रों के बीच नाम मात्र का "संघर्ष" होता।

ए० सिन्यावस्की ने सोवियत साहित्य के एक इतिहास[7] के कई विस्तृत अध्याय लिखे है और उन्होने बोरिस पास्तरनेक पर एक वडा निवन्ध लिखा है। यह निवन्ध पिछले वर्ष हमारे देश मे इस महान् कवि के काव्य के पहले विद्वतापूर्ण सस्करण की भूमिका के रूप मे प्रकाशित हुआ था। सिन्यावस्की ने पास्तरनेक की कविता पर पहले जो लेख लिखे है, ये निवन्ध उसी क्रम का अगला चरण था। (यह बात उल्लेखनीय है कि पास्तरनेक अपने काव्य की सिन्यावस्की द्वारा विवेचना को वडी सम्मान की दृष्टि से देखते थे और इस विषय पर सोवियत और विदेशी प्रकाशनो मे जो कुछ लिखा गया है, उनमे से पास्तरनेक ने सिन्यावस्की की समालोचना की ही विशेष रूप से प्रशसा की)। सिन्यावस्की के अध्ययनो मे आलोच्य कविताओं के अर्थों की गहनता को उद्घाटित करने और कवि द्वारा अपनी कविताओ के लिए अपनायी गई शैली और काव्य गठन के विद्वतापूर्ण विश्लेपण का समन्वय है। पास्तरनेक की कविता सम्वन्धी अपने निवन्ध मे और उन अन्य अध्ययनो में, जिनका मैंने उल्लेख किया है, सिन्यावस्की ने कविता के ध्वनि शास्त्र और शब्द विन्यास सम्वन्धी निष्कर्ष निकाले हैं, जो काव्य की भाषा के आधुनिक सरचनात्मक सिद्धांत की दृष्टि से असाधारण महत्व के हैं। पिकासो सम्वन्धी पुस्तक सिन्यावस्की जिसके लेखको मे से हैं, कला के विद्वतापूर्ण अनुसधान के लिए वहुत महत्वपूर्ण है (विशेष रूप से शब्द शास्त्र सम्वन्धी अध्ययन की दृष्टि से)। अपने समालोचनात्मक लेखो मे ए० डी० सिन्यावस्की ने सदा वास्तविक कला और सामाजिक दृष्टि से हानिप्रद कूडाकर्कट के अन्तर को स्पष्ट रूप से दर्शाया है (इस सम्वन्ध में हमे केवल उनके शेवत्सोव के उपन्यास दि ब्लाइट की समीक्षा का स्मरण करना पर्याप्त है। और इस प्रकार उन्होने साहित्यिक कूडाकर्कट और सोवियत साहित्य की वास्तविक उपलब्धियो के अन्तर को स्पष्ट करने मे वहुत अधिक योगदान किया है। इन सब कारणो से ए० डी० सिन्यावस्की की साहित्यिक गतिविधियो मे व्याघात पडने से हमारे साहित्य के विकास पर निश्चित रूप से बुरा असर पडेगा। इसके साथ ही, ऊपर जो कुछ कहा गया है उससे यह स्पष्ट होता है कि ऐसा व्याघात, जो हमारे साहित्य के लिये हानिप्रद और इसके शत्रुओ के लिये लाभप्रद है, कानूनी दृष्टि से किसी भी प्रकार न्यायोचित नही ठहराया जा सकता।

वी० वी० आइवनोव

कैण्डीडेट आफ फाइलोलॉजिकल साइमेज (भाषा विज्ञान के डाक्टर के समकक्ष उपाधि-अनु०) सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी की स्लाव अध्ययन संस्था के स्लाव भापाओ के गठन के शास्त्रीय अध्ययन सम्वन्धी विभाग के अध्यक्ष, सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के

७—सिन्यावस्की ने विज्ञान अकादमी द्वारा प्रकाशित हिस्ट्री आफ सोवियत रशियन लिटरेचर के खण्ड १ और २ के मैक्सिम गोर्की, कवि एडवर्ड वाग्रित्स्की और दूसरे महायुद्ध की अवधि के साहित्य सम्वन्धी अध्याय लिखे हैं। (देखिए "इस्तगासे की ओर से भाषण" मे टिप्पणी नम्वर एक)

साइवेरनेटिक्स की विद्वत परिषद के भाषा और शब्दावली के प्रयोग सम्बन्धी विभाग की सरचनात्मक भाषा विज्ञान समिति के अध्यक्ष ।

ए० ए० याकोवसन का वक्तव्य

सेवा मे,

रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की सर्वोच्चसोवियत का अध्यक्ष मण्डल ।

मैं, अनातोली एलैग्जैन्द्रोविच याकोवसन, कवि और अनुवादक, सोवियत लेखक प्रकाशनगृह[8] के साहित्यमण्डल का सदस्य, वाई० डेनियल के मामले मे एक स्वतन्त्र गवाह के रूप मे अपना बयान देना चाहता था, जिनके ऊपर ए० सिन्यावस्की के साथ मुकदमा चलाया जा रहा है । लेकिन डेनियल और उनके वकील ने यह सर्वोत्तम समझा कि मैं सफाई पक्ष के गवाह के रूप मे पेश होऊ और उन्होने इसी आशय की सूचना अदालत को दी । मैं इसे अपना कर्तव्य समझता हू कि मैं अदालत के समक्ष जो बयान देना चाहता था उसका अधिक से अधिक प्रचार हो ।

मैं डेनियल को दस वर्ष से जानता हूं । मैं उन्हे अच्छी तरह से, घनिष्ठतापूर्वक जानता हू—वे मेरे मित्र है । मैं उन्हे अपने पेशे के कारण भी जानता हूं । हम लेखकों की एक ही टोली के सदस्य हैं । डेनियल भद्र, निष्ठावान, स्वतन्त्र विचार रखने वाले और उदार हैं । वे ऊचे सिद्धातोवाले निष्पृह व्यक्ति है और वे प्रत्येक दृष्टि से अपने देश के एक सच्चे सिपाही हैं और वे इस सम्मान के सर्वथा योग्य है और उन्होने युद्धकाल मे अपने देश के एक सिपाही के रूप में हिस्सा लिया और उनके देश ने फासिस्टवाद को करारी हार दी । डेनियल को सदा अपने देश और अपने देशवासियों से प्रेम रहा है, जबकि वे इसके साथ ही सदा आस्थावान अन्तर्राष्ट्रीयतावादी भी रहे हैं । उनका सदा यह विश्वास रहा है कि जो व्यक्ति अपने देश को प्रेम करता है, उसे इसके दोषो के प्रति अपनी आंखें बन्द नही कर लेनी चाहियें, बल्कि उसे इन बुराइयों के विरुद्ध सक्रिय रूप से सघर्ष करना चाहिये । इस सघर्ष मे लेखक का हथियार स्वतन्त्र रूप से मुद्रित शब्द ही हैं । मैंने अभी हाल मे ही डेनियल की विदेश मे प्रकाशित पुस्तके पढी हैं । लेकिन उनसे परिचित होने के कारण मैं इस बात पर पहले भी विश्वास नही कर पाता था कि ये पुस्तकें हमारे देशवासियों के विरुद्ध हो सकती है या हमारे समाज के विरुद्ध मिथ्या प्रवाद अथवा शत्रु भाव फैलाने वाली हो सकती है । जिन समाचारपत्रो में प्रकाशित लेखो मे यह बात कही गई उनपर मैं विश्वास न कर सका ।

डेनियल एक लेखक हैं, पेशेवर राजनीतिज्ञ नही । लेकिन एक नागरिक के रूप मे उनके निर्णय, पार्टी के २० वें और २२ वे अधिवेशनो की भावना के अनुरूप है ।

८—सोवेतस्की पिसातेल सोवियत लेखक संघ का प्रकाशक गृह ।

आगामी मुकदमे को ध्यान मे रखते हुए, मैंने उनकी पुस्तकें पढने के साधन उपलब्ध किये। रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड संहिता की धारा ७०, जिसके अन्तर्गत सिन्यावस्की और डेनियल पर अभियोग लगाया जा रहा है, उस साहित्य को सोवियत विरोधी साहित्य वताती है, जिसमे सोवियत शासन को क्षति पहुंचाने या उसे कमजोर बनाने का आह्वान किया गया हो। डेनियल की रचनाएं पढकर मैं इस बात से आश्वस्त हो गया कि वे सोवियत विरोधी नहीं हैं। ये रचनाएं शुद्ध रूप से साहित्यिक रचनाएं हैं और इनमे सोवियत विरोधी या अन्य किसी भी प्रकार का, लोगो को भडकाने का प्रयास, या राजनीतिक बयान, अथवा राय, अथवा कार्यक्रम नही है। लेकिन इन रचनाओं मे सार्वजनिक मामलो के प्रति चिन्ता व्यक्त की गई है और यह स्तालिनवाद के विरुद्ध हैं, स्तालिनवाद के दुष्परिणामो और हमारे समाज मे इसकी पुनरस्थापना के विरुद्ध हैं। उनका यह नागरिक सदेश उनकी रचनाओ के व्यंग्यात्मक आख्यान मे विरोध प्रदर्शन के रूप में प्रकट हुआ है और इसी प्रकार और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने अतिशयोक्ति का सहारा लिया है और यथार्थ जीवन का अतिशय कल्पना के आधार पर अनुशीलन किया है। हमारे समाज की किसी भी अच्छी बात का डेनियल की कहानियो में न तो मजाक उडाया गया है और न ही उनका अपमान किया गया है। यदि सदा वे अच्छी बातों का ही विवरण प्रस्तुत नही करते तो यह उनका दोष नही है, क्योकि व्यंग्य लेखन का स्वरूप ही ऐसा है। उन्होंने अपनी कहानियों के लिये जो कला-विधा चुनी है, यह उसके कारण है। (इसी विधा का चुनाव गोगोल और साल्तीकोव-शचेद्रिन ने किया था और इधर हाल में जोशचेनको और इल्फ तथा पेत्रोव ने किया है)। व्यग्य लेखन का लक्ष्य—भली बातें नही—बल्कि बुराइयां होती हैं और व्यंग्य लेखन के स्वरूप के अनुसार, डेनियल की कहानियो मे बुराइयां, व्यंग्य चित्रण और विद्रूप के रूप मे प्रस्तुत की गई है। लेकिन बुराइयो पर प्रहार करते समय, लेखक कटुता, कुटिलता या राजनीतिक अनास्था से ग्रस्त नही होता। उसका मानवीयता न्याय और अच्छाई की विजय मे अटूट विश्वास बना रहता है। "दिस इज मास्को स्पीकिंग" शीर्षक कहानी मे, जो सकारात्मक मानवतावादी विचार पूरी कहानी के अन्तरधारा के रूप मे मौजूद है, व्यग्य चित्रो के पीछे से स्पष्ट रूप से झाकता है। कोई व्यक्ति पूरे देश के लिए सार्वजनिक हत्या दिवस की योजना दुष्ट भाव से प्रेरित हो कर बनाता है (हमे यहा १९३७-३८ के आतंक और इन वर्षों के "सार्वजनिक" मुकदमो का स्मरण कर लेना चाहिये, हमे युद्ध के वाद की अवधि की अव्यवस्था, कानून विरुद्ध कार्यों, "लेनिनग्राद के मामले" "डाक्टरो के षड्यंत्र"[९] और अन्य ऐसी ही वातो का स्मरण कर

९—लेनिनग्राद के मामले (१९४९-५०) से लेनिनग्राद के पार्टी सगठन मे सदस्यो के बडे पैमाने पर सफाये से अभिप्राय है, जिसके विवरण आज तक प्राप्त नही हुए हे। इस नगर के अधिकाश प्रमुख अधिकारियो को गिरफ्तार कर लिया गया था और कुछ को गोली से उडा दिया गया था।

लेना चाहिये) । एक विचारशील सोवियत नागरिक को, एक ऐसी "कारवाई" के प्रति क्या प्रतिक्रिया दिखानी चाहिये ? कहानी के नायक की तरह ही जो स्वयं सड़कों पर घूमता है, भीड़ में जाता है, अपने निर्भीकता और आन्तरिक स्वतन्त्रता के उदाहरण से दूसरे लोगों को मनुष्य बने रहने मे सहायता देता है, यद्यपि पागलपन से भरे आदेश दिये जा चुके थे । यह अधिकांश लोगों का दृष्टिकोण है, वही सब लोगों का दृष्टिकोण बन जाता है और—जैसा कि कहानी में दर्शाया गया है—इन प्रयासो के फलस्वरूप यह सारा दुष्टतापूर्ण व्यापार निरर्थक सिद्ध हो जाता है ।

देश मे जो कुछ भी होता है, उसके लिये देश के सब लोगो की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से जिम्मेदारी होती है—"दिस इज मास्को स्पीकिंग" का कथ्य है और कहानी यह दर्शाती है कि हमारे समाज मे जिम्मेदारी की यह भावना पहले ही प्रभावशाली हो गई है ।

डेनियल की जो अन्य कहानियां विदेश में प्रकाशित हुई हैं, मैं उनके नागरिक संदेश को संक्षेप मे प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगा । मैं यह बात जोर देकर कहना चाहूंगा कि मैं इन कहानियों की चर्चा केवल एक सामाजिक समालोचना के रूप मे ही कर रहा हूं, उनकी विषय वस्तु के बारे मे नही, जो इससे कहीं अधिक समृद्ध है ।

"हैण्डस" : इस कहानी में सोवियत शासन के आरम्भिक वर्षों मे लाल आतंक[10] के आवश्यकता से अधिक बल प्रयोग और कठोरता की निन्दा की गई है । हम यह जानते हैं कि स्वयं लेनिन ने, कितने कडे शब्दों मे इनकी निन्दा की थी । हमे केवल यह स्मरण कर

डाक्टरो का षड्यंत्र दिसम्बर १९५२ मे क्रेमलिन के डाक्टरो की एक बडी टोली को जिसमे अधिकांश यहूदी थे, इस आरोप पर गिरफ्तार कर लिया गया कि उन्होने अमरीकी और ब्रिटिश जासूसी सेवाओ से साठ-गाठ करके, यहूदियों के अन्तर्राष्ट्रीय धर्मार्थ संगठन ज्वायेंट के माध्यम से षड्यन्त्र रचकर सोवियत नेताओ की हत्या करने की योजना बनाई थी । उनपर सन् १९४८ मे झदानोव की हत्या करने का आरोप लगाया गया था । मार्च १९५३ में स्तालिन की मृत्यु के बाद इन डाक्टरो को रिहा किया गया ।

१०—खुफिया पुलिस द्वारा नये सोवियत शासन के, यथार्थ और काल्पनिक, शत्रुओ के विरुद्ध बडे पैमाने पर बदले की भावना से की गई कारवाइयों के लिये प्रयुक्त सरकारी मान्यता प्राप्त शब्द । ५ सितम्बर १९१८ को जनवादी कमिसार परिषद् के एक आदेश से इस आतंक फैलाने की स्वीकृति दी गई थी । चेका, जो क्रेजवाइचेनाया कोमिसिया पो बार्बे एस कोन्त्रेवोल्युतसीएई आई सबोतभ्रेम (प्रति क्राति और तोड-फोट की कारवाइयो के विरुद्ध संघर्ष के लिए असाधारण आयोग) की स्थापना दिसम्बर १९१७ मे क्राति की रक्षा के लिये एक विशेष पुलिस दल के रूप मे की गई थी । बाद मे इसके जीपीयू, ओजीपीयू, एनकेवीडी एमवीडी आदि नाम रखे गये और इसके ऊपर आन्तरिक सुरक्षा तथा जनता के शत्रुओं के "दमन" की जिम्मेदारी रहती है ।

लेना ही काफी है कि लेनिन ने जार्जिया में सन् १९२२ मे हुई हिंसा के लिये जेरभिंस्की और ओरदज होनीकिदजे[11] की कितनी कडी भर्त्सना की थी।

"अटोनमेंट" : यह कहानी स्तालिन की व्यक्ति पूजा के कारण उत्पन्न विश्वासघात, मिथ्याभियोग और प्रवाद फैलाने के वातावरण के बारे मे है। इसमें यह बताया गया है कि हमारे देश के वातावरण के इस बुराई से शुद्ध हो जाने के बाद भी एक ईमानदार व्यक्ति को अतीत की ज्वाला, आज भी नष्ट कर सकती है और एक दुर्भाग्यपूर्ण गलतफहमी के कारण यह सब हो सकता है।

"दि मैन फ्राम मिनाप" : इस कहानी का कोई गभीर उद्देश्य नही है। यह विनोदपूर्ण, शैतानी से भरी और अधिकाशतः हल्के दिल से लिखी हुई कहानी है। लेकिन इसके बारे मे ऐसी भयावह बात क्या है ? क्या यह कभी सच हो सकता है कि कहानी मे जिस पात्र का व्यंग्य चित्रण किया गया है, वह अपनी कल्पना मे कार्ल मार्क्स को "बिना उचित सम्मान के" और प्राय पूरी तरह मे उचित सदर्भ के बिना ही स्मरण करता है ? हमें प्राय एक ऐसी ही बात मायाकोवस्की की कहानी बाथहाऊस[12] मे देखने को मिलती है। यदि स्वय कार्ल मार्क्स, जो विनोद भावना से वचित नही थे, इस कहानी को पढते तो इस पर हसते। इसके बारे मे केवल यही "पापपूर्ण" हो सकता है—और यही बात लेखको पर भी लागू होती है— कि इस का प्रकाशन विदेश मे हुआ।

लेकिन इसके बावजूद विदेशो मे साहित्यिक रचनाओ का प्रकाशन सोवियत कानून के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध नही है। इसके अलावा सोवियत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र सघ की मानव अधिकार घोषणा पर हस्ताक्षर किये हैं, जिसके अनुच्छेद १९ मे कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को हर सभव साधन से अपने विचारो के प्रचार-प्रसार का अधिकार है और इस अधिकार के उपयोग मे विभिन्न देशो की सीमाए अवरोध नही बननी चाहिये।

क्या ऐसी बात है कि विदेश मे साहित्यिक रचनाओ का प्रकाशन, दण्डनीय अपराध न होते हुए भी, किसी न किसी प्रकार अनुचित या नैतिक दृष्टि से दमन योग्य है ? नही, जब तक रचना ईमानदारी से लिखी गई रचना है, वह किसी भी ईमानदार व्यक्ति के

११—फेलिक्स जेरभिंस्की (१८७७-१९२६), चेका का प्रथम अध्यक्ष। ग्रीगोरी (सरगेई) ओरद्जहोनीकिदजे (१८८६-१९३७), प्रमुख बोलशेविक नेता, जिसके ऊपर क्राति के बाद के आरम्भिक वर्षो मे हुए काकेशिया के मामलो का दायित्व है। मार्च १९२३ मे लेनिन ने इन लोगो की और (स्तालिन की) जो भर्त्सना की थी, यदि ठीक-ठीक कहा जाये तो, सदर्भ की दृष्टि से, उल्लेख सही नही है। लेनिन चेका द्वारा हिंसा करने की शिकायत नही कर रहे थे, बल्कि ओरद्जहोनीकिदजे ने जार्जिया के अन्य बोलशेविक नेताओ के प्रति जो "उद्दण्डता" दिखाई थी, उसकी निन्दा कर रहे थे। देखिए लेनिन, पोलनोए सोब्रेन सोचिनेनी, मास्को, १९६५—खण्ड ५४ पृष्ठ ३२९।

१२ देखिए मुकदमे की "पहले दिन की कारवाई" मे टिप्पणी ३५।

दृष्टिकोण से दमन योग्य नही हो सकती। स्पष्ट है कि यदि डेनियल अपनी रचनाएं स्वदेश मे ही प्रकाशित करवाते तो अच्छा होता, लेकिन बात दुर्भाग्यवश असंभव थी। इनका प्रकाशन इस कारण से असंभव था कि आज भी भय मौजूद है। यह भय है स्वय हमारी अपनी असफलताओं के स्पष्ट और कठोर रूप से रहस्योद्घाटन का सामना करने का। इसी असमर्थता के कारण लेखक को "उपलब्ध साधनों से" अपनी रचनाओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रेरित होना पड़ा।

क्या यह बात सही है कि एक लेखक पर इस बात के लिये अभियोग लगाया जाये कि कुछ विदेशी समाचारपत्रो ने (जैसा कि इस मामले मे हुआ है) उसकी रचनाओ का उपयोग सोवियत विरोधी प्रचार के लिये किया है ? लेकिन विदेशी समाचारपत्रो ने पार्टी के २० वें और २२ वें अधिवेशनो मे जिन तथ्यो का रहस्योदघाटन किया, क्या उनका भी इसी प्रकार उपयोग नही किया और क्या तथ्यो का प्रभाव किसी भी गल्प रचना के प्रभाव से बहुत अधिक नही होता ? हमारे जीवन की जिन बातो की विदेशी प्रशसा करते हैं, वे सब हमारे लिये असम्मान की बात नही है (जैसे पार्टी का २० वा अधिवेशन) और न ही वे जिन सब बातो की आलोचना करते है वे अनिवार्य रूप से अच्छी हैं (जैसे प्रजनन विज्ञान और साइबरनेटिक्स अथवा "सार्वभौमवादियो" पर अत्याचारों के अभियान)।

साहित्यिक रचनाओं का मूल्याकन इस प्रकार नही होना चाहिये कि कोई व्यक्ति अपने सकारात्मक तरीके से, उनकी व्याख्या करे बल्कि तथ्यो के आधार पर निरपेक्ष दृष्टि से इनकी व्यख्या की जानी चाहिये। डेनियल की कहानियो मे कुछ भी सोवियत विरोधी नहीं है। यह सिद्ध करने के लिये कि इनमे सोवियत विरोधी बातें हैं, हमारे समाचारपत्रो ने गलत तरीके अपनाये हैं, बेईमानी की है। उद्धरणो को सदर्भ से हटा कर और तोड़-मरोड कर पेश किया गया, पात्रों के कथन को स्वय लेखक के विचार बताया गया। इस प्रकार तो किसी भी लेखक पर किसी भी बात का आरोप लगाया जा सकता है। पुश्किन को एक दुष्ट व्यक्ति सिद्ध किया जा सकता है (सालिएरी[13] के उद्धरण दे कर); साल्तीकोव-शचेद्रिन को दूसरो के दुख मे प्रसन्नता का अनुभव करने वाला और वचक प्रमाणित किया जा सकता है। यदुश्का गोलोवल्योव[14] के उद्धरण दे कर); चेखव को प्रतिगामी और पुरातनपथी तथा एक पतित व्यक्ति बताया जा सकता है ("दि लैटर टू ए लर्नेड नेबर" से उद्धरण दे कर), शोलोखोव को एक बेनकाब क्राति विरोधी दर्शाया जा सकता है (क्वाइट फ्लोज दि दोन के अनेक पात्रो के शब्दों के उद्धरण दे कर, जिसमें लेखक के प्रिय पात्र, ग्रीगोरी मेलेखोव के शब्द भी शामिल हैं)।

मैं भी कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूगा, लेकिन केवल वही उद्धरण जो अपने संदर्भ सहित होने के कारण लेखक के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते है :

१३—पुश्किन के नाटक मोजार्त और सालिएरी से (१८३०)।

१४—देखिए मुकदमे की "दूसरे दिन की कारवाई" मे टिप्पणी १०।

"अटोनमेंट" से 'नही, ये युद्ध मेरे लिए वैसा युद्ध नही था जैसा किसी फिट्ज या हान्स के लिए था। मैंने इस युद्ध मे केवल इसलिए हिस्सा नही लिया कि मुझे अनिवार्य भर्ती के नियम के अन्तर्गत बलात् बुला लिया गया था। यह युद्ध मेरा अपना युद्ध था।"

"तुम क्या कह रहे थे? क्या तुम रूस को गालिया दे रहे थे? हमने हमेशा रूस को गालिया दी है, सदा से, सेन्ट व्लादिमिर[15] के समय से ही। अखबार वाले लिखते हैं कि जो लोग ऐसी बाते करते हैं, वे उस हाथ को काटते है जो उन्हे भोजन और पोषण देता है। मूर्ख कही के! क्या यह मेरा अपना हाथ नही है?"

"दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" से · "तुम सोवियत शासन की ओर से हथियार उठाये हुए हो? तुम समझते हो कि किसी व्यक्ति को इसके लिए लड़ना चाहिये?"—"हा, व्यक्ति को अवश्य लडना चाहिये, सच्चे सोवियत शासन के लिये।"

"मेरे पिता गृह युद्ध के दौरान एक कमीसार थे और मै समझता हू कि वे यह जानते थे कि वे किस उद्देश्य के लिये लड रहे है। मैंने उनके पत्र पढे है और मै अनुभव करता हूं कि हमारी पीढी के लोगो को उन दिनो के बारे मे कोई भी मूर्खतापूर्ण बात करने का अधिकार नही है।"

"मैं सडक के किनारे-किनारे चलता हू, एक शात वृक्षो से ढकी जानी पहचानी सडक। ··· ·मैं अपने हाथ की पुस्तिका के स्पर्श का अनुभव करता हूं और सोचता हूं कि मैंने जो कुछ लिखा है, वह मेरी पीढ़ी और मेरी पृष्ठभूमि का कोई भी व्यक्ति लिख सकता था, जो मेरी तरह इस दुखी, इस सुन्दर देश को प्यार करता है। मेरे इस देश और इस देश के लोगो के बारे मे निर्णय उससे कही बेहतर और उससे कही बुरे रहे है, जैसे होने चाहिए थे। लेकिन कौन मुझे इसके लिये दोष दे सकता है? मैं चलते-चलते स्वय से कहता हू "यह तुम्हारा ससार है, तुम्हारा जीवन है और तुम इसके भीतर एक कोशिका हो, एक कण हो। तुम्हे किसी भी स्थिति मे भय के समक्ष घुटने नही टेकने चाहिये। तुम्हे स्वय अपने प्रति उत्तरदायी होना चाहिये और इस प्रकार तुम प्रत्येक व्यक्ति की ओर से भी उत्तरदायी हो सकोगे।" और एक अचेतन सहमति की कोमल बुदबुदाहट से, आश्चर्य से भरी सहमति मे, यह मुझे उत्तर देते हैं ये कभी समाप्त न होने वाली सडके और चौक, तटबध, पेड और इमारतो की सुषुप्त अगनबोट, जो एक विशाल कारवा मे अज्ञात की यात्रा कर रही है। यह आवाज़ मास्को की आवाज़ है।" क्या इन सब बातो से यह स्पष्ट नही हो जाता कि लेखक एक सच्चा देशभक्त है? और मैं एक अन्य देशभक्त, प्योत्र छादायेव के शब्दो का स्मरण भी अदालत को दिलाना चाहता हू: "मैंने अपने देश को आख बद क—; सिर झुका और होठो पर ताला लगाकर प्रेम करना नही सीखा है। मैं समझता हू कि कोई व्यक्ति उस समय तक अपने देश के लिए उपयोगी नही हो सकता, जब तक वह अपने देश को, उसकी सब बातो को स्पष्ट रूप से न देखे। मै समझता हू कि अन्ध-प्रेम का समय गुज़र गया

१५—रूस का पहला ईसाई शासक (११ वी शताब्दी)

है। मैं समझता हूं कि हमारा जन्म अन्य लोगो के बाद इसलिए हुआ है कि हम उनकी गलतियों, उनकी भ्रांतियों और उनके अन्ध विश्वासो को न दुहरायें।"

मैं अदालत से अनुरोध करता हूं कि वह अन्तःकरण की आवाज़ को सुने. न्याय की आवाज़ को सुने, सोवियत संघ के उन विदेशी मित्रो की आवाज़ सुने, जिन्होने सिन्यावस्की और डेनियल की सफाई और समर्थन मे अपना मत प्रकट किया है। मैं अदालत से अनुरोध करता हूं कि यह हमारे देश की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर विचार करे। मैं अदालत से अनुरोध करता हूं कि वह सिन्यावस्की और डेनियल को बरी करे।

९ फरवरी १९६६

अदालत ने मुझे एक गवाह के रूप मे पेश होने की अनुमति नही दी। डेनियल के वकील ने जिन लोगो को गवाह के रूप मे पेश करने का अनुरोध किया था, उनमे से किसी को भी अदालत मे पेश होने के लिये नही बुलाया गया।

१२ फरवरी १९६६

ए० याकोवसन

आई० गोलोमश्तोक का पत्र

सेवा मे— रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य का सर्वोच्च न्यायालय
प्रतिलिपि . "इज़वेस्तिया" और "साहित्यिक गजट" के सम्पादक

मै आप से अनुरोध करता हूं कि आप इस पत्र को ए० डी० सिन्यावस्की के मामले के काग़ज़पत्रो मे, उनकी सफाई मे एक साक्षी के रूप मे रखेगे।

मैंने विदेशो मे 'एब्राम टेरट्ज़" के नाम से प्रकाशित सब रचनाओ का बड़ी सावधानी से अध्ययन किया है। हमारे समाचारपत्रो मे (१२ जनवरी के "इज़वेस्तिया" मे इरेमिन का लेख और २२ जनवरी के साहित्यिक गजट मे केदरीना का लेख) उनकी आलोचना और १७ जनवरी के इज़वेस्तिया मे प्रकाशित श्रमिको की प्रतिक्रिया (इरेमिन के लेख के प्रति) का भी सावधानी से अध्ययन किया है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि सिन्यावस्की की गिरफ्तारी और भविष्य मे उन पर चलाया जाने वाला मुक़दमा, एक दुर्भाग्यपूर्ण गलती का परिणाम है : यह ग़लती इन रचनाओं के स्वरूप के बारे मे ग़लत-फ़हमी (जो स्पष्टतः इन रचनाओ के अपर्याप्त ज्ञान के कारण हुई) के साथ-साथ कुछ व्यक्तियो के द्वेषभाव के कारण भी हुई है। मैं इन बातो मे से एक के प्रति इस बात से आश्वस्त हुआ कि इन रचनाओ को "सोवियत विरोधी" बता कर तदनुसार व्यवहार किया गया और दूसरी बात मे इसलिए कि जिस रूप में केदरीना और इरेमिन के लेखो में रचनाओं के अंशों को अत्यधिक पाशविक ढंग से और एक खुल्लम-खुल्ला प्रवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया तथा इन रचनाओं मे यहूदी विरोध, अश्लीलता, साहित्यिक चोरी आदि बातो का

मिथ्यानुसधान किया गया। यदि यह एक शुद्ध साहित्यिक विचार विनमय होता, तो इस पर समय और श्रम बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योकि जिस व्यक्ति ने भी सिन्यावस्की की रचनाए पढी हैं, उस पर इन अभियोगो की मूर्खता स्वत. स्पष्ट है। लेकिन यह मामला केवल सिन्यावस्की के लिये ही नाटकीय परिणामों को जन्म नही दे सकता, जिन्हे दण्ड देने की धमकी दी गई है, यद्यपि वे दोषी नही हैं बल्कि हमारे देश के सम्मान को भी गहरा धक्का पहुचा सकता है। यही कारण है कि मैं सिन्यावस्की की रचनाओ के बारे मे अपनी राय देने के लिये प्रेरित हुआ हूं। चाहे इसका केवल इतना ही अर्थ क्यो न निकले कि देश का प्रत्येक व्यक्ति केदरीना और इरेमिन के दृष्टिकोण से सहमत नही हैं। ए० डी० सिन्यावस्की की रचनाओ को (जो एब्राम टेरट्ज़ के नाम से प्रकाशित हुई हैं) आधुनिक सभ्यता की वर्तमान स्थिति पर गहन विचार और यदाकदा अत्यन्त पीडादायक विचार का परिणाम बताया जा सकता है। ये रचनाए एक ऐसे प्रौढ लेखक की हैं, जिसे उन अन्तरविरोधो के प्रति गहरी अन्तर दृष्टि प्राप्त है, जो कि आधुनिक व्यक्ति को विचलित और पीडित करती है—और यह बात केवल समाजवादी समाज मे रहने वाले लोगो पर ही लागू नही होती। लेखक ने समाज से व्यक्ति के विलगाव की समस्या उठाई है। उसने मनुष्य की तकनीकी प्रगति और उसके आध्यात्मिक थोथेपन के बीच के अन्तर को स्पष्ट किया है। उसने साधन और साध्य के पारस्परिक सम्बन्धो को दर्शाया है आदि—और ये ऐसी समस्याए हैं जो आधुनिक संस्कृति का केन्द्र बिन्दु बनी हुई हैं। ये समस्याए ही काफ्का और जॉयस, फॉकनर और हेमिग्वे, बूल और स्टीनबेक, बावेल और पारस्तरनेक की रचानाओ की आतरिक अनुभूति को सार्थक बनाती हैं। ये एक अन्य अपेक्षाकृत कम प्रत्यक्ष रूप मे सगीत, सिनेमा और दृश्य कलाओ मे भी प्रकट होती हैं। जब हम पिकासो और लीजर के चित्र देखते हैं, जब हम चेपलिन, पेलिन, कावालेरोविच और आइन्सटाइन की फिल्म देखते हैं तो हमारे सामने ये समस्याए मुह दर मुह आ खडी होती है। २० वी शताब्दी के जीवन की विराट जटिलताओ ने ये समस्याए आधुनिक व्यक्ति के समक्ष ला खडी की हैं, जिसके भीतर ऐसे प्रबल अन्तरविरोध समाहित हैं जो किसी भी पूर्व युग के लिये पूरी तरह अपरिचित थे। इस बात से इन्कार करना कि ये समस्याए हमारे और अन्य समाजो के समक्ष प्रस्तुत हैं, केवल मार्क्सवाद की बुनियादी शिक्षाओ का ही विरोध करना नही है, बल्कि सामान्य ज्ञान और प्रति दिन के जीवन के हमारे अनुभवो के आधार पर उपलब्ध तथ्यो पर आख मूदना है। कोई भी व्यक्त जो आधुनिक लेखक होने का दावा करता है, इन पर अपनी आखे बन्द नही कर सकता।

अन्य लेखको की तरह ही सिन्यावस्की इन समस्याओ का अध्ययन उसी रूप मे करते है, जिस रूप मे वे उन घटनाओ और परिस्थितियो को प्रभावित करते हैं, जिन्हे वे सबसे अच्छी तरह से जानते है और सबसे अधिक प्यार करते है। उनके उपन्यासो और कहानियो की रगभूमि अन्तरिक्ष नही है और न ही कोई काल्पनिक देश, बल्कि रूस के

सामूहिक फर्जैट और छोटे-छोटे कस्बे है। ये उसी रूस का अग हैं, जिसके विस्तृत प्रदेश से वे पूरी तरह से परिचित है और जिससे वे सच्चा प्यार करते हैं। लेकिन जिन घटनाक्रमो और लोगो का विवरण उन्होंने प्रस्तुत किया है, चाहे वे अत्यधिक सटीक रूप से जीवन के अनुरूप हैं या शुद्ध कल्पना की उपज हैं, उनकी रचनाओं के लिये केवल कच्चा माल ही उपलब्ध कराते हैं—रचनाओं का सार नही। ये दो संकल्पनाए, ऐसी हैं (सार और कच्चा माल) जिन्हे वे लोग अब तक भ्रात रूप मे देखते और दर्शाते हैं जो प्रत्येक कलाकृति को राजनीतिक विचार के उदाहरण के रूप मे ही देखने और दर्शाने के आदी हैं।

हो सकता है कि किसी ऐसी ही भ्राति के कारण सिन्यावस्की की रचनाओ को "सोवियत विरोधी" बता दिया गया हो। सिन्यावस्की के विरुद्ध इसलिए मुकदमा चलाना कि वे अपनी कला के कच्चे माल के रूप मे सोवियत यथार्थ का उपयोग करते हैं, एकदम हास्यास्पद है। यह तो ऐसी बात है, मानो पिकासो पर यह अभियोग लगा कर मुकदमा चलाया जाये कि उसने मानवता को अपमानित किया है, क्योकि वह अपने चित्रो मे मानव शरीर के अंगो को विभिन्न टुकडो मे तोड कर प्रस्तुत करता है। या काफ्का को आस्ट्रिया के जनजीवन का शत्रु माना जाये अथवा फॉकनर को अमरीका विरोधी बता कर उन पर अभियोग लगाया जाये। सिन्यावस्की की रचनाओ की अनुभूति इतनी गहन और जटिल है कि उसे किसी एक सामान्य वक्तव्य के द्वारा अभिव्यक्त नही किया जा सकता। इस पर केवल कुछ विशेष मानदण्डो और विशिष्ट रूप मे ही विचार किया जा सकता है।

कहानी सग्रह फ़ैन्टासटिक स्टोरीज़ मे सकलित पहली कहानी "दि ग्राफोमेनियाक्स"[16] है।

यह कहानी मनुष्य की सृजनात्मक गतिविधि की शाश्वत आवश्यकता की कहानी है। यह एक ऐसी आवश्यकता है, जो मनुष्य के गुणो, क्षमताओ और शक्तियो का कोई ध्यान नही रखती, जो सब बाह्य परिस्थितियो से कही अधिक प्रबल होती है और जिसका लेखक ने ग्राफोमेनिया के रूप मे व्यग्यपूर्वक चित्रण किया है। इस कहानी मे लेखक ने कला के अर्थ को आध्यात्मिक आवश्यकता मान कर चिन्तन किया है, जिसका कोई निश्चित लक्ष्य नही होता, लेकिन जो मनुष्य के लिये उतनी ही आवश्यक होती है, जितनी सास लेने की क्रिया। और वे अपने विचारो को उन तथ्यो मे मूर्त करते हैं, जो उन्होंने जीवन से लिये हैं। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि यह इस कहानी सग्रह की पहली कहानी है और इसका उक्त शीर्षक "फ्राम दि स्टोरी आफ माई लाइफ" (मेरे जीवन की कहानी से) दिया गया है। लेखन की केवल एक ऐसी आवश्यकता के कारण (और रचनाओ के प्रकाशन की ऐसी ही आवश्यकता के कारण)—और किसी राजनीतिक लक्ष्य की पूर्ति के लिये नही—सिन्यावस्की ने मानो बाध्य हो लिखना शुरु किया। और उन्हे वहा सफलता मिली है, जहा कहानी का नायक असफल रहा है। इस प्रकार, इस कहानी मे लेखक को उनके पात्रो का प्रतिरूप दर्शाना

१६—दि आइसिकल एण्ड अदर स्टोरीज, पृष्ठ १५५

असंभव है और यही बात वस्तुत. उनकी सब रचनाओ पर लागू होती है। इरेमिन जैसे प्रयास, जिनके अन्तर्गत तुच्छ प्राफोमेनियाक स्त्रास्तिन के गौरव ग्रन्थो के प्रति निरर्थक और प्रभावहीन क्रोध को स्वय सिन्यावस्की के ही विचार बताना एक ऐसी बात है, जिसे साहित्यिक मामलो का अज्ञान भर कह कर उपेक्षा नही की जा सकती।

"एट दि सर्कस" शीर्षक कहानी इतनी स्पष्ट और सीधी सादी हैं तथा किसी भी सभावित राजनीतिक अन्तरधारा से सर्वथा मुक्त है कि इस पर विशेष विचार की आवश्यकता नही है (यद्यपि इस कहानी मे भी केदरीना और इरेमिन ने किसी न किसी प्रकार इसमे यहूदी विरोध के तत्व ढूढ निकालने का कमाल दिखाया है और यह बात इस आधार पर कही गई है कि कहानी के पात्रो मे से एक का नाम यहूदियो जैसा है)।

"यू एण्ड आई", "टेनेंट्स" और "दि आइसिकल" शीर्षक कहानिया छोटे लोगो अथवा जन सामान्य की यह दुखपूर्ण भावना प्रकट करती है कि उनका भाग्य अस्पष्ट और अगम्य शक्तियो पर निर्भर करता है, जो जगल के भूत-प्रेतो और समुद्री परियो अथवा ऊपर से मनुष्य के क्रिया-कलापो को देखने वाली एक रहस्यात्मक आख का स्वरूप धारण करते है, जो उसके प्रत्येक विचार और प्रत्येक कार्य पर नजर रखते हैं अथवा ये शक्तिया किसी कर्नल तारासोव का रूप लेती है, जो एक पुलिसमैन से विकसित होकर भविष्य का एक प्रकार का अर्ध-कार्बनिक मणिक बन जाता है। ये कहानिया काफ्का के दुखपूर्ण ससार, रेमीजोव की शैली और रूस की परियो की कहानियो से लिये गये चित्रो का प्रभाव दर्शाती है। लेकिन इनमे, यह निश्चय है कि, सोवियत विरोधी प्रचार नही है।

लघु उपन्यास "दि ट्रायल बिगिन्स" सार्वजनिक दिलचस्पी के मामलो से अधिक सम्बन्धित है। इसकी रचना तिथि (१९५६) को देखते हुए यह लेखक की सबसे पहली रचना है और इसका सम्बन्ध उस काल से है जो अब बीत चुका है। लेकिन यहा भी घटना-क्रम जो व्यक्ति पूजा के दौर मे घटित होता है, एक सार्वभौम विषय के विकास के कच्चे माल के रूप मे ही प्रकट होता है। यह साधन और साध्य की समस्या है। यह समस्या नई नही है। इसने दोस्तोएवस्की को पीड़ित किया है। मार्क्स ने लिखा है कि बुरे साधन सर्वोच्च साध्य अथवा उद्देश्यो को दूषित कर सकते हैं, उन्हे निन्दनीय बना सकते हैं। व्यक्तिपूजा के युग मे इस विचार को विकृत किया गया, जब इस जसुइटवादी विचार को कि "साध्य साधनो का औचित्य ठहराता है" अपनाया गया और इसके आधार पर बडे पैमाने पर गिरफ्तारियो और हजारो निर्दोष लोगो की हत्याओ को न्यायोचित सिद्ध किया गया।" व्यक्तिपूजा के युग मे इस परिणाम की आलोचना पार्टी के दस्तावेजो और सोवियत समाचार-पत्रो मे प्रकाशित अनेक लेखो मे हुई है और दि ट्रायल बिगिन्स मे इजहोव और बेरिया के अन्तर्गत फैले आतक के राज्य के, इसी अमानुषिक और मार्क्सवाद विरोधी दृष्टिकोण की आलोचना की गई है।

इस आलोचना को 'सोवियत विरोधी" कहने का अर्थ यह होता है कि व्यक्ति पूजा

के दौर मे जो कानून विरुद्ध कार्य हुए, व्यापक पैमाने पर जो गिरफ्तारियां हुई, यहूदी विरोधी जो अभियान छेड़े गये, वे उन बुनियादी विचारो की विकृति नही थे, जो सोवियत व्यवस्था का आधार हैं, वल्कि ये इन बुनियादी विचारो की स्वाभाविक अभिव्यक्ति थे। यह कहना नितान्त मूर्खता है। दुर्भाग्यवश व्यवहार मे ऐसा दिखाई पड़ता है कि साहित्यिक षडयंत्र रचना सभव है, जैसा कि केदरीना ने किया है और कहानी का पात्र, जो "हत्यारे डाक्टरो" के विरुद्ध मुकदमे की तैयारी के दौरान जाच अधिकारी के रूप मे काम कर रहा है और जिसका नाम ग्लोवोव है, के कथन को स्वय सिन्यावस्की के यहूदी विरोधी विचार वता कर सोवियत अदालतो और सोवियत जनता को भ्रान्त करने का प्रयास है, क्योकि इन लोगो ने यह उपन्यास नही पढ़ा है। लेकिन इस प्रकार की वातें प्रवाद सम्वन्धी दण्ड सहिता की तत्सम्वन्धी धारा के अन्तर्गत आती हैं, जिसमे सोवियत नागरिकों को ऐसे "तर्कों" से सुरक्षा प्रदान की गई है।

यह वात सच है कि उपसहार मे लेखक १९५६ के कोलिमा स्थित एक शिविर का विवरण प्रस्तुत करता है और इसमे अपने कहानी कहने वाले पात्र को रखता है, जिसके ऊपर "अश्लील साहित्य और सोवियत विरोधी प्रचार करने" का अभियोग लगाया गया है। इस वात के लिये सिन्यावस्की की निन्दा तथ्यो को तोडने-मरोडने के लिये की जा सकती है, क्योकि यह वात सर्व विदित है कि १९५६ तक राजनीतिक शिविर अतीत की वस्तु वन चुके थे। लेकिन क्या हमारे वर्तमान जीवन मे अतीत की पुनरावृत्ति की आशका को इस रूप मे देखने का सिन्यावस्की को अधिकार नही था? आखिरकार, स्वय उसकी गिरफ्तारी, जो एक काल्पनिक नही, वल्कि यथार्थ घटना है, केवल यही दर्शाती है कि उनका यह विचार कितना सही था। क्या यह गिरफ्तारी अतीत की एक भयानक पुनरावृत्ति नही है? इसके लिये जो कारण वताये गये हैं, वे समझ मे आने योग्य नही है और सिन्यावस्की तथा डेनियल पर समाचारपत्रो मे लेख प्रकाशित कर के जो प्रहार किया गया है, उसका स्वर सन् १९३७ की याद को ताजा कर देता है।

अन्त मे, सिन्यावस्की की अन्तिम और सवसे अधिक महत्वपूर्ण रचना, उनका उपन्यास दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट है। संभवतः यह उनकी सर्वाधिक जटिल, कथ्य की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध और विधा की दृष्टि से सर्वाधिक परिष्कृत रचना है। एक वार फिर इसके ताने वाने मे साधन और साध्य के पारस्परिक सम्वन्धो का विचार प्रकट होता है और यही इस कथा के पूर्ण साहित्यिक स्वरूप को निर्धारित करता है।

सम्मोहन क्रिया के द्वारा, माइकिलो की मरम्मत करने वाला मिस्त्री लेन्या तिखो-मिरोव वैधानिक सरकार का तख्ता उलट देता है, और ल्यूवीमोव नगर पर अपना तानाशाही शासन कायम कर लेता है। वह अपने नगर मे एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था कायम करने के अच्छे इरादे से प्रेरित होता है। लेकिन इस लक्ष्य की पूर्ति वह केवल अपनी इच्छा को दूसरो पर थोप कर ही कर सकता है। लेकिन जल्दी ही वह यह अनुभव करता है कि केवल

इच्छा से पृथ्वी पर सुख का साम्राज्य कायम नही किया जा सकता। यद्यपि उसकी इच्छा, अच्छे कार्यों या अच्छे लक्ष्य की दिशा मे प्रेरित है, लेकिन अचानक भयावह स्वप्नो जैसे प्रभाव उत्पन्न करने लगती है। "आदर्श" समाज छिन्न-भिन्न हो जाता है और स्वय तानाशाह भी भाग खड़ा होता है। वह उस परिस्थिति से भागने के लिये चिंतित है, जिसका उसने स्वय निर्माण किया है और वह स्वयं अपनी जेब मे ही छिप जाना चाहता है। यह इस उपन्यास की अतिशय काल्पनिक कथावस्तु है। क्या इस उपन्यास को हमारी क्राति, हमारे समाज के विकास पर व्यग्य अथवा उसका व्यग्य चित्रण कहा जा सकता है। नही, निश्चित रूप से नही। जहां तक यह एक व्यग्य है, यह किसी भी एक व्यक्ति की तानाशाही, किसी भी बडे पैमाने पर राजनीतिक सम्मोहन, किसी भी ऐसे महामानव का व्यग्य चित्रण है, जो यह सोचता है कि वह अपने लाभ के लिये अज्ञानी लोगो का शोषण कर सकता है। यह ऐसी बातें हैं, जिन्हे २० वी शताब्दी के मनुष्यो ने ससार के विभिन्न भागो मे देखा है। यदि यह व्यग्य चित्रण हमारे देश पर भी लागू होता है, तो केवल उस सीमा तक ही जहा तक ऐसी घटनाएं हमारे देश मे भी घटी हैं—एक बार फिर यह कहा जा सकता है कि यह बात व्यक्तिपूजा के युग पर ही लागू होती है।

अपने लेख मे जैड केदरीना ने श्वेत प्रवासी फिलीपोव के उद्धरण दिये हैं, जिसने इस उपन्यास को कम्युनिस्ट समाज पर व्यग्य बताया है। लेकिन हमे इस सम्बन्ध मे यह भी याद रखना चाहिये कि साल्तीकोव-श्चेद्रिन की हिस्ट्री आफ दि टाउन आफ ग्लूपोव को भी हमारे साहित्य के कुछ बुर्जुआ विद्यार्थियो ने सोवियत व्यवस्था पर व्यग्य बताया है। और मै यह जानना चाहता हूं कि कब से श्वेत प्रवासियो के वक्तव्यो का उपयोग सोवियत लेखको के विरुद्ध तर्क करने मे किया जाने लगा है? कोई भी लेखक अपनी रचना की किसी अन्य व्यक्ति द्वारा मनमानी व्याख्या के प्रति उत्तरदायी नही हो सकता। वह केवल उन्ही विचारो और तथ्यो के प्रति उत्तरदायी है, जो वह प्रत्यक्ष रूप से कहता है। लेकिन इस स्तर पर सिन्यावस्की की रचनाओ मे कोई भी सोवियत विरोधी बात पाना असभव है। इसके विपरीत, दि मेकपीस एक्सपेरिमेट रूस के प्रति उनके प्रेम से भरा हुआ है (बस इस सबन्ध मे केवल प्राकृतिक दृश्यो के चित्रण अथवा उस दुहरे व्यग्य से भरे दृश्य की याद करना ही काफी है जिसमे लेनिया की मुलाकात अमरीकी साम्राज्यवादियो से होती है।[17] इस उपन्यास की शैली रूसी साहित्य की सर्वोत्तम परम्पराओ के अनुरूप है और केवल जैड० केदरीना जैसा कोई विवेकहीन आलोचक ही इसके बारे मे साहित्यिक चोरी की बात कह सकता है।

सिन्यावस्की की पुस्तको मे हमे यदाकदा खुफिया पुलिस के प्रमुख सदस्यो, ऐसी टाइपिस्टो "जो पहले आने वाले किसी भी व्यक्ति की बाहो मे बध जाने को तैयार है" और "जीवन की कटुताओ से भरे असफल व्यक्तियो" के बारे मे पढ़ते हैं। लेकिन हम ऐसे पात्रो को सोवियत रूस के सब लोगो का व्यग्य चित्रण कैसे कह सकते है? ऐसी ही गलतिया जोशचेन्को

१७—दि मेकपीस एक्सपेरिमेट पृष्ठ १०८।

मातोवा, पास्तरनेक और वावेल जैसे लेखको के वारे मे भी हुई है। क्या हमारे लिये इन
नी गलतियो की पुनरावृत्ति करना आवश्यक है ?

सिन्यावस्की की प्रतिभा का स्वरूप, उन्हें एक राजनीतिक व्यग्य चित्रकार अथवा
रक के कार्य के लिये अयोग्य ठहराता है। वे महान् दार्शनिक क्षमता के लेखक है और
की रचनाओं का "सदेश" उनकी तात्कालिक सामाजिक पृष्ठभूमि से कही अधिक दूरगामी
। हो सकता है, कोई व्यक्ति उनके कुछ विचारो और दृष्टिकोणो से सहमत न हो और कोई
क्ति चाहे तो उनकी आवश्यकता से अधिक निराशावादिता के लिये निन्दा कर सकता है।
कन अभी तक किसी भी लेखक के विरुद्ध निराशावादिता के लिये मुकदमा नही चलाया
ा है।

व्यक्ति पूजा के युग मे हमारे साहित्य को. आवश्यकता से अधिक क्षति उठानी पडी
। हमे इस सूची को और नही बढाना चाहिये।

आई० गोलोमश्तोक,
कला इतिहासकार, सोवियत कलाकार सघ का
सदस्य

वक्तव्य

श्रीमती सिन्यावस्की का वक्तव्य

सेवा में—सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष
प्रतिलिपि—सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव
सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद् की राज्य सुरक्षा परिषद् के अध्यक्ष

वक्तव्य : मैं आपको सूचित करना चाहती हूं कि ६ फरवरी १९६६ को राज्य सुरक्षा समिति के एक अफसर ओलेग वासिलयेविच चिस्त्याकोव ने मुझे मेरे मित्रो मेनशुचितन दम्पति और एन० वी० किशिलोव के मार्फत धमकिया दी और कहा कि "सिन्यावस्की के मामले के गवाहो को डराने धमकाने" के तथाकथित प्रयास के लिये मुझे और मेरे एक वर्ष के पुत्र को दुखद परिणामो का सामना करना होगा।

मेरा ए० पेद्रोव और आई० गोलोमश्तोक से निरन्तर सम्पर्क है और मैं अपने मित्रो से मिलना केवल इसलिए बन्द नही कर सकती, क्योकि उन्हे गवाहो के रूप मे बुलाया जा रहा है।

जहा तक सिन्यावस्की के मामले के तीसरे गवाह, ए० रेमेजोव, का सम्बन्ध है, मैं उनसे यदाकदा ही मिली हूं और इसका यह कारण है कि पिछले दस वर्षों से इस व्यक्ति के प्रति मेरे मन मे यदि कोई भाव रहा है तो वह नापसन्दगी का ही है।

मैं नही समझती कि अपने मित्रो से स्नेह के शब्द कहना, उन्हे प्रभावित करने का प्रयास कहा जा सकता है और न ही मैं यह समझती हू कि लम्बे अर्से से किसी व्यक्ति को नापसन्द करने का अर्थ, उसे "डराना धमकाना" हो सकता है।

क्रोध तो राज्य सुरक्षा समिति के अफसरो की कारवाइयो पर आता है। मैंने दिसम्बर के मध्य मे ही सोवियत पार्टी की केन्द्रीय समिति, राज्य सुरक्षा समिति और सोवियत सघ के सरकारी वकील के कार्यालय को भेजे गये अपने वक्तव्य मे यह कहा था कि अनुचित तरीको से जाच की जा रही है। मुझे अभी तक इनमे से किसी भी सस्था से, अपने वक्तव्य का उत्तर नही मिला है। लेकिन अचानक आज मुझे इस विचित्र तरीके से जो सब कानूनी मानदण्डो का उल्लघन करता है, राज्य सुरक्षा समिति का उक्त 'सदेश" मिला।

मैं आपसे प्रार्थना करती हू कि मेरा यह वक्तव्य सिन्यावस्की के मुकदमे के कागज पत्रो मे रख दिया जाये और यह भी प्रार्थना करती हूं कि आप मुझे गैर-कानूनी कारवाइयो से सरक्षण प्रदान करें।

९ फरवरी १९६६

एम० वी० रोज़ानोवा-क्रुगलिकोवा,
ख्लेब्नी ६, केवी, ६

३. मुकदमा

पहला दिन
अभियुक्तों से जिरह
अभियोग-पत्र का वाचन

१० फरवरी को सुवह दस वजे मास्को ओवलास्त (प्रान्त) न्यायालय के एक छोटे से कक्ष मे, जिसमे १५०-१६० व्यक्ति मौजूद थे, मुकदमा शुरू होता है। रूसी सोवियत सघीय गणराज्य[1] के सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष एल० एन० स्मिरनोव की अध्यक्षता मे, जो अदालत की भी अध्यक्षता कर रहे थे और जनवादी असेसरो[2], एन० ए० चेचिना और पी० वी० सोकोलोव की उपस्थिति मे, ए० डी० सिन्यावस्की और वाई० एन० डेनियल के मुकदमे की सुनवाई शुरू होती है, जिन पर रूसी गणराज्य की दण्ड सहिता की धारा ७० के अनुभाग १ के अन्तर्गत अभियोग लगाया गया है जो इस प्रकार है .

"सोवियत शासन के विरुद्ध तोड-फोड करने अथवा उसे कमजोर बनाने के उद्देश्य से किया गया आदोलन या प्रचार अथवा राज्य के विरुद्ध विशेष रूप से खतरनाक अपराध करने की दृष्टि से किया गया आदोलन या प्रचार इन्ही उद्देश्यों, राज्य को बदनाम करने के उद्देश्य मे मिथ्या बातो के प्रचार-प्रसार, जिससे सोवियत राजनीतिक व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था की वदनामी हो और इसी उद्देश्य से इसी प्रकार की विषय वस्तु के साहित्य का प्रचार अथवा उसे मुद्रित करना अथवा अपने पास रखना छ. महीने से लेकर सात वर्ष तक की जेल की सजा से दण्डनीय है और इसके अलावा दो वर्ष से पाच वर्ष तक का निष्कासन भी दिया जा सकता है अथवा निष्कासन के बिना भी यह सजा दी जा सकती है अथवा केवल दो वर्ष से पाच वर्ष का निष्कासन भी दिया जा सकता है।"

१—मुक़दमे की सुनवाई रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य के सर्वोच्च न्यायालय ने की (जो सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय के अन्तर्गत एक उच्च न्यायालय है) लेकिन—अभियुक्तो से सहानुभूति रखने वालो और विदेशी समाचारपत्रो के प्रतिनिधियों को गुमराह करने के लिये—मुकदमे की सुनवाई मास्को प्रान्तीय न्यायालय की इमारत मे की गई।

२—जनवादी असेसर (नारोदन्ये जासैदातेली) वे व्यक्ति होते हैं, जिन्हे पश्चिमी देशो की अदालतो की जूरी जैसे सिद्धात रूप मे, कार्य करने के लिये चुना जाता है। अन्तर केवल इतना है कि उन्हे न्यायाधीश की तरह ही मुकदमे की कार्रवाई के दौरान बीच मे बोलने अथवा हस्तक्षेप करने का अधिकार होता है।

सरकारी पक्ष का नेतृत्व सहायक बडे सरकारी वकील, और राज्य के न्यायिक सलाहकार (तृतीय श्रेणी), ओ० पी० त्योमुश्किन कर रहे है और सोवियत लेखक सघ द्वारा नामज़द जन अभियोक्ता[3] ए० वासिलयेव और जैड० केदरीना है।

सफाई पक्ष के वकील ई० एम० कोगन और एम० एम० किशेनिशस्की हैं, जिनकी नियुक्ति के लिये अभियुक्तों के परिवारों ने अनुरोध किया था।

अदालत मे उपस्थित दर्शको मे प्राय. सब पुरुष ही हैं। अदालत मे विशेष निमत्रण पत्रों के द्वारा ही प्रवेश किया जा सकता है—सुनवाई के दौरान हर तारीख को अलग रग का प्रवेश पत्र इस्तेमाल किया गया और दो स्थानो पर इन प्रवेश पत्रो की जाच की जाती है। एक बार इमारत के प्रवेश द्वार पर और फिर अदालत के कमरे में जाने वाली सीढ़ियो पर। इस स्थान पर प्रवेशपत्रो के साथ-साथ दर्शको के पहचान के कार्ड भी देखे जाते हैं। सर्वत्र पुलिसमैन और अदालत के कर्मचारी दिखाई पडते हैं—गलियारो मे, प्रागण मे, प्रतीक्षा कक्ष मे। अदालत के कमरे की खिडकियों पर पर्दे डाल दिये गये है। अदालत के कमरे मे प्रतिदीप्त ट्यूबो से प्रकाश हो रहा है। खिडकियो की झिलमिलियो, दीवारो और फरनीचर पर पीला रोगन पुता हुआ है। कमरा खचाखच भरा है और अत्यधिक गर्मी महसूस हो रही है।

अभियुक्तो को अदालत के कमरे मे लाया जाता है। वे वैसे ही दिखाई पडते हैं जैसे सदा दिखाई पडते थे। उनके ऊपर जाच के दौरान पाच महीने की नजरबदी का कोई प्रभाव दिखाई नही पड रहा है। दुबले-पतले, छोटे कद के कुछ लाल रग की विना सबरी दाढी वाले सिन्यावस्की बर्फ सी सफेद नाइलोन की कमीज पहने हुए है। और इसके ऊपर उन्होने गोल कालर का काले रग का ऊनी स्वेटर पहन रखा है। वे एक अच्छे स्वभाव वाले भूत दिखाई पडते है। लम्बे, गहरे रग के और कुछ हल्के पड गये बालो और बडे सशक्त मुंह, और व्यग्रतापूर्ण ओठो वाले डेनियल काऊ-बॉय कमीज और एक घिसी हुई जाकट पहने हुए है।

प्रत्येक अभियुक्त के पीछे एक निरस्त्र सतरी है।

सरकारी वकील और सफाई पक्ष के वकील अदालत मे प्रवेश करते हैं।

अदालत का दरबान कहता है "कृपया खडे होइए" और कुछ देर बाद जोर से कहता है और पहले शब्द पर विशेष जोर दिया जाता है, "अदालत की कारवाई शुरू होती

३—जन अभियोक्ता (ओवशचेस्तवेनये ओववीनीतेली) उस व्यावसायिक संगठन द्वारा नियुक्त व्यक्ति होते हैं। अभियुक्त जिसके सदस्य होते हैं (इस मामले मे इन की नियुक्ति सोवियत लेखक संघ ने की। यद्यपि डेनियल इसके सदस्य नही थे)। कम से कम इस मामले मे इनका कार्य सरकारी पक्ष को मोटे तौर पर "विशेषज्ञ" गवाहो के रूप मे सहायता देना था।

है[४]" अदालत के सदस्य प्रवेश करते है। सबसे पहले चेचिना आती है। वे दुबली पतली स्त्री हैं और उन्होने चश्मा लगा रखा है और सादा गहरे रंग का सूट पहन रखा है। उनके पीछे स्मिरनोव आते हैं, जो ४८ वर्ष के भारी-भरकम व्यक्ति हैं, और एक सांड की तरह अपना सिर कुछ नीचे की ओर झुकाए हुए चल रहे हैं। उनकी चाल ढाल उस व्यक्ति जैसी है जो सत्ता के उपभोग का आदी हो। अन्त में सोकोलोव प्रवेश करते हैं। सुगठित शरीर, और आकर्षक व्यक्तित्व वाले ४० वर्षीय सोकोलोव, चाल-ढाल स्पष्ट रूप से बड़ी सटीक है और उनके चलने का तरीका सैनिकों जैसा है। उनका पतला चेहरा है, कनपटियों पर गड्ढे हैं और आंखो के नीचे काली झाइया पड़ी हुई हैं, जिनके बारे मे घटिया साहित्य में सामान्यत: यह कहा जाता है कि ऐश-आराम के जीवन अथवा अत्यधिक नशा करने के कारण ऐसा होता है।

ये तीनों एक मंच पर चढते हैं, जिसके ऊपर एक मेज और तीन कुर्सियां रखी हुई हैं; बीच की कुर्सी अन्य दो कुर्सियों से कुछ ऊंची है और प्रत्येक कुर्सी पर सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ का राज-चिन्ह अंकित है।

स्मिरनोव मंच पर जाने वाली सीढियो की अन्तिम सीढी पर मुश्किल से ही पहुंचे थे कि बड़े संयत स्वर मे अपना सिर पीछे घुमाये बिना ही बोले, "आप बैठ सकते हैं।"

इसके बाद सामान्य कार्यविधि सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं—क्या अभियुक्तों को अदालत के सदस्यो के प्रति कोई आपत्ति है आदि। कोई आपत्ति नही उठाई गई।

सफाई पक्ष के वकील अदालत के समक्ष अनेक प्रार्थनाए प्रस्तुत करते हैं. दुआकिन, याकांक्सन और बोरोनेल को गवाहों के रूप मे बुलाया जाये; विदेशी समाचारपत्रों में एब्राम टेरट्ज और निकोलाई अर्ज़ेहक के बारे मे जो लेख छपे हैं, उन्हे लेनिन पुस्तकालय से प्राप्त किया जाये; टेरट्ज और अर्ज़ेहक की रचनाओ के बारे मे के० जी० पोस्तोवस्की, वी० वी० आइवानोव और एल० जेड० कोपेलेव[५] के लिखित प्रमाणपत्रों को गवाही के रूप में पेश करने की अनुमति दी जाये।

४—"अदालत की कारवाई शुरू होती है" (सुद इद्योत) कि घोषणा न्यायाधीश और अदालत के अन्य सदस्यो के अदालत के कमरे मे प्रवेश के समय परम्परा से की जाती है। इसका अर्थ "मुकदमा शुरू होता है" भी हो सकता है, जो सिन्यावस्की के पश्चिम मे प्रकाशित होने वाले पहले उपन्यास का शीर्षक था।

५—वी० डी दुआकिन ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें सफाई पक्ष के गवाह के रूप में बुलाया गया। वे मास्को विश्वविद्यालय के एक सहायक प्रोफेसर (दोत्सेन्त) हैं और सोवियत कवि ब्लादिमिर मायाकोवस्की के काव्य के अधिकारी विद्वान हैं। मुकदमे के बाद दुआकिन को उनके पद से बरखास्त करने का प्रयास किया गया, लेकिन इस प्रयास को उनके सहयोगियों द्वारा कड़ा विरोध करने के कारण छोड़ दिया गया।

अदालत के सदस्य परामर्श के लिये कमरे से बाहर चले जाते हैं, फिर वापस लौटते हैं। दरबान फिर "कृपया खड़े होइए" और "अदालत की कारवाई शुरू होती है" की आवाजें लगाता है। स्मिरनोव अदालत के निर्णयो की घोषणा करता है · (१) दुआकिन को गवाह के रूप मे बुलाया जाये, (२) याकोवसन और वोरोनेल को गवाहो के रूप में बुलाने के प्रश्न को स्थगित किया जाता है; (३) टेरट्ज और अर्जहक के बारे मे प्रकाशित लेखो को लेनिन पुस्तकालय से प्राप्त किया जायेगा; (४) आइवानोव, कोपेलेव और पोस्तोवस्की के प्रमाणपत्रो को गवाही के रूप मे पेश करने की अनुमति नही है।

अन्तिम बात के बारे मे, विस्तार से समझाते हुए स्मिरनोव कहते हैं कि अदालत के समक्ष प्रतिवादियो की रचनाओ की साहित्यिक अच्छाइयो या कमियों का मसला नही है बल्कि ऐसे कार्यों का है, जो कानून के अन्तर्गत दण्डनीय हैं। अतः इनकी रचनाओ के साहित्यिक स्तर का मामले से कोई सम्बन्ध नही है।

यह घोषणा की जाती है कि कुछ गवाह और विशेषज्ञ मौजूद हैं—कोस्तोमारोव, दीमशित्स[6], प्रोखोरोव और अन्य। दो विशेषज्ञ, वाइनोग्रादोव[7] और क्रासनोव अदालत मे हाजिर नही हुए। न्यायाधीश विशेषज्ञों को उनके अधिकारो से अवगत कराता है और सरकारी वकील, सफाई पक्ष के वकील और अभियुक्तों से पूछता है कि क्या वे उक्त दो विशेषज्ञो

ए० ए० याकोबसन एक कवि और अनुवादक हैं तथा मास्को के प्रकाशन गृह सोवियत राइटर से सम्बद्ध हैं और डेनियल के एक मित्र हैं। सफाई पक्ष के गवाह के रूप मे उनकी गवाही की अनुमति नही दी गई। (मुकदमे के बारे मे उनके वक्तव्य के लिये देखिए पृष्ठ १६०)। वोरोनेल के बारे मे कोई जानकारी नही है और मुकदमे के कागजपत्रो मे उनका नाम अन्यत्र कही नही आता।

के० जी० पोस्तोवस्की (जन्म १८९२) पुरानी पीढी के सर्वोत्तम गद्य लेखको मे से हैं। स्तालिन की मृत्यु के बाद से उन्होंने रूस के उदारतावादी आंदोलन मे विशिष्ट और साहसपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी आत्मकथा 'स्टोरी आफ ए लाइफ' के पहले तीन खण्ड इंगलैंड (हार्वेल प्रैस) और अमरीका (पैन्थयिन बुक्स) मे हाल मे प्रकाशित हुए हैं।

वी० वी० आइवानोव (जो प्रसिद्ध सोवियत लेखक वी० सोवोलोद आइवानोव के पुत्र हैं) एक प्रमुख भाषाविद हैं (उनके वक्तव्य के लिये देखिए पृष्ठ १५४)। एल० जैड० कोपेलेव (जन्म १९१२) साहित्यिक समालोचक हैं और उन्हे पश्चिम यूरोप के साहित्य, विशेष रूप से जर्मन भाषा के साहित्य मे विशेषज्ञता प्राप्त है। उन्होंने सैमुयल बेकेट, टॉमस मन, हेमिंगुवे, ब्रेकट और काफ्का के साहित्य पर निबन्ध लिखे हैं।

६—अलैग्जेंडर दीमशित्स, ओक्त्यावर नामक पत्रिका से सम्बद्ध एक साहित्यिक समालोचक है।

७—वी० वी० वाइनोग्रादोव विख्यात भाषाविद् और साहित्यिक विद्वान हैं।

की अनुपस्थिति मे ही मामले की सुनवाई शुरू करने पर सहमत हैं ? इस पर सब अपनी सहमति देते हैं। न्यायाधीश यह भी घोषणा करता है कि मनोविज्ञान, हस्तलेख और साहित्य सम्बन्धी विशेषज्ञ गवाहो को भी बुलाया गया है।

इसके बाद अदालत का पेशकार, सिन्यावस्की और डेनियल पर रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड संहिता की धारा ७० के अनुभाग १ के अन्तर्गत अपराध करने के लिये अभियोगपत्र पढ कर सुनाता है।

संक्षेप मे अभियोग इस प्रकार है :

अमरीका, फ्रास, ब्रिटेन और अन्य पूजीवादी देशो मे तथाकथित "सोवियत साहित्यिक गुप्त सगठनो" की रचनाओ का व्यापक रूप से प्रचार और प्रसार किया जा रहा है। सोवियत जनता, उनकी सरकार, सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी नीतियो की निन्दा के लिये साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावादी, सैद्धातिक तोड़-फोड के साधन उपलब्ध करने की ताक मे लगे रहते है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये गुप्त गतिविधियां करने वाले लेखको की प्रवाद फैलाने वाली सोवियत विरोधी रचनाओ का उपयोग किया जाता है और शत्रुतापूर्ण प्रचार करने वाले लोग इन्हे सोवियत सघ के जीवन का यथार्थ चित्रण बताकर इनका प्रचार-प्रसार करते है। ऐसी रचनाओ मे एब्राम टेरट्ज के उपन्यास 'दि ट्रायल बिगिन्स' और 'ल्यूबीमोव'[8] और लेख 'आन सोशलिस्ट रियलिज्म' तथा निकोलाई अर्जेहक की रचनाएं "दिस इज मास्को स्पीकिग", "हैड्स", "अटोनमेट' और "दि मैन फ्राम मिनाप" आती हैं। राज्य सुरक्षा सगठनो ने यह सिद्ध किया है कि सिन्यावस्की ने स्वय को छद्म नाम एब्राम टेरट्ज और डेनियल ने स्वय को छद्म नाम निकोलाई अर्जेहक की आड में छिपाया है।

अभियुक्तो को सितम्बर १९६५ मे गिरफ्तार किया गया।

जाच से पता चला है कि सिन्यावस्की और डेनियल ने, अनेक प्रश्नो पर सोवियत राज्य के प्रति शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाने के बाद, सन् १९५६ से अपनी रचनाए विदेश भेजनी शुरू की।

उपन्यास 'दि ट्रायल बिगिन्स' मे सिन्यावस्की व्यक्ति पूजा[9] की आलोचना की आड

८—मुकदमे की कारवाई के विवरण मे सर्वत्र, दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट और दि आइसिकल एण्ड अदर स्टोरीज को उनके रूसी शीर्षको, ल्यूबीमोव और फैंटास्टिक स्टोरीज से ही संबोधित किया गया है।

९—"व्यक्तिपूजा" (कल्त लिचनोस्ती) स्तालिन को देवता तुल्य बनाने के प्रयासो और कारवाइयों के लिये सोवियत रूस मे अधिकृत रूप से प्रयुक्त परिष्कृत शब्दावली है। स्तालिन की ये कारवाइयां उस अवधि मे अपनी चरम सीमा पर पहुंची, जब वे पार्टी और सरकार का पूरा नियंत्रण केवल अपने हाथो मे ले चुके थे (ख्रुश्चेव के अनुसार सन् १९३४

मे सोवियत व्यवस्था और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धातो की खिल्ली उडाता है। वह मार्क्सवादी सिद्धात और मानव समाज के भविष्य के विषय मे शत्रुतापूर्ण प्रवाद फैलाते हुए लिखता है (उद्धरण। यहा और इसके बाद भी डेनियल और सिन्यावस्की की रचनाओ के उद्धरणो को लिख पाना सभव नही हुआ)।

सन् १९५६ मे सिन्यावस्की ने 'आन सोशलिस्ट रियलिज्म' शीर्षक प्रबन्ध लिखा, जिसमे उसने एक सोवियत विरोधी दृष्टिकोण से मार्क्सवादी सिद्धातो मे सशोधन करने का प्रयास किया। यह प्रबन्ध सोवियत सस्कृति मे सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख नेतृत्व के विरुद्ध है। लेखक साम्यवाद को एक "नया धर्म" बताता है और सोवियत समाज के जीवन के प्रत्येक पहलू का निन्दात्मक दृष्टिकोण से अनुशीलन करता है जैसे "मानव व्यक्तित्व के प्रति हिंसा", जैसी अभिव्यक्ति और सोवियत साहित्य की समस्त उपलब्धियो को "धर्मवादी मार्क्सवादी सिद्धात[10]" बताकर उनकी निन्दा करता है।

सन् १९५६ मे सिन्यावस्की ने डेनियल को अपना यह प्रबन्ध दिखाया।

सिन्यावस्की ने अपनी रचनाए मास्को मे फ्रास के भूतपूर्व नौसैनिक सहचारी की पुत्री, पेल्तियर-जामोयस्का की मार्फत विदेश भेजी।

दिसम्बर १९५६ मे उसने जामोयस्का को अपना उपन्यास 'दि ट्रायल बिगिन्स' और प्रबन्ध 'आन सोशलिस्ट रियलिज्म' दिया और यह भी बताया कि वह किस छद्म नाम से इन रचनाओ को विदेशो मे प्रकाशित कराना चाहता है। बाद मे उसने रेमेजोव[11] की मार्फत निबन्ध का अन्तिम भाग भेजा, जो उस समय फ्रास की यात्रा पर जा रहा था।

बुर्जुआ मिथ्या प्रचारको ने बडे सक्रिय रूप से विदेशो मे सिन्यावस्की की रचनाओ का प्रचार किया। उदाहरण के लिये, पिछले कुछ वर्षो मे 'दि ट्रायल बिगिन्स' का प्रकाशन विभिन्न देशो मे विभिन्न सोवियत विरोधी प्रकाशको द्वारा २४ भाषाओ मे हुआ है। एक सस्करण पर एक सोवियत विरोधी सगठन का नारा छपा हुआ है और यह सगठन सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी को समाप्त करने का आह्वान करता है। सन् १९५९, १९६० और १९६२

से ही यह स्थिति थी) और उनका यह निरकुश शासन ५ मार्च १९५३ को उनकी मृत्यु के समय तक कायम रहा।

१०—यहा अभियोगपत्र तैयार करने वालो ने "टेलियोलॉजिकल" को "थियोलॉजिकल" (धार्मिक) समझने की गलती की।

११—आन्द्रेय रेमेजोव मास्को के विदेशी साहित्य पुस्तकालय मे अनुसधान सहायक हैं अथवा थे। "आइवानोव" के नाम से उन्होने विदेश मे "इज देयर लाइफ आन मार्स ?" शीर्षक नाटक और एक प्रबन्ध "अमेरिकन पैन्गस आफ दि रशियन कान्सेस" (यह निबन्ध अग्रेजी मे एनकाउन्टर के जून १९६४ के अक मे प्रकाशित हुआ) प्रकाशित किया। अदालत मे उनसे हुई जिरह के लिये देखिए दूसरे दिन की कारवाई मे गवाहो से जिरह।

मे इस उपन्यास को पौलैंड के प्रवासियो की एक संस्था ने प्रकाशित किया और इसे रेडियो लिबर्टी[१२] से प्रसारित किया गया। जिसने इसके प्रसारण से पहले सोवियत विरोधी भूमिका बांधी और इस कहानी को "सोवियत संघ के जीवन के बारे मे एक रहस्योद्घाटन" बताया।

सिन्यावस्की के सोवियत विरोधी विचारो से सहमत होते हुए डेनियल ने उसकी रचनाओ पर सहमति प्रकट की और इन रचनाओ को विदेश भेजने पर भी अपनी सहमति दी तथा सिन्यावस्की को स्वय अपनी कहानी "हैंड्स" पढ़ने के लिये दी। यह कहानी १९५६-५७ मे लिखी गई है और इस मे सोवियत व्यवस्था और सोवियत शासन पर विद्वेषपूर्ण प्रहार किये गये है और इसमें लोगो से कहा गया है कि उन्हे सोवियत शासन द्वारा लोगो के विरुद्ध की गई कथित हिंसा का प्रतिशोध लेना चाहिये।

सन् १९५७ की शरद् ऋतु मे डेनियल ने इसी माध्यम का सहारा लेते हुए ज़ामोयस्का की मार्फत अपनी कहानी विदेश भेजी। अपनी रचनाओ के सोवियत विरोधी स्वरूप से परिचित होने के कारण और स्वय को छिपाने के उद्देश्य से उसने अपना छद्म नाम, निकोलाई अर्जहक रखा।

"हैंड्स" शीर्षक यह कहानी पेरिस स्थित पोलिश भाषा की पत्रिका कलचुरा के १९६१ के खण्ड सख्या ९ मे प्रकाशित हुई।

सिन्यावस्की ने १९६१ मे 'ल्यूबीमोव' शीर्षक उपन्यास लिखा, जो समाजवाद के विरुद्ध है। सिन्यावस्की समाजवादी समाज को मनुष्य के स्वभाव के विपरीत और एक विकृति दर्शाता है। सोवियत राज्य को भयकर गरीबी से ग्रस्त दिखाया गया है तथा लोगो को शराब के नशे मे धुत रहने वाला बताया गया है और यह भी कहा गया है कि लोग भेड़-बकरियो के झुण्ड की तरह हैं अर्थात् राजनीति के प्रति उदासीन हैं। कहानी मे वी० आई० लेनिन पर आक्षेप किये गये है। सिन्यावस्की ने यह उपन्यास डेनियल को दिखाया और सन् १९६३ की शरद् ऋतु मे इसे विदेश मे प्रकाशन के लिये ज़ामोयस्का को दिया। सोवियत राज्य के शत्रुओ ने इस रचना के सोवियत विरोधी स्वरूप की यथावत प्रशसा की, इसे रेडियो लिबर्टी ने प्रसारित किया और बुर्जुआ समाचारपत्र इसके सोवियत विरोधी स्वरूप के कारण प्रसन्नतापूर्ण उन्माद से भर उठे। (उद्धरण)

डेनियल ने "दिस इज मास्को स्पीकिंग" शीर्षक कहानी लिखी, जिसमे साम्यवाद और सोवियत सरकार के ऊपर प्रहार किये गये हैं। इस कहानी मे झूठे तरीके से और

१२—'पोलैंड के प्रवासियो की एक सस्था" से अभिप्राय पेरिस स्थित पत्रिका कलचुरा से है, जिसका उल्लेख बाद मे किया गया है। रेडियो लिबर्टी एक ऐसा रेडियो केन्द्र है, जो म्यूनिख मे सोवियत रूस की विभिन्न भाषाओ, (मुख्यत रूसी भाषा मे, लेकिन अन्य भाषाओं मे भी, जैसे यूक्रेनी और जार्जिया की भाषा) मे प्रसारण करता है। इसके कर्मचारी सोवियत संघ से भागे हुए शरणार्थी है।

प्रवाद फैलाने की दृष्टि से यह कहा गया है कि १० अगस्त १९६० को, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष मण्डल ने "सार्वजनिक हत्या दिवस" के रूप मे घोषित किया। कहानी मे यह आह्वान किया गया है कि देश के नेताओ और जनता के सच्चे सपूतों से बदला लिया जाये। (अदालत के कमरे मे क्रोध प्रदर्शन)

डेनियल की कहानी "दि मैन फ्रॉम मिनाप" मे सोवियत लोगो को मूर्ख और राक्षसो के रूप मे दिखाया गया है। सन् १९६१ मे डेनियल ने ये पाण्डुलिपिया सिन्यावस्की को दी, जिसने इन्हे तुरन्त जामोयस्का के पास पेरिस भेज दिया। "दिस इज मास्को स्पीकिंग" शीर्षक कहानी को कई प्रकाशको ने प्रकाशित किया, जिनमे पेन्थियन बुक्स भी शामिल है, जिसने १९६२ मे इसे प्रकाशित किया और १९६३ मे बी० फिलीपोव[13] ने अमरीका मे "दि मैन फ्राम मिनाप" कहानी को प्रकाशित किया।

सिन्यावस्की ने केवल डेनियल को विदेश मे अपनी रचनाए प्रकाशित करने मे ही सहायता नही दी, बल्कि रेमेजोव को भी सहायता दी, जिसकी रचनाए फ्रास मे ए० आइवानोव के नाम से प्रकाशित हुई और जिनका उपयोग सोवियत विरोधी प्रचार में किया जा रहा है। (डेनियल मुस्कुराता है)।

सन् १९६३ मे डेनियल ने "अटोनमेंट" कहानी लिखी, जिसमे उसने सोवियत समाज को नैतिक और राजनीतिक पतन की स्थिति मे दर्शाया है। इस कहानी में यह कहा गया है कि सोवियत रूस के सब लोगो के मत्थे व्यक्तिपूजा के दौर का दोष मंढा है, कि हमारी जेले हमारे भीतर है, कि "सरकार हमे स्वतन्त्रता देने मे असमर्थ रही है", कि "हमने स्वय को जेलो मे डाला" है।

डेनियल ने इस कहानी को जामोयस्का को १९६३ की शरद ऋतु मे दिया। श्वेत प्रवासी फिलीपोव ने अर्जहक को "दोस्तोएवस्की का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी" बताया।

जिन प्रकाशको ने टेरट्ज सौर अर्जहक की रचनाए प्रकाशित की, उन्होने उनकी रॉयलटी की राशि भी अलग निकाल कर रखी।

सिन्यावस्की और डेनियल ने अपनी सोवियत विरोधी पाण्डुलिपियाऔर पुस्तकें अपने परिचितो के मध्य प्रचारित की। सन् १९५९ और १९६५ के बीच सिन्यावस्की ने अपनी रचनाए रेमेजोव, दोकुकिना[14],

---

१३—बोरिस फिलीपोव एक रूसी प्रवासी है और अमरीका मे रहते है और उन्होंने सिन्यावस्की टेरट्ज और डेनियल अर्जहक की अधिकाश रचनाए मूल रूसी भाषा मे प्रकाशित की हैं। यह सस्करण वाशिंगटन मे प्रकाशित हुए और इनकी भूमिकाए स्वय फिलीपोव ने लिखी है।

१४—मुकदमे की कारवाई के विवरण मे दोकुकीना के बारे मे कहा गया है कि उसने सिन्यावस्की की कुछ पाण्डुलिपिया छिपाई "इजवेस्तिया" के

किशिलोव दम्पति[15] और अन्य व्यक्तियो को तथा स्वय अपनी पत्नी को दिखाई। डेनियल ने सन् १९५६ और १९६३ के मध्य अपनी रचनाएं अपनी पत्नी को गार्बुजेको, आजवेल, माकारोवा और अन्य व्यक्तियो[16] को दिखाई। सिन्यावस्की ने भी उसकी रचनाएं पढी और उनकी "प्रशंसा" की।

जाच के दौरान सिन्यावस्की ने यह स्वीकार किया है कि उसने एब्राम टेरट्ज के नाम से कहानिया आदि लिखी हैं और उपरोक्त रचनाओ को विदेश भेजा था। उसने यह भी स्वीकार किया है कि उसने अपनी रचनाए बहुत से लोगो को पढने को दी और डेनियल को अपनी रचनाए विदेश भेजने मे भी सहायता दी। लेकिन सिन्यावस्की ने इस बात से इनकार किया है कि उसकी रचनाए सोवियत विरोधी है अथवा उसने रेमेजोव को सहायता दी।

लेकिन सोवियत शासन के प्रति उनका शत्रूतापूर्ण रवैया "एन ऐसे इन सैल्फएनेलेसिस" शीर्षक पाण्डुलिपि से पुष्ट हो जाता है, जो उनके घर की तलाशी के दौरान मिली। यद्यपि वह यह जानता था कि उसकी रचनाओ का उपयोग सोवियत शासन को क्षति पहुचाने के लिये किया जा रहा है, लेकिन उसने अपनी रचनाओ के इस प्रकार दुरुपयोग को रोकने के लिये कोई कारवाई नही की। जाच के दौरान रेमेज़ोव ने कहा कि सिन्यावस्की के विचार सोवियत विरोधी हैं। डेनियल की साक्षी से भी सिन्यावस्की की दण्डनीय गतिविधियो का पता चला।

सिन्यावस्की का अपराध, पेत्रोव[17], दोकुकीना, किशिलोव और रेमेज़ोव की गवाहियो से भी और आगे सिद्ध होता है। इसी प्रकार रेमेज़ोव से उसका सामना कराने से शब्दावली और शैली के विशेषज्ञो द्वारा विश्लेषण से, टाइप की हुई पाण्डुलिपियो और हस्तलेख की जाच से, विदेशो में प्रकाशित पुस्तको की वास्तविक प्रतियो से, "ऐसे इन सैल्फ-एनेलेसिस" शीर्षक पाडुलिपि से, विदेशो मे प्रकाशित रेमेज़ोव की रचनाओ से, जामोयस्का से पत्र-व्यवहार और मुकदमे के कागजपत्रों मे प्रस्तुत लिखित प्रमाणो से सिन्यावस्की का अपराध और आगे सिद्ध हो जाता है।

डेनियल ने यह स्वीकार किया है कि उसने निकोलाई अर्जेहक के छद्म नाम से

---

१३ फरवरी १९६६ के अक के अनुसार, सिन्यावस्की की गिरफ्तारी की बात सुन कर दोकुकिना ये पाण्डुलिपिया अपने देहात मे स्थित मकान पर ले गई और उन्हे जला दिया।

१५—एन० किशिलोव एक कलाकार है, जिनकी पत्नी एन० कारीव फासीसी हैं। इनका उल्लेख नीचे हुआ है। (किशिलोव द्वारा हस्ताक्षरित पत्र के लिये,देखिए पृष्ठ १४६।

१६—याकोव गाबूजेको एक माध्यमिक स्कूल के मुख्याध्यापक है। अदालत मे उनसे हुई जिरह के विवरण के लिये देखिए दूसरे दिन की कारवाई मे गवाहो से जिरह। आज़देल और माकारोवा के बारे मे कोई जानकारी नही है, जो स्पष्टत. सिन्यावस्की और डेनियल के परिचित है।

१७—अलैंजेंडर पेत्रोव : एनग्रेवर का काम करते है, प्रतिवादियों के अन्य मित्रो और परिचितों की तरह इन्हे भी सरकारी पक्ष ने गवाह के रूप मे पेश किया।

रचनाए लिखी है और "दिस इज मास्को स्पीकिग", "हैड्स", "अटोनमेंट" और "दि मैन फ्राम मिनाप" शीर्षक रचनाए विदेश भेजी है और इन्हे अपने परिचितो मे भी प्रचारित किया है। उसने यह अस्वीकार किया है कि उसकी रचनाए सोवियत विरोधी है, लेकिन यह बात स्वीकार की है कि उसने इस कारण से सोवियत शासन को कुछ क्षति पहुचाई है कि उनकी रचनाओ मे कुछ ऐसे वक्तव्य थे, जिन्हे खुल्लम-खुल्ला सोवियत विरोधी बता कर प्रस्तुत किया जा सकता है।

सिन्यावस्की की साक्षी, तथा गार्बु जेको, खज़ानोव और खमेलमित्स्की[18] की गवाहियो, ठोस प्रमाणो और मुकदमे के कागजपत्रो मे प्रस्तुत दस्तावेजो से डेनियल का अपराध और आगे सिद्ध हो जाता है।

उपरोक्त बातो के आधार पर राज्य अभियोग लगाता है कि .

"आन्द्रेय दोनातोविच सिन्यावस्की ने, जिसका जन्म ८ अक्तूबर, १९२५ को हुआ और जो एक रूसी नागरिक है, लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य नही है, मास्को का रहने वाला है, एक छोटे बालक का पिता है, सोवियत लेखक सघ का सदस्य है, सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी की विश्व साहित्य सस्था का वरिष्ठ अनुसधान फैलो है, मास्को मे खलेबनी पेरेउलोक ९, अपार्टमेंट ६ का रहने वाला है और जिसने सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की नीति के अनेक पहलुओ के प्रति शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाया और 'दि ट्रायल बिगिन्स' और 'ल्यूबीमोव' शीर्षक कहानिया तथा 'आन सोशलिस्ट रियलिज्म' शीर्षक निबन्ध विदेश मे प्रकाशन के लिये भेजा, जिनमे सोवियत व्यवस्था के विरुद्ध प्रवाद फैलाने वाले वक्तव्य दिये गये हैं और जिनका उपयोग प्रतिक्रियावादी प्रचार मे सोवियत राज्य के विरुद्ध किया जा रहा है, और इन रचनाओ को अपने परिचितो मे प्रचारित करने, डेनियल-अर्जहक की रचनाओ को विदेशो मे भेजने, रेमेजोव-आइवानोव की रचनाओ को सोवियत सघ से फ्रास भेजने मे हिस्सा लेने अर्थात् रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड-सहिता की धारा ७० के भाग १ के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध करने के लिये आरोप लगाये जाते हैं।

यूली मार्कोविच डेनियल, जन्म १५ नवम्बर १९२५, यहूदी[19], पार्टी के सदस्य नही,

---

१८—यूरी खज़ानोव बच्चो के लिये कहानिया लिखते हैं। खमेलनित्स्की, डेनियल के एक परिचत और ऐसा लगता है कि उन्होने मुकदमें के दौरान अस्पष्ट भूमिका निभाई। (देखिए पृष्ठ १८८-१९१ और मुकदमे का विवरण लिखने वाले व्यक्ति के लिए दूसरे दिन की कारवाई मे गवाहो से जिरह देखिए।

१९—यहा प्रतिवादी के बारे मे यहूदी शब्द का उल्लेख करने का कोई महत्व नही है। प्रत्येक सोवियत नागरिक की अपनी 'राष्ट्रीयता" (जाति, उसके "पास्पोर्ट" पहचानपत्र मे दर्ज रहती है और डेनियल को अभियोगपत्र मे, "यहूदी" बताना उतनी ही मामान्य बात है, जितनी सिन्यावस्की को "रूसी" बताने की।

१४ वर्षीय पुत्र के पिता, मास्को, लेनिन प्रासपैक्ट ८५, अपार्टमेंट ३ के निवासी, पर, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की नीतियो के प्रति शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाने, सोवियत विरोधी रचनाए लिखने और उन्हे विदेश भेजने के लिये जो सोवियत राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध प्रवाद फैलाती हैं और जिनका उपयोग सोवियत संघ के विरुद्ध संघर्ष मे प्रतिक्रियावादी कर रहे है, अपनी रचनाओ को अपने परिचितों मे प्रचारित करने के लिये अर्थात् रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य की दण्डसहिता की धारा ७० के भाग १ के अन्तर्गत दण्डनीय अपराधो के लिये अभियोग लगाया जाता है।

अभियोगपत्र पर मास्को, २७ जनवरी १९६६ की तारीख पडी है।

सिन्यावस्की और डेनियल के विरुद्ध मुकदमा चलाने के ४ फरवरी, १९६६ के आदेश को पढ कर सुनाया जाता है। इसके बाद अदालत ने सोवियत लेखक सघ[20] के सचिवो और रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य के लेखक संघ के सचिवो की ३ फरवरी १९६६ की सयुक्त बैठक के इस अनुरोध पर सहमति दी कि सघ के दो सदस्यों ए० वासीलयेव[21] और जैड० केदरीना को सार्वजनिक अभियोग लगाने वालो अर्थात् जन अभियोक्ताओ के रूप मे पेश होने की अनुमति दी जाये और यह भी आदेश दिया कि प्रतिवादियो को हिरासत मे रखा जाये।

न्यायाधीश : प्रतिवादी सिन्यावस्की, क्या तुम अभियोगो को पूर्णतः अथवा अशत · स्वीकार करते हो ?

सिन्यावस्की : नही ! मै इन्हें न तो पूर्णत और न ही अंशतः स्वीकार करता हूं।

न्यायाधीश : प्रतिवादी डेनियल क्या तुम इन अभियोगो को, पूर्णत. अथवा अंशतः स्वीकार करते हो ?

डेनियल : नही, मैं इन्हे न तो पूर्णतः और न ही अशत. स्वीकार करता हू।

२०—सन् १९३२ मे स्थापित सोवियत लेखक सघ एक ऐसा सगठन है, जिसका सदस्य होना अधिकांश पेशेवर सोवियत लेखकों के लिये प्राय. आवश्यक होता है। सघ से निकाल दिये जाने का अर्थ आय की हानि और अन्य अधिकारो से वंचित होना होता है। सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के प्रत्येक गणराज्य का अपना लेखक सघ होता है और ये सघ सोवियत सघ के सोवियत लेखक संघ से सम्बद्ध और उसके आधीन होते है।

२१—सन् १९१० मे जन्मा एक सोवियत लेखक जिसने एक समय पुलिस जाच अधिकारी के रूप मे भी काम किया वह व्यग्यात्मक उपन्यास और शब्द चित्र लिखता है। हाल मे उसका एक उपन्यास 'मण्डे इज ए वैड डे' प्रकाशित हुआ जो शार्ट लिट्रेरी एन साइकलोपीडिया (मास्को १९६२) के अनुसार "परजीवियो और चोर बाजारी करने वालों को बेनकाब करता है।"

सरकारी वकील, निम्नलिखित तरीक से मुकदमे की कारवाई चलाने की बात अदालत से कहता है डेनियल से जिरह, सिन्यावस्की से जिरह, इसके बाद अभियोगपत्र मे जिस क्रम से गवाहो और विशेषज्ञो के नामो का उल्लेख किया गया है, उस प्रकारगवाहिया लेना।

सिन्यास्वकी यह मांग करते हैं कि अभियोगपत्र मे उनके नाम का पहले उल्लेख हुआ है, अतः पहले उनसे जिरह की जानी चाहिये। प्रतिवादियो के दोनो वकील इस अनुरोध का समर्थन करते है।

न्यायाधीश, दोनो असेसरो से सक्षिप्त परामर्श के बाद, सरकारी वकील द्वारा इस अनुरोध के प्रति उठाई गई आपत्ति से सहमत हो जाते है।

कुछ समय के लिये अदालत की कारवाई स्थगित।

दोपहर १ बजकर २० मिनट पर अदालत की कारवाई फिर शुरू

यूली डेनियल से जिरह

न्यायाधीश : अब डेनियल से जिरह होगी।

सरकारी वकील : सोवियत सघ मे तुम्हारी साहित्यिक गतिविधियो का क्या स्वरूप रहा है?

डेनियल मैंने एक अनुवादक के रूप मे काम किया है और लेख लिखे है। बाल साहित्य प्रकाशन गृह ने मेरी एक कहानी "एस्केप" को छापा है, लेकिन इसे कभी भी बिक्री के लिये जारी नही किया गया।

न्यायाधीश : तुम्हारी कहानी प्रमाणस्वरूप यहा मौजूद है। (न्यायाधीश पुस्तक हाथ मे उठा कर दिखाता है।

सरकारी वकील . इसका मतलब यह हुआ कि तुमने सोवियत सघ मे अनुवादक और लेखक के रूप मे, अपने सही नाम से काम किया है?

डेनियल . हा।

सरकारी वकील : और तुमने किसी भी छद्म नाम या नामो का उपयोग नही किया?

डेनियल नही।

सरकारी वकील · तुम्हारी कौन-कौन सी रचनाए छद्म नाम से लिखी गई और कब?

डेनियल रचनाए छद्म नाम से लिखी नही जाती, वे छद्म नाम से प्रकाशित होती हैं।

सरकारी वकील . ठीक है तो तुम्हारी कौन-कौन सी रचनाए छद्म नाम से प्रकाशित हुई?

डेनियल मैंने एक छद्म नाम से "हैंड्स", "दिस इज मास्को स्पीकिंग" "दि मैन फ्राम मिनाप, और "अटोनमेट" शीर्षक कहानिया प्रकाशित की।

सरकारी वकील क्या तुम्हारी रचनाए वस्तुत प्रकाशित हो गई हैं।

डेनियल : हा।

सरकारी वकील ये रचनाए मुकदमे सम्बन्धी कागजपत्रो के खण्ड ९ मे रखी गई है, क्या न्यायालय कृपया इनका निरीक्षण करेगा।

न्यायाधीश · न्यायालय प्रमाणित करता है कि डेनियल ने जिन रचनाओ के नामो का उल्लेख किया है, वे निकोलाई अर्जहक के छद्म नाम से प्रकाशित हुई हैं। पुस्तके हाथ मे उठा कर दिखाता है।

सरकारी वकील : डेनियल क्या ये वही रचनाए हैं, जिनका तुमने उल्लेख किया है ?

डेनियल हा।

सरकारी वकील . कब और कहा ये रचनाए लिखी गई ?

डेनियल हैड्स की रचना १९५६ और १९५८ के बीच हुई, मुझे ठीक-ठीक समय याद नही है। "दिस इज मास्को स्पीकिंग" १९६०-६१ मे; "दि मैन फ्राम मिनाप" १९६१ मे और "अटोनमेट" १९६२ मे लिखी गई।

सरकारी वकील : क्या तुमने ये कहानिया स्वय अपने आप लिखीं अथवा किसी अन्य व्यक्ति ने तुम्हे इस काम मे सहायता दी ?

डेनियल : मैंने इन्हे स्वय लिखा।

सरकारी वकील · क्या किसी अन्य व्यक्ति ने इनमे से किसी कहानी की कथावस्तु का सुझाव दिया ?

डेनियल : कथावस्तु तो नही लेकिन "दिस इज मास्को स्पीकिंग" की कल्पना मेरी अपनी नही थी।

सरकारी वकील किसने इसका सुझाव दिया ? बताइए।

डेनियल . इसका सुझाव मेरे एक समय मित्र खमेलनित्स्की ने दिया था।

सरकारी वकील : क्या बाद मे तुमने इस विचार के आधार पर कहानी लिखने के बारे मे खमेलनित्स्की से बातचीत की ?

डेनियल हा दो बार। यह बात १९६२ की है। कई लोगो की उपस्थिति मे उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने उसके सुझाये हुए विचार के आधार पर कोई कहानी लिखी है। मैंने उसे इस सम्बन्ध मे आगे बात नही करने दी।

सरकारी वकील : तो तुमने इस चर्चा को आगे बढाने नही दिया ? दूसरे शब्दो मे इसका अर्थ यह होता है कि तुमने यह अनुभव किया कि उसे रोकना आवश्यक है, क्योकि अपना छद्म नाम प्रकट करना तुम वाछित नही समझते थे ?

डेनियल : हा ! क्योकि उस समय तक यह कहानी विदेश मे छप चुकी थी। दूसरी बार हमने इसकी उस समय चर्चा की, जब खमेलनित्स्की ने किसी व्यक्ति से यह सुनकर कि यह कहानी किसी विदेशी रेडियो स्टेशन द्वारा प्रसारित हो रही है, यह बात भी अनेक गवाहो की उपस्थिति मे हुई, कहा कि "यह तो डेनियल की और मेरी कहानी है।"

सरकारी वकील : यह कौन सा रेडियो स्टेशन था ?

डेनियल . मैं नही जानता।

सरकारी वकील : क्या इस वात का उल्लेख नही किया गया कि यह रेडियो स्टेशन, रेडियो लिवर्टी था ?

डेनियल : नही इस बात का उल्लेख नही हुआ ।

सरकारी वकील : यह रडियो लिबर्टी ही था और प्रसारण की तारीख मुकदमे के कागज-पत्रो मे दी गई है । डेनियल तुमने अपने किन परिचितो को, कव कहा और किस रूप मे अपनी पाण्डुलिपिया और पुस्तकें दिखाई ?

डेनियल : मै सामान्यत: अपनी पाण्डुलिपियो से अपनी रचनाओ का सस्वर पाठ करता था । मैंने अपनी और सिन्यावस्की की पत्नी और सिन्यावस्की को ये रचनाए सुनाई । जहा तक और लोगो का सम्वन्ध है, मुझे ठीक-ठीक याद नही है कि मैंने कव उन्हे ये रचनाए पढ कर सुनाई । मैंने गार्वूजेको को अपनी रचनाए सुनाई , लेकिन कव मुझे याद नही है—लेकिन सन् १९६२ से पहले नही । इसके बाद मैंने १९६३ और १९६४ मे उन्हे कुछ और भी सुनाया । १९६३ के वाद मैंने अपनी कोई रचना 'आज़वेल' को सुनाई । लेकिन मुझे यह ठीक-ठीक याद नही है कि यह कौन सी रचना थी, क्योकि मैं उन दिनो अपनी बहुत सी रचनाए सुनाया करता था—यह वात १९६२ की शरद ऋतु की हो सकती है और मैंने खारकोव मे ये रचनाए सुनाई । या यह भी हो सकता है कि मैंने एक वर्ष बाद, 'अटोनमेट' कहानी सुनाई हो । खाजानोव को भी इस कहानी की जानकारी थी लेकिन मैंने उसे यह न तो पढने के लिये दी और न ही स्वय उसे पढ कर सुनाई । मैने १९६४ और १९६५ मे इसे किसी अन्य व्यक्ति को दिखाया । १९६५ की गर्मियो मे मैंने अपनी समस्त रचनाए अपने मित्र मकारोव को पढ कर सुनाई ।

न्यायाधीश रेडियो लिबर्टी के एक प्रसारण की प्रतिलिपि पढ कर सुनाता है, जिसमे डेनियल की रचनाओ के पाठ से पहले कुछ सोवियत विरोधी टिप्पणिया की गई हैं ।

सरकारी वकील : जव खमेलनित्स्की ने अन्य लोगो के सामने बात करना शुरू किया, तो तुमने उसे क्यो रोका ? क्या इसका यह कारण नही था कि तुम किसी वात से डरते थे ?

डेनियल हा ।

सरकारी वकील . डेनियल हमे यह बताओ कि तुमने अपने परिचितो और अपने परिवार के सदस्यो को अपनी जो रचनाए पढने के लिये दी, राजनीतिक दृष्टि से उनके वारे मे इन लोगो के क्या विचार थे ?

डेनियल : गार्वूजेन्को ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होने यह कहा कि वे ऐसी रचना विदेश मे प्रकाशित करना पसन्द नही करेंगे, क्योकि हमारे देश के शत्रु इनकी

गलत व्याख्या करके इनका इस्तेमाल कर सकते हैं। अन्य लोगों ने केवल इनके साहित्यिक पक्ष पर ही विचार प्रकट किये।

सरकारी वकील : तुम्हारे परिचितो मे वह कौन व्यक्ति था, जिसने तुम्हारी कोई रचना पढ कर यह कहा था कि "यह भयंकर है" ?

डेनियल : मुझे याद नही है।

सरकारी वकील : क्या यह व्यक्ति आज्रवेल नही था ?

डेनियल : नही।

सरकारी वकील : आरम्भिक जांच के दौरान, गावूंजेन्को ने यह कहा है कि उसने तुमसे यह कहा कि इन रचनाओं का इस्तेमाल हमारे शत्रु झूठे, प्रचार के लिये कर सकते हैं। इस चेतावनी के प्रति तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

डेनियल : मैंने इसे कोई महत्व नही दिया। मैं केवल अपनी रचनाओ के साहित्यिक मूल्यांकन मे ही दिलचस्पी रखता था।

सरकारी वकील : तुमने कोई महत्व क्यों नही दिया ?

डेनियल : क्यो कि मैं यह नही समझता कि मेरी रचनाएं किसी भी रूप मे सोवियत विरोधी है।

सरकारी वकील : यदि तुम्हे अपनी रचनाओ मे कुछ भी सोवियत विरोधी दिखाई नहीं पडता था, तो तुम इन्हे किसी सोवियत प्रकाशक के पास क्यो नही ले गये ?

डेनियल मैं यह अच्छी तरह से जानता था कि सोवियत सम्पादक ऐसे विवादास्पद विषयो पर कोई भी चीज़ प्रकाशित नही करेंगे। मेरी रचनाओ में राजनीतिक रग है और वे लोग राजनीतिक आधार पर उन्हे अस्वीकार कर देते। मेरे इस कथन का यह अभिप्राय है कि सम्पादको और प्रकाशको के अपने राजनीतिक कारण हैं।

सरकारी वकील : इसका यह मतलब होता है डेनियल, कि तुम यह जानते थे कि तुम्हारी रचनाओ मे कोई ऐसी बात है जो सोवियत संघ मे उनके प्रकाशन के मार्ग मे बाधक है ?

डेनियल : (खीझ कर) मैं केवल अपने प्रकाशको के काम के तरीके की ही चर्चा कर रहा हूं, जो किसी भी विवादास्पद विषय पर कुछ भी प्रकाशित करने से डरते हैं।

सरकारी वकील : इसके बावजूद तुम अपनी कहानी "एस्केप" एक सोवियत प्रकाशक के पास ले गये ? डेनियल, क्या तुम ने अपनी रचनाएं कानूनी तरीको से विदेश भेजी ?

डेनियल नही गैर-कानूनी तरीकों से।

सरकारी वकील : तुम्हे इन्हे विदेश भेजने मे किस ने सहायता दी ?

डेनियल : हेलेन पेलतियर-ज्रामोयस्का ने। मैं यह तो नही कह सकता कि मैं उससे बहुत

अच्छी तरह परिचित हूं, लेकिन मैंने उससे इन पाण्डुलिपियो को किसी प्रकाशक को देने के लिये कहा और वह सहमत हो गयी।

सरकारी वकील : डेनियल तुम इस बारे मे क्या सोचते हो क्या यह बात एक सोवियत नागरिक के लिये नैतिक दृष्टि से सही है कि वह एक विदेशी की मार्फत ऐसी वस्तुए विदेश भेजे, जो स्वय तुम्हारे अनुसार ही, राजनीतिक रग रखती हो ?

डेनियल : नही मैं इसे नैतिक नही कहूंगा।

सरकारी वकील : यह बताओ कि यह जामोयस्का कौन है ?

डेनियल : वह रूसी साहित्य की विशेषज्ञ है, वह लियोनिद आन्द्रेयेव[22] का अध्ययन कर रही है, रूस से प्यार करती है और (मुस्कुराते हुए) सिर्फ एक अच्छी स्त्री है। (अदालत के कमरे मे हसी)

सरकारी वकील : तुमने पूछताछ के दौरान उसे पहचान कर बताया है ?

डेनियल : हा मैंने उसे एक फोटो से पहचान कर बताया, जो मुझे दिखाया गया था।

सरकारी वकील : क्या न्यायालय कृपया उन कागज़पत्रों का निरीक्षण करेगा, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि जामोयस्का सोवियत सघ मे रही हैं ?

न्यायाधीश इस बात की पुष्टि करता है कि ये कागजपत्र मुकदमे की मिसल मे रखे हुए हैं।

सरकारी वकील तो इसका मतलब हुआ कि तुमने अपनी रचनाए, एक नौसैनिक सहचारी की पुत्री की सहायता से विदेश भेजी ?

डेनियल : मैंने इन रचनाओ को, जामोयस्का की मार्फत भेजा और मुझे इस बात मे कोई दिलचस्पी नही थी कि वह किस की पुत्री है।

सरकारी वकील : डेनियल, अन्य किसी व्यक्ति ने तुम्हे ये पाण्डुलिपिया विदेश भेजने मे सहायता दी ?

डेनियल : मैं नही जानता कि क्या आप इसे मदद कह सकते हैं ? लेकिन मैंने अपने एक परिचित की १९६१ मे विदेश यात्रा का लाभ उठाया। यह परिचित ऐन कारीव[23] है। मैंने उसे एक पार्सल मे लिपटी हुई "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग"

२२—एक रूसी लेखक (१८७१-१९१९) जो फिनलैंड मे रहता था और जो १९१७ मे उसके स्वाधीन होने के बाद भी वही रहता रहा। पश्चिम मे इस लेखक की ख्याति उसके नाटक 'दि मैन हू गॉट स्लैप्ड" के लिये है।

२३—फ्रासीसी नागरिक, जिसने किशिलोव से विवाह किया। मुकदमे की कारवाई के विवरण के इस और अन्य अशो मे यह स्पष्ट होता है कि एन० कारीव और उसके सोवियत पति सिन्यावस्की और डेनियल की गिरफ्तारी से पहले कई बार पेरिस की यात्रा की। सिन्यावस्की के अनुसार उनकी गिरफ्तारी के समय किशिलोव दम्पत्ति फिर पेरिस जाने वाले थे, लेकिन उनकी देश से बाहर जाने की अनुमति रद कर दी गई।

ग्रौर "दि मैन फ्राम मिनाप" की पाण्डुलिपिया दी ग्रौर कहा कि इसमे जामोयस्का के लिए एक पुस्तक है। वह समझती रही कि कोई पुस्तक है, ग्रौर यह कहा जा सकता है, कि उसने एक डाकिए के रूप मे ही काम किया।

सरकारी वकील : ग्रौर सिन्यावस्की ने तुम्हे किस प्रकार सहायता दी ?

डेनियल : जहा तक मेरी रचनाग्रो को विदेश भेजने का सवाल है, किसी भी रूप मे नही।

सरकारी वकील : तो उसने किस तरह तुम्हे सहायता दी ?

डेनियल : मैं ग्रपनी पाण्डुलिपियो को विदेश भेजने के रास्ते की तलाश मे था। मैं हेलेन पेल्तियर से पहले ही परिचित था, जिससे मेरा परिचय खमेलनित्स्की ने पहले ही करा दिया था। मैंने सिन्यावस्की से यह ग्रनुरोध किया कि वे हेलेन पेल्तियर से मेरा वेहतर परिचय कराने मे मदद दे।

सरकारी वकील : तुम जानते थे कि सिन्यावस्की, पेल्तियर के माध्यम से, ग्रपनी रचनाए विदेशो मे प्रकाशित करा रहा है ?

डेनियल · नही, उस समय तक मुझे इस वात की जानकारी नही थी।

सरकारी वकील : तुम्हे इस वात का कव पता चला ?

डेनियल : वाद मे जव स्वय मेरी पाण्डुलिपिया विदेश भेजी गईं।

सरकारी वकील : क्या तुम सिन्यावस्की की भूमिका के महत्व को घटा कर दिखाने की कोशिश नही कर रहे हो ? ग्रारम्भिक जाच के दौरान तुमने यह कहा कि तुम यह वात जानते थे। उस समय तुमने यह कहा : "ग्रारम्भ मे मैं सिन्यावस्की को इसमे फसाना नही चाहता था ग्रौर मैंने गल्त बयान दिया, ग्रव मैंने सत्य कहने का निश्चय किया है। मैंने सिन्यावस्की को पाण्डुलिपिया दी, लेकिन मैं यह नही जानता कि उन्होने इन्हे कैसे भेजा।" डेनियल, ग्रव तुम ग्रपने उस बयान से क्यो मुकर रहे हो ?

डेनियल : मैं इससे मुकर नही रहा हूं। मैं इसे पूरी तरह ग्रस्वीकार कर रहा हूं।

सरकारी वकील : डेनियल, तुम किस समय झूठ वोल रहे थे, ग्रारम्भिक जांच के दौरान या उस समय जव ग्रभी तुम ने यह वात कही ?

न्यायाधीश · मैं ग्रापसे ग्रनुरोध करता हूं कि ग्राप ऐसे शब्दो का प्रयोग न करे।

डेनियल : मैंने यह पार्सल ऐन कारीव को उस समय दिया जव सिन्यावस्की कमरे मे बाहर गये हुए थे। उन्हे इस के वारे मे कुछ भी मालूम नही था ग्रौर उनका इससे कोई भी सम्बन्ध नही है।

सरकारी वकील : १४ दिसम्बर, १९६५ ग्रौर उसके वाद के ग्रपने बयानो मे तुमने यह कहा है कि पहले मैं यह नही चाहता था कि पूरी जिम्मेदारी सिन्यावस्की पर पड़े ग्रौर यही कारण है कि मैंने गलत बयान दिया......

(सरकारी वकील, डेनियल का बयान पढ़कर सुनाता है, जिसका यह आशय था कि सिन्यावस्की ने डेनियल की पाण्डुलिपियां विदेश भेजी)।

डेनियल यह बयान तथ्यो से मेल नही खाता। उस समय मुझे यह बात ठीक-ठीक याद नहीं आ रही थी कि कौन सी बात कब हुई, लेकिन अब मुझे याद आ रही है।

सरकारी वकील : क्या आरम्भिक जाच के दौरान तुमने स्वेच्छा से ये बयान दिये ?

डेनियल : हां।

सरकारी वकील डेनियल का १३ जनवरी १९६६ का बयान पढ कर सुनाता है, जिसमे यह कहा गया था कि उसने सिन्यावस्की को पाण्डुलिपिया दी। लेकिन उसे यह नही मालूम था कि इन्हे कैसे और कब विदेश भेजा गया।

सरकारी वकील डेनियल, अब तुम अपना बयान क्यो बदल रहे हो ?

डेनियल मेरे बयानो मे भ्राति पैदा कर दी गई है और मुकदमे के कागजपत्रो मे मेरे विभिन्न समयो के अनेक बयान रखे हुए हैं। मैं कोई मशीन नही हूं, मैं केवल एक मनुष्य हूं। मैं प्रत्येक बात को एकदम ठीक-ठीक याद नही रख सकता। विशेष रूप से तब जबकि कोई विशेष बात पांच वर्ष पहले हुई हो।

सरकारी वकील : आरम्भिक जाच मे पहले तुमने इस बात से इन्कार किया कि तुम अर्जहक हो और इसके बाद तुमने अपनी रचनाओ के लेखन के समय को अधिक-से-अधिक पीछे हटाने की कोशिश की। लेकिन तुम्हे इतनी बात अवश्य याद होनी चाहिये कि तुमने अपनी पाण्डुलिपियां किस की मार्फत भेजी। सिन्यावस्की की मार्फत या ऐन कारीव की मार्फत ? आखिरकार यह कोई मामूली बात नही है।

डेनियल : ऐन कारीव की मार्फत। आरम्भिक जाच के पूरा हो जाने के बाद ही यह बात मुझे पूरी तरह से याद आई।

सरकारी वकील : क्या तुमने इस बात मे भी दिलचस्पी ली कि तुमने जो चीजें विदेश भेजी हैं उनका क्या हुआ ? क्या तुमने उन्हें प्रकाशित होने के बाद भी देखा ?

डेनियल : हा, मुझे यह मालूम था कि तीन चीजें प्रकाशित हो चुकी हैं। पेल्तियर ने मुझे ये दी। लेकिन मुझे यह याद नही कि कहां मुझे ये दी गई। मैंने "अटोनमेंट" को अभी भी पुस्तक के रूप मे नही देखा।

सरकारी वकील : क्या तुम अपने पहले के इस बयान की पुष्टि करते हो कि ज़ामोयस्का ने तुम्हे ये पुस्तकें सिन्यावस्की के घर पर दी ?

डेनियल : मुझे याद नही है। यह हो सकता है।

सरकारी वकील : क्या तुम्हे यह मालूम था कि कौन से प्रकाशक तुम्हारी पुस्तकें छाप रहे थे और वे इनकी कैसी भूमिकाएं दे रहे थे ?

डेनियल : नही, मुझे मालूम नही था।

सरकारी वकील न्यायालय से (मास्को स्थित) "प्रोग्रैस प्रकाशन गृह" के पत्रो का निरीक्षण

करने का अनुरोध करता है, जिसमे अर्जहक की रचनाओ के विभिन्न सस्करणों की सूची दी गई है।

न्यायाधीश यह जानकारी पढ कर सुनाता है कि कहां और कब इन रचनाओ का प्रकाशन हुआ।

सरकारी वकील : क्या तुम्हे इन पुस्तको की रॉयलटी मिली है?

डेनियल : नहीं।

सरकारी वकील : तुम्हारे लिये रॉयलटी की कितनी राशि अलग रखी गई है और कैसे? तुम्हे इनकी रॉयलटियों के बारे मे क्या जानकारी है?

डेनियल : मुझे इस बात का जरा भी ज्ञान नही है कि रॉयलटी की राशि कितनी है। हा, मुझे इतना मालूम है कि रॉयलटी है।

सरकारी वकील : क्या तुमने जामोयस्का से रॉयलटियो के बारे मे बातचीत की?

डेनियल · हां। उसने मुझे बताया कि रायलटियो की राशि अलग रखी जा रही है और ये राशियां बडी हैं, लेकिन मुझे यह ठीक-ठीक मालूम नही कि रॉयलटियो की राशियां कितनी हैं।

सरकारी वकील · क्या तुमने उससे सिन्यावस्की की रॉयलटियों के बारे मे भी बातचीत की?

डेनियल : नहीं।

सरकारी वकील : और अब, डेनियल, क्या तुम "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" के सिद्धान्त की व्याख्या करोगे?

डेनियल : मेरे लिये कथावस्तु और सिद्धांत मे अन्तर है। पहले मैं यह बताना चाहता हूं कि यह कहानी कैसे और क्यों लिखी गई। इसका विचार मुझे एक मित्र ने दिया। मैं इस विचार के प्रति आकर्षित हुआ कि एक काल्पनिक सार्वजनिक हत्या दिवस के विवरण मे मैं, लोगो के मनोविज्ञान और आचरण पर प्रकाश डाल सकता हूं। स्वयं सार्वजनिक हत्या दिवस के विचार ने ही इस कहानी को राजनीतिक रग दिया। मैंने अपने समक्ष जो साहित्यिक लक्ष्य रखा था उसे छोड़ते हुए मैं अपनी राजनीतिक स्थिति बताना चाहता हूं। सन् १९६०-६१ मे जब मैं यह कहानी लिख रहा था, मैं इस बात से आश्वस्त हो गया था कि व्यक्ति पूजा के एक नये दौर की स्थापना होने जा रही है—और मैं ही इस बात से आश्वस्त नही था, बल्कि वह प्रत्येक व्यक्ति, जो देश की स्थिति के बारे मे गंभीरतापूर्वक सोचता था, इस बात से आश्वस्त था। स्तालिन की मृत्यु को बहुत लम्बा अरसा नही हुआ। हम सबको उन बातों का अच्छी तरह स्मरण था, जिन्हें समाजवादी वैधानिकता का उल्लंघन कहा जाता था। और मुझे एक बार फिर वे ही सब लक्षण दिखाई पड़े। फिर एक ही ऐसा व्यक्ति था, जो सब कुछ जानता था,

फिर एक ही व्यक्ति को ऊचा उठाया जा रहा था, फिर एक ही व्यक्ति कृषि विशेषज्ञो, कलाकारो, राजनयिको और लेखको के ऊपर अपनी इच्छा थोप रहा था। फिर हम केवल एक ही नाम समाचारपत्रो मे और इश्तहारो मे देख रहे थे और इस व्यक्ति का प्रत्येक कथन, यह चाहे कितना भी अपरिष्कृत अथवा मामूली क्यो न हो, हमे फिर इस प्रकार दिखाया जा रहा था, मानो किसी गहन रहस्य का उद्घाटन हो, मानो यह समस्त ज्ञान का सार हो......।

न्यायाधीश : तो तुमने हमारे देश मे फिर व्यक्ति पूजा के दौर की स्थापना से भयभीत हो कर, वाशिंगटन के 'हारपर एण्ड रो' नामक प्रकाशन[२४] की सहायता लेने का निश्चय किया ?

डेनियल : इस समय मैं इस बात की चर्चा नही कर रहा हूं कि मैंने अपनी कहानी विदेश क्यो भेजी, बल्कि इस बात की कि मैंने यह कहानी क्यो लिखी।

न्यायाधीश : आगे कहिए।

डेनियल : तो यह सब होते हुए देखकर और स्तालिन के शासनकाल मे हुए शुद्धिअभियानो और वैधानिकता के उल्लंघनों की भयावहता का स्मरण कर, मैंने यह निष्कर्ष निकाला—और मैं स्वभाव से निराशावादी हूं कि स्तालिन की पूजा के भयंकर दौर की पुनरावृत्ति हो सकती है और जैसा कि आपको स्मरण होगा, उस दौर में मेरी कहानी मे वर्णित किसी भी बात से कही अधिक भयंकर घटनाए घटी है। बडे पैमाने पर शुद्धिकरण अभियानो, निष्कासन और पूरी की पूरी जातियों के विनाश का स्मरण कीजिए[२५]। मैंने जो कुछ लिखा है, वह तो इनकी तुलना मे बच्चों के खेल जैसी बात है... ..

२४—मुकदमे की कारवाई के विवरण मे यह नाम हरलर आई ओ दिया गया है, जो स्पष्टत हारपर एण्ड रो का विकृत रूप है। रूसी भाषा मे "एन" और "पी" अक्षर बहुत कुछ एक से ही दिखाई पडते हैं हारपर एण्ड रो ने डिसोर्नेंट वायसेज इन सोवियत लिटरेचर (सम्पादन पेट्रीशिया ब्लेक और मैक्स हेवर्ड) को अल्पमोली संस्करण मे प्रकाशित किया, जो पहले पैंथियन बुक्स द्वारा १६६२ मे प्रकाशित की जा चुकी थी। इस सग्रह मे डेनियल-अर्जहक की कहानी, दिस इज मास्को स्पीकिंग का अंग्रेजी अनुवाद दिया गया है। न्यायाधीश ने अथवा उस व्यक्ति ने जिसने मुकदमे की कारवाई का विवरण लिखा, हारपर एण्ड रो के स्थान को बदलकर वाशिंगटन मे कर दिया क्योकि उसने यह सोचा कि अधिकाश देशो की तरह, प्रमुख प्रकाशन गृह देश की राजधानी मे ही होते हैं।

२५—यहा दूसरे महायुद्ध के अन्तिम दिनो मे जर्मनी से सहयोग [illegible] ोप पर कालमिक, क्रीमियन तातार, चेचेन, इंगुश और कॉकेशिया की कुछ छोटी [illegible] शाल पैमाने पर निष्कासन की ओर सकेत है। स्तालिन की मृत्यु के बाद से [illegible] के लोगो को, क्रीमियन तातारो को छोड़कर, मध्य एशिया [illegible]

न्यायाधीश : हां, मैं यह समझता हूं कि लेखक द्वारा किया गया वर्णन और उसके पात्रों द्वारा कही गई बातें, दो भिन्न चीजें हैं। लेकिन तुमने तो "दिस इज मास्को स्पीकिंग" में यह लिखा है :

(न्यायाधीश वोलोद्या मार्गूलिस से बातचीत का उद्धरण लेता है, जिसमें यह अंश भी शामिल है। "लेकिन क्या वे इस आदेश से लाभ प्राप्त करने की आशा करते हैं" आदि")

डेनियल : आपका यह कहना बिल्कुल सही है कि लेखक का दृष्टिकोण सदा अपने पात्रों के दृष्टिकोणों के अनुरूप नहीं होता। और आपने जिन शब्दों का उद्धरण दिया है, मेरी कहानी का नायक उनके प्रति आपत्ति उठाता है। वह कहता है, "हमें सोवियत शासन के समर्थन में उठ खड़ा होना चाहिये।" अत. अभी आपने जो अंश पढ़ा है, उसका आशय स्पष्ट हो जाता है।

न्यायाधीश : क्या यह वही नायक है, जो कूल्हे पर टॉमीगन लगा कर गोली वर्षा करता है ?[३०]

डेनियल : हां, यह सही है। और मैं इस बात को भी समझाता हूं। संक्षेप में कहानी का विचार यह है कि मनुष्य को मनुष्य ही बने रहना चाहिये, चाहे वह स्वयं को कैसी भी परिस्थितियो मे क्यों न पाये, चाहे उसके ऊपर कैसा भी दबाव क्यों न हो और चाहे यह दबाव डालने वाला कोई भी व्यक्ति क्यो न हो, उसे अपने प्रति सच्चा रहना चाहिये। केवल अपने प्रति ही और ऐसी किसी भी बात से वास्ता नहीं रखना चाहिये जिसे उसका अन्तःकरण अस्वीकार करता हो जो उसकी मानवीय भावनाओ के विरुद्ध हो...... अब "कूल्हे पर" टॉमीगन लगा कर गोली वर्षा करने सम्बन्धी अंश आदि को लीजिए। अभियोग पत्र में यह कहा गया है कि इस अश मे पार्टी के नेताओ और सरकार से बदला लेने का आह्वान किया गया है। यह सच है कि मेरा नायक नेताओ की चर्चा करता है; वह उनका इसलिए उल्लेख करता है, क्योंकि उसे व्यापक पैमाने पर लोगो को यातनाएं दिये जाने का स्मरण है और वह यह अनुभव करता है कि जो इन

पुराने घरों को लौटने की अनुमति दे दी गई है। डेनियल के मन मे बाल्टिक राज्यों पर और अन्य सीमावर्ती क्षेत्रो की आबादी को १९४०-४१ के बीच बड़े पैमाने पर निष्कासित करके उन्हें नगण्य बनाने की बात भी हो सकती। और इसी प्रकार वोल्गा प्रदेश में रहने वाले जर्मनो, यद्यपि इन्हें १९६४ में फिर अपराधमुक्त कर प्रतिष्ठित कर दिया गया है, लेकिन इन्हें अपने घरों को लौटने की अनुमति नहीं दी गई है—की बात भी डेनियल के मन में हो सकती है।

२९—डिसोमेंट वॉयसेज, पृष्ठ २८९।

३०—इस पूरे महत्वपूर्ण उद्धरण के लिये देखिए प्रस्तावना, पृष्ठ ३०-३५।

अपराधो के दोषी हैं, उन्हे इनकी जिम्मेदारी उठानी चाहिये। लेकिन अभियोग पत्र मे इस उद्धरण को यही समाप्त कर दिया जाता है, लेकिन मेरी पुस्तक यही समाप्त नही होती और न ही मेरे नायक का स्वगत कथन ही। उसने युद्ध मे हत्याओ और नरमेध के जो दृश्य देखे हैं, वह उनका स्मरण करता है और उसके मन मे जो चित्र उभरता है, वह उसे वितृष्णा से भर देता है। स्पष्ट है कि अभियोग पत्र में इस अश को तोड़ मरोडकर प्रस्तुत किया गया है और इसकी मनमानी व्याख्या की गई है। कहानी का यही नायक आगे कहता है . "मैं किसी को भी मारना नही चाहता।" तो कोई भी पाठक यह कैसे कह सकता है कि यह पात्र हत्या करना चाहता है ? यह तो प्रत्येक व्यक्ति को स्पष्ट होना चाहिये कि वह हत्या नही करना चाहता।

न्यायाधीश लेकिन तुम मुख्य तथ्य की उपेक्षा कर रहे हो। तुम्हारे नायक को सोवियत सरकार के आदेश के अनुसार हत्या करने की अनुमति दी गई है। दूसरे शब्दो मे इसका यह अर्थ होता है कि हमारी बुरी सरकार है और एक अच्छा पात्र सरकार के अलावा अन्य किसी को नही मारना चाहता ?

डेनियल . यह निष्कर्ष कहानी का नही है। नायक कहता है "किसी को भी नही।" किसी को भी नही का अर्थ किसी को भी नही होता है।

न्यायधीश · लेकिन तुम्हारी कहानी मे ऐसा आदेश दिया गया है ?

डेनियल . हा।

सरकारी वकील मैं डेनियल से यह कहना चाहता हू कि वह अध्याय ४ का आरम्भिक अश पढे।

न्यायाधीश मैं अदालत के इस कमरे मे मुद्रण के अयोग्य भाषा के पढने की आवश्यकता नही समझता।

सरकारी वकील मैं इसके बावजूद यह अनुमति चाहता हू कि बुरी भाषा को काट कर आरम्भिक अश के शेष भाग को पढा जाये।[२८]

न्यायाधीश · पढिए, लेकिन गन्दी भाषा को छोड कर।

सरकारी वकील . (पढता है) मैं उनसे इतनी घृणा करता हू कि मुझे दौरे पडने लगते है, मैं चिल्लाता हू मैं कापने लगता हूं। ओह, काश इन..... को एक जगह इकट्ठा करके एक साथ समाप्त किया जा सकता !" डेनियल, तुम इस का क्या स्पष्टीकरण देते हो !

डेनियल यह नायक के विचारो का अश है......

(अदालत के कमरे मे हसी)। डेनियल घबराहट से चारो ओर देखता है)

२८—जिस भद्दी भाषा को छोडा गया है वह "कुलटाओ" शब्द का रूसी पर्याय है। (जिस अश का उद्धरण दिया गया है, वह डिसोनेंट वॉयसेज के पृष्ठ २७७ पर है।)

सरकारी वकील : वह कौन है, जिससे तुम इतनी घृणा करते हो। तुम किसे नष्ट करना चाहते हो ?

डेनियल . तुम किस के बारे मे बात कर रहे हो ? मेरे बारे मे या मेरे नायक के बारे मे या किसी अन्य के बारे मे ?

सरकारी वकील : तुम्हारा सकारात्मक नायक कौन है।[२९] जो इस कहानी मे तुम्हारा दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

डेनियल : मै अपनी आरम्भिक बातचीत में तुम्हे पहले ही बता चुका हू कि कहानी मे कोई पूरी तरह सकारात्मक नायक नही है। और ऐसे नायक का होना अनिवार्य भी नही होता।

सरकारी वकील : हमारी कोई आरम्भिक बातचीत नही हुई। लेकिन लेखक का दृष्टिकोण कौन प्रस्तुत करता है ? यह दृष्टिकोण कहा आता है ?

डेनियल : पात्र, लखक के दृष्टिकोणो को प्रस्तुत नही करते। केवल अशत. ही यह काम होता है। कोई भी एक पात्र लेखक का प्रतिरूप नही होता। यह हो सकता है कि यह बुरा साहित्य हो, लेकिन यह साहित्य है और प्रत्येक वस्तु को काले और उजले मे विभाजित नही करता।

सरकारी वकील : मैं अर्जहक की कहानी के बारे मे ग्लावलित[३०] के निष्कर्षों को पढ कर सुनाना चाहता हूं "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग एक अत्यधि~ भयानक प्रवादात्मक कहानी है........."

(इसके बाद कहानी का जो मूल्याकन होता है वह अभियोगपत्र से पूरी तरह सहमति प्रकट करता है। अन्तर केवल इतना ही है कि ग्लावलित की रिपोर्ट मे

२९—देखिए पृष्ठ १५७ की पाद टिप्पणी।

३०—"ग्लावलित" साहित्य और प्रकाशन गृहो सबधी मामलों का मुख्य निदेशालय ("ग्लावनोए अपरावलेनी पो देलांम लितरेचरी आई इज़ दातेल स्तव") का सक्षिप्त रूप है। यह संगठन सोवियत रूस का सेसर सगठन है, जिनकी स्थापना १६२२ मे जनवादी कमिसार परिपद् के आदेश से हुई थी। सार्वजनिक रूप से यदाकदा ही इसके नाम का उल्लेख होता है, लेकिन सोवियत सघ मे सब रचनाओ को, प्रकाशन मे पहले, इसके समक्ष सेंसर के लिये प्रस्तुत किया जाता है। हाल के वर्षो मे (ठीक-ठीक समय की जानकारी नही है) इसका नाम बदलकर समाचारपत्रो मे सैनिक और राज्य सम्बन्धी रहस्यों के सरक्षण का मुख्य निदेशालय। ["ग्लावनोए अपरावलेनी पो ओखराने वोयेन्निक आई गोसदारस्त वेनिख तेन वी पेचाती" ग्लावनित के बारे मे रूसी भाषा मे प्रयुक्त संक्षिप्त शब्दो के शब्दकोष (स्लोवार सोक्राश चेनी रुसकोगो याजिका) को देखिए, मास्को, १६६३] रख दिया गया है। मुकदमे के दौरान प्रस्तुत जानकारी से यह लगता है कि ग्लावलित का साहित्य के सेंसर का अधिकार, पहले की तरह ही रहा अथवा यह अधिकार उसे फिर दिया गया।

यह भी कहा गया है कि इस कहानी मे यहूदी विरोध का भी तत्व है।) क्या तुम इस मूल्याकन से सहमत हो डेनियल ?

डेनियल एकदम नही। इस रिपोर्ट मे यह कहा गया है कि मैं "अपने पात्रो के मुह से" अपने विचार कहलवाता हू। यह बडा बचकाना आरोप है और इसके बारे मे यह कहना एक नम्र कथन होगा। इस तरीके से तो आप जिस सोवियत लेखक पर चाहे, सोवियत विरोधी होने का आरोप लगा सकते हैं। लावरेनेव, शोलोखोव लियोनोव, आदि की रचनाओ मे श्वेत सैनिको के विवरण को ही लीजिए।[31]"

सरकारी वकील : (बीच मे टोकते हुए) : पश्चिम के समाचारपत्रों मे तुम्हारी दोस्तोएवस्की से जो तुलना की गई है, क्या उससे तुम्हारा इस हद तक सिर फिर गया है कि अब तुम अपनी तुलना प्रमुख सोवियत लेखको से करने लगे हो ?

डेनियल . मैं किसी से भी अपनी तुलना नही कर रहा हू। मेरा यह सब कहने का यह अभिप्राय है कि यह बात महत्वपूर्ण नही है कि पात्र क्या कहते हैं, बल्कि यह महत्वपूर्ण है कि पात्रो के कथन के प्रति लेखक क्या दृष्टिकोण अपनाता है।

सरकारी वकील क्या आरम्भिक जाच के दौरान तुमने यह नही कहा था कि तुम ग्लावलित के निष्कर्षों से अशत: सहमत हो ?

डेनियल . यह सही है। लेकिन केवल उन विवरण सम्बन्धी तथ्यो तक ही, जो इसमे दिये गये है।

सरकारी वकील (ग्लावलित की रिपोर्ट से पढते हुए) · "लेखक के दृष्टिकोण से, सोवियत जनता, पार्टी के नेताओ के पीछे, आख बन्द करके चलती है।" तुम इस के सदर्भ मे अपनी कहानी का क्या मूल्याकन करोगे ?

डेनियल मैं ऐसी कोई भी कठोर बात नही कहना चाहता था। कुछ सीमा तक मैं इस बात से सहमत हू कि जन सामान्य की, राजनीतिक पहल करने की क्षमता का विचार· ····मुझे इस बात पर बहुत अधिक विश्वास नही है। मैं जन सामान्य को राजनीतिक दृष्टि से निष्क्रिय समझता हू।

सरकारी वकील इसका यह अर्थ हुआ कि यदि एक "सार्वजनिक हत्या दिवस" की

३१—बोरिस लावरेनेव (१८९१-१९५९), माइखेल शोलोखोव (१९०५ मे जन्म) और लियोनिद लियोनोव (१८९९ मे जन्म) सोवियत "गौरव ग्रन्थो" के रचयिता है, जिनके गृह-युद्ध सम्बन्धी उपन्यासो मे पात्रो मे श्वेत सैनिक है। क्रांति के बाद के आरम्भिक वर्षो मे सोवियत साहित्य मे "क्राति विरोधियो" का चित्रण (जैसे लियोनोव के उपन्यास· बैजर्स, १९२४ मे) अक्सर अत्यधिक निरपेक्ष दृष्टि से हुआ है। शोलोखोव के उपन्यास एण्ड क्वाइट फलोज दि दोन का नायक ग्रीगरी मेलेखोव वस्तुत गृहयुद्ध के दौरान पर्याप्त समय तक श्वेत सेना के उद्देश्यो की पूर्ति के लिये कार्य करता है।

घोषणा की जाती है तो तुम यह आशा करोगे कि प्रत्येक व्यक्ति इस आदेश के अनुसार हत्या करने के लिये दौड पड़ेगा ?

डेनियल : नही मैंने अपनी कहानी मे यह नही कहा है "सार्वजनिक हत्या दिवस" एक साहित्यिक शैली है, जिसका उपयोग लोगो की प्रतिक्रियाओ के अध्ययन के लिये किया गया है।

न्यायाधीश : यहा मैं एक बात का स्पष्टीकरण करना चाहता हूं। ज़रा एक सामूहिक फ्लैट की कल्पना कीजिए, जहा आइवानोवा का साइदोरोवा से झगडा है।[22] यदि आइवानोवा यह लिखती है कि कोई स्त्री एक अन्य स्त्री के जीवन को दूभर बना रही है, तो यह अप्रत्यक्ष रूप से आलोचना होती, अपनी बात कहने का तरीका होता। लेकिन यदि वह यह लिखती कि साइदोरोवा उसके सूप मे कूड़ाकर्कट फेकती है तो यह एक बदनाम करने जैसी बात होती, यह एक प्रवाद या कोई ऐसा ही विषय होता, जिसके लिये कानूनी कारवाई की जा सकती थी। तुमने आखिरकार सोवियत सरकार के विषय मे लिखा है—प्राचीन बेबीलोन के बारे मे नही बल्कि एक खास सरकार के बारे मे जिसने "सार्वजनिक हत्या दिवस" की घोषणा की और तुम तारीख भी देते हो, १० अगस्त १९६०। यह एक साहित्यिक शैली है या खुल्लम खुल्ला प्रवाद फैलाने का प्रयास ?

डेनियल : मुझे कृपया आप अपने ही उदाहरण का उपयोग करने दें। यदि आइवानोवा यह लिखती कि साइदोरोवा एक झाड़ू पर सवार होकर आकाश मे उड़ती है अथवा स्वय को एक जानवर मे बदल लेती है तो यह एक साहित्यिक शैली होती प्रवाद नही। मैंने तो एक ऐसी स्थिति को चुना जो स्पष्ट रूप से अत्यधिक काल्पनिक थी।

न्यायाधीश : लेकिन तुम्हारी कहानी के बारे मे वी० फिलोपोव ने यह लिखा है : "क्या हम यह कह सकते हैं कि अर्जहक ने जिन बातो का विवरण प्रस्तुत किया है वे यथार्थ से बहुत दूर है ?"[23] तो तुम यह देखते हो डेनियल कि यह केवल एक साहित्यिक शैली ही नही है, क्या है ?

डेनियल . यह एक साहित्यिक शैली है।

सरकारी वकील . डेनियल, क्या तुम इस बात से इन्कार करते हो कि सोवियत सरकार

२२—साइदोरोवा और आइवारोवा रूस मे स्त्रियो के बड़े सामान्य उपनाम है। सामूहिक फ्लैट के लिये देखिए पृष्ठ ११२ की टिप्पणी।

२३—यह उद्धरण "दिस इज मास्को स्पीकिंग" के रूसी सस्करण की फिलीपोव द्वारा लिखित भूमिका से है। यह रूसी संस्करण भी उन्होंने ही वाशिंगटन से प्रकाशित किया।

द्वारा कथित रूप से घोषित "सार्वजनिक हत्या दिवस" वस्तुत प्रवाद फैलाने का प्रयास है ?

डेनियल : मेरा विचार है कि प्रवाद वह वस्तु होता है, जिस पर आप लोगो को विश्वास दिला सकें, कम से कम सिद्धात रूप मे ही विश्वास दिला सकें। (अदालत के कमरे मे हसी)

न्यायाधीश : मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हू। (दण्ड सहिता से पढते हुए) : "झूठी और निन्दात्मक खबर को फैलाना प्रवाद है।" यह इसका कानूनी पक्ष है।

डेनियल : तो काल्पनिक स्थितियो का क्या होगा ?

न्यायाधीश : मैं फिर एक-बार अपने उदाहरण का उल्लेख करूगा। यदि आइवानोवा यह बात जोर देकर कहती है कि साइदोरोवा ने ऐसा कुछ किया जो वस्तुतः साइदोरोवा ने नही किया था तो वकील ऐसे वक्तव्य को प्रवाद कहेगे।

सरकारी वकील : तुमने सामान्य सोवियत नागरिको के विरुद्ध प्रवाद फैलाया है। जरा देखिए तो सोवियत जनता किस प्रकार "सार्वजनिक हत्या दिवस" की घोषणा के प्रति अपनी कथित प्रतिक्रिया दिखाती है। (वह कुछ उद्धरण पढता है।)" ये लोग शिक्षित माने गये हैं। ये बाते प्रवाद के अलावा अन्य क्या हो सकती है" तुम मार्गूलिस से अपनी बातचीत को ही लो।

डेनियल . (बीच मे टोकते हुए) यह मेरा वार्तालाप नही है। यह तो मेरा नायक बातचीत कर रहा है।

सरकारी वकील क्या यह सोवियत जनता के विरुद्ध प्रवाद नही है ?

डेनियल . तो इस प्रकार मायाकोवस्की का 'बॉथहाउस' और 'बैड बग' भी सोवियत जनता के विरुद्ध प्रवाद होगा। क्या मायाकोवस्की ने पियरी स्क्रिपकिन के विरुद्ध प्रवाद नही फैलाया ?[35]

सरकारी वकील : हमे यह चर्चा नही करनी है। मुझे बस यह दिखाओ कि क्या तुम्हारी कहानी मे कोई भी एक ऐसा सोवियत व्यक्ति है जो एक वास्तविक सोवियत

३४—डिसोनेट वायसेस पृष्ठ २६६।

३५—मायाकोवस्की द्वारा अपने जीवन के अन्तिम वर्षों मे, नयी अर्थ नीति के युग के अन्त मे लिखित प्रसिद्ध नाटक। इन नाटको मे नौकरशाही और पदोन्नति की चाह तथा लालच आदि के कारण क्रातिकारी शुद्धता के व्यापक रूप से भ्रष्ट होने के विरुद्ध भयकर व्यग्य है। इनके प्रकाशन के समय १९२८ और १९२९ (इन नाटको की सोवियत यथार्थ की "विकृति" कहकर कडी आलोचना की गई थी, बैड बग नाटक मे एक भूतपूर्व श्रमिक पियरी बुर्जुआ हो जाता है और एक विशिष्ट वर्ग को दर्शाने वाला नाम पियरी रख लेता है।

व्यक्ति जैसा दिखाई पडता हो। हमारे बुद्धिवादियो की तुमने जो तस्वीर खीची है, उसपर एक नजर डालो।

डेनियल : तुम तो सोवियत बुद्धिवादियो के बारे मे इस प्रकार बात करते हो मानो वे सब प्रशसा के पात्र हो।

सरकारी वकील . मुझे एक भी ऐसा व्यक्ति दिखाओ, जिसका तुमने अच्छे रूप मे चरित्र चित्रण किया हो। (वह उद्धरण पढता है।) क्या यह सोवियत जनता के विरुद्ध सोवियत सरकार के विरुद्ध प्रवाद नही है ?

डेनियल . लेखक सघ के नियम तक यह नही कहते कि लेखको को केवल गरिमामय, बुद्धिमान और अच्छे लोगो के बारे मे ही लिखना चाहिये। मुझे एक व्यग्य रचना मे अच्छे लोगो के बारे मे ही लिखने के लिये क्यो बाध्य समझा जाये ? व्यग्यकारो ने, एरेस्टो फेन्स से लेकर गोगोल तक[३६]—

सरकारी वकील : तुम्हारा सिर फिर गया है।

डेनियल . क्या मैं एक बयान दे सकता हू ? मैं एक लेखक हू। मै साहित्य के इतिहास का, अन्य लेखको के अनुभवो का, उल्लेख अवश्य करना चाहूगा। इसका यह अर्थ नही है कि मैं स्वयं को उनके समकक्ष समझता हूं। मैं ऐसा नही समझता। बुद्धिमत्ता अथवा प्रतिभा, किसी भी दृष्टि से, मैं ऐसा नही समझता। मैं समझता हूं कि सरकारी वकील यह कहना बन्द करेंगे कि मै यह समझता हूं।

सरकारी वकील . अपनी कहानी मे तुम इजवेस्तिया और 'साहित्य तथा जीवन' का उल्लेख करते हो। तुम बेजीमिन्स्की और माइखलकोव[३७] का उल्लेख करते हो। तुम पूरे सोवियत समाचारपत्र जगत के विरुद्ध, सब सोवियत लेखको के विरुद्ध

३६—निकोलाई गोगोल (१८०९-१८५२) : प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार और नाटककार। व्यंग्यात्मक उपन्यास डैड सोल्स और नाटक 'दि इन्स्पैक्टर जनरल' के लेखक। ये दोनों रचनाएं जार सम्राट निकोलस प्रथम के शासनकाल के रूस के जीवन पर तीखे व्यग्य से ओत-प्रोत हैं।

३७—डिसोनेन्ट वॉयसेज के पृष्ठ २६९ और २७० देखिए। इजवेस्तिया सोवियत सघ का (प्रावदा के बाद) सर्वाधिक महत्वपूर्ण समाचारपत्र है और इसे सरकार का मुख-पत्र समझा जाता है, जबकि प्रावदा कम्युनिस्ट पार्टी का मुख पत्र है। साहित्य और जीवन (लितेरातुरा आई झिज्न) नामक साहित्यिक पत्रिका अब बन्द कर दी गई है। यह स्पष्ट प्रतिक्रियावादी पत्रिका थी। (इसमे ईवतशेंको पर उनकी कविता बाबीयार के लिये, जिसमे यहूदी विरोधी की चर्चा हुई थी निन्दात्मक आलोचनाएं प्रकाशित की गई।)

अलेग्जेंडर बेजीमिन्स्की (१८९८ मे जन्म) और सरगेई माइखलकोव (१९१३ मे जन्म) सोवियत कवि हैं, जो राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप लिखने के लिये प्रसिद्ध है। ये दोनो किसी भी अवसर पर तुरन्त कविता लिखने के माहिर है।

प्रवाद फैलाते हो। यदि यह सोवियत समाचारपत्रो के विरुद्ध प्रवाद नही तो क्या है।

डेनियल नही, यह सोवियत समाचारपत्रो के विरुद्ध प्रवाद नही है। मैं कुछ लेखको, अवसर से लाभ उठाने वाले लेखको की ही चर्चा कर रहा था। यह घटिया शैली और उन घिसी-पिटी बातो का व्यंग्य चित्रण, जो हम अक्सर अपने समाचारपत्रों मे देखते है।

सरकारी वकील मुझे इस उत्तर की आशा थी और मैं अब इज़वेस्तिया सम्बन्धी अश की फिर चर्चा करता हू। इसमे कहा गया है कि "समाचारपत्र ने सदा की तरह, एक सम्पादकीय लिखकर सार्वजनिक हत्या दिवस मनाने का आह्वान किया।" आदि। "सदा की तरह"। क्या यह पूरे सोवियत समाचारपत्र जगत के विरुद्ध प्रवाद नही हैं।

डेनियल ' यह तो समाचारपत्रो के लेखो की शैली का मजाक हैं।

सरकारी वकील : अब अन्तत. तुम अपने सच्चे स्वर मे वोल रहे हो।

न्यायाधीश . ऐसी वाते कहने की कोई आवश्यकता नही है जिनसे मुकदमे को आगे वढाने मे मदद न मिलती हो।

डेनियल : मैं सदा अपने सच्चे स्वर मे बोलता हू।

सरकारी वकील तुम लिखते हो कि लोग यहूदी विरोधी है और वस कोई अभियान छेड़ने की प्रतीक्षा करते रहते है। तुम इस मन.स्थिति की तुलना उस मन स्थिति से करते हो, जिसका परिणाम बावी यार हुआ[३८]। लेकिन उसमे हत्यारे फासिस्ट हैं। लेकिन क्या हमारे देश के सव लोगो की तुलना, फासिस्टो से करना, भयकर प्रवाद और अपमानजनक वात नही है ?

डेनियल इस अश का यह निष्कर्ष नही है कि सोवियत सघ के सव लोग यहूदी विरोधी है। इसका केवल यही अर्थ है कि कुछ व्यक्तियो का ऐसा रुझान है। मैं बिना नामो का उल्लेख किये कुछ लोगो की चर्चा कर रहा था जो अपने निजी वदले लेना चाह सकते है। मैंने कहा कि ऐसी गदगी के कुछ उदाहरण हो सकते है। इससे अधिक इस अश का कोई अर्थ नही हो सकता।

सरकारी वकील : कुछ व्यक्ति ही या देश के सव लोग—हम अभी देख लेते हैं, यह अभी स्पष्ट हो जाता है। (वह एक अश पढ कर सुनाता है, जिसमे यह वर्णन किया गया है कि किस प्रकार जार्जियावासी आर्मीनियावासियो की हत्या करते हैं।

३८—कीव प्रान्त का एक वेहड, जहा १६४१ मे जर्मनो ने हज़ारो यहूदियो की हत्या की। ईवजेनी ईवतुशेको ने अपनी प्रसिद्ध कविता मे यह शिकायत की है कि वहा कोई स्मारक नही वनाया गया है। सरकारी वकील जिस अश का उल्लेख करता है, वह डिसोनेट वॉयसेज के पृष्ठ २७३ पर हे।

आर्मीनियावासी जार्जियावासियों को मारते हैं और मध्य एशिया में प्रत्येक व्यक्ति, रूसियो की हत्या करता है।[39] क्या यह पूरी सोवियत जनता के विरुद्ध प्रवाद नही है।

डेनियल : नही। यह पूरी सोवियत जनता के विरुद्ध प्रवाद नही है।

सरकारी वकील : और तुम कहते हो कि ये सब घटनाएं केन्द्रीय समिति के निर्देश के अनुसार घटती है। क्या यह भी प्रवाद नही है।

डेनियल : आप निरन्तर इस बात को भुलाये जा रहे हैं कि इन सब बातो का आरम्भ और आधार एक काल्पनिक स्थिति हैं, एक ऐसी बात नही, जो वस्तुतः हुई हो।
(अदालत के कमरे मे हसी)।
सरकारी वकील प्रवासी रूसी, फिलीपोव की एक टिप्पणी से कुछ पढ़कर सुनाता है, जिसमे अर्जहक की रचनाओ को सोवियत विरोधी बताया गया है।

सरकारी वकील : इसके बारे मे तुम क्या कहते हो ?

डेनियल : मेरा सुझाव है कि तुम इसका स्पष्टीकरण फिलीपोव से मागो। वह जो कुछ लिखता है, उसके लिये मैं उत्तरदायी नही हूं।

सरकारी वकील लेकिन सोवियत प्रकाशकों को छोडकर फिलीपोव के पास तो तुम गये थे।

डेनियल : मैंने फिलीपोव या अन्य किसी को कभी पत्र नही लिखा और मुझे इस बात की कभी भी, कोई भी, जानकारी नही थी कि मेरी रचनाएं कहा प्रकाशित होंगी।

न्यायाधीश . लेकिन फिलीपोव ने ही इसे प्रकाशित किया है।

डेनियल लेकिन मुझे इसका पता केवल १९६३ मे ही चला।

सरकारी वकील लेकिन तुम यह जानते थ कि सोवियत विरोधी क्षेत्र तुम्हारी रचनाओ को रेडियो से प्रसारित कर रहे है ?

डेनियल . आपके इस वक्तव्य का कोई आधार नही हैं।
कुछ समय के लिये अदालत की कारवाई स्थगित।

तीसरे पहर की बैठक ३ बजकर ३० मिनट, १० फरवरी।

सरकारी वकील : डेनियल तुमने यह लिखा है।

(वह दिस इज मास्को स्पीकिंग से एक अश पढ कर सुनता है, जो सार्वजनिक हत्या दिवस के बारे मे केन्द्रीय समिति के एक परिपत्र के सम्बन्ध मे है[40])

इसी समय अदालत के कमरे मे बत्ती गुल हो जाती हैं। कोई व्यक्ति बडी उत्तेजना से चिल्ला कर कहता है, "लेव निकोलावे विच (न्यायाधीश का नाम) हम रोशनी के लिये

३९—यह अंश डिसोनेंट वॉयसेज के पृष्ठ २०२–३ पर है। इस अंश पर विचार के लिये भूमिका का पृष्ठ ३१ भी देखिए।

४०—डिसोनैन्ट वॉयसेज पृष्ठ ३०३।

अब क्या करेंगे ?" न्यायाधीश की नाराजगी। भरी आवाज . मैं एक न्यायाधीश हूं, बिजली ठीक करने वाला मिस्त्री नहीं।" फिर बत्तिया जल जाती हैं।

सरकारी वकील : क्या यह यूक्रेन के लोगो के विरुद्ध द्वेषपूर्ण प्रवाद नही है ?.

डेनियल : मे पहले ही कह चुका हूं कि प्रवाद क्या है। यह एक ऐसी बात होती है, जिस पर विश्वास किया जा सके और मैंने जिस स्थिति का वर्णन किया है, वह विश्वास योग्य नही है और यदि किसी बात पर विश्वास नही किया जाता, तो वह प्रवाद नहीं बल्कि अतिशय काल्पनिक बात होती है। लेकिन मैं यह दोहराना चाहता हूं कि यदि व्यक्ति पूजा के दौर की फिर स्थापना हो जाती है, तो मैंने जो कुछ लिखा है वह संभव होगा। यदि व्यक्ति पूजा का दौर फिर आता है, तो कुछ भी हो सकता है, मैं अनुभव करता हू कि आदि राज्य केवल एक व्यक्ति के नियत्रण मे है तो कुछ भी असभव नही।

सरकारी वकील : इस बात से व्यक्ति पूजा के दौर का क्या सम्बन्ध है ? तुम सन १९६० के सोवियत सघ के बारे मे कह रहे हो। तुम्हारी कहानी के पृष्ठ ५० और ५१ पर तुम्हारा नायक लेनिन के मकबरे (लाल चौक मे) पर आता है और कोई गला घोट कर उसकी हत्या करना चाहता है। लेकिन ड्यूटी पर तैनात सन्तरी, यदि किसी बात से चिंतित है तो केवल इससे कि उसके बूट पर जरा सी धूल लगी है[41]। इस दृश्य का वर्णन तो लेखक ने ही किया है और जो पागल नायक पर हमला करता है, वह चिल्लाकर कहता है . "मैं यह कार्य मातृभूमि के आदेश से कर रहा हूं।" यह प्रवाद के अलावा बदनामी करने के अलावा अन्य क्या बात हो सकती है।

डेनियल : मुझे तुम्हारे बारे मे मालूम नही, लेकिन मैंने सेना मे काम किया है और मैं यह जानता हूं कि ड्यूटी पर तैनात सतरी को अपने स्थान से हटने का अधिकार नही है। इस बात मे कोई भी बदनामी करने की बात नहीं है।

सरकारी वकील · यह इस दृष्टि से बदनामी की बात है कि ये सब घटनाए मकबरे के सामने घटती हैं और इस कारण से कि सोवियत सतरी को केवल अपने बूट पर लगी धूल की ही चिन्ता है।

डेनियल इसमे भी कोई बदनामी की बात नही है। यदि सन्तरी अपने स्थान से हटता, तो उसका कोर्ट मार्शल होता और यह करना सही भी होता। कृपया इस अश से पहले के दो तीन वाक्य पढें। न्यायाधीश वही अश फिर पढ देता है।

डेनियल . मैंने आप से अनुरोध किया था कि आप इस अश से पहले के वाक्य पढें न कि

४१—डिसोनैन्ट वॉयसेज, पृष्ठ २९६-७। सरकारी वकील ने फिलीपोव द्वारा प्रकाशित रूसी सस्करण की पृष्ठ सख्या बताई है।

उसी अंश को फिर दुहरायें। ठीक है मैं स्वयं ही इसे संक्षेप मे प्रस्तुत करूंगा। इससे कुछ पहले ही नायक कहता है, "रुको ! वह यह नही चाहता था, वह व्यक्ति यह नही चाहता था, जो इन सगमरमर की दीवारो के भीतर चिरनिद्रा मे सोने वाला पहला व्यक्ति था[४२]।" लेनिन हत्या, आतंक और लोगों को सताने के विरुद्ध थे। न्यायाधीश एक लवा अंश पढ कर सुनाता है

सरकारी वकील . आरम्भिक जाच के समय तुम इस बात से सहमत हुए थे कि कहानी का पूरा विचार, जैसा कि ग्लावलित की रिपोर्ट में कहा गया है, यह है कि सोवियत संघ के सब लोग इस प्रकार आतंकित हो चुके है कि अब वे भयंकर से भयकर कारवाइयो से विचलित नही होते। क्या तुम अब उस वक्तव्य की फिर पुष्टि करते हो।

डेनियल मुझे एक बार फिर यह दुहराना है कि इस कहानी की कथावस्तु यह थी कि यदि व्यक्ति पूजा का दौर फिर आ जाता है तो क्या हो सकता है।

सरकारी वकील (कार्तसेव और स्वेतलाना[४३] की बातचीत का अश पढता है। और इसके माध्यम से वह दर्शाना चाहता है कि सोवियत सघ के सब लोग भयभीत रहते है) इसके बारे मे तुम्हारी क्या राय है ? क्या इस बात से ग्लावलित के निष्कर्षों की पुष्टि नही होती कि तुमने देश के समस्त लोगो और सरकार की बदनामी की है ?

डेनियल · मैं फिर यही बात दोहराता हूं कि कहानी का कथ्य यह है कि यदि व्यक्ति पूजा का दौर फिर आ जाता है, तो क्या हो सकता है। आखिरकार सन् १९६१ मे इस बात का वास्तविक भय था कि यह घटना घट सकती है।

सरकारी वकील . तुम फिर प्रवाद फैला रहे हो, सिन्यावस्की।

डेनियल : (आधा झुकते हुए) : मेरा नाम डेनियल है।

न्यायाधीश . सरकारी वकील को संबोधित करते हुए : ऐसी बातें कहने की कोई आवश्यकता नही है। जिरह का उद्देश्य, तथ्यो को प्रमाणित करना है, उन पर निर्णय देना न्यायालय का काम है।

सरकारी वकील १३ जनवरी को तुमसे पूछताछ के दौरान, तुमने यह स्वीकार किया था कि इसमें कुछ ऐसे अंश हैं, जिन्हे सोवियत विरोधी बताया जा सकता है। क्या तुम इस बयान की पुष्टि करते हो।

डेनियल : हा।

न्यायाधीश, डेनियल के बयान का वह अश पढकर सुनाता है, जिसमे यह कहा गया है कि कहानी के कुछ अंशो को सोवियत विरोधी दर्शाया जा सकता है।

४२—डिसोनैंट वॉयसेज पृष्ठ २९७।

४३—डिसोनैंट वायसेज, पृष्ठ ३०५।

न्यायाधीश क्या तुम इस बयान की पुष्टि करते हो।

डेनियल : हा, मैं करता हूं।

सरकारी वकील तुम्हारी "दि मैन फ्राम मिनाप" "हैड्स" और "अटोनमेट" कहानिया भी सोवियत विरोधी हैं। (वह ग्लावलित की रिपोर्ट से कुछ अश पढ कर सुनाता है) "ये सब रचनाए, सैद्धातिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से, साम्यवाद विरोधी उद्देश्यो की पूर्ति के लिये, सोवियत विरोधी लेखन के विशिष्ट उदाहरण है ····"अटोनमेट" इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति पूजा के दौर के लिये सोवियत रूस की समस्त जनता दोषी है कि लोगो को पार्टी के उद्देश्यो मे विश्वास नही है। इस कहानी का राजनीतिक सदेश कहानी के अन्त मे दिये गये प्रलाप मे निहित है। जैसे "कामरेडो, वे आज भी हमे सता रहे है, यातनाए दे रहे है। तुम स्वय अपने आप से नही भाग सकते, हमारी जेले स्वय हमारे भीतर है" आदि। "हैड्स" शीर्षक कहानी मे चेका के सदस्यो[४४] पर द्वेषपूर्ण प्रहार किये गये है और पार्टी की नीतियो को साम्यवाद विरोधी बताया गया है। "दि मैन फ्राम मिनाप" मे 'वैज्ञानिक दूषण की मास्को स्थिति सस्था[४५]' (जिसका सक्षेप 'मिनाप' अथवा एम आई एन ए पी कहानी के शीर्षक मे प्रयुक्त किया गया है) का चित्रण किया गया है एक अत्यधिक अपरिष्कृत और भद्दा प्रवाद है, जिसमे हमारे नैतिक मानदण्डो और कुछ वैज्ञानिक विचारो का मज़ाक उडाया गया है।" क्या तुम ग्लावलित रिपोर्ट से सहमत हो, डेनियल ?

डेनियल नही, बिल्कुल नही।

सरकारी वकील लेकिन आरम्भिक जाच के दौरान तुमने इन कहानियो के बारे मे एक बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण अपनाया था। (वह २३ दिसम्बर १९६५ को हुई पूछताछ के दौरान, डेनियल के बयान से कुछ अश पढकर सुनाता है, जिसमे डेनियल ने यह स्वीकार किया था कि "दि मैन फ्राम मिनाप" के अध्याय ६ मे कुछ ऐसी पक्तिया है, जिनकी यह व्याख्या की जा सकती है कि यह सोवियत सरकार की आलोचना है।) क्या तुम इसकी पुष्टि करते हो ?

डेनियल · हा मैं यह पुष्टि करता हूं कि इन पक्तियो की इस प्रकार व्याख्या की जा सकती है।

४४—चेका के सदस्यो के लिये देखिए पृष्ठ १६२ की टिप्पणी।

४५—मास्कोवस्की इन्स्टीट्यूट नौचनोई प्रोफेनात्सी को सक्षेप मे एम आई एन ए पी अथवा मिनाप कहा गया है, जो "दि मैन फ्राम मिनाप" कहानी की वैज्ञानिक सस्था का व्यंग्य मे दिया गया नाम है। यह सस्था कहानी के नायक की असाधारण काम (सैक्स) शक्ति का लाभ उठाती है। प्रस्तावना का पृष्ठ ३५ देखिए।

सरकारी वकील (एक अन्य अंश पढता है) · और ये पंक्तिया । क्या इन्हे भी सोवियत विरोधी वताया जा सकता है ?

डेनियल . वताया जा सकता है, लेकिन ये है नही ।

(अदालत के कमरे में हसी)

सरकारी वकील · डेनियल, तुम्हे सोवियत विरोधी ऐसी प्रवादात्मक कहानिया लिखने के लिए किस वात ने प्रेरित किया, जिनमें सोवियत सघ की राजनीतिक व्यवस्था पर द्वेषपूर्ण प्रहार किये गये है ?

डेनियल . मैं इस रूप मे पूछे गये प्रश्न का उत्तर देने से इनकार करता हू ।

सरकारी वकील · तुम्हे किस वात ने ये कहानिया लिखने की प्रेरणा दी ?

डेनियल एण्ड क्वाट फ्लोज दि दोन को भी सोवियत विरोधी वताकर निन्दा की गई थी[४६] । (अदालत के कमरे मे वेचैनी और हसी) । "है" और "हो सकता है"··· ·· के वीच अन्तर है ।

न्यायाधीश . यह साहित्यिक वादविवाद नही है और हम साहित्य के इतिहास पर विचार मे नही जा सकते ।

डेनियल : मैं साहित्यिक समानताओ के उदाहरण प्रस्तुत करने के अपने अधिकार पर जोर देता हूं । मेरे ऊपर राजनीतिक अपराध का आरोप लगाया गया है और मैं ऐसे समान उदाहरण प्रस्तुत करके ही अपनी सफाई दे रहा हूं ।

न्यायाधीश तुम "दि मैन फ्राम मिनाप" तथा 'एण्ड क्वाट फ्लोज दी दोन' की तुलना करते हो । यह तुम्हारे लिये कोई चतुरतापूर्ण वात नही है ।

डेनियल : मैं अपनी तुलना किसी भी अन्य व्यक्ति से नही कर रहा हूं ।

सरकारी वकील . तुमने ऐसी कहानिया क्यो लिखी, जिन्हें सोवियत विरोधी वताया जा सकता है ?

डेनियल . तुम उन सव कहानियो के वारे मे पूछ रहे हो अथवा किसी एक के वारे मे ?

सरकारी वकील . तुम हमे उनमे से किसी एक के वारे मे वता सकते हो ।

डेनियल : मैं "हैंड्स"की चर्चा करूगा । मैं जानता हूं कि मुझे अदालत से सवाल पूछने का अधिकार नही है । लेकिन क्या इस्तगासा इस कहानी मे कोई एक भी वाक्य, एक भी शव्द, किसी शव्द का एक भी अंश ऐसा दिखा सकता है, जिस की व्याख्या सोवियत विरोधी हो सकती हो, या जिसे सोवियत विरोधी वताया जा सकता हो ? यह कहानी एक ऐसी वास्तविक घटना का साहित्यिक रूप है, जो मुझे सुनाई गई थी । इस कहानी मे ऐसी कोई वात नही है, जिसके आधार

४६—शोलोखोव के गौरव ग्रन्थ "एण्ड क्वाइट फ्लोज दो दोन" पर वस्तुतः सन् १९२८ मे, इसके पहले भाग के प्रकाशन के समय, कुछ सोवियत आलोचकों ने प्रहार किया था ।

पर मेरे विरुद्ध लगाये गये अभियोग सिद्ध होते हों। अभियोगपत्र उस समय स्वयं अपना खडन करता है, जब वह इस कहानी की चर्चा करता है। अभियोगपत्र मे कहा गया है कि सोवियत शासन ने कभी भी बल प्रयोग नही किया। लेकिन ऐसा दृष्टिकोण वैज्ञानिक नही है। यह दृष्टिकोण मार्क्सवादी नही है, यह दृष्टिकोण लेनिनवादी नही है। लेनिन के अनुसार, क्राति बलप्रयोग है, और राज्य बल प्रयोग करता है और [एक क्रातिकारी राज्य मे] अल्पमत बहुमत के विरुद्ध बलप्रयोग करता है। अभियोगपत्र मे यह दावा किया गया है कि मैंने यह लिखा · "सोवियत शासन ने सोवियत जनता के विरुद्ध हिंसा का प्रयोग किया।" इस कहानी में ऐसी कोई बात नही है और यह कहानी क्राति विरोधियो को मृत्यु दण्ड देने के बारे मे है। इस कहानी मे ऐसी कोई बात नही है, जिसका यह अर्थ निकलता हो कि इसमे प्रतिशोध की भावना को भडकाया गया है। इसकी वह व्याख्या नही की जा सकती, जैसी अभियोगपत्र मे की गई है। अब मैं "दि मैन फ्राम मिनाप" पर आता हूं। मुझे यह कहानी पसन्द नही है; यह घटिया ढग से लिखी गई है, अपरिष्कृत है और सुरुचिपूर्ण नही है, लेकिन इसमे कुछ भी सोवियत विरोधी नही है। यह एक व्यग्य चित्रण है, विद्रूप है और अतिशय काल्पनिक है ये सब बातें व्यंग्य लेखन की परम्परा के अनुरूप है। १० बुरे व्यक्तियो के चरित्र-चित्रण को इस्तगासे ने पूरे सोवियत समाज का चित्रण क्यों बताना चाहा? व्यग्य रचना मे पात्र सदा नकारात्मक होते हैं, और ऐसी रचनाओं मे सकारात्मक नायक सदा एक परम्परागत व्यक्तित्व का व्यक्ति होता है। यह कहने का कोई आधार नही है कि इस कहानी मे सोवियत समाज के नैतिक मानदण्डो पर प्रहार किया गया है। मैने यह कहानी क्यों लिखी? मेरे मित्रो मे अनेक वैज्ञानिक हैं और उनमे से एक ने मुझे बाशियान और लेपेशिन्सकाया[47] (में इन दोनो नामो को बाराबरी का दर्जा नही देता) के बारे

४७—ओलगा लेपेशिन्सकाया (१८७१-१९६३) एक सोवियत जीव वैज्ञानिक थी, जो लाइसेन्को की तरह स्तालिन के जीवन के अन्तिम वर्षों मे प्रजनन विज्ञान की कटु आलोचना और अपने सदिग्ध सिद्धान्तो के जबरदस्त समर्थन के लिये कुख्यात हुई। सन् १९५० मे उसे "जीव विज्ञान के क्षेत्र में" तथाकथित "महान् अविष्कार" के लिये स्तालिन पुरस्कार दिया गया। इस आविष्कार का सम्बन्ध इस दावे से था कि अकोषिका वाले जीव भी हैं। उनके समर्थको मे जी० एम० बोशियान (जिसके मुकदमे की कारवाई के विवरण मे गलत हिज्जे दिये गये हैं) भी था। स्तालिन के शासनकाल का एक पहलू यह था कि झूठे वैज्ञानिको को बडी आसानी से वैज्ञानिक सस्थाओ पर अपना नियत्रण कायम करने में सफलता मिली और ये लोग उन वैज्ञानिको पर जो उनसे असहमत होते, अक्सर राजनीतिक आधार पर, आरोप लगाकर उन्हे अपने रास्ते से हटा देते थे। कुछ सीमा तक डेनियल की कहानी 'दि मैन फ्राम मिनाप' स्तालिन के शासन काल मे विज्ञान की इस प्रकार विकृति के बारे मे है, जिसके दुष्परिणामो को आज भी समाप्त नही किया जा सका है।

में हुए विवाद के विषय में बताया और यह कहा कि ऐसे सनसनीखेज मामलों से हमारे विज्ञान को क्षति पहुंची है। इस कहानी का सम्बन्ध ऐसे ग़लत विवादों से है न कि विज्ञान की सम्वन्वित शाखा से। ऐसा लगता है कि ग्लावलित यह चाहता है कि मुझे ऐसी घटनाओं पर व्यंग्य करने के स्थान पर, उनकी महिमा गानी चाहिये थी।

सरकारी वकील और डेनियल की ग्लावलित रिपोर्ट में उल्लिखित "वैज्ञानिक सिद्धातो" के बारे मे लम्बी बहस होती है।

न्यायाधीश रिपोर्ट का एक अंश पढ़ कर सुनाता है, जिसमे यह कहा गया है कि यह कहानी "कुछ वैज्ञानिक सिद्धातो" के विरुद्ध प्रवाद है।

न्यायाधीश : डेनियल, क्या तुम इस कहानी मे वाशियान पर प्रहार कर रहे थे ?

डेनियल · नही, मैं तो वैज्ञानिक आविष्कारो के बारे मे सनसनीखेज प्रचार करने के तरीके पर प्रहार कर रहा था।

न्यायाधीश : यदि कहानी का यही मुख्य कथ्य था तो तुम्हारा पात्र वोलोद्या एक ऐसे अनुचित समय पर और एक ऐसी स्थिति मे कार्ल मार्क्स और क्लारा जेतकिन का स्मरण क्यों करता है ?[४८]

डेनियल . जिस शीघ्रता मे यह कहानी लिखी गई, वह इसके कारण का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करती है।

(अदालत के कमरे मे असहमति के स्वर मे फ़ुसफ़ुसाहट और अपरिष्कृत हसी)।

न्यायाधीश : तुम्हारी कहानी 'हैड्स" वहुत पुराने समय के बारे मे है। तुमने "एस्केप" जैसी कहानी को विदेश न भेज कर, इसे क्यो भेजा ?

डेनियल : मैं यह चाहता था कि मैंने जो लिखा है, वह प्रकाशित हो। मैं इस बात से आश्वस्त हूं कि मेरी रचनाओ मे कुछ भी सोवियत विरोधी नही है। लेकिन मैं यह जानता हू कि हमारे सम्पादक और प्रकाशक यह सोचते है कि कुछ निषिद्ध विषय हैं, जिन पर साहित्य मे विचार नही होना चाहिये। ऐसे अनेक विषय हैं जिन पर लेखक कुछ भी नही लिखते अथवा प्रकाशक कुछ भी नहीं छापते। "हैंड्स" का विषय निषिद्ध है और मौन के द्वारा इसकी उपेक्षा की जाती है। यह एक ऐसी रचना है, जो रक्तरंजित और कठिन है, लेकिन फिर भी आवश्यक है। कहानी का नायक एक मजदूर है, जो बाद मे चेका मे काम करता है। और चेका मे काम करने के कारण उसके हाथ कापने लगे हैं।

(वह कहानी को सक्षेप मे कहता है।)

४८—देखिए पृष्ठ ३५।

न्यायाधीश : लेकिन तुमने सबसे पहले इस कहानी को ही विदेश क्यो भेजा।

डेनियल : क्योकि मैं यह निश्चय कर सकता था कि यह कहानी यहा प्रकाशित नही हो सकती। यह एक निषिद्ध विषय के बारे मे है, जिस पर हमारे साहित्य मे १६३० के बाद के वर्षों से कुछ भी नही लिखा गया है......

न्यायाधीश : लेकिन यही कहानी क्यो, "एस्केप", अथवा कुछ अनुवाद क्यो नही ? यह एक भयकर शैली मे लिखी गई है। (एक अश पढता है) लेकिन मुख्य बात यह नही है। आज तुम्हारे लिये पादरियो को गोली से उडाने का विषय इतना महत्वपूर्ण क्यो हो उठा है ? तुम्हे आज इस विषय पर लिखने की क्यो आवश्यकता हुई ? रूसी प्रवासियो ने तिखोन[४६] के बारे में काफी शोरगुल मचाया है। क्या इसका साहित्य से कुछ सम्बन्ध है ?

डेनियल : लेकिन नायक यह नही जानता कि वह लोगों को गोली से क्यो उडा रहा है।

न्यायाधीश : (एक अश पढता है, और फिर कहता है) ' स्पष्ट है कि वे लोग विदेश में इसे प्रकाशित करना बहुत पसन्द करेंगे।

डेनियल ' जब मैंने यह कहानी लिखी तो मेरे सामने कोई राजनीतिक उद्देश्य नही था। (अदालत के कमरे में हसी)

सरकारी वकील चलिए हम यह मान कर चलते है कि तुमने कहानी की राजनीतिक जटिलताओ को उस समय नही समझा था। यदि ऐसा था तो तुमने इस कहानी को छद्म नाम से और गैर-कानूनी तरीको से विदेश क्यो भेजा ?

डेनियल . मैंने प्रकाशन के लिये इसे विदेश भेजा। मेरे लिये यह पर्याप्त कारण था। यदि मैं कोई डाक्टर या इंजीनियर होता तो मैं इसे अपने नाम से ही प्रकाशित करता। लेकिन मैं एक अनुवादक हूं। मेरी कोटि के एक अनुवादक को काम प्राप्त करने के लिये प्रकाशन गृहो से अच्छे सम्बन्ध रखना ज़रूरी होता है। यदि इस बात

४६—तिख़ोन रूस की आर्थोडॉक्स चर्च के पहले पादरी थे, जिन्हें १६१७ की अक्तूबर क्राति के बाद, राज्य और चर्च को अलग-अलग करने की कारवाई के अन्तर्गत उनके पद पर फिर नियुक्त किया गया। इसके पहले पीटर महान् ने बडे पादरी के पद को समाप्त कर दिया था। बहुत जल्दी ही तिखोन का सोवियत अधिकारियो से विरोध हो गया। उन्हे उनके ही मकान मे गिरफ्तार रखा गया और १६२५ में उनकी मृत्यु हो गई। अनेक पादरियो को (डेनियल की कहानी में गोली से उडाये गये पादरियो की तरह ही) इसलिए कष्ट उठाने पडे, क्योकि वे बडे पादरी तिखोन का समर्थन करते थे। उसकी मृत्यु के बाद सोवियत अधिकारियो ने १६४३ तक किसी नये बडे पादरी की नियुक्ति की अनुमति नही दी। १६४३ मे यह काम इसलिए किया गया, क्योकि स्तालिन ने रूस की राष्ट्रीय भावनाओ को ध्यान मे रखते हुए, युद्ध की आवश्यकताओ के कारण चर्च से अस्थायी शान्ति कर ली थी।

की जानकारी हो जाती है कि विदेशों में मेरी रचनाएं प्रकाशित हो रही हैं, तो मुझे अनुवाद कार्य मिलना बन्द हो जाता। जब मैंने इन रचनाओ को जामोयस्का को दिया, तो मुझे यह नहीं मालूम था कि कहां, कब और किस देश में इसका प्रकाशन होगा। किसी भी साहित्यिक रचना का अन्तिम चरण, उसका प्रकाशन होता है। आप जिस रूप में चाहे, इसकी व्याख्या कर सकते है। आप इसे अहंकार अथवा आवश्यकता से अधिक गर्व कह सकते हैं। लेकिन यदि मैं एक डाक्टर अथवा वैज्ञानिक होता तो मैं कभी भी छद्म नाम का इस्तेमाल न करता। मैं पहले ही कह चुका हूं कि यह अनैतिक बात थी।

सरकारी वकील : तुम अपनी रचनाओ का प्रकाशन चाहते थे। लेकिन क्या तुमने हमारे शत्रुओ के बारे में इस तथ्य के बारे मे कि इन रचनाओ का उपयोग सोवियत विरोधी प्रचार के लिये किया जा सकता है, नही सोचा ?

डेनियल : मैंने इसके बारे में नही सोचा।

सरकरी वकील तुमने इसके बारे में कब सोचना शुरू किया।

डेनियल · १९६३ के बाद जब मैंने पहली बार अपनी दो पुस्तकें देखी, जिनमें से एक की भूमिका फिलीपोव ने लिखी थी, तब मैंने यह अनुभव किया कि इन्हे किस रूप में पेश किया जा रहा है। अपने सदेहो के बावजूद मैंने एक और रचना विदेश भेजी। लेकिन १९६३ से मैंने और कुछ नही लिखा है, और न ही कुछ विदेश भेजा है।

सरकारी वकील २५ अक्तूबर १९६५ को आरम्भिक जाच के दौरान दिया गया गार्वूजेन्को का इस आशय का बयान पढता है कि इन पाण्डुलिपियो को विदेश नही भेजा जाना चाहिये था, क्योकि केवल यही तथ्य कि इनका विदेशो में प्रकाशन हुआ, इन्हें स्वत. सोवियत विरोधी बना देता है। सरकारी वकील खजानोव का बयान पढता है, जिन्हे इस बात का गहरा आघात था कि इससे डेनियल के परिवार को किन मुसीबतो का समना करना पड सकता है और जिन्होने यह भी कहा कि राजनीतिक दृष्टि से यह कार्य किसी व्यक्ति को पीछे कोचने जैसा था।

सरकारी वकील : तुमने इस सबके बाद, खजानोव द्वारा भय और आशंका प्रकट करने के बाद भी "अटोनमेंट" को विदेश भेजा ?

डैनियल : खजानोव मेरे लिये भयभीत थे। उन्हें इस बात का भय था कि मेरा क्या होगा ?

सरकारी वकील : लेकिन क्या गार्बूजेन्को ने तुम्हे यह नही बताया कि ये रचनाएं स्वतः सोवियत विरोधी रचनाओ की कोटि मे आ जाती है ? इस बात से तुम्हे अवश्य सोचना चाहिये था और इस बात पर भी सोचो, जो तुमने खमेलनित्सकी के बारे मे कही है। मई १९६२ मे ही खमेलनित्सकी ने, दूसरे लोगो की मौजूदगी मे 'यह कहा कि इस कहानी का प्रसारण एक सोवियत विरोधी रेडियो से हुआ है। लेकिन तुमने एक बार फिर, तीसरी बार अपनी रचना विदेश भेजी। इसका यह मतलब हुआ कि तुम यह बात अच्छी तरह से जानते थे कि तुम क्या कर रहे हो ?

डेनियल . किसी कहानी का रेडियो से प्रसारण हुआ, यह बात अपने आप मे कोई अर्थ नही रखती। मुझे यह मालूम नही था कि किस रेडियो स्टेशन ने इसे प्रसारित किया। हो सकता था कि इसे ऐसे रेडियो स्टेशन ने प्रसारित किया हो, जो सोवियत विरोधी नही है। गार्बूजेन्को ने कहा था कि इसे इसलिए सोवियत विरोधी प्रचार समझा जा सकता है कि इसका प्रकाशन विदेश मे हुआ, न कि इसलिए कि इसकी विषय वस्तु सोवियत विरोधी है। जहां तक खज़ानोव का सम्बन्ध है, वह तो प्रायः हर बात से भयभीत रहता है।

सरकारी वकील तुम्हारे इन शब्दो का क्या अर्थ है "यह बात हमे बहुत महंगी पड़ सकती है।"

डेनियल मैने यह अनुभव किया था कि यह बात अनैतिक है।

न्यायाधीश रेडियो लिबर्टी के प्रसारण की प्रस्तावना का उद्धरण देता है।

सरकारी वकील ठीक है, मान लीजिए तुम्हे यह नही मालूम था कि किस प्रकार का रेडियो स्टेशन यह था। मान लीजिए तुमने यह सोचा कि यह एक मित्रता का भाव रखने वाला स्टेशन था और तुमने अपने मित्रो की बात पर कोई ध्यान नही दिया। लेकिन अन्ततः, १९६४ के शुरू मे, तुम्हे विदेश मे प्रकाशित अपनी रचनाए मिलनी शुरू होती है और तुम फिलीपोव की भूमिका पढते हो और तब तुम यह देखते हो कि तुम्हारा किस प्रकार इस्तेमाल किया गया। लेकिन तुम इस बारे मे कुछ नही करते, तुम कोई प्रतिवाद नही करते और न ही तुम अपनी अगली रचना के प्रकाशन को रोकने के लिये भी कुछ करते हो।

डेनियल : यह निश्चय करने के बाद कि अब मैं कुछ और नही लिखूगा अथवा कोई भी रचना विदेश नही भेजूगा, मैंने पहले की रचनाओ का लेखक होने के रहस्य को प्रकट करना नही चाहा। यदि मैं कोई विरोध करता तो मेरा सही नाम प्रकट हो जाता और मैं यह करने से डरता था।

सरकारी वकील लेकिन अन्य मौकों पर तुम कही अधिक साहसी रहे। सिन्यावस्की ने तुमसे कहा था कि विदेश मे अपनी रचनाए भेजना खतरनाक है।

डेनियल : तुम उनके बयान का गलत हवाला दे रहे हो।

सरकारी वकील बयान पढ कर सुनाता है।

डेनियल : ठीक है मैं भूल गया था। तुमने सही उद्धरण दिया है।

सरकारी वकील : लेकिन उस समय तुम्हारा साहस तुम्हारा साथ छोड गया, जब तुम्हारी मातृभूमि को पहुंची क्षति को समाप्त करने का सवाल आया।

डेनियल : मैं इतना अधिक साहसी सिद्ध नही हुआ। मुझे आशा थी कि यह मामला अपने आप समाप्त हो जायेगा। इसके अलावा मैं अकेला नही था और जब एक व्यक्ति अपने परिवार के बारे मे सोचता है, तो उसका साहस उसका साथ छोड देता है। जहा तक हमारे देश को पहुंची क्षति का सवाल है, मैं नही समझता कि हमारी दो पुस्तकों अथवा २० पुस्तको तक से हमारे जैसे देश को कोई उल्लेखनीय क्षति पहुच सकती है।

न्यायाधीश : लेकिन तुम्हारा प्रचार तो निरन्तर बढता गया। तुम्हारी कहानी "अटोनमेंट" को कई कम्पनियो ने प्रकाशित किया।

(अदालत के कमरे मे हसी)

डेनियल : मैंने "अटोनमेट" को प्रकाशित रूप मे कभी नही देखा। मै उतना साहसी नही रहा, जितना आरम्भ मे था। अपने परिवार के लिये खतरे के भय से मेरा साहस जाता रहा। मै समझता हूं कि देश को कोई अधिक क्षति नही हुई।

सरकारी वकील : तुमने ऐसी बातें लिखी, जो स्वय तुम्हारे अनुसार, सोवियत विरोधी बताई जा सकती थी। तुमने यह कार्य बहुत लम्बी अवधि तक किया। तुम यह जानते थे कि पश्चिम के देशों मे इन रचनाओं की क्या व्याख्या की जा रही है, इन्हे किस रूप मे पेश किया जा रहा है। हमे तुम स्वयं बताओ कि तुम अपने इस कार्य को क्या कहोगे ?

डेनियल : मैं सदा यह सोचता रहा हूं और यह सोचता हूं कि मेरी पुस्तकें सोवियत विरोधी नही हैं और मैंने इनमे कोई भी सोवियत विरोधी बात नही लिखी। क्योकि मैंने इनमे अपने सामाजिक जीवन के बुनियादी सिद्धान्तो की न, तो आलोचना की और न ही उनका मज़ाक उड़ाया है। मैं कुछ व्यक्तियो को पूरी सामाजिक व्यवस्था का पर्याय नही मानता, अथवा सरकार और राज्य को समान नही समझता अथवा किसी एक दौर को पूरा सोवियत युग नही मानता। एक राज्य शताब्दियो तक कायम रह सकता है, लेकिन सरकार अक्सर कम अवधि तक ही रहती है और अक्सर इसके कार्य गौरवपूर्ण नही होते। लेकिन जहा तक इन रचनाओ के विदेश मे प्रकाशन का सवाल है, यह दूसरा विषय है, मैं इस बात पर खेद प्रकट करता हूं। अपनी गिरफ्तारी के समय तक मैं पश्चिम में अपनी रचनाओं के प्रति हुई प्रतिक्रिया का केवल अनुमान भर लगा सकता था। लेकिन

आरम्भिक जाच के दौरान मुझे यह पता चला कि मेरी रचनाओ को कुछ व्यक्तियो पर प्रहार नही वल्कि हमारी पूरी व्यवस्था पर प्रहार दर्शाया गया। इन्हे किसी एक विशेष दौर पर प्रहार नही, लेकिन हमारे पूरे लक्ष्य के ऊपर ही प्रहार माना गया। लेकिन अपने बुनियादी रूप और विचार से मेरी कोई भी रचना, सोवियत विरोधी नही है—आप यह नही कह सकते कि यह सुझाव देना कि व्यक्ति को सदा और हर स्थिति मे मानवीय रहना चाहिये, यहां तक कि जव वह स्वय को "सार्वजनिक हत्या दिवस" जैसी स्थिति मे पाये, तव भी मानवीय रहना चाहिये, सोवियत विरोधी बात है।

न्यायाधीश उस भयकर स्थिति मे भी, जिसमे तुमने सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत को फसाया है ?

डेनियल . हा, और मैं इस बात को सोवियत विरोधी नही मानता।

न्यायाधीश : और तुमने अपनी कल्पना के इन साहित्यिक टुकडो को विदेश भेजा ?

डेनियल मुझे इस बात पर खेद है।

न्यायाधीश तुम्हारे आविष्कारो मे एक के वाद एक राजनीतिक विचार उलझा हुआ है। (अभियोगपत्र मे दिये गये अशो को दुहराता है)।

डेनियल मै जिन वस्तुओं पर लिखता हूं उनके बारे मे हमारा साहित्य और हमारा समाचारपत्र-जगत मौन है। लेकिन साहित्य को किसी भी अवधि, किसी भी दौर और किसी भी प्रश्न पर विचार करने का अधिकार है। मैं अनुभव करता हूं कि समाज के जीवन मे कोई भी निषिद्ध विपय नही होना चाहिये।

सरकारी वकील लेकिन तुमने १९६० का वर्ष चुना। तुमने इस आदेश की कल्पना की। मैंने तो तुमसे सीधा सादा सवाल पूछा है। यदि तुम स्वय अपने शब्दो मे अपने आचरण का विवरण नही देना चाहते तो तुम जानो।

डेनियल : मैंने जो कुछ लिखा है, उसके आधार पर मैं स्वय को दोषी नही मानता। लेकिन मैं इस बात पर खेद प्रकट करता हू कि मैंने इन रचनाओ को विदेश मे प्रकाशित किया। मैं यह बात फिर दुहराता हू कि सन् १९६१ मे व्यक्ति पूजा के दौर की फिर स्थापना का खतरा, वडा वास्तविक बन चुका था।

न्यायाधीश : और क्या तुमने व्यक्ति पूजा के कारण फिलीपोव से सम्पर्क किया ?

सरकारी वकील : इन रचनाओ का व्यक्ति पूजा के दौर से कोई सम्वन्ध नही है।

डेनियल : मैंने फिलीपोव से कोई सम्पर्क नही किया।

सरकारी वकील हू। डेनियल मुझे यह वताओ कि सिन्यावस्की की साहित्यिक गतिविधियो के वारे मे तुम क्या जानते हो ? क्या तुमने उसकी रचनाए पढी हैं ?

डेनियल . मैं उनकी उन सब रचनाओ से परिचित हू जो विदेशो मे प्रकाशित हुई। उन्होने मुझे उनकी पाण्डुलिपिया पढ कर सुनाई थी। मैंने ल्यूबीमोव और फैंटास्टिक

स्टोरीज़ को पुस्तक रूप मे भी देखा है ।

सरकारी वकील : क्या तुमने फिलीपोव की भूमिका भी पढ़ी ?

डेनियल : नही ।

सरकारी वकील : तुमने सिन्यावस्की की रचनाओ का क्या मूल्यांकन किया ?

डेनियल : साहित्य के रूप मे ।

सरकारी वकील : राजनीतिक पक्ष के बारे मे तुम्हारी क्या राय है ?

डेनियल : मैं नहीं समझता कि इनमे कोई भी सोवियत विरोधी बात है ।

सरकारी वकील : क्या तुमने उसका प्रवन्ध आन सोशलिस्ट रियलिज्म पढ़ा है ?

डेनियल : मुझे याद नही ।

वासिलयेव : (जन अभियोक्ता) तुमने अपना छद्म नाम अर्जहक कहा से लिया[५०] ?

डेनियल : मुझे इसकी ध्वनि पसन्द आई ।

वासिलयेव : यह किसी गीत से तो नही लिया गया है ?

डेनियल : नही । मुझे किसी ऐसे गीत की जानकारी नही है ।

किसेलिश्स्की (डेनियल का वकील) : तुम कब से साहित्यिक कार्य मे लगे हो ?

डेनियल . १९५७ से ।

किसेलिश्स्की : अब तक तुम्हारी कितनी रचनाए प्रकाशित हुई हैं ?

डेनियल : अब तक ४० ऐसे संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमे मेरे अनुवाद भी सकलित हैं । (कुछ के नाम गिनाता है) ।

किसेलिश्स्की : तुमने कब गद्य लिखना शुरू किया, तुम्हारी पहली गद्य रचना कौन सी थी ?

डेनियल : मेरी पहली रचना "एस्केप" शीर्षक कहानी थी । मैंने इसे १९५२-५३ में लिखना शुरू किया और १९५७-५८ मे समाप्त किया ।

किसेलिश्स्की : हमे तिथि क्रम से यह बताइए कि आपने कब कौन-कौन सी रचना लिखी और किस-किस रचना को विदेश भेजा ?

डेनियल : "हैंड्स" शीर्षक कहानी १९५६ और १९५८ के बीच लिखी गई थी और १९६०

५०—मुकदमे सम्बन्धी अपने समाचार मे इज़वेस्तिया ने अपने १२ फरवरी १९६६ के अंक मे दोनो प्रतिवादियो के छद्म नामो की इस प्रकार व्याख्या की और अपनी टिप्पणी दी ।

"कहा जाता है कि इस्मोलेंस्क बोली मे अर्जहक का अर्थ "लुटेरा" होता है । एब्राम टेरट्ज़ भी कम दिलचस्प नही है । १९२० के बाद के वर्षो मे अपराधियो के गुप्त ससार में ओडेसा मे एक गीत बड़ा प्रचलित था और इस गीत का एक पात्र था "एब्रश्का टेरट्ज़, ओडेसा का लुटेरा" । सम्भवत: इन दोनों मित्रो द्वारा इन छद्म नामो का चुनाव, भविष्य कथन सिद्ध हुआ या यह भी हो सकता है कि ऐसा केवल संयोगवश ही हुआ हो ।"

मे विदेश भेजी गई। मैंने "दिस इज मास्को स्पीकिंग" १९६१ मे लिखी और उसी वर्ष विदेश भेजी। "अटोनमेंट" १९६३ मे लिखी और विदेश भेजी।

किसेनिदस्की : क्या "हैंड्स" कहानी मे कोई ऐसे अश भी है, जिनसे यह स्पष्ट होता हो कि यह रचना सोवियत विरोधी नही है ?

डेनियल . हा। हैं।

(कई अश पढ कर सुनाता है।)

किसेनिश्स्की : इस कहानी का नाम "हैंड्स" क्यो रखा गया।

डेनियल : पहले इसका नाम "एन इवेंट" था और बाद मे बदल कर "हैड्स" कर दिया गया। कहानी में इस बात का आधार है।

किसेनिश्स्की · क्या "दि मैन फ्राम मिनाप" शीर्षक कहानी मे राजनीतिक दृष्टि से चतुरताहीन अंश है ?

डेनियल : हा, हैं। उदाहरण के लिये एक विशेष सदर्भ मे मार्क्स का उल्लेख, यद्यपि इसमे स्वय मार्क्स के बारे मे कोई बुरी वात नही है।

(अदालत के कमरे मे हसी) एक स्वर : इसे किसी भी बात की शर्म नही रही।)

किसेनिश्स्की . और तुम्हारा इस बात की कोई व्यापक व्याख्या प्रस्तुत करने का उद्देश्य नही था ?

डेनियल : (हसता है) नही यह वात मेरी समझ के वाहर है कि यह किया जा सकता है।

किसेनिश्स्की हमे यह बताओ कि तुम्हें "अटोनमेंट" कहानी का विचार कैसे आया ?

डेनियल . हाल के वर्षों मे हम अक्सर उन लोगों के बारे मे सुनते रहे है जो प्रवाद फैलाते रहे हैं और जिनके झूठे अभियोगो के कारण निर्दोष लोगो को जेलो मे सडना पड़ा। मैं एक भिन्न स्थिति दर्शाना चाहता था—एक व्यक्ति उस स्थिति मे कैसा अनुभव करेगा यदि उस पर झूठे अभियोग लगाने जैसी भयकर बात का झूठा आरोप लगाया गया हो। यह वात मेरे परिचय के एक व्यक्ति के साथ वस्तुत हुई। इस प्रकार इस कहानी का विचार मेरे मन मे आया। अभियोगपत्र मे कहा गया है कि इस कहानी का मुख्य विचार यह है कि व्यक्ति पूजा के दौर और व्यापक पैमाने पर लोगो को सताये जाने का दोष, प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर है। मैं इस व्याख्या से सहमत हूं लेकिन इस कहानी के लिये "प्रवाद" फैलाने वाली शब्दो का जो प्रयोग किया गया है, उससे सहमत नही हू। मैं अनुभव करता हू कि समाज मे जो कुछ होता है उसके लिये समाज का प्रत्येक सदस्य जिम्मेदार होता है और मैं स्वय को इसका अपवाद नही समझता। मैंने लिखा है कि "प्रत्येक व्यक्ति इसके लिये दोषी है" क्योकि इस प्रश्न का उत्तर नही मिला कि

दोषी कौन है ? किसी भी व्यक्ति ने कभी भी सार्वजनिक रूप से यह बात नही कही कि इन अपराधो के लिये किस को दोष दिया जा सकता है और मैं इस बात पर कभी विश्वास नही करूंगा कि तीन व्यक्ति—स्तालिन, बेरिया और र्यूमिन[51] अकेले ही पूरे देश के ऊपर ऐसे भयकर अत्याचार कर सकते थे। लेकिन आज तक किसी भी व्यक्ति ने इस प्रश्न का उत्तर नही दिया कि दोषी कौन है।

किसेनिश्स्की : तुमने अन्तिम पाण्डुलिपि कब विदेश भेजी और तुमने पाण्डुलिपिया विदेश भेजना क्यो बन्द किया ?

डेनियल · १९६३ मे।

किसेनिश्स्की . हमे अपने जीवन के बारे मे मुख्य-मुख्य बाते बताइए।

डेनियल मेरा जन्म १९२५ मे हुआ। मैं स्कूल से सीधा मोर्चे पर गया। युद्ध के दौरान मैं यूक्रेन के दूसरे और बायलो रूस के तीसरे मोर्चे पर लड़ा। भयकर रूप से घायल होने के कारण मुझे सेना से सेवा मुक्त कर दिया गया और मुझे युद्ध में पगु होने के कारण पेन्शन दी गई। सन् १९४६ मे मै खारकोव विश्वविद्यालय मे भरती हुआ और इसके बाद मुझे मास्को प्रान्त के शिक्षक शिक्षण कालेज मे स्थानांतरित कर दिया गया, जहा से मैंने अपनी डिग्री प्राप्त की। इसके बाद मैंने लियोदिनोवो[52] मे एक स्कूल मे दो वर्ष तक अध्यापन किया। इसके बाद मैंने मास्को मे चार वर्ष तक अध्यापन किया।

सोकोलोव (जनवादीप्रसेसर) स्पष्ट है कि तुमने यह समझ लिया होगा कि तुम्हारी पाण्डुलिपियो के प्रकाशन का क्या असर होगा। तुमने इसके प्रभाव के बारे मे क्या सोचा था ?

डेनियल : यदि मैं इस प्रभाव का पूर्वानुमान लगा पाता, तो मै कभी भी अपनी पाण्डुलिपिया विदेश न भेजता।

न्यायाधीश लेकिन तुमने इसके राजनीतिक परिणाम का पूर्वानुमान अवश्य लगा लिया होगा ?

डेनियल : मेरी समझ मे यह बात आती ही नही थी कि मेरी रचनाओ का राजनीतिक दृष्टि से कैसे मूल्याकन किया जा सकता है। मैंने तो केवल यही सोचा था कि उनका

५१—सन् १९५३ मे स्तालिन की मृत्यु के बाद अपनी गिरफ्तारी और मृत्यु दण्ड के समय तक बेरिया सन् १९३८ से निरन्तर सोवियत सुरक्षा सेवाओ (एन के वी डी – एम वी डी) का अध्यक्ष रहा। स्तालिन के जीवन के अन्तिम महीनो मे र्यूमिन राज्य सुरक्षा उपमत्री के पद पर रहा। स्तालिन की मृत्यु के बाद जुलाई १९५४ मे उसे बेरिया के अपराधों में सहभागी होने के कारण मृत्यु दण्ड दिया गया।

५२—कालूगा प्रान्त का एक नगर।

मूल्याकन उनके साहित्यिक गुणदोष के आधार पर होगा।

न्यायाधीश · तो तुमने अपनी रचनाओ मे यह सब राजनीतिक विवरण क्यो रखे—वह भयावह आदेश, तिखोन के कारण एक पादरी को मृत्युदण्ड और इस्टीट्यूट आफ साइटेफिक प्रोफेनेशन (विज्ञान दूषण सस्था) ?

डेनियल : "दिस इज मास्को स्पीकिंग" मे ये सब विवरण, कहानी की अतिशय काल्पनिक कथावस्तु का ही अग है।

न्यायाधीश : इस कहानी के सब पात्र नैतिक दृष्टि से पतित है—निश्चित है कि इसका राजनीतिक उद्देश्य है और इसका कथावस्तु से कोई सम्बन्ध नही। क्यो और किस कारण से तुम ने ये सब बाते रखी ? क्या एक खास प्रभाव उत्पन्न करने के लिये यह नही किया गया ?

डेनियल : अच्छे लोगो का चित्रण करना, मेरा उद्देश्य नही था। मेरी कहानी मे बडा गहरा चरित्र चित्रण हुआ है। लेकिन मैं अच्छे लोगो का चरित्र चित्रण करने का प्रयास नही कर रहा था। मैं केवल यह दर्शा रहा था कि एक काल्पनिक स्थिति मे बुरे लोग किस प्रकार आचरण कर सकते है।

न्यायाधीश . सर्वोच्च सोवियत के आदेश से उत्पन्न स्थिति मे।

डेनियल मैं पहले ही कह चुका हू कि यदि व्यक्ति पूजा के दौर की फिर स्थापना होती तो कोई भी घटना, घटना सभव थी।

न्यायाधीश आरम्भिक जाच के दौरान तुमने अपनी रचनाओ की भिन्न व्याख्या दी हैं।

डेनियल इनका सम्बन्ध व्यापक विवरण से था, जिनका बुनियादी विचार मे कोई महत्व नही है।

सोकोलोव . क्या जामोयस्का को इस वात का ज्ञान था कि तुमने उसे कारीव की मार्फत क्यो पाण्डुलिपिया भेजी हैं।

डेनियल . हा, वह समझती थी—पहले भी ऐसा हो चुका था।

सोकोलोव तुम यह क्यो चाहते थे कि सिन्यावस्की पार्सल न देखे ?

डेनियल मैं सोचता था कि सभवत सिन्यावस्की इसे अच्छी बात न समझे क्योकि वे इस मामले मैं कारीव को डालने के विरुद्ध थे।

न्यायाधीश : यह वात तर्क सगत नही है। उसने स्वय पाण्डुलिपिया विदेश भेजी, तो वह तुम्हे यह करने से कैसे रोक सकता था ?

डेनियल . वह इस मामले मे कारीव को लाना नही चाहते थे।

न्यायाधीश . तुमने "लाना" शब्द का प्रयोग किया है। इस पर ध्यान दो। इसका अर्थ बुरा होता है। क्यो, नही होता क्या ? इसका अर्थ यह होता है कि तुम इसे एक बुरा कार्य समझते थे।

डेनियल : लेकिन क्यो ? आखिरकार हम लोगो को सामूहिक खेती समितियों में "लाने" की वात करते है ।

(अदालत के कमरे मे हंसी) ।

सरकारी वकील : तुम कहते हो कि तुमनें राजनीति की वात नही सोची । लेकिन तुम्हारी कहानी 'दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" के, उदाहरण के लिये, इस वाक्य के बारे तुम क्या कहोगे . "चाहे कुछ भी हो, सच यह है कि सोवियत विरोधी प्रकाशको द्वारा छपना इतनी अच्छी बात नही ।" हम इसका क्या अर्थ समझें ?

डेनियल : इसका ठीक वही अर्थ है, जो ये शब्द कहते हैं—यह बहुत अच्छी बात नही है । मैं उसे एक वार फिर दोहराता हूं जो मैं पहले ही इस मामले के नैतिक पक्ष के वारे मे कह चुका हूं ।

न्यायाधीश क्या कोई अन्य बात तुम न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करना चाहते हो ?

डेनियल . हा । इस्तगासे ने निरन्तर लेखक और उसके पात्रो को समान दर्शाया है । यह बात उस स्थिति मे विशेष रूप से अनुचित है जब सम्बन्धित पात्र, यदि नम्र शब्दावली का प्रयोग किया जाये तो, मानसिक दृष्टि से पूरी तरह से स्वस्थ न हो । उदाहरण के लिये "अटोनमेट" मे मुख्य पात्र पागल हो गया है और वही यह चिल्लाकर कहता है "हमारी जेलें स्वय हमारे भीतर हैं ।"

न्यायाधीश (टोकते हुए) वह इसके एक पृष्ठ वाद ही पागल होता है ।

डेनियल नही । अगले पृष्ठ पर तो वह पागलखाने पहुंच चुका होता है । दूसरी बात—जो पात्र इन वातो को कहते है उन की मानसिक स्थिति आदि का हवाला दिये विना ही उद्धरण दिये जाते हैं । इन मे से एक पात्र पागल है, और दूसरा शराबी ।

न्यायाधीश . तुम्हारे सब बुद्धिवादी शरावी हैं ।

डेनियल : मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि एक तो आप सदर्भ से हटा कर उद्धरण न दें और दूसरे यह कि पात्रो की मानसिक स्थिति को घ्यान मे रखें । और यदि मैंने यहा-वहा सीमा का उल्लघन किया है तो इसका कारण यह नही समझा जाना चाहिये कि मैं सोवियत विरोधी हूं, वल्कि इसे मेरी साहित्यिक कुशलता की कमी माना जाना चाहिये ।

(अदालत के कमरे मे हंसी) ।

आन्द्रेय सिन्यावस्की से जिरह

१० फरवरी, लगभग ६ बजे ।

न्यायाधीश . अब सिन्यावस्की से जिरह की कारवाई शुरू होती है ।

सरकारी वकील : सिन्यावस्की, तुमने कहा से डिग्री प्राप्त की और तुम्हारे पास कौन सी डिग्री है ?

सिन्यावस्की · मैंने मास्को विश्वविद्यालय से डिग्री ली। मैं कैंडीडेट आफ फाइलोलॉजिकल साइनसेज़[53] हूं।

सरकारी वकील · इसके बाद तुमने कहा काम किया ?

सिन्यावस्की मैंने सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी की विश्व साहित्य संस्था मे काम किया।

सरकारी वकील क्या तुमने कभी किसी छद्म नाम से रचनाए प्रकाशित की हैं ?

सिन्यावस्की हा। मैंने एब्राम टेरट्ज के नाम से विदेशो मे ६ रचनाए प्रकाशित की।

सरकारी वकील तुमने यही नाम क्यो चुना[54] ?

सिन्यावस्की . बस, मुझे यह नाम पसन्द आ गया। मैं नही समझता कि किसी तर्कसंगत तरीके से इस बात का स्पष्टीकरण दिया जा सकता है।

सरकारी वकील क्या तुमने इस छद्म नाम को इससे पहले कभी सुना था ?

सिन्यावस्की नही, मैंने नही सुना था।

सरकारी वकील इस छद्म नाम से तुमने विदेशो मे कौन-कौन सी रचनाए प्रकाशित की है ?

सिन्यावस्की मैंने "दि ट्रायल बिगिन्स", "आन सोशलिस्ट रियलिज़म", ५ अतिशय काल्पनिक कहानियो "फैंटास्टिक स्टोरीज" का एक सग्रह। "अनगार्डेड थॉट्स" और "ल्यूबीमोव" प्रकाशित की।

सरकारी वकील (ये रचनाए अदालत मे पेश करता है। इन रचनाओ का नाम और प्रकाशन की तारीख दी गई है): "ल्यूबीमोव" (१९६४-६५) "दि ट्रायल बिगिन्स", (१९६०), "आन सोशलिस्ट रियलिजम" (१९५९), "फैंटास्टिक स्टोरीज़" (१९६३), "अनगार्डेड थॉट्स" (१९ जुलाई १९६५, न्यू लीडर नामक पत्रिका मे)···· सिन्यावस्की, क्या ये तुम्हारी रचनाए है।

सिन्यावस्की हा, ये मेरी रचनाए हैं।

सरकारी वकील अभियोगपत्र मे जिन तीन रचनाओं का उल्लेख है, वे तुमने कब लिखीं ?

सिन्यावस्की मैंने "दि ट्रायल बिगिन्स" और "आन सोशलिस्ट रियलिजम" १९५६ मे लिखी, मैंने "ल्यूबीमोव" १९६१-६२ मे लिखी।

५३—साहित्यिक और भाषा विज्ञान सम्बन्धी अध्ययनो के लिए फाइलोलॉजिकल साइनसेज़ का प्रयोग हुआ है और "कैंडीडेट" की डिग्री पश्चिम के देशो की डाक्टर की डिग्री के समकक्ष होती है।

५४—पृष्ठ २१६ की टिप्पणी देखिए।

सरकारी वकील : तुमने ये रचन ए कहां लिखीं ?

सिन्यावस्की : मास्को मे ।

सरकारी वकील : क्या किसी व्यक्ति ने तुम्हे इनके लेखन मे मदद दी, क्या किसी व्यक्ति ने इनके विचारो अथवा कथा-वस्तु का सुझाव दिया ?

सिन्यावस्की . किसी भी व्यक्ति ने मुझे कोई मदद नही दी ।

सरकारी वकील : तुम ने इन्हे विदेश कैसे भेजा ?

सिन्यावस्की मैंने इन्हे ज़ामोयस्का की सहायता से विदेश भेजा, जिससे मेरा उस समय परिचय हुआ था जब हम दोनो विश्वविद्यालय मे सहपाठी थे ।

सरकारी वकील क्या तुमने अपनी पाण्डुलिपिया गैर कानूनी तरीके से बाहर भेजी ?

सिन्यावस्की मैंने इन्हें गैर-सरकारी तरीके से बाहर भेजा, गैर-कानूनी तरीके से नही ।

सरकारी वकील : तुमने जिस तरीके से इन्हे बाहर भेजा, उसके बारे मे तुम क्या कहोगे ?

सिन्यावस्की "गैर-सरकारी" तरीके से । मैं इसे गैर-कानूनी नही मानता और मैं न्यायिक अर्थों मे इस शब्द की जटिलताओ को नही समझता ।

सरकारी वकील : क्या किसी व्यक्ति ने तुम्हे इस काम मे मदद दी ?

सिन्यावस्की हा, मैंने एक पृष्ठ रेमेजोव की मार्फत भेजा । यह मेरे प्रबन्ध का परिशिष्ट था । यह कला मे अतिशय काल्पनिकता के प्रश्न के बारे मे था और इसमे समाजवादी यथार्थवाद अथवा राजनीति सम्बन्धी कोई बात नही है[५५] ।

सरकारी वकील और उसने यह पृष्ठ पहुंचा दिया ।

सिन्यावस्की . ज़ाहिर है कि उसने पहुचा दिया, क्योकि यह प्रकाशित हुआ ।

सरकारी वकील : क्या किसी अन्य व्यक्ति ने तुम्हे सहायता दी ?

सिन्यावस्की . नही ।

सरकारी वकील क्या तुमने कभी ऐन कारीव की मार्फत कोई चीज़ भेजी ?

सिन्यावस्की . नही । मैने उसकी मार्फत कुछ नही भेजा

सरकारी वकील . किसने उसकी मार्फत चीजें भेजी ?

सिन्यावस्की : मैंने स्वयं उसकी मार्फत कुछ नही भेजा । यदि डेनियल ने उसकी मार्फत कुछ भेजा हो तो मुझे उसके बारे में कोई जानकारी नही है ।

सरकारी वकील क्या तुमने जामोयस्का को फोटो में पहचाना है ?

सिन्यावस्की . हा ।

सरकारी वकील . क्या तुमने ज़ामोयस्का को अपनी टाइप की हुई पाण्डुलिपियां दी ।

सिन्यावस्की : हा ।

५५—इस परिशिष्ट का सार, जिसमे सिन्यावस्की की साहित्यिक मान्यता दी गई है, पृष्ठ २५ पर उद्धृत है ।

सरकारी वकील · क्या इन्हे "ऑप्टीमा" टाइप राइटर पर टाइप किया गया था।

सिन्यावस्की : हा।

सरकारी वकील तुमने कहा और कब "दि ट्रायल बिगिन्स", "आन सोशलिस्ट रियलिज़म" और "ल्यूबीमोव" की पाण्डुलिपिया दी ?

सिन्यावस्की : "दि ट्रायल बिगिन्स" और "आन सोशलिस्ट रियलिजम" १९५६ के अन्त मे; "फैंटास्टिक स्टोरीज" १९६० मे, "ल्यूबीमोव" और "अनगार्डेड थॉट्स" १९६३ मे।

सरकारी वकील तुमने सदा अपनी रचनाए जामोयस्का को उस समय दी, जब वह सोवियत सघ से बाहर जा रही होती थी। क्यो ? क्या सतर्कता के रूप मे ?

सिन्यावस्की शायद इसलिए ही। मुझे ठीक-ठीक नही मालूम कि इसका क्या कारण था। बस हुआ ऐसा ही। भिन्न अवसरो पर भिन्न बात हुई। मुझे ठीक-ठीक याद नही।

सरकारी वकील : (आरम्भिक जाच के समय दिया गया बयान पढता है) "मैंने अपनी रचनाए अपने फ़ैलेट मे दी जब कोई वहा मौजूद नही था। उसने अपने रवाना होने से कुछ समय पहले ही इन्हे लिया।" क्या यह सयोग की बात है कि "रवाना होने से थोडी देर पहले ही" इन्हे लिया गया ?

सिन्यावस्की मैंने जब कभी भी उसे अपनी पाण्डुलिपिया, दी, मैंने कभी भी कोई शर्त नही लगाई अथवा कोई अनुरोध नही किया। मैं नही कह सकता कि ऐसा क्यो हुआ कि मैंने सदा उसके रवाना होने से पहले ही, उसे अपनी रचनाए दी।

सरकारी वकील क्या जामोयस्का को इसबातका भय नही था कि उसे सीमा पर पकडा जा सकता है ?

सिन्यावस्की . मुझे ऐसा याद नही कि हमारी इस बात पर चर्चा हुई हो।

सरकारी वकील · तुमने अपनी रचनाओ के बारे मे अन्य किसको बताया ?

सिन्यावस्की : मैंने विभिन्न लोगो को इन रचनाओं को पढ कर सुनाया—मैं अपनी रचनाएं पढकर सुनाना पसन्द करता हू। मैंने दस वर्ष की अवधि मे, लोगो को अपनी रचनाए सुनाई हैं और मुझे यह ठीक-ठीक याद नही है कि मैंने किसको और कौन सी रचना सुनाई। डेनियल को प्रबन्धो को छोडकर अन्य सब रचनाओ की जानकारी है। मुझे यह याद नही कि क्या मैंने प्रबन्ध उन्हे पढकर सुनाये। मैंने उन्हे दो पुस्तकें—"फैंटास्टिक स्टोरीज़" और "ल्यूबीमोव" भी दी। रेमेज़ोव को भी इन दो पुस्तको की जानकारी थी। मैंने अपनी प्रत्येक रचना अपनी पत्नी को पढ कर सुनाई। १९६५ के शुरू मे पेत्रोव ने बहुत सी रचनाए पढी। १९६४ के अन्त मे और १९६५ के आरम्भ मे रेमेज़ोव ने इन पुस्तको को देखा, और मैं सोचता हू कि इन्हे पढा या शायद इनमे से केवल एक ही पुस्तक पढी। यह हो सकता है कि मैंने पहले "दि ट्रायल बिगिन्स" का एक अश उसे पढकर सुनाया हो,

लेकिन जहा तक मेरे प्रबन्ध का प्रश्न है, मुझे याद नही। मैंने अपनी कहानियां, अन्य लोगो को पढकर सुनाई और संभवतः लेखन के समय मैंने "ल्यूबीमोव" के कुछ अश भी पढकर सुनाये, लेकिन मुझे ठीक-ठीक याद नही। जब मैं इन्हे पढ़कर सुनाता हू तो मैं सामान्यत शीर्षक नही देता, क्योकि उस समय तक शीर्षक का निश्चय नहीं होता और मैंने सदा लोगो को यह भी नहीं बताया कि मैं ही सबधित रचना का लेखक हूं।

सरकारी वकील . १८ नवम्बर १९६५ को तुमने अपने ब्यान में कहा है कि तुमने लोगो की एक टोली को अपनी रचना पढकर सुनाई : तुमने पेत्रोव को, किशिलोव दम्पत्ति को, खमेलनित्स्की को, मेनशुतिन दम्पत्ति को, सरगेयेव दम्पत्ति को, गेरचुक दम्पत्ति को और गोलोमश्तोक को पढकर सुनाई[५६]। क्या तुम इस ब्यान की पुष्टि करते हो ?

सिन्यावस्की : हां, लेकिन तुम अब मुझ से इन तीन रचनाओ के बारे में पूछ रहे हो, जबकि आरम्भिक जाच के दौरान मेरी समस्त रचनाओ के बारे मे सवाल पूछे गये थे। लेकिन जहा तक इन तीन रचनाओ का सम्बन्ध है, मैंने इन्हे संभवतः डेनियल और गोलोमश्तोक को और "ल्यूबीमोव" के कुछ अश अपनी पत्नी को और पेत्रोव को पढकर सुनाये।

सरकारी वकील : आरम्भिक जाच के दौरान तुमने अनेक फ्रांसीसी लोगो—क्लाद फ्रीओऊ, माइकेल औकूतूरियर और अलफ़ेदा औकूतूरियर[५७]—के नाम भी बताये थे। क्या तुम इस बात की पुष्टि करते हो कि तुम ने अपनी रचनाएं, उन्हे पढकर सुनाई ?

सिन्यावस्की उन्होने स्वय इन्हे पढा। हा, जहां तक मुझे याद है, उन्होने स्वय ही पढा। मैंने फ्रीओऊ से यह कहा था कि ये रचनाए मेरी हैं। लेकिन अन्य लोगों को यह जानकारी किसी अन्य तरीके से लगी।

सरकारी वकील · तुम्हे कब और किससे अपनी रचनाओ के प्रकाशित सस्करण मिले ?

सिन्यावस्की : जामोयस्का १९६३ मे "फैंटास्टिक स्टोरीज" लाई और १९६५ के आरम्भ मे

५६—ए० मेनशुतिन ने सिन्यावस्की के साथ मिलकर वह पुस्तक लिखी, जिसका उल्लेख पृष्ठ १८ की पाद टिप्पणी मे हुआ है। गोलोमश्तोक और सिन्यावस्की ने मिलकर पिकासो पर एक पुस्तक लिखी है (देखिए पृष्ठ ५३)। सिन्यावस्की और डेनियल के बारे में उनके वक्तव्यो के लिये देखिए पृष्ठ १४१–४ और १६६-७२।

५७—रूसी साहित्य के फ्रांसीसी विद्वानो, क्लाद फ्रीओऊ और माइकेल औकूतूरियर ने रूस मे विद्यार्थी के रूप मे कुछ समय बिताया। अलफ़ेदा औकूतूरियर माइकेल की पत्नी हैं। सिन्यावस्की और डेनियल के उनके सस्मरणो के लिये देखिए उपसहार।

मुझे पुस्तको के एक पार्सल मे ऐन कारीव की मार्फत ज्रामोयस्का से ल्यूवीमोव की प्रति मिली। मैंने "दी ट्रायल विगिन्स" को पहली बार उस समय देखा जब यह अन्य कुछ रचनाओं के साथ एक सग्रह मे प्रकाशित हुई।

सरकारी वकील · तुम्हे इस बात का कब पता चला कि तुम्हारी रचनाएं विदेशों में प्रकाशित हो चुकी हैं ?

सिन्यावस्की · मुझे यह मालूम था कि प्रबन्ध प्रकाशित हो चुका है, लेकिन मैंने इसे देखा नहीं।

सरकारी वकील : क्या तुम्हे यह मालूम था कि विदेशो मे तुम्हारी रचनाओ को किस रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है ?

सिन्यावस्की : नही।

सरकारी वकील · क्या तुम्हे डेनियल की रचनाओ की जानकारी है ?

सिन्यावस्की · उन्होंने मुझे अपनी सब रचनाएं पढकर सुनाई हैं।

सरकारी वकील · क्या उसने तुम्हे पाण्डुलिपि से अथवा प्रकाशित पुस्तको से इन्हे पढकर सुनाया।

सिन्यावस्की जब लोग मुझे अपनी रचनाए सस्वर पढकर सुनाते हैं, तो मैं उनके पीछे से यह झांक कर नही देखता कि वे किस चीज से पढ रहे हैं।

सरकारी वकील : क्या तुमने कभी प्रकाशित संस्करण देखे ?

सिन्यावस्की हा, मैंने उन्हे अपने हाथ मे लेकर देखा है।

सरकारी वकील · हमें उसकी रचनाओं के नाम बताओ ?

सिन्यावस्की आज यहां इतनी बार उनके नामो का उल्लेख हुआ है कि यदि पहले मुझे उनके नाम मालूम भी न होते, तो भी आज इतनी देर मे मुझे ये कण्ठस्थ हो जाने चाहिये थे।

सरकारी वकील : किस तरीके से तुमने डेनियल को उसकी पाण्डुलिपिया विदेश मे पहुचाने मे सहायता दी ?

सिन्यावस्की : मुझे इस बात का निश्चय नही है कि मैंने उसे किस प्रकार की सहायता दी। लेकिन मैं यह जानता था कि क्या हो रहा है।

न्यायाधीश : क्या तुमने पाण्डुलिपिया बाहर भेजी अथवा डेनियल ने स्वय यह किया ? इस बारे मे तथ्य क्या है ?

सिन्यावस्की · मैं इसका विस्तृत उत्तर देना चाहूंगा। मैं यह जानता था कि उनकी रचनाएं विदेशो मे छप रही हैं। लेकिन मुझे उनकी किन्ही पाण्डुलिपियों के अपनी मार्फत भेजे जाने की कोई बात याद नही है। जब जाच अधिकारी ने मुझे डेनियल का कोई नया ब्यान दिखाया, तो मैंने उस पर पूरी तरह से विश्वास कर लिया। यह समझते हुए कि इस सम्बन्ध मे उनकी याददाश्त मुझसे बेहतर है। मुझे

अपनी पाण्डुलिपियो के बारे मे सब कुछ याद है। यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे अपनी पाण्डुलिपियों की याद रखे और मुझे उन पर पूरा भरोसा है।

सरकारी वकील : डेनियल और ग्रामोयस्का की मुलाकात कहां हुई ? तुम्हारे घर पर ?

सिन्यावस्की : वे यदा कदा मेरे घर पर भी मिलते थे।

न्यायाधीश : तो इसका मतलब यह हुआ कि डेनियल की पाण्डुलिपियां तुम्हारी मार्फत गई ?

सिन्यावस्की : मुझे ठीक-ठीक याद नही। इस बारे मे जो डेनियल कहते हैं वह ठीक है।

न्यायाधीश : क्या उसने तुम्हारी उपस्थिति मे अपनी पाण्डुलिपियां दी ?

सिन्यावस्की : शायद……एक मौके पर……पर मुझे इसका निश्चय नहीं है।

सरकारी वकील : अपने पहले ब्यान मे तुमने कहा था कि तुम्हे इस बात की जानकारी थी कि डेनियल अपनी पाण्डुलिपिया विदेश भेज रहा था। क्या तुमने यह नही कहा था ?

सिन्यावस्की : मुझे एकदम याद नही है। हो सकता है मैंने यह कहा हो।

सरकारी वकील : आरम्भिक जांच के दौरान तुमने यह स्वीकार किया कि तुम डेनियल की पाण्डुलिपियां पहुंचाने मे मध्यस्थ थे। क्या तुम इस ब्यान की पुष्टि करते हो ?

सिन्यावस्की : मैं इसकी पुष्टि नही करता। मैंने इस शब्द का व्यापक अर्थ मे प्रयोग किया, किसी कानूनी अर्थ में नही। उस समय मुझे कानून मे इसके अर्थ की जानकारी नहीं थी।

न्यायाधीश : डेनियल, तुम हमे बताओ कि यह सब कैसे हुआ।

डेनियल ऐन कारीव और सिन्यावस्की की जानकारी के बिना ही अपनी पाण्डुलिपियों को भेजने सम्बन्धी अपना ब्यान दोहराता है।

न्यायाधीश : सिन्यावस्की, क्या तुम डेनियल के कथन की पुष्टि करते हो ?

सिन्यावस्की : मैंने जो कुछ नही देखा है, उसके अलावा मैं हर बात की पुष्टि करता हूं।

सरकारी वकील : तुमने यह ब्यान दिया है (और मैं इसका उद्धरण देता हूं) "मैं यह स्वीकार करता हू कि मैंने ऐन कारीव की मार्फत डेनियल की पाण्डुलिपिया विदेश भिजवाई हैं।" अब तुम एक भिन्न बात क्यो कह रहे हो ?

सिन्यावस्की : मुझे तथ्यो का स्मरण नही। आरम्भिक जाच के दौरान मैंने डेनियल के ब्यान पर सहमति प्रकट की थी।

सरकारी वकील : क्या तुमने डेनियल को उसकी पुस्तको के प्रकाशित संस्करण दिये ?

सिन्यावस्की मुझे याद नही है। संभवत. मैंने दिये हो। लेकिन यह भी हो सकता है कि मैंने इन्हें डेनियल के घर पर देखा हो। जिन्हें ये पुस्तकें स्वयं ग्रामोयस्का से मिली हो।

सरकारी वकील : डेनियल : तुम्हारी पुस्तकें तुम्हारे पास तक कैसे पहुंची ?

डेनियल : मुझे याद नहीं है।

दूसरा दिन
अभियुक्तों से जिरह

प्रातःकालीन सत्र, सुबह १० बजे, ११ फरवरी १९६६

आन्द्रेय सिन्यावस्की से जिरह (जारी)

न्यायाधीश : सिन्यावस्की से जिरह जारी रहेगी।

सरकारी वकील : सिन्यावस्की, क्या तुम आइवानोव और विदेशो मे प्रकाशित उसकी रचनाओ से परिचित हो ?

सिन्यावस्की . हां, वह रेमेज़ोव है[1]। उसने मुझे अपनी रचना "इज देयर लाइफ आन मार्स" ? पढकर सुनाई है—लेकिन पूरी नही—और "अमेरीकन पैंगस आफ दि रशियन कानशेंस" शीर्षक लेख अथवा इन दोनों के कुछ अंश पढकर सुनाये है। उसने मुझे एक यांत्रिक पुरुष सम्बन्धी एक नाटक के कुछ अंश पढकर सुनाये हैं।

सरकारी वकील : इन रचनाओ के बारे मे तुम्हारी क्या राय है ?

सिन्यावस्की : उसकी शैली, अत्यधिक शब्दाडबर और पक्षपातपूर्ण है और मेरी शैली से बहुत अधिक भिन्न है। मुझे यह बहुत उत्साहवर्द्धक नही मालूम पडी।

सरकारी वकील · इन रचनाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण के बारे मे तुम क्या सोचते हो ?

सिन्यावस्की . मैंने उन्हे कुछ सैद्धान्तिक समस्याओ पर अत्यधिक आधारित पाया। 'इज देयर लाइफ आन मार्स ?' सन् १९५३ के बारे मे है[2]। राजनीतिक दृष्टिकोण से मूल्याकन के लिये मैं उनसे पर्याप्त परिचित नही हूं।

सरकारी वकील · क्या तुमने उसे अपनी रचनाएं पढने को दी ?

सिन्यावस्की · सन् १९६४ मे मैंने उसे अपनी विदेश मे प्रकाशित रचनाए दिखाई। यह भी हो सकता है कि मैंने उसे इन्हे [पाण्डुलिपिया] पढकर सुनायी हो। मुझे इस

१—पृष्ठ १८१ की पाद टिप्पणी देखिए।

२—स्तालिन के जीवन के अन्तिम महीनों मे यहूदी विरोधी अभियान के बारे मे यह एक रूपक जैसा नाटक है।

बात का निश्चयपूर्वक ज्ञान नही है।

सरकारी वकील : रेमेज़ोव ने तुम्हे "ग्रान सोशलिस्ट रियलिज्म" शीर्षक लेख का निष्कर्ष बाहर भेजने मे सहायता दी ?

सिन्यावस्की : यह इस लेख का एक संक्षिप्त परिशिष्ट था। यह लेख का निष्कर्ष नहीं था।

सरकारी वकील : और तुमने रेमेज़ोव को उसकी रचनाए विदेश भेजने मे सहायता दी ?

सिन्यावस्की : नही।

सरकारी वकील : जब रेमेज़ोव से तुम्हारा सामना कराया गया, तो रेमेज़ोव ने कहा कि ज़ामोयस्का की मार्फत तुमने उसे उसकी चार रचनाए विदेश भेजने मे सहायता दी। क्या तुम अब इसकी पुष्टि करते हो ?

सिन्यावस्की : रेमेज़ोव ने यह कहा था, लेकिन यह सच नही है।

सरकारी वकील : वह झूठ क्यो बोलेगा ?

सिन्यावस्की : मैं नही जानता। मैं जानता था कि उसका मित्र बुसेनो[३] उसके साहित्यिक मामलों का संचालन करता है।

सरकारी वकील : लेकिन जब तुम्हारा उससे सामना कराया गया तो उसने बडे स्पष्ट शब्दों मे यह बात कही। तुम्हारे रेमेजोव से कैसे सम्बन्ध हैं ?

सिन्यावस्की : हम सहयोगी थे। हम बचपन से मित्र थे। लेकिन पिछले १० या १२ वर्षों में बस हम सहयोगी भर ही रह गये। मेरा उससे सम्पर्क प्रायः समाप्त हो गया। हम एक दूसरे से यदाकदा ही मिलते हैं।

सरकारी वकील : क्या वह तुम्हारे प्रति शत्रुतापूर्ण भाव रखता है। वह तुम्हारे बारे मे झूठी बातें क्यो कहेगा ? ऐसा कहने का उसके पास कोई कारण नही है। कोई है क्या ?

सिन्यावस्की : मेरी गिरफ्तारी से पहले नही था। मैं नही जानता कि उसने मेरी गिरफ्तारी के बाद मुझे बदनाम करना क्यो शुरू कर दिया। रेमेज़ोव, इस्तगासे का गवाह है। उसने अपने ब्यान मे कहा है कि मेरे सोवियत विरोधी विचार हैं। हो सकता है कि वह मेरे बारे मे यह बातें कह कर अपनी स्थिति मजबूत बना रहा हो। आरम्भिक जाच के दौरान जो रेकार्ड तैयार किया गया है, उसमें केवल रेमेज़ोव की ही स्वीकारोक्ति है। और मेरे बारे मे जो बातें कही गई हैं, वे शुद्ध रूप से कल्पना पर आधारित है। सम्भवतः सन् १९५१ मे मुझ से हुई एक बातचीत के अलावा उसके पास कोई तथ्य नही है। अपने पिता की गिरफ्तारी के बाद मेरी यह बातचीत हुई थी, जिसमे मैंने उससे यह कहा बताते हैं कि मेरे पिता को नही बल्कि मुझे गिरफ्तार किया जाना चाहिये था

३—बुसेनो। प्रकट रूप से यह किसी फ्रासीसी प्रकाशक का नाम मालूम पड़ता है। रेमेज़ोव के ब्यान मे, "दूसरे दिन की कार्रवाई" मे, पाद टिप्पणी ३ मे, इसका उल्लेख देखिए।

क्योकि मेरे पिता सदा सोवियत दृष्टिकोण का समर्थन करते रहे है। लेकिन मुझे उस बातचीत की याद है और मैंने यह बात नही कही थी। तलाशी के दौरान एम जी बी [खुफिया पुलिस] के एक आदमी ने यह कहा था कि मुझे भी मेरे पिता के साथ गिरफ्तार किया जाना चाहिये। मैं इससे काप उठा था और मैं निरन्तर लोगो से यही कहता रहा कि मेरे पिता सदा वफादार सोवियत नागरिक रहे हैं। रेमेज़ोव ने जानबूझ कर मिथ्या आरोप लगाया है। वह यह प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास कर रहा है कि मैं उसके विचारो से सहमत हूं और मेरा उल्लेख इस प्रकार करता है, जिससे उसके विचार कही अधिक आश्वस्त करने वाले दिखाई पडते हैं: उसका रवैया यह है कि वह सबको इस बात से आश्वस्त करना चाहता है कि प्रत्येक बुद्धिवादी उसी की तरह सोचता है।

सरकारी वकील : अभियोगपत्र मे जिन तीन रचनाओ का उल्लेख हुआ है, मैं समझता हूं, तुम्हारे राजनीतिक विचारो और विश्वासो का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सिन्यावस्की : वे एक लेखक के रूप मे मेरी स्थिति का प्रतिनिधित्व करते है। मैंने "आन सोशलिस्ट रियलिज़्म" शीर्षक निबन्ध मे अपने कला सम्बन्धी विचारो पर अनौपचारिक रूप से विचार किया है।

न्यायाधीश : निबन्ध के पहले भाग के बारे मे तुम क्या कहते हो ? क्या वह भी कला के बारे मे ही है ?

सिन्यावस्की : इस निबन्ध मे, जिसमे जटिल और अस्पष्ट प्रश्नो का अनुशीलन हुआ है और जिसकी कई सभावित व्याख्यायें हो सकती हैं, मैंने समाजवादी यथार्थवाद पर अपने विचार प्रकट करने का प्रयास किया है। इस विषय के बारे मे विभिन्न राय हैं। पश्चिम के देशो मे अक्सर यह कहा जाता है कि समाजवादी यथार्थवाद पाखड है, एक जबरदस्ती का आविष्कार है—

न्यायाधीश : (बीच मे टोकते हुए) : पहले भाग के बारे मे बताइए ?

सिन्यावस्की : क्षमा कीजिए, मैं विस्तार से इसका उत्तर देना चाहता हूं। मैं पहले भाग की भी चर्चा करूगा—मैं उत्तर देने से नही बच रहा हू। मैं कह रहा था, मेरी यह राय है कि समाजवादी यथार्थवाद हमारे साहित्य का एक मूलभूत तथ्य है। लेकिन इसकी मेरी व्याख्या सामान्य रूप से विस्तृत व्याख्या से भिन्न है। समाजवादी यथार्थवाद के सार की परिभाषा प्रस्तुत करने मे मैंने, अपने समारम्भ के रूप मे सदर्भ का एक व्यापक आयाम चुना—कि एक उद्देश्य की संकल्पना हमारे समाज और हमारे साहित्य के लिये एक केन्द्र बिन्दु है। "उद्देश्य" को ग्रीक भाषा मे "टेलोस" कहते हैं। अतः मैंने इसके लिये "टेलियोलॉजिकल" शब्द का प्रयोग किया और लेख के पहले भाग मे उद्देश्यपूर्णता अथवा

टेलियोलॉजी पर व्यापक विचार हुआ है। मैं मनुष्य पर एक उद्देश्यपूर्ण प्राणी के रूप मे विचार करता हूं; इसके बाद मैं कहता हू कि अनेक युग आते हैं—जैसा हमारा अपना युग—जब उद्देश्य एक महत्वपूर्ण सकल्पना बन जाता है और इस सदर्भ मे मैं मार्क्सवाद का उल्लेख करता हू, आर्थिक अथवा सामाजिक दृष्टि से नही, बल्कि एक नैतिक संदर्भ मे, सार्वभौम सुख के आदर्श के इसके एक पक्ष के रूप मे, मैं इसे प्रस्तुत करता हू। यह निबन्ध, मार्क्सवाद अथवा समाजवादी यथार्थवाद के हमारे सिद्धात के दृष्टिकोण से नही लिखा गया था। मैं अपने दृष्टिकोण, अपने अनुशीलन के तरीके की परिभाषा प्रस्तुत करने मे कठिनाई का अनुभव करता हूं। लेकिन सामान्य शब्दावली मे इसे आदर्शवादी कहा जा सकता है। मैं साम्यवाद को ही एकमात्र ऐसा लक्ष्य मानता हू, जिसे एक आधुनिक मस्तिष्क अपने सन्मुख रख सकता है। पश्चिम के देश ऐसा कोई भी लक्ष्य प्रस्तुत करने मे असफल रहे है। मैं "धार्मिक" शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों मे करता हू, नैतिक अनिवार्यता के सदर्भ मे और यह कहना व्यंग्यपूर्ण लगेगा कि, उदाहरण के लिए, दि शार्ट कोर्स[४] की रहस्यमयता के सदर्भ मे भी, मैं इस का प्रयोग करता हूं। मैं स्तालिन के दौर के अन्तिम कुछ वर्षों की हमारी कठिनाइयों और अन्तर-विरोधो की चर्चा करता हूं। मैं कहता हूं कि अत्याचार किये गए और अमानुषिक तरीके अपनाये गये। लेकिन इतिहास मे स्तालिन के युग का अपना विधिसम्मत स्थान है और मैं इससे इन्कार नही करता। मैं पश्चिम के अमानुषिक अत्याचारों के आरोपों को अस्वीकार करता हू। ये अत्याचार निष्क्रियता के विरुद्ध अभियान का एक अंग थे। बल प्रयोग के पूर्ण त्याग सम्बन्धी पश्चिम के विचारो के प्रति, मेरे मन मे कोई आकर्षण नही है। मेरा उदारतावादी समालोचको को यह उत्तर है: तुम्हारे मानवीय बडे-बूढ़ों की क्या उपलब्धिया हैं?

न्यायाधीश : तुम्हारा यह अभिप्राय है कि तुमने इस निबन्ध मे एक कम्युनिस्ट समाज का स्वागत किया है।

सिन्याबस्की : मैंने यह कहा है कि साम्यवाद एक सर्वोच्च लक्ष्य है। लेकिन वास्तविक साधन और तरीके सदा लक्ष्य के अनुरूप नही रहे हैं। वे एक से हैं लेकिन समरूप नही हैं। जब लक्ष्य पूरा हो जाता है तो यह उस लक्ष्य का एक मामूली प्रतिरूप ही होता है, जिसकी आरम्भ मे कल्पना की गई है।

न्यायाधीश : तुमने जो लिखा है, वह यह है।

४—'दि शॉर्ट कोर्स ऑफ दि हिस्ट्री आफ दि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ दि सोवियत यूनियन' एक समय जिसका लेखक होने का श्रेय स्तालिन को दिया जाता था और जिसे १९३८ मे उसके प्रकाशन के समय से लेकर स्तालिन की मृत्यु के बाद तक, एक धर्म ग्रन्थ के रूप मे ही माना गया।

("वह पढता है) : तुम हसते क्यो हो, उच्छिष्ट, पाखंडी...?" आदि)[5]

सिन्यावस्की : आप पोलिश भाषा मे प्रकाशित एक अनुवाद से हुआ अनुवाद पढ रहे हैं। यह सही पाठ नही है। इसमे यह अर्थ जानबूझ कर रखे गये हैं।

[न्यायाधीश कहता है कि मुकदमे की फाइल में कई अनुवाद रखे गये हैं]

सिन्यावस्की : मैं आपके देखने के लिये फील्ड का उल्लेख कर सकता हूं।[6] फील्ड ने अपने १९ जुलाई १९६५ के लेख मे (न्यू लीडर मे प्रकाशित) यह कहा है कि अनुवादक ने मेरे निबन्ध को विकृत किया है और एक विद्वान ने मूल पढने के बाद इस बात की पुष्टि की है। स्पष्ट है कि मूल का बड़ा स्वच्छद अनुवाद किया गया। इस कारण से मैं व्यापक अर्थ का ही उत्तर दे सकता हू या इसके लिये ही उत्तरदायी हो सकता हूं, विस्तृत विवरण के लिये नही।

न्यायाधीश : न्यायालय को अनुवादो मे कोई अन्तर दिखाई नही पडता। क्या तुम यह चाहते हो कि मैं किसी अनुवादक को बुलाऊ।

सिन्यावस्की : नहीं।

सरकारी वकील : तो तुमने अपने निबन्ध मे समाजवादी यथार्थवाद का पृष्ठ पोषण किया? [वह इस आशय का एक अंश पढ़ता है कि समाजवादी यथार्थवाद शब्द ही अन्तर विरोध से भरा है, कि समाजवाद का अर्थ "धार्मिक", उद्देश्यपूर्ण, दूसरे शब्दो मे अवास्तविक होता है, कि साहित्य को एक ऐसे यथार्थवाद को ठुकरा देना चाहिये, जो उसके लिये उपयोगी नही है, यदि साहित्य हमारे युग के महान् और संभावित अर्थ को व्यक्त करना चाहता है।] क्या इसी तरह तुम समाजवादी यथार्थवाद का पृष्ठ पोषण करते हो?

सिन्यावस्की : मैं समाजवादी यथार्थवाद को १९ वी शताब्दी की कला के साथ रख कर इनका अन्तर दिखाता हूं। समाजवादी यथार्थवादी कला मे जहा उद्देश्य महत्वपूर्ण है, सकारात्मक नायक मंच के केन्द्र मे खडा होता है। लेकिन १९ वी शताब्दी मे नकारात्मक नायक ही पूरी तरह छाया रहता था। मैं सर्वसारसग्रहवाद (एक्लेक्टिसिजम) के विरुद्ध हू। मैं विभिन्न चीजों को अनावश्यक रूप से मिश्रित करने के विरुद्ध हू। मैं दि चेरी आर्चर्ड के विरुद्ध नही हू। मैं दि चेरी आर्चर्ड के मिस्ट्री-

---

५—आन सोशलिस्ट रियलिज्म, पैंथियन बुक्स, न्यूयार्क, पृष्ट ३८।

६—एण्ड्रयू फील्ड नियमित रूप से न्यू लीडर, न्यूयार्क के लिये लिखते हैं। उन्होने टेरट्ज की रचनाओ पर कई लेख लिखे है। यहा उल्लिखित लेख मे उन्होंने टेरट्ज के अधिकाश वर्तमान अंग्रेजी अनुवादो की आलोचना की है।

बूफ[7] के अप्राकृतिक सगम के विरुद्ध हू ।

न्यायाधीश · हा तो तुमने चेखव के बारे मे क्या लिखा । तुमने लिखा है "एक ऐसी वस्तु है, जिसे कला सहन नही करती : एक्लेक्टिसिज्म... हम सब लोग स्कूल गये, हम सबने हर प्रकार की किताबें पढी और हम सब यह अच्छी तरह से जानते हैं कि हमसे पहले महान् लेखक हुए हैं—बालज़क, मोपासा, तोल्सतोये और एक अन्य लेखक भी था, क्या है उसका नाम चे—, चे—, चे—, ओह हा, चेखव । यही हमारा सत्यानाश हुआ, क्योकि हम सब चेखव की तरह लिखना चाहते थे ।" इसका क्या अर्थ है "चे—, चे—, चे—, चेखव ?"

सिन्यावस्की : यह स्पष्ट होना चाहिये कि मैं व्यग्य शैली मे लिख रहा था । (अदालत के कमरे मे मौजूद कोई व्यक्ति चिल्लाता है, "यह बात सोवियत विरोधी है ।") आप केवल अभियोग पत्र और ग्लावलित रिपोर्ट को ही प्रतिध्वनित कर रहे है, जिनमे मेरा विश्वास उन सब बातो मे बताया गया है, जिन्हे मैं पूरी तरह अस्वीकार करता हू ।

न्यायाधीश . यह साहित्यिक बहस नही है, हम एक अपराध की जाच कर रहे है । यह एक कानूनी मामला है । तो अच्छा हो कि पहले तुम निबन्ध के पहले भाग के बारे मे बताओ, जो तुम्हारे विरुद्ध लगाये गये अभियोगो से कही अधिक सम्बन्ध रखता है ।

सिन्यावस्की : मैंने साहित्यिक पक्ष की चर्चा इसलिए की क्योकि सरकारी वकील ने इस बात को उठाया था ।

सरकारी वकील : मैंने इस बात को इसलिए उठाया था, क्योकि आगे चल कर राजनीतिक प्रहार हुए है । उदाहरण के लिये, निबन्ध के पृष्ठ ४६ पर तुम लेनिन की स्तालिन से तुलना करते हो; तुम साम्यवाद की एक धार्मिक व्यवस्था या प्रणाली के रूप मे चर्चा करते हो ।[8] इसका समाजवादी यथार्थवाद से क्या सम्बन्ध है ? लेनिन के बारे मे यह सब क्यो लिखा गया है ? स्तालिन से उनकी तुलना क्यो की गई है ?

सिन्यावस्की : इन बातो का प्रबन्ध से इसलिए सम्बन्ध है, क्योकि साहित्य को उस भूमि से प्राण मिलता है, जिसमे उसकी जड़े होती हैं । स्तालिन के युग का साहित्य अपने

७—मिस्ट्री-बूफ एक हास्यपूर्ण रहस्यात्मक नाटक का शीर्षक है, जिसे मायाकोवस्की ने लिखा और जिसे १९१८ मे अक्तूबर क्राति की महिमा गाने के लिये मीयर होल्द ने मच पर प्रस्तुत किया । यह एक अत्यधिक मुखर "भविष्यवादी" शैली मे है, जो १९ वी शताब्दी के उस रहस्यवाद से बहुत भिन्न है, जिसका प्रतिनिधित्व चेखव का चेरी आर्चर्ड करता है । समाजवादी यथार्थवाद की सिन्यावस्की द्वारा विवेचना के लिये देखिए पृष्ठ २३ ।

८—आन सोशलिस्ट रियलिज्म पृष्ठ ६२ ।

स्वरूप मे धार्मिक और रहस्यात्मक था। यहा मैं धार्मिक और रहस्यात्मक सम्प्रदाय की चर्चा कर रहा हूं, जो स्तालिन के युग मे कलाओ का आधार बना हुआ था।

सरकारी वकील . कृपया हमे साहित्य के बारे मे भाषण न दें। मैं तुमसे एक सीधा सादा और ठोस सवाल पूछता हूं : तुमने इस अनाकर्षक तरीके से इलिच [लेनिन] का चित्रण क्यो किया है ?

सिन्यावस्की : मैंने कहा है कि आप लेनिन का सम्प्रदाय नही बना सकते। आप लेनिन की पूजा की परम्परा नही चला सकते। मेरे लिये लेनिन एक मनुष्य हैं और यह कहने मे कोई बुराई नही है।

न्यायाधीश : इस अश मे स्तालिन को देवता बनाने से तुम्हारा क्या तात्पर्य था ?

(अश पढता है)

सिन्यावस्की . मैंने स्तालिन की पूजा करने पर व्यग्य किया है। यदि स्तालिन कुछ समय और जीवित रह जाते तो यह बात हो सकती थी।

सरकारी वकील : क्या ये तीन रचनाए, तुम्हारे राजनीतिक विचारो और विश्वासो को प्रतिबिम्बित करती हैं।

सिन्यावस्की : मैं राजनीतिक लेखक नही हू। कोई भी लेखक अपनी रचनाओ के माध्यम से अपने राजनीतिक विचारो को अभिव्यक्त नही करता। किसी भी कलात्मक रचना मे राजनीतिक विचार व्यक्त नही किये जाते। आप पुश्किन या गोगोल से उनकी राजनीतिक मान्यताओं के बारे मे सवाल नही पूछ सकते। (अदालत के कमरे मे रोष)[१]। मेरी रचनाए राजनीति के बारे मे नही, बल्कि ससार के बारे मे मेरी भावनाओ को प्रतिबिम्बत करती हैं।

सरकारी वकील : मैं भिन्न बात समझता हूं। "दि ट्रायल बिगिन्स" को लीजिए (वह मछली के भ्रूणो सम्बन्धी अश को पढता है) "......मार्क्सवाद के अनुरूप"।

न्यायाधीश : (उद्धरण को आगे पढते हुए)..."ऊर्ध्वगामी विकास।"

सरकारी वकील . अब हमे बताओ यह सब किस बारे मे है ? हमे इस अंश के बारे मे अपनी राय बताओ ?

सिन्यावस्की : हा, यह एक अत्यधिक सनकपूर्ण वक्तव्य है, यह भविष्य का मजाक उडाने का प्रयास है, मार्क्सवाद का उपहास है, और यह बात कहानी के सर्वाधिक नकारात्मक पात्र कार्लिन्स्की ने कही है। वह कुटिल है और सब बातो में बुराई ही देखता है। वही वह पात्र है, जो यह कहता है कि समाजवाद मुक्त गुलामी है। मैं कहानी मे यह दर्शाता हू कि कार्लिस्की नैतिकता से दूर रहने वाला,

---

१—प्रस्तावना, पृष्ठ २६; दि ट्रायल बिगिन्स, पृष्ठ ३२

निकम्मा व्यक्ति है। कालिस्की के प्रति लेखक का दृष्टिकोण पूरी तरह से स्पष्ट है। आपने जो अश पढ़ा है, उसके बाद कहानी इस प्रकार आगे बढ़ती है (वह उद्धरण देता है)। आप पात्र और लेखक को एक ही समझने की भ्रांति कर रहे हैं। यदि हम यह दृष्टिकोण अपनायें, तो हम गोर्की को विलम समागिन का और साल्तीकोव-शचेद्रिन को यदुश्का गोलोवल्योव[10] का प्रतिरूप बतायेंगे।

न्यायाधीश : आइए हम लेखक द्वारा कही गई किसी बात पर विचार करें। "शौचालय के नीचे फैंका गया जाल"—यह क्या है ? या शिविर के दृश्य को लीजिए—क्या यहा लेखक नही बोल रहा है ?[11]

सिन्यावस्की : मैं शिविर के दृश्य का स्पष्टीकरण दूंगा। इस कहानी की वास्तविक ऐतिहासिक घटनाएं, पूरी तरह से १९५२ के अन्त और १९५३ के आरम्भ, "डाक्टरों के षडयंत्र[12], से ले कर स्तालिन की मृत्यु तक ही सीमित है। लेकिन कुछ दृश्य केवल ऊपर से ही वास्तविक घटनाओं की ओर संकेत करते है। यह एक साहित्यिक रचना है, राजनीतिक दस्तावेज़ नही। (अदालत के कमरे में हसी)। कृपया मुझे बोलनें दीजिए। मेरा एक पात्र पागल है—

न्यायाधीश . (बीच मे टोकते हुए) : हम तुम्हारी रचना के दूसरे पहलू मे दिलचस्पी रखते हैं। तुम विचारों को पढने वालों और शौचालयो के नीचे फैलाये गए जालों के बारे मे लिखते हो। दूसरे शब्दो मे इसका यह अर्थ होता है कि किसी ने ऐसे उपकरण लगाने का निर्णय किया। ऐसी बातें धारा ७० अर्थात् प्रवाद के अन्तर्गत

१०—विलम सामगिन मैंक्सिम गोर्की (१८६८-१९३६) के एक लम्बे उपन्यास दि लाइफ आफ विलम सामगिन (१९२५-३६) का "नकारात्मक" नायक है।

माइखेल साल्तीकोव-शचेद्रिन (१८२६-८९) प्रसिद्ध रूसी व्यग्य लेखक है, जिनके उपन्यास दि गोलोवल्यो फैमिली (१८७५-८०) मे रूसी गल्प साहित्य के सर्वाधिक दुष्ट पात्र, यदुश्का गोलोवल्योव का चित्रण हुआ है। "यदुश्का" शब्द जूडास का संक्षिप्त रूप है।

११—यह उल्लेख दि ट्रायल बिगिन्स के एक अंश के बारे मे है, जिसमें खुफिया पुलिस के दो एजेंट इस दिवा-स्वप्न मे सोचते हैं कि मल-निकासी के बड़े पाइपो मे ऐसे छननें लगाये जायें, जिससे खुफिया पुलिस उन पाण्डुलिपियों के टुकड़ों को पकडकर फिर टुकड़े जोड़ कर तैयार कर सके, जिन्हे फाड कर शौचालयों मे पानी के साथ बहा दिया जाता है। उपसंहार मे सिन्यावस्की एक भविष्य वक्ता के रूप मे यह वर्णन करता है कि किस प्रकार यह काल्पनिक लेखक, अन्तत. बलात् श्रम शिविर मे पहुचता है, क्योंकि उसकी रचनाएं अधिकारियो को पसन्द नही आती। दि ट्रायल बिगिन्स के ये सबधित अश पृष्ठ ९६ और १२२ पर हैं।

१२—पृष्ठ १६१ की टिप्पणी देखिए।

आती है—क्या ये बातें हमारे देश के लोगो, हमारे समाज, हमारी प्रणाली के विरुद्ध प्रवाद नही हैं ?

सिन्यावस्की : नही। ये घटनाए केवल एक विशिष्ट अवधि, स्तालिन की मृत्यु के पहले के समय के बारे मे ही हैं। सम्बन्धित पात्र पुलिस के एजेंट है। यह काल (डाक्टरों के षडयंत्र) का है और इसके साथ ही उस समय का गिरफ्तारियो और सदेह का वातावरण भी मौजूद है। उपसहार, जो उत्तम पुरुष मे लिखा गया है मानो स्वय लेखक ही कह रहा हो, उसकी तारीख १९५६ दी गई है। यह वह वर्ष है, जब कहानी पूरी हुई। कहानी का "मैं" न तो सिन्यावस्की है और न ही टेरट्ज़। वह तो काल्पनिक लेखक है, जिसकी मन स्थिति भय और उद्रेक की है। वह जिस मार्ग पर आगे वढ रहा है उसका तर्कसगत अत कोलिमा है।[13] यह वास्तविकता नही है, बल्कि यह एक ऐसी बात है, जो लेखक को उसके भयावह स्वप्नों में दिखाई पडती है। सन् १९५६ के ऐतिहासिक यथार्थ का चित्रण करने का प्रयास नही किया गया है। (अदालत के कमरे मे हसी।) यह एक साहित्यिक शैली है, इसके द्वारा एक "काल्पनिक" स्थिति का निर्माण किया गया है।

न्यायाधीश : लेकिन गर्भपात यथार्थ है।[14] इस बात का उल्लेख क्यो हुआ ?

सिन्यावस्की : इसका उल्लेख है, लेकिन इसे दर्शाया नही गया है। साहित्य मे परम्पराओ की एक मान्यता होती है।

न्यायाधीश : हम परम्पराओ के बारे मे बाद मे चर्चा करेंगे। तुमने रूस के लोगो को शराबी दिखाया है।

सिन्यावस्की : मैं इसका विस्तृत उत्तर दे सकता हू।

(अदालत के कमरे में हसी)।

न्यायाधीश : तुम्हारे ये सब "अनगार्डेड थाट्स (बिना सोचे समझे प्रकट किये गये विचार) क्या यह लेखक बोल रहा है ?

सिन्यावस्की : पूरी तरह से नही।

(अदालत के कमरे में हसी)

न्यायाधीश : फील्ड लिखता है कि यह "एक दर्पण के सामने अपने प्रतिबिम्ब को देखने के समान है।[15] क्या तुम इस बात से सहमत हो ?

१३—उत्तरपूर्वी साइबेरिया का सोने की खानो का प्रदेश, जहा स्तालिन के शासन काल में और स्तालिन की मृत्यु के बाद के कुछ वर्षों मे बहुत से ब्लात् श्रम शिविर थे।

१४—दि ट्रायल विगिन्स, पृष्ठ ४०-१

१५—न्यू लीडर के १९ जुलाई, १९६५ के अक मे प्रकाशित फील्ड के निबन्ध मे "दर्पण के समक्ष अग्नि परीक्षा" (ओरडियल बाइ मिरर) शब्दो का प्रयोग हुआ है, लेकिन

सिन्यावस्की . हां, एक सीमा तक ।

न्यायाधीश : (अनगार्डेड थाट्स से रूस के लोगो के बारे मे एक अंश पढ़ता है[16] और फिर कहता है) : क्या यह एक गीतिकाव्यात्मक अतिरेक है ? तुमने यह गन्दी रचना विदेश क्यों भेजी ? ये लोग तुम्हारे अपने लोग हैं, रूसी लोग हैं, जिन्होंने इतने वलिदान दिये हैं, जिन्होंने एक भयंकर युद्ध मे अत्यधिक कुर्बानियां दी है, और कष्ट सहे हैं और अपने इन बलिदानों के बल पर विजय प्राप्त की है। दो करोड लोगों की वलि दी, लेकिन फिर भी वे अडिग खडे रहे और एक महान् संस्कृति का निर्माण किया । ये लोग तुम्हारे "चोर और शरावी हैं" । क्या वे है ? यह मत भूलना कि तुम्हारे ऊपर रूसी संघ के एक न्यायालय मे विचार हो रहा है ।

(अदालत के कमरे में गड़बड)

सिन्यावस्की : जहां तक रूस के लोगो के प्रति मेरे दृष्टिकोण का सवाल है और जहा तक उन व्याख्याओ का सवाल है, जो मेरी रचनाओ की हो सकती हैं, उनका मैं एक उत्तर दे सकता हू । मैं यह जानता हूं कि केवल इतना कहना पर्याप्त न होगा कि मैं अपने देशवासियो से प्रेम करता हूं और उन्हे जानता हू । ऐसे शब्द कुछ भी सिद्ध नही करते और यह केवल अपने आप को सही ठहराने का प्रयास ही दिखाई पड़ेगे । लेकिन कोई भी व्यक्ति मेरी निन्दा, पश्चिम के प्रति पक्षपात-पूर्ण होने के लिये नही कर सकता । कोई भी मेरी निन्दा, रूस के लोगों को प्रेम न करने वाला कह कर नही कर सकता । मुझे स्लोवोफील अर्थात् स्लाव जाति की महानता मे उन्मादपूर्ण सीमा तक विश्वास करने वाला कहा गया है[17]। पश्चिम के देशो तक मे, मेरी रचनाओ की इस रूप मे व्याख्या की गई है। मैं अपने रूसी देशवासियों मे जिस बात को सर्वाधिक महत्व देता हूं, वह उनकी आन्तरिक आध्यात्मिक स्वतत्रता है । मैं उस वात को भी अत्यधिक महत्ता देता हूं, जिसे लोग उनकी अतिशय कल्पनाशीलता कह सकते हैं, जो दोस्तोएवस्की

यह अभिव्यक्ति अनगार्डेड थॉट्स को छोडकर अन्य रचनाओ पर लागू होती है । अनगार्डेड थॉट्स के वारे मे चर्चा करते हुए फील्ड ने एक स्थान पर "आत्म-पतन" (सैल्फ अवेसमेंट) का प्रयोग किया है । स्पष्ट ह कि संक्रमण की किसी क्रिया के द्वारा "दर्पण के समक्ष अग्नि परीक्षा" किसी प्रकार "आत्म-पतन" शब्द से सम्वन्धित हो गई और इसके परिणामस्वरूप उक्त अभिव्यक्ति हुई, जो फील्ड के लेख में नही है ।

१६—न्यू लीडर, १६ जुलाई १६६५ और पृष्ठ १६ ।

१७—१६ वी शताब्दी मे रूस के उन विचारको के लिये प्रयुक्त शब्द जो इस बात पर जोर देते थे कि रूस को अपनी शुद्ध देशीय परम्पराओ को फिर अपनाना चाहिये और जो उन "पश्चिमवादियों" के विरुद्ध थे, जो यह समझते थे कि रूस की मुक्ति, पश्चिम के विचारो और सस्थाओं को अपना कर ही हो सकती है ।

जैसा उपहार ससार को देने मे, उनकी कला और उनके गीतो के उदात्त स्तर पर प्रकट होती है और कही अधिक सामान्य, दैनिक चर्या के स्तर पर भी। लेकिन मुझे यह बात अनिवार्य नही दिखाई पडती कि हमे हर अवसर पर, मौके बे मौके, हर समय रूस के लोगो की प्रशसा करनी ही चाहिये, यद्यपि मैं उन्हे ससार की महानतम जाति मानता हू।

न्यायाधीश : तुम्हे यह सब रचनाए पश्चिम के देशो को भेजने की क्या आवश्यकता थी ?

सिन्यावस्की : मेरा विश्वास है कि असफलताए और सद्‌गुण केवल साथ-साथ ही मौजूद नही रहते। इन दोनो का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध होता है। शराबखोरी, आध्यात्मिकता का दूसरा पक्ष है। वह अश इसी के बारे मे है। इन बातों मे भी (चोरी और शराबखोरी) रूस के लोगो का केवल बुरा पक्ष ही सामने नही आता, बल्कि सर्वोत्तम पक्ष भी सामने आता है। आप तो ऐसी बाते करते है, मानो पश्चिम के लोग सदा यह समझते रहे कि हम शराब छूते भी नही और अब टेरट्ज ने हमे बदनाम किया है और पश्चिम के लोगो को यह पता चल गया है कि हम सब भयकर शराबी है। एक दूसरी बात मैं यह कहना चाहूगा कि हम रूसी लोग डीग हांकना पसन्द नही करते। हम लोग अपने बारे मे आत्मालोचन करना, अपने आप को बढा-चढा कर दिखाने से कही अधिक पसन्द करते है। मेरे ये शब्द कि "अपनी संस्कृति के निर्माण मे सक्षम नही" इसका उदाहरण है। यह इस बात का उदाहरण है कि रूस के लोग हर वस्तु के बारे मे कितने आत्मालोचन के ढंग से बात करते है। लेकिन मेरी सब रचनाओं से एक बिल्कुल विपरीत दृष्टिकोण ही सामने आता है--मेरा क्षमता मे विश्वास—(अदालत के कमरे मे हसी)

मैं पश्चिम की सभ्यता को स्वीकार न करने की चर्चा करता हूं। रूस के लोग पश्चिम के ऐश-आराम के प्रति उपेक्षा भाव दिखाते है। वे अपने प्राचीन स्मारको के प्रति उपेक्षा भाव दिखाते हैं। ये बातें भी यह दर्शाती हैं कि रूस के लोग आध्यात्मिक मूल्यो को कही अधिक महत्व देते हैं। जब मैं यह कहता हूं कि हम पूरे यूरोप को मान्य मत के विरुद्ध आचरण के द्वारा आश्चर्य चकित करने की क्षमता रखते हैं, तो मेरा सकेत दोस्तोएवस्की के इस उदात्त मान्य मत विरुद्ध आचरण से होता है।

न्यायाधीश : "भिखारी और चोर, अन्य देशों की आखो मे सदिग्ध।" यदि यह रूस के लोगों की बदनामी नही है तो क्या है ? मैंने स्वय अंग्रेजी अनुवाद को मूल से मिलाकर देखा है।

सिन्यावस्की : [उत्तर देने की कोशिश करता है।]

न्यायाधीश : (बीच मे टोकते हुए) : तुमने ईवतुशेंको की कविता "दि आतस्क हाइड्रोइलैक्ट्रिक

स्टेशन" के बारे मे एक लेख लिखा है। इसमें तुमने चिश्रोप्स के पिरामिड[१८] का समर्थन किया है। तुमने इस बात का समर्थन किया, और तुमने यह लेख, जो तुम्हारे अपने लोगों के बारे में है, इंगलैंड भेजा ?

सिन्यावस्की : इस लेख मे रूस के लोगों के बारे में कुछ बातें है। मैं उनका उल्लेख कर सकता हूं, यदि मुझे यह करने का अवसर दिया जाये।

न्यायाधीश : (सरकारी वकील से)। आगे सवाल पूछिए ?

सरकारी वकील : "अनगार्डेड थॉट्स" मे तुमने जो विचार प्रकट किये हैं, वे सयोगवश नहीं हैं। हम वे ही विचार तुम्हारी कहानियों और उपन्यासो मे भी पाते हैं। उदाहरण के लिये "ल्यूबीमोव" मे तुम लिखते हो कि हमारे पास पुस्तकें नही हैं, और जब अचार स्वादिष्ट व्यंजनों मे बदल जाता है तो प्रत्येक व्यक्ति उनके लिये दौड़ता है, केवल कुत्ते ही उसे नही खाते[१९]। और यह बात तुम हमारे देश के बारे मे कहते हो, जहां पुस्तकालयों का इतना अधिक विकास हुआ है। क्या यह भी रूस के लोगो की प्रशंसा है ?

सिन्यावस्की : क्या यह आलकारिक प्रश्न है ? मै "ल्यूबीमोव" के बारे मे, पूरी रचना के बारे मे ही चर्चा कर सकता हूं। यह जिरह किस रूप मे हो रही है, मेरी समझ मे नही आ रहा। क्या मुझसे कुछ वाक्यो के बारे मे ही पूंछताछ की जा रही है ? क्या मुझसे केवल "हा" या "नही" मे उत्तर देने की ही अपेक्षा है ? अथवा मुझे विस्तृत स्पष्टीकरण देने की अनुमति है ?

न्यायाधीश : तुम किसी भी ठोस सवाल का उत्तर, जितने अधिक विस्तृत ढंग से देना चाहो दे सकते हो, लेकिन तुम्हे प्रश्न से इधर-उधर नही जाना चाहिये।

सिन्यावस्की : "ल्यूबीमोव" मेरी अन्तिम रचना है। मैंने इस सुदूर ल्यूबीमोव नगर को अपने

१८—ईवतुशेंको की कविता मे ब्रातस्क पन बिजलीघर (जो सोवियत संघ के नये, आशापूर्ण ससार का प्रतिनिधित्व करता है) और मिस्र के पिरामिड (जो प्राचीन आस्थाहीन संसार का प्रतिनिधित्व करता है) के बीच वार्तालाप होता है। इस लेख मे, जिसे अपनी गिरफ्तारी से कुछ दिन पहले ही सिन्यावस्की ने नोवीमीर मे प्रकाशन के लिये दिया था, सिन्यावस्की ने मिस्र के पिरामिड का कला की एक महान् कृति के रूप में "समर्थन" किया, जिसे ईवतुशेंको ने अपनी कविता मे गलत ढग से निराशावादिता का प्रतीक बताया। यह लेख सोवियत सघ मे कभी भी प्रकाशित नही हुआ और पहली बार इसका अंग्रेजी अनुवाद, एनकाउंटर के अप्रैल १९६७ के अक मे छपा। लेकिन न्यायाधीश के कथन के विपरीत (यह पूरा अंश ऐसा दिखाई पड़ता है मानो मुकदमे की कारवाई के विवरण में इसे काट कर निकाल दिया गया है) इसे इंगलैंड नही भेजा गया।

१९—दि मैकपीस एक्सपेरिमेंट पृष्ठ १९ और ७९।

प्रिय गुणो--विलक्षण और अतिशय काल्पनिक—से युक्त किया हैं। इस नगर में जो लोग घूमते है, वे भूतप्रेत हैं और वे अपनी शक्ल बदल सकते हैं। यह कोरी कल्पना है। इसके भीतर दृश्यमान, अदृश्य और अदृश्यता की धारा प्रवाहित है। यह कोई वास्तविक नगर नही है, इस नगर का अस्तित्व मेरी कल्पना मे है। यह उपन्यास गीति-काव्यात्मक है, राजनीतिक नही। यह राजनीतिक व्यंग्य नही है, जैसा कि कुछ लोगो ने कहा है, जो मेरे ल्यूबीमोव की तुलना शचेद्रिन के ग्लूपोव[20] से करते है। मैं इस तुलना को स्वीकार नही कर सकता। यदि लोग केवल शीर्षक को ही सावधानी से पढ़े तो अन्तर स्पष्ट हो जायेगा। शचेद्रिन का नगर ग्लूपोव 'गलपी" (मूर्ख) से बनाया गया है। लेकिन मेरा ल्यूबीमोव नगर "प्यार" के पर्याय ("ल्यूब्लयू, ल्युबित") पर आधारित है। और मेरा दृष्टिकोण अपने इस नगर के बार मे सहृदयतापूर्ण है। मैंने इन शब्दो का प्रयोग किया है, "गुड मार्निंग", मेरे प्यार, मेरे "ल्यूबीमोव"। यह नगर मेरी मातृभूमि का एक छोटा सा टुकडा है, लेकिन यह इससे अधिक कुछ नही है; यह पूरे सोवियत सघ का प्रतीक नही है और इस प्रकार इसकी इससे अधिक व्यापक व्याख्या करने का भी कोई आधार नही है। इस नगर के निवासी वास्तविकता के स्थान पर अपने सपनो को जगह देते हैं·····

न्यायाधीश : लेकिन बोरिस फिलीपोव यह सोचता है कि ल्यूबीमोव और सोवियत संघ दोनो एक ही बातें है. "ल्यूबीमोव मे सोवियत सघ इस, प्रकार प्रतिविम्बित हुआ है, मानो पानी की एक बूद मे हुआ हो।" फिलीपोव की यह व्याख्या है, क्या तुम उससे सहमत हो ?

सिन्यास्की : नही। अन्य दृष्टिकोण भी हैं। उदाहरण के लिये फील्ड का। फिलीपोव की पूरी भूमिका अन्य लेखको की रचनाओ के उद्धरणो पर आधारित है। यह मैंडेलशतम, जावोलोस्की और स्लूतस्की[21] के उद्धरणो पर आधारित है। इन उद्धरणो को फिलीपोव के सोवियत विरोधी विचारो के समर्थन मे दिया गया है, उसकी व्याख्या मनमानी है। इस बात को उसके इस दावे मे देखा जा सकता है कि इस उपन्यास मे यह कहा गया है कि ल्यूवीमोव नगर को एक स्त्री बचायेगी। उपन्यास मे ऐसी कोई बात नही है। और यह कहना भी मूर्खतापूर्ण है कि ल्यूबीमोव मे रहने वाले लोग दूसरे के अधिकार को, अनधिकृत रूप से

२०—देखिए प्रस्तावना पृष्ठ २७

२१—सोवियत कवि। ओसिप मैंडेलशतम की मृत्यु एक सोवियत बलात् श्रम शिवर मे हुई। निकोलाई जाबालोत्स्की की मृत्यु १९५८ मे हुई। बोरिस स्लूतस्की (१९१९ मे जन्म) एक जाने माने कवि हैं, जिन्हे स्तालिन की मृत्यु के बाद प्रतिष्ठा मिली।

छीनने वाले है। वासयुकी[22], नया मास्को बनाना चाहता था, लेकिन इसका यह अर्थ नही हुआ कि इस नगर के निवासी दूसरे की वस्तुओं को अनधिकृत रूप से छीनने वाले थे। वे स्थानीय देशभक्त थे। इस प्रकार की व्याख्याएं बहुत पुरानी और घिसीपिटी चाल हैं।

न्यायाधीश "दि ट्रायल बिगिन्स" के बारे में फील्ड के लेख से उद्धरण देता है।

सिन्यावस्की : 'दि ट्रायल बिगिन्स" स्तालिनवाद के बारे में है। इसका, ल्यूबीमोव की तुलना मे, वास्तविक घटनाओं से कही ज्यादा सम्बन्ध है। मेरा सकारात्मक नायक स्वय ल्यूबीमोव नगर है और मेरी हसी सहृदयतापूर्ण है, द्वेषपूर्ण नही। और एक लेखक के रूप मे लेन्या, तिखोमिरोव, जो एक समय अच्छा आदमी था, के प्रति मेरा दृष्टिकोण असहमित का है।

न्यायाधीश : अनुवादिका ने लिखा है कि "लेन्या" नाम का "लेनिन" से सम्बन्ध है। इसका "लेन" ("आलस्य") और लेशी (रूस के लोक गीतों मे वर्णित जगलो का भूत) से सम्बन्ध है। क्या अनुवादिका का लेन्या तिखोमीरोव की लेनिन से तुलना करना उचित था[23] ?

सिन्यावस्की नही। यहा उसने मनमानी स्वतंत्रता ली है। वह यह भी कहती है कि मेरा वृद्ध प्रोफ़ेरान्सोव मार्क्स ही है और ऐसी अनेक बाते कही गई हैं।

न्यायाधीश क्या उसका यह कथन सही है कि तुम्हारा लेनिन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण है, कि तुम लेनिन के पवित्र नाम पर कीचड़ उछालते हो ?

सिन्यावस्की : मैं इस सम्बन्ध मे कुछ कहना चाहता हूं......

न्यायाधीश . क्या उसका यह कहना सही था अथवा नही ?

सिन्यावस्की . नही। मेरा लेनिन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण नही है।

न्यायाधीश . ठीक है। यह सुनो।

[ल्यूवीमोव का वह अश सुनाता है, जिसमे लेनिन चन्द्रमा की ओर देख कर भौंकते है।[24] अदालत के कमरे में हलचल।]

तुमने यह क्यों लिखा ? क्या यह बात जॉयस, काफ्का, अतियथार्थवाद अथवा किसी एसे ही वाद की कथित भावना के अनुरूप है ? क्या ल्यूबीमोव नगर के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति है ? अथवा यह लेनिन के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति है ? हमें इस अंश के बारे मे और अधिक बताओ।

२२—इल्फ और पेत्रोव द्वारा लिखित उपन्यास दि टॅवैल्व चेयर्स (अध्याय २३) मे एक छोटे नगर का नाम जो रूस की राजधानी बनने की महत्वाकाक्षा करता है।

२३—मान्या हारारी ने ल्यूबीमोव (दि मेकपीस एक्सपेरिमेट, हार्विल, लन्दन, १९-६५) के अपने अनुवाद की भूमिका लिखी है। उक्त उद्धरण पृष्ठ ८ से सम्बन्धित है।

२४—प्रस्तावना, पृष्ठ ३८ और दि मेक पीस एक्सपेरिमेट, पृष्ठ १४२।

सिन्यावस्की : मैं इस बात पर खेद प्रकट करता हूं कि मैंने लेनिन का उल्लेख किया—यह बात चतुरतापूर्ण नही थी। इस पूरे अध्याय को "एस० एस० प्रोफेरान्सोव का इस संसार और दूसरे संसार मे जीवन" कहा गया है। यह पूरा अध्याय ऐसी ही ऊल-जलूल बातों से भरा है। यह मूर्खतापूर्ण बातो के एक पूरे क्रम पर ही आधारित है, जैसे बच्चों के इस गीत "और किसान गाव पर सवार होकर उड चला[२५]......" मे हुआ है

[अदालत के कमरे मे हलचल। एक स्वर : "एक सोवियत गीत को क्यों घसीटते हो ?]"

इसमें जानबूझ कर अर्थहीनता की भरमार की गई है, इसमे जो भी बातें कही गई हैं वे सामान्य अनुभव और ज्ञान के विरुद्ध हैं। हर चीज उलटी-पुलटी है : प्रोफेरान्सोव एक ज्योतिर्विज्ञानी, एक डायोजीनी और परोपकारी था। निकोलस प्रथम और निकोलस द्वितीय को उलझा दिया गया है, नायक एरीना रोदियोनोवना से ऐसेनिन[२६] की कविता मे बातचीत करता है—स्पष्टतया प्रत्येक वस्तु अर्थहीन और असंगत है।

(अदालत के कमरे मे हलचल)।

मैं लेनिन का उपहास करने का प्रयास नही कर रहा था। लेकिन मुझे इस बात पर खेद है कि मैंने उन्हें इस अर्थहीन और अस्त-व्यस्त पृष्ठभूमि मे पुश्किन, इसेनिन, लियो तोलस्तोय और लेवोजियर जैसे नामो के साथ रखा।...

२० मिनट के लिये अदालत की कारवाई स्थगित

सरकारी वकील : यही केवल एक मात्र अंश नही है, जहा तुमने लेनिन के उज्ज्वल नाम पर कीचड उछाला है। तुमने इस अंश का स्पष्टीकरण दिया है। लेकिन यहां एक अन्य स्थान पृष्ठ ११० पर, लेखक द्वारा दी गई पाद टिप्पणी मे, जहां दीवारी कागज के स्थान पर नोटो का इस्तेमाल किया गया है। कहा गया है, 'दीवारो पर लगे नोट बडी तेजी से जीवन्त हो उठे स्वर्गिक सम्राट अपनी छोटी दाढियो सहित जीवित हो उठे[२७]..." आदि। यहा यह कहने का तुम्हारा

२५—एक रूसी अर्थहीन गीत।

२६—एरीना रोदियोनोवना, पुश्किन की धाय थी , जिनसे पुश्किन ने रूस की लोकप्रिय बोली सीखी थी। सरगेई एसेनिन एक सोवियत कवि थे, जिन्होंने १९२५ मे आत्म-हत्या कर ली थी।

२७—दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट के पृष्ठ १२६-७ देखिए। यह अनुवादक की पाद-टिप्पणी है, जिसमे सम्राटो को लेनिन बताया गया है, लेकिन लेनिन का रेखा-चित्र सोवियत करेंसी नोटों पर केवल एक वाटर मार्क के रूप मे ही होता है। अत. यह बात उचित सिद्ध नही होती।

क्या अभिप्राय था ? ये बाते किसके लिये लिखी गई हैं ?

सिन्यावस्की : यह बात लेखक ने नही कही । "ल्यूबीमोव" मे लेखक स्वयं अपनी आवाज में नहीं बोलता और न ही यह लेनिन के बारे मे है। इस दृश्य मे खुफिया एजेंट वित्या कोचेतोव[28] को भयंकर स्वप्न दिखाई पड रहे हैं।

सरकारी वकील : यह बात सच नही है। यह लेखक की पाद-टिप्पणी है ? तुम इस बात से इन्कार क्यो करते हो ?

[उस अंश का उद्धरण देता है, जिसमे यह पाद-टिप्पणी दी गई है]

सिन्यावस्की : यह पाद टिप्पणियां ऐसी नही हैं, जैसी किसी पाठ्य पुस्तक मे दी जाती हैं, बल्कि ये पाद-टिप्पणियां ऐसी हैं, जिनका इस्तेमाल मैं एक विशेष विधा के रूप में उपन्यास में करता हूं। यह पाद-टिप्पणी वित्या कोचेतोव के मन मे जो संघर्ष चलता है उसका चित्रण करती है। मैं लेनिन का उल्लेख नहीं कर रहा था और यहां आपको उनका नाम नही मिलेगा।

न्यायाधीश : कमरे की दीवारों पर नोट लगे हुए हैं और इन नोटो पर लेनिन का चित्र है। इसमे किसी अन्य का चित्र नही है और तुमने जिन शब्दों का प्रयोग किया है वे भयकर अपमानजनक हैं।

सिन्यावस्की : ये शब्द उन नोटो के बारे मे नही हैं और लेनिन के बारे में भी नही हैं। "सम्राटो" शब्द का प्रयोग नोटों के लिये नहीं, बल्कि विचित्र नमूने के लिये किया गया है [दीवार पर बने नमूने के लिए]।

सरकारी वकील : और इस प्रकार तुमने उज्ज्वल भविष्य का वर्णन किया है।

(उद्धरण देता है) : "नगर है, मानो थेगलियां लगा हुआ गद्दा" आदि, पृष्ठ ७७ और ७८[29] यहां तुम किस भविष्य की चर्चा कर रहे हो ?

सिन्यावस्की : ये सब बातें लेन्या तिखोमिरोव के बारे में कही गई हैं, जिसकी मैं एक लेखक के रूप मे निन्दा करता हूं। अपने तरीकों के कारण यह पात्र लेखक की सहानुभूति प्राप्त नही करता। वह अपने आस-पास के जन-जीवन में कोई भी परिवर्तन करने मे सफल नहीं होता। बस वह केवल इतना कर पाता है कि सम्मोहन की क्रिया के द्वारा लोगों के मन मे यह बात बैठा देता है कि परिवर्तन हुए हैं।

२८—सोवियत साहित्यिक मासिक, ओक्त्यावर के अत्यधिक कट्टरपंथी सम्पादक, उपन्यासकार वीसेवोलोद कोचेतोव का व्यंग्य चित्रण, जिसके ऊपर डेनियल की कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" में भी ज़बरदस्त प्रहार हुआ है। देखिए प्रस्तावना पृष्ठ ३२।

२९—यह अंश दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट के पृष्ठ ८५ पर है। इसमें लेन्या तिखोमिरोव (अंग्रेजी अनुवाद मे लियोनार्ड मेकपीस) द्वारा 'परिवर्तित" ल्यूबीमोव नगर का हास्यपूर्ण चित्रण है। इस्तगासे की ओर से यह दर्शाने का प्रयास किया जा रहा है कि इस चित्रण मे साम्यवाद के अन्तर्गत "उज्ज्वल भविष्य" के आश्वासनो का मजाक उड़ाया जा रहा है।

तिखोमिरोव लोगों को कहता है कि वे सुखी हो। उसकी समस्त गतिविधि, यदि इस शब्द का प्रयोग किया जा सकता है, इच्छाशक्तिवादी[30] और मनमानी हैं, तथा इसका वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नही। नदी का पानी वस्तुतः शैम्पेन मे नही बदल जाता। यद्यपि तिखोमिरोव के प्रभाव के अन्तर्गत लोग यह सोचने लगते हैं। तिखोमिरोव के इन कामो का मार्क्सवाद से कोई सम्बन्ध नहीं है। और इस भविष्य की तस्वीर का साम्यवाद से कोई सम्बन्ध नही है। इस पूरी कहानी को, इसके पात्रो ने कहा है और ये सब पात्र अपने-अपने ढंग से बोलते हैं, आपको यह बात ध्यान में रखनी चाहिये। कुछ पात्र घिसी-पिटी बातों को दोहराते है और ये बातें सावेली कुजमिच की बातों से और अधिक अतिरंजित हो उठती हैं। वृद्ध सावेली को बहुत अधिक किताबी जानकारी है और जो विद्वत्तापूर्ण तरीके से बोलने का प्रयास करता है और जिसकी शैली कृत्रिम और भारी भरकम है। यहा इस प्रकार की शब्दावली प्रयोग करने वाले पात्रो का मजाक उडाया गया है, उन बातों का नही जो वे कहते हैं। साहित्य मे समाचारपत्रों की भाषा की व्यग्यपूर्ण अनुकृति के साहित्य मे अनेक उदाहरण हैं और इस शैली के बारे में कुछ भी राजनीतिक नही है। मायाकोवस्की के "बाथ हाऊस" और "वैड बग" को ही लीजिए।

न्यायाधीश : और नोटो सम्बन्धी दृश्य मे तुम किस का मजाक उडा रहे हो? और जिस अंश मे यह कहा गया है कि हम [हालैंड से] "आगे वढ़ जायेंगे", उसके बारे मे तुम्हारी क्या राय है।[31]

सिन्यावस्की : मैं लेन्या तिखोमिरोव का मजाक उडा रहा हूं।

न्यायाधीश : और "छोटी दाढियो" के बारे मे तुम्हारा क्या कहना है? और लेनिन के "सार्वभौम राहत की अवधि" सम्वन्धी प्रसिद्ध शब्दो के बारे मे भी तुम क्या कहते हो? (ल्यूबीमोव से उद्धरण देता है।[32]) यहां लेखक किस का मजाक उडा रहा है? यह बात दि बाथ हाउस जैसी नही है।

सिन्यावस्की : मैं लेन्या तिखोमिरोव का मजाक उड़ा रहा हूं, जो हमेशा घिसी-पीटी भाषा मे बात करता है और हमेशा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ही सोचता है।

सरकारी वकील : और यहा तुम किस का मजाक उडा रहे हो? (उद्धरण देता है)

सिन्यावस्की : सावेली कुजमिच प्रोफेरान्सोव का। मैं यहा यह कहना चाहता हूं कि यह

३०—देखिए प्रस्तावना, पृष्ठ २९

३१—यह दि मेकपीस एक्सपेरिमेट, पृष्ठ १०२, मे पश्चिम के देशों से आगे वढ़ जाने के सोवियत नारे की ओर परोक्ष सकेत के बारे मे है।

३२—दि मेकपीस एक्सपेरिमेट पृष्ठ १०२।

कभी-कभी लेन्या से बहुत दूर हट जाता है और कभी-कभी उसके समीप आ जाता है।

सरकारी वकील : तुम असली मुद्दे से दूर हटने की कोशिश कर रहे हो।

सिन्यावस्की : मैं साम्यवाद का नहीं, बल्कि प्रोफ़ेरान्तोव का मज़ाक उड़ा रहा हूं।

सरकारी वकील : और इसके बारे में तुम क्या कहोगे? "उनके पास हवाई जहाज हैं, लेकिन हमारे पास अपनी नग्न कल्पना के अलावा अन्य कुछ नही है......" तुमने इस "रक्त को जमा देने वाली अतिशयोक्ति" को किस के मुंह पर दे मारा है?[34]

सिन्यावस्की : यह एक ठोस स्थिति का वर्णन है—ल्यूबीमोव नगर पर एक हवाई हमले का विवरण। और लेन्या तिखोमिरोव इस खतरे को अपनी असाधारण मानसिक शक्तियां इस्तेमाल कर टाल देता है।

न्यायाधीश : फील्ड ने इसकी भिन्न व्याख्या की है। प्रान्तीय पार्टी समिति के सम्मेलन के एक दृश्य में कामरेड ओ कहता है, "और हम व्यक्ति पूजा के दौर के दुष्परिणाम नहीं चाहते।"[35] क्या इसमे भी लेखक का दृष्टिकोण प्रकट हुआ है? यह कोई रूपक अलंकार है या अतिशयोक्ति? क्या यह भी केवल कामरेड ओ का ही कथन है?

सिन्यावस्की : कामरेड ओ के रूप मे, जो पार्टी की प्रान्तीय समिति का सचिव है, ख्रुश्चेव की कुछ विशेषताओ की ओर संकेत है। लेकिन उनकी अथवा उनकी गतिविधियों की आलोचना करने का मेरा इरादा नही था—मैंने केवल ख्रुश्चेव का अपनी बात कहने का विशिष्ट तरीका ही और उनकी कुछ अभिव्यक्तिया ही इस्तेमाल की हैं—मैंने ख्रुश्चेव के भाषण करते समय अत्यधिक क्रोधित हो उठने और अपरिष्कृत भाषा के उपयोग का ही इस्तेमाल किया।

सरकारी वकील : आइए हम फिर "आन सोशलिस्ट रियलिज़म" सम्बन्धी प्रबन्ध पर विचार करें। हम केवल तुम्हारे राजनीतिक विचारों पर भी विचार करें। जब तुमने यह लिखा तब तुम्हारे मन में क्या बात थी? "जेलो को समाप्त करने के लिए, हमने नई जेलें बनाईं...... हमने केवल अपने शरीरो को ही नही, बल्कि अपनी आत्माओं को भी अपवित्र किया?" इस बात का समाजवादी यथार्थवाद से क्या सम्बन्ध है?[36]

३३—यह उद्धरण दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट के अध्याय ६ मे वर्णित इस प्रयास के बारे में है कि वायु सेना के प्रयोग से ल्यूबीमोव को फिर "जीत लिया जायेगा।" यह उद्धरण पृष्ठ १५० पर है।

३४—वही

३५—दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट, पृष्ठ ७३

३६—आन सोशलिस्ट रियलिज़्म, पृष्ठ ३८

सिन्यावस्की : मैं उद्देश्यो की चर्चा कर रहा था, मैं कठिनाइयो और अन्तर विरोधो की और स्तालिन के शासनकाल मे प्रयुक्त अमानुषिक तरीकों की चर्चा कर रहा था। लेकिन मैंने इन तरीकों को भी एकदम अस्वीकार नहीं किया है (एक उद्धरण पढ़कर सुनाता है।) मैंने इन तरीको तक का औचित्य ठहराया है। मैं कहता हूं : "तुमने क्या किया, तुमने मानवीय बूढे जनहितकारियो ने ?" और "मुरब्बे के साथ चाय पीना कितना मजेदार होता है।[३७]" मैं पश्चिम के उदारतावादियो की चर्चा कर रहा था।

सरकारी वकील : मैं इस बात से सहमत नहीं हो सकता कि तुम्हारा यह स्पष्टीकरण इन बातो का औचित्य सिद्ध कर देता है। यहा, तुमने लिखा है : "अन्तिम लक्ष्य के नाम पर, हमने अपने शत्रुओ द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले तरीको को अपनाया हमने यातनाएं देने के तरीकों और विभिन्न पदो को दर्शाने वाले बिल्लो को अपनाया[३८]...... हमने खाली सिंहासन पर एक नये ज़ार को आसीन किया कभी-कभी तो ऐसा लगा मानो हमने साम्यवाद की पूर्ण विजय के लिये, जो कुछ किया वह यह था कि साम्यवाद के विचार तक को ही त्याग दिया[३९]।" हम तुम्हारे इस कथन का क्या अर्थ समझें ?

सिन्यावस्की : हमने प्राचीन रूस की महिमा गाई, हमने नये ज़ार स्तालिन को सिंहासनारूढ किया। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, आप को यह बात ध्यान मे रखनी चाहिये कि मैं स्तालिन के युग की चर्चा कर रहा था।

सरकारी वकील : और तुमने इन शब्दो मे हमारी तुलना पश्चिम से की है : "यह किसी आस्थावान व्यक्ति के लिये कैसे सभव है कि वह अपने ईश्वर से मुक्त होना, स्वतन्त्र होना चाहे।" हम इसका क्या अर्थ समझें ?"

सिन्यावस्की : पश्चिम का लोकतन्त्र "व्यक्ति की स्वतन्त्रता", "प्रतियोगिता की स्वतंत्रता" आदि पर आधारित है। पश्चिम मे वे लोग अपनी इच्छानुसार प्रत्येक वस्तु को चुनने की स्वतन्त्रता की चर्चा करते हैं। मैंने इस पर व्यग्य किया है। लार्ड ईश्वर पार्लियामेंट नही है। एक आस्थावान व्यक्ति के लिये, एक धार्मिक व्यक्ति के लिये स्वतन्त्रता का प्रश्न ही नही उठता। कुछ धार्मिक सिद्धातो मे निष्ठा रखने वाले व्यक्ति के लिये "चुनने की स्वतत्रता" हो ही नही सकती। मैं ये सब बातें सोवियत लेखको के सदर्भ मे कहता हू, जिनके लिये चुनने की स्वतन्त्रता का प्रश्न ही नही उठता। या तो आपको विश्वास करना होगा अथवा आपको

३७—वही, पृष्ठ ३७।

३८—यह उक्ति स्तालिन द्वारा दूसरे महायुद्ध के दौरान सैनिक अफसरो के पद सूचक बिल्लों का प्रचलन फिर शुरू करने के बारे में है।

३९—आन सोशलिस्ट रियलिज्म पृष्ठ ३७।

(अदालत मे बने कैदियो के कटघरे की ओर देखते हुए) जेल जाना होगा।

न्यायाधीश · "ऐसा लेखक ऊपर से प्राप्त होने वाले निर्देशो का हर्ष से स्वागत करता है।"[40] इसका क्या अर्थ है ? क्या यह तुम्हारी राजनीतिक मान्यता है ?

सिन्यावस्की : यह स्पष्ट व्यंग्य है और यह भी स्पष्ट है कि यह व्यग्य किस पर किया गया है।

न्यायाधीश : हम इस बात को समझते है। यह वही बात है, जिसके बारे मे धारा ७० बनाई गई है। तुम कहते हो, "पार्टी और सरकार के निर्देश।" यह कोई साहित्यिक शैली नही है, है क्या ?" यह एक सीधा-सादा वक्तव्य है।

सिन्यावस्की : स्तालिन के शासनकाल मे ऐसा ही होता था।

न्यायाधीश : स्तालिन का इस बात से क्या सम्बन्ध है ? समय बदल गया है।

सिन्यावस्की . और भाषा विज्ञान और अर्थशास्त्र और सगीत के बारे मे सबसे बड़ा अधिकारी विद्वान कौन था ? क्या वह स्तालिन ही नही था ? क्या यह स्पष्ट नही है कि मैं किसकी चर्चा कर रहा था ?

न्यायाधीश : क्या तुम यह सोचते हो कि यदि तुम्हारी पुस्तको मे कुछ भी सोवियत विरोधी न होता तो ये प्रतिक्रियावादी प्रकाशक तुम्हारी पुस्तकों को इतने सुन्दर रूप से छापते ? ज़रा इस कागज को देखिए ज़रा इस पुस्तक की जिल्द को देखिए प्रसगवश मैं निबन्ध और कहानी दि ट्रायल बिगिन्स का यह सस्करण पेश करता हूं। पुस्तक की जिल्द का दो तिहाई हिस्सा काला है और केवल एक तिहाई लाल। क्या इसका अर्थ यह दर्शाना है कि सोवियत सघ मे काले पहलुओ की इस प्रकार भरमार है ? यदि तुम्हारी पुस्तको मे सोवियत विरोधी प्रचार न होता तो क्या उनका इतना ऊंचा मूल्याकन किया जाता ?[41]

सिन्यावस्की : मैंने इस जिल्द का आदेश नही दिया और राय भिन्न होती है। "टेरट्ज़ कम्युनिस्ट विरोधी नही है;" यदि अमरीकी पाठक टेरट्ज़ को कम्युनिस्ट समाज का शत्रु समझते है तो वे गलती करेंगे। माइलोज़ ने यह लिखा है।[42]

४०—वही, पृष्ठ ४२।

४१—दि ट्रायल बिगिन्स की जिल्द के रग के बारे मे न्यायाधीश ने जो बात उठाई है, वह बडी रहस्यात्मक है। यह बात सच है कि इस पुस्तक के अमरीकी संस्करण (पैंथियन) की जिल्द का एक तिहाई हिस्सा लाल है। लेकिन जिल्द का शेष भाग मुख्यतः सफेद है और उसमे केवल थोडे से स्थान पर भूरा रंग है। कोलिन्स-हार्विल सस्करण की जिल्द का रंग भूरा और सफेद है। लेकिन आन सोशलिस्ट रियलिजम के पैंथियन संस्करण की जिल्द प्रायः काले रंग में है और यदि इस पुस्तक को दि ट्रायल बिगिन्स के बराबर रखा जाये तो वैसा ही दिखाई पड़ता है जैसा न्यायाधीश ने कहा है।

४२—ज़ेस्लाव माइलोज़, पोलैंड का प्रवासी विशिष्ट कवि और समालोचक, "दि कैप्टिव माइंड" का लेखक, जिसने आन सोशलिस्ट रियलिजम के पैंथियन सस्करण की भूमिका लिखी है।

न्यायाधीश : उन्होने तार्सिस को नया दोस्तोएवस्की घोषित किया था। फील्ड ने तुम्हें नया शापनहावर बना दिया है। जल्दी ही वह तुम्हारी तुलना शैक्सपीयर से करने लगेंगे।

सिन्यावस्की : सिटिज़न चेयरमैन (नागरिक अध्यक्ष), हम दोस्तोएवस्की के बारे मे नहीं, बल्कि राजनीति के बारे मे चर्चा कर रहे थे। मैं आप को आन सोशलिस्ट रियलिज्म" का एक उद्धरण पढ कर सुनाता हू, जिससे आपको यह स्पष्ट हो जायेगा कि लेखक राजनीति के बारे मे क्या सोचता है : "यदि राजतंत्र अथवा पश्चिमी लोकतंत्र फिर वापस लौटते हैं, जो दोनो समान ही हैं, तो हम फिर एक नयी क्रांति करेंगे"।[43]

न्यायाधीश . (कुछ रुकने के बाद सरकारी वकील से) . आप अपनी जिरह जारी रखिए।

सरकारी वकील : इस निबन्ध में भी तुमने लेनिन के उज्ज्वल नाम पर कीचड़ उछाला है। तुम लिखते हो : "मायाकोवस्की ने बहुत जल्दी ही यह अनुभव कर लिया कि किन चीजो का मजाक नही उडाया जा सकता। वह उसी प्रकार लेनिन का मजाक उडाने का साहस नही कर सकता था, जिस प्रकार देरझाविन साम्राज्ञी की खिल्ली उडाने की बात नही सोच सकता था।'[44] तुम इसका क्या स्पष्टीकरण देते हो ?

सिन्यावस्की यह अश शैलीगत विशिष्टताओ के बारे मे है। २० वी शताब्दी का, गौरव ग्रन्थो का अनुकरण, १८ वी शताब्दी के गौरव ग्रन्थो के अनुकरण की ही प्रतिध्वनि करता है। १६ वी शताब्दी का रोग था, व्यग्य। युवक मायाकोवस्की ने अनेक चीजो का मजाक उडाया, लेकिन फिर वह रुक गया। मायाकोवस्की के सामने कुछ सीमाए आ खडी हुई और ये सीमाए इस बारे मे थी कि इससे आगे किसी का मजाक नही उडाया जा सकता। लेकिन १६ वी शताब्दी मे ऐसी सीमाए नही थी। देरझाविन गौरवग्रन्थो के अनुकरण की शैली[45] का प्रतिनिधित्व करता है और मैं उनकी शैली की तुलना २० वी शताब्दी की शैली से कर रहा हू।

सरकारी वकील . तुमने पुश्किन का भी मजाक उडाया है ? "लाड दुलार से विगडी और शर्मालु तात्याना[46] के हाथ से पुश्किन ने अश्लील कविताए लिखी हैं।"

४३—आन सोशलिस्ट रियलिज्म, पृष्ठ ८०

४४—आन सोशलिस्ट रियलिज्म पृष्ठ ७५।

४५—प्रस्तावना पृष्ठ २४।

४६—पुश्किन के महाकाव्य ईवजेनी ओनेगिन की नायिका। आन सोशलिस्ट रियलिज्म के पृष्ठ ७५ का यह वाक्य कही अधिक तर्कसंगत दिखाई पड़ता है . "पुश्किन ने.. पवित्र और शर्मालु तात्याना को सबोधित कर अश्लील कविताए लिखी।"

सिन्यावस्की : पुश्किन व्यंग्य लेखक थे।

सरकारी वकील "ग्रान सोशलिस्ट रियलिज़म" के बारे मे ग्लावलित की रिपोर्ट के निष्कर्ष पढ़कर सुनाता है, जिसमे इस निबन्ध को संकल्पना पर संशोधनवादी दृष्टिकोण से विचार करने का प्रयास बताया गया है और कहा गया है कि यह निबन्ध सोवियत विरोधी प्रचार से भरा पडा है, यह साम्यवाद और पार्टी के निर्देशात्मक नेतृत्व के विरुद्ध है और इसमे यह कहा गया है कि रूस के लोगों को अपने विचार व्यक्त करने और सृजनात्मक गतिविधियो की स्वतत्रता नही है।

सरकारी वकील : क्या तुम इस निष्कर्ष से सहमत हो ?

सिन्यावस्की : नही। यह रिपोर्ट मूल की विकृति पर आधारित है। (अपने निबन्ध से उद्धरण देता है)। "सोद्देश्यता" (टेलियोलॉजिकल) के स्थान पर रिपोर्ट मे "धर्म सम्बन्धी" (थियोलॉजिकल) का प्रयोग किया गया है। इसमे उन अंशों की एकदम उपेक्षा कर दी गई है, जो रिपोर्ट के निष्कर्ष के विरुद्ध जाते है। मैंने यह नही कहा कि "हमने बलिदानियो का बलिदान कर दिया।" बल्कि मैंने कहा है, बलिदानियो ने स्वयं अपना बलिदान किया[47]।

न्यायाधीश : आइए हम पूरे उद्धरण पर विचार करें (उद्धरण देता है)। पूरे उद्धरण का ही हवाला दिया जाना चाहिये।

सिन्यावस्की : मैं ग्लावलित की रिपोर्ट की चर्चा कर रहा हू। यह मूल को विकृत करने के उदाहरण है।

उद्धरण देता है।

न्यायाधीश : उद्धरण का शेष अश भी सुनाओ। (वह स्वयं उद्धरण देता है) तुमने यहा गोर्की[48] के बारे मे जो कुछ कहा है वह बहुत सहानुभूतिपूर्ण नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को उद्धरण सही रूप मे ही देना चाहिये।

सिन्यावस्की : मैं ग्लावलित रिपोर्ट के निष्कर्षो मे मूल को तोडने मरोड़ने की चर्चा कर रहा हूं। यह एक और ऐसा उदाहरण है, जिसमे ग्लावलित रिपोर्ट में मेरे बारे मे वह बात कही गई है, जिसके ठीक विपरीत मैने लिखा है। मैंने लिखा है : "अनेक लोग ऐसी बातें कहते है। लेकिन मायाकोवस्की ने इन्हें ग़लत दर्शा दिया।" लेकिन ग्लावलित रिपोर्ट मे लिखा है : "सिन्यावस्की ऐसी बातें

४७—देखिए ग्रान सोशलिस्ट रियलिज़म, पृष्ठ ३६।

४८—ग्रान सोशलिस्ट रियलिजम, मे गोर्की का कई बार उल्लेख हुआ है। उदाहरण के लिये देखिए पृष्ठ ४७ और ४६। यह कहना कठिन है कि न्यायाधीश ने कौन सा उद्धरण दिया, लेकिन कोई भी उद्धरण इतना सहानुभूति रहित नही है।

कहता है[49]।"

न्यायाधीश : इस अंश का शेष भाग इस प्रकार है।

[बड़ा उद्धरण देता है]

सरकारी वकील : सिन्यावस्की, यदि ग्लावलित ने इस उद्धरण को उस रूप मे दिया होता जिस रूप मे न्यायालय के अध्यक्ष ने उद्धृत किया है तो क्या तुम उसके निष्कर्षों से सहमत हो जाते ?

सिन्यावस्की : नही। मैं तब भी इस से सहमत नही होता।

न्यायाधीश : एक और बडा उद्धरण पढ कर सुनाता है।

सिन्यावस्की : मैं पहले ही इसका स्पष्टीकरण दे चुका हूं। समाजवादी यथार्थवाद और १९ वी शताब्दी के साहित्य का एक दूसरे से मेल नही खाता।

सरकारी वकील : तुमने "टॅकिंग ए रीडिंग[50]" शीर्षक लेख की पाण्डुलिपि कब लिखी ? यह लेख तुम्हारे घर की तलाशी मे मिला था।

सिन्यावस्की : इस लेख को "ऐसे इन सैल्फ-एनेलेसिस" भी कहा गया है।

न्यायाधीश : यह वही है।

सिन्यावस्की : यह अधूरा और कच्चा मसौदा है। यह एक लेख का हिस्सा है, जो मैं कभी भी पूरा न कर सका। इसका पहला भाग १९५३–५४ मे और दूसरा १९६० मे लिखा गया। अभियोगपत्र मे कहा गया है कि यह लेख "मेरे विचारो का सार" है। मेरा कहना है कि एक कच्चे मसौदे का एक हिस्सा किसी भी लेखक के विचारो का सार नही हो सकता। मैंने कभी भी न तो इसे दिखाया और न ही पढ कर सुनाया। डेनियल को भी नही।

सरकारी वकील एक उद्धरण पढने की कोशिश करता है।

न्यायाधीश : सिन्यावस्की पर लगाये गये अभियोगो मे इस पाण्डुलिपि का उल्लेख नही है। इस लेख से उसके व्यक्तित्व पर प्रकाश पड़ता है और इससे अधिक कुछ नही। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि उन पाण्डुलिपियो और डायरियो के आधार पर अभियोग नही लगाये जा सकते, जिन्हे प्रचारित न किया गया हो।

सरकारी वकील : तुम ने यहा लेनिन के विशाल मस्तिष्क के बारे मे लिखा है, उनके "तर्क की विकृति के बारे में लिखा है और यह कहा है कि मृत्यु के बाद जब परीक्षा की गई, तो पता चला कि मस्तिष्क को जरठता (स्क्लेरोसिस) चाट गयी है[51]"।

४९—सभवत. यह अश आन सोशलिस्ट-रियलिज़म, पृष्ठ ८८ पर है।

५०—रूसी भाषा मे "तोचका ओत्स्चेता"

५१—यह और बाद के उद्धरण सिन्यावस्की के निबन्ध "ऐसे इन सैल्फ ऐनेलेसिस" के बारे मे हैं, जिसे उनकी गिरफ्तारी के समय ज़ब्त किया गया और अब तक उसकी कोई भी प्रतिलिपि पश्चिम मे उपलब्ध नही है।

क्या इस बात का उन बातों से मेल नही खाता, जो तुमने अपनी [अन्य] रचनाओ मे लेनिन के बारे मे लिखी है ?

सिन्यावस्की : नही। इसका मेल नही खाता। "ल्यूबीमोव" में लेनिन एक ऐसी स्थिति मे आते हैं, जिसे जानबूझकर अर्थहीन बनाया गया है। वे एक ऐसी स्थिति में आते हैं, जो उन्हे, मेरे विचार से, उनकी अपनी विशिष्ट स्थिति मे या रूप में प्रदर्शित नही करती। लेकिन मेरा यह विचारक्रम सन् १९३७ के बारे मे है।

[अदालत के कमरे मे हलचल]

न्यायाधीश, लेनिन और स्तालिन की तुलना वाले अंश का उद्धरण देता है।

सिन्यावस्की : क्षुद्र बुर्जुआ मनोवृत्ति के लोगो के लिये स्तालिन को समझ पाना आसान था। मैं लेनिन के बारे मे हर बात सम्मानपूर्वक कहता हूं।

[अदालत के कमरे मे हसी]

न्यायाधीश वह उद्धरण पढ कर सुनाता है, जिसमे यह कहा गया है, कि लेनिन उन लोगो की समझ के बाहर हैं, जिनकी क्षुद्र बुर्जुआओं जैसी मनोवृत्ति है।

सिन्यावस्की : स्तालिन के ऊपर भूत सवार था। क्षुद्र बुर्जुआ मनोवृत्ति के लोग, लेनिन के स्तर पर नही उठ सकते।

सरकारी वकील : तुमने जो कुछ कहा है, क्या उससे यह निष्कर्ष नही निकलता कि लेनिन ने सन् १९३७ की भविष्यवाणी की थी ? उदाहरण के लिये तुम कहते हो कि स्तालिन ने लेनिन के लाक्षणिक वर्णनों को सत्य सिद्ध कर दिया।

सिन्यावस्की . मैं यहा लाक्षणिक वर्णन की चर्चा कर रहा हूं। यदि हम इन्हे सत्य सिद्ध करते तो यह ससार का अंत ही होता। उदाहरण के लिये हम कहते हैं : "परछाइया गिरती है" अथवा "आकाश टूट पड़ता है" आदि। यदि वस्तुतः ऐसी घटनाए घटती, तो संसार का विनाश ही हो जाता। लेनिन ने जब हमारी विचारधारा के शत्रुओ की चर्चा की तो उन्होंने लाक्षणिक वर्णन किया। स्तालिन ने इनको मूर्त रूप दिया और इसका परिणाम हुआ सन् १९३७ की भयावह घटनाएं। स्तालिन ने लाक्षणिक वर्णनो को आमूल बदल दिया, लेकिन लेनिन स्तालिन के कार्यों के लिये किसी तरह उत्तरदायी नहीं थे, जिस प्रकार भाषा लाक्षणिक बातों को व्यक्त करने के लिये जिम्मेवार नहीं हो सकती।

न्यायाधीश : लेकिन तुम्हारे अनुसार तो यह सारा व्यापार लेनिन से शुरु होता है। (उद्धरण देता है)

सरकारी वकील : तुम लिखते हो : "रक्तपात अभी होना शेष था !"

सिन्यावस्की : मुझे प्रत्येक शब्द के लिये उत्तरदायी ठहराया जा रहा है। मैं अदालत के समक्ष यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यह एक कच्चा मसौदा है। मेरे घर की तलाशी के समय अन्य पाण्डुलिपियां, टिप्पणियां और कच्चे मसौदो को जब्त कर

लिया और यदि अब इन कच्चे मसौदो को मेरे विरुद्ध प्रमाण के रूप मे उद्धृत किया जाता है तो मैं यह कहना चाहूंगा कि प्रवासी बुनिन की रचनाओं के हाशिए मे मैंने जो लिखा है, उस पर भी ध्यान दिया जाये। मैंने लिखा है: "बेहूदी प्रतिक्रियावादी गदगी।" इससे स्पष्ट हो जाता है कि जिन बातो को मेरे सच्चे विचार बताया जा रहा है, वे विवादास्पद है।

न्यायाधीश एब्राम टेरट्ज की रचनाओ के बारे मे सफाई पक्ष ने, जिन लेखो की माग की थी, उन्हे लेनिन पुस्तकालय से मगा लिया गया है। जिस सामग्री का अनुरोध किया गया था, उसमे से कुछ पुस्तकालय मे मौजूद नही हैं।

अदालत की कारवाई स्थगित।

तीसरे पहर साढ़े ३ बजे अदालत की कारवाई शुरू

सरकारी वकील : क्या तुम्हे अपनी रचनाओ के लिये रॉयलटी मिली है? और रॉयलटी की राशि के बारे मे तुम्हे क्या जानकारी है?

सिन्यावस्की : मैंने आर्थिक लाभ के लिये नही लिखा। मैं अपने देश मे या विदेश मे अपनी रचनाए प्रकाशित करके पैसा कमाने की कोशिश नही कर रहा था। कुछ वर्ष पहले मज़ाक मे जामोयस्का ने मुझे एक करोडपति कहा। लेकिन आज फ्रास मे मुद्रा सम्बन्धी सुधार लागू होने के बाद इसका क्या अर्थ है, मैं नही जानता।

सरकारी वकील · क्या इसका यह अर्थ है कि अब तुम करोडपति नहीं हो?

सिन्यावस्की : मैं नही जानता।

सरकारी वकील . क्या तुमने अपनी रॉयलटियो का कोई उपयोग किया।

सिन्यावस्की : पिछली बार जब ज़ामोयस्का यहा आई थी तो मैंने उसे यह कहा था कि मेरी रॉयलटी के पैसे से वह कला सम्बन्धी एक फ्रासीसी पत्रिका का चन्दा दे दे। मुझे यह नही मालूम कि यह पत्रिका मेरी रॉयलटी के पैसे से आती है। लेकिन यह पत्रिका जनवरी १९६५ से नियमित रूप से मिल रही है। मैं बदले मे सोवियत पत्रिकाए और पुस्तकें भेजता हूं। इसके अलावा मैंने किशिलोव दम्पत्ति से, जो फ्रास जा रहे थे, कुछ पुस्तकें खरीदने के लिये कहा था। लेकिन यह विचार बातचीत से आगे नही बढा क्योंकि मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और किशिलोव दम्पत्ति का वीज़ा रद्द कर दिया गया[५२]।

सरकारी वकील किशिलोव से तुमने जो धन कर्ज़ ले रखा था, तुम उसे भी अपने विदेश मे मौजूद पैसे से चुकाना चाहते थे। क्या तुमने यही मुझ से कहा था?

सिन्यावस्की मुझे ऐसा कोई वार्तालाप याद नही है। आरम्भिक जांच के दौरान मुझ से यह कहा गया था कि ऐसे वार्तालाप की एक टेप रिकार्डिंग मौजूद है। लेकिन मैं

५२—सोवियत निर्गम वीसा अर्थात् सोवियत रूस से बाहर जाने का अनुमति पत्र।

समझता हूं की इस बात की कही अधिक सभावना है कि उन्होने पैसे के बारे में मेरी पत्नी से हुए, मेरे वार्तालाप को रिकार्ड किया है[53]।

सरकारी वकील : तुम्हारा मतलब उस टेप रेकार्डर से है, जो किशिलोव फ्रांस मे अपने लिये खरीदना चाहता था ?

सिन्यावस्की : मैं उस टेप रेकार्डर की बात कर रहा हूं, जिसका इस्तेमाल मेरे घर की बातचीत सुनने के लिये किया गया······

सरकारी वकील : (बीच मे टोकते हुए) : तुमने अपनी रचनाओं को रूस में प्रकाशित करने की कोशिश क्यों नहीं की ?

सिन्यावस्की : एक साहित्यिक समालोचक के रूप में, मुझे हमारे साहित्य में प्रचलित अभिरुचियो और मानको का अच्छा ज्ञान था। अनेक महत्वपूर्ण तथ्यो की दृष्टि से यह एक लेखक के रूप मे मेरी अभिरुचियो से मेल नही खाते थे। मेरी साहित्यिक रचनाएं उन रचनाओ से पर्याप्त रूप से भिन्न हैं, जो यहा स्वीकार की जाती हैं। मेरा अभिप्राय राजनीतिक दृष्टिकोणो से नही बल्कि कलात्मक दृष्टिकोणो से है। वे छः रचनाए भी जिनके लिये मेरे ऊपर आरोप नही लगया गया है। वे भी यहा नही छप सकती थी, कम से कम फिलहाल नहीं छप सकती थी। मैं यहा के प्रकाशकों को जानता हूं और यही कारण है कि मैंने अपनी रचनाए अपने प्रकाशकों को विचार के लिये नही दी। समालोचक आन्द्रेय सिन्यावस्की के रूप मे, जिनकी रचनाएं हमारी पत्र-पत्रिकाओ मे छपती थी और लेखक एब्राम टेरट्ज़ के रूप मे, जिसकी रचनाए विदेश मे छप रही थी, मैं निश्चित रूप से इन दो नामो के अन्तर को समझता था। लेकिन मैंने कभी भी यह नही समझा कि यह अन्तर बुनियादी है कि यह दोहरे व्यक्तित्व का उदाहरण है। यही कारण है कि मैं अपने आप को दुरगी चाल चलने वाला और वचक नही मानता।

सरकारी वकील : तुमने वे तीन रचनाए विदेश क्यो भेजी जिनके लिये तुम्हारे ऊपर अभियोग लगाये गये है ?

सिन्यावस्की : मैंने आप को बताया है—इसलिए क्योकि ये यहां प्रकाशित नही हो सकती थीं।

सरकारी वकील : मैं अपने प्रकाशको को दोष नही दे सकता।

सिन्यावस्की : मैं समझता था कि अदालत की दिलचस्पी—

न्यायाधीश : (बीच मे टोकते हुए); नही, तुमने ये रचनाए ही विदेश क्यो भेजी और तुमने अपना असली नाम क्यों छिपाया ?

५३—यह उल्लेख खुफिया पुलिस द्वारा सिन्यावस्की के फ्लैट में गुप्त रूप से लगाये गये माइक्रोफोनों के बारे मे है।

सिन्यावस्की : मैंने सब नौ रचनाओं के प्रकाशन में अपना नाम छिपाया, जिनमें वे छह रचनाएं भी शामिल हैं, जिनके लिये मेरे ऊपर अभियोग नही लगाये गये हैं, केवल उन तीन रचनाओं के प्रकाशन मे ही नही, जिन्हे सोवियत विरोधी माना जा रहा है। एक साहित्यिक समालोचक के रूप मे मैंने उन लेखको के बारे मे लिखने का प्रयास किया, जो एक व्यक्ति और एक लेखक के रूप मे मेरे घनिष्ठ थे। मैंने मायाकोवस्की, पास्तरनेक, ख्लेबनिकोव, बाबेल[५४] के बारे मे लिखा। मुझे ऐसा लगता है कि उनमे से कुछ ने एब्राम टेरट्ज़ के रूप मे मेरी रचनाओ को प्रभावित किया। मैं सोवियत समालोचक के रूप मे अपने कार्य को एक मुखौटा या एक धोखे की टट्टी नही समझता और न ही मैं इसे आजीविका कमाने का एक साधन मात्र ही समझता हूं। यह मेरे जीवन का श्रम है। यही कारण है कि कभी भी मेरा कार्य आसान नही रहा। सदा अनेक समस्याए सामने रही, जिन्हे सदा हल नही किया जा सका। मेरी प्रिय रचनाओ को, बाबेल और पास्तरनेक सम्बन्धी रचनाओ को, प्रकाशको ने ७ या ८ वर्ष तक रखे रखा, यद्यपि इन रचनाओ को छापने की सहमति मिल चुकी थी।

सरकारी वकील : लेकिन तुमने इन लेखो को विदेश भेजने की कोशिश नही की।

सिन्यावस्की : नही, अन्तत: ये लेख यहा छपे। पिछले दो या तीन वर्षों मे मेरे लिये अपने विचार व्यक्त करना संभव हुआ है। साहित्य का अध्ययन मेरे लिये एक मुखौटा नही है, यह मेरे जीवन का श्रम है और एक समालोचक के रूप मे मेरी रचनाओ और एक लेखक के रूप मे मेरी रचनाओ मे सदा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। लेकिन मैं जानता था कि यदि मेरे साहित्य सम्बन्धी लेखो को प्रकाशित करने की उनकी इतनी अधिक अनिच्छा रही, तो मेरे उपन्यासो और कहानियो के छपने का तो और भी कम मौका है। लेकिन यह मैं नही समझता था कि सदा यही स्थिति रहेगी। मेरी रचनाए जटिल और विचित्र हैं और मैं यह नही समझता कि ये सामान्य पाठक के लिये है। मैंने विदेशो मे अपनी रचनाओ के प्रकाशन को कभी भी एक पाठक समुदाय से सम्पर्क कायम करने का साधन नही माना। यह तो केवल उन थोडे से लोगो के लिये इन्हे सुरक्षित रखने का एक तरीका था जो सभवत. किसी समय इन रचनाओं मे कोई दिलचस्पी योग्य बात पाते। यह साहित्य केवल मेरे अपने लिये और कुछ थोडे से अन्य लोगो के लिये ही है, चाहे वे कही भी क्यों न रहते हो अथवा वे किसी भी युग के क्यो न

५४—वेलेमिर ख्लेवनिकोव (१८८५-१९२२) एक भविष्यवादी कवि, जिनकी ख्याति भाषा सम्बन्धी अत्यधिक प्रयोगो के लिये है। आइज़क बाबेल (१८९४-१९४१) प्रसिद्ध सोवियत कहानीकार, रैड कैवेलरी का लेखक। सन् १९३९ मे उसे गिरफ्तार कर लिया गया और एक बलात् श्रम शिविर मे उसकी मृत्यु हुई।

हूँ। मैंने यह बात अपनी एक रचना में कही भी है[55]।

सरकारी वकील : क्या कभी तुम्हे यह दिखाया-बताया गया कि तुम्हारी रचनाएं किस रूप में प्रकाशित हो रही हैं, इन की कितनी प्रतिया छापी जा रही हैं और तुम्हारे प्रकाशकों की नजर मे कैसा पाठक समुदाय है ?

सिन्यावस्की : मैं अपने और अपने दृष्टिकोण की ही चर्चा कर रहा हूं। मेरी एक रचना मे एक अंश है जिसमे कहा गया है : "केवल एक झक्की, अतिशय उत्साही व्यक्ति ही ऐसे शब्द लिख सकता है।" मुझे इस बात मे कोई दिलचस्पी नही थी कि मेरी रचनाओं के कितने संस्करण और कितनी प्रतियां छापी जाती हैं।

सरकारी वकील : लेकिन मैं तो यह समझता था कि तुमने यह कहा है कि तुमने अपनी रचनाएं इसलिए विदेश नही भेजी कि वे सोवियत विरोधी थीं, बल्कि इसलिए भेजी कि तुम उन्हे प्रकाशित हुआ देखना चाहते थे।

सिन्यावस्की : यहा प्रकाशन का प्रयोग रचनाओ को सुरक्षित रखने की दृष्टि से हुआ है।

सरकारी वकील : तुमने अपनी पाण्डुलिपिया अपने घर पर न रख कर दोकुकिना के घर पर क्यो रखी ?

सिन्यावस्की · आप अनावश्यक निष्कर्ष निकाल रहे है। ठीक वैसे ही जैसे मेरे छद्म नाम के बारे मे निष्कर्ष निकाले गए हैं। अभियोगपत्र मे इसे मेरे अपराध का प्रमाण बताया गया है और यह कहा गया है कि मैं अपनी रचनाओ के सोवियत विरोधी स्वरूप को समझता था और मैंने इसलिये छद्म नाम अपनाया, क्योंकि मैं यह जानता था कि मैं सोवियत विरोधी प्रचार लिख रहा हूं। लेकिन एक छद्म नाम कोई खुफिया और कूट लिपि मे लिखा हुआ नाम नही है। और प्रत्येक लेखक को अपनी इच्छानुसार एक छद्म नाम का उपयोग करने का अधिकार है। मैंने यह नाम इसलिए अपनाया, और इसीलिए मैंने दोकुकिना के घर पर अपनी रचनाएं रखी कि मैं सतर्कता बरतना चाहता था। मैंने वहा अपनी सब रचनाए रखी, इनमे वे रचनाए भी शामिल है, जो "सोवियत विरोधी नही है।" मैंने इस संभावना को अपने ध्यान मे रखा कि चाहे मेरी रचनाएं सोवियत विरोधी नही हैं, लेकिन इनके विरुद्ध कोई प्रतिबन्ध लग सकते हैं, यद्यपि मुझे

५५—उनकी कहानी "दि आइसिकल" का समारम्भ लेखक की टिप्पणी से होता है, जिसमें कहा गया है : "मैंने यह कहानी उसी रूप मे लिखी है, जिस रूप मे समुद्र में डूबे किसी जहाज का, किसी प्रकार जीवित यात्री अपनी दु.ख गाथा कहता है। जहाज के किसी टुकड़े पर बैठे हुए अथवा किसी निर्जन द्वीप पर, वह अपनी दुख गाथा लिखता है और उसे एक पत्र के साथ एक बोतल में रखकर इस आशा से समुद्र मे फैंक देता है कि लहरें और हवा इसे उन लोगो तक पहुचायेंगी जो बेचारे लेखक की मृत्यु के बहुत समय बाद सत्य को पढ़ेंगे, सत्य को जानगें।" (दि आइसिकल एण्ड अदर स्टोरीज़, पृष्ठ ६।)

इस बात की जानकारी नही थी कि ये प्रतिबन्ध. कैसे हो सकते है। मुझे इस बात की आशंका थी कि यह बात मेरी उन रचनाओ के बारे मे भी हो सकती है, जिन्हें सोवियत विरोधी नही दर्शाया जा सकता। हम सब को उन कारवाइयो की याद है, जो जोशचेनको और अखमातोवा के विरुद्ध १९४६ मे की गई[५६]। संभवत: मैं अन्य लोगो की तुलना मे कही अधिक आशंकित था। जब सन् १९५१ में मेरे पिता को गिरफ्तार किया गया, उसमे मेरी डायरियो को भी जब्त कर लिया गया था। मेरी इस सतर्कता का यह मनोवैज्ञानिक कारण है। मैंने उन रचनाओ को भी छिपाया जिनके बारे मे मेरे ऊपर अभियोग नही लगाये गये हैं।

न्यायाधीश . जोशचेनको और अखमातोवा का इस बात से क्या सम्बन्ध है? यह भिन्न समय की बात है। लेकिन तुम आज भी चीजें छिपाते जा रहे हो।

सिन्यावस्की : मैंने मुख्यत: अन्य चीजें छिपाई। ये तीन चीजे नही, जिनका अभियोगपत्र मे आरोप है।

न्यायाधीश : तुम्हारी आरम्भिक रचनाएं "दि ट्रायल बिगिन्स" और "आन सोशलिस्ट रियलिज़म" इन की पश्चिम मे बड़े-बड़े संस्करणो मे बिक्री हो रही है[५७]। इस बात का इन रचनाओं के साहित्यिक पक्ष से कोई सम्बन्ध नही है। उदाहरण के लिये इस मे एक शव के साथ संभोग का जुगुप्सा से भर देने वाला दृश्य है[५८]। यदि ऐसी कोई घटना वास्तविक जीवन मे घटती, तो इसके खिलाफ सम्बन्धित धाराओ के अन्तर्गत कारवाई की जाती (दण्डसहिता की धाराओ के अन्तर्गत), लेकिन ऐसे कार्य सोवियत विरोधी नही हैं। ये रचनाए दूसरी कोटि मे आती हैं। तुमने जानबूझकर ये बाते लिखी हैं। तुम जानते थे कि ये पुस्तकें प्रकाशित होगी और तुम्हारी ओर ध्यान आकर्षित होगा।

सिन्यावस्की · नेक्रोफीलिया का दृष्य अतीत का स्मरण है, यह चौदहवी शताब्दी की घटना पर आधारित है।

न्यायाधीश · तुमने प्रोफेरान्सोव के भयो के बारे मे इन शब्दो मे लिखा है, (प्रोफेरान्सोव,

---

५६—माइखेल जोशचेनको (१८९५-१९५८) और अन्ना अखमातोवा (१८८९-१९६६) उस अभियान के मुख्य शिकार थे, जो पार्टी ने १९४६ मे सरकारी निर्देशो के विरुद्ध आचरण करने वाले लेखको के खिलाफ छेड़ा था।

५७—टेरट्ज की रचनाओ के पाठक, सामान्य पाठक नही हैं, वल्कि साहित्य मे दिलचस्पी रखने वाले लोग ही हैं और उसकी रचनाओ की बिक्री इतनी अधिक नही है जितनी न्यायाधीश बताता है।

५८—दि आइसिकिल कहानी मे शव संभोग सम्बन्धी एक दृश्य के सदर्भ मे।

ल्यूवीमोव उपन्यास का एक पात्र है) : "यदि भयावह न्यायाधीश मेरे ऊपर मुकदमा चलाते हैं तो······"

—सैमसन सैमसोनोविच के ये विचार क्या तुम्हारे भयों और चिन्ताओं को प्रतिविम्वित करते हैं ?

सिन्यावस्की : यह वात सैमसन सैमसोनोविच ने नही कही है, बल्कि सावेली कुज़मिच (दूसरे प्रोफेरान्सोव का एक वशज) ने कही है और ये मेरे विचार नही हैं।

न्यायाधीश · एक ही वात है। जव तुमने अपनी रचनाएं विदेश भेजी तब तुम्हे अपनी रक्षा करने और सतर्कता बरतने की चिन्ता थी ?

सिन्यावस्की . पहले, आरम्भिक जांच के दौरान, एब्राम टेरट्ज़ की सब रचनाओं को सोवियत विरोधी वताया गया है। लेकिन अब तीन रचनाओं को ही सोवियत विरोधी कहा गया है। मुझ से पूछताछ करने वाले अधिकारियों ने प्रत्येक वस्तु को वडी सावधानी से सुना। ऐसा लगता है कि साहित्यिक रचना को राजनीतिक उद्देश्य से लिखी गई रचना बताने का काम वडा जटिल है—विशेषकर उस स्थिति मे जव एक ही रचना को कभी सोवियत विरोधी पाया जाता है और कभी नही। मैं न्यायालय से अनुरोध करता हूं कि इस मामले पर अधिक से अधिक सावधानी से विचार करे, जिससे ग़लतियों से वचा जा सके।

न्यायाधीश : लेकिन तुम्हारे निबन्ध (आन सोशलिस्ट रियलिजम) का कथा साहित्य से कोई सम्वन्ध नही है। यह कथा नही है और अदालत इसके पहले भाग पर विशेष ध्यान देगी।

सिन्यावस्की : नही, यह निबन्ध कथा साहित्य नही है। समस्या पर दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार हुआ है। साहित्य मे दिलचस्पी रखने वाले लोगों मे सदा यह होता है। मैंने उद्देश्य की संकल्पना पर विचार किया है। एक साहित्यिक अध्ययन मे सामान्यतः पहले सामान्य पृष्ठभूमि पर नज़र डाली जाती है। अत. इस सम्बन्ध मे कुछ भी कुटिलतापूर्ण नही है।

सरकारी वकील . सिन्यावस्की ? अब अदालत को यह बताओ कि तुम्हे कव इस बात का स्पष्ट ज्ञान हुआ कि तुम्हारी रचनाओ का उपयोग बुर्जुआ प्रचार के लिये किया जा रहा है।

सिन्यावस्की : यह वात मुझे आज भी पूरी तरह स्पष्ट नही है।

सरकारी वकील : तुमने फिलीपोव की भूमिका वाली पुस्तक कव देखी ?

सिन्यावस्की : सन् १९६५ मे अपनी गिरफ्तारी के कुछ महीने पहले। अभियोगपत्र में कहा गया है कि "मैं जानता था, लेकिन मैंने रोकने के लिये कुछ नही किया" आदि। लेकिन सन् १९६५ तक मेरी जानकारी भिन्न प्रकार की थी। अभियोगपत्र में जो कुछ कहा गया वह मात्र सदेह पर आधारित है। "मैं जानता था, लेकिन

मैंने रोकने के लिये को कारवाई नही की, अपनी और रचनाओ के प्रकाशन को रोकने के लिये कोई कारवाई नही की," यह जाच अधिकारियो का केवल अनुमान भर है। मुझे प्रकाशित रूप मे दो पुस्तके प्राप्त हुई · 'फैंटास्टिक स्टोरीज", (१६६१ भूमिका के विना) और "ल्यूबीमोव" (१६६४, फिलीपोव की भूमिका सहित) अब वस्तुतः मुझे किन तथ्यो की जानकारी थी ? उदाहरण के लिये, मैं जानता था कि एक फ्रासीसी कम्युनिस्ट फ्रिग्रोऊ ने "दि ट्रायल बिगिन्स" पढा है, और इसमे उन्हे कुछ भी सोवियत विरोधी नही दिखाई पडा। प्रसगवश यह उल्लेखनीय है कि हाल मे साइमोनोव ने प्रावदा मे यह लिखा है कि फ्रिग्रोऊ हमारे काव्य के मित्र हैं[५९]। इसके अलावा जामोयस्का ने मुझे यह भी बताया कि चेकोस्लोवाकिया और हगरी के प्रकाशक भी टेरट्ज की रचनाए छापना चाहते थे। मैंने लेतर्स फ्रैंकायस[६०] मे टेरट्ज़ की रचनाओ के प्रकाशन की घोषणा पढी। मेरे लिये ये इस बात का परिचायक थी, कि पश्चिम के प्रगतिशील क्षेत्रो मे, मेरी रचनाओ को सोवियत विरोधी नही समझा जा रहा है। मैंने सोचा कि फिलीपोव का लेख एक अपवाद है। मुझे आज भी अपनी रचनाओ पर पश्चिम मे हुई प्रतिक्रियाओ का पूरी तरह ज्ञान नही है। लेकिन मेरे मन मे इस बात का आभास है कि बुर्जुआ प्रचार करने वाले, अपनी मनचीती बातें लिखते रहते है। पश्चिम मे अक्सर सनसनीखेज उद्देश्यो की पूर्ति के लिये 'सोवियत विरोधी" शब्द का अक्सर इस्तेमाल किया जाता है। मुझे जाच-अधिकारियो की निरपेक्षता मे कोई विश्वास नही है—उन्होने अभियोगपत्र मे मेरी गिरफ्तारी के बाद, बुर्जुआ समाचारपत्रो मे मेरी गिरफ्तारी और मेरी रचनाओ पर हुई टिप्पणी को शामिल किया है। १६ अक्तूबर १६६५ के टाइम, २० नवम्बर १६६५ के वाशिंगटन पोस्ट मे प्रकाशित टिप्पणियो को अभियोगपत्र मे शामिल किया गया है और इन सामग्रियो को मेरी सोवियत विरोधी गतिविधियो का निरपेक्ष प्रमाण बताया गया है। पश्चिम मे इस आशय के समाचार प्रकाशित हुए हैं कि मैं एक प्राचीन धर्मनिष्ठ परिवार का हूं, कि मैं पास्तरनेक का एक घनिष्ठ मित्र हू आदि। न जाने इसके अलावा उन लोगो ने मेरे बारे मे क्या-क्या लिखा है। मेरी रचनाओ पर विदेशियो की प्रतिक्रिया के मूल्याकन का

५९—यह लेख रूसी कविता के हाल मे प्रकाशित एक सग्रह, ला पोइजी रूसे, पेरिस, १६६५ के बारे मे था। इस सग्रह का सम्पादन फ्रास के प्रमुख साम्यवादी कवि लुई एरागो की पत्नी एल्साकिओले ने किया है। इस सग्रह मे फ्रीओऊ के काव्यानुवाद प्रकाशित हुए हैं। कौंस्तान्तिन साइमोनोव प्रसिद्ध सोवियत उपन्यासकार और कवि है।

६०—फ्रास की एक साम्यवादी साहित्यिक पत्रिका।

निरपेक्ष तरीका होना चाहिये। ३० नवम्बर १९६५ को मैंने जाच अधिकारियों से यह अनुमति मागी कि वे मुझे अपने फ्रासीसी मित्रो की मार्फत एब्राम टेरट्ज़ की रचनाओं के बारे मे प्रकाशित सब समीक्षाओ का पूरा विवरण उपलब्ध करने दें। मैंने यह सुझाव दिया कि वे यह कार्य जिस भी तरीके से सर्वाधिक सही और चतुरतापूर्ण समझें उसी तरीके से किया जा सकता है। उदाहरण के लिये मैंने यह काम अपने कम्युनिस्ट मित्रो की मार्फत करने का सुझाव दिया। मेरी प्रार्थना को ठुकरा दिया गया। इसके बावजूद मेरे जांच अधिकारियों ने अपने मनमाने ढग से जो सामग्री इकट्ठा की है, उसमे भी मेरी रचनाओं का अलग-अलग मूल्यांकन हुआ है। उदाहरण के लिये माइलोज़ और फील्ड की समालोचनाएं। जांच अधिकारियो ने केवल ऐसी ही सामग्री का चुनाव क्यों किया, जो इस्तगासे का ही समर्थन करती थी? उन्होने फील्ड की तुलना मे फिलीपोव को अधिक महत्व क्यो दिया? मुझे आज भी इस बात का विश्वास नही है कि मेरी रचनाओ की सब समीक्षाएं और आलोचनाए पूरी तरह से इकट्ठा कर ली गई हैं। मैं यह जानता हूं कि कुछ समीक्षक मुझे केवल "मान्य परम्परा के पीछे न चलने वाला सोवियत लेखक भर कहते हैं।" यह बात मेरी रचनाओं के मेरे अपने मूल्याकन के बहुत समीप है। मैंने इन टिप्पणियों का उल्लेख किया है। उन खुल्लमखुल्ला सनसनीखेज कम्युनिस्ट विरोधी लेखों की ओर नही, जिनका उल्लेख इस्तगासा अपने दृष्टिकोण के समर्थन मे करता है।

न्यायाधीश : केवल अदालत ही यह निर्णय कर सकती है कि तुमने सोवियत विरोधी रचनाएं लिखी अथवा नही। जहा तक समीक्षाओं का सम्बन्ध है, वे केवल इस बात को सिद्ध करने का प्रमाण हैं, कि कौन तुम्हारी रचनाओं का अनुचित लाभ उठा रहा है और किस तरीके से। उदाहरण के लिये रेडियो लिबर्टी ने "ल्यूबीमोव" को तीन प्रसारणो मे प्रसारित किया। क्या वे यह कार्य आनन्द के लिये कर रहे हैं अथवा कुछ और भी उद्देश्य है?

सिन्यावस्की : लेकिन लेतर्स फ्रंकाएस मे प्रकाशित घोषणा के बारे मे आप क्या कहेंगे?

न्यायाधीश : वह केवल एक व्यापारिक विज्ञापन था, तुम्हारी रचनाओ को पढने की सिफारिश नही। कोई मार्क स्लोनिम नाम का व्यक्ति है, यह स्विस प्रोफेसर है[६१]। सन् १९६४ में उसने टेरट्ज़ के बारे मे लिखा (और मैं उद्धरण देता हूं): "टेरटज के लिये सोवियत सघ एक पागलखाना है।"

सिन्यावस्की : स्लोनिम यहां उन बातो की चर्चा कर रहा है, जिनका उल्लेख मेरे विरुद्ध लगाये गये अभियोगो मे नही है।

६१—प्रसिद्ध रूसी समालोचक और विद्वान, सोवियत साहित्य पर अनेक पुस्तकों का लेखक अब स्विटजरलैंड का निवासी (लेकिन वह स्विस जाति का नही है।)

न्यायाधीश · यदि इन रचनाओ को भी सोवियत विरोधी समझा जाता है तो यह बात उन रचनाओ पर और अधिक लागू होती है, जिनके आधार पर तुम्हारे ऊपर अभियोग लगाये गये है। टी एस ओ पी ई[62] ने टेरट्ज़ की एक पुस्तक के ऊपर एक नारे की मोहर लगाई है। तुम्हारी समझ से उन्होने यह कार्य क्यों किया ? क्या केवल मज़ाक के लिये ?

सिन्यावस्की . यह नारा, न जाने किसने इसे इस पुस्तक पर छापा है, तीन बार इसका उल्लेख हो चुका है। मैं यह नही कहता कि मेरी रचनाए समाजवादी यथार्थवाद की भावना के अनुसार हैं। आप फादेयेव[63] की किसी पुस्तक पर ऐसा कोई नारा नही छाप सकते। लेकिन मैं इस बात की भली भाति कल्पना कर पाता हूं कि टी एस ओ पी ई के नारे को जोशचेनको, अथवा अखमातोवा की पुस्तक रेक्वीम[64] अथवा वन डे इन दि लाइफ आफ आइवन देनिसोविच[65] अथवा बावेल की किसी रचना पर छापा जा सकता था।

न्यायाधीश · (समाजवादी यथार्थवाद के टेरट्ज़ द्वारा अनुशीलन पर फील्ड की टिप्पणी का उद्धरण देता है और कहता है) और इसे तुम निरपेक्ष कहते हो, क्यो नहीं क्या ?

सिन्यावस्की · माइलोज़ ने समाजवादी यथार्थवाद सम्बन्धी मेरे निबन्ध के बारे मे जो कुछ कहा है, वह कही अधिक सही है। मैंने फील्ड का इसलिये उल्लेख किया क्योंकि

६२—दूसरे महायुद्ध के बाद सोवियत सघ से भागे हुए शरणार्थियो का एक सगठन मोस्ती (पुल) नामक एक साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित करता है।

६३—अलैग्जेंडर फादेयेव (१६०१–१६५६), सोवियत उपन्यासकार समाजवादी यथार्थवाद का एक प्रमुख प्रतिपादक (अपने उपन्यास दि यग गार्ड, १६४५, मे उसने समाज-वादी यथार्थवादी चित्रण किया है, जिसे उसने पार्टी की आलोचना के अनुरूप सशोधन कर १६५१ मे फिर प्रकाशित किया) और एक समय सोवियत लेखक सघ का महासचिव उसने सन् १६५६ मे पार्टी के २० वें अधिवेशन मे ख्रुश्चेव द्वारा स्तालिन की भर्त्सना के बाद आत्महत्या कर ली।

६४—एक लम्बी कविता, जो अब तक सोवियत सघ मे प्रकाशित नही हुई है। लेकिन जो प्रवासी रूसियो द्वारा प्रकाशित सस्करणो मे उपलब्ध है (राबर्ट लोवेल ने इसका अग्रेजी मे अनुवाद किया है। देखिए अटलाटिक मथली, अक्तूबर, १६६४), जिसमे अखमातोवा ने स्वय अपनी व्यक्तिगत और रूस के लोगो की भयकर कठिनाइयो का वर्णन किया है।

६५—अलैग्जेंडर सोल्झनित्सीन का उपन्यास, जिसके १६६२ मे नोवी मीर पत्रिका मे प्रकाशन से बहुत हलचल मची थी। स्तालिन के शासनकाल मे बलात् श्रम शिविरो के जीवन का विवरण देने वाली यह पहली सोवियत रचना थी।

मेरे पास उसकी लिखी हुई बहुत कम सामग्री थी। लेकिन मैं यह कोशिश करता हूं कि इस्तगासे की तरह एक ही उद्धरण को तीन बार न दोहराऊं।

न्यायाधीश : क्या तुम सचमुच यह सोचते हो कि समाजवादी यथार्थवाद पर लिखा गया तुम्हारा निबन्ध, वस्तुतः दण्ड संहिता की धारा ७० के अन्तर्गत नही आता? (उद्धरण देता है) : "इसलिए कि और अधिक जेलें न हो, हमने नई जेलें बनाईं। इसलिए कि रक्त की एक बूंद भी न बहे, हमने हत्याएं कीं और हत्यायें की और हत्याएं कीं। इस बात का साहित्य के अध्ययन से क्या सम्बन्ध है?

सिन्यावस्की : मैं इस अंश के बारे में पहले ही उत्तर दे चुका हूं।

न्यायाधीश : अच्छा। (उद्धरण देता है, इसी अश को और आगे पढ़ता है।) और इसे तुम एक साहित्यिक टिप्पणी कहोगे? तुमने जो कुछ लिखा है, अदालत केवल उसे ही मान सकती है। सबसे पहले इन्ही दो रचनाओ को विदेश क्यों भेजा गया? क्या वह केवल सयोग की ही बात थी? सबसे पहले जो सामग्री विदेश भेजी गई वह कुछ मामूली सी कहानियां या ऐसी ही चीजे नही थीं, बल्कि वे थी "दि ट्रायल बिगिन्स" और "आन सोशलिस्ट रियलिज्म"। क्या यह सही नही है? इस बात का क्या कारण था? इस बात का फील्ड के किसी भी कथन से कोई सम्बन्ध नही है।

सिन्यावस्की : स्वयं मैंने फील्ड की चर्चा शुरू नही की।

न्यायाधीश : हूं, तुमने तो सोवियत काव्य पर एक पूरी गोष्ठी का ही सचालन कर डाला है, और तुमने सभवत. मायाकोवस्की और लेनिन पर उसके महाकाव्य की भी चर्चा की है। तुमने विद्यार्थियो के समक्ष 'मायाकोवस्की की नजर मे लेनिन' विषय पर भाषण भी किया है। और फिर तुम उन्हे (लेनिन को, ल्यूबीमोव मे, चाद की ओर मुंह उठा कर भौंकवाते हो। केवल इसी बात के लिये ही हमारे देश के शत्रु तुम्हारी इच्छा का कोई भी खिताब तुम्हे दे सकते हैं। और यही वे दो चीजें हैं, जिन्हे पश्चिम के देशो मे बडे-बडे संस्करणो मे बेचा जा रहा है। और तुम हो, एक सोवियत विद्वान, भाषा, विज्ञान के डाक्टर, एक वरिष्ठ अनुसंधानकर्ता, और एक वरिष्ठ अनुसधान फैलो [विश्व साहित्य की गोर्की संस्था के] क्या तुम यह समझते हो कि तुमने क्या किया है? डेनियल ने तो— वह युद्ध मे लडा है, वह घायल हुआ, लेकिन युद्ध के दौरान, तुम्हारा बड़ा आनन्द रहा.........

सिन्यावस्की : यह मेरा दोष नही था।

न्यायाधीश : मैं नही कहता कि तुम्हारा दोष था। बस तुम भाग्यशाली रहे। लेकिन लोग लड़े, भयकर अग्नि परीक्षा मे से गुजरे। वे इस्पात बने, और तुम हो कि उन लोगों के बारे मे ऐसी बातें लिखते हो। तुम्हें यह बात समझनी चाहिये कि

अदालत के सामने जो मुद्दा है, वह यह है कि तुमने विदेशो मे अपनी रचनाए भेज कर, राज्य और अपने देश के लोगो को क्षति पहुंचाई है।

सिन्यावस्की . मैं केवल वही कह सकता हूं जो मैं इससे पहले भी रूस के लोगो के प्रति अपने दृष्टिकोण के बारे मे कह चुका हूं।

न्यायाधीश . हमे तुम्हारे कार्यों और उनके प्रति तुम्हारे दृष्टिकोणो का मूल्याकन करना है। रूस के लोगो को शराबी बताने सम्बन्धी इस अश को लो। तुमने यह १९६४ मे लिखा, इसका प्रकाशन १९६५ मे हुआ। क्या तुम समझते थे कि तुम क्या कर रहे हो ? कि यह रूस के लोगो की बदनामी है ?

सिन्यावस्की . यह बदनामी नही है।

सरकारी वकील · तुम्हे इस बात का कब पता चला कि विदेशो मे तुम्हारी रचनाओ का उपयोग सोवियत विरोधी उद्देश्यो के लिये किया जा रहा है ?

सिन्यावस्की · मैंने फिलीपोव का लेख १९६५ मे देखा।

सरकारी वकील · फारेन लिटरेचर सख्या १, १९६२ अक की पत्रिका मे रयरीकोव का एक लेख है, जिसमे उसने एब्राम टेरट्ज की सोवियत विरोधी रचनाओ के बारे मे लिखा है[६६]। (उद्धरण देता है)। लेकिन इस लेख के बाद भी तुम्हारा "ल्यूबीमोव" प्रकाशित हुआ। दूसरे शब्दो मे तुम यह जानते थे कि लोग तुम्हारी रचना के बारे मे क्या सोचते हैं। लेकिन तुम पहले की तरह ही उन्हे प्रकाशित करते रहे, क्यो नही क्या ?

सिन्यावस्की : मैंने रयरिकोव का लेख, केवल आरम्भिक जाच के दौरान ही पढ़ा।

सरकारी वकील : क्या तुम अदालत को यह कहना चाहते हो कि तुमने रयरिकोव का लेख नही पढा था।

सिन्यावस्की बात यह है कि मै हर पत्रिका का हर अक नही पढता।

(अदालत के कमरे मे हसी)

सरकारी वकील . तुम एक साथ दो बातें कैसे कह सकते हो ? समाजवादी यथार्थवाद के दृष्टिकोण से लिखे लेखो का सोवियत समाचारपत्रो मे प्रकाशन, अन्य सोवियत लेखको—विशेष रूप से सोफरोनोव और बेरगोल्त्स[६७]—को उनके कार्य के बारे मे सलाह देना और इसके साथ ही पश्चिम के देशो मे बिल्कुल भिन्न प्रकार की

६६—बोरिस र्यूरिकोव परम्परावादी विचारो वाला एक सोवियत समालोचक। उसने अपने लेख मे यह जोर देकर कहा था कि एब्राम टेरट्ज वास्तव मे एक प्रवासी रूसी है, और सोवियत सघ मे रहने वाला कोई लेखक नही है।

६७—अनातोली सोफरोनोव (१९११ मे जन्म) : प्रतिक्रियावादी विचारो का साधारण सोवियत कवि और नाटककार। सिन्यावस्की ने नोवी मीर के अगस्त १९५९ के अक मे उसकी रचनाओ की कटु आलोचना की।

रचनाए एब्राम टेरट्ज़ के नाम से प्रकाशित करना ?

सिन्यावस्की : मैं अपनी रचनाओ को सोवियत विरोधी नही समझता । जहा तक सोफरोनोव का सम्बन्ध है, मैंने उसके बारे मे देश-विदेश दोनो जगह लिखा है । उसके प्रति मेरे दृष्टिकोण को "ल्यूवीमोव" मे पूर्ण अभिव्यक्ति मिली है ।[६८]

सरकारी वकील : मैं तुम्हे तुम्हारे लेखो का स्मरण कराता हूं (सोवियत पत्र-पत्रिकाओं मे छपे लेखो का) सन् १९६२ के नोवी मीर, सख्या २, मे तुमने हमारे एक कवि की हमारे जीवन को पर्याप्त पूर्णत. और स्पष्टता से चित्रित न करने के लिए भर्त्सना की है । तुम्हारा अपना चित्रण पूर्ण और स्पष्ट है, है क्या ?

सिन्यावस्की अपने (सोवियत पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित) लेखो मे मैं केवल अपने ही दृष्टिकोण और विचार नही दे रहा था, बल्कि उन सम्पादको के विचार भी दे रहा था, जिन्होने मुझसे ये लेख लिखने को कहा था ।

(अदालत के कमरे मे हसी)

केवल पिछले दो या तीन वर्षों मे ही मैं अपने विचारो को अधिक पूर्ण अभिव्यक्ति दे सका हूं । लेकिन एक समालोचक के रूप मे मुझे अपनी रचनाओ के लिये कभी प्रशसा नही मिली—मुझ पर प्रहार किये गये और इस सम्बन्ध मे बहुत प्रयास हुए कि मैं जो चाहता था, उसे प्रकाशित न होने दिया जाये ।

सरकारी वकील : नोवी मीर मे तुमने सोफरोनोव के बारे मे लिखा और उसकी आलोचना की । हम इस तथ्य के और तुम्हारी सोवियत विरोधी रचनाओ के बीच कैसे मेल बैठा सकते है ?

सिन्यावस्की : मैं विदेशो मे प्रकाशित अपनी रचनाओं को सोवियत विरोधी नही मानता और मैं यह नहीं समझता कि मैंने यहा जो रचनाए प्रकाशित की हैं वे उनसे बुनियादी तौर पर भिन्न हैं।

सरकारी वकील . नोवी मीर, सख्या १२, १९६४, तुमने सोवियत लेखक शेवत्सोव के बारे मे लिखा और उस पर बदनामी करने का आरोप लगाया ।[६९]

(अदालत के कमरे मे हसी)

ओलगा वेरगोल्त्स (१९१०) : उदारतावादी विचारो वाली सोवियत कवयित्री । नोवी मीर के मई १९६० के अक मे प्रकाशित सिन्यावस्की के लेख मे उसकी अच्छी आलोचना हुई है । संभवत. सरकारी वकील के ध्यान मे यह बात नही आई । "प्रभावशाली खुशामदियों" के विरुद्ध सिन्यावस्की के अभियान के लिये देखिए प्रस्तावना, पृष्ठ २१ ।

६८—उसके और कोचेतोव के बारे मे "दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट" मे व्यंग्यपूर्ण उल्लेख हैं ।

६९—देखिए प्रस्तावना, पृष्ठ २१ ।

यह बात तुम्हारी कहानी दि ट्रायल बिगिन्स के बदनामी फैलाने वाले सोवियत विरोधी विचार से कैसे मेल खाती है ? भिन्न स्थानो पर प्रकाशित इन दो चीजो मे क्या सम्बन्ध है ?

सिन्यावस्की : मेरी कहानी का विचार बदनामी फैलाने वाला नही है और इन दोनो के बीच कोई सम्बन्ध नही है ।

न्यायाधीश : दि ट्रायल बिगिन्स मे तुम लिखते हो कि तुम १९५६ मे कोलिमा मे पहुच जाते हो । क्या यह बदनामी की बात नही है ?

सिन्यावस्की मै पहले ही यह स्पष्ट कर चुका हू कि यह बात नही है। "दि ट्रायल बिगिन्स" स्तालिन के व्यक्ति पूजा के दौर की पृष्ठभूमि पर आधारित है ।

न्यायाधीश · और कहानी का उपसहार— क्या वह भी बदनामी फैलाने वाला नही है ?

सिन्यावस्की : नही ।

सरकारी वकील तुमने एब्राम टेरट्ज के रूप मे लेनिन के नाम पर कीचड उछाला, लेकिन नोवी मीर, सख्या ५, १९६० मे ओलगा बेरगोल्त्स सम्बन्धी अपने एक लेख मे तुमने लेनिन के बारे मे भिन्न रूप मे लिखा । हम इसे क्या समझें ?

सिन्यावस्की : ल्यूबीमोव के वे वाक्य लेनिन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को अभिव्यक्त नही करते । मैं आप को यह बता सकता हू कि लेनिन के प्रति मेरा क्या दृष्टिकोण है ।

न्यायाधीश आप अपनी रचनाओ मे हमे यह पहले ही बता चुके है ।

सरकारी वकील . सिन्यावस्की, हम यह सुनना चाहते हैं कि तुम अपने इस आचरण की किस प्रकार व्याख्या करोगे । तुम स्वय, जो एक वरिष्ठ अनुसधानकर्ता हो, जिसने इस देश मे यह पद प्राप्त किया, जिस ने इस देश मे शिक्षा पाई है— इस तथ्य को किस दृष्टि से देखते हो कि तुमने अपनी सोवियत विरोधी रचनाए विदेष भेजी ?

सिन्यावस्की : मैं अपनी रचनाओ के इस विवरण से सहमत नही हू । अत मैं इस प्रश्न का उत्तर नही दे सकता ।

वासिलयेव "टेकिंग ए रीडिंग" का मसौदा किस के लिये तैयार किया गया था ।

सिन्यावस्की : यह एक लेख का मसौदा है जो पूरा नही हुआ । यह किसी विशेष व्यक्ति के लिये नही लिखा गया था, यह केवल मेरे अपने लिये था ।

वासिलयेव · क्या तुम अक्सर लेनिन पुस्तकालय जाया करते थे ।

सिन्यावस्की : हा ।

वासिलयेव तुम्हारे पास कितनी फाइलें थी ? एक या दो ? एक फाइल सोवियत पत्र-पत्रिकाओ के लिये लिखी गई रचनाओ के लिये और दूसरी विदेशो को भेजी जाने वाली पाडुलिपियो के लिये ?

सिन्यावस्की यह परोक्ष रूप से घृणा भरा प्रश्न है और मै इसका उत्तर नही दूंगा ।

न्यायाधीश : इसमे कोई घृणा नही है ? प्रश्न है तुम सोवियत पत्र-पत्रिकाओं के लिये लिखी ग पाण्डुलिपियो को कहा रखते थे और विदेशो मे प्रकाशन के लिये लिखी गई रचनाओ को कहा रखते थे ?

सिन्यावस्की . मेरे पास इनमे से किसी भी प्रकार की पाण्डुलिपि के लिये विशेष फाइलें नही थी ।

न्यायाधीश : तुमने पाण्डुलिपिया दोकुकिना के घर पर रखी। दूसरे शब्दो मे तुमने अपनी पाण्डुलिपिया दो स्थानो पर रखी ?

सिन्यावस्की : जहा तक दोकुकिना का सम्बन्ध है मैं इसका उत्तर पहले ही दे चुका हूं।

वासिलयेव अर्ज़हक नाम तुम्हे कहा से प्राप्त हुआ ?[३०]

सिन्यावस्की मुझे नही मालूम ।

वासिलयेव आरम्भिक जाच के दौरान तुमने कहा था कि यह नाम एक गीत से लिया गया है।

सिन्यावस्की . मेरा बयान पढ कर सुनाइए ।

न्यायाधीश . (पढता है) "यदि मैं गलती पर नही हू तो यह एक गीत से लिया गया है।"

सिन्यावस्की मुझे नही मालूम ।

वासिलयेव : तुम्हे जामोयस्का से क्या चीजे मिली ?

सिन्यावस्की : मुझे फ्रासीसी मित्रो से उपहार मिले और मैंने बदले मे उपहार दिये। मैं इस बात मे कोई गलती नही समझता ।

वासिलयेव जाच के दौरान तुमने कहा था कि तुम्हे दो जैकेट, दो स्वेटर, एक नाइलोन का कमीज और कोई और चीज मिली।

सिन्यावस्की : यह सही है। कुछ आगे भी पढिए—यह भी कहा गया है कि मैंने उन्हे क्या दिया ।

वासिलयेव : मुझे इस बात मे दिलचस्पी है कि तुम्हे क्या मिला ?

(अदालत के कमरे मे समर्थन सूचक फुसफुसाहट)

सिन्यावस्की तो आप यह कहने का प्रयास कर रहे हैं कि मैंने इन चिथडो के लिये अपने देश को बेच दिया ?

न्यायाधीश आरम्भिक जाच का विवरण पढ कर सुनाता है ।

सिन्यावस्की मैंने जामोयस्का और अन्य मित्रो को जो उपहार दिये है, कृपया उससे सम्बन्धित अश भी पढिए ।

वासिलयेव : तुमने कहा है कि तुमने अपनी दो पुस्तकें प्रकाशित रूप मे देखी और जामोयस्का ने तुमसे कहा कि तुम करोडपति हो। क्या तुम बता सकते हो कि

३०—यह मुकदमे के विवरण मे गलती से लिखा गया है, क्योंकि अर्ज़हक डेनियल का काल्पनिक नाम था ।

तुमने दो पुस्तको से इतना अधिक धन कैसे कमा लिया।

सिन्यावस्की . मुझे केवल इतना मालूम था कि मैं छप रहा हू।

वासिलयेव (डेनियल से) क्या कभी तुम्हारे मन मे यह वात आई कि अपने प्रकाशको को लिख कर, उससे अपनी रचनाए छापना वन्द करने के लिये कहू ?

डेनियल : मैं इस प्रश्न का उत्तर पहले ही दे चुका हू। मैं अपना सही नाम वता कर ही यह कर सकता था। मै इस वात का भी पहले ही स्पष्टीकरण दे चुका हूं।

वासिलयेव . लेकिन तुम्हारे मन मे यह वात तो आई थी ?

डेनियल हा, मैंने यह वात सोची थी, लेकिन मैंने उन्हे लिखा नही।

वासिलयेव : तुमने उन्हे पत्र क्यो नही लिखा ?

डेनियल · मुझे नही मालूम था कि मै यह कैसे कर सकता हू और मैंने इसलिये भी पत्र नही लिखे, क्योकि मुझे इस वात की आशका थी कि यदि मैं गिरफ्तार होता हू, तो इनका उपयोग मेरे विरुद्ध किया जा सकता है।

न्यायाधीश : निश्चित रूप से तथ्य यह है कि हर वस्तु पहले से वेहतर होती जा रही थी। यह शृ खला प्रतिक्रिया के समान थी। पहले एक छोटी किताव निकलती है और इसके वाद एक राज सस्करण। तो तुम पत्र क्यो लिखते ?

डेनियल मैं पहले ही कह चुका हू कि मेरा पत्र भी मेरे विदेशी प्रकाशको को नही रोक सकता था। लेकिन जहा तक इस वात का सवाल है, मेरी रचनाओ को विदेश मे प्रकाशित होना ही मेरे विरुद्ध एक तथ्य है। मैं यह कहना चाहता हू कि मैंने "डिसोनेंट वॉयसेज" शीर्षक[७१] सग्रह देखा है, जो लन्दन मे प्रकाशित हुआ। इस सग्रह मे मेरी रचनाए गिन, शकलोवस्की, चुकोवस्की और अन्य लेखको के साथ प्रकाशित हुई है। मुझे विदेशो मे इनके प्रकाशन के लिये उससे अधिक उसी प्रकार दोषी नही ठहराया जा सकता, जिस प्रकार और जितना जोशचेनको, वावेल और अन्य लेखको को ठहराया जा सकता है।

न्यायाधीश . इस वात मे अन्तर है। अन्य लेखको की रचनाए पहले देश मे भी प्रकाशित हो चुकी थी।

डेनियल . अन्तर केवल इतना है कि मेरी रचनाए एक छद्म नाम से प्रकाशित हुई।

न्यायाधीश · नहीं। अन्य लेखको की रचनाए यहा प्रकाशित हुई थी[७२] लेकिन अर्जेहक की

७१—इस सग्रह के लिए पृष्ठ १६५ पर दी गई टिप्पणी देखिए, जो सवसे पहले अमरीका मे प्रकाशित हुआ और केवल दो वर्ष वाद ही इगलैंड मे।

७२—यह वात वोरिस पिलन्याक के वारे मे सही नहीं है, जिनने अपने लघु उपन्यास माहोगनी (डिसोनैन्ट वॉयसेज़ मे कुछ अश प्रकाशित) की पाण्डुलिपि वर्लिन भेजी, जहा इसका प्रकाशन दूसरी भाषा मे, एक रूसी प्रवासी कम्पनी ने १६२६ मे किया। यह उपन्यास अभी भी सोवियत सघ मे प्रकाशित नहीं हुआ है। देखिए प्रस्तावना, पृष्ठ ४१।

नही। अन्य ईमानदार लेखक है, जिन्होंने कभी भी कुछ भी विदेश नही भेजा। यही अन्तर है।

डेनियल : इस बात से मेरे इस तर्क की ही पुष्टि होती है कि किसी बुर्जुआ प्रकाशक द्वारा प्रकाशित हो जाने से ही कोई रचना सोवियत विरोधी नही हो जाती। और यह बात उसके सोवियत विरोधी होने का प्रमाण नही होती। प्रकाशक अपनी इच्छा के अनुसार रचना की व्याख्या करते है।

वासिलयेव : क्या तुम्हे इस बात का ज्ञान है कि सोवियत लेखक कुज़नित्सोव ने अपने फ्रासीसी प्रकाशको के विरुद्ध मुकदमा चलाया था[73] ?

डेनियल . नही, मुझे इसके बारे मे कोई जानकारी नही है।

१५ मिनट के लिये कारवाई स्थगित।

OOO

कोगन (सिन्यावस्की का वकील) . सिन्यावस्की, इस्तगासा तुम्हारी तीन रचनाओ को, पर अन्य रचनाओ को नही, सोवियत विरोधी समझता है। तुम्हारा अपनी रचनाओ के प्रति क्या सापेक्ष दृष्टिकोण है ? क्या तुमने अपनी किसी विशेष रचना के बारे मे, अपनी कोई विशेष राय कायम की है ? और जब तुमने अपनी रचनाएं विदेश भेजी, तब तुम्हारे मन मे क्या बात थी ?

सिन्यावस्की . अपनी सब रचानए विदेश भेजते समय मेरे मन मे केवल एक बात थी कि उनका प्रकाशन हो। मेरे कोई राजनीतिक उद्देश्य नही थे। मैं केवल अपने साहित्यिक हितो और एक सृजनात्मक लेखक की अपनी आवश्यकताओ से ही प्रेरित हुआ था। मैं राजनीतिक दृष्टिकोण से अपनी रचनाओ में कोई भी मौलिक अन्तर नही पाता।

७३---अनातोली कुज़नित्सोव (देखिए पृष्ठ १४६) ने सन् १९६० मे लियोन्स के एक प्रकाशक के विरुद्ध अपने उपन्यास कटीन्यूएशन आफ लीजेंड (१९५७) के कथित विकृत अनुवाद के लिये मुकदमा चलाया और उनको इस मुकदमे मे जीत हुई। मुकदमे मे, अनुवाद मे मूल को तोडने-मरोडने के अलावा "सोवियत विरोधी" टिप्पणिया जोडने का भी आरोप लगाया गया था। फ्रासीसी कानून के अन्तर्गत, उस लेखक को भी यह सरक्षण प्राप्त होता है, जिसका देश, सोवियत सघ की तरह बर्न कापीराइट सम्मेलन पर हस्ताक्षर करने वाले देशो मे न भी हो। अप्रैल, १९६६ मे लियोन्स की एक अपील अदालत ने निचली अदालत के निर्णय की पुष्टि की और हरजाने सहित कुज़नित्सोव के पक्ष मे फैसला दिया तथा अनुवाद की सब प्रतियां जब्त करने का भी हुक्म दिया।

कोगन : तुम्हारा निबन्ध "आन सोशलिस्ट रियलिजम" विदेश मे रूसी भाषा मे प्रकाशित नही हुआ, यद्यपि राजनीतिक दृष्टिकोण से यह तुम्हारी सर्वाधिक विवादास्पद रचना है। फिर भी किसी भी प्रवासी रूसी प्रकाशक ने इसे प्रकाशन के लिये नही लिया। तुम इस बात के बारे मे क्या कहते हो ?

सिन्यावस्की मुझे नही मालूम कि एक रचना एक जगह प्रकाशित क्यो हुई और दूसरी रचना दूसरी जगह। मुझे इस सम्बन्ध मे कुछ भी नही मालूम। ज़ामोयस्का ने मुझे बताया था कि एक प्रवासी रूसी कम्पनी ने इसे प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया था, लेकिन उसने यह प्रस्ताव स्वीकार नही किया। मैंने आरम्भ मे ज़ामोयस्का से यह कह दिया था कि वह मेरी रचनाओ को प्रतिक्रियावादी प्रकाशको को न दे—मुझे यह बात पसन्द न आती।

कोगन अभियोगपत्र मे "ल्यूबीमोव" के बारे मे जो यह राय प्रकट की गई है कि इसमे तुमने अपने सोवियत विरोधी विचारो को छिपाने के लिये रहस्यवाद का सहारा लिया है, उसके बारे मे तुम्हारी क्या राय है ?

सिन्यावस्की · मैं इस बात से सहमत नही हूं। मेरी यह रचना अतिशय कल्पनाशीलता से भरी है। ऐसा लगता है कि "रहस्यवाद" से उनका अभिप्राय मेरी विचित्र और अतिशय काल्पनिक बातो मे दिलचस्पी से है।

कोगन : तुमने "आन सोशलिस्ट रियलिजम" को १९५६ मे विदेश भेजा। सन् १९५८ मे तुमने एक और पृष्ठ भेजा। स्पष्ट है कि तुम इस पृष्ठ को कुछ महत्व देते थे। यह तुमने पृष्ठ क्यो भेजा ?

सिन्यावस्की मैं अपनी साहित्यिक मान्यताओ को व्यक्त करना चाहता था।

कोगन : क्या यह केवल एक और पृष्ठ भर था अथवा यह निबन्ध का अन्तिम भाग था ?

सिन्यावस्की हा, यह अन्तिम भाग था।

कोगन . इस पृष्ठ मे तुमने किस तथ्य पर विचार किया ?

सिन्यावस्की . एक लेखक के रूप मे "अतिशय विलक्षण यथार्थवाद" और इसकी अतिशयोक्ति पूर्ण विचित्रता की ओर आकर्षित हूं। मैं इस सम्बन्ध मे गोगोल, चगाल, होफमन और मायाकोवस्की का उल्लेख करता हूं, जिनकी कुछ रचनाओ को मैं "अतिशय विलक्षण यथार्थवाद" के अन्तर्गत रखता हू।

न्यायाधीश उस पृष्ठ को पढ कर सुनाता है।

सिन्यावस्की हा यह मेरा कार्यक्रम है।

कोगन : क्या तुम्हारी राय मे इसे 'रहस्यवाद" कहना सही है ?

सिन्यावस्की नही, यह नही है। यह यथार्थ की अनुभूति का मेरा अपना विशेष तरीका है। जहा तक "ल्यूबीमोव" का सम्वन्ध है, कानूनी अर्थों मे इसका एकदम सही-

सही तर्कपूर्ण अर्थ दे पाना कठिन है, क्योकि एक साहित्यिक विम्व, सदा जटिल होता है। स्वय मेरे लिये, इस रचना के एक लेखक के रूप मे, इसके अर्थ सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर दे पाना कठिन है। मेरे लिये यह बता पाना कठिन है कि इसका यह अर्थ होता है या वह अर्थ होता है या कुछ अन्य। मैं नही समझता कि किसी साहित्यिक रचना का विश्लेषण, कानूनी शब्दावली मे किया जा सकता है, क्योकि किसी भी साहित्यिक रचना की परिभाषा, उस सूक्ष्मता से नही दी जा सकती, जो कानून मे आवश्यक होती है। इसके बावजूद, इसका लेखक होने के नाते, अपनी रचनाओ के अर्थ को समझना दूसरो की तुलना मे आसान है। मेरी रचनाए जटिल और उलझी हुई हैं और मेरे लिये भी इनके अर्थ को सूक्ष्म रूप से बता पाना कठिन होगा। मैं अपने अन्तिम बयान मे इस प्रश्न के साहित्यिक पक्ष की चर्चा करूगा और इसके कानूनी पक्ष को अपने वकील पर छोड दूगा। अदालत की दिलचस्पी, राजनीतिक पहलू मे है, लेकिन मै अपनी रचनाओ का स्पष्टीकरण साहित्यिक दृष्टि से देना चाहता हूं और साहित्य के रूप मे ही इसका औचित्य सिद्ध करना चाहता हूं।

सोकोलोव क्या तुमने डेनियल से स्वीकरण की सभावना के वारे मे वात की थी ?

सिन्यावस्की यह कहना सही नही है। मै अपनी रचनाओ को सोवियत विरोधी नही मानता अत. किसी अपराध को स्वीकार करने का कोई प्रश्न ही नही उठता। लेकिन यह वात मेरी समझ मे आई कि दो अस्तित्वो से वेहतर एक अस्तित्व का ही निर्वाह करना है—यद्यपि मैं इन दो अस्तित्वो को असगत नही समझता।

सोकोलोव : क्या तुमने इसकी चर्चा डेनियल से की ?

सिन्यावस्की . हमने अपनी गिरफ्तारी से पहले इस वारे मे वातचीत की। लेकिन यह वात केवल प्रसगवश हुई और मैंने इसे कोई महत्व नही दिया।

सोकोलोव : क्या तुमने और डेनियल ने (टेरट्ज और अर्जहक की रचनाओ) के लेखक होने को स्वीकार न करने के वारे मे वातचीत नही की ?

सिन्यावस्की : नही, लेकिन हमने यह कहा था कि हमे अपने नाम नही वताने चाहिये।

गवाहों से जिरह

संध्याकालीन सत्र, ११ फरवरी

गवाह रेमेज़ोव से जिरह

(आन्द्रेय रेमेजोव, भाषा विज्ञान के डाक्टर, विदेश साहित्य पुस्तकालय मे अनुसधान सहायक[1]।)

सरकारी वकील · तुमने विदेशो मे अपनी रचनाए प्रकाशित की हैं ? तुमने अपनी कौन सी रचनाए विदेशो मे प्रकाशित की हैं और किस नाम से ?

(रेमेज़ोव विदेशो मे छद्म नाम, आइवानोव से प्रकाशित रचनाओ के नाम बताता है · इज़ देयर लाइफ आन मार्स ? और अन्य ।)

सरकारी वकील : तुमने अपनी रचनाएं विदेश कैसे भेजी ?

रेमेजोव : सिन्यावस्की की मार्फत ।

सरकारी वकील : क्या सिन्यावस्की यह जानता था कि तुम्हारी रचनाए कैसी हैं ?

रेमेजोव : मैंने उसे अपनी एक रचना—इज देयर लाइफ आन मार्स ?—पढकर सुनाई ।

सरकारी वकील तुमने विदेशो मे अपनी रचनाए प्रकाशित करने का निर्णय क्यो किया ?

रेमेजोव . मैं सन् १९५३[2] से पहले ही इस बात का निर्णय कर चुका था, लेकिन उस समय मुझे इस बात की कोई सभावना नही दिखाई पडी। मैं यह जानता था कि मैं अपनी रचनाओ को सोवियत पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित नही कर सकूगा क्योकि मैं जिन चीजो के बारे मे लिख रहा था—जिन चीजों को बाद मे सोवियत विरोधी माना गया—उन्हे उस समय सही माना जा रहा था । इस कारण से मैं पत्र-पत्रिकाओ के लिये जो कुछ लिखता वह सोवियत विरोधी कहा जा सकता था । मैं यह समझता था कि हमारे साहित्य पर सफेद-झूठ का प्रभुत्व कायम है, यह स्थिति स्तालिन के शासनकाल मे थी और बाद मे ख्रुश्चेव के अन्तर्गत भी यही हुआ । इस तथ्य ने कि उस समय भी इस बात के विरुद्ध

१—यह टिप्पणी और गवाहो के बारे मे बाद की टिप्पणिया मुकदमे की कारवाई का विवरण लिखने वाले अनाम लेखक की है।

२—अर्थात् स्तालिन की मृत्यु से पहले।

आवाज उठा पाना असंभव था, मुझे अपनी रचनाओ को विदेश मे प्रकाशित करने की एक बार फिर प्रेरणा दी। जब गलतिया और अपराध किये जा रहे हो और किसी व्यक्ति को इनके विरुद्ध खुलकर आवाज़ उठाने की स्वतन्त्रता न हो, वल्कि जब उसे इन वस्तुओ के बारे में बलात् उत्साह दिखाना पडता हो तब व्यक्ति के समक्ष विदेश मे अपने विचार प्रकट करने के अलावा अन्य क्या रास्ता है ?

रेमेज़ोव आगे कहता है कि अपने विद्यार्थी जीवन मे ही उसने अनुभव कर लिया था कि झूठ और बेईमानी का सर्वत्र राज्य है कि सच्चे साहित्य पर ज़बरदस्त प्रहार किया जा रहा है और वस्तुत इसे नष्ट किया जा रहा है। उसने यह देखा कि इस वात को समझने वाला केवल वही नही था, वल्कि दूसरे विद्यार्थी भी उसी का तरह अनुभव करते थे। यद्यपि उनमे से किसी ने भी सामने आकर इस वात को स्पष्ट रूप से कहने का साहस नही किया। उसे और उसके साहित्य आदि विषयों के सहपाटियो को, वचक बनने के लिये बाध्य किया गया। उन्हे दोहरा जीवन जीने के लिये वाध्य किया गया, जिसमे कुछ बातें जोर से कही जाती, लेकिन कुछ अन्य बाते संभवतः कुछ घनिष्ठ मित्रो को छोड कर, अन्य किसी को नही कही जा सकती थी यही कारण था, जिसने उसे विदेशो मे अपनी रचनाए प्रकाशित करने के लिये प्रेरित किया।

सरकारी वकील तुमने इस सम्बन्ध मे सिन्यावस्की से क्यो सम्पर्क कायम किया ?

रेमेज़ोव . मैं यह जानता था कि उसने विदेश मे अपना एक निबन्ध प्रकाशित किया है और क्योकि मैं भी यही करना चाहता था, अतः मैंने उससे सहायता लेने का निर्णय किया।

सरकारी वकील : क्या तुम यह जानते थे कि वह किस प्रकार अपनी रचनाए विदेश भेजता था।

रेमेज़ोव : नही। मैंने यह सोचा था कि उसके कुछ मित्र है। लेकिन मुझे कुछ भी मालूम नही था।

सरकारी वकील : क्या उसने तुम्हे अपनी रचनाओ के बारे मे बताया ?

रेमेज़ोव : मैंने "आइसिकिल" ल्यूबीमोव और निवन्ध आन सोशलिस्ट रियलिज्म पढ़ा।

सरकारी वकील · इनके बारे में तुम्हारी क्या राय है ?

न्यायाधीश · इस बात में अदालत को कोई दिलचस्पी नही है।

सरकारी वकील सिन्यावस्की से यह पूछता है कि रेमेज़ोव की रचनाएं, जिस

प्रकार देश से बाहर भेजी गई, उस सम्बन्ध मे उसके और रेमेजोव के ब्यानो मे अन्तर क्यो है ?

सिन्यावस्की ने कहा कि उसने रेमेजोव की रचनाओ को विदेश नही भेजा और वह अपनी बात को ही ठीक समझता है ।

सरकारी वकील, सिन्यावस्की से यह पूछता है कि क्या ऐसा कोई कारण है कि रेमेजोव उसके विरुद्ध ऐसी बात कह रहा है ।

सिन्यावस्की कहता है कि उसे नही मालूम । वह सोचता है कि ऐसा करने के लिये रेमेज़ोव के पास कोई कारण नही था । कम से कम उसकी गिरफ्तारी के समय तक तो कोई कारण नही था ।

सरकारी वकील रेमेजोव से सिन्यावस्की के विचारो के बारे मे पूछताछ करता है ।

रेमेज़ोव . मैं केवल उनके बारे मे अनुमान ही लगा सकता हू। मैं उसके विचार नही जानता । आरम्भिक जाच के दौरान अपने बयान मे मैंने सिन्यावस्की के पिता की गिरफ्तारी की घटना का उल्लेख किया था, जब सिन्यावस्की ने यह कहा था कि वह यह नही समझ पाता कि उन्होने उसके पिता को क्यो गिरफ्तार किया । यदि वे स्वय उसे गिरफ्तार करते, तो यह बात कही अधिक समझी जा सकती थी । मैंने इस घटना का उल्लेख अपने बयान मे केवल इसलिये किया था, क्योकि यह घटना स्वय मेरे अपने विचारो के विकास पर प्रकाश डालती थी । मैं स्वयं यही सोचता था और मैं केवल यही मान सकता था कि सिन्यावस्की मेरे विचारो से सहमत है ।

सरकारी वकील रेमेज़ोव का आरम्भिक जाच के समय दिया गया बयान पढता है और पूछता है कि क्या रेमेज़ोव अभी भी इस बयान की पुष्टि करता है ।

रेमेज़ोव : मैं पहले ही स्पष्ट कर चुका हू कि साहित्य आदि विषयो के सकायाओ मे शिक्षा की सारी व्यवस्था ऐसी थी कि हमे विश्वविद्यालय से निकाले न जाने के लिये झूठी बातो को कठस्थ करना पडता था । इसके परिणामस्वरूप हमने—और इस समय मैं केवल अपने बारे मे ही कह रहा हूं—अनुकरण का त्याग करना शुरू किया अथवा हमने अपने अन्त करण के साथ सौदेबाजी की ।

सरकारी वकील और क्या तुमने ऐसी बातें फिर १९५६ के बाद शुरू की ?

रेमेज़ोव : मुझे स्मरण नही है । सभवत हमने की । हमारे पिताओ की पीढी, प्रत्येक वस्तु के लिये कोई न कोई बहाना बनाने का प्रयास करती थी, लेकिन हम आलोचना करने लगे थे ।

कोगन : तुम अदालत को यह क्यो नही बताते कि तुम्हारी रचनाओ को, तुम्हारे मित्र और प्रकाशक बुसेनो ने प्रकाशित किया ? तुमने किस प्रकार उससे सम्पर्क कायम किया ?

रेमेज़ोव : मैने उमसे उस समय सम्पर्क कायम किया, जब मैं १९५८ में फ्रास मे । हम इस बात पर सहमत हुए कि यदि मैं किसी प्रकार अपनी कोई रचना, अपने देश से बाहर भेज सकू, तो वह उसे प्रकाशित करेगा ।

कोगन : उसके पास पाण्डुलिपिया कब पहुची ?

रेमेज़ोव : पहली—इज देयर लाइफ ग्रान मार्स ?—१९५८ ५९ मे लिखी गई । अन्य दो १९६३ मे ।

कोगन : क्या यह सच है ?

रेमेज़ोव : हा ।

कोगन : बुसेनो ने तुम्हारे प्रस्ताव पर क्या कहा ?

रेमेज़ोव : वह सहमत हो गया ।

कोगन : किन परिस्थितियो मे और कब तुम्हारा उससे परिचय हुआ और तुमने उससे यह करार किया ?

रेमेज़ोव : १९६० और १९६१ मे[3] ।

कोगन : लेकिन तुम कहते हो कि तुमने उसे १९ .९ मे अपनी पाण्डुलिपिया भेजी ।

रेमेज़ोव : पहली पाण्डुलिपि मैंने बस सिन्यावस्की को दे दी थी ।

कोगन : तुमने, आरम्भिक जाच के दौरान कहा था कि तुमने अपनी चारो पाण्डुलिपिया बुसेनो को भेजी और तुमने अभी फिर अदालत मे भी यही दोहराया । क्या तुम स्वयं ज़ामोयस्का को जानते थे ?

रेमेज़ोव : मैंने उसे सिन्यावस्की के घर पर देखा था ।

कोगन : तुम सिन्यावस्की के बारे में झूठ तो नही कह रहे हो ?

रेमेज़ोव : नही ।

कोगन : राज्य सुरक्षा समिति ने तुम्हे किस सम्बन्ध मे और कब बुलाया ?

रेमेज़ोव : मुझे सिन्यावस्की के मामले मे एक गवाह के रूप मे ६ दिसम्बर १९६५ को बुलाया गया ।

३—यह बात रेमेज़ोव के एक पहले के उत्तर के विपरीत है, कि उसकी मुलाकात बुसेनो से १९५८ मे हुई । सभवत उसका यह अभिप्राय है कि उन्होने १९६० या १९६१ मे करार किया । कोगन यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहा है, (यह दिखाने के लिये कि सिन्यावस्की रेमेज़ोव की रचनाए पहुचाने मे मध्यस्थ होने का दोषी नहीं था) कि रेमेज़ोव का एक विदेशी प्रकाशक से अपना सीधा सम्बन्ध था ।

कोगन : क्या तुम यह जानते थे कि सिन्यावस्की ने अपने ब्यान मे तुम्हारा उल्लेख किया है ?

रेमेजोव : नही।

कोगन : तुमने कब यह बयान दिया कि तुम आइवानोव हो ?

रेमेजोव : ६ दिसम्बर को।

कोगन : क्या तुम उस समय तक सिन्यावस्की का ब्यान देख चुके थे ?

रेमेजोव : मुझे चार पक्तिया दिखाई गई थी, जिनमे कहा गया था कि मुझे यह जानकारी है कि सिन्यावस्की क्या कर रहा था।

कोगन : राज्य सुरक्षा समिति द्वारा बुलाये जाने के बाद सिन्यावस्की के प्रति तुम्हारे मन मे क्या भाव उठे ? तुमने उसके इस आचरण के बारे मे क्या सोचा ? क्या उसके बयान से तुम्हारे मन मे यह बात आई कि तुम दोष उसी के मत्थे मढ दो।

रेमेजोव . नही।

न्यायाधीश तुमने सिन्यावस्की की मार्फत अपनी पाण्डुलिपिया विदेश भेजी।

रेमेजोव : हां।

न्यायाधीश क्या यह सच है ?

रेमेजोव हा।

कोगन . सिन्यावस्की के विचारो के बारे मे तुम्हारे पास कोई वास्तविक तथ्य नही है।

रेमेजोव नही।

न्यायाधीश तुम उन रचनाओ से भी परिचित थे, जो सिन्यावस्की ने यहा हमारी पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित की और उनसे भी, जो उसने विदेशो मे प्रकाशित की ?

रेमेजोव हा।

न्यायाधीश वह बयान पढ कर सुनाता है जो रेमेजोव ने आरम्भिक जाच के दौरान दिया था "मैं दोहरे जीवन का अभ्यस्त हो चुका था। मैं यह अनुभव करता था कि मैं जेल जाने का उम्मीदवार हू। यह बात केवल मेरे बारे मे ही सच नही थी, बल्कि सभवत सिन्यावस्की के बारे मे भी सच थी।"

न्यायाधीश तुमने यह निष्कर्ष सिन्यावस्की के जीवन सम्बन्धी सत्य के अपने ज्ञान के आधार पर निकाला। क्या यह बात नही है ?

मैं सिन्यावस्की के बारे मे केवल अपने आधार पर ही अनुमान लगा सकता हूं। सिन्यावस्की गवाह से कहता है कि वह जामोयस्का से अपने सम्बन्धों के बारे मे और अधिक जानकारी दे। वह उससे कितनी बार मिला और क्या कभी उसने स्वय अपनी इच्छा से भी उससे बातचीत की ?

रेमेजोव . हा। मैंने उसे सिन्यावस्की के घर पर देखा। मैंने उससे बातचीत की। लेकिन हमारी बातचीत सामान्य विषयो पर हुई।

डेनियल, रेमेज़ोव से पूछता है कि क्या उसे तथ्यो के बारे में कुछ भ्रांति नही हो रही है ? यह हो सकता है कि उसने सिन्यावस्की के घर पर पाण्डुलिपिया दी हो, लेकिन सिन्यावस्की की मार्फत नही ।

रेमेजोव : नही । मैंने पाण्डुलिपियां स्वयं सिन्यावस्की को दी ।

अदालत मे एक स्वर : "वह अपने प्राणो के लिये भयभीत है । गवाह के गले मे फासी का फदा पडा हुआ है ।"

न्यायाधीश : अगला गवाह ।

गवाह दोकुकिना से जिरह

(एलिना दोकुकिना)

सरकारी वकील : तुम कितने समय से सिन्यावस्की को जानती हो ?

दोकुकिना · सन् १९४६ से ।

सरकारी वकील : तुम्हारे उससे कैसे सम्वन्ध है ?

दोकुकिना : अच्छे सम्वन्ध हैं ।

सरकारी वकील : क्या सिन्यावस्की ने कभी तुमसे अपनी कुछ पाण्डुलिपिया रखने को कहा ?

दोकुकिना : प्रश्न पूछने का यह सही तरीका नहीं है । एक बार वे मेरे पास कुछ कागज लाये और मुझसे पूछा कि क्या वे इन कागजो को मेरे पास छोडकर जा सकते हैं ?

सरकारी वकील : यह कव की वात है ?

दोकुकिना : मुझे ठीक-ठीक याद नही है, क्योकि मैंने इसे कोई महत्व नही दिया । लगभग पांच साल पहले ।

सरकारी वकील : जव वह अपनी पाण्डुलिपियां तुम्हारे पास रख कर गया, तब उसने क्या अनुरोध किया ?

दोकुकिना : उन्होने कोई अनुरोध नही किया । उन्होने केवल मुझसे यही पूछा कि क्या वे इन्हे छोड़ कर जा सकते हैं ?

न्यायाधीश : क्या तुम जानती हो कि उसने तुमसे यह क्यों पूछा ? क्या तुम्हे यह बात अजीब नही लगी कि यह व्यक्ति जिसका मास्को में, नगर के मध्य मे, अपना फ्लैट हो, अचानक तुमसे अपनी कुछ पाण्डुलिपियां रखने का अनुरोध करे ?

दोकुकिना : नहीं मुझे इसमे कुछ भी अजीव नही लगा । मैंने यही सोचा कि ये कुछ व्यक्तिगत कागज हो सकते हैं, जिन्हे वे किसी को भी नहीं दिखाना चाहते

अथवा यह नही चाहते कि उनके घर के अन्य सदस्य इन्हे देखें।

न्यायाधीश : क्या तुम्हे कभी इस बात की जिज्ञासा नही हुई कि ये कागज किस सम्बन्ध मे हैं ?

दोकुकिना . नहीं। कभी-कभी वे उनमे से कुछ कागज ले जाते थे और नये कागज लाते थे। लेकिन मैंने इसे कभी भी कोई महत्व नहीं दिया।

न्यायाधीश : तुम्हारे मित्र के दाचा (देहाती इलाके मे बना मकान) मे ये कागज कैसे पहुचे ?

दोकुकिना · सिन्यावस्की की गिरफ्तारी के बाद मैं इन्हे दाचा ले गई, जहा मैं रहती थी और मैंने उन्हे जला दिया। मैं समझती हूं कि संभवत······सभवतः मैंने यह कार्य अपनी सुरक्षा की भावना से प्रेरित होकर किया ?

न्यायाधीश : लेकिन तुमने यह किया क्यो ? मान लो उसमे कोई अत्यधिक देशभक्तिपूर्ण बात हो सकती थी, जो सिन्यावस्की के लिये सहायक हो सकती थी ?

दोकुकिना : बाद मे मुझे बडा खेद हुआ। यह कार्य मैंने व्यग्रता मे कर डाला था

न्यायाधीश : लेकिन क्या तुमने इन कागजो को जलाने से पहले पढा ?

दोकुकिना : नही, मैंने एक नजर डाली थी और मैं यह बता सकती हू कि इनमे क्या था। मैं समझती हू कि ये सोवियत साहित्य के ग्रन्थो के सक्षेप थे—मैंने इनमे कुछ समाजवादी यथार्थवाद के बारे मे भी लिखा हुआ देखा—ये निजी उपयोग के लिये लिखी गई टिप्पणिया थी और इन्हे मैं नही पढना चाहती थी।

न्यायाधीश . तुम यह कहना चाहती हो कि तुमने वास्तव मे इन्हे नही पढा। कुछ पक्तिया भी नही ?

दोकुकिना : हो सकता है कि मैंने कुछ पक्तिया पढी हो।

न्यायाधीश तुमने अवश्य कुछ और पढा होगा। तुम पढी-लिखी हो। तुम केवल कुछ पक्तिया पढने के बाद नही रुक सकती। तुम्हारे मन मे यह बात अवश्य आई होगी कि आगे क्या लिखा है ?

दोकुकिना मैं पहले ही कह चुकी हूं कि मैंने बहुत थोडा सा ही पढा और मैंने एक सरसरी नजर उन पर डाली।

सरकारी वकील निबन्ध के अलावा इन कागजो मे और क्या था ?

दोकुकिना . यदि यह सिद्ध भी किया जा सके कि ये कागजपत्र क्या थे तो भी मैं इनकी पुष्टि नही कर सकती। मैं कुछ भी नही कह सकती, क्योकि इन पर लेखक का नाम नही था। मैंने एक कहानी, "पखेनत्ज" नाम की पढी।

कोगन . एक मनुष्य के रूप मे तुम सिन्यावस्की के दृष्टिकोण के बारे मे क्या कहोगी ?

दोकुकिना · मैं उन्हे बीस वर्ष से जानती हू। इस पूरे समय मे मेरे सामने ऐसी कोई भी बात नहीं आई, जिसके कारण मैं उनके चरित्र मे कोई खामी देख सकती। वे सहृदय, बुद्धिमान, परिश्रमी हैं और उद्देश्य के प्रति उनके मन मे अत्यधिक

निष्ठा रखने वाले व्यक्ति हैं। जहां तक मै जानती हूं, साहित्य के बारे मे उनके विचार……वे सामान्यत. उन सब बातों को प्यार करते थे, जिन्हे सामान्यत: सर्वोत्तम माना जाता है। उन्होने कभी कोई क्रांति विरोधी बात नही कही। मैंने उन्हें क्रोध से भी कोई बात कहते हुए नही सुना। वे सदा हमारे परिचय के अन्य लोगो की तरह ही बात करते थे। मैं सिन्यावस्की के धार्मिक विचारों के बारे मे कुछ नही कह सकती। इस सम्बन्ध मे, आरम्भिक जाच के दौरान उत्तर देते हुए मैंने कहा था और मैं अब उसे फिर दोहरा सकती हूं : "मैं सोचती हूं कि यह हो सकता है कि सिन्यावस्की ईश्वर मे विश्वास करते हो, लेकिन यह विश्वास एक प्रकार से दार्शनिक अर्थो मैं है।"

वासिलयेव : जब तुमने "पखेनत्ज" शीर्षक कहानी पढी, क्या तुम्हें वह पसन्द आई ?

दोकुकिना : नही मुझे पसन्द नही आई। मैं ऐसा कोई कारण नही समझती कि प्रत्येक व्यक्ति को, हर वस्तु पसन्द आनी ही चाहिये।

वासिलयेव : तो तुमने केवल यही एक कहानी, "पखेनत्ज" निकाली—यही एकमात्र चीज तुमने पढ़ी ?

दोकुकिना : हां।

न्यायाधीश : अगला गवाह।

गवाह गाबुंजेन्को से जिरह

(याकोव लज़ारेविच गाबुंजेन्को, पार्टी का सदस्य, एक माध्यमिक स्कूल का हेडमास्टर।)

सरकारी वकील : क्या तुम डेनियल को जानते हो ?

गाबुंजेन्को : हां।

सरकारी वकील : तुम्हारे उससे क्या सम्बन्ध है ?

गाबुंजेन्को : मेरा उससे विश्वविद्यालय के एक सहपाठी के रूप मे परिचय था। हमारे अच्छे सम्बन्ध थे।

सरकारी वकील : क्या तुम सिन्यावस्की को जानते हो ?

गाबुंजेन्को : मैं उसे जानता हूं लेकिन इतनी अच्छी तरह नहीं।

सरकारी वकील : उनके सम्बन्ध—सिन्यावस्की और डेनियल के सम्बन्ध कैसे हैं ?

गाबुंजेन्को : वे अच्छे मित्र हैं।

सरकारी वकील : क्या तुम उन रचनाओं के बारे मे जानते हो, जो डेनियल ने विदेश भेजीं।

गाबुंजेन्को : हां, मैं जानता हूं।

सरकारी वकील : कब और कहां तुम्हें उनके बारे में जानकारी मिली है ?

गाबुंजेन्को : डेनियल के फ्लैट में। मुझे ठीक-ठीक याद नहीं है कब। पहले मुझे यह मालूम

नही था कि ये रचनाएं विदेशो मे प्रकाशित हो रही हैं। लेकिन फिर उसने मुझे वताया कि उसकी एक रचना विदेश मे प्रकाशित होगी।

सरकारी वकील : इस पर तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

गार्बुजेन्को . मुझे उसकी रचना के विदेश मे प्रकाशन की बात अच्छी नही लगी और मैंने यह उससे कहा भी।

सरकारी वकील और क्या तुमने प्रकाशित रूप मे भी पुस्तकें देखी ?

गार्बुजेन्को : हा, मैंने, "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" को १९६४ मे देखा।

सरकारी वकील आरम्भिक जाच के दौरान तुमने कहा है कि तुम्हे "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" की मूल कथा पसन्द नही आई।

गार्बुजेन्को : इसके विदेश मे प्रकाशन की जानकारी मिलने से पहले मैंने इस पर केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से ही विचार किया।

न्यायाधीश : (आरम्भिक जांच के विवरण से पढ कर सुनाता है) . "मैंने ज़ब इसकी टाइप की हुई पाण्डुलिपि पढ़ी तो मुझे इसका मूल विषय पसन्द नही आया। लेकिन हमने केवल इसके साहित्यिक गुण-दोष पर ही विचार किया। मैंने सोचा कि यह पहला प्रयास है। मैंने उसे देश मे प्रकाशन के लिये लिखने को कहा।

गार्बुजेन्को : मैंने उससे यह नही कहा कि मुझे यह विषय पसन्द नही है। यह बात मैंने अपने मन मे रखी। मुझे यह पसन्द नही आया था, लेकिन मैंने उससे कुछ नही कहा।

न्यायाधीश : पार्टी के एक सदस्य के रूप मे तुम इस सम्बन्ध मे क्या सोचते हो ?

गार्बुजेन्को · मैं इससे भयभीत हुआ। लेकिन यह कल्पना की एक उड़ान है।

न्यायाधीश : लेखक ने सर्वोच्च सोवियत की बदनामी की है। इसे तुम निर्दोष कल्पना की उडान कहते हो ?

गार्बुजेन्को . लेकिन इसमें हत्याए नही हुई। कोई भी मारा नही गया।

(अदालत के कमरे मे हसी।)

न्यायाधीश : क्या तुम इस बात को उचित समझते हो कि एक सोवियत लेखक, एक ऐसी रचना लिखे, जिसका मूल विचार यह हो कि सर्वोच्च सोवियत के आदेश से एक सार्वजनिक हत्या दिवस की घोषणा की जाती है ? तुम पार्टी के सदस्य हो, क्या तुम यह नही समझते कि यह भयकर प्रवाद है, भयकर वदनामी है ?

गोर्बुजेन्को : यद्यपि इसमे कुछ वास्तविक तथ्य और तारीखे है। लेकिन मैंने अपने मन मे इसका सम्बन्ध एक पहले के दौर से जोड़ा।

सरकारी वकील : (बयान पढता है) : "मैंने यह सोचा कि यह कहानी लोगो की नम्रता और जनता तथा नेताओ के बीच एकता की कमी के बारे मे है।" तुम पार्टी के

सदस्य हो, एक स्कूल के हैडमास्टर हो, लड़के-लड़कियो की शिक्षा का दायित्व तुम्हारे ऊपर है। इस सबके बारे में तुम्हारा अपना दृष्टिकोण क्या है ?

गार्बुजेन्को प्रायः फिर वही बाते दोहरता है, जो उसने पहले कही है कि उसने "इस विचार की निन्दा की लेकिन इस बात को उसने केवल अपने तक ही रखा, कि "किसी भी व्यक्ति की हत्या नही हुई" आदि

किसेनिशस्की : तुम कितने समय से डेनियल को जानते हो ?

गार्बुजेन्को . सन् १६४६ से।

किसेनिशस्की : क्या तुम अक्सर उससे मिला करते थे ?

गार्बुजेन्को : हम पहले एक दूसरे से बहुत मिला करते थे, लेकिन हाल मे इतना अधिक नही।

किसेनिशस्की : तुम किन विषयो पर बातचीत किया करते थे ?

गार्बुजेन्को . साहित्य के बारे मे, काम के बारे मे और अपने पारस्परिक मित्रो के बारे मे।

किसेनिशस्की क्या तुम राजनीति के बार मे भी बातचीत करते थे ? (गार्बुजेन्को के बयान से कुछ अश पढता है) : "मेरे मन मे यह बात थी कि डेनियल पार्टी के दायरे के बाहर है... ..जहा तक "दि मैन फाम मिनाप" का सम्बन्ध है, मैंने इस बात पर अधिक गौर नही किया कि यह रचना किस विषय पर है।

न्यायाधीश (वी० फिलीपोव की "हैंड्स" की भूमिका पढता है) : यहा हर वह सब मौजूद है, जिनकी तुम्हे आवश्यकता है—कहा, कब और कैसे इन रचनाओं का प्रकाशन हुआ और इसके बारे मे फिलीपोव के विचार। तुम्हे यह बात कैसी लगती है, तुम पार्टी के एक सदस्य को ?

गार्बुजेन्को : मैने यह भूमिका नही पढी है।

न्यायाधीश : कितनी असाधारण बात है ? इससे पहले के गवाह ने कहा है कि उसने "आन सोशलिस्ट रियलिज्म" शीर्षक निबन्ध नही पढा। अब तुम कहते हो कि तुमने यह भूमिका नही पढी। खैर ठीक है अगला गवाह।

गवाह खजानोव से जिरह

(यूरी सामोइलोविच खज़ानोव, कवि और अनुवादक)

सरकारी वकील : तुम डेनियल को कितने समय से जानते हो ? तुम्हारे उससे कैसे सम्बन्ध है ?

खजानोव : मै उसे १९५७ के अन्त से जानता हू। वह मेरा मित्र और सह-लेखक है। हाल मे हम एक दूसरे से बहुत कम मिलते रहे हैं। लेकिन हमारे अभी भी अच्छे सम्बन्ध है।

सरकारी वकील : तुम उन रचनाओ के बारे में क्या जानते हो, जो डेनियल ने विदेशो मे प्रकाशन के लिये लिखी ?

खजानोव : मैं अब बहुत कुछ जानता हू, लेकिन सितम्बर १९६५ तक मुझे बहुत कम जानकारी थी। एक बार हमारी विवेचनात्मक और समालोचनात्मक रचनाओ को विदेशो मे प्रकाशित करने के बारे मे चर्चा हुई थी।

सरकारी वकील : किस प्रकार की आलोचनात्मक रचनाए ?

खजानोव : ऐसी रचनाए जिनमे हमारे जीवन की कुछ अवधियो, कुछ बातो की आलोचना हुई हो। जब डेनियल से मेरी बातचीत पास्तरनेक के सम्बन्ध मे हुई, मोटे तौर पर हमारी राय भिन्न थी। डेनियल का विचार था कि मैंने जिस प्रकार की आलोचनात्मक रचनाओ का उल्लेख किया है, उन्हे देश-विदेश मे—जहा भी सभव हो प्रकाशित किया जाना चाहिये। लेकिन मेरा विचार था कि हमे अपनी समस्याए अपने देश मे ही सुलझानी चाहिये। हा, यह हो सकता है कि इस प्रकार की रचनाओ को विदेशो मे भी फिर छाप दिया जाये, लेकिन उद्देश्य स्वदेश मे ही प्रकाशन का होना चाहिये। इस पर उसने कहा कि उसकी कई रचनाए विदेशो मे प्रकाशित हो चुकी है अथवा होने जा रही है। लेकिन मैंने इस बात पर विश्वास नही किया। मुझे इस बात का स्मरण नही है कि उसने मुझे सम्बन्धित रचनाओ मे से कोई दिखाई अथवा पढकर सुनाई। मैं उसकी कहानी "एस्केप" और उसकी त्वचा सबधी कहानी[६] के बारे मे जानता हूं तथा मुझे "दिस इज मास्को स्पीकिंग" मे वर्णित, बैरा सम्बन्धी अश की भी कुछ अस्पष्ट जानकारी है। लेकिन मैं इन रचनाओ से परिचित नही हूं।

सरकारी वकील : क्या तुमने रेडियो से डेनियल की रचनाओ के प्रसारण के बारे में बात-चीत की ?

खजानोव : नही, हमने इस सम्बन्ध मे कोई बातचीत नही की।

सरकारी वकील, खजानोव के बयान का एक अश पढ कर सुनाता है, जिसमें उसने

५—डेनियल और खजानोव के द्वारा सयुक्त रूप से लिखी हुई पुस्तको के बारे मे कोई जानकारी नही है।

६—इसके बारे मे कोई जानकारी नही है। सभवतः मुकदमे की कारवाई के विवरण मे इसके नाम को काट कर निकाल दिया गया हो। एस्केप के बारे मे देखिए पृष्ठ १८७।

कहा है कि एलेना माइखेलोवना जाक्स को, डेनियल की रचनाओ के प्रसारण के वारे मे जानकारी थी और खज़ानोव को उससे इसका पता चला।

खज़ानोव : मुझे याद है कि आरम्भिक जाच के दौरान मुझ से पूछा गया था कि क्या मैंने डेनियल से ऐसी कोई वात सुनी, जिससे यह प्रकट होता हो कि वह लेखक था। मैंने उत्तर दिया था कि मुझे ऐसी कोई बात याद नही है। मुझसे यह भी पूछा गया था कि क्या मैंने जाक्स के घर पर इस आशय की कोई वात सुनी थी? मैंने उत्तर दिया था कि हो सकता है। मुझसे यह पूछा जा रहा था कि क्या मेरे सामने ऐसी कोई वात आई, जिस पर मुझे विश्वास नही था। मुझे इस वात का विश्वास नही था कि डेनियल इन रचनाओ का लेखक है।

सरकारी वकील : यह कब की वात है ?

खजानोव : मुझे वस्तुतः याद नही है।

सरकारी वकील : क्या यह सन् १९६२ की वात हो सकती है ?

खजानोव : मुझे याद नही। सभवत यह वाद की वात है।

न्यायाधीश : [खजानोव का पूरा वयान पढ कर सुनाता है] : क्या तुम इस बयान की पुष्टि करते हो ?

खजानोव · मुझे इसका अच्छी तरह स्मरण नही है।
(वह इसके कुछ अशो की पुष्टि करता है और कुछ अन्य अशो को अस्वीकार करता है)

न्यायाधीश . तुमने यह वयान स्वय अपने लेख मे राज्य सुरक्षा समिति के समक्ष दिया है। क्या तुम इस वात की पुष्टि करते हो कि तुमने यह वयान राज्य सुरक्षा समिति को लिख कर दिया ?

[खज़ानोव ने जो कहा वह वहुत अस्पष्ट था और समझा नही जा सका]

न्यायाधीश : (कागज का एक ताव ऊपर उठा कर दिखाता है) : राज्य सुरक्षा समिति को स्वयं अपने लेख मे दिया गया तुम्हारा एक वक्तव्य है। क्या तुम इस बात की पुष्टि करते हो कि तुमने यह वयान दिया ?
[इस उत्तर को भी समझा नही जा सका]

न्यायाधीश : इधर आओ और स्वयं देखो कि यह राज्य सुरक्षा समिति को दिया गया, तुम्हारा स्वयं अपने लेख मे लिखा हुआ वयान है।

खज़ानोव, जो जीवित होने से अधिक, मृत दिखाई पड़ रहा था, न्यायाधीश के पास जाता है। न्यायाधीश कई वार दोहराता है "राज्य सुरक्षा समिति को दिया गया, स्वयं तुम्हारे लेख मे लिखा वयान।"

खज़ानोव कुछ फुसफुसाता है।

डेनियल . (खज़ानोव से) : क्या तुम यह बता सकते हो कि मैंने तुमसे पहले कहा यह कहा कि मैं ऐसी रचनाए लिख रहा हू जो विदेशो मे प्रकाशित हो रही है ?

खजानोव . मुझे याद नही।

डेनियल · (न्यायाधीश से) . क्या मैं गवाह को स्मरण दिला सकता हू ?

न्यायाधीश : नही।

डेनियल ठीक है, मै परिस्थितियो का विवरण दू गा। परिस्थितिया साधारण नही थी, अत खज़ानोव को स्मरण होना चाहिये। मै यह बताऊगा कि परिस्थितिया क्या थी और सभवत खज़ानोव इस बात की पुष्टि करेगा कि ऐसा था अथवा नही। यह १९६२-६३ की सर्दियो की बात है, शहर के बाहर की बात है।

खजानोव · हा, यह ठीक है, यह १९६२-६३ की सर्दियो की बात है, शहर से बाहर की बात है।

डेनियल · क्या गवाह यह निश्चित रूप से कह सकता है कि उसे प्रसारण सम्बन्धी बातचीत का स्मरण है और उसने ठीक-ठीक विवरण दिया है ?

खजानोव नही। मुझे यह बात अच्छी तरह याद नही है। मुझे इसका अनुमानत स्मरण है।

न्यायाधीश फिर खज़ानोव का बयान पढ कर सुनाता है। खज़ानोव न तो पुष्टि करता है और न ही इसे अस्वीकार।

डेनियल · यदि अदालत को यह स्पष्ट हो गया है कि इस गवाह पर प्रामाणिकता के लिये विश्वास नही किया जा सकता, तो मैं गवाह से और कोई प्रश्न नही पूछना चाहता। खज़ानोव घबरा जाने वाला व्यक्ति है इन परिस्थितियो मे या तो वह इन बातो को भूल गया अथवा उसने अपने जाच अधिकारियों के सकेतो के अनुसार कहा। मैंने यह प्रश्न केवल उससे यह दिखाने के लिये पूछा कि यह बात अदालत को स्पष्ट हो जाये। एक तीसरे व्यक्ति, एलेना माईखेलोवना जाक्स का यहा उल्लेख बिल्कुल असगत है।

कोई चिल्ला कर कहता है : "तुम्हारा भला हुआ । यह गवाह कायर है।"

वासिलयेव . (खजानोव से) : क्या तुम लेखक सघ के सदस्य हो ?
खजानोव · नही।
न्यायाधीश : अगला गवाह।

गवाह खमेलनितस्की से जिरह

(सरगेय ग्रीगोरयेविच खमेलनित्स्की, वास्तुकार। सन् १९६३ में, उसके शोध प्रबन्ध के समर्थन की बैठक मे, उसके भूतपूर्व मित्र, काबो और ब्रेगेल उठ खडे हुए और यह बताया कि किस प्रकार १९४९ मे उन्हे खमेलनित्स्की द्वारा अभियोग लगाये जाने पर गिरफ्तार कर लिया गया था और सजा दी गई थी। इसके कुछ समय बाद, खमेलनित्स्की मास्को छोड़ कर चला गया। मुकदमे मे उसकी पेशी से प्रतिवादियों को बडा आश्चर्य हुआ। जब खमेलनित्स्की का नाम पुकारा गया, तब सिन्यावस्की मुस्कराये और डेनियल ने आगे झुक कर देखा। खमेलनित्स्की गवाह के कटघरे मे गया। अपना मुह दाहिनी ओर घुमाया और अपने चश्मे के शीशो के ऊपर से शून्य आखो से अपने भूतपूर्व मित्रो, सिन्यावस्की और डेनियल की ओर देखा। इसके बाद वह सीधा सामने देखने लगा, उसने अपनी ठोडी ऊपर उठाई और प्रश्नो का उत्तर देने लगा।)

सरकारी वकील : तुम कितने समय से डेनियल और सिन्यावस्की को जानते हो ? तुम्हारे उनसे क्या सम्बन्ध है।
खमेलनित्स्की : मैं सिन्यावस्की को सन् ३३ से और डेनियल को सन् ४७ से जानता हू। हमारे सम्बन्ध मित्रतापूर्ण हैं।
सरकारी वकील : क्या कभी डेनियल से तुम्हारी बातचीत "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" के रेडियो प्रसारण के बारे मे हुई ?
खमेलनित्स्की : कभी भी इस सम्बन्ध मे कोई बातचीत नही हुई।
सरकारी वकील . क्या तुमने ही इस कहानी का कथानक डेनियल को नही सुझाया था ?
खमेलनितस्की . लोगो के मनोविज्ञान के बारे मे मेरा जो अध्ययन था, उसका मैंने विरोधाभासपूर्ण विचार डेनियल को दिया।
सरकारी वकील : तुम्हारा विचार था···किसने हत्याओ की आज्ञा दी। कुछ इसके बारे मे था ?
खमेलनित्स्की : मेरा इसके बारे मे लिखने का कोई इरादा नही था। मेरी केवल इस

विचार मे दिलचस्पी थी। इस रूपरेखा मे दिलचस्पी थी। अत मैंने विस्तार-पूर्वक इसका विवरण तैयार नही किया।

न्यायाधीश . क्या तुम्हारी रूप रेखा मे, एक आदेश—हत्याओ की अनुमति देने के सर्वोच्च सोवियत के आदेश, के बारे मे कुछ था ?

खमेलनित्स्की इस बात से मेरा कोई सम्बन्ध नही था।

सरकारी वकील : लेकिन क्या तुमने और डेनियल ने, इसे एक कहानी मे बदलने की चर्चा नही की ?

खमेलनित्स्की . हमने दो बार इसकी चर्चा की। पहले अवसर पर मैंने डेनियल से पूछा कि क्या उसने मेरे विचार के आधार पर कहानी लिखी है ? उसने केवल सीधा-सादा यह उत्तर दिया कि नही। दूसरा वार्तालाप इस सदर्भ मे हुआ। किसी मकान मे मैंने किसी व्यक्ति को, सार्वजनिक हत्या दिवस सम्बन्धी मेरे विचार को एक कहानी के रूप मे प्रस्तुत करते हुए सुना। मैंने कहा कि यह विचार मेरा है और इसे मैंने डेनियल को बताया था। मैंने डेनियल को यह बताया और उसने मुझे इसके बारे मे उचित झाड दी।

न्यायाधीश "उचित" क्यो ?

खमेलनित्स्की स्पष्टतया यह एक गन्दा काम था—किसी सोवियत विरोधी रेडियो स्टेशन द्वारा, सोवियत विरोधी रचनाओ के प्रसारण के सम्बन्ध मे, किसी व्यक्ति का नाम लेकर उल्लेख करना गन्दा काम ही था।

न्यायाधीश : अदालत की कारवाई स्थगित होती है।

तीसरा दिन
गवाहों से जिरह

प्रात.कालीन सत्र, १२ फरवरी १९६६

गोवाह गोलोमश्तोक से जिरह

(आइगोर नौमोविच गोलोमश्तोक, कला इतिहासकार, पिकासो शीर्षक पुस्तक-मास्को जैनानी, १९६० का, ए० सिन्यावस्की का सह-लेखक)

सरकारी वकील : सिन्यावस्की और डेनियल को तुम कितनी अच्छी तरह जानते हो ?

गोलोमश्तोक हमारे अच्छे, मित्रतापूर्ण सम्बन्ध हैं।

सरकारी वकील : क्या तुम सिन्यावस्की की रचनाओं से परिचित हो ?

गोलोमश्तोक . हा, मैं दि ट्रायल बिगिन्स, फैंटास्टिक स्टोरीज और ल्यूबीमोव के बारे में जानता हू ।

सरकारी वकील . तुम्हे कब इनकी जानकारी मिली ?

गोलोमश्तोक . सिन्यावस्की की गिरफ्तारी के बाद ।

सरकारी वकील क्या सिन्यावस्की ने तुम्हे अपनी रचनाएं दिखाई ?

गोलोमश्तोक : नही ।

सरकारी वकील आरम्भिक जाच के दौरान सिन्यावस्की ने यह कहा है कि उसने तुम्हें दिखाई थी ।

गोलोमश्तोक · मेरा और सिन्यावस्की का सामना कराये जाने पर सिन्यावस्की ने कहा था कि उन्होंने अपनी रचनाओ के कुछ अश मुझे पढ़ कर सुनाये। मैंने जब उक्त रचनाओं को देखा, तो मुझे ऐसा स्मरण आया कि मैंने इन अशो को पहले कभी नहीं सुना था। यहा अदालत मे सिन्यावस्की ने कहा है कि हो सकता है कि उन्होंने मुझे कुछ ऐसे अंश पढ कर सुनाये हो, जो रचना के अन्तिम प्रारूप मे शामिल न किये गये हो। या यह भी हो सकता है कि मैं इन अंशों को पहचान न पाया हू ।

सरकारी वकील · तुम्हे उसकी रचनाए कहा मिली ?

गोलोमश्तोक सिन्यावस्की की गिरफ्तारी के बाद मुझे पता चला कि उन्हे क्यों गिरफ्तार

किया गया और मैंने उनकी पुस्तकें प्राप्त करने और पढ़ने का निश्चय किया। मुझे ये पुस्तकें अपने मित्रो से मिली।

सरकारी वकील : इन मित्रो के नाम बताओ ?

गोलोमश्तोक : मैं इनके नाम बताने से इन्कार करता हू।

सरकारी वकील मैं नही चाहता कि तुम यह करने से इन्कार करो। यह करने से इन्कार कर के तुम सोवियत विरोधी साहित्य से प्रचार-प्रसार मे सहायक बन रहे हो और उसे अपना समर्थन दे रहे हो।

गोलमश्तोक · मैं इन रचनाओ को सोवियत-विरोधी नही समझता

सरकारी वकील : मेरे प्रश्न का उत्तर दो।

न्यायाधीश क्या तुमने इन रचनाओ को किसी पुस्तकालय मे पढा ?

गोलोमश्तोक नही।

न्यायाधीश तो तुमने इन्हे गैर-कानूनी तरीके से प्राप्त किया ?

गोलोमश्तोक मैंने इन पुस्तको को अपने मित्रो से मागा। क्या यह गैर-कानूनी है ? मुझे मालूम नही था।

न्यायाधीश : सरकारी वकील का इन रचनाओ को सोवियत विरोधी कहना गलत था। अदालत को अभी यह निर्णय करना है कि ये रचनाए सोवियत विरोधी हैं अथवा नही। अत तुम उन मित्रो के नाम बता सकते हो, जिससे तुमने ये पुस्तके पढने के लिये ली।

गोलोमश्तोक मैं इन मित्रो का नाम बताने से इनकार करता हू क्योकि, यद्यपि मै इन रचनाओ को सोवियत विरोधी नही मानता, यहा मेरे मित्र पर... धारा ७० के अन्तर्गत मुकदमा चलाया जा रहा है। मैं अन्य लोगो को इसमे नही फसाना चाहता।

सरकारी वकील . (औपचारिक रूप से कहता है) गवाह को यह चेतावनी दे दी गई है कि अदालत को तथ्य बताने से इनकार करने से उसके ऊपर क्या जिम्मेदारी आ सकती है और इसके बावजूद वह यह बताने से इनकार करता है। इस्तगासा अदालत से प्रार्थना करता है कि अदालत गवाह गोलोमश्तोक के विरुद्ध अभियोग लगाने के लिए अलग से निश्चय करे।

न्यायाधीश दोनो प्रतिवादियों से पूछता है कि क्या उन्हे सरकारी वकील की प्रार्थना के बारे मे कुछ कहना है।

सिन्यावस्की : गोलोमश्कोव अदालत के समक्ष प्रस्तुत मामलो के बारे मे तथ्य बताने से

इन्कार नही कर रहा । उसने सिन्यावस्की के मामले से सम्बन्धित, जिस मामले के लिये उसे बुलाया गया है, सब प्रश्नो के पूरे उत्तर दिये हैं। लेकिन यह प्रश्न कि मेरी गिरफ्तारी के बाद उसे ये रचनाए कहा से प्राप्त हुई, मुकदमे से कोई ताल्लुक नही रखता । अत मै इस प्रार्थना को अनुचित समझता हूं कि गोलोमश्तोक पर अभियोग लगाया जाये ।

डैनियल सिन्यावस्की का समर्थन करता है और कहता है कि यह बात अनुचित होगी और यह कहना इस बात को बडे नम्र शब्दो मे प्रकट करना है ।

गोलोमश्तोक मैं यह स्पष्ट करना चाहता हू कि मैं यह बयान देने से क्यो इनकार करता हूं ।

न्यायाधीश गवाहो को स्पष्टीकरण देने की अनुमति नही होती ।

कोगन क्यो क्या तुमने सिन्यावस्की के साथ मिल कर एक पुस्तक नही लिखी है ?

गोलोमश्तोक · हा ।

कोगन : क्या तुमने बुर्जुआ देशो मे कलाकार की, व्यक्ति की स्थिति की चर्चा नही की है ?

गोलोमश्तोक : हा, हमने यह चर्चा की है ।

कोगन : इस बारे मे सिन्यावस्की के विचार क्या है ?

गोलोमश्तोक · अक्षरश तो मैं वह नही दोहरा सकता, जो उन्होने कहा है, लेकिन उनका यह दृष्टिकोण था सिन्यावस्की को पश्चिमी सस्कृति का अच्छा ज्ञान है और उन्होने, स्वय मेरे मानको से भी, और मैं पश्चिमी कला का एक विशेषज्ञ हू, उसकी पर्याप्त कटु आलोचना की है । सिन्यावस्की अमूर्त कला को आध्यात्मिक ह्रास का एक लक्षण मानते है । वे अपने विचारो से स्लाव जाति के गौरव की परम्परा को आगे बढाने मे विश्वास रखने वाले हैं ।

न्यायाधीश · इसके बावजूद उसने 'अनगार्डेड थॉट्स" मे, रूस के लोगो के बारे मे यह लिखा है कि यह शराबियो की एक जाति है ।

गोलोमश्तोक यह बात उससे मेल नही खाती जो मै सिन्यावस्की के बारे मे जानता हू । स्पष्ट है कि वे इस अंश मे कुछ और ही बात कहने का प्रयास कर रहे थे ।

न्यायाधीश · खैर, आइए देखें कि उसका क्या अभिप्राय था (रूस के लोगो सम्बन्धी अश पढता है) । क्या इस प्रकार की अपमानजनक और बदनाम करने वाली बातो को तुम स्लाव जाति की महानता मे विश्वास बताते हो ?

गोलोमश्तोक : लेकिन आपको ऐसी ही चीजें गोगोल की रचनाओ में भी देखने को मिलेंगी।

न्यायाधीश : तो स्लाव जाति की महानता मे विश्वास का तुम्हारा यही अर्थ है ?

गोलोमश्तोक . हा ।

(अदालत मे हसी)

न्यायाधीश : जो प्रश्न मैं कर रहा हू, उनका उत्तर दो । रूस की सस्कृति के प्रति सिन्यावस्की के दृष्टिकोण के बारे मे तुम्हारी क्या राय है ?

गोलोमश्तोक : सिन्यावस्की की सब रचनाए रूसी सस्कृति से सबधित है—सब रचनाए इससे सम्बन्धित है ।

न्यायाधीश और क्या पश्चिम के देशो को पुस्तके भेजना रूसी सस्कृति की सेवा है ?

गोलोमश्तोक . इस समय मैं उसके दृष्टिकोण के बारे मे बात कर रहा हूं उसके कार्यों के बारे मे नही ।

न्यायाधीश : सिन्यावस्की ने मायाकोवस्की के बारे मे भी लिखा है और मायाकोवस्की ने एक बार कहा था "सोवियत लोगो के पास अपना गर्व है।" इस प्रकार के कार्य करना बहुत गर्व का प्रदर्शन करता है । दूसरा गवाह । (गोलोमश्तोक को सबोधित करते हुए) तुम उस समय तक अदालत के कमरे मे मौजूद रहोगे, जब तक तुम्हारे मामले पर निर्णय नही हो जाता, अर्थात् तुम मुकदमे की कारवाई समाप्त होने तक मौजूद रहोगे[१] ।

गवाह पेत्रोव से जिरह

(अलैक्जेंडर पेत्रोव, एक एन्ग्रेवर । भीतर आते समय वह बडी प्रसन्नता से प्रतिवादियो का अभिनन्दन करता है और प्रश्नो का उत्तर ऊचे स्वर मे और बिना किसी बात की परवाह किए हुए देता है ।)

सरकारी वकील . तुम सिन्यावस्की और डेनियल से कितनी अच्छी तरह परिचित हो ?

पेत्रोव बहुत अच्छी तरह । वे मेरे सर्वोत्तम मित्र हैं ।

सरकारी वकील इस मामले के बारे मे तुम क्या जानते हो ?

पेत्रोव मैं इसके बारे मैं बहुत कुछ जानता हूं, क्योकि अब पूरे ससार मे, इसके बारे मे इतनी अधिक हलचल मच चुकी है ।

१—४ मई १९६६ के न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार गोलोमश्तोक को बयान देने से इन्कार करने के लिये ६ महीने की कैद की सजा सुनाई गई, लेकिन इसे स्थगित कर दिया गया ।

सरकारी वकील : मैं यह नही पूछ रहा हूं कि अब तुम क्या जानते हो, बल्कि यह कि तुम पहले क्या जानते थे।

पेत्रोव : मैं टेरट्ज की रचनाओ के बारे मे जानता था, लेकिन सिन्यावस्की टेरट्ज है अथवा डेनियल या कोई अन्य, इसका मुझे कोई ज्ञान नहीं था।

सरकारी वकील : तुम्हे टेरट्ज की रचनाएं पढने को कैसे मिली ?

पेत्रोव : "बात यह है कि सिन्यावस्की दम्पत्ति मेरे अभिन्न मित्र है—हम प्रायः एक परिवार के सदस्य जैसे ही हैं। हम एक दूसरे के घर बिना किसी रोक-टोक के आते जाते हैं। उनके पास मेरे फ्लट की चावी रहती है और उनके फ्लैट की मेरे पास। अत मैं अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी पुस्तक उनकी अलमारी से ले लेता था। मैने इन पुस्तको को वहा से उठाया और पढा। मैं "फैंटास्टिक स्टोरीज" शीर्षक से आकर्षित हुआ। आप यह कह सकते है कि मैं स्वय अपने आप ही इन रचनाओ मे परिचित हुआ।

सरकारी वकील : और क्या तुमने इस बात पर गौर किया कि किसने इन पुस्तको को प्रकाशित किया है ?

पेत्रोव : हा, मैंने देखा कि ये पुस्तके विदेशो मे प्रकाशित हुई है। लेकिन इससे क्या। अन्य बहुत सी पुस्तकें भी विदेशो मे प्रकाशित हुई है।

न्यायाधीश : अगला गवाह।

पेत्रोव : क्या मैं अदालत के कमरे मे रुका रह सकता हू ?

न्यायाधीश : मेरी समझ से तुम्हारे यहा रुके रहने का कोई कारण नही है।

पेत्रोव : मैंने सिन्यावस्की और डेनियल को युगो से नही देखा है, और मै उन्हे जी भर कर देखना चाहता हू।

[पेत्रोव को अदालत के कमरे से बाहर निकाल दिया जाता है।]

गवाह दुआकिन से जिरह

(विक्टर दमित्रिएविच दुआकिन, मास्को विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान सकाय का लैक्चरर मुकद्दमे मे एकमात्र सफाई पक्ष का गवाह)

कोगन : तुम्हारा सिन्यावस्की से कब और कहा परिचय हुआ ?

दुआकिन : मैं सिन्यावस्की को सन् १९४५ से जानता हूं। १९४५ की शिशर ऋतु मे मैंने एक विद्यार्थी की परीक्षा ली, जो एक भद्दा सा ओवरकोट पहने हुए था और जो पत्र-व्यवहार से शिक्षा ग्रहण कर रहा था। मैंने देखा कि यह व्यक्ति अत्यधिक

प्रतिभासम्पन्न है। वह मेरी कक्षा मे ग्राने लगा और मैंने ग्रागे चलकर देखा कि मेरा पहला विचार गलत नही था। ग्रारम्भ मे हमारे सम्बन्ध एक शिक्षक और शिक्षार्थी के थे, लेकिन धीरे-धीरे हम मित्र बन गये।

कोगन क्या तुम सिन्यावस्की के शास्त्रीय और अपने कार्य से सम्बन्धित गुणो के बारे मे बता सकते हो ?

दुग्राकिन : साहित्यिक ज्ञान और अपने कार्य सम्बन्धी क्षमताग्रो की दृष्टि से सिन्यावस्की ग्रसाधारण है। मैं सोचता हू कि उसके सहयोगी मेरी इस बात से सहमत होगे।

न्यायाधीश · यह विषयातिरेक आवश्यक नही है।

दुग्राकिन : ठीक है। मैं सोवियत साहित्य पर लिखी गई, उसकी पुस्तको से परिचित हूं। हम कभी-कभी तर्क भी करते थे। हम मुख्यत कला के बारे मे चर्चा करते थे। दो वर्ष तक उसने मास्को विश्वविद्यालय मे अध्यापन किया और वह बहुत लोकप्रिय था। ग्रारम्भ मे मैं उसके कक्षाग्रो मे दिये जाने वाले लैक्चरो को देखता था, लेकिन बाद मे मैंने अनुभव किया कि यह ग्रावश्यक नही है। मैंने अनुभव किया कि वह मुझसे बेहतर शिक्षक है। मैंने अनुभव किया······मैंने उस प्रकार अनुभव किया, जिस प्रकार वह बत्तख कर सकती है, जिसने एक हस के अण्डे को सेकर, एक हस के बच्चे को जन्म दिया हो। वह एक ऐसा बदसूरत बत्तख का बच्चा था, जो विकसित होकर हंस बन गया।

न्यायाधीश : कुछ हंस, लेकिन अधिक बत्तख जैसा ही ?

(अदालत के कमरे मे हसी)

दुग्राकिन · स्पष्ट है कि कोई भी व्यक्ति इस सम्बन्ध मे मजाक कर सकता है और मैं यहा सिन्यावस्की के गुणो या क्षमताग्रो के बारे मे अपने विचार प्रकट कर रहा हूं। वह एक ऐसा व्यक्ति है, जो सत्य का अन्वेषण करता है और अपने इस अन्वेण मे एकनिष्ठ और ईमानदार है।

न्यायाधीश एकनिष्ठ और ईमानदार। यह व्यक्ति जिस पर यहा मुकदमा चलाया जा रहा है ?

दुग्राकिन : हा।

न्यायाधीश . और तुम यह सोचते हो कि उसकी पुस्तकें एकनिष्ठ और ईमानदारी से भरी हैं ?

दुग्राकिन : क्या मैं अब पुस्तकों के बारे मे चर्चा कर सकता हूं।

न्यायाधीश नही। उनपर निर्णय देना न्यायालय का काम है।

दुग्राकिन : लेकिन ग्रारम्भिक जाच के दौरान तो मुझसे पुस्तको के बारे मे ही पूछताछ की गई थी।

न्यायाधीश : अदालत को इस बात मे कोई दिलचस्पी नही है ।

कोगन : आइए हम एक बार फिर तथ्यो पर सिलसिलेवार नजर डाले । प्रारम्भिक जाच के दौरान तुमने "ग्राफोमेनियाक्स" के आत्म-कथा जैसे स्वरूप की चर्चा की थी और एक अन्य अवसर पर तुमने कहा था कि शब्दो से अत्यधिक लगाव और अपनी रचनाओं को प्रकाशित देखने की अदम्य चाह के कारण ही सिन्यावस्की इस मुसीबत मे फंसा है ।

दुआकिन : सिन्यावस्की ने एक बार मुझसे कहा था कि एक लेखक और एक ग्राफोमेनियाक्स के बीच विभाजन रेखा खीचना असभव है । स्पष्ट है कि उसका······

न्यायाधीश : (बीच मे टोकते हुए) हमे "स्पष्ट है कि" जैसे शब्दों की आवश्यकता नही है । केवल तथ्यो तक ही रहो । तुम्हारा आत्म-कथा जैसा होने से क्या अभिप्राय है ?

दुआकिन : वह सन्तो जैसा जीवन बिताता है । उसका जीवन रूस की कला मे खोये हुए एक व्यक्ति का जीवन है । उसका जीवन उस व्यक्ति का जीवन है, जो रूस की कला का प्रेमी है, लेकिन जिसका जीवन सरल नही है । इसी रूप मे सिन्यावस्की ने अपने जीवन का निर्वाह किया और "ग्राफोमेनियाक्स" मे भी एक ऐसा लेखक है, जो बुरे गोश्त पर जीवित रहता है[२] । ठीक है······

न्यायाधीश : (बीच मे टोकते हुए) अगला गवाह ।

न्यायाधीश सफाई पक्ष की इस अर्जी को अस्वीकार कर देता है कि याकोवसन या बोरोनेल को गवाहो के रूप मे बुलाया जाये । इसका कारण देते हुए न्यायाधीश ने कहा कि इन लोगो की अदालत मे आवश्यकता नही है ।

सरकारी वकील : (विधिवत् अनुमति के लिये आवेदन करते हुए) : डेनियल और गवाह आज़वेल का सामना कराने के समय जो वार्तालाप दर्ज किया गया, मैं उसे पढ कर सुनाना चाहता हूं ।

इस सामने का विवरण पढ कर सुनाता है, जिसमे डेनियल ने कहा था कि उसने आज़वेल को अपनी रचनाए पढ़ कर सुनाई थी । आज़वेल का उत्तर था कि ऐसा हो सकता है, लेकिन उसे याद नही ।

सरकारी वकील . (डेनियल से) : क्या तुम उन बातो की पुष्टि करते हो, जो तुमने आज़वेल से सामना कराने के समय कही ?

डेनियल : मैं करता हूं और मैं इसका आगे स्पष्टीकरण भी देना चाहूगा । सन् १९६२ की शिशिर ऋतु में मैंने आज़वेल को हर रोज कुछ न कुछ पढ कर सुनाया । "एस्केप" के कुछ अंश, कहानिया, जिनका यहा उल्लेख हुआ है और कुछ अन्य चीजें भी । हो सकता है कि इस कारण से उसे यह ठीक ठीक याद न रहा हो

२—दि आइसिकिल एण्ड अदर स्टोरीज़, पृष्ठ १९५ ।

कि मैंने उसे क्या-क्या पढ कर सुनाया, क्योंकि दो या तीन सप्ताह बाद वह बाहर चला गया और इसके बाद उसकी पत्नी गभीर रूप से बीमार पडी और वह डेढ वर्ष तक एक पगु की स्थिति मे रही। तो इन सब बातो ने उसे यह भुला दिया होगा कि मैंने क्या पढ कर सुनाया था। मैंने उसे उस समय 'अटोनमेट" कहानी पढ कर सुनाई जब वह बहुत बीमार था। इसका उद्देश्य उसे अपनी कहानी से परिचित कराना नही, बल्कि बीमारी से उसका मन हटा कर दूसरी ओर लगाना था। (एक औपचारिक आवेदन करता है) मैं चाहता हूं कि मुझे अपने विरुद्ध लगाये गये अभियोगो के सम्बन्ध मे आगे एक और वक्तव्य देने की अनुमति दी जाये।

न्यायाधीश : क्या यह वही बाते नही है, जो तुम अपनी अन्तिम अभियुक्ति मे कहना चाहते हो ?

डेनियल : नही। यह वे नही हैं, जो मेरी अन्तिम अभियुक्ति मे आ सकती है। मैं अपने ऊपर लगाये गये अभियोगो के स्वरूप और उन पर अपने दृष्टिकोण के बारे मे कहना चाहता हूं। मेरी समझ मे इस्तगासे द्वारा पूछे जाने वाले सवालो की तार्किकता नही आती। मैं इन प्रश्नो का उत्तर देता हूं लेकिन ·

न्यायाधीश : [बीच मे टोकते हुए] . इस्तगासे से तुम्हारी असहमति के बारे मे अदालत को कोई दिलचस्पी नही है।

इस्तगासे की ओर से भाषण

जन अभियोक्ता ए० वासिलयेव का भाषण

मैं सोवियत साहित्य के इतिहास[1] के प्रथम खण्ड मे प्रकाशित सिन्यावस्की के मैक्सिम गोर्की सम्बन्धी लेख का एक उद्धरण सबसे पहले देना चाहता हू । साशका एपानचिन, मेच्कि और अन्य पात्रो की विलग सामगिन से तुलना करते हुए, सिन्यावस्की लिखता है . इन पात्रो मे नैतिक और आध्यात्मिक पतन के सब लक्षण विद्यमान है—वे जो कहते है और जो करते हैं वह परस्पर विरोधी है; वे वह नही है जो स्वयं को दिखाना चाहते है और उनमे से अनेक एक तीसरे प्रकार के ही स्वप्न देखते है । मेरा इरादा सिन्यावस्की और डेनियल की तुलना विमल सामगिन से करने का नही है—ये उसकी तुलना मे छुटभैये हैं—लेकिन तथ्य यह है कि सिन्यावस्की और डेनियल भी वह नही है जो वे स्वय को दर्शाना चाहते हैं । मुकदमे की कारवाई के दौरान यह प्रकट हो गया है कि भाषा विज्ञान का डाक्टर सिन्यावस्की सदा सम्पादकीय कार्यालयो और विश्व साहित्य संस्था के आसपास ही मडराता रहता था । अशकालिक रूप से वह स्वय को एक सोवियत साहित्यिक विद्वान के रूप मे प्रकट करता था । मैं सिन्यावस्की के लेखो से अनेक उद्धरण पढ कर सुना सकता हूं । उसने इन लेखो मे लेनिन तक के उद्धरण दिये हैं । लेकिन अब हम यह जानते हैं कि उसने अपना अधिकांश समय विद्वेष और घृणा से भरी पुस्तकें और लेख लिखने मे ही बिताया । डेनियल किसी भी ऐसे सम्पादकीय कार्यालय मे जाने को तैयार था, जिसके बजट मे पारिश्रमिक देने की व्यवस्था हो । मदाम जामोयस्का के लिये पाण्डुलिपिया तैयार करते समय, उसने अनुवाद से प्राप्त धन पर जीवन यापन किया । किसी ने भी उससे यह प्रश्न नही पूछा कि उसके लिये घर पर बैठ कर कविता लिखना क्यो आवश्यक था । ये लोग उसके लिये दुखी थे और उसकी कुछ अतिरिक्त धन अर्जित करने की आवश्यकता को संदिग्ध नही समझते थे । लेकिन, सोवियत धन की रसीदो पर हस्ताक्षर करते समय, वह मदाम जामोयस्का के लिये ही कार्य कर रहा था ।

विदेशो मे कुछ लोगों ने इन्हे ईमानदार और भले लोग बताया है । लेकिन यह दुरंगी चाल चलने वाले धोखेबाज़ हैं । ईमानदारी की कैसी विचित्र कल्पना है । कम से कम

१— सिन्यावस्की का लेख इस ग्रन्थ के खण्ड १ मे प्रकाशित हुआ है (इस्तोरिया रुस्कोई सोवेतस्कोई लीतेरातुरी, इज्द अकादमी नौक एस एस एस आर, मास्को १९५८) । एपांनचिन, एलेक्जी तोलस्तोए के उपन्यास "मैनुस्क्रिप्ट फाउन्ड अण्डर ए बैड" का एक पात्र है और मेच्कि फादेएव के उपन्यास 'दि राऊट' का ।

तार्सिस[2] दुरंगी चाल चलने वाला धोखेबाज़ नही था। इन लोगो की तुलना मे तार्सिस भद्र पुरुष है। सिन्यावस्की और डेनियल ने जानबूझकर विश्वासघात का मार्ग अपनाया। यह हो सकता है कि उन्हे काम देने वालो को यह मालूम न हो कि ये लेखक कैसे लोग हैं। फिलीपोव लिखता है "हमारा लेखक, एक छद्म नाम की आड मे·····सभवत फिलीपोव यह नही जानता कि यह छद्म नाम कहा से प्राप्त हुए है—ये अपराधियो के गीतो से लिये गये हैं। ये दोनो माल बेचने वाले (परवेयर्स)—यद्यपि मुझे भय है कि सिन्यावस्की इस शब्द को भी उसी प्रकार नही समझ पायेगा, जिस प्रकार वह "बिचौलिया" (इन्टर-मीज़ियरी) शब्द को नही समझ पाया था। मदाम ज़ामोयस्का को माल बेचने वाले इन दोनो व्यक्तियो को अपने उपनाम अपराधियो की भद्दी भाषा के कूडे-कर्कट के ढेर मे मिले[3]। लेकिन नाम से क्या होता है? ये ऐसे लोग हैं, जिन्हे विदेशी लेखको ने सोवियत बुद्धि-वादियो का प्रतिनिधि बताया है। सोवियत बुद्धिवादियो से हमारा अभिप्राय अकादमेशियन कुर्चातोव, केलदीश, तोवस्तो-नागोव, लान्दो[4] से होता है—हमारा अभिप्राय हजारो लाखो डाक्टरो और इजीनियरो से होता है। सिन्यावस्की और डेनियल का ऐसे लोगो से कोई सम्बन्ध नही है।

इस प्रश्न पर विचार मे बहुत अधिक समय दिया गया है—क्या उन्होंने गलती से ऐसा किया या जानबूझ कर। डेनियल ने कहा है कि उसे अपने कार्यों पर खेद है। लेकिन उसने इस विषय पर अपने मित्रो खमेलनित्स्की और गार्बुज़ेन्को से बातचीत की। इन बातचीतो से यह स्पष्ट होता है कि वह यह जानता था कि वह क्या कर रहा है। "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" को लीजिए: जिस किसी ने भी इसे पढा है, इस बात को समझता है। कि लेखक का क्या अभिप्राय है। प्रत्येक व्यक्ति—अर्थात् लेखक को छोड कर प्रत्येक व्यक्ति इस बात को समझता है। मैं इस अंश को एक बार फिर पढ कर सुनाना चाहूंगा: (दिस इज़ मास्को स्पीकिंग का हत्या सम्बन्धी अंश पढ कर सुनाता है।) तथ्य यह है कि प्रतिवादी केवल अपने छद्म नामो के चुनाव मे ही समान विचारो वाले नही हैं, बल्कि अपने

२—वोलेरी तार्सिस: सोवियत लेखक, जिसने कई वर्ष तक विदेशो मे खुले रूप से अपनी रचनाए (दि ब्लयू बॉटेल और वार्ड ७) प्रकाशित की लेकिन जिसे सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे के समय, सोवियत रूस छोड़ कर जाने की अनुमति दे दी गई। बाद मे तार्सिस को उसकी सोवियत नागरिकता से वंचित कर दिया गया और अब वह पश्चिम मे एक प्रवासी रूसी के रूप मे रह रहा है।

३—देखिए पृष्ठ २१६ की टिप्पणी।

४—आइगोर कुर्चातोव (१९०३-६०), सोवियत परमाणु भौतिकी विज्ञानी; मस्तीस्लाव कलदीश (१९११ मे जन्म), गणितज्ञ और सोवियत विज्ञान अकादमी का अध्यक्ष; जार्जी तोवस्तोनोगोव (१९१५ मे जन्म), प्रसिद्ध सोवियत नाटक निर्देशक; लेव लान्दो (१९०८ मे जन्म), भौतिक विज्ञानी और नोबेल पुरस्कार विजेता।

दृष्टिकोणो और मान्यताओ मे भी ऐसे ही हे। यह साहित्य नही है, वल्कि हत्या करने का खुल्लम-खुल्ला वढ़ावा है और हम जानते है कि किस के विरुद्ध लोगो को उकसाया जा रहा है और टेरट्ज़ क्या कहता है। ("रक्त को जमा देने वाली अतिशयोक्ति"[5] सम्वन्धी अश का उद्धरण देता है) यहा "वे' से उसका अभिप्राय किस से है? सोवियत अधिकारियो से। और "हम" कौन है? अर्जाहक और टेरट्ज जैसे लोग।

अपने वयान मे (आरम्भिक जाच के दौरान) सिन्यावस्की कहता है: "मै अनुभव करता हूं कि मै आवश्यकता से अधिक निराशावादी था। लेकिन तथ्य यह है कि मैने अपनी पाण्डुलिपिया विदेश भेजी और अव मुझे इसका खेद है।" डेनियल भी कहता है कि अव उसकी समझ मे वात आ गई है, लेकिन फिलीपोव की भूमिका पढने के वाद ही। सिन्यावस्की ने यह कह कर भाग निकलने की कोशिश की: "यह एक साहित्यिक विधा है, यह व्यग्य चित्रण है, अतिशय काल्पनिकता है।" क्या यह व्यग्य चित्रण है? ये तो गन्दी गालिया है, यह तो रूस के लोगो के ऊपर थूकना है। वस गोगोल और शचेद्रिन की रचनाओ पर ही नजर डालिए—वहा आप को सोवियत लोगो के वारे मे एक भी वुरा शब्द नही मिलेगा। लेकिन एब्राम टेरट्ज "चोरो और शरावियो के देश, सस्कृति का निर्माण करने मे अक्षम लोगो के देश" की चर्चा करता है। और उसने "ल्यूवीमोव" मे कहा है: (उद्धरण देता है)। यह "ल्यूवीमोव" मे कहा गया है, जो उसकी गर्वयोग्य रचना है और जिस पर वह अत्यधिक आनन्दित है अथवा जैसा कि एक गवाह ने कहा है "यह उसका हसगीत" है। यह वह रूप है, जिसमे श्वेत रक्षक (व्हाइट गार्ड्स) और सोवियत सघ के शत्रु हमारे देश के लोगो को देखना चाहेगे ("ल्यूवीमोव के जगल मे स्थित नगर का इतिहास......" से शुरू होने वाला अश पढ कर सुनाता है, जो फिलीपोव की भूमिका से लिया गया है।) सिन्यावस्की-टेरट्ज के लिये कुछ भी पवित्र नही है। उसके मन मे वहुमूल्य शब्द "मा" के लिए भी सम्मान का भाव नही है। वह माताओ की खिल्ली उडाता है। अन्तिम पृष्ठ पर (ल्यूवीमोव के) उन्हे एक अर्द्ध-शिक्षित पादरी शान्ति प्रदान करता है: "माताएं वहा मौजूद थीं',.... ."

वुर्जुआ समाचारपत्रो में टेरट्ज को "अद्भुत रचनाओ का लेखक" वताया गया है। मैं एक उद्धरण प्रस्तुत करने की अनुमति चाहता हूं, जिससे उसकी 'प्रतिभा" प्रकट हो जायेगी। (उद्धरण देता है "एक स्त्री का गर्भपात हुआ......")

भद्दी भाषा और अश्लील साहित्य के प्रति उसका आकर्षण मानसिक विकृति की सीमा को छूता है। सभवत: पश्चिम के लोग उसकी इन्ही वातो को आकर्षक पाते है। सिन्यावस्की कहता है कि लेखक एक वस्तु है और उसके पात्र दूसरी वस्तु। मै अव एक ऐसा

५—दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट, पृष्ठ १५० ।

६—देखिए दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट, पृष्ठ १८८ ।

उद्धरण दूंगा, जिससे अदालत मे मौजूद लोगो के सम्मान के भाव को गहरा धक्का पहुचेगा लेकिन मैं बेबस हूं (ल्यूबीमोव से लेनिन सम्बन्धी अश पढ कर सुनाता है)। यह अश ल्यूबीमोव का है। और यह उसके निबन्ध "टेकिंग ए रीडिंग" का (लेनिन के "खाता लिखने वाले व्यक्तित्वहीन मुन्शियो जैसे व्यक्तितत्व", "क्राति का साख्यकीकार लेनिन" आदि उद्धरण देता है)। इस लेख का अभियोगपत्र मे उल्लेख नही हुआ। मैं यह उद्धरण केवल यह दर्शाने के लिये दे रहा हूं कि किस भावभूमि मे (ल्यूबीमोव के) पात्रो का विकास हुआ है। इन दोनो में हमे हिसाब-किताब लिखने, साख्यकी, आकडो आदि का उल्लेख मिलता है। सिन्यावस्की ने यह कहने का प्रयास किया है कि उसकी रचनाओ का सम्बन्ध स्तालिन की व्यक्ति पूजा से है, यह झूठ है. (टेकिंग ए रीडिंग से उद्धरण देता है) ? 'लेनिन की तुलना मे स्तालिन को समझ पाना कम कष्टप्रद और आसान है" सिन्यावस्की की समस्त घृणा का लक्ष्य है—लेनिन। इतना ही नही, लेनिन की गभीर बीमारी भी सिन्यावस्की के लिये उनका मजाक उडाने का एक बहाना बन गई है (इसी निबन्ध से मस्तिष्क के स्क्लेरोसिस रोग के बारे मे उद्धरण देता है)। लेनिन के सर्वाधिक मानवीय गुणों पर सिन्यावस्की को हमारे कट्टर शत्रुओ से भी कही अधिक क्रोध आता है। जो लेनिन के सर्वोत्तम गुण है, उनसे वह भयभीत होता है। (उद्धरण देता है· "उसकी मानवीयता और सादगी मे कुछ भयकर वात अवश्य है।") मैं यहा कुछ विषयातर करना चाहता हूं। कल यह पता चला कि सिन्यावस्की को अपने ग्राहको से दो जैकेट, दो स्वेटर, एक सफेद कमीज और रबर के कुछ जूते और अपनी पत्नी तथा अपने पुत्र के लिये कुछ चीजे मिली। आप कह सकते हैं कि यह बहुत अधिक नही है। लेकिन मैं सोचता हू कि यह बहुत कुछ है। यह भी हो सकता था कि सिन्यावस्की के मालिक उसे एक छदाम भी न देते, क्योकि उसकी "रचनाए" १९१८ के मेनशेविक समाचारपत्रो से चुराई गई हैं, जो लेनिन पुस्तकालय मे मौजूद हैं। हम यह सिद्ध कर चुके है कि सिन्यावस्की की पहुच लेनिन पुस्तकालय तक थी। जब उसने अपने मालिकों के लिये काम करते हुए भी, एक क्षुद्र ठग के रूप मे काम किया तो हम कैसे उसकी ईमानदारी की बात कर सकते है ?

कामरेड न्यायाधीशो! सब प्रमाण यह प्रकट करते हैं कि कटघरे मे खडे ये व्यक्ति, सोवियत शासन के भयकर विरोधी हैं और जानबूझकर बदनामी फैलाने वाले है। विशेषज्ञो के बयानो और वास्तविक प्रमाणो के द्वारा यह प्रकट हो जाता है कि हमारे सामने ऐसे दो आदमी मौजूद हैं, जो सोवियत विरोधी हैं और जो यह जानते हैं कि वे क्या कर रहे है। वे यह बात पहले भी समझते थे और पहले भी जानते थे।

मैं सोवियत लेखक सघ के प्रतिनिधि के रूप मे बोल रहा हू और मुझे यह कहते हुए लज्जा का अनुभव हो रहा है कि सिन्यावस्की इस सघ का सदस्य था। प्रत्येक परिवार मे एक भेदिया होता है। लेखक संघ के सब लेखको के नाम पर मैं इन लोगो पर भयकरतम अपराध का अभियोग लगाता हू और अदालत से अनुरोध करता हूं कि उन्हे कडा दण्ड दे।

केन्द्रीय लेखक क्लब की इमारत मे प्रवेश करने वाला प्रत्येक व्यक्ति, संगमरमर के पत्थर पर स्वर्णाक्षरों मे अंकित उन लेखको के नाम देखता है, जिन्होंने महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध मे अपना उत्सर्ग किया। मैं इन दोनो पर, जीवित और मृत सब लेखको के नाम पर अभियोग लगाता हू। इन लोगों को अपने अपराधो के लिये दण्ड मिलना ही चाहिये।

(अदालत मे करतल ध्वनि)।

जन अभियोक्ता जेड० केदरीना का भाषण

नागरिक न्यायाधीशो,

लगातार कई दिन से अदालत के इस कमरे मे मनोवैज्ञानिक चुम्बकत्व का, एक ऐसे ससार का, रहस्यवादी वातावरण तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है, जिसमे आश्चर्यजनक घटनाए कभी समाप्त नही होती। वे [प्रतिवादी] "बिचौलिया" शब्द को नही समझते। वे हमे इस बात से आश्वस्त करते है कि एक आलोचनात्मक लेख में शब्द लेखक के नहीं होते, और इस कारण से लेखक उनके लिये उत्तरदायी नही होता। पर एक रूसी कहावत है: जो कलम से लिख दिया जाता है, उसे कुदाल से नही हटाया जा सकता।" उनकी रचनाए स्वय मुखर हैं।

सिन्यावस्की ने हमे इस बात का आश्वासन दिया है कि उसकी रचनाए साधन और साध्य अथवा पूर्ण-सत्ता के दर्शन जैसे विषयो पर निर्दोष दार्शनिक निबन्ध भर हैं। उनकी दिलचस्पी अतिशय काल्पनिक और यथार्थ का समन्वय करने मे है—इसका क्या प्रभाव उत्पन्न होता है उसके प्रति वे चिंतित नही। इसे शुद्ध कला बताया गया है और कहा गया है कि इसका कोई राजनीतिक उद्देश्य नही। लेकिन "कला कला के लिये" की उक्ति, थोथी कल्पना है। स्वय इसमे ही विश्वास करना एक विरोधी और शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण है······ पर तथ्य यह है कि सिन्यावस्की की रचनाए राजनीतिक अर्थ से भरी है। (सोवियत) जनता को जादूगरनियो, चोरो, ग्राफोमेनियाक्स और शराबियों के रूप मे चित्रित करना हमारी प्रणाली की सरकार को सक्रिय रूप से ठुकराने के समान ही है। सोवियत जीवन के प्रति, सिन्यावस्की का यह दृष्टिकोण होने के कारण वह सच्चे आधुनिक साहित्य को भी ठुकराता है।

सिन्यावस्की ने इस प्रकार रूसी साहित्य की परम्परा का अनुशीलन किया है: "मैं अन्य सब बातो से अधिक गौरव ग्रन्थो से घृणा करता हूं", उसका नायक 'ग्राफोमेनियाक्स" में घोषणा करता है। नायक गौरव ग्रन्थो को व्यर्थ बताता है। ये शब्द नायक के हैं, लेकिन इन शब्दो को सिन्यावस्की ने ही नायक के मुंह मे कहलवाया है। दुआकिन ने इस अंश को आत्मकथा की शैली मे लिखी गई रचना कहा है। गौरव-ग्रन्थों के प्रति यही दृष्टिकोण सिन्यावस्की के प्रबन्ध 'आन सोशलिस्ट रियलिज्म" मे भी व्यक्त हुआ है। "सब गौरव ग्रन्थ", सिन्यावस्की के अनुसार, "ईश्वरान्वेषी और अग्रफल हैं।" समाजवादी यथार्थवाद के मूलाधार

का ही अस्वीकार और इससे भी अधिक मार्क्सवाद तक का अस्वीकार सिन्यावस्की के "कला के सिद्धात" आधार है ।

"[आन सोशलिस्ट रियलिज्म शीर्षक प्रबन्ध के उन अशो को सक्षेप मे प्रस्तुत करती है, जिनमे सामने रखे गये लक्ष्यो और पूरे किये गये लक्ष्यो" जैसे विषयो पर विचार हुआ है, जिनमे पश्चिम के लेखको और हमारे लेखको आदि के बीच भिन्नता पर विचार हुआ है ।]

सिन्यावस्की ने सोवियत साहित्य की समस्त महानतम उपलब्धियो का पुनर्मूल्याकन किया है। देखिए वह लियोनोव के रशियन फोरेस्ट' के बारे मे क्या लिखता है। वह दावा करता है कि सोवियत साहित्य प्रतिक्रियावादी है । और वह गोर्की पर भी प्रहार करता है।

व्यग्य चित्रण की आड, सिन्यावस्की की प्रमुख आड है। वह ब्लोक पर प्रहार करता है, वह मायाकोवस्की पर प्रहार करता है । स्वय अपनी कहानियो मे भी वह लेनिन के नाम पर कीचड उछालने का अवसर नही चूकता । अपने "टेकिग ए रीडिंग" शीर्षक लेख मे वह इलिच (लेनिन) की खिल्ली उडाता है। मायाकोवस्की पर भी घातक प्रहार किया गया है । सिन्यावस्की उसे एक अवसरवादी बताता है……रूस के यथार्थवाद की तुलना "अतिशय कल्पना पर आधारित कला" से करता है ।

फैंटास्टिक स्टोरीज मे एक व्यभिचारी की कल्पना प्रकट हुई है और इसमे जीवन का झूठा चित्र, चित्रित्र किया गया है । इनमे जादू के भेडिए, जादूगरनिया जल-प्रेत, चोर और शराबी ……है । कर्नल तारासोव सहित ("दि आइसिकल" मे) नायक, अनचाहे ही एक भविष्यवक्ता बन जाता है और भावी कम्युनिस्ट आक्रमण की योजना बनाता है ।

(केदरीना यहा अपने साहित्यिक गजट के २२ जनवरी १९६६ के अक मे प्रकाशित दि हेअर्स आफ स्तरद्याकोव शीर्षक लेख को प्राय. पूरा दोहराती है ।)

ये सब बातें बहुत घटिया हैं ।

विज्ञान कथाओ सम्बन्धी अपने लेखो में उसने अतरिक्ष उडानो के बारे मे लिखा है, लेकिन उसके "ल्यूबीमोव" उपन्यास मे एक औरत ही ऐसी है जो अपनी झाड़ू पर सवार होकर, इधर-उधर उडती है और यह कार्य भी काल्पनिक ही होता है ।

(अदालत के कमरे मे हसी) ।

यथार्थवादी शैली के प्रत्येक रूसी लेखक की रचनाओ मे अपना सकारात्मक नायक

७— आन सोशलिस्ट रियलिज्म पृष्ठ ३८-९ ।

८—आन सोशलिस्ट रियलिज्म पृष्ठ ५४ ।

९—सिन्यावस्की ने इस विषय पर ५ जनवरी १९६१ के साहित्यिक गजट मे एक लेख (रियलिज्म फैंटास्टिकी) लिखा था ।

होता है। शचेद्रिन मे यह नायक (रूस के) लोग है। वह अपनी रचना दि हिस्ट्री आफ ए टाउन की भूमिका मे जनता का उल्लेख करता है और क्या 'स्टोरी आफ दि पेजेंट हू फैड टू जनरल्स[10]" यह नही दर्शाती कि रूस के लोग कितने प्रतिभावान है ? लेकिन हमें टेरट्ज़ मे क्या मिलता है ? उसकी कहानियों मे जो एकमात्र श्रमिक है, वह चोर बन जाता है।[11]

(फिर अपने लेख को सक्षेप मे व्याख्या सहित प्रस्तुत करती है।)

सरकारी वकील, ओ० त्योमुश्किन का भाषण

आपके समक्ष कटघरे मे दो सोवियत नागिरक सिन्यावस्की, भाषा विज्ञान का डाक्टर, विश्व साहित्य सस्था का एक वरिष्ठ अनुसधान फैलो, सोवियत लेखक सघ का एक सदस्य और डेनियल, एक कवि और अनुवादक मौजूद हैं।

सोवियत जनता सिन्यावस्की को एक साहित्यिक समालोचक और डेनियल को एक अनुवादक के रूप मे जानती है। लेकिन किस बात ने उन्हे यहा कटघरे मे ला खडा किया है ? तथ्य यह है कि सिन्यावस्की, आन्द्रेय सिन्यावस्की नही, बल्कि "एब्राम टेरट्ज" है। यह नाम अपराधियो के ससार मे गाये जाने वाले एक अश्लील गीत के नायक का नाम है और इसी नाम मे सिन्यावस्की ने अपने हस्ताक्षर किये। डेनियल, "अर्जहक है"।

किसी भी लेखक को एक काल्पनिक नाम से लिखने का अधिकार होता है अथवा वह बिना किसी नाम के भी लिख सकता है। लेकिन इन नामो से उन्होने वे रचनाए प्रकाशित की हैं, जिनका सोवियत सघ मे प्रकाशित उनकी रचनाओं से, उन्होंने इस देश में जो कुछ भी किया, उससे कोई सम्बन्ध नही है। इन रचनाओं मे उन्होंने सोवियत प्रणाली और सोवियत समाज के प्रति अपने पूर्ण असंतोष को प्रकट किया है। उन्होने यह दर्शाया है कि रूस एक पागलखाना ही है।

सिन्यावस्की और डेनियल "गुप्त मानसिक विभाजन[12]" वाले लोग है। ये लोग

१०—यह माल्तीकोव शचेद्रिन के अत्यधिक व्यंग्यपूर्ण कथाओ के सग्रह फेरीटेल्स (स्काजकी १८६९--८६) की एक कहानी है। रूस के कृषक समुदाय की निष्क्रियता को दर्शाने के लिये शचेद्रिन एक किसान के बारे मे लिखता है, जो दो जनरलों के साथ एक रेगिस्तानी द्वीप मे फंस जाता है और निरन्तर उनके लिये भोजन जुटाता है और उनके लिये अन्य व्यवस्थाए करता है।

११—इसका अभिप्राय दि क्लासिकल एण्ड अदर स्टोरीज की कहानी "एट दि सर्कस" मे ही होना चाहिये।

१२ - देखिए "सिन्यावस्की की अन्तिम अभियुक्ति' मे दी गई पाद-टिप्पणी नम्बर ८.

आन्तरिक प्रवासी है।[12] इन लोगो पर रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्डसहिता की धारा ७० के अन्तर्गत अभियोग लगाया गया है। (इस धारा को पढकर सुनाता हूँ) गहराई से, विस्तृत विचार करने के बाद, प्रस्तुत प्रमाण यह कहने का कारण प्रस्तुत करते है कि ये लोग अपराधी हैं और इनका अपराध सिद्ध हो चुका है।

अनेक प्रश्नो पर शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण अपना कर ये लोग सन् १९५६ से ही लिखते रहे हैं और उन्होने ऐसी रचनाए लिखी है, जिनमे सोवियत प्रणाली को बदनाम किया गया है। सिन्यावस्की ने जामोयस्का से सम्पर्क कायम किया, जो मास्को स्थित फ्रासीसी दूतावास के नौसैनिक सहचारी की पुत्री थी और स्वय अपनी तथा डेनियल की पाण्डुलिपिया गैर-कानूनी तरीके से देश से बाहर भेजी। इन रचनाओ का सर्वत्र प्रतिक्रियावादी और यहा तक कि प्रवासी रूसी प्रकाशको तक ने प्रकाशन किया। इन रचनाओ का खूब प्रचार किया गया है और इनका सक्रिय रूप से अनुचित लाभ उठाया गया है।

सन् १९५६ मे सिन्यावस्की ने "दि ट्रायल बिगिन्स" और "ऑन सोशलिस्ट रियलिज्म" शीर्षक रचनाए लिखी है, जिनमे वह हमारी विचारधारा पर सीधा प्रहार करता है, पार्टी और राज्य को बदनाम करता है और हमारे देश के लोगो की खिल्ली उडाता है। सन् १९६१ मे उसने "ल्यूबीमोव" लिखा और इसे ११६३ मे विदेश भेजा।

सन् १९५६-५७ मे डेनियल ने अपनी कहानी "हैड्स" लिखी, जो गृहयुद्ध के वर्षों मे वर्ग संघर्ष की नीति का प्रवादात्मक विवरण है। सन् १९६१ मे उसने "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" कहानी लिखी, जो सोवियत जीवन के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण प्रवाद है और जिसमे आतक फैलाने का प्रोत्साहन दिया गया है और उसने "दि मैन फ्राम मिनाप" कहानी लिखी, जो हमारी जीवन प्रणाली के विरुद्ध है, हमारी नैतिकता के विरुद्ध है, हमारे आचार के विरुद्ध है। १९६३ मे लिखी गई "अटोनमेट" कहानी नैतिक पतन और ह्रास का चित्र प्रस्तुत करती है।

सिन्यावस्की ने उसका (डेनियल) परिचय जामोयस्का से कराया और इस प्रकार उसकी रचनाओ को विदेश भिजवाने मे मदद दी और स्वय उसकी रचनाए जामोयस्का को दी। उसने रेमेजोव को अपनी चार रचनाए विदेश भेजने मे सहायता दी[14]। इसके अलावा ये दोनो अपनी रचनाओ को अपने घनिष्ठ परिचय के लोगो मे प्रचारित करने के भी अपराधी है।

१३—उन लोगो के लिये प्रयुक्त मानक सोवियत शब्द (वनुत्रेनी एमीग्रेन्त) जिनका दृष्टकोण और मनोवृत्ति प्रवासियो जैसी होती है, यद्यपि वे शारीरिक रूप से सोवियत सघ मे रहते है।

१४—लगता है इन मे से दो ही पश्चिम मे प्रकाशित हुई। देखिए पृष्ठ १८१ पर दी गई टिप्पणी।

प्रतिवादियों ने अपने अपराध को स्वीकार नही किया है। लेकिन उन्होने उन रचनाओ को लिखने से भी इनकार नही किया है, जो उन्होने गैर-कानूनी ढग से विदेश भेजी। उन्होने इसका कारण बताते हुए कहा है कि अपनी रचनाओ को प्रकाशित कराने की इच्छा से उन्होने अपनी रचनाए विदेश भेजी। लेकिन उन्होने किसी भी द्वेषपूर्ण ईरादे को स्वीकार करने से इन्कार किया है। इस बात का प्रमाण कि इन लोगो ने ये रचनाए लिखी और ये इन रचनाओ को विदेश भेजने के अपराधी है। गार्बुजेन्को, खजानोव और आजबेल के बयानो मे मौजूद है, जो यह जानते थे कि रचनाएं लिखी गई और देश से बाहर भेजी गई। गार्बुजेन्को ने ये रचनाए पढी हैं और इन्हे प्रकाशित रूप मे देखा है। पेत्रोव और रेमेज़ोव के बयानो से यह स्पष्ट है कि उन्होने सिन्यावस्की की रचनाए पढी हैं। दोकुकिना, जिसने सिन्यावस्की की पाण्डुलिपिया अपने पास रखी, प्रबन्ध [आन सोशलिस्ट रियलिज्म] और दि ट्रायल बिगिन्स पढे[15]।

इन रचनाओ के बारे मे विशेषज्ञो की एक रिपोर्ट भी मौजूद है। सिन्यावस्की के बारें मे इस रिपोर्ट मे कहा गया है, "इन सब रचनाओ मे छद्म मिथ्या कथन, स्वप्नो और दिवा-स्वप्नो का साहित्यिक प्रभाव उत्पन्न करने के लिये इस्तेमाल किया गया है। इन रचनाओ मे सर्वत्र ऐसा आक्रात मस्तिष्क प्रकट होता है, जो एक अस्वस्थ मस्तिष्क ही हो सकता है। इन रचनाओ मे जो विशिष्ट विचार प्रकट किये गये हैं, वे फ्रायडवाद से लेकर यहूदी विरोध, सैक्स और "ईश्वरान्वेषण" तक हैं। "विशेषज्ञो की रिपोर्ट यह स्पष्ट कर देती हैं कि ये रचनाए सोवियत विरोधी प्रचार के लिये लिखी गई थी। ये स्पष्टतया राजनीतिक रचनाएं हैं।

अर्जेंहक (यह डेनियल का छद्म नाम है) की रचनाओ के बारे मे विशेषज्ञो की रिपोर्ट मे कहा गया है : "इन्हे एक सोवियत विरोधी विचार को अभिव्यक्ति देने की इच्छा से लिखा गया। साहित्यिक शैली अपरिष्कृत और घटिया है और रचनाए एकदम निकम्मी हैं। ये राजनीतिक रचनाए हैं, जिन्हे साहित्यिक जामा पहनाया गया है।"

रेमेजोव का बयान यह सिद्ध करता है कि सिन्यावस्की ने उसे (रेमेज़ोव को) उसकी सोवियत विरोधी रचनाओ को विदेश भेजने मे सहायता दी।

जिन परिस्थितियो में इन रचनाओ को लिखा और देश से बाहर भेजा गया, वे एकदम स्पष्ट हैं। लेकिन सोवियत विरोधी इरादे और इन रचनाओ के उद्देश्य के प्रमाण को कष्टसाध्य विश्लेषण के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। टेरट्ज़ और अर्जेंहक की रचनाओ की विषय वस्तु हमारी प्रणाली, पार्टी और राज्य के प्रति शत्रुतापूर्ण भाव का प्रमाण है। ये रचनाए बदनामी और पार्टी तथा सरकार पर प्रहारों से भरी पटी है और केवल यही कारण था कि उन्हे विदेशो मे प्रकाशित किया गया, यद्यपि साहित्यिक दृष्टि मे

१५—दोकुकिना ने यह स्वीकार किया था कि उसने पाखेनत्ज़ शीर्षक कहानी पढी है, दि ट्रायल बिगिन्स नही। देखिए पृष्ठ २७५।

ये घटिया रचनाए है। विदेशो मे इनका प्रकाशन केवल प्रचार के लिये किया गया और अन्य किसी कारण से नही। इन रचनाओं का स्वरूप स्पष्ट रूप से सोवियत विरोधी है।

उदाहरण के लिये, "ल्यूबीमोव" को लीजिए (वह अश पढ कर सुनाता है, जिसमे लोग गोश्त के स्थान पर मिर्च खाते है)। [दूसरे शब्दो मे] सोवियत सरकार जनता को बेवकूफ बनाने की बात को कोई महत्व नही देती। उन्हे यहा भुखमरी से पीडित दिखाया गया है। यह घटना ल्यूबीमोव नगर के बारे मे बताई गई है। लेकिन यह वस्तुत साम्यवाद के बारे मे है।

कामरेड न्यायाधीशो। साम्यवाद का, हमारे उज्ज्वल लक्ष्य का यह चित्र प्रस्तुत करने के लिये, सब प्रगतिशील विचारो के विरुद्ध प्रवाद फैलाने और उनका मजाक उडाने के लिये कैम्पानेला, फूरियर और ओवेन के विरुद्ध प्रवाद फैलाने और उनका मजाक उडाने के लिये एक व्यक्ति को कितना कुटिल होने की आवश्यकता है, उसे किस गहराई तक नीचे गिरने की आवश्यकता है! प्रत्येक मूल्यवान वस्तु को भयकर अवहेलना से ठुकरा दिया गया है। रूस को दुर्गम जगलो मे स्थित एक गरीब और भूख से पीडित देश दिखाया गया है और लोगो को पद्दलित और कठोर परिश्रम से टूटा हुआ दिखाया गया है। (वह उस अश का उद्धरण देता है, जिसमे लेन्या एक झरोखे से बोलते हुए कहता है "अपने सिर ऊपर उठाओ" .....")

उपन्यास, लेनिन की रचनाओं से लेकर और उन्हे अपमानजनक ढग से तोड-मरोड कर रखे गये वाक्यो और उक्तियो से भरा पडा है। (अथवा 'राहत के समय' सम्बन्धी अश का उद्धरण देता है) सौ रूबल के नोटो से भरी हुई दीवारो वाले कमरे का परोक्ष रूप से उस बात से सम्बन्ध है, जो लेनिन ने धन की भूमिका के बारे मे कही है। कितनी अमानुषिक घृणा है! गोर्की मे लेनिन के अन्तिम दिनो का उसने जो चित्रण किया है उसमे इससे भी कही गहरी घृणा भरी है। मैं आप को इसे एक बार फिर सुना कर कष्ट नही पहुचाऊगा। यह विश्वास कर पाना बडा कठिन है कि एक सोवियत नागरिक जो एक सोवियत स्कूल और विश्वविद्यालय मे पढा, जिसने विज्ञान के डाक्टर की उपाधि प्राप्त की और इसी देश मे अपने पावो पर खडा हुआ है, ऐसी कोई बात लिख सकता था।

हा तो, "ल्यूबीमोव" मे कम्युनिस्ट विचारधारा असफल रही है (नगर का विवरण पढता है[१६])।

१६—दि मेकपीस एक्सपेरिमेट, पृष्ठ १०२। यह वह भाषण है, जिसमे ल्यूबीमोव के लोगो को सम्मोहन क्रिया द्वारा यह विश्वास दिलाया गया था कि वे स्वय कम पारिश्रमिक पर अधिक श्रम करना चाहते हैं।

१७—इन दो पैराग्राफो मे उल्लिखित बातो के लिये देखिए वही पृष्ठ १२६-७। गोर्की लेनिन का मास्को के पास देहात मे स्थित मकान था, जहां उनकी मृत्यु हुई। लेनिन के अन्तिम दिनो के प्रति जो सकेत हुआ है, उसके लिये देखिए प्रस्तावना पृष्ठ ३८।

दूसरे शब्दों में ल्यूबीमोव को पढने से व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुचता है कि वह उग्र सोवियत विरोधी रचना है, जिसकी प्रत्येक पक्ति सोवियत विचारो और सोवियत प्रणाली के विरुद्ध है। काल्पनिकता तो केवल एक सुविधाजनक माध्यम है, रूपक का उपयोग तो केवल हमारी अर्थ-व्यवस्था और अन्य सब बातों का विवरण प्रस्तुत करने के लिये किया गया है और इसमे सैनिक आक्रमण जैसी भी एक बात है······इसी रूप मे ल्यूबीमोव को पश्चिम के देशो मे समझा गया। हमारे शत्रुओ को ठीक वही प्राप्त हुआ, जो वे चाहते थे। "रेडियो लिबर्टी" ने निरर्थक ही अपने तीन प्रसारणो मे इस उपन्यास को प्रसारित नही किया। टेरट्ज की कहानिया (अर्थात् फैंटास्टिक स्टोरीज) उसके विरुद्ध लगाये गये अभियोगों में शामिल नही की गई हैं। इन कहानियो मे पागलो, शराबियो, समाज से बहिष्कृत लोगो और अपराधियो की भरमार है। लेखक को इस देश की प्रत्येक वस्तु अपराध, शराबखोरी और मानसिक अस्वास्थ्य के लिये प्रेरणा देती हुई दिखाई देती है। लेकिन उसकी रचनाओ मे दि ट्रायल बिगिन्स अपनी अलग ही विशिष्टता रखता है। कथावस्तु की दृष्टि से यह एक अश्लील रचना है और एक घटिया उपन्यासिका के स्तर की है। यह मार्क्सवाद के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण प्रवाद से भरी पडी है। और इसके पात्र सोवियत विरोधी है। सिन्यावस्की, अपने एक पात्र के माध्यम से बोलते हुए, हमारे महान् भविष्य के बारे मे यह कहता है [मछलियो सम्बन्धी अश का उद्धरण देता है] कितनी असाधारण कुटिलता है। क्या इस सब मे प्रत्येक सोवियत वस्तु के प्रति खुली घृणा नही भरी है ? और भविष्य किन लोगों के हाथों मे है ? तोल्या और वित्या[१८]। इन दो पात्रो से लेखक आतक से भर जाता है और वह इन्हे एक प्रतीक मे बदल देता है [उपसहार का उद्धरण देता है।] क्या इसका सम्बन्ध स्तालिन की व्यक्ति पूजा से हो सकता है ? लेखक कहता है कि "स्वामी" की मृत्यु के बाद से कुछ भी नही बदला है······दि ट्रायल बिगिन्स के सोवियत विरोधी सार को समझने के लिये उपसहार बडा महत्वपूर्ण है (उपसहार से लम्बे अश पढ़कर सुनाता है—इसमे एक अश इस सम्बन्ध मे है कि लेखक किस तरह गिरफ्तार किया गया और इसमे यह भी विवरण है कि कोलिमा के बलात् श्रम शिविर मे किस प्रकार रोटी का बटवारा होता है।) अतः हम देखते हैं कि कुछ साहित्यिक घटिया बातो का किस प्रकार उपयोग कर लेखक हमारी प्रणाली के विरुद्ध प्रवाद फैलाता है। इतना ही नही श्रम शिविर में रोटी का बटवारा एक प्रतीक बन जाता है, उपभोक्ता वस्तुओ का साम्यवादी वितरण बन जाता है। निर्दोष लोग काटेदार तारो के पीछे बैठे हैं और अपनी रोटी को बाट कर खाते हैं—यही हमारा समाज है और इसके आदर्श हैं।

कम्युनिस्ट विचारधारा के असफल हो जाने के बाद ल्यूबीमोव का विवरण १७६-७ पर दिया गया है।

१८—खुफिया पुलिस के दो एजेंट जिनका उल्लेख पृष्ठ २३४ पर दी गई टिप्पणी मे हुआ है।

अपने निबन्ध मे सिन्यावस्की ने समाजवादी अयथार्थवाद का विश्लेषण करने का प्रयास किया है, लेकिन यह केवल धोखे की टट्टी भर है। यदि यह बात इससे अधिक न होती तो आज लेखक यहां कटघरे मे न बैठा होता। समाजवादी यथार्थवाद की असफलता की चर्चा के पीछे एक राजनीतिक मान्यता छिपी है, जिसके अध्ययन से लेखक की अन्य रचनाओ और इन रचनाओ के पात्रो के कथन को समझने के लिये अन्तर दृष्टि मिलती है और इसके आधार पर लेखक का अभिप्राय भी समझा जा सकता है। इस बात से जरा भी सदेह नही रह जाता कि सिन्यावस्की का दृष्टिकोण अत्यधिक सोवियत विरोधी है [अतिशयोक्ति सम्बन्धी उद्धरण देता है]। अतिशयोक्ति—विदेशो मे प्रकाशित उनकी रचनाए यही हैं। कम्युनिस्ट विचारधारा को निरर्थक अवैज्ञानिक सिद्ध करने के लिए सिन्यावस्की लिखता है· [उद्धरण देता है "गुरिल्ला अपनी पिछली टागो पर खडा होता है", "समस्त समार की गदगी", "ताकि जेले सदा के लिये अन्तर्धान हो जाये [१९]" लेखक हमारी मान्यताओ पर कीचड उछालता है।

सिन्यावस्की पार्तीनोस्त[२०] की माग को, कर्त्तव्य के प्रति धार्मिक निष्ठा की माग और हठधर्मिता के समान बताता है: "वह जो विश्वास नही करेगा, जेल जायेगा[२१]।" वह यह आरोप लगाता है कि सोवियत प्रणाली अपना स्वरूप बदल रही है, कि क्राति के दौर जो आदर्श थे आज ठीक उनके विपरीत आदर्श है। वह लेनिन पर कीचड उछालता है और द्वेषपूर्ण तरीके से, कुटिल रूप से, मायाकोवस्की के प्रति सहानुभूति प्रकट करता है। मान्य परम्पराओ के विरुद्ध बातें कहने की चरम सीमा उस समय आती है, जब वह लेनिन की चाद की ओर मुह उठा भौकने की बात कहता है और 'ऐसे इन सैल्फ एनलेसिस" (टेकिंग ए रीडिंग) मे भी लेनिन के बारे मे ऐसी ही अपमानजनक बातें कहता है "आदर्श किस्म का विद्वान", उसके जीवन और मृत्यु की प्रतीकात्मकता—मस्तिष्क का भयकर स्क्लेरोसिस रोग और स्करोसिस रोग के अलावा अन्य कुछ नही" आदि उद्धरण देता है। "लेनिन ने सदा लोगो को अपनी मानवीयता, अपनी स्पष्टवादिता और निष्ठा से आकर्षित किया है [लेनिन के सम्बन्ध मे गोर्की के उद्धरण देता है], लेकिन इस निबन्ध में लेनिन को "एक भयकर साइबरनेटिक मशीन" "क्राति का साख्यीकार" कहा गया है। लेनिन के सर्वाधिक आकर्षक गुण, तर्कसंगत रूप मे विचार करने की उनकी क्षमता सहित ये गुण, टेरट्ज को भयभीत करते हैं। ये विद्वेषपूर्ण और अपमानजनक वक्तव्य हैं। सिन्यावस्की छिपी आलोचना के रूप मे इस बात पर खेद प्रकट करता है कि लेनिन की व्यक्तिपूजा शुरू करना असंभव है।

१९—आन सोशलिस्ट रियलिज्म के पृष्ठ ३१, ३७ आर ४८।

२०—यह शब्द पार्टी के समक्ष पूर्ण समर्पण और इसकी विचारधारा सम्बन्धी मागो के पूर्ण स्वीकार का द्योतक है।

२१—वही पृष्ठ ४१।

वह तर्क देता है कि स्तालिन को देवता मान लिया जाना चाहिये, क्योंकि हमारा समाज घोखे धड़ी पर निर्भर करता है ।[22]

सिन्यावस्की ने अपनी सब सोवियत विरोधी रचनाएं डेनियल को दिखाई, जिसने उसके मार्ग का अनुसरण किया और सिन्यावस्की की मदद से "हैंड्स" कहानी विदेश भेजी।

"हैंड्स" कहानी एक ऐसे व्यक्ति के दुर्भाग्य के बारे मे है, जो चेका के लिये काम करता था [कहानी को सक्षेप मे बताता है]। मानो अर्जेहक की कहानी के सत्य की पुष्टि के लिये फिलीपोव "हैंड्स" की अपनी भूमिका मे एक ऐसी ही कहानी के बारे मे बताता है, जो उसने उख्ता के श्रम शिविर मे रहते समय सुनी थी। (इस प्रकार) नव-निर्मित (सोवियत) राज्य की नीति को अमानुषिक और लोगों को शारीरिक और मानसिक रूप से पगु बनाने वाली दर्शाने की कोशिश की गई है।

"दि मैन फाम मिनाप" हमारे समाज की बदनामी करने के लिये, हमारी नैतिकता और हमारे आचार पर कीचड उछालने के लिये लिखी गई एक भौंडी बदनामी फैलाने वाली कहानी है। (सक्षेप मे कहानी का सार देता है)। यह विषय एक अश्लील किस्से के लिये उपयुक्त विषय है, जैसा कि स्वय फिलीपोव कहता है, लेकिन फिलीपोव इसके बावजूद इस बात का स्वागत भी करता है, क्योंकि इस कहानी का छिपा स्वर सोवियत विरोधी है, क्योकि, स्वय उसके अनुसार, लेखक ने यह अश्लील कहानी इतने प्रतिभाशाली ढग से कही है......

अत., कामरेड न्यायाधीशो, सोवियत समाज, अर्जेहक के अनुसार एक कुटिल और पतित समाज है। लेखक इसकी खिल्ली उड़ाने का एक भी अवसर अपने हाथ से जाने नही देता (उद्धरण देता है "लेकिन तुम भी तो एक कोमसोमोल अर्थात् युवक कम्युनिस्क संगठन ही हो") अन्तिम अश सोवियत विरोधी प्रवादो से भरा पडा है।

कामरेड न्यायाधीशो, मैं यह बात जोर दे कर कहता हू कि मैं लेखक को जीवन के बुरे पक्ष को चित्रित करने के अधिकार से वचित करने की बात नही कहता। मैं यह जोर दे कर कहता हूं कि हमारे मध्य कुछ नैतिक दृष्टि से पतित व्यक्ति हैं। लेकिन क्या लेखक—मायाकोवस्की, माइखलकोव और अन्य लेखकों की तरह इन बुराइयो को समाप्त करना चाहता है अथवा वह इन्हे इकट्ठा कर, इन्हे बढा चढा कर और इन्हें चित्रित करके विदेश भेजना चाहता है और वहां इन्हे सोवियत समाज के सच्चे चित्र के रूप मे प्रस्तुत करना चाहता है? यदि ऐसा है तो यह एक अत्यधिक घटिया और भौंडा आविष्कार है और इसका उद्देश्य केवल सोवियत विरोधी ही है क्योंकि वह इसे हमारे जीवन सम्बन्धी सत्य के रूप में ही प्रस्तुत करना है।

२२—लेनिन और स्तालिन की व्यक्ति पूजा सम्बन्धी उल्लेख आन सोशलिस्ट रियलिज्म के पृष्ठ ६७ पर हैं।

इससे भी अधिक सोवियत विरोधी कथानक है 'अटोनमेंट" का (कथानक को संक्षेप मे बताता है)। हमारे देश के जीवन के वर्तमान दौर को ह्रास का दौर बताया गया है, जिसमे लोगो के मन मे पार्टी के लक्ष्यो के प्रति कोई विश्वास नहीं रह गया है।

यह पूरी की पूरी रचना रोगग्रस्त, मस्तिष्क की उपज और पागलों के प्रलाप जैसी मालूम पडती है और बीच-बीच मे सोवियत विरोधी गीत गाये गये हैं (उद्धरण देता है: "हम रूसी हैं......") इसमे टेरट्ज की अनगार्डेड थॉट्स मे निहित उक्तियो की कैसी प्रतिध्वनि हुई है यह दावा भी किया गया है कि देश के सब लोग निष्क्रियता के दोषी हैं (उद्धरण देता है: "भाई-भाई के खिलाफ उठ खडा होगा")। पाठक को अनिवार्य रूप से इस निष्कर्ष पर पहुचाया जाता है कि शुद्धि अभियानो के दौर मे लोगो ने जो निष्क्रियता दिखाई थी उसके लिये प्रायश्चित्त की आवश्यकता है। पूरे राष्ट्र को आतक से ग्रसित दिखाया जाता है (उद्धरण देता है: "जेलो को बन्द नही किया गया है......")।

इसका उपयोग सोवियत विरोधी समाचारपत्र कर रहे हैं। तो क्या आश्चर्य कि इस कहानी का प्रकाशक भयंकर बुराइयो के लिये सार्वभौम और सामूहिक उत्तरदायित्व का, अपना मनमाना निष्कर्ष निकालता है।

लेकिन अर्जहक की सब कहानियों मे सबसे अधिक स्पष्ट और भयंकर कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग है", जिसमे लेखक ने यह दर्शाया है कि वह जेसुइटवादियों की तरह वह आप की हर बात की खिल्ली उड़ाने की क्षमता रखता है—वह देश की समृद्धि और विकास की खिल्ली उडाने की भी क्षमता रखता है। यही बात कहानी एक पात्र, एक शिक्षित व्यक्ति कहता है (उद्धरण देता है)। प्रश्न यह उठता है कि लेखक को ऐसी मूर्खतापूर्ण और झूठी बातो का आविष्कार करने की आवश्यकता क्यो हुई। उसने इनका आविष्कार इसलिए किया, ताकि इस पृष्ठभूमि मे, जिसे प्रवादात्मक तरीके से यथार्थ दर्शाया गया है, प्रत्येक सोवियत वस्तु, हमारी जीवन प्रणाली, हमारे समाजवादी सिद्धातो के विरुद्ध खुल्लम खुल्ला आतंकवादी नारे लगा सके और उनके विरुद्ध प्रवाद फैला सके। वह सबसे पहले समाचारपत्रों पर प्रहार करता है (उद्धरण देता है)। इसके बाद वह सोवियत लेखकों को लेता है, जिनसे वह और सिन्यावस्की भयंकर घृणा करते हैं और जिन्हें वह "ब्लैक हंड्रेड्स बताते हैं—और ये लेखक हैं सोफरोनोव, बेजीमिन्स्की और माइखेलकोव[23] और (इस कहानी मे) सोवियत बुद्धिवादी कैसा आचरण करते हैं? (उद्धरण देता है)। वह सोवियत जनता के विरुद्ध प्रवाद फैलाता है। उन्हे यहूदी विरोधी बताता है, जो उनके विरुद्ध सफाया करने का एक और अभियान छेडने की प्रतीक्षा में बैठे हैं "बाबीयार" सम्बन्धी अश का उद्धरण देता है।[24]

२३—देखिए पृष्ठ २६१ और २०२ की पाद टिप्पणियां। "ब्लैक हंड्रेड्स" के अर्थ के लिये देखिए पृष्ठ ३२ की पाद टिप्पणी।

२४—"दिस इज मास्को स्पीकिंग" का एक यहूदी पात्र इस बात से डरता है कि सार्वजनिक हत्या दिवस के परिणामस्वरूप कही १९४१ मे बाबीयार मे यहूदियों के बड़े

"वे" कौन हैं, मैं यह प्रश्न तुम से पूछना चाहता हूं डेनियल ? बावीयार में गोलिया कौन चला रहा था। तुम अपने देशवासियो की तुलना किस से कर रहे हो ? फासिस्टों से।

डेनियल यह चित्र प्रस्तुत करता है कि आर्मीनियावासी, जार्जियावासी, अजरबेजान के लोग, मध्य एशिया के लोग, रूसी जाति के लोग एक दूसरे के कट्टर शत्रु बने हुए हैं और एक दूसरे का गला काटते हैं और इस हत्याकाण्ड का निरीक्षण करती है पार्टी। लेखक कम्युनिस्ट पार्टी और जनता पर प्रहार करते हुए, अपने पात्रो के माध्यम से यह जोर देकर कहता है कि ये घटनाएं हमारी प्रणाली की विशिष्टताएं है, कि सन् १९३७ की घटनाएं सोवियत प्रणाली के स्वरूप में बुनियादी और स्वाभाविक रूप से निहित थी। कैसी भयावह ईजाद है ?

कहानी का नायक पाठक को सबोधित कर अनेक भडकाने वाले भाषण करता है। नायक कहता है कि किसकी हत्या की जानी चाहिये। डेनियल ने हमे इस बात से आश्वस्त करने का प्रयास किया है कि उसके नायक का हत्या करने का कभी कोई इरादा नही था और वस्तुत. उसने हत्या की भी नही लेकिन हम जानते हैं कि वह उस उद्बोधन में क्या कहता है ? (उद्धरण देता है)। मैं इस पूरे उद्बोधन को नही पढ सकता—इसके कुछ अंश मुद्रण योग्य नही हैं। लेकिन इस घृणा के लक्ष्य कौन हैं ? ये लोग कौन हैं—ये "मोटे मूर्ख जो अग्रिम टोलियों और मण्डलो के सदस्य है ?" यदि यह आतक फैलाने को खुल्लम खुल्ला बढ़ावा देना नहीं है तो यह क्या है ?

एक बार फिर (कहानी के) विभिन्न भागो की तर्कसंगत सूत्रबद्धता दर्शाने के लिये वह दृश्य को मकबरे पर स्थानांतरित कर देता है और इस समस्त जंगलीपन से भरी और पागलों जैसी ईजाद को पश्चिम के देशो मे बडे हर्ष से ग्रहण किया जाता है और फिलीपोव इसे एक सत्य के रूप में प्रस्तुत करता है।

मैंने इस बात पर बडी गहराई से विचार किया है कि आखिर डेनियल को ये भयकर प्रवाद फैलाने, ये भयकर अपमानजनक बातें कहने के लिये किस बात ने प्रेरित किया। वह इस तारीख १० अगस्त १९६० की तारीख की ओर क्यो आकर्षित हुआ ? मैंने उस तारीख के प्रावदा के अंक को देखा। १० अगस्त के प्रावदा मे स्कूल की इमारतें बनाने का एक प्रस्ताव था, कुस्तानेस्त क्षेत्र मे फसल की कटाई के समाचार थे। एक सामूहिक किसान के बारे में समाचार था, जिसने छ बच्चों की जीवन रक्षा की। इसमे एक पृष्ठ पावर्स" के बारे

पैमाने पर हत्याकाण्ड की फिर पुनरावृत्ति न हो। देखिए डिसोनेंट वॉयसेज़ पृष्ठ २७३।

२५—वही देखिए पृष्ठ २६६।

२६—लाल चौक स्थित लेनिन का मकबरा, देखिए पृष्ठ १७१-२।

२७—अर्थात् गेरी पावर्स, अमरीकी यू-२ विमान का चालक, जिसे १९६० में रूस के ऊपर मार गिराया गया था।

मे भी था। ये सब बातें हमारे जीवन की, प्रति दिन की सामान्य बातें है। कितने अमानुषिक ढग से इनके विरुद्ध प्रवाद फैलाया जा सकता है ?

इन दोनो लेखको के कला सम्बन्धी महत्व का जहा तक सम्बन्ध है, ये दोनो समान रूप से प्रभावहीन, समान रूप से घटिया हैं। वे प्रत्येक सर्वाधिक पवित्र बात पर, सर्वाधिक शुद्ध और पूज्य मान्यता पर—प्रेम, मित्रता और मातृत्व पर कीचड उछालते है (उद्धरण देता है)। उनके स्त्री पात्र या तो अत्यधिक अमानुषिक है अथवा कुतियाओ जैसा आचरण करने वाले। उनके पुरुष पात्र व्यभिचारी हैं (उद्धरण देता है)। एक पत्नी सस्ती मिलती है लेकिन इसके लिये अत्यधिक मूल्य देना बेहतर है। मैं अर्जेहक की कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" से एक और उद्बोधन का उद्धरण देना चाहूंगा (उद्धरण देता है)। 'स्नान घर की फुवार के पानी से ये निकलते हैं[२९]" (और यह उद्धरण है टेरटज का) "शौचालय मे आप एकाकी रह पाते हैं[३०]।"

और यही बात उनकी रचनाओं के बारे मे भी कही जा सकती है—यह शौचालय के पात्र मे पानी बहने से होने वाली आवाज़ के समान है।

कोई भी बुर्जुआ प्रकाशक, विकृत अभिरुचि, अश्लीलता और भोंडेपन के इस सम्मिश्रण को एक लम्बे बास से भी छूने को तैयार न होता, लेकिन इन रचनाओ के सोवियत विरोधी स्वरूप का धन्यवाद कि खरीदार मिल गये। सिन्यावस्की और डेनियल मे अनेक समानताएं हैं।

उनके विचार, देश के बाहर पाण्डुलिपियां भेजने के उनके तरीके, जो विचार विनिमय उन्होंने मिल कर किये, उनकी रचनाओं पर विदेशी प्रकाशको ने जो राजनीतिक निर्णय आधारित किये, उन सब में समानताए हैं। यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि उनमे से किसी ने भी अपनी पाण्डुलिपिया अपने घर पर नही रखी और दोनो ने छद्म नामो का प्रयोग किया। इन सब बातों से उनका सोवियत विरोधी उद्देश्य पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। जहां अदालत मे उन्होने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि या तो उन्हे इस बात की जानकारी नही थी कि विदेशो मे उनकी रचनाओ के बारे मे क्या कहा जा रहा है अथवा उन्हे यह जानकारी अत्यधिक बिलम्ब से मिली। लेकिन यह सिद्ध किया जा चुका है कि यहाँ और विदेशो मे उनकी रचनाओ के बारे मे समाचारपत्रो मे उनकी जो टिप्पणिया प्रकाशित हुई, उनकी जानकारी उनको कम से कम १९६२ से थी। यहा मेरा अभिप्राय रेडियो प्रसारण, "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" के प्रसारण और रियूरिकोव के लेख से है। लेकिन इसके बाद भी इन लोगों ने इसे (रोकने के लिये) कोई कारवाई नही की, बल्कि चार और कहानियां

२८—यह सदर्भ "यू एण्ड आई" कहानी का है (दि आइसिकल एन्ड अदर स्टोरीज, पृष्ठ ११५)।

२९—डिसोनैंट वॉयसेस, पृष्ठ २८४।

३०—यहा "पखेनद्ज" का उल्लेख है। (देखिए एनकाउंटर, मार्च १९६६)।

विदेश भेजीं। ये कहानियां हैं "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग", "अटोनमेंट", "दि मैन फ्राम मिनाप" और "ल्यूवीमोव।" इन लोगो ने अपना समस्त द्वेष और घृणा-भाव अपनी रचनाओं में भरा। वे जानते थे कि यह बदनामी फैलाने की बात है, इन लोगो ने सब कुछ जानबूझ कर किया, इन लोगों ने यह कार्य हमारी प्रणाली को असफल दर्शाने और उनकी निन्दा करने के लिये किया। धारा ७० इन्हीं बातों पर लागू होती है।

इस समय जबकि विचारधारा सम्बन्धी युद्ध को उग्र बनाया जा रहा है, जबकि अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियावाद की समस्त प्रचार व्यवस्था को सक्रिय किया जा रहा है, जो इनकी जासूसी सेवाओं से सम्बन्धित हैं और इसका उपयोग हमारे युवकों मे हेत्वाभासवाद का विष फैलाने, हर सभव तरीके से हमारे बुद्धिवादी क्षेत्रों में घुसपैठ करने, विद्वेष और विरोध के बीज बोने और सिन्यावस्की और डेनियल जैसे लोगों की मार्फत-जिन्होंने डालरों के लिये, चांदी के टकडों के लिये अपनी लेखनियां, सोवियत नागरिको के रूप मे अपने आत्म-सम्मान और अपनी गरिमा को वेच दिया है, चाहे कुछ ही लोगों को अपने जाल मे फंसाने का प्रयास किया जा रहा है, पर इनकी रचनाएं समाज के लिये भयंकर रूप से खतरनाक हो उठी हैं। इन गन्दी रचनाओं की सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियावाद के अगुआ हमारी प्रत्येक और हर संभव वस्तु को अपमानित करने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे शत्रुओं ने उन विषाक्त हथियारों के महत्व को समझा है, जो उन्हे इन प्रतिगामियों से प्राप्त हुए हैं। बुर्जुआ समाचारपत्रो मे इनके बारे मे जो कुछ लिखा गया है, यह बात उससे स्पष्ट हो जाती है। इन लोगों के ऊपर प्रशंसा की जिस प्रकार वर्षा की गई है और बुर्जुआ बैंकों मे इनके लिये जिस प्रकार धन सुरक्षित रखा गया है, उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है। यदि शत्रु हमें किसी व्यक्ति की प्रशंसा सुनाता है तो उस व्यक्ति मे कोई अच्छाई नही हो सकती।

इनकी रचनाओ को अनेक प्रकाशको, युद्ध के बाद रूसी प्रवासियों के संगठनों, जासूसी एजेंसियों आदि ने प्रकाशित किया है। अपने पिट्ठुओं से वंचित हो जाने के कारण, क्योंकि राज्य सुरक्षा अधिकारियों ने उन्हें निष्क्रिय बना दिया है, इन सगठनों ने भयंकर शोरगुल मचाया है। हमारे यहां समाचारपत्रो की स्वतंत्रता नहीं है, यह आरोप लगाना इन लोगों को शोभा नहीं देता। हमे यहां उस समचारपत्र स्वातन्त्र्य की चर्चा नही करनी है, जो उन्हें प्राप्त है। समाचारपत्रों की स्वतंत्रता कोई अमूर्त विचार नही है। हमारे यहा वास्तविक स्वतंत्रता है, हमारे यहां लोगों के साथ और लोगो के पीछे चलने की स्वतंत्रता है, हमारे यहां लोगों के साथ और लोगों को शिक्षित करने, विशेष रूप से साहित्य के माध्यम से शिक्षित करने की स्वतत्रता है। हमें अपने देश के लोगों के कार्यों की महानता को प्रकट करने की स्वतत्रता है। मैं यहां ग्रीक देशभक्त थ्रियोडोराकिस[1] का उद्धरण देना चाहता हूं (उद्धरण देता है)। मैं सिन्यावस्की और डेनियल पर राज्य के विरुद्ध गतिविधियां करने का अभियोग लगाता हूं। उन्होंने साहित्यिक

[1]—ग्रीक संगीतकार और वामपंथी राजनीतिज्ञ।

रचनाओ की आड़ मे गदी और बदनामी फैलाने वाली रचनाए लिखी और प्रकाशित की हैं, जिनमे हमारी प्रणाली को समाप्त करने का आह्वान किया गया है। इन्होंने साहित्य का जामा पहना कर मिथ्या प्रवाद से भरी बातो का प्रचार किया है। इन्होंने जो कुछ किया है, वह संयोगवश हुई किसी गलती का परिणाम नही है, बल्कि एक ऐसा कार्य है जो देशद्रोह के समान है। अदालत को अनेक परिस्थितियो पर विचार करना चाहिये। इस तथ्य पर विचार करना चाहिये कि इनमे से किसी ने भी अपने अपराध को स्वीकार नही किया है और यह कि सिन्यावस्की ने प्रमुख भूमिका निभाई है। मैं अदालत से अनुरोध करता हू कि वह सिन्यावस्की को अधिकतम दण्ड दे सबसे कडी श्रेणी के शिविरो मे सात वर्ष तक कैद रखने, और इसके बाद पाच वर्ष तक निष्कासन में रहने (करतल ध्वनि) की सजा दे और डेनियल को सबसे कड़ी श्रेणी के शिविरो मे पाच वर्ष तक रखने की और तीन वर्ष के निष्कासन की सजा दे।

डेनियल ने अपनी गन्दगी और प्रवाद से भरी कहानी को इन शब्दो से समाप्त किया है: "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग।" नही, मास्को एक भिन्न भाषा बोलता है। मास्को ससार को सबोधित करता है। मास्को पहले चन्द्र-यान का समाचार देता है और यही स्वर प्रतिगामियो और बदनामी फैलाने वालो पर शर्म की वर्षा करता है। (करतल ध्वनि)।

अदालत की कारवाई स्थगित।

सफाई पक्ष के भाषण

संध्याकालीन सत्र, १२ फरवरी।

प्रतिवादियो के वकील कोगन का भाषण (संक्षेप में)

सिन्यावस्की पर तीन अभियोग लगाये गये है :

१—उसने अपनी रचनाए लिखी, अपने पास रखी और उनका प्रचार-प्रसार किया।

२—उसने डेनियल की रचनाए विदेश पहुचाई।

३—उसने रेमेज़ोव् की रचनाए विदेश पहुंचाई।

यह अभियोग कि सिन्यावस्की ने डेनियल की पाण्डुलिपिया विदेश भिजवाई, निराधार है। सिन्यावस्की इस बात से इनकार करता है कि उसने ये रचनाए विदेश भेजी और डेनियल इस बात से इनकार करता है कि उसने अपनी रचनाए सिन्यावस्की की मार्फत विदेश भिजवाई। अतः दूसरे अभियोग का कोई आधार नही हैं।

जहा तक तीसरे अभियोग का सम्बन्ध हैं रेमेजोव को इस मुकदमे मे वस्तुतः एक गवाह के रूप मे प्रस्तुत नही किया जाना चाहिये था—उसे यहा एक प्रतिवादी के रूप मे पेश होना चाहिये था, क्योकि वह अन्य दोनो की तरह ही दोषी है। इन लोगो के साथ अलग-अलग व्यवहार करने का कोई कारण नही है, कि एक गवाह के रूप मे पेश किया जाये और दो पर मुकदमा चलाया जाये और वे प्रतिवादियो के रूप मे पेश हो। इन लोगों के साथ जो भिन्न व्यवहार किया गया है उसका केवल एक ही स्पष्टीकरण हो सकता हैं : गवाह यह शपथ लेता है कि वह भूठा बयान नही देगा, जबकि प्रतिवादी जो चाहे कह सकता है। अतः गवाह पर कही अधिक तत्परता से विश्वास कर लिया जाता है, क्योकि वह सत्य कथन के लिये वचनबद्ध होता हैं।

यद्यपि सिन्यावस्की के बयान को भी कम से कम उतना ही महत्व मिलना चाहिये, जितना रेमेजोव के बयान को लेकिन इस तथ्य से कि रेमेजोव गवाह के कटघरे से बोल रहा है, उसकी कानूनी दृष्टिकोण से विश्वसनीयता बढ़ जाती हैं। सिन्यावस्की कहता है कि उसने रेमेज़ोव की पाण्डुलिपिया विदेश नही भिजवाई। रेमेज़ोव कहता है कि उसने अपनी पाण्डु-लिपियां सिन्यावस्की की मार्फत विदेश भिजवाई। लेकिन रेमेज़ोव ने स्वयं अपने बयान में परस्पर विरोधी बातें कहीं हैं : वह तारीखों में गड़बड़ करता है और पहले उसने अपने मित्र

बुसेनो, जो एक प्रकाशक है और जिससे उसका सम्पर्क रहा है, के बारे मे कुछ नही कहा, उसने यह भी नही कहा कि वह स्वय विदेश गया है अथवा उसके ऐसे मित्र हैं, जिनका विदेशो से सम्पर्क है। अब हम यह मान सकते है कि उसने ("आइवानोव" की पाण्डुलिपियो का) लेखक होने की बात को इसलिए स्वीकार किया क्योकि वह यह नही जानता था कि सिन्यावस्की ने अपने बयान में क्या कहा है—हो सकता है उसने यह सोचा हो कि सिन्यावस्की पहले ही यह बात कह चुका है और क्योकि सिन्यावस्की पहले ही गिरफ्तार हो चुका था उसने यह सोचा हो कि सिन्यावस्की पर यह आरोप लगाना ठीक रहेगा कि उसने "आइवानोव" की और स्वय अपनी पाण्डुलिपिया विदेश भेजी—सभवतः उसने यह बात उस दूसरे व्यक्ति को बचाने के लिये कही हो, जिसका अब तक पता नही है। अत. रेमेजोव के पास सच न बोलने के कारण थे और उसका बयान भ्रातिपूर्ण है। लेकिन स्थिति यह है कि कानूनी दृष्टि से उसके बयान का सिन्यावस्की के बयान से अधिक महत्व है। यह बात सही नहीं है और सिन्यावस्की के विरुद्ध लगाया गया यह अभियोग वापस ले लिया जाना चाहिये।

जहा तक अभियोगपत्र के प्रमुख अभियोग का प्रश्न है, प्रतिवादी ने साहित्यिक दृष्टिकोण से अपनी रचनाओ के बारे मे विचार प्रकट करने को कहा है और किसी वकील के लिये यह विचार प्रकट करना कठिन है। यही कारण था कि स्वयं सिन्यावस्की ने ही जिरह के दौरान अपने इन विचारो का स्पष्टीकरण दिया और वह अपनी अन्तिम अभियुक्ति मे भी यही करेगा। जबकि मैं, एक वकील के रूप मे, इस मुकदमे के कानूनी पहलुओ की चर्चा करूंगा।

सिन्यावस्की का रहस्यवाद की ओर रुझान और अतिशय काल्पनिक बातों मे उसकी रुचि एक मनोविज्ञानी की विशेषज्ञ राय से सिद्ध हो जाती है। मनोविज्ञानी की रिपोर्ट के अन्त मे कहा गया है कि इस व्यक्ति मे प्रत्येक बात को बढा-चढा कर कहने और अतिशय काल्पनिक बातों को सोचने की प्रवृत्ति है। इसमे कहा गया है कि सिन्यावस्की एक ऐसा व्यक्ति है, जो कुछ हद तक एक ऐसे अवास्तविक ससार मे रहता है, जिसका उसने स्वय निर्माण किया है। अत: इस्तगासे ने जिस बात को अक्सर बदनामी फैलाने की बात कही है, वह ऐसे मनोविज्ञान वाले लोगो का सब वस्तुओ को देखने का अपना अलग विशिष्ट तरीका है। यह निश्चित है कि सिन्यावस्की का वक्तव्य मानसिक विकृति से ग्रस्त नही है। लेकिन एक सामान्य व्यक्ति की सीमाओ के भीतर उसकी अपनी कुछ विशेषताए है। यद्यपि उसके ऊपर यह अभियोग नही लगाया गया है, लेकिन सैक्स सम्बन्धी मामलो मे उसकी दिलचस्पी और सैक्स सम्बन्धी दृश्यो का वर्णन प्रस्तुत करने की उसकी दिलचस्पी को उसके नैतिक चरित्र के एक बुरे पहलू के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। न्यायाधीश ने सिन्यावस्की द्वारा ऐसे दृश्यो को "अतिरजित" करने के बारे मे कहा था। यदि सिन्यावस्की की मानसिक प्रवृत्ति को देखा जाये तो इसे "अतिरजित" करना नही कहा जा सकता। यह सही है कि उसकी इस विषय मे बहुत अधिक दिलचस्पी है। लेकिन यह दिलचस्पी इसलिए है क्योकि

इस विषय का सम्बन्ध पाप से है। जैसा कि हम जानते है, पाप की समस्या धार्मिक प्रवृत्ति वाले लोगो के मन मे व्यापक रूप से छाई रहती है। इस प्रश्न के प्रति सिन्यावस्की का दृष्टिकोण विश्लेषणात्मक है। वस्तुतः, इन दृश्यो मे वह पाप की स्थिति अथवा 'काले जादू' के तत्व पर जोर देता है। एक स्थान पर तो सिन्यावस्की ने बड़े स्पष्ट शब्दो मे कहा है। रूस के लोगो का काला जादू है स्त्री और सफेद जादू है वोदका।

सिन्यावस्की ने जो ६ रचनाए विदेश भेजी है, उनमे से केवल तीन ही के आधार पर अभियोग लगाया गया है, केवल तीन को ही सोवियत विरोधी समझा गया है। इस्तगासे का मामला इस मुद्दे पर आधारित है कि उसने अपनी रचनाए विदेश भेजी। यह क्यो किया गया (इस्तगासा पूछता है), यदि सोवियत शासन और सोवियत सघ की शक्ति को क्षति पहुंचाने अथवा कमजोर बनाने का इरादा नही था और यदि सैद्धांतिक तोड-फोड का उद्देश्य नही था तो यह क्यो किया गया ? लेकिन अभियोग पत्र मे जिन तीन रचनाओं का उल्लेख हुआ है, केवल उनको ही विदेश नही भेजा गया है। कुल मिला कर ६ रचनाए विदेश भेजी गई और सिन्यावस्की ने उनके बीच कोई अन्तर नही किया। इस बात से तुरन्त यह संदेह उत्पन्न होता है कि क्या इन रचनाओ को भेजने के पीछे वस्तुत. कोई इरादा था।

इसके अलावा उसकी रचनाओ की अत्यधिक जटिलता का भी प्रश्न है। यदि सोवियत शासन को क्षति पहुचाने का इरादा था तो किसी भी वस्तु को क्षति पहुंचाने के लिये सीधी सादी अभिरुचियो के अनुरूप बातें लिखना आवश्यक था। लेकिन तथ्य यह है कि सिन्यावस्की की रचनाए अत्यधिक जटिल हैं। सामान्य पाठको की तो बात दूर, ये रचनाए साहित्यिक विशेषज्ञो के लिये भी आसान नही हैं। इन अभिव्यक्त विचारो के बारे मे बहस हुई है। इनमे से प्रत्येक रचना की व्याख्या कम से कम तीन भिन्न तरीकों से की जा सकती है और ये सब पूरी तरह विशेषज्ञता पर आधारित है। (कोगन, टेरट्ज़ की रचनाओं सम्बन्धी विदेशी समालोचको की विभिन्न व्याख्याओं के उद्धरण देता है, जो सब भिन्न हैं और इनमे से किसी मे भी इन रचनाओ को सोवियत विरोधी नही बताया गया है।) और यदि सिन्यावस्की की रचनाए सोवियत विरोधी भी थी, तो वे इस उद्देश्य की पूर्ति मे स्पष्टतया असफल रही, क्योकि ये रचनाए (सोवियत) पाठको को उपलब्ध नही है।

अत, उस व्यक्ति को, जिस पर दण्ड सहिता की धारा ७० के अन्तर्गत विचार हो रहा हो, अपराधी ठहराने के लिये केवल उसकी रचनाओ के सोवियत विरोधी स्वरूप का प्रमाण होना ही पर्याप्त नही है, बल्कि यह भी आवश्यक है कि उसका सोवियत शासन को क्षति पहुचाने अथवा कमजोर बनाने का इरादा भी सिद्ध किया जाये. लेकिन मुकदमे के दौरान इस इरादे को सिद्ध नही किया जा सका। मैं अदालत से तथ्य को ध्यान मे रखने का अनुरोध करता हूं।

यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि कोगन प्रतिवादी के अपराधी अथवा निर्दोष होने के सम्बन्ध मे कोई निष्कर्ष नही निकालता और न ही वह स्वयं इन रचनाओं

के स्वरूप की ही चर्चा करता है। वह अदालत से केवल यह अनुरोध करता है कि उसके शब्दो को ध्यान मे रखा जाये[1]।)

प्रतिवादी के वकील किसेनिशस्की का भाषण (संक्षेप मे)

डेनियल की चार रचनाओ का, अर्थात् उसकी विदेश मे प्रकाशित सब रचनाओ का, उसके विरुद्ध लगाये गये आरोपो मे उल्लेख हुआ है।

कम से कम उसकी तीन रचनाएं सोवियत विरोधी नही है और इस दृष्टि से उन्हे यह नही माना जा सकता। ये रचनाए है "हैंड्स", "दि मैन फ्राम मिनाप" और "अटोनमैंट"।

"हैड्स", आरम्भ मे जिसका शीर्षक "एक घटना" दिया गया था—किसी व्यक्ति के जीवन की एक घटना के बारे मे लिखी गई, एक सीधी-सादी कहानी है। यह कहानी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दिलचस्प है और इसमे कोई राजनीतिक दृष्टिकोण नही है। इसका उपयोग विभिन्न राजनीतिक दृष्टकोणो को दर्शाने के लिये किया जा सकता है, इसकी इस रूप मे व्याख्या की जा सकती है, लेकिन कोई एक व्याख्या न होने के कारण इसे सोवियत विरोधी नही समझा जा सकता।

"दि मैन फ्राम मिनाप" एक सीधा सादा किस्सा है, इसमे किसी भी प्रकार का राजनीतिक सदेश नही है, और इसका कोई भी सामान्य निष्कर्ष नही निकाला जा सकता।

"अटोंनमेंट" का विचार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने लिये ही उत्तरदायी नही होता, बल्कि उसके आस-पास जो कुछ होता है उसके लिये भी उत्तरदायी होता है—यह बात सोवियत विरोधी नही है।

जहा तक "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" का सम्बन्ध है, लेखक के मन मे कोई भी विद्वेषपूर्ण इरादा नही है, यह बात इस तथ्य से सिद्ध हो जाती है कि समाजवाद, सोवियत शासन और साम्यवाद के बुनियादी सिद्धातो को इस पुस्तक मे प्रशसा के भाव से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार, चार मे से तीन रचनाए सोवियत विरोधी नही हैं, जबकि चौथी रचना के पीछे कोई विद्वेषपूर्ण इरादा नही है।

इसके साथ ही डेनियल की सैनिक सेवा और उसके कठिन श्रम साध्य जीवन को भी ध्यान मे रखा जाना चाहिये। मैं अदालत से इस बात का ध्यान रखने का अनुरोध करता हूं।

१—यह टिप्पणी मुकदमे की कारवाई का विवरण लिखने वाले व्यक्ति की है।

केदरीना : कोगन का कहना है कि सिन्यावस्की की रचनाओं की दुरूहता इसके सोवियत विरोधी प्रचार मे उपयोग की वात को समाप्त कर देती है। दो प्रकार के प्रचार होते हैं—इश्तहारो के माध्यम से प्रचार, और कला के माध्यम से प्रचार, जो लोगो के मनोभावों पर असर डालता है। यह दूसरे प्रकार का प्रचार कभी-कभी अधिक प्रभावशाली होता है।

कोगन कहते हैं कि सिन्यावस्की अपनी कहानियो और अपने लेखो दोनों मे ही मार्क्सवादी के रूप मे नही बल्कि एक आदर्शवादी के रूप मे प्रकट हुए है। लेकिन जब उसने यहा, देश मे अपने लेख प्रकाशित किये, तो एक मार्क्सवादी के रूप में लिखा और इस प्रकार वह, निरपेक्ष दृष्टि से, टेरट्ज से भिन्न खेमे मे था। यद्यपि वह स्वय टेरट्ज था। इस प्रकार दुरंगी चाल चलना असह्य और अग्राह्य है और यह कानूनी कारवाई का मामला है।

कोगन कहते है कि सिन्यावस्की शब्दों के द्वारा प्रभाव उत्पन्न करने से सदा बचता है, और वह राजनीतिक मानको के प्रति नही, वल्कि नैतिक मानको के प्रति अपील करता है। वह लोगो के हृदय मे फिर प्रेम की प्रतिष्ठा करने का आह्वान करता है और उनसे ईश्वर का अन्वेषण करने को कहता है। यहा ईश्वर कहा से आ टपकता है? उस दृश्य को लीजिए, जिसमे माताओ को जडीभूत कुकुरमुत्ता के रूप मे दर्शाया गया है। यह कैसा प्रेम है और लेनिन के उसके विवरण को लीजिए—क्या यह अपने पडौसी के प्रति प्रेम भाव का एक उदाहरण है?

अर्जैहक और किसेनिशस्की के भाषण के बारे मे · प्रतिवादी का वकील कहता है कि "हैंड्स" का कोई राजनीतिक अर्थ नही है। यदि मैं किसी उद्यान मे फूल चुनने के बारे मे लिखू तो इसमें कोई भी राजनीतिक अर्थ नही ढूढा जा सकता, चाहे कोई कितनी भी कोशिश क्यो न करे। लेकिन जब एक वार "हैंड्स" में निहित एक राजनीतिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है तो इसका सोवियत विरोधी स्वरूप स्वत. प्रकट हो जाता है।

किसेनिशस्की कहते हैं कि लेखक की सहानुभूति कहानी के नायक मालिनिन के प्रति है। लेकिन इसे तथ्य नहीं कहा जा सकता। आप उस समय सहानुभूति की वात कैसे कह सकते हैं, जब मालिनिन को एक सीमित दृष्टिकोण वाला एक मूर्ख व्यक्ति दिखाया गया हो? सहानुभूति उसके प्रति नही, वल्कि वह जिस द्विविधा मे फंसता है, उसके प्रति उपजती है। इस कहानी के सोवियत विरोधी होने का यही कारण है।

केवल इतना भर देखने की आवश्यकता है कि गोली से उडाये जाने सम्बन्धी दृश्य का कितने विस्तार से वर्णन किया गया है। सामान्यत: डेनियल ऐसी साहित्यिक शक्ति से नही लिखता, लेकिन उसने इस वर्णन मे कैसी शक्ति भर दी है। यही वह दृश्य है जो उसे सर्वाधिक आकर्षित करता है और यहीं यह बात प्रकट होती है कि वह बुनियादी तौर पर सोवियत विरोधी है।

ए० वासिलयेव द्वारा आपत्ति

सिन्यावस्की के सफाई पक्ष के वकील ने दो फ्रांसीसी साहित्यिक विशेषज्ञो, फ्रीग्रोऊ और ग्रौकूतूरियर का एक पत्र पढ कर सुनाया है लेकिन उन्होंने इसे अन्त तक पढ़ कर नही सुनाया। अब मैं यह बताता हूं कि इसमे क्या है ? इसमे कहा गया है कि ये दो प्रोफेसर इस बात मे विश्वास नही करते कि सिन्यावस्की और टेरट्ज़ एक ही व्यक्ति है। अब जब कि यह बात सिद्ध हो चुकी है कि ये एक ही व्यक्ति हैं, तो इस पत्र का उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नही है।

सरकारी वकील द्वारा आपत्ति (संक्षेप मे)

सरकारी वकील की आपत्ति का सार यह है कि वह उन सब बातो को अस्वीकार करता है, जो कोगन ने अभियोगपत्र मे उल्लिखित अभियोगो के बारे मे कही। वह इस अभियोग को बनाये रखने पर जोर देता है कि सिन्यावस्की ने डेनियल और रेमेजोव की पाण्डुलिपिया विदेश भेजी। वह कहता है कि जब रेमेज़ोव ने अपने विचारो को स्पष्ट रूप से और बिना किसी संदिग्धता के प्रकट कर दिया है, तब उसकी सच्चाई मे कोई सदेह नही रह जाता। दूसरी ओर सिन्यावस्की का बयान मुद्दे को टालने वाला और अस्पष्ट था, अत. रेमेज़ोव का बयान अधिक विश्वसनीय है। उसे इस बात मे भी सदेह नही था कि सिन्यावस्की ने डेनियल की पाण्डुलिपिया विदेश भिजवाने मे सहायता दी। उसने अपना यह विश्वास उन प्रमाणो के ज्ञात स्वरूप पर आधारित किया, जो आरम्भिक जाच के दौरान दिये गये थे।

जहां तक इरादे का प्रश्न है, यदि कोई तथ्यो की भी उपेक्षा करे और यह विश्वास कर ले कि ये दोनो व्यक्ति केवल अपनी रचनाए प्रकाशित भर देखना चाहते थे, तो इस बात को कैसे समझा जा सकता है कि उन्होने सन् १९६२ मे प्रकाशित रयूरिकोव के स्पष्ट और असदिग्ध लेख के प्रकाशन के बाद, उस पर कोई ध्यान नही दिया[२] ? यह बात प्राय असभव है कि सिन्यावस्की ने यह पत्रिका न पढी हो। वकील हर प्रकाशित वस्तु को सामान्य जानकारी का विषय मानते हैं। हमे यही समझना चाहिये कि वे इस लेख के बारे मे जानते थे। लेकिन इस लेख के प्रकाशन के बाद भी, उन्होने और रचनाए लिखी और उन्हे विदेश भेजा। यह उनके इरादे का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

२—देखिए पृष्ठ २६१।

आंद्रेय सिन्यावस्की की अन्तिम अभियुक्ति

मेरे लिये आज बोल पाना कुछ कठिन होगा, क्योकि मैंने यह आशा नही की थी कि आज मुझ से अपनी अन्तिम अभियुक्ति के लिये कहा जायेगा। मुझे बताया गया था कि यह कार्य सोमवार को होगा और मुझे तैयारी करने का समय नही मिला। इसके अलावा इस अदालत के कमरे मे, पर्याप्त स्पष्ट रूप से जो विशेष वातावरण महसूस किया जा सकता है, उसके कारण यह और भी कठिन होगा। मैं इस्तगासे के तर्कों से आश्वस्त नही हूं और मैं अपने पूर्व दृष्टिकोण पर कायम हू। इस्तगासे के तर्क मेरे मन मे यह भाव उत्पन्न करते हैं, मानो मैं एक खाली दीवार पर अपना सिर टकरा रहा हू, जिसे तोड़ कर कही भी निकल पाना असभव है, जिसे बेध कर किसी भी सच्चाई को खोज निकालना असभव है। सरकारी वकील के तर्क वही हैं जो अभियोगपत्र मे दिये गये है और मैंने आरम्भिक जाच के दौरान इन्हे अनेक बार सुना है। बारम्बार उन्ही उद्धरणो को दोहराया गया है: "एक गोली और फिर दूसरी गोली, फिर और एक गोली······कमर पर राइफल लगा कर गोली वर्षा करते हुए"[1]. "जेलो को समाप्त करने के लिये हमने नई जेलें बनाई[2]" सदा अभियोगपत्र के यही रोमाचित करने वाले उद्धरण दिये जाते है, इन्हे दर्जनो बार दोहराया जाता है और एक भयावह वातावरण उत्पन्न करने के लिये, जिसका किसी भी प्रकार की वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नही है, इन बातो पर बारम्बार ज़ोर दिया जाता है। उन्ही वाक्यों और अंशो को बार-बार दोहराना एक कलात्मक शैली है और यह प्रभावशाली भी है। इससे एक प्रकार का पर्दा तैयार हो जाता है। इससे एक विशेष प्रकार का उद्रेक से भरा वातावरण तैयार हो जाता है, जिसमे यथार्थ और विद्रूप के बीच की सीमा रेखा अस्पष्ट हो जाती है, जैसा कि अर्जहक और टेरट्ज़ की रचनाओ मे हुआ है। यह वातावरण गदे सोवियत विरोधी अपराधियो का है, जो विज्ञान के डाक्टर सिन्यावस्की और कवि, अनुवादक डेनियल के चमकदार चेहरों के पीछे छिपा है, जो षड्यन्त्र रचते हैं, सत्ता हथियाने, आतक फैलाने, यहूदियो का सफाया करने, हत्याओ, हत्याकाण्डो तथा और अधिक हत्या करने की योजनाएं बनाते है, एक यथार्थ "सार्वजनिक हत्या दिवस"—लेकिन इसमे केवल दो ही अभिनेता हैं: डेनियल और मे।

यह बात वस्तुतः बडी विचित्र है कि साहित्यिक बिम्ब अचानक अपने विश्वसनीयता के आभास जैसे स्वरूप को खो बैठते है और इस्तगासा अक्षरशः उनकी व्याख्या करता है—

१—डेनियल की कहानी 'दिस इज मास्को स्पीकिंग" से।

२—सिन्यावस्की के प्रबन्ध आन सोशलिस्ट रियलिज्म से।

इतनी अक्षरश: कि अदालत की ये कारवाइया इसके स्वाभाविक परिणामस्वरूप, परिणाम की तरह एक साहित्यिक रचना का अग बन जाती हैं। मैंने दुर्भाग्यवश अपने लघु उपन्यास "दि ट्रायल बिगिन्स" के उपसहार के अन्त मे १६५६ तारीख डाल दी और अब मुझ पर यह अभियोग लगाया जा रहा है कि मैंने उस वर्ष का उपयोग, गलत उपयोग, बदनामी से भरे प्रचार के लिये किया है और वे कहते है, "अहा, और अब तुम देखते हो कि १६६६ मे तुम्हारे सामने क्या आ रहा है, अब तुम श्रम शिविर मे जाते हो[३] ?" आप को इस्तगासे के भाषणो मे प्रसन्नता भरा छिपा स्वर स्पष्ट सुनाई पडता है।

लेकिन अन्य स्वर भी है। ये स्वर उस तस्वीर को अन्तिम रूप देते हैं, जिसके माध्यम से हमारी राजनीतिक छिपी दुनिया, पतित लोगो, मनुष्य का मास खाने वालो, ऐसे लोगों, जिनकी भावनाए पतिततम हैं, जो माताओ और स्वय अपने देशवासियो से घृणा करते है, जो फासिस्ट और यहूदी विरोधी हैं, कि छिपी दुनिया मे बदल देते हैं। अब क्योकि डेनियल को यहूदी विरोधी बता पाना कठिन है, अत फासिस्ट डेनियल को, यहूदी विरोधी सिन्यावस्की के साथ मिलकर प्रत्येक पवित्र वस्तु मातृत्व की भावना तक को कुचलते हुए दिखाया जा रहा है[४]। इस वातावरण को बेध पाना कठिन है—सृजनात्मक क्रिया के स्वरूप के सम्बन्ध मे चाहे कितने भी तर्क क्यो न दिये जायें, ये तर्क चाहे परिस्थितियों को कितना भी स्पष्ट क्यो न करते हों, लेकिन यहा इनका कोई उपयोग न होगा। मैंने आरम्भिक पूछताछ के समय ही यह अनुभव कर लिया था कि इस्तगासे को इस बात मे कोई दिलचस्पी नही है। उनको कलात्मक सकल्पनाओ से कोई सरोकार नही है। बस वे तो कुछ उद्धरणो के प्रति ही चिंतित हैं, जिनका बारम्बार पाठ किया जाता है।

मैं अपनी रचनाओ के साहित्यिक उद्देश्यो का स्पष्टीकरण करने अथवा कोई भाषण देने अथवा कुछ सिद्ध करने के लिये अपना सिर दीवार पर पटकने का प्रयास करने नही जा रहा हूं, क्योकि यह व्यर्थ है। मैं बस साहित्य के स्वरूप सम्बन्धी कुछ बुनियादी तर्क ही फिर दोहराना चाहता हूं। साहित्य के बारे मे सर्वाधिक बुनियादी और आरम्भिक बात यह है—और यही इसका अध्ययन शुरू होता है—कि शब्द और कार्य, कहना और करना दो भिन्न बातें हैं और यह कि शब्द और साहित्यिक बिम्ब परम्पराओ के अन्तर्गत आते हैं : लेखक उन पात्रो के समरूप नही होते जिनकी वे सृष्टि करते हैं। यह एक बुनियादी सत्य है और हमने इसकी चर्चा करने का प्रयास किया है। लेकिन इस्तगासे ने निरन्तर इस विचार को एक ईजाद, बचने और धोखा देने का एक साधन बताया है।

३—दि ट्रायल बिगिन्स के उपसहार मे उपन्यास का वाचक यह वर्णन करता है कि उसे अपने उपन्यास का लेखक होने का पता चलने पर किस प्रकार गिरफ्तार किया गया और एक बलात् श्रम शिविर मे डाला गया।

४—स्तालिन के शासनकाल मे जाच अधिकारी अक्सर अपने चंगुल मे फंसे लोगों को कहा करते थे कि "कहना और करना" एक ही बात है।

यदि आप "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" कहानी को ध्यान से पढ़ें—या यहां तक कि सरसरी नज़र से भी पढ़ें—यदि आप शब्दों से भयभीत होने वाले व्यक्ति नही हैं, तो आप को स्पष्ट हो जायेगा कि यह कहानी इस बात की एक लम्बी पुकार है कि "तू हत्या नहीं करेगा।" नायक कहता है, "मैं न तो हत्या कर सकता हूं और न ही हत्या करना चाहता हूं—एक मनुष्य को सब परिस्थितियों में मनुष्य ही बने रहना चाहिये।" लेकिन कोई भी इस बात पर ध्यान नही देता। वे कहते हैं, "अहा, तुम हत्या करना चाहते थे, तुम हत्यारे हो, तुम फासिस्ट हो।" इन सब बातो के सम्बन्ध में अमानुषिक विकृति को अपनाया गया है।

मेरे उपन्यास "दि ट्रायल बिगिन्स" का नायक ग्लोबोव, संभवत एक बुरा आदमी नही है। लेकिन समय की आवश्यकताओं के अनुसार[5] वह यहूदी विरोधी भावनाओं का प्रदर्शन करता है और कुछ यहूदी विरोधी शब्द कहता है: "सब यहूदियो की तरह राविनोविच भी फिसल कर निकल जाने वाला है।" मेरी कहानी स्पष्टतया यहूदी विरोध के विरुद्ध है। यह "डाक्टरों के षड्यन्त्र" के बारे मे है—लेकिन नही, बार-बार यह कहा जाता है कि लेखक यहूदी विरोधी है, आओ हम उसे एक फासिस्ट भी बना डालें।

यहां आकर तर्क घुटने टेक देता है। लेखक को भी दूसरों के कष्टों मे आनन्द अनुभव करने वाला दर्शाया जाता है। यहूदी विरोध को सामान्यतया राष्ट्रवाद और उग्र-राष्ट्रवाद से मिलाकर दर्शाया जाता है। लेकिन यहा हमारे सामने एक विशेष रूप से पतित लेखक है: वह रूस के लोगों से घृणा करता है और वह यहूदियो से भी घृणा करता है। वह प्रत्येक वस्तु से घृणा करता है, वह माताओं से घृणा करता है और वह समस्त मानवता से घृणा करता है। प्रश्न उठता है, यह राक्षस आये कहा से, किस दलदल से, किस छिपी दुनिया से ये निकले है? प्रकट रूप से एक सोवियत अदालत (मैं यह बात पुस्तको के माध्यम से जानता हूं) अपने निर्णय पर पहुंचने मे सामान्यतया अपराध के मूल और इसके कारण पर ही विचार करती है। लेकिन इस मामले मे इस्तगासे को इस बात मे कोई दिलचस्पी नही है। तो हम लोग कहां से आये, डेनियल और मैं, हमे अवश्य ही अमरीका से लाकर पैराशूट से गिराया गया होगा और हमने तुरन्त हलचल और नाश करना शुरू कर दिया—क्योकि ऐसे ही धूर्त हैं हम! मेरी तुलना यहां ग्रातसियांस्की से की गई है—अस्पष्ट अतीत वाला एक व्यक्ति जो बाद में एक जासूस निकलता है। क्या इस्तगासे ने

५—इस उपन्यास की पृष्ठभूमि सन् १९५२ का वर्ष है, जो यहूदी "डाक्टरो के षड्यंत्र" का समय है और सरकार की प्रेरणा से चलाये जाने वाले यहूदी विरोधी अभियान का भी।

६—ग्रातसियांस्की प्रमुख सोवियत लेखक लियोनिद लियोनोव के उपन्यास दि रशियन फारेस्ट (१९५२) का एक पात्र है, जो एक अत्यधिक उत्साही सोवियत देशभक्त होने का स्वांग रचता है, लेकिन जिसने क्रांति से पहले ज़ार की खुफिया पुलिस में काम

वस्तुत. हमारे मूल के प्रश्न पर विचार ही नही किया है ? हमारे मध्य किस प्रकार एक फासिस्ट उत्पन्न हो सकता है ? निश्चय है, यदि आप इस बात पर विचार कर लें, यदि आप इस की कल्पना कर ले तो यह उन दो पुस्तको से कही अधिक भयावह बात होगी, चाहे विषय वस्तु की दृष्टि से ये पुस्तके कितनी भी सोवियत विरोधी क्यो न हो। इस्तगासे ने इस प्रश्न को उठाया तक नही है। यहा आपके समक्ष वाह्य रूप से सम्मानित दो व्यक्ति मौजूद है, लेकिन हृदय से वे फासिस्ट हैं, जो विद्रोह का झण्डा उठाने और बम फैंकने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अथवा इन शब्दो का प्रयोग केवल हमे अपमानित करने के लिये ही किया गया है ?

मैं समझता हूं कि मैंने मुकदमे के दौरान, उद्धरणो की सहायता से यह स्पष्ट कर दिया है कि "दि ट्रायल बिगिन्स" मे कार्लिन्स्की एक पूरी तरह से नकारात्मक पात्र है और उसके प्रति उसके सृष्टिकर्ता के रूप मे मेरे दृष्टिकोण मे ज़रा भी सदेह की गुजाइश नहीं है। लेकिन नही, एक बार फिर सरकारी वकील भयकर अवादात्मक शब्दो को दोहराता है—उन छोटी-छोटी मछलियो—सम्बन्धी भयकर कुटिल शब्दो—को दोहराता है, जिन्हे माताओ के गर्भाशय से निकाला जाता है और अत्यधिक भावनापूर्वक कहता है - "क्या यह खुल्लमखुल्ला सोवियत विरोधी विचार नही है ? क्या यह जुगुप्सा से भर देने वाली बात नही है ?" हा, यह जुगुप्सा से भर देने वाली बात है। हा, यह खुल्लम खुल्ला सोवियत विरोधी है। इसी पात्र के इन शब्दो की तरह . "समाजवाद मुक्त गुलामी है।" लेकिन यह पात्र एक सोवियत विरोधी पात्र है और इसी रूप मे उसका भण्डाफोड किया गया है। इस बात मे जरा भी सदेह नही है, लेकिन कोई भी यह बात सुनने को तैयार नही है। अथवा सभवत इस बात से कोई अन्तर नही पडता। अर्थात् सभवत इससे कोई अन्तर पडा भी नही।

मैं सरकारी वकील के दृष्टिकोण को समझ सकता हू। उसकी समस्याए व्यापक है। वह लेखको और उनके पात्रो और ऐसी ही अन्य बातो के सम्बन्ध मे तथा सब साहित्यिक मामलो को ध्यान मे रखने के लिये वाध्य नही हैं। लेकिन जब वही वातें लेखक सघ के दो सदस्य कहते है, जिनमे से एक पेशेवर लेखक है और दूसरा विश्वविद्यालय का डिग्रीधारी समालोचक—जब वे ही एक नकारात्मक पात्र के शब्दो को स्वय लेखक की अपनी भावनाए बताते है, तो बस व्यक्ति हताश होकर रह जाता है।

आइए हम "ग्राफोमेनियाक्स" मे गौरव ग्रन्थो सम्बन्धी अंश पर विचार करें। कोई व्यक्ति यह कल्पना किस प्रकार कर सकता है कि एक असफल लेखक के सम्बन्ध मे प्रथम पुरुष मे लिखे जाने के कारण (जिसमे कुछ आत्मकथा जैसे तत्व हो सकते हैं) मैं, इसका

किया है और जो दूसरे महायुद्ध के आरम्भ मे जर्मनी का जासूस बन जाता है। इस्तगासे की ओर से किये गये जिन भाषणो का विवरण उपलब्ध है, उसमे ग्रातसियांस्की से यह तुलना नही की गई है।

लेखक, गौरव ग्रन्थो से घृणा करता हूं ? उस व्यक्ति के लिये यह समझ पाना कठिन हो सकता है, जिसने मुश्किल से पढना सीखा ही हो। ऐसे व्यक्ति के लिये, स्पष्ट है, कि दोस्तोएवस्की स्वयं ही "अपराधियो के ससार से आया व्यक्ति" होगा, गोर्की स्वय क्लिम सामगिन और साल्तीकोव-शचेद्रिन स्वय जुदुश्का होगा[7]। इस तरह तो किसी भी बात को उलट कर दिखाया जा सकता है।

सरकारी वकील ने सरसरी तौर पर "छिपी दराज"[8] का प्रश्न उठाया है। वासिलयेव ने तो, बिना किसी लज्जा के, मेरे नवजात पुत्र के लिये दी गई लगोटियों तक का उल्लेख किया है—प्रसगवश यह उल्लेखनीय है कि ये लगोटिया मदाम जामोयस्का ने नहीं, बल्कि एक अन्य फ्रासीसी स्त्री ने दी हैं। नीचे पहनने के कपडो तक का उल्लेख, उस अंधकारपूर्ण अन्तर को दर्शाने के लिये किया गया, जो उस उज्ज्वल बाह्य आवरण के पीछे छिपा है, जो नियल और मैं ससार के समक्ष प्रस्तुत करते है। मेरे लेखो के अशो का उद्धरण दे कर, यह दर्शाया जाता है कि मैंने एक स्थान पर किस प्रकार मार्क्सवादी दृष्टिकोण से समाजवाद यथार्थवाद के बारे मे लिखा और एक अन्य स्थान पर मैने इस विषय पर आदर्शवादी दृष्टिकोण से लिखा[9]। यदि मैं यहा आदर्शवादी दृष्टिकोण से लिखने मे सक्षम हूं, तो अवश्य लिखूंगा।

अक्सर जब मुझ से यहा, स्वदेश मे, किसी विषय पर लिखने के लिये कहा जाता तो मैं इनकार कर देता और उन लेखकों के बारे मे लिखने का प्रयास करता, जिनसे मेरी कुछ बातें मिलती जुलती हैं। केदरीना इस बात को अच्छी तरह से जानती है—हमने एक ही सस्था मे एक साथ काम किया है। वह यह जानती है कि मैंने अपने नायक का अभिनय नही किया है। मैंने बैठको मे भाषण नही किये हैं। मैंने अपनी छाती नही पीटी और मैंने कभी भी कोई भी बात नारो के माध्यम से नही कही हे। और अक्सर "गलतियो", "अतिरेको" और "गलत विवरणो" के लिये मेरी आलोचना की गई है। विश्व साहित्य संस्था से मेरे बारे मे जो रिपोर्ट राज्य सुरक्षा समिति (खुफिया पुलिस) को मेरी गिरफ्तारी के बाद प्राप्त हुई (मेरा जांच अधिकारी तक उस समय क्रोधित हुआ, जब उसने इस रिपोर्ट मे देखा कि पूर्व-कालिकता से मेरी पदावनति कर अब मुझे वरिष्ठ कर्मचारी के स्थान पर अवर कर्मचारी कर दिया गया है), उसमे कुछ बातें सही है : इसमे कहा गया है कि मेरा विचारधारा सम्बन्धी दृष्टिकोण अस्पष्ट है कि मैंने स्वेताएवा, मैंडेलशतम और पास्तरनेक के बारे में

७—पृष्ठ २३४ की पाद टिप्पणी देखिए।

८—इस शब्द का प्रयोग तस्करी करने वालो द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले सूटकेश के लिये किया जा सकता है या लाक्षणिक रूप से इसे किसी व्यक्ति पर भी लागू किया जा सकता है।

९—यहां "आदर्शवादी" का प्रयोग, दार्शनिक अर्थों मे "भौतिकतावादी" के विपरीत अर्थों में किया गया है।

लिखा है, कि यह मेरी रुझान है।[10] यह मेरा रुझान था और यही वे लोग थे, जिनके बारे मे मैं लिखना चाहता था। मैंने अपने वास्तविक विचारो को अपने असली नाम, सिन्यावस्की के हस्ताक्षर से अभिव्यक्त करने के लिये हर सभव प्रयास किया। इसके परिणामस्वरूप मुझे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडा, मेरी भर्त्सना की गई, समाचारपत्रो और सभाओ मे मेरे ऊपर प्रहार किये गये।

अपने वेतन के अलावा मुझे कोई अन्य लाभ नही मिला। वासिलयेव कहता है कि मैं "सदा लेखक सघ की इमारत के आस-पास मडराता रहता था" क्या मैंने वहा ऋणो, अथवा यात्रा-भत्तो, अथवा निःशुल्क अवकाश पत्रो के लिये आवेदन किया ? पिछले दस वर्षों मे मेरे विभिन्न मित्रा ने मुझे जन्म दिन पर जो उपहार दिये हैं, वासिलयेव ने उनका ब्यौरा प्रस्तुत किया है।[11] यदि कभी मुझे नि.शुल्क अवकाशपत्र मिल गया होता तो आप यह कल्पना कर सकते है कि वह इस सम्बन्ध मे क्या कहता।.....

क्या वस्तुत इस बात मे कोई तुक है कि मैं एक बार फिर कुछ अत्यधिक सीधी-सादी बातो को स्पष्ट करने का प्रयास करू ? माताओ का अपमान करने के लिये मेरी निन्दा की गई है, लेकिन "ल्यूबीमोव" मे मैं स्पष्ट शब्दो मे कहता हू "माताओ को हानि पहुचाने का साहस न करना।" और क्या उस समय लेन्या तिखोमिरोव अपनी जादू की शक्ति खो नही बैठता, जब वह अपनी माता की आत्मा के प्रति हिंसा करने का प्रयास करता है।[12] यह कैसे कहा जा सकता है कि मैंने माताओ का अपमान किया ? क्या इसलिए कि मैं (ल्यूबीमोव मे) वृद्ध स्त्रियो का वर्णन करते हुए झुर्रीदार, घुन से खाई हुई जगली कुकुरमुत्ता जैसे शब्दो का प्रयोग करता हू ! क्या मुझसे यह अपेक्षा की गई थी कि मैं गिरजाघर के फर्श पर साष्टाग लेटी हुई इन वृद्ध स्त्रिओ के सिर को आभाचक्र से मडित दिखाता ?[13] साहित्य मे यह सदा से चली आ रही एक विधा है, जिसके अन्तर्गत जानबूझ कर बढा-चढा कर बातें कहने से बचा जाता है। इस्तगासे से इन बातो पर विचार करने की अपेक्षा नही की जा सकती। लेकिन क्या लेखको को भी यह नही समझना चाहिये ?

१०—इन तीनो कवियो की शैली और कथ्य सोवियत परम्परा के कवियो से एकदम भिन्न हैं। मेरीना स्वेताएवा (१८९४-१९४१)—एक रूसी कवयित्री और पास्तरनेक की मित्र थी, जो चौथे दशक के अन्तिम वर्षों मे प्रवास से सोवियत सघ वापस आई और जिन्होने वहा आत्महत्या की। मैंडेलशतम की मृत्यु एक सोवियत बलात् श्रम शिविर मे हुई।

११—यह तथ्य वासिलयेव के भाषण के विवरण मे नही दिया गया है।

१२—वह अपनी मा पर, उसका ईश्वर मे विश्वास समाप्त करने के लिये सम्मोहन क्रिया का प्रयोग करता है।

१३—ल्यूबीमोव के अन्त मे सब वृद्ध स्त्रिया, नगर मे पागल तानाशाह के शासन की समाप्ति पर सब मृत और जीवित व्यक्तियो, पिताओ और पुत्रो की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करने के लिये आती है।

संक्षेप मे : प्रत्येक वस्तु धोखे की टट्टी है, प्रत्येक वस्तु कुटिलतापूर्ण है, प्रत्येक वस्तु एक ग्राड है, मेरी डाक्टर की डिग्री की तरह ही। मेरी "ग्राशक्त" साहित्यिक विधा केवल क्राति विरोधी विचारो के प्रचार का माध्यम भर है। ग्रादर्शवाद, ग्रतिशयोक्ति, ग्रतिशय कल्पनाशीलता—ये सब बातें सोवियत प्रणाली के एक जन्मजात शत्रु की चालो से ग्रधिक कुछ नही है, जो हर सभव उपाय से ग्रपने ग्रसली इरादे को छिपाता है। ठीक है, ग्राइए हम यहा यह कहे कि मैं स्वय को छिपाता हूं ग्रौर यह करने का मेरे पास ग्रच्छा कारण है। लेकिन क्या वहा, विदेश मे, मैं ग्रपना मुखौटा, ग्रपनी नकाब उतार कर नही फैंक सकता था ग्रौर मैं ग्रपना सच्चा रूप प्रकट नही कर सकता था ?......

ग्रतिशयोक्ति, ग्रतिशयकल्पनाशीलता—क्या इसका यह ग्रभिप्राय है कि स्वयं कला ही सोवियत विरोधी विचारो को छिपाने का एक बहाना है, एक ग्राड है ? लेकिन ऐसे वाक्य, विचार ग्रौर बिम्ब है जो पूरी तरह से एकदम विपरीत दिशा मे इगित करते है, लेकिन वे भी ग्रन्य उद्धरणो की मोटी टट्टी के पीछे छिप जाते है। मैं इन्हे दोहरा सकता था। लेकिन यह बात किसी की समझ मे नही ग्रायेगी। यहा इस वाक्य को दर्जनो बार दोहराया गया है; "इसलिए कि जेले न रहे, हमने नयी जेलो का निर्माण किया।" एक ग्रन्य वाक्य है, जिसे पढने का मैंने ग्रापसे ग्रनुरोध किया था : "साम्यवाद एक स्वय दीप्त लक्ष्य है।" लेकिन कोई भी इसे पढना नही चाहता था ग्रौर इसके ग्रलावा मैंने क्राति का प्रबल भावनात्मकता से समर्थन किया है—लेकिन कोई भी व्यक्ति इसमे दिलचस्पी नही रखता था। किसी भी व्यक्ति ने इसका विश्लेषण करने का कष्ट नही उठाया। वे तो केवल कुछ ग्रभिव्यक्तियो ग्रौर कुछ घिसीपिटी सोवियत विरोधी बातो मे ही दिलचस्पी रखते थे, जिन्हे ठीक उसी प्रकार मेरे ग्रौर डेनियल के माथे पर ग्रकित किया जा सकता था, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार इनकी मोहर हमारी रचनाग्रो पर लगाई गई।[१४]

सरकारी वकील ने कहा है (मैं इस वाक्य से इतना प्रभावित हुग्रा कि मैंने इसे लिख लिया) : "विदेशी समाचारपत्र तक यह कहते हैं कि ये रचनाएं सोवियत विरोधी है।" यदि ग्राप इस बात पर विचार करे तो इस कथन की तार्किकता यह दिखाई पडेगी कि सरकारी वकील के लिये विदेशी समाचारपत्र ही, निरपेक्षता का सर्वोच्च मानक है। ग्रर्थात् यदि इन्होंने (विदेश समाचारपत्रो ने) भी कोई बात कही है तो हम यह विश्वास करने के लिये बाध्य हैं। मैं "तक" शब्द से विशेष रूप से प्रभावित हुग्रा। मै इस "तक" शब्द का एक भिन्न संदर्भ मे इस्तेमाल कर सकता था : ग्रनेक विदेशी समाचारपत्रो तक ने लिखा है कि मेरी रचनाए सोवियत विरोधी नही है......उदाहरण के लिये, कार्ल मिलर[१५] जो मेरे साम्यवाद मे प्राय:

१४—इसका सकेत स्पष्टतया उन बातो की ग्रोर है, जो विदेशो मे उनकी रचनाग्रों के बारे मे कही गई ग्रथवा जिन्हे भूमिकाग्रों मे लिखा। उक्त पैराग्राफ मे सब संदर्भ ग्रान सोशलिस्ट रियलिज्म के हैं।

१५—न्यू स्टेट्समैन का समीक्षक।

अडिग विश्वास के बारे मे लिखता है अथवा, उदाहरण के लिये इस निम्न उद्धरण का उल्लेख किया जा सकता है : "टेरट्ज क्रांति के प्रति अत्यधिक मोह से देखता है। लेकिन बाद मे जो कुछ हुआ उसके प्रति उसका दृष्टिकोण अधिकृत परम्परा के अनुरूप नही है।" यदि हम फासिस्ट हैं तो यह बुर्जुआ लोग यह क्यो कहते हैं कि टेरट्ज अत्यधिक मोह से क्रांति का स्मरण करता है ?

हमारे अपराध के प्रमाणस्वरूप इस्तगासे ने फिलीपोव के उद्धरण दिये हैं। लेकिन माइलोज और फील्ड जैसे अन्य लोग मूर्ख है, हैं क्या ? क्या वस्तुतः उनका महत्व फिलीपोव से कहीं अधिक नही है; आखिरकार ये लोग कही अधिक गंभीर लेखक हैं।

इसके परिणामस्वरूप हमारे ऊपर उस "विद्वेष" का आरोप लगाया गया है, जिससे "एक व्हाइट गार्ड तक ईर्ष्या कर सकता है" और हमारी पुस्तको पर लगी कुछ मोहरो का उल्लेख हमारे विरुद्ध किया गया है (जैसे "सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी से सघर्ष करो" और ऐसी ही कोई अन्य बात, जिसका मुझे स्मरण नही है।) पुस्तक पर जो मोहर लगी हैं, उससे स्वयं पुस्तक को समानार्थक बताया गया है। मैं कल्पना कर सकता हूं कि ऐसी ही मोहर जोशचेन्को, सोल्झनित्सीन और अखमातोवा की रेक्वीन पर लगाई गई हैं। प्रचार के लिये लगायी गई मोहरो और साहित्यिक रचनाओ के बीच कोई अन्तर नही किया गया है।

प्रश्न उठता है, प्रचार क्या है और साहित्य क्या है ? इस्तगासे का विचार है कि साहित्य प्रचार का एक रूप है और केवल दो प्रकार के प्रचार हैं। सोवियत समर्थक अथवा सोवियत विरोधी। यदि साहित्य गैर-सोवियत है तो भी इसका यह अर्थ होता है कि यह सोवियत विरोधी है, मैं इस बात को स्वीकार नही कर सकता। यदि लेखको के आधार पर मूल्याकन और वर्गीकरण किया जाता है तो यह घटिया बात है। लेकिन उन लोगो के साथ क्या किया जायेगा जो घोषणापत्र प्रकाशित करते हैं ? ऐसा व्यक्ति भी दण्ड सहिता की धारा ७० के अन्तर्गत आता है। यदि एक साहित्यिक रचना पर इस धारा के अन्तर्गत की गई अधिकतम दण्ड की व्यवस्था को ध्यान मे रख कर विचार किया जाता है तो एक राजनीतिक पुस्तिका के मामले मे क्या किया जायेगा ? अथवा इन दोनों मे कोई अन्तर नही है ? इस्तगासे के लिये, इनमे कोई अन्तर नही है।

साहित्य विशेषज्ञ केदरीना ने कहा है कि कोई भी व्यक्ति किसी चरागाह मे मौजूद तितलियों पर राजनीतिक दृष्टिकोण का आरोप नही कर सकता।[१६] लेकिन यथार्थ को एक चरागाह मे मौजूद तितलियो मे नही बदला जा सकता। क्या जोशचेन्को की रचनाओ पर भी सोवियत विरोधी अर्थ आरोपित नही किया गया था। वस्तुत, क्या कोई ऐसा लेखक है जिसकी रचनाओ मे किसी न किसी समय यह अर्थ ढूढ निकालने का प्रयास न किया गया हो ? मैं जानता हूं, यह अन्तर है कि उन्होने यही, देश मे, अपनी रचनाए प्रकाशित की। लेकिन प्रत्येक लेखक, विशेष रूप से यदि वह व्यग्य लिखता है तो उस पर सोवियत विरोधी

१६—केदरीना के भाषण के विवरण मे "चरागाह मे फूल" कहा गया है।

इरादों का आरोप लगाया गया। उद्धरण के लिये इल्फ और पेत्रोव पर भी प्रवाद फैलाने के आरोप लगाये गये थे। देमेयान बेदनी[17] तक की रचनाओ मे प्रवाद का अनुसधान किया गया था। सच है कि यह एक भिन्न दौर में हुआ था। लेकिन मैं एक भी ऐसे प्रमुख व्यंग्यकार को नही जानता, जिसकी रचनाओं पर कभी न कभी सोवियत विरोधी विचारों का आरोप न लगाया गया हो। यह भी तथ्य है कि अब तक किसी भी व्यक्ति पर उसकी सृजनात्मक गतिविधि के लिये दण्डनीय अपराध का दोषी होने का अभियोग नही लगाया गया अथवा उसे दोषी नही ठहराया गया। साहित्य के पूरे इतिहास में मुझे एक ऐसे दण्ड-नीय अपराध के लिये चलाये जाने वाले मुकदमे का ज्ञान नही है, उन लेखको के विरुद्ध भी नही जिन्होने केवल विदेशो मे ही अपनी रचनाए प्रकाशित नही की बल्कि अत्यधिक आलो-चनात्मक तरीके से अपनी रचनाएं लिखी। मैं अपने मामले और अन्य लोगो के मामलो[18] के बीच तुलना नही करना चाहता। लेकिन क्या मेरा यह विश्वास करना सही है कि सब सोवियत नागरिको को कानून के समक्ष समान समझा जाता है?

मेरे विरुद्ध जो तर्क दिये गये हैं वे ऐसे हैं कि किसी बात का स्पष्टीकरण देना असंभव है। यदि मैं किसी लेख मे मायाकोवस्की के प्रति अपने प्रेम की चर्चा करता हूं तो वे मेरे विरुद्ध मायाकोवस्की के शब्दो का उद्धरण देते हैं: "सोवियत नागरिको का अपना एक गर्व है, जो उनका अपना विशिष्ट और निराला गर्व है।" लेकिन तुमने, वे कहते हैं, अपनी रचनाए विदेश भेजी। लेकिन ऐसा क्यो है कि मैं, चाहे मैं कितना भी असगत और गैर-मार्क्सवादी क्यो न हूं, मायाकोवस्की के प्रति अपने आकर्षण और प्रशसा के भाव को व्यक्त नही कर सकता।"

१७—इलिया इल्फ (१८९७-१९३७) और ईवजेनी पेत्रोव (१९०३-४२) प्रसिद्ध व्यंग्य रचनाओ, 'दि ट्वेल्व चेयर्स' और 'दि गोल्डन काफ' के सह-लेखक थे। स्तालिन के शासन के अन्तिम वर्षों में इन रचनाओ पर प्रायः पूरी पाबन्दी लगा दी गई थी। देमयान बेदनी (१८८३-१९४५) परम्परा के अनुरूप लिखने वाला एक "सर्वहारावादी" कवि था। लेकिन एक बार एक गीति नाट्य में मनमानी स्वतन्त्रता लेने के लिये उसकी कडी आलोचना की गई थी क्योकि इस गीति नाट्य से स्तालिन नाराज हो गये थे, क्योकि इसमें सैन्ट ब्लाडिमिर द्वारा रूस को ईसाई धर्म में दीक्षित करने का व्यंग्य चित्रण किया गया था। जब सन् १९३७ में इस 'बोगात्येरी' को मंच पर प्रस्तुत किया गया तब तक यह निर्णय किया जा चुका था कि यह घटना आखिरकार, प्रगतिशील थी। यह निर्णय रूस के लोगों की देश-भक्ति का लाभ उठाने की दृष्टि से किया गया स्तालिन का निर्णय था।

१८—संभवतः यहां सिन्यावस्की, रेमेजोव की ओर सकेत कर रहा है, जिसने अपनी रचनाएं एक छद्म नाम से विदेशो में प्रकाशित की (देखिए पृष्ठ १८१ की पाद टिप्पणी) लेकिन उस पर इस लिये मुकदमा नही चलाया गया, क्योंकि वह सरकारी गवाह बन गया था। रेमेजोव की रचनाएं सिन्यावस्की की रचनाओं से कहीं अधिक राजनीतिक हैं।

यहा "यह—या वह" का कानून लागू कर दिया जाता है। कभी इसे उचित ठहराया जाता है, लेकिन किसी अन्य समय पर परिणाम भयावह होते है। वह जो हमारे साथ नही है, हमारे विरुद्ध है। कुछ विशेष अवधियो मे क्राति मे, युद्ध या गृह युद्ध मे—यह तर्क सही हो सकता है, लेकिन यह शान्तिकाल मे, और साहित्य के क्षेत्र मे लागू करने पर अत्यधिक खतरनाक हो उठता है। मुझसे पूछा जाता है: "तुम्हारे सकारात्मक नायक कहा है। अह तुम्हारे पास कोई ऐसा नायक है ही नही। अह तुम समाजवादी नही। अह, तुम यथार्थवादी नही हो। अह, तुम मार्क्सवादी नही हो। अह, तुम अतिशयकल्पनावादी हो और एक आदर्शवादी हो और इससे भी बडी बात यह है कि तुम विदेशो मे अपनी रचनाए प्रकाशित करते हो। हा, यह तो है ही कि तुम क्राति विरोधी हो। मेरी अप्रकाशित कहानी "पखेनत्ज[१९]" मे एक वाक्य है, जिसे मैं समझता हू कि मेरे ऊपर लागू किया जा सकता है: "ज़रा सोचिए, केवल इसलिए कि मैं दूसरो से भिन्न हू, उन्हे मेरी निन्दा करनी है।" हा, मैं दूसरो से भिन्न हू। लेकिन मैं स्वय को शत्रु नही समझता हू। मैं सोवियत व्यक्ति हू और मेरी रचनाए शत्रुतापूर्ण नही हैं। इस विचित्र और अत्यधिक उद्रेक से भरे वातावरण मे, ऐसे किसी भी व्यक्ति को जो "भिन्न" है, शत्रु कहा जा सकता है। लेकिन यह सत्य पर पहुचने का निरपेक्ष तरीका नही है। इससे भी अधिक मैं यह नही समझ पाता कि शत्रुओ का आविष्कार करने की आवश्यकता क्यो है, साहित्यिक बिम्बो को यथार्थ बता कर एक के ऊपर एक राक्षस का ढेर लगाने की आवश्यकता क्यो है।

मैं इस बात का गहराई से अनुभव करता हू कि न्यायिक मानको को साहित्य पर लागू नही किया जा सकता। एक कलात्मक बिम्ब का स्वरूप जटिल होता है और सदा स्वय लेखक भी इसका स्पष्टीकरण नही दे पाता। मैं सोचता हूं कि यदि स्वय शैक्सपीयर से (किसी भी व्यक्ति को यह कल्पना नही करनी चाहिये कि मैं अपनी तुलना शैक्सपीयर से कर रहा हू) यह पूछा जाता कि "हैमलेट का अर्थ क्या है अथवा मैकबैथ का क्या अर्थ है, क्या इनमे कोई द्रोहपूर्ण अर्थ भरा हुआ है" ? तो मैं सोचता हू कि स्वय शैक्सपीयर इन प्रश्नो का उत्तर नही दे सकता था। आप वकील लोग, उन शब्दो से सम्बन्धित रहते हैं, जिनकी सूक्ष्म व्याख्या और परिभाषा की आवश्यकता होती है। जितनी अधिक सकीर्ण परिभाषा हो, उसे उतना ही सूक्ष्म माना जाता है। लेकिन इसके विपरीत, साहित्यिक बिम्व के मामले मे अर्थ जितना अधिक व्यापक होता है, उसे उतना ही अधिक सही समझा जाता है।

१९—अब यह एनकाऊटर के अप्रैल १९६६ के अक मे प्रकाशित हो चुकी है।

चौथा दिन
यूली डेनियल की अन्तिम अभियुक्ति

प्रातःकालीन सत्र, १४ फरवरी १६६६

इस सत्र की कारवाई का विवरण, जिसमे प्रतिवादियों को सजा सुनाई गई, अधूरा है।

मै जानता था कि मुझे अन्तिम अभियुक्ति का अधिकार मिलना चाहिये। मैंने सोचा—क्या मुझे इस अधिकार को छोड देना चाहिये, यद्यपि मैं इसका अधिकारी हूं, अथवा मुझे स्वय को सदा की तरह सामान्य बातो तक ही सीमित रखना चाहिये। लेकिन तभी मैंने यह अनुभव किया कि यह केवल मुकदमे के दौरान मेरे अन्तिम शब्द[1] ही नही होगे, सभवत मैं अपने जीवन मे जनता को सबोधित कर जो कुछ कह सकता हूं, उसके रूप मे भी ये अन्तिम शब्द हो। और यहा लोग है, इस अदालत के कमरे मे लोग बैठे हैं और न्यायपीठ पर भी लोग बैठे है। अत' मैंने बोलने का निश्चय किया।

मेरे कामरेड सिन्यावस्की की अन्तिम अभियुक्ति मे एक शून्य दीवार को बेधने, किसी भी बात को समझने की अनिच्छा और किसी भी बात को सुनने की अनिच्छा की शून्य दीवार को बेधने की असभवता के बारे मे निराशा दिखाई पडी है। मैं इतना अधिक निराशावादी नही हूं। मैं एक बार फिर इस्तगासे और सफाई पक्ष द्वारा प्रस्तुत तर्कों को दोहराना चाहता हू।

मुकदमे के दौरान मैं बार-बार स्वय से यह प्रश्न पूछता रहा : हमसे सवाल करने का क्या उद्देश्य है? उत्तर स्पष्ट और सीधा-सादा होना चाहिये। हमारे उत्तर सुनने के लिये और फिर दूसरा प्रश्न पूछने के लिये, कारवाई को इस तरह चलाने के लिये ताकि अन्त मे सचाई पर पहुचा जा सके।

यह नही हुआ है।

अपने इस मुद्दे को स्पष्ट करने के लिये मैं आपको एक बार फिर उस तरीके का स्मरण दिलाऊगा, जिस तरीके से पूरी कारवाई हुई है।

१—"अन्तिम अभियुक्ति" के लिए रूसी भाषा में "अन्तिम शब्द" (पोसलेदनेय स्लोवो) का प्रयोग होता है।

मै केवल अपनी रचनाओ की ही चर्चा करूंगा—मैं आशा करता हूं कि मेरे मित्र सिन्यावस्की मुझे क्षमा करेंगे, उन्होने हम दोनो की रचनाओ की चर्चा की है—और मैं केवल इसलिये अपनी रचनाओ की ही चर्चा करने जा रहा हू, क्योकि मुझे अमनी रचनाए ही सर्वोत्तम तरीके से याद है।

मुझसे लगातार यही पूछा जाता रहा कि मैंने अपनी कहानी "दिस इज मास्को स्पीकिंग" क्यो लिखी ? हर बार मेरा उत्तर था क्योकि मैने यह अनुभव किया कि व्यक्ति पूजा के पुनर्जन्म का वास्तविक खतरा उत्पन्न हो रहा था। मुझे इसका सदा यह उत्तर मिला—यदि यह कहानी १६६०-६१ मे लिखी गई तो व्यक्ति पूजा की सार्थकता कैसे सिद्ध होती है ? इसके उत्तर मे मैंने कहा : ठीक इन्ही वर्षों मे ऐसी अनेक घटनाए घटी जिससे कोई व्यक्ति यह अनुभव कर सकता था कि व्यक्ति पूजा को फिर पुनरुज्जीवित किया जा रहा है। इस बात से इनकार नही किया गया, मुझसे नही कहा गया . "तुम झूठ बोल रहे हो यह सच नही है"—बस मेरे शब्दो की इस प्रकार उपेक्षा कर दी गई मानो मैंने उन्हे कहा ही नही था। इसके बाद इस्तगासा कहता है तुमने अपने देशवासियो के विरुद्ध प्रवाद फैलाया है, अपने देश और अपनी सरकार के विरुद्ध 'सार्वजनिक हत्या दिवस' के अपने भयावह आविष्कार के द्वारा प्रवाद फैलाया है। इसका मैंने उत्तर दिया : यह घटना घट सकती थी—केवल उन अपराधो का स्मरण करने भर की आवश्यकता है; जो व्यक्ति पूजा के दौर मे हुए थे। ये अपराध उन बातो से कही अधिक भयकर हैं जिनके बारे मे मैंने या सिन्यावस्की ने लिखा है। यहा आकर इस्तगासे ने मेरी बात सुननी बन्द कर दी, मेरी बात का कोई उत्तर नही दिया और मैंने जो कुछ भी कहा बस उसकी उपेक्षा की। हम जो कहते थे उसे सुनने से इनकार करना, हमारे स्पष्टीकरणो पर जरा भी कान न देना, इस पूरे मुकदमे की अपनी विशिष्टता रही है।

मेरी अन्य रचनाओ की भी यही कहानी है। यह पूछे जाने पर कि मैंने "अटोनमेंट" कहानी क्यो लिखी, मैंने समझाते हुए कहा : क्योकि मैं समझता हू कि समाज के सब सदस्य, हम सब लोग, व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से उन सब घटनाओ के लिए उत्तरदायी होते हैं, जो हमारे समाज मे घटती हैं। हो सकता है मैं गलत होऊ अथवा यह मेरी भ्राति हो। लेकिन इसके उत्तर मे इस्तगासे ने केवल यह कहा : "यह सोवियत जनता और सोवियत बुद्धिवादियो के विरुद्ध प्रवाद है।" उन्होंने मुझसे तर्क नही किया बस मेरे हर कथन की पूर्ण उपेक्षा की। प्रतिवादियो ने जो कुछ भी कहा उसका सरलतम उत्तर था "प्रवाद"।

"जन अभियोक्ता", लेखक वासिलयेव, ने कहा कि वह हम दोनो पर उन सबके नाम पर जो जीवित हैं और जो युद्ध मे बलिदान हुए हैं, और जिनके नाम लेखक क्लब की इमारत मे सगमरमर पर स्वर्ण अक्षरो मे खुदे हुए हैं अभियोग लगाता है। संगमरमर के एक पत्थर पर खुदी, इन नाम सूचियो से मैं परिचित हूं। युद्ध मे जिन लोगों ने अपना

बलिदान दिया है उनके नामो से मैं परिचित हूं। मैं उनमें से कुछ को व्यक्तिगत रूप से जानता हूं और उनकी स्मृति मेरे लिये पवित्र है। लेकिन वासिलयेव ने सिन्यावस्की के लेख से यह उद्धरण दिया : "ताकि रक्त की एक बूंद न गिरे, हमने हत्याएं की, और हत्याए की, और हत्याए की···' तो वासिलयेव ने हमे अन्य नामो का स्मरण क्यो नही दिलाया अथवा क्या ये नाम उसके लिये अपरिचित है? मेरा तात्पर्य बाबेल, मैंडेलशतम, ब्रूनो जासिएन्स्की, आइवन कातायेव, कोल्तसोव, त्रेत्याकोव, विवतको, मार्किश और अन्य अनेक लोगो से है[2]। सभवत वासिलयेव ने कभी भी इनकी रचनाए नही पढी अथवा इनके नाम नहीं सुने? लेकिन संभवत साहित्य विशेषज्ञ केदरीना, लेरीदोव और नूसीनोव के नामो से परिचित हो[3]? लेकिन यदि वे साहित्य सबधी मामलो से इस सीमा तक अनभिज्ञ है, तो सभवत: मीयरहोल्द[4] का नाम उनकी तन्द्रा तोड सके? अथवा यदि वे कला सम्बन्धी मामलो से व्यापक रूप से अपरिचित है तो भी सभवत उन्होने पोस्तीशेव, तुखाचेवस्को, ब्लूचर, कोसिओर, गमार्निक, और याकिर[5] के नाम सुने होगे। स्पष्ट है कि यदि हम इस तथ्य को स्वीकार करें कि हमने इन लोगो की हत्याए नही की तो यह स्पष्ट है कि इन लोगो की जुकाम के कारण अपने बिस्तरो पर ही मृत्यु हुई होगी। लेकिन सत्य क्या है— हमने हत्याए की या हमने हत्याए नही की? क्या यह सब कुछ हुआ अथवा नही हुआ? यह स्वाग करना कि यह सब कुछ नही हुआ, कि हमने इन लोगो की हत्याए नही की, एक अपमानजनक बात है। यह—मुझे इस बात को इतने कड़े शब्दो मे कहने के लिये क्षमा करें—उन लोगो की स्मृति पर थूकने के समान है, जो बलिदान हो चुके हैं।

२—ब्रूनो जासिएन्स्की (१९०१-४१), पोलैंड का एक कम्युनिस्ट लेखक, जो १९२९ मे सोवियत सघ मे जाकर बस गया, आइवन कातायेव (१९०२-?), उपन्यासकार, इस शताब्दी के तीसरे और चौथे दशको मे एक कर्मठ कम्युनिस्ट के रूप मे विख्यात; माइखेल कोल्तसोव (१८९८-१९४२) पत्रकार और लेखक, अपनी स्पेनिश डायरी (१९३८) के लिये प्रसिद्ध, सर्गेई त्रेत्याकोव (१८९२-१९३९), 'रोर, चाइना' का लेखक लीव विवतकोव (१८९०-१९५२) और पेरेत्स मार्किश (१८९५-१९५२), यिद्दिश कवि जिन्हे १९५२ मे अन्य यहूदी लेखको के साथ गोली से उडा दिया गया था। यहा जिन अन्य लेखको के नामो का उल्लेख हुआ है, उनकी मृत्यु बलात् श्रम शिविरो मे हुई।

३—माइखेल लेबीदोव (१८९२-?) और इसाक नूसीनोव (१८८९-?), प्रमुख साहित्यिक समालोचक थे जो स्तालिन के शासनकाल के शुद्धि अभियानो मे अन्तर्धान हो गये।

४—वसेवोलोद मीयरहोल्द (१८७४-१९४२), प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक, जिसे १९३९ मे गिरफ्तार किया गया और जिसकी एक बलात् श्रम शिविर में मृत्यु हुई।

५—सेना और पार्टी के प्रमुख नेता जिनकी हत्या स्तालिन ने की।

न्यायाधीश ' प्रतिवादी डेनियल मुझे यहा तुम्हे टोकना होगा। तुम्हारी इस उद्धत अभिव्यक्ति के लिये कोई स्थान नहीं है।

डेनियल अदालत से अपनी अभिव्यक्ति की स्पष्टता और कडे शब्दो के लिये क्षमा चाहता हूं। मैं अत्यधिक तनावग्रस्त हूं और मेरे लिये अपने शब्दो का कुशलता से चुनाव कर पाना मुश्किल है। लेकिन मैं आगे और अधिक सयत रहने का प्रयास करूगा।

इस्तगासा हमसे कहता है: स्वय अपनी रचनाओ का मूल्याकन करो और यह स्वीकार करो कि ये निन्दनीय और बदनामी फैलाने" वाली रचनाए हैं। लेकिन हम यह नही कह सकते। हमने अपनी आखो के समक्ष घटने वाली घटनाओं को उसी रूप मे चित्रित किया है। हमारे समक्ष कोई वैकलपिक विचार प्रस्तुत नही किये गये थे। हमे यह नही बताया गया था कि ये अपराध हुए अथवा ये अपराध नही हुए, हमे किसी ने भी नही बताया, यह सच नही है कि लोग एक दूसरे के कार्यो और समाज के कार्यों के लिए उत्तरदायी होते है। इन बातों पर बस मौन रहा। इस सबध मे कुछ भी नही कहा गया। हमारे सब स्पष्टीकरण, और इसी प्रकार हमारी रचनाए भी, ऊधर मे लटकती हुई छोड दी गई हैं और इन पर कोई विचार नही किया गया।

यहा अपने भाषण मे "जन अभियोक्ता" केदरीना ने, कुछ गीतात्मक अतिरेको और कुछ नयी बातो सहित, अपना साहित्यिक गजट मे प्रकाशित "स्मरद्याकोव के उत्तराधिकारी" शीर्षक लेख प्रायः पूरे का पूरा दोहरा दिया है। मैं एक क्षण इस लेख पर विचार करना चाहूंगा क्योकि यहा मुकदमे की कारवाई के दौरान इसे इस्तगासे की ओर से एक भाषण मे कहा गया है और एक अन्य कारण से भी इस का उल्लेख मैं आगे चलकर करूगा। मेरी कहानी "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" के 'साहित्यिक विश्लेषण" के आरम्भ मे केदरीना नायक के विषय मे कहती है ' 'वह हत्या करना चाहता है। लेकिन सवाल है किसकी ?" लेकिन तथ्य यह है कि मेरा नायक हत्या नही करना चाहता, जैसा कि कहानी से पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। प्रसगवश यह राय रखने वाला मैं ही एक मात्र व्यक्ति नही हूं—अदालत के अध्यक्ष मुझ से सहमत हैं। गवाह गार्बूज़ेन्को से जिरह के समय उन्होने पूछा : "तुम, एक कम्युनिस्ट के रूप मे इस तथ्य के बारे मे क्या सोचते हो कि कहानी के नायक को हत्या करने का आदेश दिया गया है, लेकिन वह यह करने से इनकार करता है[६] ?" मैं अदालत के अध्यक्ष के प्रति अपने नायक के दृष्टिकोण की इस सही परिभाषा के लिये आभारी हूं। हा, यह सही है कि मैं यह नही सोचता कि अदालत के अध्यक्ष की राय से साहित्यिक विशेषज्ञा केदरीना को अनिवार्य रूप से सहमत होना चाहिये—उसे मेरी रचना की अपनी व्याख्या प्रस्तुत करने का पूरा अधिकार है—लेकिन प्रश्न है: वह किस पर इसे आधारित करती है ? वह लिखती है : "······नायक स्टुडीबेकरो के बारे मे दिवा-स्वप्न देखता है—

६—न्यायाधीश द्वारा पूछा गया यह प्रश्न, मुकदमे की कारवाई के विवरण में उपलब्ध नही है।

एक, दो, आठ, चालीस स्टुडीवेकरों के बारे में—जो शवों को रौंदती हुई जा रही हे।" मैं इस अंश पर, जिसका उद्धरण केदरीना के लेख मे, और यहा अदालत मे, किया गया है, विचार करूंगा।

प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि यहां जिस रूप मे इस अश का उद्धरण दिया गया है वह उससे भिन्न है। कभी भी इस अश का पूरा उद्धरण नही दिया गया : "और वे लोग जो निर्णय करने का अधिकार रखते है और जिसके हाथो मे सत्ता है, हम उनके साथ कैसा व्यवहार करे ? सन् १९३७ के वारे मे क्या होगा, जब पूरा देश व्यापक शुद्धि अभियानो से उद्वेलित था। और युद्ध के वाद के पागलपन के वारे में हम क्या करें ? क्या इन सब बातों को क्षमा किया जा सकता है ?" (मै स्मृति से ही यह उद्धरण दे रहा हूं)। सदा बडी सावधानी से मौन रह कर इस वाक्य की उपेक्षा की गई है क्यों ? क्योंकि इससे नायक के घृणा भाव के कारण स्पष्ट होते है और इसके वारे मे तर्क करना होगा और किसी न किसी रूप मे इसका स्पष्टीकरण देना होगा। अतः इसकी उपेक्षा करना कही अधिक आसान है। इस वाक्य के वाद वह अश आता है, जिसे अदालत मे उद्धृत किया गया।

क्या तुम्हे आज भी याद है कि यह कैसे किया जाता है ? फ्यूज······पिन को खीच कर वाहर निकालो, फैंको······जमीन पर मु ह के बल लेट जाओ, लेटे रहो। अव यह फट गया है और तुम आगे दौडते हो, कमर पर राइफल लगा कर गोली वर्षा करते हुए—एक के वाद एक गोली, और फिर एक के वाद एक गोली ! इसके वाद नायक के मस्तिष्क मे अनेक वाते उलझ जाती हैं और उसका विचारक्रम अस्पष्ट हो जाता है। "रूसी, जर्मन, जार्जियावासी, रूमानियावासी, यहूदी, हगरीवासी, कोट, तख्तिया, डाक्टरी टुकडिया, कुदाल······" मैं इस पूरे अंश का उद्धरण दे रहा हूं, जहा वस्तुतः एक भयंकर रक्त रजित घटना घटी है और जहां का हर विवरण असुखद है. "वह इतना दुवला पतला क्यों है ? वह रूई के पैंड लगा कोट क्यो पहने हुए है। वह तमगो से सजा कोट क्यों पहने हुए है ? ······शरीर के ऊपर से एक स्टूडीवेकर, दो स्टूडीवेकर, आठ स्टूडीवेकर, चालीस स्टूडीवेकर गुजर जाती है और तुम वहा एक मेढक की तरह कुचले हुए पड़े रहते हो; हम पहले भी इस दौर से गुजर चुके हैं ?" इस सम्वन्ध मे केदरीना कहती है कि यह स्टूडीवेकरों के वारे मे "दिवा-स्वप्न" है, जो शरीरो को कुचलेंगी। नायक के स्मृति पटल पर इस दृश्य के प्रति जो आतंक और वितृष्णा का भाव अंकित है, उसे नायक का "स्वप्न" वताया गया है। इसे एक ऐसी वात वताया गया है, जिसके लिये वह उत्कठित है। इसे ही केदरीना ने "शुद्ध फासिस्टवाद" कहा है—ये ठीक उसके ही शब्द हैं। अव क्योंकि उसे अपने इस कथन की पुष्टि करनी थी, अतः वह लिखती है "कहानी का" नायक "साम्यवाद और सोवियत प्रणाली से मुक्ति" के इस कार्यक्रम को न्यायोचित ठहराने के लिये इस आशय की वात कहता है कि "सार्वजनिक हत्या" का विचार "समाजवादी सिद्धांत के सार मे" निहित है और लोगों का परस्पर विरोध समाज के स्वरूप का एक अंग है।

मैं यहा यह कहना चाहता हू कि पूरी कहानी मे सोवियत शासन से मुक्ति के बारे मे एक भी शब्द नही है। कहानी का नायक लेनिन के नाम का इस प्रकार उद्बोधन करता है, मानो वह उसकी शरण ले रहा हो। "वह यह भी कभी नही चाहता था, वह जिसे सबसे पहले सगमरमर की इन दीवारो के भीतर चिर-विश्राति के लिये रखा गया था[७]।" अब वह कौन है, जो "मुक्ति" के कार्यक्रम को उचित ठहराने का प्रयास कर रहा है कहानी का नायक या इसका कोई अन्य पात्र ? जब मैंने पहली बार केदरीना का लेख पढा तो मैं यह स्वीकार करूगा कि मेरे मन मे यह बात आई कि कही कोई चीज़ गलत छप गई हैं, कही, कोई मुद्रण की गलती रह गई है कि उसका कहानी के किसी अन्य पात्र से तात्पर्य होगा और यही कारण है कि केदरीना अपने पूरे लेख मे मेरे मुख्य नायक की ही चर्चा करती रही। लेकिन नही, यहा अदालत मे फिर उसी बात को दोहराया गया है। तथ्य यह है कि कहानी का नायक यह नही कहता कि "सार्वजनिक हत्या का विचार समाजवादी सिद्धात के मूल मे निहित है।" कहानी मे यह होता है कि नायक के पास उसका एक परिचित वोलोद्या मार्गुलिस आता है जो एक मूर्ख और सकीर्ण विचारो वाला व्यक्ति है 'वह (मार्गुलिस) मेरे पास आया और मुझ से पूछा कि मैं (मैं कहानी का नायक है, जो प्रथम पुरुष मे सब बातें कहता है) इस सब के बारे मे क्या सोचता हू[८]।" वोलोद्या मार्गुलिस ने "यह तर्क देना शुरू किया कि इन सब बातो की जड समाजवादी सिद्धातो का सार ही है।"

तो अब बताइए कि यह बात नायक कहता है अथवा कहानी का कोई अन्य पात्र। नायक जो कहता है, वह वस्तुत भिन्न बात है। "हमे सच्ची सोवियत प्रणाली के समर्थन में डटे रहना चाहिये।" वह आगे कहता है कि हमारे पिताओ ने क्राति की और हमे इसके सम्बन्ध मे अपने मन मे बुरा भाव नही लाना चाहिये। क्या यह कहानी के नायक द्वारा "साम्यवाद और साम्यवादी प्रणाली से मुक्ति के कार्यक्रम" को "न्यायोचित" ठहराने का प्रयास है ? निश्चित रूप से यह नही है और कहानी मे वह व्यक्ति कौन है, जो कहता है "सब लोग एक दूसरे को एक चम्मच भर पानी मे डुबा देंगे" और "बहुत जल्दी ही मनुष्यो के बीच सम्पर्क की कड़ी केवल पशु ही रह जायेगे ?" केदरीना के अनुसार ये शब्द भी मेरे नायक ने ही कहे है। यह बात भी सच नही है। ये शब्द एक अर्द्ध-विक्षिप्त और जनहित विरोधी वृद्ध ने कहे हैं, जिससे कहानी का नायक तर्क करता है[९]। अत अब आतकवाद और साम्यवाद तथा सोवियत शासन से मुक्ति के कथित आह्वान के सैद्धातिक औचित्य मे क्या शेष रह जाता है ? केदरीना ने उस दृष्टि से यह कहानी नही पढी है, जिस दृष्टि से इसे लिखा गया है बल्कि जानबूझ कर एक पूर्वाग्रह ग्रस्त तरीके से इसे पढा है। इसे उस तरीके

७—डिसोनैन्ट वॉयसेज़, पृष्ठ २९७।

८—अर्थात् सर्वोच्च सोवियत का आदेश, जिसमे "सार्वजनिक हत्या दिवस" की घोषणा की गई।

९—डिसोनैन्ट वॉयसेज़, पृष्ठ २८६।

से पढा है, जिस तरीके से इसे नही पढा जा सकता।

सिन्यावस्की पर और मुझ पर प्राय हर सभव बात का अभियोग लगाया गया है, जिसमे यह तथ्य भी शामिल है कि हमारी रचनाओं मे 'सकारात्मक" नायक नही है। कहना न होगा कि एक सकारात्मक नायक स्थिति को आसान बना देता है—आप उसकी तुलना अपने "नकारात्मक"-नायक से कर सकते हैं। जब हम उन अन्य लेखको का उल्लेख करते है, जिनकी रचनाओ मे सकारात्मक नायक है, तो हमसे यह कहा जाता है कि हम अपनी तुलना महान् लेखको से करने का प्रयास कर रहे है अथवा हमसे कहा जाता है—जैसा कि शचेद्रिन के मामले में कहा गया—कि उसकी रचनाओ मे एक सकारात्मक नायक है अर्थात् जनता इस नायक का काम करती है। स्पष्ट है कि इस मामले मे "सकारात्मक नायक" अदृश्य है, क्योकि 'दि हिस्ट्री आफ ए टाउन' मे जिन लोगो को चित्रित किया गया है, उनके प्रति हमारे मन मे प्रशसा का भाव नही, बल्कि दया का भाव उत्पन्न होता है और क्या दि गोलोवल्योव फैमिली मे जनता "सकारात्मक" नायक है? जहा तक उस कहानी के उल्लेख करने का सम्बन्ध है, जिसमे एक किसान दो जनरलो के लिये खाना जुटाता है, यह एकदम शर्मनाक है। ऐसा लगता है, केदरीना यह सोचती है कि वह किसान जो जनरलो का पेट भरने के लिये चिडिया पकडने के लिये अपने बालों का जाल बनाता है, और जो स्वेच्छा से गुलामी को स्वीकार करता है रूस की जनता का "सकारात्मक" चित्र प्रस्तुत करता है। शचेद्रिन कभी भी इस बात से सहमत नही हो सकते थे।

मैं केदरीना के लेख का हवाला देने की चिन्ता न करता, यदि यह बात न होती कि इस्तगासे का सारा मामला इसी पर आधारित है।

उन्होने सिन्यावस्की और मेरी रचनाओ के सोवियत विरोधी स्वरूप को सिद्ध करने का किस प्रकार प्रयास किया है। कई तरीके अपनाये गये है। सबसे सीधा सादा और प्रत्यक्ष प्रहार का तरीका यह रहा कि पात्रो के विचारो को, स्वयं लेखक के विचार बताया गया। इस तरीके से अनेक बाते की जा सकती हैं। सिन्यावस्की को ही यह नही सोचना चाहिये कि केवल उसे ही इस तरीके से यहूदी विरोधी घोषित किया गया है। मैं यूली मार्कोविच डेनियल, जो एक यहूदी है, भी यहूदी विरोधी हू। और यह केवल इस कारण से मेरा एक पात्र, एक बूढ़ा बैरा कभी-कभी यहूदियो के बारे मे कुछ कहता है और इस कारण से मेरे चरित्र और जीवन सम्बन्धी विस्तृत विवरण मे यह लिख दिया जाता है: "निकोलाई अर्जहक (डेनियल) एक उग्र और कट्टर यहूदी विरोधी है।" क्या आप समझते है कि यह किसी अनुभवहीन परामर्शदाता ने लिखा? नही, यह रिपोर्ट अकादेमिशियन ने लिखी है[10]।

इसके अलावा एक अन्य तरीका भी है: सदर्भ से अलग हटा कर किसी अश का

१०—पावेल युदिन, एक सोवियत दार्शनिक, स्तालिन का कुख्यात विचारधारा अधिकारी, जो सन् १९८४ मे युगोस्लाविया से रूस के सम्बन्ध टूटने से पहले बेलग्राद मे कोमिन्फार्म पत्रिका का सम्पादन करता था।

उद्धरण देना । इसके लिए इतना ही करना आवश्यक है कि कुछ वाक्य चुन लिये जायें, यहा वहा कुछ काट दिया जाये और फिर आप जो चाहे सिद्ध कर सकते हैं। इसका सर्वोत्तम उदाहण वह तरीका है जिससे "दिस इज मास्को स्पीकिंग" को आतक फैलाने का आह्वान कहा गया है

वार-बार प्रवासी फिलीपोव का उल्लेख किया गया है और उसका उल्लेख इस रूप मे हुआ है मानो वह एक ऐसा व्यक्ति हो, जिसने हमारी रचनाओ का सही मूल्याकन किया है। ऐसा लगता है कि सरकारी वकील के लिये वह सत्य का सर्वोच्च नियता है। लेकिन इस विशेष सभावना का लाभ उठाने मे फिलीपोव तक असफल रहा। कोई भी इस बात का अनुमान लगा सकता है कि यदि वस्तुतः इस कहानी मे आतक फैलाने का आह्वान किया गया होता तो यह निश्चित है कि फिलीपोव सबसे पहले इस बात को पकडता और इस बात का उल्लेख करता। ("जरा देखिए कि छिपे सोवियत लेखक किस प्रकार हत्याए करने और आतक फैलाने का आह्वान करते हैं।)" लेकिन फिलीपोव तक यह नही कह सका।

इसके अलावा एक अन्य तरीका यह रहा है कि हमारी पुस्तको के पात्रो के बारे मे जो आलोचनात्मक बातें कही गई हैं, उन्हे सोवियत शासन के विरुद्ध बातें बताया गया है अर्थात् जहा कही लेखक ने अपने किसी पात्र का भडाफोड करने के लिये कोई बात कही है वहा इस्तगासे ने इसे सोवियत प्रणाली के विरुद्ध कही गई बात बताया है। यहा एक उदाहरण प्रस्तुत है। ग्लावलित ने जो विशेषज्ञता पर आधारित रिपोर्ट दी है, अभियोगपत्र की अधिकाश बातें उस पर आधारित हैं। ग्लावलित की इस रिपोर्ट मे एक अश है, जो शब्दश· इस प्रकार है·—"लेखक यह सभव समझता है कि हमारे देश मे एक "सलिगमैथुन दिवस" तक मनाये जाने की सभावना है।" तथ्य यह है कि कहानी मे यह बात अवसरवादी और कुटिल कलाकार चुपरोव के सम्बन्ध मे कही गई है, जिसके बारे मे कहानी का मुख्य नायक कहता है कि वह "सलिगमैथुन दिवस" तक के लिये इश्तहारो का डिजाइन तैयार करने पर सहमत हो जायेगा, यदि इससे उसे कुछ पैसा मिलता हो[११]। यहा मेरा नायक किस की भर्त्सना कर रहा है, सोवियत प्रणाली की अथवा कहानी के एक अन्य पात्र की।

अभियोगपत्र, ग्लावलित रिपोर्ट और इस्तगासे की ओर से किये गये भाषणों मे हमे मेरी कहानी "अटोनमेंट" के समान उद्धरण देखने को मिलते हैं, और ये उद्धरण क्या हैं· "हमारी जेलें स्वयं हमारे भीतर हैं?" कहानी का नायक वोलस्की कहता है। लेकिन इसके बावजूद यह एक शक्तिशाली आरोप पूरे ससार पर लगाया गया है और जैसा कि वागिल्येव ने कहा है मैंने केवल यही दर्शाने का प्रयास नहीं किया है कि मेरी चिन्ता का विषय केवल साहित्यिक है। मैं अपनी रचनाओ के राजनीतिक कथ्य से इनकार नही करता और वोलस्की के इन शब्दो का एक राजनीतिक पहलू है। लेकिन ये शब्द चिल्ला कर कहने के बाद क्या होता है और जो व्यक्ति ये शब्द चिल्लाता है वह कैसा व्यक्ति है? एक पागल ने, एक ऐसे

११—डिसोनेंट वायसेस से पृष्ठ २८२।

व्यक्ति ने जिसका दिमाग फिर गया है, और जिसे कुछ समय के बाद एक पागलखाने भेज दिया जाता है, चिल्ला चिल्लाकर ये शब्द कहे है।

इनके अलावा सोवियत विरोधी इरादे को "सिद्ध" करने का बड़ा सीधा सादा, लेकिन अत्यधिक प्रभावशाली तरीका है : इस तरीके मे लेखक की ओर से किसी बात का आविष्कार किया जाता है और यह कह दिया जाता है कि उसकी रचना मे सोवियत विरोधी अश हैं, चाहे उसमे एक भी अश ऐसा क्यो न हो 'मेरी कहानी हैड्स" को लीजिए मेरे सफाई पक्ष के वकील किसेनिशस्की ने तार्किकता पर आधारित एक प्रमाण दिया है कि मेरी कहानी का बुनियादी विचार सोवियत विरोधी नही है चाहे आप अपनी इच्छानुसार किसी भी रूप मे इसकी व्याख्या क्यो न करना चाहे। किसेनिशस्की को अपने उत्तर मे केदरीना ने कहा है "ज़रा देखिए कि कितनी गहन अभिव्यक्ति और स्पष्टता से डेनियल ने गोली से उडाये जाने वाले दृश्य का वर्णन किया है, यद्यपि ये बाते उसकी विशिष्टताएं नही हैं।" मै आपसे प्रार्थना करता हू, मैं आपसे विनती करता हूं कि आप इस कथन की जटिलताओ पर विचार करे अर्थात् किसी वर्णन की स्पष्टता और अभिव्यक्ति की गहनता को किस रचना के सोवियत विरोधी स्वरूप का प्रमाण माना जा सकता है। मेरे वकील के मेरी कहानी "हैंड्स" सम्बन्धी कथन का यह उत्तर दिया गया था—और इस सम्बन्ध मे केवल यही कहा गया था।

जहा तक मेरी इस कहानी का सम्बन्ध है, मैं आप सबसे केवल एक बात की प्रार्थना करता हू। अदालत के इस सत्र की कारवाई बहुत जल्दी ही समाप्त हो जायेगी और आप सब लोग अपने घर जायेंगे। अपनी किताबो की अलमारी के पास जाइए। उसमे से एक किताब निकालिए और उसे खोल कर पढ़िये कि किस प्रकार लाल सेना के एक कमांडर को गोली से उडाने का काम करने वाली एक टोली मे नियुक्त किया गया था। वह अपने काम को पूरा कर के घर वापस लौटता है। उसका रंग काला पड गया है, वह दुर्बल पड़ गया है और उसके कदम एक शराबी की तरह लडखडा रहे है। वह पादरियो को नही बल्कि किसानो को गोली से उडाता रहा था इसमे एक ऐसा विवरण है जो मुझे विशेष रूप से अच्छी तरह याद है : उसने जिन लोगो को गोली से उडाया था, उनमे से एक आदमी के हाथ के बारे मे सोचता रहता है, यह हाथ घोडे के खुर की तरह सख्त और तीखा है। उसे मितली आती है और उसका हृदय भय से भर उठता है। जब वह उस स्त्री के साथ अकेला होता है जिससे वह प्रेम करता है तो वह यहा तक अनुभव करता है कि वह नपुंसक हो चुका है। अब, अभियोगपत्र मे हमारे विरुद्ध जो एक अभियोग लगाया गया है और जो बात कही गई है वह इस अश पर भी लागू होती है—यह बात वर्ग युद्ध की नीति के विरुद्ध बताई गई है और कहा गया है कि लेखक ने सोवियत लोगों को नैतिक और शारीरिक दृष्टि से पंगु बनाने का प्रयास किया है।

न्यायाधीश : यह कैसी मूर्खता हो रही है। वर्ग युद्ध की कौन सी नीति ?

डेनियल : मैं अभियोगपत्र से उद्धरण दे रहा हू। यह यहा प्रस्तुत है (पढता हूँ) : "सोवियत लोगो के विरुद्ध वर्ग युद्ध की एक कथित नीति।" अभियोगपत्र मे यही लिखा गया है।

जैसा कि आप ने संभवत अनुमान लगा लिया होगा मैंने शोलोखोव के उपन्यास "एण्ड क्वाइट फ्लोज दि दोन" के एक अध्याय को सक्षेप मे प्रस्तुत किया है और मैंने जिन पात्रो का उल्लेख किया है, वे लाल सेना का कमाण्डर बुनचुक और अन्ना हैं।[12]

हम लोगो पर अभियोग लगाने के लिये अन्य किन तरीको का इस्तेमाल किया गया है ? किसी अवधि की आलोचना को पूरे युग की आलोचना बताया गया है, ५ वर्ष की अवधि की आलोचना को पचास वर्ष की आलोचना दर्शाया गया है। यदि आप २ या ३ वर्ष की छोटी सी अवधि के बारे मे भी लिखते हैं, तो आपके ऊपर पूरे सोवियत युग के बारे मे लिखने का आरोप लगया जाता है। इस्तगासा इस तथ्य पर अपनी आखें बन्द रखने का प्रयास करता है कि सिन्यावस्की का पूरा निबन्ध (आन सोशलिस्ट रियलिज़म) अतीत से सम्बन्धित है और इसमे प्रयुक्त सब क्रियाए भूतकाल की हैं "हमने हत्याए की" न कि "हम हत्याए करते हैं" बल्कि "हमने हत्याएं की"। और मेरी कहानी "हैंड्स" को छोडकर और सब रचनाए १९५० के बाद के वर्षों की पृष्ठभूमि पर हैं और यह एक ऐसी अवधि है जब व्यक्ति पूजा के पुनर्जन्म का वास्तविक खतरा सामने था। मैंने बार-बार यह बात कही है और यह बात स्वय मेरी पुस्तक से भी स्पष्ट है, लेकिन कोई सुनता ही नही।

अन्तत मैं एक अन्तिम तरीके का उल्लेख करता हू : यह कथन कि एक अश की आलोचना पूरी वस्तु पर लागू होती है। अत. कुछ बातो से असहमति को पूरी प्रणाली का ही अस्वीकरण बता दिया जाता है।

सक्षेप मे, यह वे तरीके हैं जिसके द्वारा हमारे अपराध को 'सिद्ध' कर दिया गया है। यदि हमारी बातें सुनी जाती तो हमे ये तरीके इतने भयावह दिखाई न पडते, जैसा कि सिन्यावस्की ने उचित रूप से कहा है हम लोग कहा से उत्पन्न हुए हम दो भेडिए और विशाल चमगादड; क्या वे यह सोचते हैं कि हम आकाश से नीचे आ गिरे ? इस्तगासे का उत्तर है कि हम कितने अधिक पतित है। जो तर्क दिये गये हैं वे असामान्य : वासिलयेव कहता है कि हमने स्वय को चादी के तीस टुकडो, बच्चो की कुछ लंगोटिया और नाइलोन की कमीजो के लिये बेच दिया है; कि मैंने एक अध्यापक का ईमानदारी का काम छोड कर हाथ पसार कर अनुवाद कार्य के लिये भीख मागते हुए सम्पादकीय कार्यालयो के चक्कर लगाने शुरू कर दिये। यदि मैं अपनी पत्नी से कहता तो वह पत्रो का एक पूरा पुलन्दा ही प्रस्तुत कर सकती थी, जिनमे कवियो ने मुझ से अपनी कविताओ का अनुवाद करने के

१२—एण्ड क्वाइट फ्लोज दि दोन, खण्ड २, अध्याय २०।

अनुरोध किये है। मैंने एक अनुवादक के रूप मे आसानी से पैसा कमाने के लिये एक अध्यापक के कार्य की सुरक्षा को नही त्यागा। बल्कि इसलिए कि मैं बचपन से ही यह स्वप्ने देखता रहा हूं कि मैं कविता के सम्बन्ध मे कुछ करूगा। मैंने १२ वर्ष की उम्र मे अपना पहला अनुवाद किया। जहा तक "आसानी से पैसा कमाने" का सम्बन्ध है, कोई भी अनुवादक आपको यह बता सकता है कि यह पैसा कितनी "आसानी" से कमाया जाता है। मैंने सुरक्षा के जीवन को कठिनाइयो से भरे जीवन के लिये त्यागा। मैं अनुवाद को अपने जीवन का कार्य मानता हूं और मैंने इसे कभी भी पैसा कमाने का साधन नही समझा। हो सकता है, मेरे कुछ अनुवाद बुरे हो, अथवा इनमे मूल रचना के साथ पूरा न्याय न हुआ हो। लेकिन यदि ऐसा है तो इसका कारण मेरी लापरवाही नही है, बल्कि योग्यता की कमी है।

यह बडा विचित्र है कि जिन मामलो मे एक वकील को पूरी तरह से विवेक से काम लेना चाहिये, उनमे सरकारी वकील तथ्यो को स्वीकार करने से इनकार करता है। जब वह इस सम्बन्ध मे बोल रहा था कि हम अपनी रचनाओ के स्वरूप के बारे में किस प्रकार परिचित थे और जब उसने यह कहा कि सन् १९६२ मे एक प्रसारण (रेडियो लिबर्टीका) हुआ, तो पहले मैंने यह सोचा कि शायद वह भूल से यह कह गया है और इसके बाद भी हमने 'दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" और "ल्यूबीमोव" को विदेश भेजा। लेकिन यह प्रसारण क्या था ? वस्तुत. जिस रचना का प्रसारण हुआ वह "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" ही थी। क्या यह समझा जाता है कि मैंने इस कहानी की पाण्डुलिपि दूसरी बार विदेश भेजी ? पहले मैंने सोचा कि यह बात गलती मे उसके मु ह से निकल गई है, लेकिन इसी बात को फिर दुहराया गया रयूरीकोव के लेख का उल्लेख करते हुए सरकारी वकील ने कहा कि हमे चेतावनी मिल चुकी थी, हम रयूरीकोव की राय को जानते थे, लेकिन फिर भी हमने "ल्यूबीमोव" और "दि मैंने फ्राम मिनाप" की पाण्दुलिपियो को विदेश भेजा। रयूरीकोव का लेख कब प्रकाशित हुआ ? सन् १९६२ मे। और ये सम्बन्वित पाण्डुलिपिया कब विदेश भेजी गईं ? सन् १९६१ मे[१३]। क्या यह बात गलती से मुंह से निकली ? नही, इस प्रकार तो सरकारी वकील ने एक द्वेषपूर्ण, सोवियत विरोधी व्यक्ति के मेरे चित्र को एक और गहरे रग से रंगा।

हमारे प्रत्येक कथन को, हमारी सीधी से सीधी बात को, उन बातो तक को, जो यहा बैठा हुआ कोई व्यक्ति कह सकता है, गलत रूप से पेश किया गया : उनकी गलत व्याख्या की गई, "दिस इज़ मास्को स्पीकिंग" मे इज़वेस्तिया के एक सम्पादकीय के बारे मे कुछ लिखा है—अहा, तो तुम समाचारपत्र इज़वेस्तिया का भी मज़ाक उड़ा रहे हो ? क्यों ? लेकिन जब मैं यह कहता हूं कि मैं समाचारपत्र का नही बल्कि उसकी घिसी पिटी भाषा

१३—सिन्यावस्की ने अपने बयान मे कहा है कि उसने सन् १९६३ मे ल्यूबीमोव की पाण्डुलिपि भेजी। यह हो सकता है कि यह बात डेनियल ने ही गलती से कही हो :

और उक्तियों का मजाक उडा रहा हूं तो वे अत्यधिक द्वेषपूर्ण प्रसन्नता से कहते है : "ओह तो अब तुम अपने मत की बात कह रहे हो।" क्या आप यह वस्तुतः सोचते हैं कि किसी समाचारपत्र की घिसीपिटी शब्दावली की चर्चा करना सोवियत विरोधी प्रचार है ? मैं तो इस बात को नही समझ पाता या यह कहा जा सकता है कि मैं इसे आवश्यकता से अधिक अच्छी तरह समझता हूं।

यहा किसी भी बात को ध्यान मे नही रखा गया है—न तो साहित्यक विशेषज्ञो के प्रमाणो को और न ही गवाहो के बयानो को। उदाहरण के लिये, वे कहते है कि सिन्यावस्की यहूदी विरोधी है। लेकिन यह बात सोचने का किसी ने प्रयास क्यो नही किया कि यदि ऐसा है तो उसके यहूदी मित्र कैसे हैं ? उदाहरण के लिये मैं ही हूं। लेकिन मेरी बात तो दूसरी है। मैं तो स्वय ही यहूदी विरोधी हूं। लेकिन मेरी पत्नी, बुखमन है गवाह गोलोमस्तोक है अथवा सुन्दर यहूदी उच्चारण वाली वह महिला है, जो कल यहा गवाहों के कटघरे मे खडी थी और जिसने कहा था, "आद्रेय (सिन्यावस्की) कितना अच्छा व्यक्ति है[१४]।"

इन बातो पर कान न देना ज्यादा आसान है।

मैंने यहा जो कुछ कहा है, उसका यह अर्थ नही समझा जाना चाहिये कि मैं स्वय को और सिन्यावस्की को गुणो का एक उज्ज्वल और किसी भी रूप मे कोई गलत काम न करने वाला महान् उदाहरण मानता हूं। और कि अदालत को हमे तुरन्त हिरासत से मुक्त करना चाहिये और हमे अदालत के खर्चे पर टैक्सी से घर भेजना चाहिये। हम अपराधी है—अपनी रचनाओ के लिये नही, बल्कि अपनी रचनाओं को विदेश भेजने के लिये। हमारी पुस्तको में राजनीतिक दृष्टि से कुछ विवेकहीन बातें कही गई हैं। कुछ अतिशयोक्ति हैं और कुछ अपमानजनक बातें भी। लेकिन क्या सिन्यावस्की के जीवन के १२ वर्ष और मेरे जीवन के ६ वर्ष, हमारी उच्छृखलता, विवेकहीनता और निर्णय की खामी के लिये बहुत बडा दण्ड नही है[१५] ?

१४—सभवत दोकुकिना ने ही यह कहा था।

१५—सरकारी वकील ने सिन्यावस्की के लिये ७ वर्ष बलात् श्रम शिविर मे और ५ वर्ष निष्कासन मे (अर्थात् कुल मिला कर १२ वर्ष की अधिकतम सजा) रखने की माग की थी और डेनियल के लिये ५ वर्ष बलात् श्रम शिविर मे और तीन वर्ष निष्कासन मे रखने की माग की थी (अर्थात् कुल मिला कर ८ वर्ष "डेनियल ने गलती से ६" वर्ष कहा है अथवा मुकदमे की कारवाई लिखने वाले ने गलती की है)। अदालत ने सिन्यावस्की को ७ वर्ष की और डेनियल को ५ वर्ष की सजा सुनाई। ७ वर्ष की सजा बलात् श्रम शिविर मे रखे जाने की अधिकतम सजा है, लेकिन सिन्यावस्की को ५ वर्ष निष्कासन मे रखने की सजा नही दी गई, जिसकी व्यवस्था दण्ड सहिता की धारा ७० मे है, जिसके अन्तर्गत इन दोनो लेखको पर अभियोग लगाये गये थे। डेनियल को भी ३ वर्ष के निष्कासन की सजा नही दी गई।

जैसा कि हम दोनों ने आरम्भिक जांच के दौरान और यहां भी कहा है कि हमे इस बात का गहरा खेद है कि हमारी रचनाओं का प्रतिक्रियावादी शक्तियो ने अनुचित लाभ उठाया और इस प्रकार हमने अपने देश को हानि पहुंचाई। हमारा यह इरादा नही था हमारा कोई बुरा इरादा नही था और मैं अदालत से अनुरोध करता हूं कि वह इस बात को ध्यान मे रखे।

मैं अपने सब सगे-सम्बन्धियों और मित्रो से क्षमा याचना करता हूं, जिन्हे हमने कष्ट पहुंचाये हैं।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि न तो किसी भी दण्ड सहिता की कोई भी धारा और न ही हमारे विरुद्ध लगाये गये कोई भी आरोप हमे—सिन्यावस्की को और मुझे—यह अनुभव करने से नही रोक सकते कि हम वे व्यक्ति हैं, जो अपने देश और अपने देश-वासियों को प्रेम करते हैं।

बस मैं इतना ही कहना चाहता हूं।

मैं दण्ड की घोषणा सुनने को तैयार हूं[१६]।

१६—अदालत के फैसले की समाचारपत्रो मे प्रकाशित रिपोर्ट के लिए, जो मुकदमे की कारवाई के विवरण मे नही दी गई है, देखिए पृष्ठ ३४६।

मुकदमे की पादटिप्पणी
शिविर से डेनियल का पत्र

यह पत्र, जिसमे डेनियल अपने अपराध की आशिक स्वीकृति को वापस ले लेता है, अप्रैल १९६४ मे लिखा गया था। यह पहली बार २९ मई, को इटली की पत्रिका 'एसप्रैसो' में प्रकाशित हुआ।

सेवा मे "इज़वेस्तिया",

मैं आपसे अपने समाचारपत्र मे यह पत्र प्रकाशित करने का अनुरोध करता हूं अथवा आप ए० सिन्यावस्की और मेरे बारे मे अपने समाचारपत्र मे आगे कुछ भी छापने से पहले इस बात को ध्यान मे रखें।

पूरी आरम्भिक जाच और मुकदमे के दौरान मुझे टेरट्ज़ और अर्जहक की रचनाओ के प्रति जनता की प्रतिक्रिया के बारे मे कोई निरपेक्ष जानकारी नही थी और जाच अधिकारी, सरकारी वकील और अदालत ने सिन्यावस्की और मुझे इस बात से आश्वस्त करने का हर सभव प्रयास किया कि हमारी पुस्तको का केवल हमारे देश के शत्रुओं ने ही प्रचार किया है और हमारे शत्रुओ के देशो मे ही इन पुस्तको को पढा गया है, जिन्होंने इस का उपयोग विचारधारा सम्बन्धी संघर्ष मे एक हथियार के रूप मे किया है। मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि ५ महीने तक लगातार इसी बात को "समझाये जाने का" मुझ पर कुछ प्रभाव हुआ। अन्त मे मैंने "विवेकहीनता" के दोष को स्वीकार किया और इस बात के लिये खेद प्रकट किया कि हमारी रचनाओ का उपयोग हमारे राज्य को क्षति पहुचाने के लिये किया गया है।

अपने मुकदमे और सज़ा सुनाये जाने के बाद मुझ अपने समाचारपत्र पढने और विदेशी समाचारपत्रों के बारे मे कुछ जानकारी उपलब्ध करने का मौका मिला है और इस पर मैंने यह अनुभव किया कि मुकदमे से पहले और मुकदमे के दौरान, मुझे जो भ्रांत करने वाली जानकारी दी गई थी, केवल उसी के आधार पर मैंने खेद प्रकट किया और अपना दोष स्वीकार किया। मैंने अब यह भी अनुभव किया कि हमारे समाचारपत्रो के पाठको (साहित्यिक गज़ट, इज़वेस्तिया और अन्य समाचारपत्र) को टेरट्ज़ और अर्जहक के

उपन्यासों और कहानियों के अर्थ, विचारों और यहा तक कि उनके कलात्मक स्वरूप के बारे मे भी भ्रात किया गया है। हमारे पत्रकारो और आलोचको ने जो ग़लत तरीके, पूरी बेईमानी से अपनाये, मैं यहां उनका उल्लेख नहा करूंगा, इनके बारे मे मैं मुकदमे के दौरान अपनी अन्तिम अभियुक्ति में कह चुका हूं।

हमारे समाचारपत्रो मे मुकदमे की कारवाई, हमारी रचनाओ और हमारे व्यक्तित्व के वारे मे जो मनमाने ढग से और मिथ्या आरोप लगाने के रूप मे जो विवरण प्रकाशित किये गये हैं और दूसरी ओर ससार भर के प्रगतिशील क्षेत्रों मे और सोवियत लेखकों, विद्वानो और साहित्यकारो ने हमारे प्रति जो सहानुभूति प्रकट की है और मुकदमे के विरुद्ध जो विरोध प्रकट किया है, वह मुझे जो कुछ हुआ है उसके वारे में अपनी राय स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिये बाध्य करता है।

अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि हमारी रचनाओ के विरुद्ध, किसी भी परिस्थिति मे, फौजदारी अदालत मे मुकदमा नही चलाया जाना चाहिये था। अदालत का फ़ैसला अनुचित और गैर-कानूनी है। मैंने अपनी रचनाओ द्वारा की जाने वाली कथित क्षति के प्रति जो खेद प्रकट किया है, मैं उसे वापस लेता हूं। सिन्यावस्की और डेनियल के नामों से यदि किसी क्षति को जोड़ा जा सकता है, तो वह हमारी गिरफ्तारी, मुकदमे और दण्ड से ही सम्बन्धित है।

मैं उन सबका धन्यवाद करता हूं, जिन्होने हमारे भाग्य के प्रति चिन्ता प्रकट की है।

मैं सिन्यावस्की से सम्पर्क करने अथवा परामर्श करने की स्थिति में नही हूं। लेकिन मुझे इस बात का विश्वास है कि वे इस पत्र के प्रत्येक शब्द से सहमत होगे।

मैं आभारी हूंगा, यदि आप इस पत्र की पहुंच और इसे आप प्रकाशित करेंगे अथवा नही इस बात की जानकारी मुझे दें।

यूली डेनियल

९ अप्रैल, १९६६

सामने—सिन्यावस्की और डेनियल ने पास्तरनेक की अर्थी को कंधा दिया था। इस चित्र मे वे ताबूत लेकर पास्तरनेक के पेरेदेलकिनो स्थित मकान की सीढ़ियों से नीचे उतर रहे हैं।

मुकदमे से पहले यूली डेनियल ग्रौर
दाएं बलात श्रम शिविर में ।

आन्द्रेय सिन्यावस्की अपने पुत्र के साथ।

त्र के साथ।

४. मुकदमे के बाद

सरकारी टिप्पणियां

सोवियत समाचारपत्रो मे जिस रूप मे आदालत के फैसले की सूचना दी गई, वह वोरिस क्राइमोव के निम्नलिखित लेख से प्रकट होता है, जो इसका एक विशिष्ट उदाहरण है। यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि इसमे सफाई पक्ष की ओर से किये गये भाषणो का कोई उल्लेख नही है।

सोवियत सघ के लेखक सघ के मण्डल के सचिवालय ने इस फैसले की पुष्टि की। लेखक सघ की ओर से फैसले की पुष्टि करने के उसके दावे को, सघ के अनेक सदस्यो ने अपना विरोध प्रकट कर चुनौती दी।

'प्रवाद फैलाने वालो के विरुद्ध निर्णय'

लेखक—बी० क्राइमोव

साहित्यिक गजट, १५ फरवरी, १९६६

"केन्द्रीय लेखक क्लब की इमारत मे जो व्यक्ति प्रवेश करता है वह संगमरमर का एक पत्थर देखता है, जिसपर उन कामरेडों के नाम खुदे हैं, जिन्होने हमारी मातृभूमि की स्वतंत्रता और स्वाधीनता के युद्धो मे, अपना वलिदान दिया है। मैं सिन्यावस्की और डेनियल पर जीवित और मृत, दोनो के नाम पर अभियोग लगाता हूं। उन्हे अपने अपराध का दण्ड मिलना ही चाहिये।"

जन अभियोक्ता, लेखक अर्कादी वासिलयेव के भाषण के ये अन्तिम शब्द थे। अदालत के कमरे मे मौजूद सव लोगो ने उनके भाव और क्रोध भरे भाषण की जवरदस्त करतल ध्वनि द्वारा प्रशसा की।

लेकिन इस भाषण से पहले, अनेक गवाह अपनी गवाही दे चुके थे। उन्होने इस वात की पुष्टि की थी कि अभियोगपत्र मे उल्लिखित सव पुस्तको को सिन्यावस्की और डेनियल ने ही लिखा है। इन लोगो ने कहा कि हमने विदेशो में प्रकाशित पुस्तको के रूप मे अथवा पाण्डुलिपियो के रूप में इन पुस्तको को देखा और पढा है। कुछ गवाहो ने सिन्यावस्की और डेनियल को यह चेतावनी भी दी कि ये पाण्डुलिपियां सोवियत विरोधी हैं।

गवाहो से जिरह के वाद अदालत ने इस्तगासे और सफाई पक्ष के भाषण सुने। सोवियत संघ के लेखक संघ, रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य के लेखक संघ और

इसकी मास्को शाखा के अनुरोध पर अर्कादी वासिलयेव ने अपना भाषण किया। उन्होंने कहा कि सोवियत रूसी साहित्य के इतिहास के खण्ड १ मे एक अभियुक्त, सिन्यावस्की ने, गोर्की के बारे मे एक लेख लिखा है, जिसमे शासका एपानचिन, मेन्चिक और काबालेरोव की तुलना विलम सामगिन से की है। सिन्यावस्की ने इसके बाद लिखा : "सामगिन की तरह ही, उसके साहित्यिक साथी एक मुख्य भूमिका निभाना चाहते है और अपने ऊपर ध्यान केन्द्रित कराना चाहते है। लेकिन ये पात्र पतित हैं, आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि से प्रतिगामी हैं। उनके शब्द उनके कार्यो का विरोध करते है। वे वह नही हैं, जो स्वय को दर्शाना चाहते है। इनमे से अनेक एक "तीसरे तरीके" का स्वप्न देखते है, जो क्रान्ति और प्रति-क्रान्ति के बीच का तरीका है। लेकिन घटनाक्रम की तार्किकता ने उन्हे उन लोगो के खेमे मे धकेल दिया, जो हमारे देश और समाजवाद के शत्रु हैं।"

यह विवरण स्वय सिन्यावस्की और उसके "सहयोगी" डेनियल पर कैसा मौजू बैठता है ?

इनके पश्चिमी समर्थक, अभियुक्तो को सोवियत बुद्धिवादियो के "प्रमुखतम प्रतिनिधि" बताते है। वासिलयेव का कहना है कि सोवियत बुद्धिवादी इस दावे को अत्यधिक क्रोधपूर्वक ठुकराते हैं। सोवियत बुद्धिवादी वे लोग हैं जो अतरिक्ष पर विजय प्राप्त करते हैं। सोवियत बुद्धिवादी वे डाक्टर हैं जो करोड़ो रोगियो को कष्टो से मुक्ति दिलाते है। सोवियत बुद्धि-वादी वे है जो उन कलाकृतियो की सृष्टि करते है, जो हमारे युग के योग्य हैं। इस बुद्धिवादी वर्ग से, सिन्यावस्की और डेनियल का कोई भी सम्बन्ध नहीं है।

अभियुक्तो के पश्चिमी समर्थक डेनियल और सिन्यावस्की की रचनाओ के "कलात्मक गुणो" के बखान मे एक दूसरे से होड़ करते है। लेकिन ए० वासिलयेव यह पूछते हैं कि हत्याओ, काम सम्बन्धी विकृतियो और मनोवैज्ञानिक अतिरेको की खिचड़ी को कैसे एक कलाकृति कहा जा सकता है।

"सिन्यावस्की-टेरट्ज का", जन अभियोक्ता वासिलयेव कहते है, "अश्लील भाषा और अश्लील साहित्य के प्रति भयकर विकृतिपूर्ण रुझान है। ऐसा लगता है कि इसी बात ने विशेष रूप से विदेशो के ललित कला मर्मज्ञो को आकर्षित किया है।"

जन-अभियोक्ता अपने भाषण मे आगे अब्राम टेरट्ज़ और उसके पात्रो की गंदी उक्तियो मे से सबसे अधिक मिथ्या और अपमानजनक बातो की चर्चा करते है। वे सोवियत पाठको को अन्य किसी भी वस्तु से अधिक प्रिय और अधिक मूल्यवान नाम—व्लादिमिर इलिच (लेनिन) के नाम की खिल्ली उडाने वाले अशो की चर्चा करते हैं। वासिलयेव पहले एक उद्धरण देते हैं, फिर दूसरा, फिर तीसरा ··· ·इलिच के मानवीय गुण, वे गुण जिनकी समस्त ससार प्रशसा करता है और जिन गुणो के प्रति शत्रु तक आदर प्रकट करते हैं, सिन्यावस्की के व्यग्य और कटुता को उभारते है।

ए० वासिलयेव कहते है, मैं यहां एक छोटा विषयातर करूगा। सिन्यावस्की ने, स्वयं

उसके अनुसार, अपने ग्राहकों से दो जाकेट, दो स्वेटर, नाइलोन का एक सफेद कमीज़, रबर के एक जोड़ी जूते, एक पत्रिका का चन्दा और अपनी पत्नी तथा पुत्र के लिये कुछ चीजें प्राप्त की हैं। यह बहुत अधिक नही है ? लेकिन मैं इसे भी अधिक समझता हूं। सिन्यावस्की के मालिकों के पास इससे भी कम चीजे देने, इससे भी कम कीमत चुकाने के कारण मौजूद हैं।" तथ्य यह है कि सिन्यावस्की ने वी० आई० लेनिन के बारे मे अपने अनेक वक्तव्य समाजवादी क्रांतिकारियो, और मेनशेविको के वक्तव्यो से चुराये हैं। यह बात आसानी से सिद्ध की जा सकती है—बस केवल देलो नारोदा और वीपरयोद के १९१८ के अकों को देखना ही काफी है।[1]

उस स्थिति मे ईमानदारी की कहा गुंजायश हो सकती है, जब अपने सच्चे मालिकों के लिये काम करते हुए भी सिन्यावस्की ने एक मामूली ठग के रूप मे काम किया है।[2]

अपने भावपूर्ण भाषण के अंत मे, जनअभियोक्ता ने कहा :

"गोर्की सम्बन्धी अपने लेख मे, जिसका उल्लेख मैने अपने भाषण के आरम्भ मे किया है, सिन्यावस्की ने लिखा है कि सामगिन के साहित्यिक सहयोगी, अपनी बाह्य सम्मानित स्थिति की आड मे छिप कर असफल रूप से, विश्वासघात, कुटिलता और हर प्रकार के बुरे इरादों को "सिद्धात के आधार पर" सिद्ध करने का प्रयास करते है। जो लोग देश के हितो के विरुद्ध कार्य करते है, उनका अनिवार्य रूप से भण्डा फूटेगा और वे प्रति-नायको और क्रांति द्वारा इस बात का अभियोग लगाये जाने से भी नही बच सकेंगे कि उन्हे समाप्त कर दिया जाना चाहिये। मै सब सोवियत लेखको के नाम पर सिन्यावस्की (एब्राम टेरट्ज) और डेनियल (निकोलाई अर्जहक) पर गभीरतम अपराधों का आरोप लगाता हूं और अदालत से अनुरोध करता हूं कि उन्हे कठोर दण्ड दे।"

ए० वासिलयेव के भाषण के बाद समालोचिका और साहित्य विशेषज्ञा, जन-अभियोक्ता जोया केदरीना का भाषण हुआ। उन्होने यह जोर दे कर कहा कि सिन्यावस्की और डेनियल ने केवल समाजवादी यथार्थवाद को ही नही ठुकराया है, बल्कि हमारे साहित्य के

१—यह समझ पाना बडा कठिन है कि सिन्यावस्की ने लेनिन के बारे मे जो दो-चार बातें कही है, उनके लिये वह किस सीमा तक सन् १९१८ के मेनशेविक समाचारपत्रो का आभारी है। इस्तगासे ने लेनिन सम्बन्धी जिस अंश की सबसे अधिक शिकायत की है वह यह है कि लेनिन ने अपनी मृत्यु से पहले चन्द्रमा की ओर मुंह उठाकर रेंकना शुरू कर दिया था। देखिए पृष्ठ २४० स्पष्ट है कि यह अंश मेनशेविक समाचारपत्रो अथवा उक्त दूसरे स्रोत से उपलब्ध नही हो सकता था।

२—आरम्भिक जाच के दौरान सिन्यावस्की और डेनियल ने कहा था कि उन्हे इस बात की जानकारी है कि उनके नाम से विदेशी बैंकों मे बहुत बडी धनराशि जमा की गई है। [काइमोव की पाद टिप्पणी]

मूलाधार को ही, उस भूमि को ही अर्थात् समाजवाद और साम्यवाद को ही ठुकरा दिया है, जिस मे वे पैदा हुए, पले और पनपे।

सोवियत जीवन को सक्रिय रूप से ठुकराने के फलस्वरूप ही अभियुक्तो ने सोवियत साहित्य को ठुकराया और यह कोई सयोग की बात नही है कि सिन्यावस्की के एक सोवियत विरोधी लेख मे समाजवादी यथार्थवाद पर प्रहार हुआ है। इस सदर्भ मे जन-अभियोक्ता ने वी० र्यूरिकोव के लेख "समाजवादी यथार्थवाद और इसके आलोचक" शीर्षक लेख का हवाला दिया, जो १६६२ के आरम्भ मे विदेशी साहित्य नामक पत्रिका मे प्रकाशित हुआ था। इस लेख के लेखक ने उन रचनाओ के सोवियत विरोधी स्वरूप की चर्चा की थी, जो विदेशो मे एब्राम टेरट्ज़ के नाम से प्रकाशित हुई है। वी र्यूरिकोव ने यह अनुमान लगाया था कि टेरट्ज़ किसी श्वेत प्रवासी रूसी का उपनाम है,—लेकिन वह यह नही जानता था कि एब्राम टेरट्ज़ यही मास्को मे मौजूद है[३]।

"इस मांग का समर्थन करते हुए सिन्यावस्की और डेनियल को उनके दण्डनीय अपराधो के लिये सज़ा दी जानी जाहिये" जैड० केदरीना ने कहा, "मै अपने देश के लेखक संगठन के अनुरोध पर, सोवियत विरोधी प्रचार के क्रीतदासो के गन्दे आक्रमणो से अपने देश और साहित्य की रक्षा की माग करती हूं।"

अगला भाषण सहायक महाअधिवक्ता, ओ० पी० त्योमुश्किन का हुआ। उन्होंने कहा कि मुकदमे की कारवाई से अभियुक्तो का दण्ड प्रमाणित हो चुका है, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियो और सोवियत प्रणाली के विरुद्ध उनके शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण को प्रमाणित किया जा चुका है। उनकी राय थी कि यह प्रमाणित हो चुका है कि सिन्यावस्की और डेनियल ने जानबूझ कर यह कार्य किये हैं। उनका उद्देश्य सोवियत शासन को क्षति पहुचाना था। उन्होने माग की कि सिन्यावस्की को ७ वर्ष के कारावास और ५ वर्ष के निष्कासन तथा डेनियल को ५ वर्ष के कारावास और ३ वर्ष के निष्कासन का दण्ड दिया जाना चाहिये।

सफाई पक्ष की ओर से भाषणो के बाद प्रतिवादियों ने अपनी अन्तिम अभियुक्तिया प्रस्तुत की। प्रतिवादी डेनियल ने अपना यह अपराध स्वीकार किया कि उसने अपनी रचनाओ को विदेश भेज कर अपने देश के शत्रुओ के हाथो मे सैद्धान्तिक हथियार दे दिये हैं।

सिन्यावस्की ने इस्तगासे के तर्कों का विरोध करने का प्रयास किया लेकिन इसके बावजूद कहा कि "मेरी रचनाए मार्क्सवादी दृष्टिकोण से नही बल्कि आदर्शवादी दृष्टिकोण" से लिखी गई थी।

अदालत ने अपने निर्णय पर विचार के लिये कारवाई को कुछ देर के लिये स्थगित किया। अदालत के कमरे मे उपस्थित लोग वडे तनाव से निर्णय की घोषणा की प्रतीक्षा कर

३—देखिए पृष्ठ २६१।

रहे थे। एक बार फिर ये शब्द सुनाई पड़े : "कृपया खड़े होइए अदालत की कारवाई शुरू होती है।"

निर्णय की घोषणा की गई।

अदालत की राय है कि विदेशो में प्रकाशित सिन्यावस्की और डेनियल की रचनाओ का सोवियत विरोधी और प्रवादात्मक स्वरूप अदालत के समक्ष प्रस्तुत ठोस 'प्रमाणो और आरम्भिक पूछताछ के द्वारा पूरी तरह प्रमाणित हो चुका है। यह तथ्य कि अभियुक्तो ने जानबूझकर सोवियत विरोधी प्रचार किया, जितना उनकीं पुस्तकों की विषय वस्तु से सिद्ध हुआ है, उतना ही स्वयं अभियुक्तो के कार्यो से।

अदालत ने ए० सिन्यावस्की को अपराधियों का सुधार करने वाली, कठोर कोटि की एक श्रम बस्ती मे ७ वर्ष तक हिरासत मे रखने का दण्ड दिया और वाई० डेनियल को एक ऐसी ही बस्ती मे ५ वर्ष तक रखने का दण्ड दिया।

अदालत के कमरे मे मौजूद लोगो ने एक जुट सहमति से अदालत के निर्णय का स्वागत किया।

सोवियत लेखक संघ का वक्तव्य

साहित्यिक गजट, १९ फरवरी १९६६

सिन्यावस्की और डेनियल की गिरफ्तारी के बाद से, और विशेष रूप से उन्हे दिये गये दण्ड की घोषणा के बाद से, सोवियत सघ के लेखक सघ को विदेशी साहित्यिक सगठनो और लेखको से अनेक पत्र-प्राप्त हुए है, जिनमे इस मामले के प्रति सोवियत लेखक संघ के दृष्टि-कोण मे दिलचस्पी दिखाई गई है और यह माग की गई है कि सिन्यावस्की और डेनियल को दोषमुक्त कराने के लिये लेखक सघ हर सभव नैतिक दबाव डाले।

अतः सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के लेखक संघ के मण्डल का सचिवालय निम्नलिखित वक्तव्य जारी करना आवश्यक समझता है।

सिन्यावस्की और डेनियल का मुकदमा—केवल लेखक ही नही बल्कि सोवियत समाज के अन्य प्रतिनिधि भी इस बात की पुष्टि कर सकते है—सोवियत कानून के मानको के अनुसार पूरी कड़ाई से और पूरे विवेक से चलाया गया।

सिन्यावस्की और डेनियल के कार्यो का सोवियत विरोधी स्वरूप लिखित प्रमाणो और गवाहो के बयानो, दोनो से सिद्ध हुआ। इन लोगो पर उनकी कलात्मक शैली के लिये मुक़दमा नही चलाया गया—जैसाकि कुछ बुर्जुआ समाचारपत्र सिद्ध करने का प्रयास कर रहे है—इन लोगों पर सोवियत राज्य, हमारी राजनीतिक और सामाजिक प्रणाली, बहु-राष्ट्रीयता वाली सोवियत जनता, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के विरुद्ध जानबूझ कर अवाद फैलाने के लिये चलाया गया। यह संयोग की बात नही है कि उनकी रचनाओ

को विदेशो के सर्वाधिक निर्लज्ज सोवियत विरोधी प्रचारको ने तुरन्त अपना लिया।

प्रत्येक राज्य उन लोगो से अपनी रक्षा करता है, जो उसके बुनियादी सिद्धाता के विरुद्ध प्रवाद और बदनामी फैलाते है। सोवियत समाजवादी राज्य इसका अपवाद नही है। अपने करोडो नागरिको के सक्रिय सहयोग पर निर्भर करते हुए और अपने कानूनो की शक्ति पर निर्भर करते हुए, यह अपने सिद्धांतो और अपने वैधानिक आधारो को अपवित्र करने और उन्हे क्षति पहुचाने के लिये किये गये प्रयासो से अपनी रक्षा करता है।

समस्त सोवियत जनता सहित, सोवियत लेखक अपने राज्य का समर्थन करते है, जैसा कि उन्होंने सदा किया है और सदा करेगे हमने कभी भी इस तथ्य को रहस्य नही बनाया और हम इसे आज भी रहस्य नही बनाना चाहते। यही कारण है कि हम सिन्यावस्की और डेनियल के कुटिलतापूर्ण कार्यों पर असहमति और क्रोध प्रकट करते हैं और यही कारण है कि हम अपने कानून की भावना और व्यवस्था के अनुसार अदालत द्वारा दिये गये निर्णय का समर्थन करते हैं।[४]

४—२२ फरवरी १९६६ को साहित्यिक गज़ट ने घोषणा की कि १७ फरवरी को रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य के लेखक सघ की मास्को शाखा के मण्डल के सचिवालय ने सिन्यावस्की को सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के लेखक सघ से निकाल दिया है। इस निष्कासन की स्पष्टतया कोई वैधता नही थी, क्योकि सोवियत लेखक सघ के नियमो के अनुसार सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के लेखक सघ के किसी सदस्य को केवल इसका मण्डल ही अपने निर्णय द्वारा निष्कासित कर सकता है और निष्कासन के इस आदेश पर लेखक सघ के अध्यक्ष और महासचिव (ए० फेदिन और ए० सुरकोव) के हस्ताक्षर होने चाहियें। तथ्य यह है कि सिन्यावस्की का नाम लेखक सघ की अधिकृत निर्देशिका से नवम्बर १९६५ मे ही निकाल दिया गया था, जिसका यह अर्थ होता है कि उनकी गिरफ्तारी के कुछ समय बाद ही और मुकदमे से बहुत समय पहले ही उन्हे वास्तव मे निष्कासित कर दिया गया था।

अप्रकाशित पत्र

सिन्यावस्की और डेनियल को दी गई सजाओ की कठोरता, मुकदमे की कारवाई के संचालन और सोवियत समाचार पत्रो मे जिस ढग से मुकदमे के बारे मे सामाचारपत्र प्रकाशित किये गये, उसके प्रति वडी सख्या मे लोगों ने विरोध प्रकट किया। विरोध प्रकट करते हुए जो पत्र आदि भेजे गये, नीचे उनमे से सर्वाधिक महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से प्रचारित पत्र दिये गये है।

मास्को के ६३ लेखको द्वारा हस्ताक्षरित पत्र

सेवा मे
सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के २३ वे अधिवेशन का अध्यक्षमण्डल
सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमण्डल
रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमण्डल

कामरेडो,

हम, अधोहस्ताक्षरी मास्को के लेखको की टोली, आपसे हाल में दण्डित लेखको, आन्द्रेय सिन्यावस्की और यूली डेनियल के लिए जमानत देने की अनुमति देने का अनुरोध करते हैं। हमारा विश्वास है कि यह कार्य बुद्धिमत्तापूर्ण और मानवीय होगा।

यद्यपि हम उन साधनों को उचित नही समझते, जिनके द्वारा इन लेखकों ने विदेशो मे अपनी रचनाएं प्रकाशित की। लेकिन हम इस विचार को भी स्वीकार नही कर सकते कि उनका इरादा सोवियत विरोधी था और केवल इसी आधार पर उन्हे दिये गये कठोर दण्ड को औचित्य सिद्ध किया जा सकता है। मुकदमे के दौरान इस्तगासा इन लेखको के ऐसे द्वेषपूर्ण इरादे को सिद्ध करने मे असफल रहा है।

इसके साथ ही, व्यगात्मक रचनाए लिखने वाले लेखको की भर्त्सना और उन्हे दण्ड देना एक अत्यधिक खतरनाक उदाहरण प्रस्तुत करता है और यह सोवियत संस्कृति की प्रगति मे बाधक बन सकता है। यदि विरोधपूर्ण विचारों को प्रकट न करने दिया जाये अथवा एक साहित्यिक विधा के रूप मे अतिशयोक्तिपूर्ण बिम्बो के उपयोग पर पाबन्दी लगा दी जाये, तो साहित्य और कला का अस्तित्व नही रह सकता। आज की अपनी जटिल

स्थिति मे हमे बौद्धिक और कलात्मक प्रयोगो के लिये पहले से कम नही, बल्कि अधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता है। इस दृष्टिकोण से सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे ने उससे कही अधिक क्षति पहुंचाई है जितनी क्षति इन लेखको की गलतिया पहुचा सकती थी।

सिन्यावस्की और डेनियल प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति है, जिन्हें राजनीतिक विवेक और चतुरता की कमी को पूरा करने का अवसर दिया जाना चाहिये। यदि उन्हे हमारी जमानत पर रिहा कर दिया जाता है और वे सोवियत समाज के सम्पर्क मे रहते हैं, तो वे अपनी गलती को समझेंगे और उन नई साहित्यिक रचनाओ के कलात्मक और सैद्धान्तिक मूल्यो के द्वारा, जो वे लिखेंगे, अपनी गलतियो मे सुधार करेंगे।

अत हम आपसे यह अनुरोध करते हैं कि आप आन्द्रेय सिन्यावस्की और यूली डेनियल को हमारी जमानत पर रिहा कर दें।

यह कार्य हमारे देश के हितो, शान्ति और विश्व साम्यवादी आदोलन के हितो के अनुरूप होगा।

सोवियत सघ के लेखक सघ के सदस्य :

के० आई चुकोवस्की
पी० जी० एन्टोकोलस्की
ई० या० डोरोश
एल० ए० एन्निस्की
वी० डी० बेरेस्तोव
वी० एन० वोयेनोविच
ए० जी० जाक
एन० एम० जोरकाया
एल० आर० काबो
वी० आई० कोर्नीलोव
यु० डी० लेवीतान्स्की
एल० जड० लु गिना
ओ० एन० माइखेलोव
आई० आई० नुसीनोव
आर० डी० ओर्लोवा
एम० ए० पोपोवस्की
एन० वी० रिफारमात्स्काया
वी० एम० सारनोव
आर० एस० सेफ

आई० जी एहरेनबर्ग
एल० आई० स्लाविन
ए० एन० एनास्तासियेव
बी० ए० अखमादुलिना
के० पी० बोगात्रियेव
यु० ओ० दोम्ब्रोवस्की
एल० ए० जोनिना
टी० वी० इवानोवा
टी० आई० किन
आई० एन० क्रुपनिक
एल ए० लोवित्स्की
एस० पी० मार्किश
यु० पी० मोरित्स
वी० एफ० ओगनेव
एल० एस० ओस्पोवात
एल० ई० पिन्सकी
वी० एम० रोस्सेल्स
एफ० जी० स्वेतोव
आई० एन० सोलोवयोवा

वी० वी० शकलोवस्की
वी० ए० कावेरिन
ए० ए० एनिक्स्त
एस० ई० बावेनिशचेवा
ज़ेड० बी० बोगुस्लावशकाया
यु० बी० बोरेव
ए० वी० भिगुलिन
एल० जी० जोरिन
के० ए० इकरामोव
एल० वी० कोपेलेव
आई० एन० कुजदेत्सोव
एस० एल० लु गिन
वी० जैड० मास
यु० एम० नागिबिन
बी० श० ओकुदझावा
एन० वी० पनचेनको
एस० वी० रासादिन
डी० एस० सामोइलोव
ए० या० सरजीयेव

ए० एम० तुरकोव	आई० एन० तिनयानोवा	ए० ए० तारकोवस्की
एल के० चुकोवस्काया	एम० एफ० शाम्रोव	जी० एस० फिश

लीदिया चुकोवस्काया का पत्र[1]

सेवा में

लेखक सघ की रोस्तोव-आन-दोन शाखा का मण्डल

रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य के लेखक संघ का मण्डल

"प्रावदा," "इज़वेस्तिया," "साहित्यिक गजट," "साहित्यिक रूस," और "मोलौत" के सम्पादक

माइखेल अलेकजान्द्रोविच शोलोखोव, "एण्ड क्वाइट फ्लोज दि दोन" के लेखक

माइखेल अलेक्जान्द्रोविच जब तुम पार्टी के २३ वे अधिवेशन[2] में बोले उस समय तुम एक निजी व्यक्ति के रूप मे नही, बल्कि "सोवियत साहित्य के एक प्रवक्ता" के रूप मे मच पर गए थे।

इस प्रकार तुमने प्रत्येक लेखक के लिये, जिसमे मैं भी शामिल हूं, इस बात को वैध बना दिया है कि तुमने कथित रूप से हम सब लोगो के नाम पर वहा जो कुछ कहा, मैं उस पर अपना निर्णय दे सकूं। पार्टी के अधिवेशन मे तुमने जो भाषण किया, उसे वस्तुतः ऐतिहासिक कहा जा सकता है। रूसी सस्कृति के पूरे इतिहास मे मुझे ऐसे किसी अन्य मामले का ज्ञान नही है, जिसमे किसी लेखक ने इस प्रकार सार्वजनिक रूप से दण्ड की कठोरता पर नही, बल्कि दण्ड की उदारता पर खेद प्रकट किया हो।

इतना ही नही, तुम केवल दण्ड के प्रति ही चिंतित नही थे, बल्कि तुमने डेनियल और सिन्यावस्की के मुकदमे की कारवाई के सचालन को भी पसन्द किया। तुम्हे मुकदमे की कारवाई आवश्यकता से अधिक विद्वत्तापूर्ण और आवश्यकता से अधिक कानूनी मालूम पडी। तुम्हे यह बात कही अधिक पसन्द आती, यदि अदालत दो सोवियत नागरिको पर कानून की परवाह किये बिना भी मुकदमा चलाती, यदि अदालत कानून से निर्देशित न हो कर स्वयं अपनी "न्याय भावना" से प्रेरित होती। मैं इस सुझाव पर काप उठी और मुझे यह विश्वास करने के पर्याप्त कारण है कि मैं यह अनुभव करने मे अकेली नही हूं। कानून

१—माननीय सोवियत लेखक, विद्वान् और अनुवादक, कोरनेई चुकोवस्की की पुत्री। उसने अपना पत्र लेखक सघ की रोस्तोव-आन-दोन शाखा के नाम इसलिये भेजा है, क्योंकि शोलोखोव का इस शाखा से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

२—शोलोखोव के भाषण से सम्बन्धित अशों के लिये देखिए प्रस्तावना का पृष्ठ ४६.

के प्रति स्तालिन के घृणा भाव की वलिवंदी पर हमारे लाखो निर्दोष देशवासियो की वलि चढी है। कानून के शासन की फिर स्थापना, सोवियत कानून की व्यवस्थाओ का शब्दशः और भावत. पालन, और इस दिशा मे हुई प्रगति हमारे देश की पिछले दस वर्षों की सर्वाधिक मूल्यवान उपलब्धियो मे से हैं और तुम हमारे देशवासियो को इन्ही उपलब्धियो से वंचित करना चाहते हो। यह सच है कि तुमने अधिवेशन मे अपने भाषण मे अदालत के समक्ष एक आदर्श के रूप मे अपेक्षाकृत हाल की किसी अवधि को प्रस्तुत नही किया, जिसमे सोवियत कानूनो का पूरी तरह से उल्लघन हुआ हो, वल्कि सुदूर अतीत को, "चिर स्मरणीय तीसरे दशक को" प्रस्तुत किया, जव (सोवियत) कानून और कानून सहिता अस्तित्व मे भी नही आई थी। पहली सोवियत कानून सहिता सन् १६२६ मे लागू हुई। सन् १६१७-२२ के वर्ष अपनी वीरता और गरिता के लिये स्मरणीय हैं, लेकिन ये वर्ष कानून के शासन के प्रति सम्मान की दृष्टि से प्रशसनीय नही है और न ही इस दृष्टि से इन वर्षों को विशिष्ट माना जा सकता है कि हमारे देश मे पुरानी व्यवस्था को समाप्त किया जा चुका है और नयी व्यवस्था अपनी वाल्यावस्था मे ही है। गृहयुद्ध के दौरान लोगो पर "क्रूर न्याय" के आधार पर मुकदमा चलाना उचित और प्रभावी था। यह क्रांति के तुरन्त वाद की अवधि मे सही था, लेकिन सोवियत शासन की ५० वी वर्षगाठ के अवसर पर इसका कोई औचित्य नही है। अव जवकि कानून वनाये जा चुके है, "न्याय भावना" से अर्थात् अपनी इच्छा के अनुसार या भावना से प्रेरित होकर न्याय विधि का सचालन करने की स्थिति मे फिर लौटने से किसे लाभ होगा ? और तुम किन लोगो पर इस विशेष रूप से कड़े तरीके को लागू करना चाहते हो, जो कानून सहिता की परिधि से वाहर की वात है, और जिसका उपयोग "चिर स्मरणीय तीसरे दशक" मे किया गया था। तुम सवसे अधिक लेखको के साथ यह व्यवहार होना पसन्द करोगे। काफी लम्वे अरसे से तुम, माइखेल अलेक्जान्द्रोविच, अपने लेखों और अपने सार्वजनिक भाषणो मे लेखको के वारे मे अपरिष्कृत उपहास और घृणाभाव प्रदर्शित करते आ रहे हो और यह तुम्हारी आदत वन चुकी है। इस वार तुम अपनी पहले की सव सीमाओ को पार कर गये। तुम्हे दो वुद्धिवादियो, दो लेखको को पाच और सात वर्ष का सुधार के लिये श्रम का दण्ड अत्यधिक हल्का दिखाई पडता है, जवकि इन दोनो लेखको मे से किसी का भी स्वास्थ्य अच्छा नही है और इस प्रकार सार रूप मे उन्हे रोग-ग्रस्त होने और सभवत. मृत्यु के मुख मे ही चले जाने का दण्ड दिया गया है। तुम यह सोचते हुये दिखाई पडते हो कि यदि अदालत उनके ऊपर फौजदारी कानून के अनुसार मुकदमा न चला कर, किसी अधिक तेज और अधिक प्रत्यक्ष तरीके से मुकदमा चलाती तो इन लेखकों को कही अधिक कडा दण्ड दिया जाता और तुम इस वात का स्वागत करते। ये हैं तुम्हारे अपने शब्द : "यदि कालिमामय अन्त.करण वाले इन लोगो को चिर-स्मरणीय तीसरे दशक मे गिरफ्तार किया जाता, जव लोगो पर सूक्ष्म रूप से परिभाषित फौजदारी कानून के आधार पर मुकदमा नही चलाया जाता था, वल्कि क्रान्तिकारी न्याय के अनुसार

मुकदमे की सुनवाई होती थी, तो इन लोगो को, इन गद्दारों को, एकदम भिन्न वस्तु ही प्राप्त होती ? लेकिन अब, यदि आप मुझे कहने की अनुमति दें, लोग यह चर्चा करते हैं कि दण्ड वडा कठोर दिया गया है।"

हा, मइखेल अलैक्जान्द्रोविच, मैं, इटली फ्रास, वेल्जियम, नार्वे, स्वीडन और डेनमार्क के अनेक कम्युनिस्टो सहित (जिन्हे तुमने अपने भाषण में न जाने किस कारण से दण्डित व्यक्तियों को 'बुर्जुआ हिमायती" वताया है), पश्चिम के वामपंथी संगठनो सहित मैं, एक सोवियत लेखक के रूप मे अदालत द्वारा दिये गये दण्ड के अनौचित्य, पूरी तरह से अनुचित कठोरता की चर्चा करने का दायित्व अपने ऊपर लेती हूं। तुमने अपने भाषण मे कहा है कि तुम्हे उन लोगो के लिये शर्म आ रही है, जिन्होंने कैदियों की जमानत दे कर उन्हे क्षमादान दिलाने का प्रयास किया है। लेकिन मैं वडी स्पष्टता से यह कहना चाहती हू कि मैं इन लोगो के लिये अथवा स्वय अपने लिये शरमिन्दा नही हूं, वल्कि तुम्हारे लिये शरमिन्दा हूं। यह अनुरोध करने मे ये लेखक, सोवियत और सोवियत-पूर्व के रूसी साहित्य की अच्छी परम्परा का ही अनुसरण कर रहे थे, जबकि तुमने अपने भाषण के द्वारा स्वयं को इस परम्परा से काट कर अलग कर लिया है। यह "यह चिर स्मरणीय तीसरे दशक" १९१७ और १९२२ के बीच के गृह युद्ध के उग्रतम दौर की वात है जव लोगों पर "न्याय भावना" के अनुसार मुकदमा चलाया जाता था। यह वही समय है जव मैक्सिम गोर्की ने लेखको को केवल रक्त जमा देने वाली ठण्डक और भूख से ही बचाने के लिये अपने प्रभाव का उपयोग नही किया, वल्कि उन्हे जेलो मे डाले जाने और निष्कासित किये जाने से वचाने के लिये भी ऐसा ही किया। मैक्सिम गोर्की ने ऐसे मामलों मे हस्तक्षेप करते हुए दर्जनों पत्र लिखे और हमे उनका धन्यवाद करना चाहिये कि उनके कारण अनेको लेखक अपने कार्य को जारी रख सके। यह परम्परा—लोगो की ओर से हस्तक्षेप करने की परम्परा—रूस के लिये नयी नही है और हमारा बुद्धिवादी वर्ग इस पर उचित गर्व करता है। हमारे एक महानतम कवि अलैक्जेन्दर पुश्किन ने गर्व से कहा था "मैंने उन लोगो के लिये दया की याचना की है, जो पराजित हुए है।" सूवोरिन को, जिसने अपने लेख में ज़ोला पर कीचड उछालने का साहस किया था और यह ज़ोला द्वारा ड्रेयफुस का समर्थन करने के कारण किया गया था, अपने एक पत्र मे चेखव ने लिखा : "यदि यह मान भी लिया जाय कि ड्रेयफुस दोषी था तो भी ज़ोला का कथन सही है क्योंकि लेखको का कार्य किसी पर अभियोग लगाना या किसी के विरुद्ध मुकदमा चलाना नही है, वल्कि एक बार निन्दित हो जाने के वाद और दण्ड दिये जाने के अवसर पर स्वयं दोषियों, स्वयं अपराधियो की ओर से हस्तक्षेप करने का है। वैसे ही पर्याप्त अभियोग लगाने वाले और मुकदमा चलाने वाले मौजूद है।"

"लेखको का कार्य मुकदमा चलाना नही, वल्कि हस्तक्षेप करना है..." रूसी साहित्य हमें उन लोगो के माध्यम से यही शिक्षा देता है, जो इसका सर्वोत्तम रूप दे

प्रतिनिधित्व करते हैं। तुमने उच्च स्वर से यह घोषणा कर कि तुम्हे दण्ड के पर्याप्त कठोर न होने के कारण खेद है, इस परम्परा का उल्लघंन किया है।

एक क्षण के लिये ज़रा रूसी साहित्य के अर्थ पर विचार करो। हमारे महान् लेखको की पुस्तको ने हमे सदा यह शिक्षा दी है और हमे आज भी यह शिक्षा देती हैं कि हमे कभी भी किसी भी वस्तु को आवश्यकता से अधिक साधारण रूप मे प्रस्तुत नही करना चाहिये, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अन्तर दृष्टि के समस्त साधनो सहित मनुष्य की गलतियो, गलत आचरण, अपराध और अपराधी वृत्ति को यथासभव गहराई और सवेदनशीलता से समझना चाहिये। रूसी साहित्य का मानवीय सदेश वस्तुत. इस सूझबूझ के गुण मे ही मुख्यत पाया जाता है। दण्ड सम्बन्धी दोस्तोएवस्की की पुस्तक, 'नोट्स फ्राम दि हाउस आफ दि डैड' के बारे मे सोचिए और तोल्सतोय के जेल सम्बन्धी उपन्यास 'रिक्शोरेक्शन' पर विचार कीजिए कि दोनों लेखक शक्ति भर लोगो की आत्माओं, उनके जीवन और सामाजिक परिस्थितियो की गहन अन्तर दृष्टि प्राप्त करने के लिये निरन्तर प्रयास करते रहे। पहले से ही दण्डित व्यक्तियो पर और आगे तथा कठोर दण्ड देने का आह्वान करने के लिये, चेखव ने सखालिन द्वीप की वीरतापूर्ण यात्रा नही की थी—और यही कारण है कि इसके बारे मे उन्होने जो पुस्तक लिखी, वह कितनी गहराई से हमारे हृदय को छूती है। अन्तिम लेकिन कम महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप मे नही, क्वाइट फलोज दि दोन पर विचार कीजिए लेखक कितनी चिन्ता से अपने नायको की गलतियो, दुष्कृत्यो और यहा तक कि क्राति विरोधी अपराधो पर विचार करता है। वह कितनी गहराई से उन विशाल और व्यापक सामाजिक परिवर्तनो को समझता है, जो देश मे हो रहे हैं और आश्चर्यचकित मानव आत्मा की क्षीण से क्षीण अनुभूति का कितना अधिक ज्ञान रखता है। क्वाइट फलोज दि दोन के लेखकद्वारा एक जटिल मानवीय स्थिति को सरलतम और सर्वाधिक आरम्भिक शब्दावली मे बदलते हुए सुनना, अत्यधिक आश्चर्य का विषय था, जब तुमने सोवियत सेना के प्रतिनिधियो को सबोधित कर अपना यह भद्दा सवाल पूछा · "यदि आपकी किसी सैनिक टुकड़ी में गद्दारो का पता चलता तो आप क्या करते?" यह शान्तिकाल मे विवेकहीन न्याय के आह्वान के अलावा अन्य कुछ नही है। यह सोचने और चिन्ता करने की क्या आवश्यकता कि सिन्यावस्की और डेनियल ने दण्ड सहिता की किस धारा का उल्लंघन किया है, यह समझने का प्रयास करने की क्या आवश्यकता कि उन्होने हमारे हाल के इतिहास के किस पक्ष का व्यग्य चित्रण किया है, किन घटनाओ ने उन्हे अपनी ये पुस्तकें लिखने को प्रेरित किया और हमारे जीवन की किन बातो ने उन्हे अपनी रचनाओ को अपने देश मे प्रकाशित करना असंभव बना दिया? कोई मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विश्लेषण की चिन्ता क्यो करे? उन्हे दीवार के सहारे खड़ा कीजिए? २४ घण्टे के भीतर उन्हे गोली से उड़ा दीजिए।

तुम्हारी बात सुनकर व्यक्ति के मन मे यह विचार आ सकता है कि दण्डित

व्यक्तियों ने सोवियत विरोधी इश्तहार या घोषणाओं का वितरण किया है, अथवा उन्होंने विदेशों को कथा-साहित्य नहीं भेजा, बल्कि किसी किले अथवा कम से कम किसी कारखाने का नक्शा भेजा···। जटिल समस्याओं को अत्यधिक सरल रूप मे दर्शा कर, "गद्दारी" जैसे शब्दों का इस प्रकार प्रयोग कर, माइखेल अलेक्जान्द्रोविच, तुम एक बार फिर अपने एक लेखक के दायित्व से गिरे हो। एक लेखक के नाते तुम्हारा यह दायित्व है कि प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष साहित्य और ऐतिहासिक प्रक्रिया के जटिल और परस्पर विरोधी स्वरूप को प्रस्तुत करो। इसके स्थान पर तुमने शब्दों के साथ खिलवाड़ किया है और इस प्रकार जानबूझ कर और द्वेषपूर्ण तरीके से, स्थिति को अत्यधिक सरल रूप मे दर्शाने की कोशिश कर, पूरे मामले को विस्तृत बनाया है।

बाह्य रूप से तो सिन्यावस्की और डेनियल का मुकदमा समस्त कानूनी औपचारिकताओं के साथ चलाया गया। तुम्हारे लिये यह एक गलती थी और मेरे लिये यह एक अच्छी बात है। लेकिन इसके बावजूद मैं अदालत द्वारा दिये गये दण्ड के विरुद्ध विरोध प्रकट करती हूं।

मैं विरोध क्यो प्रकट करती हूं? क्योंकि सिन्यावस्की और डेनियल के विरुद्ध मुकदमा ही गैर-कानूनी था। क्योंकि एक पुस्तक, एक कथा, एक कहानी, एक उपन्यास, संक्षेप में, एक साहित्यिक कृति के लिये—चाहे यह अच्छी हो या बुरी, प्रतिभासम्पन्न हो अथवा निकम्मी, सत्य पर आधारित हो अथवा झूठ पर—अदालत में, फौजदारी, सैनिक अथवा दीवानी अदालत में मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। इसके ऊपर केवल साहित्यिक निर्णय की अदालत मे ही मुकदमा चलाया जा सकता है। एक लेखक के ऊपर, किसी भी अन्य सोवियत नागरिक की तरह किसी गैर-कानूनी कार्य के लिये फौजदारी अदालत मे मुकदमा चलाया जा सकता है, लेकिन यह मुकदमा उसकी पुस्तकों के आधार पर नहीं चलाया जा सकता। साहित्य, फौजदारी अदालत के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत नही आता। विचारों का मुकाबला विचारों से किया जाना चाहिये, श्रम शिविरो और जेलों से नहीं।

यदि तुम वस्तुतः सोवियत साहित्य के एक प्रवक्ता के रूप मे मंच पर चढ़े थे तो तुम्हें यही बात अपने श्रोताओं से कहनी चाहिये थी।

लेकिन तुमने एक गद्दार के रूप में यह भाषण किया। तुम्हारे लज्जाजनक भाषण को इतिहास कभी न भुला सकेगा।

और साहित्य स्वयं अपना प्रतिशोध लेगा, जिस प्रकार इसने सदा उन लोगों से प्रतिशोध लिया है, जिन्होंने अपने कर्तव्यों के प्रति विश्वासघात किया है। इसने तुम्हें उस सर्वाधिक निन्दित दण्ड से दण्डित किया है, जिससे किसी कलाकार को दण्डित किया जा सकता है—इसने तुम्हें सृजनात्मक अनुर्वरता से दण्डित किया है। और देश में अथवा विदेश में दिये गये मानपत्र, धन अथवा पुरस्कार तुम्हें इस न्याय से नहीं बचा सकते।

लीदिया चुकोवस्काया

पांच विद्वानों का पत्र

सेवा में, एल० आई० ब्रेझनेव, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव

प्रिय लियोनिद इलिच,

हम एक ऐसे मामले के सम्बन्ध में, जिससे हम अत्यधिक चिंतित है, आप को और आपके माध्यम से अपनी पार्टी की केन्द्रीय समिति को अवगत कराना अपना नागरिक कर्तव्य समझते हैं। हम आपको इस बात से भी अवगत कराना चाहते हैं कि सिन्यावस्की और डेनियल के मामले और कुछ उन अन्य समस्याओ के बारे मे हमारे मन मे क्या भाव है, जो कुछ सीमा तक इस मामले से सम्बन्वित हैं।

स्पष्टतया, कारवाई करने के अनेक तरीके संभव थे और ये कारवाइयां सिन्यावस्की और डेयियल के छद्म नामो का पता चल जाने के बाद की जा सकती थी।

एक तरीका, जिसे अपनाया गया, यह था कि दोनों लेखकों को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया जाये। इस निर्णय पर पहुंचने में दो परिस्थितियो को ध्यान में रखना आवश्यक था।

पिछले एक दशक (अक्तूबर १९६४ से पहले[1]) मे हमारी सास्कृतिक नीति में जो अनेक गलतिया हुई हैं. बुर्जुआ प्रचार मे इस मामले को इन गलतियों के संदर्भ मे प्रस्तुत किया जायेगा : दुदिन्तसेव के उपन्यास 'नाट बाई ब्रैड अलोन (१९५६) की निराधार आलोचना : बी० पास्तरनेक के विरुद्ध विवेकहीन कारवाइया (१९५८), ई० ईवतुशेन्को की कविता बाबीयार पर प्रहार (१९६१), एन० एस० ख्रुश्चेव द्वारा कला और कलाकारो के बारे मे ऐसी घोषणाए जिनके वे अधिकारी नही थे (१९६२-६३) और अन्तत कवि-अनुवादक जे० ब्रोदस्की पर एक सामाजिक परजीवी होने के अभियोग पर मूकदमा चलाना (१९६४)।

हमे इन कारवाइयो से कोई लाभ नही मिला है। अत. हम इस विचार से स्वय को आश्वस्त नही कर सकते कि हमे इन कारवाइयो से जो लाभ प्राप्त हुए वे हमारे शत्रुओ द्वारा इन कारवाइयो के आधार पर (प्रचार कर) लाभ उठाने से पहुची हानि से अधिक थे। इनके परिणामस्वरूप हमे देश और विदेश दोनो स्थानो पर हानि ही हुई।

दूसरा और बडा कारण निश्चित रूप से यही रहा होगा .

सोवियत राज्य के इतिहास मे इससे पहले कभी भी लेखक को इस अभियोग पर गिरफ्तार कर कि वह सोवियत विरोधी, राज्य विरोधी गतिविधियो के लिये जिम्मेदार है, सार्वजनिक रूप से मुकदमा नही चलाया गया। सोवियत विरोधी, राज्य विरोधी रचनाए

1—अर्थात् ख्रुश्चेव के अपदस्थ होने से पहले।

लिखने और उन्हें प्रकाशित करने (चाहे स्वदेश में अथवा विदेश मे) के आरोप पर यह मुकदमा चलाया गया। एम० बुलगाकोव ने 'दि डेज आफ दि टर्बिन्स' शीर्षक नाटक लिखा और मास्को कला मंच ने इसे प्रस्तुत किया। यह एक ऐसी रचना थी, जिसे जे० वी० स्तालिन ने सोवियत विरोधी वताया। लेकिन इसके वावजूद इस आधार पर वुलगाकोव को गिरफ्तार कर मुकदमा नही चलाया गया। बी० पिलन्याक ने अपना सोवियत विरोधी उपन्यास 'महोगनी' विदेश मे प्रकाशित किया। फिर भी पिलन्याक को न तो गिरफ्तार किया गया और न ही मुकदमा चलाया गया। वी० पास्तरनेक ने विदेश में अपना उपन्यास 'डाक्टर झिवागो' प्रकाशित किया और यह एक ऐसा उपन्यास है जिसे हमने सोवियत विरोधी घोषित किया है। फिर भी पास्तरनेक को न तो गिरफ्तार किया गया और न ही मुकदमा चलाया गया।

इस प्रकार सिन्यावस्की-डेनियल का मामला सोवियत इतिहास मे अपूर्व है। इतना ही नहीं, जारशाही के रूस के इतिहास में भी—और जहा तक हमे जानकारी है—यूरोप और अमरीका अथवा एशिया और अफ्रीका मे आधुनिक, हाल के युगो मे कभी भी किसी भी लेखक को राज्य विरोधी अपराधों पर, जिनमे राज्य विरोधी साहित्य लिखने और उसे देश या विदेश मे, प्रकाशित करने के आधार पर न तो गिरफ्तार किया गया और न ही मुकदमा चलाया गया।

इस प्रकार यह प्रकट हो जाता है कि यह मामला विश्व इतिहास में भी अपने जैसा दूसरा उदाहरण नही रखता।

अतः इस मुकदमे की तैयारी करने मे, यह कारवाई करने पर विचार करने और हर सम्बन्धित परिणाम का लेखा-जोखा लेने मे कितनी सावधानी वरतने की आवश्यकता थी। एक योग्य सरकारी वकील का चुनाव करना कितना महत्वपूर्ण था। सन् १९२२ के उद्वेगपूर्ण वर्ष मे लेनिन ने दजेरझिन्स्की को जो निर्देश दिये थे, हमें उनकी जानकारी है—यद्यपि उस समय यह सार्वजनिक मुकदमा चलाने का मामला नही था, वल्कि उन कुछ लेखको और प्रोफेसरो को विदेश मे निष्कासित करने का मामला था, जिन्होने क्रांति विरोधियों का साथ दिया था "......इस सम्वन्ध मे अधिक सावधानी से तैयारी की जानी चाहिये। पर्याप्त तैयारी के विना हम स्वयं को मूर्ख नही वनने देगे। कृपया आरम्भिक तैयारी के लिये आवश्यक कारवाई पर विचार करें। मेसिंग माननेव और अन्य सम्वन्धित लोगो को मास्को मे परामर्श के लिये वुलायें। इस बात पर जोर दें कि पोलितव्यूरो के सदस्य हर सप्ताह दो या तीन घटे का समय (इन लेखकों की) पुस्तको और प्रकाशनों की सावधानी से जांच करने मे लगायें। यह सव किया जाता है इस बात का पूरी तरह ध्यान रखें। लिखित रिपोर्टों पर जोर दें और इस बात का प्रवन्ध करें कि सब गैर-कम्युनिस्ट प्रकाशनों को तुरन्त मास्को भेजा जाता है। स्तेकलोव, पोलमिन्स्की, इस्कवोर्तसोव, बुखारिन आदि कम्युनिस्ट लेखकों की राय लें। इस मामले को जी० पी० यू० के किसी समझदार,

पढ़े लिखे और कार्यकुशल व्यक्ति को सौंपे (लेनिन वाङ्मय, ५ वा सस्करण, खण्ड ५४, पृष्ठ २६५)[2] अब आइए हम इस बात पर विचार करें कि सिन्यावस्की-डेनियल के मामले का किस प्रकार संचालन किया गया।

मुकदमे से पहले सरकार के मुख पत्र "इज्वेस्तिया" (सख्या १०,१९६६), ने चौथे और पाचवे दशको की चिर-परिचित शैली मे लिखा एक लेख प्रकाशित किया, जिसमे अभियुक्तो को अपराधी बताया गया और उनकी रचनाओ को बारम्बार सोवियत विरोधी कहा गया, यद्यपि इस बात पर निर्णय देना अदालत का काम था। यद्यपि सोवियत कानून के अन्तर्गत, प्रत्येक अभियुक्त उस समय तक निर्दोष माना जाता है, जब तक उसे अपराधी सिद्ध नही कर दिया जाता और केवल एक अदालत को ही उसे अपराधी घोषित करने और उसके अपराध का स्वरूप निर्धारित करने का अधिकार होता है। अदालत के निर्णय की पूर्व—कल्पना करना समाचारपत्रो का काम नही है। वस्तुतः स्वय इज्वेस्तिया ने (संख्या ६१, १९६६) उचित ढग से यह कहा है कि समाचारपत्र द्वारा अभियुक्त की गैर-मौजूदगी मे मुकदमे जैसी कारवाई करना गलत है।[3]

पर मुकदमा शुरू हुआ। एक भी विदेशी सवाददाता को अदालत के कमरे मे उपस्थित रहने की अनुमति नही दी गई। विदेशी कम्युनिस्टों को भी यह अनुमति नही मिली। कम्युनिस्ट पत्रकारो के साथ भी बुर्जुआ पत्रकारो की तरह ही व्यवहार किया गया। उन देशों के पत्रकारो जो बीस वर्ष से अपने देशो मे समाजवाद के निर्माण मे लगे हैं बुर्जुआ देशों के पत्रकारो के समकक्ष ही माना गया।

जो लोग हमारे विरुद्ध हैं, उन्हे हमे यह स्मरण दिलाने का अवसर मिला कि सन् १९३६ और ३७ के सार्वजनिक मुकदमों तक मे विदेशी संवाददाताओं को उपस्थित रहने की अनुमति दी गई थी। इन लोगो को यह प्रश्न पूछने का अवसर मिला : "इस बार उन्हे मुकदमे के समय मौजूद रहने की अनुमति क्यो नही दी गई ? कम्युनिस्ट सवाददाता कभी भी किसी सोवियत अदालत की बदनामी नही करेंगे। वे केवल सच्चाई ही लिखेंगे। यदि मुकदमे का तरीका नियमित है, अभियोग स्पष्ट है और बयान तथा प्रमाण सदेह की कोइ गु जायश नही रहने देते, यदि सरकारी वकील को अपने मामले और मुकदमे मे विजयी

२—सन् १९२२ मे जिन बुद्धिवादियो को निष्कासित किया गया था, उनमे निकोलिस बरदयाएव भी शामिल थे। मेंसिंग और मान्तसेव, जी० पी० यू० के उच्चाधिकारी थे। पोलमिस्की पार्टी की केन्द्रीय समिति के इतिहास विभाग के अध्यक्ष, इस्तेकलोव, इज्वेस्तिया के सपादक और इस्कवोर्तसोव डास कैपिटल के अनुवादक थे।

३—दो सोवियत वकीलो द्वारा लिखे गये इस लेख मे इस वैधानिक व्यवस्था पर जोर दिया गया था कि सोवियत अदालतें बाहरी प्रभाव से मुक्त होनी चाहियें (इज्वेस्तिया, मार्च १९६६)।

होने की अपनी योग्यता पर विश्वास है, तो विदेशी पत्रकारो को सोवियत न्याय की विजय देखने के लिये मौजूद रहने से क्यों रोका गया ?"

इसके अलावा, हमारे समाचारपत्र इस असामान्य मुकदमे की कारवाई का पूरा विवरण अथवा विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित करने मे असफल रहे और इस प्रकार वे बुर्जुआ प्रचार का भी मुकाबला नहीं कर सके।

बुर्जुआ प्रचारकों ने अपना काम किया। लेकिन इस सहायता के बिना ही पूर्वाग्रह से मुक्त लोगों के मन में संदेह उठे। दुर्भाग्यवश हमारे समाचारपत्रों ने जो कुछ कहा, उससे उनका अचम्भा बढ़ा, घटा नही। समाचारपत्रो ने जो कुछ कहा उस पर पहले से अच्छी तरह विचार नही किया गया था। वह अस्तव्यस्त था और कभी-कभी तो स्तम्भित कर देने की सीमा तक भ्रांतिपूर्ण था। और मुकदमे के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने का, हमारे लिये और पूरे संसार के लिये, हमारे समाचारपत्र ही एक मात्र स्रोत थे। इस प्रकार अकुशल रूप से समाचार देने के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं.

१—समाचारपत्रों ने दावा किया कि लेखकों को दण्डित करने के लिये यह तथ्य अपने आप मे काफी था कि एक साहित्यिक रचना का उपयोग हमारे शत्रुओ ने किया। पर तथ्य यह है कि हमारे शत्रु किसी भी बात का उपयोग करेंगे। उन्होंने व्यक्ति पूजा की आलोचना और ख्रुश्चेव को बरखास्त किये जाने की परिस्थितियो का लाभ उठाया। उन्होंने सापेक्षतावाद और इच्छाशक्तिवाद की आलोचना और पार्टी की सितम्बर और मार्च की महासभाओं के निर्णय का भी लाभ उठाया। हमारे समाचारपत्रों मे प्रकाशित व्यंग्यात्मक और समालोचनात्मक लेखो का भी वे लाभ उठाते हैं। अतः यह तथ्य कि हमारे शत्रुओं ने किसी वस्तु का लाभ उठाया अपने आप मे एक अपराध नहीं हो सकता। इन तर्कहीन तर्कों के द्वारा किसे आश्वस्त करने का प्रयास किया गया ? कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसमे स्वतन्त्र रूप से सोचने की न्यूनतम क्षमता है, इन तर्कों की वास्तविकता को देख सकता है।

क्या इन तर्कों का प्रयोग निम्न बौद्धिक स्तर वाले लोगो को आश्वस्त करने के लिये किया जा सकता है ? लेकिन क्या हमारे समाचारपत्रो को देश के पिछड़े हुए हिस्सों से इस प्रकार व्यवहार करना चाहिये, अथवा उन्हे सही जानकारी देकर, उन्हें शिक्षित बनाकर देश के अधिक उन्नत हिस्सो के स्तर पर लाना चाहिये ?

२—समाचारपत्रो ने दावा किया कि एक पाण्डुलिपि को (चाहे यह कोई उपन्यास अथवा कहानी ही क्यों न हो) अधिकारियों की अनुमति के बिना, वह भी डाक से न भेज कर किसी व्यक्ति की मार्फत, देश से बाहर भेजना कानून का उल्लंघन है। 'प्रावदा' ने २२ फरवरी १९६६ को लिखा कि सिन्यावस्की और डेनियल ने गुप्त रूप से और कानून का उल्लंघन करते हुए, सोवियत विरोधी पाण्डुलिपियां विदेश भेजीं। पर हमे ऐसे किसी कानून का ज्ञान नहीं है, जिसके अन्तर्गत किसी सोवियत नागरिक को अपनी पाण्डुलिपियां विदेश भेजने का निषेध किया गया हो, यदि इन पाण्डुलिपियो में राज्य सम्बन्धी अथवा

किसी सैनिक रहस्य को प्रकट न किया गया हो। यदि ऐसा कोई कानून है तो समाचारपत्रों ने उसका उल्लेख क्यों नही किया? यदि ऐसा कोई कानून नहीं है तो सोवियत जनता को क्यों गुमराह किया जाता है और हमारे शत्रुओं को हमे झूठ बोलते हुए पकड़ने का अवसर क्यों दिया जाता है?

३—समाचारपत्रो ने लिखा कि यह काम अदालत का है कि निर्धारित करे कि अभियुक्तो का अपराध कितना सगीन है। यह एक और दुर्भाग्यपूर्ण और मिथ्या कथन है। पहले तो अदालत को यह निर्धारित करना होता है कि अभियुक्त अपराधी हैं अथवा नहीं और इसके बाद ही यह विचार होता है कि वे किस सीमा तक दोषी हैं।

४—इज़्वेस्तिया ने अपने १० फरवरी १९६६ के अक मे रूसी सोवियत सघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड संहिता की धारा ७० का उद्धरण दिया और कहा कि "सोवियत विरोधी साहित्य वह साहित्य है, जो सोवियत शासन को क्षति पहुंचाने अथवा उसे कमजोर बनाने के लिये कारवाई करने को प्रोत्साहन देता है अथवा भडकता है।" लेकिन किसी भी समाचारपत्र ने हमे यह नहीं बताया कि डेनियल अथवा सिन्यावस्की की रचनाओं मे कहा ऐसा प्रोत्साहन देने अथवा भड़काने के उदाहरण मौजूद हैं। समाचारपत्रों में जो उद्धरण दिये गये, उनसे यह स्पष्ट नही होता कि ऐसा कोई प्रोत्साहन दिया गया, स्वयं लेखको द्वारा यह प्रोत्साहन देने अथवा लोगो को भड़काने की बात तो दूर। जिन इने गिने अशो के उद्धरण दिये गये वे किसी भी बात को प्रमाणित नहीं करते थे, किसी गैर-कथा साहित्य तक मे इन उद्धरणो के आधार पर कोई बात प्रमाणित नही की जा सकती, उपन्यास अथवा कहानी की तो बात दूर। जहां तक सिन्यावस्की के निबन्ध "आन सोशलिस्ट रियलिज्म" का प्रश्न है—एकमात्र गैर-कथा रचना है, जिसके आधार पर लेखक पर अभियोग लगाया गया है—इसे बस प्रवाद फैलाने वाली और सोवियत विरोधी रचना कहा गया। इस अभियोग के समर्थन मे कोई उद्धरण नही दिया गया। वस्तुत: इस रचना का एक भी उद्धरण नही दिया गया। यह वह तरीका है, जिसके द्वारा हमारे समाचारपत्रों ने हमें अभियोगो के बारे मे जानकारी दी। पाठक को समाचारपत्रों पर भरोसा कर के ही इन अभियोगो को स्वीकार करना है।

लेकिन, जैसा कि हम जानते है, सोवियत समाचारपत्रो मे समाचार देने की समस्याएं सरल नही हैं। हम पाठको के नाते अपने अनुभव के आधार पर यह जानते हैं कि समाचार-पत्रों ने लोगो और घटनाओं के बारे में सही निर्णय पर पहुंचने में अक्सर ग़लतिया की हैं। हमें केवल यह स्मरण भर करने की आवश्यकता है कि समाचारपत्रों ने १९३६-३८ में क्या लिखा अथवा उन्होने तोड-फोड की कारवाई करने वाले जीव-विज्ञानियों के बारे मे क्या लिखा, उन्होंने बीसमन और मोर्गन के अनुयायियो के बारे मे क्या लिखा, "महान्" जीव विज्ञानी लाइसेंसो के बारे मे क्या लिखा, "सार्वभौमवादी आलोचकों के देशभक्तिरहित टोली" टीटो—"साम्राज्यवादियों के कुत्ते और क्रीतदास" के बारे में क्या लिखा, "सफेद

कोटधारी हत्यारो"[५] के बारे मे क्या लिखा। ख्रु्श्चेव के प्रत्येक निर्णय और प्रत्येक कथन पर प्रशंसाओ की जो वर्षा की गई, हमे उसे स्मरण करने भर की आवश्यकता है। अब हमारे नेताओ का यह एक निर्देशक सिद्धात होने के कारण कि प्रत्येक मामले पर गंभीरता से और विवेकपूर्वक विचार करने के बाद ही कोई दृष्टिकोण कायम किया जाये जो इच्छा शक्तिवाद और अनावश्यक जल्दबाजी से मुक्त हो, एक ऐसा दृष्टिकोण, जो तथ्यो के जानकारी पर आधारित मूल्याकन पर आधारित हो, अत. हमे मुकदमे की कारवाई के समाचारपत्रो मे प्रकाशित होने वाले विवरणो के कही अधिक गंभीर, तर्कसंगत और सुरुचिसम्पन्न होने की आशा थी, विशेष रूप से एक ऐसे गंभीर और अभूतपूर्व मामले के बारे मे।

५—समाचारपत्रो ने बार-बार यह जोर दे कर कहा कि मुद्दा यह नही है कि अभियुक्तो ने क्या लिखा, बल्कि उनकी अपराधी गतिविधिया है। लेकिन जिन दण्डनीय अभियोगो के आरोप उन पर लगाये गये, वे उनके उपन्यासो और कहानियो मे निहित थे। इन लोगो पर उनकी रचनाओ के शुद्ध साहित्यिक विश्लेषण के बिना, इन रचनाओ के स्वरूप, इनकी भाषा, इनके बिम्ब विधान, इनकी साहित्यिक शैलियों पर सूक्ष्म विचार के बिना कैसे मुकदमा चलाया जा सकता था। आखिरकार इसी मुद्दे पर मुकदमा आधारित था। अदालत के समक्ष जो कार्य था, उसे समाचारपत्र इतने आवश्यकता से अधिक सरल और जटिलता-रहित रूप मे कैसे प्रस्तुत कर सकते थे।

६—समाचारपत्रो ने कहा कि सिन्यावस्की और डेनियल का अपराध उन रचनाओं की विषय-वस्तु से सिद्ध हो जाता है, जो उन्होने विदेशो मे प्रकाशित की है। गवाहो के बयानो, विशेषज्ञो की राय और ठोस प्रमाणो से भी उनका अपराध सिद्ध हो जाता है। लेकिन इस सूची मे उल्लिखित विशेषज्ञो की राय का क्या महत्व है जबकि, समाचारपत्रो के अनुसार, इन विशेषज्ञो से यह प्रमाणित करने को कहा गया था कि इन रचनाओ के लेखक कौन हैं? और अभियुक्तो की रचनाओ के अलावा अन्य क्या ठोस प्रमाण हो सकता था? यदि कोई अन्य ठोस प्रमाण थे, तो समाचारपत्रो ने उनका उल्लेख क्यो नही किया? समाचारपत्रो का यह रवैया सामान्य रूप से अवाछित है और एक ऐसे गभीर मामले मे ऐसी लापरवाही और भी खेदजनक है।

७—यदि १२ फरवरी १९६६ के साहित्यिक गजट पर विश्वास किया जा सकता है तो बदनामी फैलाने के विषय पर, न्यायाधीश और डेनियल के बीच यह वार्तालाप हुआ. डेनियल ने कहा—"लेकिन कोई भी व्यक्ति इस बात पर कैसे गभीरतापूर्वक विश्वास कर सकता है कि यह (सोवियत सरकार) एक सार्वजनिक हत्या दिवस का आदेश दे सकती है? अत क्योकि यह बात विश्वास योग्य नही है, अत यह बदनामी नही है।" न्यायाधीश ने उत्तर दिया, "अपवाद अथवा बदनामी झूठी और क्षति पहुचाने वाली जानकारी का प्रचार

५—अर्थात् वे डाक्टर जिन्हे १९५२ के षड्यंत्र मे फसाया गया था।

है। क्या इससे यह स्पष्ट नही हो जाता कि तुमने जो कुछ लिखा वह प्रवाद था ?" मौन। "नही", अन्तत डेनियल कहता है, "यह कलात्मक अतिशयोक्ति है।"

यह विश्वास कर पाना बडा कठिन है कि न्यायाधीश और डेनियल के वार्तालाप की सही-सही रिपोर्ट दी गई है। क्या प्रवाद अथवा बदनामी फैलाने का सदा यह अर्थ नही रहा कि इस बात से किसी व्यक्ति को आश्वस्त किया जाता है? क्या इससे यह स्पष्ट नही हो जाता कि एक प्रकट रूप से अतिशय काल्पनिक स्थिति, जिसे हर व्यक्ति अविश्वसनीय मानता हो, प्रवाद नही कही जा सकती? यदि, उदाहरण के लिये, नागरिक 'क' यह दावा करता है कि नागरिक 'ख' के सिर पर मलबेरी का पेड उग रहा है, अथवा उसने अपनी सास को एक रॉकेट मे बैठाकर शुक्र ग्रह पर भेज दिया है तो यह वक्तव्य अविश्वसनीय होने के कारण प्रवाद नही हो सकना। यदि यह बात जीवन की किसी यथार्थ स्थिति के बारे में सच है तो यह कथा साहित्य के बारे मे कितनी अधिक सत्य हो जाती है।

प्रावदा ने २२ फरवरी को अपने सम्पादकीय मे लिखा :

"इन दो तोड-फोड की कारवाई करने वाले लेखको के समर्थन मे पश्चिम के देशो मे जो व्यापक अभियान छेडा गया है उससे कुछ ईमानदार लोगो के मन मे भ्राति उत्पन्न हुई है। आवश्यक जानकारी प्राप्त न होने के कारण और बुर्जुआ समाचारपत्रो की बातो को स्वीकार कर, जिनमे सिन्यावस्की और डेनियल को निर्लज्ज रूप से गोगोल और दोस्तोएवस्की के समकक्ष बैठाया गया है और यह दावा किया गया है कि इस मुकदमे मे साहित्यिक प्रश्न और समाचारपत्रो की स्वतत्रता दाव पर लगी है, कुछ ईमानदार और प्रगतिशील लोगो के मन मे चिन्ता उत्पन्न हुई है।"

आइए हम इस पर विचार करें, यह देखे कि इसका क्या अर्थ होता है। प्रावदा "ईमानदार और प्रगतिशील लोगो" के बारे मे लिखता है, जिन्हें "आवश्यक जानकारी प्राप्त नही है।" और जिन्हे बुर्जुआ समाचारपत्रो ने गुमराह किया है। इन लोगो को क्या "आवश्यक जानकारी" प्राप्त नही थी? कहना न होगा, कि ये लोग सिन्यावस्की और डेनियल के उपन्यास और कहानिया पढ़ सकते थे और इन दण्डनीय बताये जाने वाली रचनाओ के बारे मे अपनी राय कायम कर सकते थे। बुर्जुआ प्रचार उन्हें यह करने से नही रोक सकता था। इनके अलावा, पूजीवादी देशो के ईमानदार और प्रगतिशील लोग इस बात को अच्छी तरह से जानते है कि बुर्जुआ रेडियो और समाचारपत्रो की बातो का क्या महत्व है? अत: ऐसी कौन सी जानकारी थी, जो उन्हे प्राप्त नही थी? ऐसा लगता है कि उन्हे इस मामले, स्वय मुकदमे के बारे मे जानकारी नही थी। लेकिन वे हमारे समाचारपत्र पढ सकते थे और यदि वे वस्तुत. ईमानदार और प्रगतिशील थे तो वे यह अवश्य करते होगे। तो फिर इसके बावजूद उन्हे "आवश्यक जानकारी" क्यो प्राप्त नही थी? क्या इसका यह अर्थ नही होता कि हमारे समाचारपत्र उन्हे यह जानकारी देने मे असफल रहे कि हमने स्वय इस जानकारी को रोके रखा और उन्हे नही दिया। अथवा यह

जानकारी प्राप्त करना उनके लिये मुश्किल बना दिया और यह कि मुकदमे की कारवाई के बारे में बहुत छोटे और बहुत असंतोषजनक संक्षिप्त विवरण प्रकाशित किये, जबकि मुकदमे की कारवाई का सम्पूर्ण अथवा विस्तृत विवरण प्रकाशित किया जाना चाहिये था, अदालत के कमरे मे विदेशों के कम्युनिस्ट समाचारपत्रों के संवाददाताओ तक को उपस्थित रहने की अनुमति न दे कर स्वयं हमने ही इन "ईमानदार और प्रगतिशील" लोगो को बुर्जुआ समाचारपत्रों के वक्तव्यो को स्वीकार करने के लिये बाध्य किया। प्रावदा किस प्रकार एक ऐसी भौंडी और तर्क के समक्ष टिक न पाने वाली बात कह सका ?

सिन्यावस्की और डेनियल के मामले के सम्बन्ध मे समाचारपत्रों ने जिस दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से कार्य किया, उसके फलस्वरूप लोगों ने विरोध प्रकट किया। यह विरोध केवल ईमानदार प्रगतिवादियो की ओर से ही नही, बल्कि सर्वाधिक प्रगतिशील लोगो की ओर से भी हुआ—विदेशो के कम्युनिस्ट आदोलन के हमारे भाई सदृश नेताओ ने भी यह विरोध प्रकट किया। इस प्रकार, अनेक देशो में हम प्रगतिशील जनमत की सहानुभूति से भी वंचित हो गये—और इससे हमारे शत्रुओ को सर्वाधिक आनन्द और लाभ मिलना स्वाभाविक था।

अतः यह दिखाई पड़ता है कि सिन्यावस्की और डेनियल का मामला, जिस रूप मे इसका संचालन हुआ और जिस तरीके से समाचारपत्रो मे इसके समाचार दिये गये थे, उससे विश्व साम्यवादी आदोलन को, हमारे देश को, हमारी प्रणाली और हमारी विचार-धारा को उससे कही अधिक हानि पहुची, जितनी हानि असंख्य कम्युनिस्ट विरोधी उपन्यास, क्योकि कथा केवल कथा ही है और तथ्य तथ्य ही है, पहुचा सकते थे।

इस संदर्भ मे मैं आपका ध्यान सोवियत समाज के एक भाग के विचारों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं जो सिन्यावस्की और डेनियल के मामले के प्रति उनके दृष्टिकोण के कारण स्पष्ट रूप से प्रकट हुए।

ये लोग कहते हैं : "इससे विदेशो मे कम्युनिस्टो को किन कठिनाइयों का सामना करना पडेगा, हमे इस बात की कोई परवाह नही है। यह उन लोगों का अपना सिरदर्द है, हम चिन्ता क्यो करें ?"

इनमे से कुछ लोग कम्युनिस्ट है। इनमे से एक व्यक्ति ने, जो विदेश मंत्रालय में एक उत्तरदायी पद पर है, १० मार्च १९६६ को मास्को विश्वविद्यालय में एक भाषण किया। कामरेड अरागों और कामरेड गोलान के वक्तव्यों के बारे में पूछे जाने पर उसने उत्तर दिया कि इन कामरेडो को अपना कार्य करना चाहिये, हमारे कार्यों मे टांग अड़ाना नही।

ऐसे दृष्टिकोण बड़े महत्वपूर्ण हैं। इनका एक लम्बा इतिहास है। सन् १९२५ मे ही हमारी पार्टी के नेताओं ने सोवियत जनता को कुछ कामरेडो द्वारा अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों के नाते अपने न्यूनतम कर्तव्य को भुला देने अथवा उन्हें न समझने के खतरे के प्रति चेतावनी दी थी। और यह कर्तव्य है कि एक देश मे समाजवाद की विजय से कार्य पूरा नहीं होता

बल्कि यह अन्य देशो मे क्रांतिकारी आंदोलनो को समर्थन देने और उन्हे विकसित करने का साधन भर होता है। पार्टी ने हमे बताया है कि जो लोग इस रोग से पीड़ित होते हैं वे अपने देश को सम्पूर्ण विश्व क्रांतिकारी आंदोलन के एक अंग के रूप मे नही देख पाते : वे एक देश मे, अपने देश में समाजवाद की स्थापना को इस आंदोलन का आदि और अन्त मानते हैं और यह मान लेते हैं कि अपने देश के हित के लिये, दूसरे देशो के हितो का बलिदान दे देना चाहिये। यह खतरा अभी भी समाप्त नही हुआ। यही कारण है कि हमारे नेताओं ने हमारे देशवासियों और हमारी पार्टी को सदा इस खतरे के प्रति सजग रहने की बार-बार चेतावनी दी है (अर्थात् १९२६ और १९३१ मे)।

हमे ऐसा लगता है कि देश को अन्तर्राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत करने के लिये हमे दस गुना अधिक प्रयास करना चाहिये, क्योकि इसके अलावा इस रोग का मुकाबला करने का अन्य कोई तरीका नही है।

क्या हम अब इस बारे मे कुछ सुझाव दे सकते हैं .

१—हम अनुभव करते हैं कि दार्शनिकों और समाजशास्त्रियो को सिन्यावस्की और डेनियल के कार्यों के सामाजिक कारणों की जाच का कार्य सौंपा जाना चाहिये। इस सदर्भ मे हम यह उल्लेख करना चाहेंगे कि कामरेड फीडल कास्त्रो ने, क्यूबा के कुछ क्राति विरोधियों के मुकदमे के सम्बन्ध मे सरकारी वकील को लिखा कि उसे मृत्यु दण्ड की माग नही करनी चाहिये और आगे कहा कि महत्वपूर्ण बात यह पता लगाना है कि क्यो यह भूतपूर्व क्रांतिकारी क्राति विरोधी खेमे मे शामिल हुए।

२—हमारा विश्वास है कि या तो सिन्यावस्की और डेनियल के मामले पर उच्च सत्ता प्राप्त अधिकारियों द्वारा पूरी तरह से फिर विचार किया जाना चाहिये और समाचार पत्रो को इस सम्बन्ध में विस्तृत और आश्वस्त करने वाले तरीके से स्पष्टीकरण देना चाहिये अथवा इन दोनो व्यक्तियों को, उनके आचरण पर खुली और व्यापक सार्वजनिक बहस के बाद, उदारतापूर्वक क्षमा कर देना चाहिये।

३—हम यह समझते हैं कि हमने लेखको और बुद्धवादियो के बारे मे जो गलतिया की हैं तथा ये गलतियां करने के कारणो पर गभीरतापूर्वक विचार करना चाहिये, जिससे हम स्थिति मे बुनियादी सुधार कर सकें और, सदा सर्वदा के लिए, अपने शत्रुओ को अपने विरुद्ध प्रचार के अवसर देने की गलतियो को समाप्त कर सकें।

भाषा विज्ञान संस्था के सदस्य . ई० खानपीरा
आई० मेलचुक
यू० ऐप्रेस्यान
एल० दुलातोवा
एन० एस्कोव

सफाई पक्ष के एकमात्र गवाह दुआकिन को मास्को विश्वविद्यालय से बरखास्त करने के विरुद्ध विश्वविद्यालय के बहुत से सदस्यों ने जो विरोध प्रकट किया निम्नलिखित तार उसमे से एक है। इन तार भेजने वालों मे अनेक विख्यात विद्वान है : जिनोवी पैपरनी, रूसी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् हैं, माईखेल काजदान, प्राचीन इतिहास के प्रोफेसर हैं, व्लादिमिर तुरोक-पोपोव पश्चिम यूरोप के इतिहास के अधिकारी विद्वान हैं और मोनगेत, पुरातत्वविद है, वी० कातानयान, स्वयं दुआकिन की तरह ही मायाकोवस्की के साहित्य के विशेषज्ञ हैं। पी० याकिर, सैनिक नेता योना याकिर के पुत्र हैं, जिसे स्तालिन ने सन् १९३७ मे गोली से उडवा दिया था। ऐसा लगता है कि विरोध प्रदर्शन आशिक रूप से सफल रहा, क्योंकि दुआकिन को विश्वविद्यालय से अन्तत बरखास्त नही किया गया यद्यपि अब उन्हे कक्षाओ मे पढ़ाने की अनुमति नही दी जाती।

विद्वानों और लेखको की एक टोली का तार

सेवा मे, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के २३वें अधिवेशन का अध्यक्षमण्डल

हम, अधोहस्ताक्षरी विद्वान् और लेखक, मास्को विश्वविद्यालय के दर्शन संकाय की विद्वत् परिषद् के २५ मार्च के, सहायक प्रोफेसर विक्तर दिमित्रिएविच दुआकिन, जो रूसी साहित्य के एक विख्यात और विशिष्ट इतिहासकार, २७ वर्ष का अनुभव प्राप्त एक अनुभवी और लोकप्रिय लैक्चरर तथा मायाकोवस्की की रचनाओं के प्रमुख शोधकर्ता हैं, को बरखास्त करने के निर्णय पर अत्यधिक चिंतित और क्रुद्ध है। यह निर्णय दुआकिन के सिन्यावस्की के मुकदमे मे सफाई पक्ष के गवाह के रूप मे पेश होने के फलस्वरूप लिया गया है। ऐसा असगत निर्णय केवल मास्को विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को ही धक्का नही पहुचाता, बल्कि सोवियत न्याय का भी अपमान करता है, क्योकि सब कानूनी कारवाइयो में दोनों पक्षो के गवाहो को पेश करने की व्यवस्था रहती है और अदालत को अभियुक्त के व्यक्तित्व की इस्तगासे और सफाई पक्ष दोनो के दृष्टिकोण से जानकारी होनी चाहिए। हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप तुरन्त हस्तक्षेप कर बरखास्तगी के इस आदेश को प्रभावी होने से रोके।

पेपेरनी, भाषा विज्ञान का डाक्टर, सोवियत लेखक संघ का सदस्य
काजदान, इतिहास विज्ञान का डाक्टर
मोनगेत, इतिहास विज्ञान का डाक्टर
जोमे गार्सिया, इतिहास विज्ञान का डाक्टर

देवेत्स, जीव विज्ञान का डाक्टर, नृवश विज्ञानी
गुल्यागा, भाषा विज्ञान का डाक्टर
तुरोक-पोपोव, इतिहास विज्ञान का डाक्टर
फ्योदोरोव, इतिहास विज्ञान का डाक्टर
गोर्संकी, भाषा विज्ञान का डाक्टर
वाईलेस्काया, इतिहास विज्ञान का कैंडीडेट
पिरुमोवा, इतिहास विज्ञान का कैंडीडेट
पोनोमारयोवा, इतिहास विज्ञान का कैंडीडेट
पुनरोसोव, इतिहास विज्ञान का कैंडीडेट
कोज़लोव भारकोवा, इतिहास विज्ञान का कैंडीडेट
पी० याकिर
आई० येरासिमोव, भाषा विज्ञान का कैंडीडेट
वी० ए० कातानयान, लेखक

उपसंहार

लेखक . लियोपोल्ड लाबेद्ज़

"साहित्यकार का कोई आश्रय नहीं है। वह उडने वाली मछली के समान है—यदि वह स्वयं को कुछ ऊपर उठाता है, तो चिड़ियां उसे खा जाती हैं; यदि वह पानी में गोता लगाता है, तो मछलिया उसे निगल जाती हैं।"

वॉल्तेयर

दि ट्रायल बिगिन्स का अन्तिम दृश्य एक जेल शिविर मे दिखाई पडता है, जहा वाचक और उसके साथी कैदी, "महान् उज्ज्वल भविष्य को समीप लाने के प्रयास मे सहयोग देने के अपने अनिवार्य कर्त्तव्य" मे असफल होने के कारण, खाइया खोद रहे हैं। आन्द्रेय सिन्यावस्की और यूली डेनियल का भी ऐसा ही उपसहार है।

लेखक की विलक्षण और नाटकीय पूर्व-कल्पना के प्रति आकर्षित होना स्वाभाविक है। यहां, जीवन और साहित्य दोनों मे पिरानडेलवादी दोहरी उलझन है और संभवत. ग्रीक के दुखान्त नाटको की तरह, आसन्न नियति का भी तत्व है। सिन्यावस्की और डेनियल के १९६६ के मुकदमे ने टेरट्ज़ की व्यग्यपूर्ण दूरदर्शिता को सिद्ध कर दिया।

लगभग दस वर्ष पहले, दि ट्रायल बिगिन्स के उपसंहार के वाचक ने लिखा था: "मेरी कहानी की विषय वस्तु, उपसहार को छोडकर, की जानकारी उच्चाधिकारियों को मिल चुकी थी। जैसी की आशा की जा सकती थी, मेरे पतन का कारण यह जाल सिद्ध हुआ, जो हमारे मकान के नीचे मल और गन्दे पानी की निकासी के बड़े पाइप मे फैला दिया गया था। मैं अपनी रचना के आरम्भिक मसौदो को, हर रोज सुबह बडी निष्ठापूर्वक शौचालय मे डाल कर पानी बहा देता था। लेकिन ये मसौदे सीधे जाच अधिकारी स्कोमनीख की मेज पर पहुंच जाते थे। वह महत्वपूर्ण व्यक्ति, जिसके निर्देशो का मैंने पालन किया था, यद्यपि अभिधार्थ मे नही, लेकिन वैसे उस समय तक मर चुका था, और वस्तुतः उसके व्यक्तित्व का व्यापक और सार्वजनिक रूप से पुनर्मूल्यांकन किया जा रहा था। खैर कुछ भी हो मेरे ऊपर प्रवाद फैलाने, अश्लील साहित्य लिखने और राज्य के रहस्यों को प्रकट करने के

अभियोग लगाये गये ।

'मैं क्या सफाई देता । मेरे विरुद्ध गवाह मौजूद थे । इसके अलावा ग्लोवोव ने, जिसे एक गवाह के रूप मे बुलाया गया था, ऐसे दस्तावेज़ पेश किये, जिन्होंने मेरे अपराध को निर्णायक और पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिया । आरम्भिक जांच के दौरान, यह सिद्ध किया जा चुका था कि मैंने जो कुछ भी लिखा है वह कोरी कल्पना है, और दुष्टतापूर्ण तथा बुरे इरादो से भरे मस्तिष्क की उपज ।"

सन् १९६६ मे जा हुआ, उसका इससे अधिक सत्य सक्षेप दे पाना कठिन है । टेरट्ज़ और अर्जहक की पुस्तकों के रूप मे "प्रमाण मौजूद थे", ग्लावलित रिपोर्ट ने दोनो लेखको के अपराध को "निर्णायक और पूर्ण रूप से" सिद्ध कर दिया था; सिन्यावस्की और डेनियल पर प्रवाद फैलाने का अभियोग लगाया गया था; यदि अश्लील साहित्य लिखने का नही तो कम से कम सैक्स सम्बन्धी निन्दनीय स्थितियो से आक्रान्त रहने का, और यदि "राज्य के रहस्यों को प्रकट करने" का नही तो राज्य के विदेशी शत्रुओ की सेवा स्वीकार करने का अभियोग लगाया गया था, और "यह सिद्ध किया गया कि उन्होने जो कुछ भी लिखा है, वह कोरी कल्पना है और दुष्टतापूर्ण तथा बुरे इरादे से भरे मस्तिष्क की उपज है ।"

इस मुकदमे से ससार भर मे चिन्ता हुई ।

समाचारपत्रो मे सोवियत अधिकारिओ के नाम भेजे गये पत्रो, विरोधपत्रो, और अपीलों की भरमार थी, जिसमे व्यक्तियो ने और संगठनो ने, उनसे अपनी कारवाइयो पर फिर विचार करने का अनुरोध किया था । समाचारपत्रों में मुकदमे और इन लेखको के बारे मे लिखे गये लेखो की भी भरमार थी । सन् १९५७ के पास्तरनेक के मामले के विपरीत, पश्चिम के देशो मे सोवियत अधिकारियो के दृष्टिकोण का समर्थन करने और उसका औचित्य ठहराने के लिये कोई आवाज़ नही उठाई गई । सोवियत रूस के प्रति मित्र-भाव और सहानुभूति रखने वाले प्रेक्षको तक को आघात पहुंचा । वामपंथियो ने मुकदमे के विरोध मे जो आवाज़ उठाई, वह दक्षिण पंथियो की आवाज से क्षीण नही थी । समाजवादी अखबार ट्रिब्यून ने अपने सम्पादकीय मे सोवियत सरकार से "यह मूर्खतापूर्ण मुकदमा बन्द करने" का अनुरोध किया; दि न्यू स्टेट्समैन ने लिखा कि यह मुकदमा चला कर सोवियत न्याय ने, स्वयं को अदालत के कटघरे मे ला खड़ा किया है ।

लेखको के अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने सिन्यावस्की और डेनियल के इस दुर्भाग्य पर विशेष रूप से चिंता प्रकट की और अन्तर्राष्ट्रीय पी० ई० एन० के महासचिव ने और यूरोपीय लेखक समुदाय (सी०ओ०ई०एम०एस०) के महासचिव (डेविड कार्वर और जियामकार्लो वीगोरेली) ने मुकदमे के दौरान उपस्थित रहने की अनुमति मागी (जिसे देने से इनकार कर

दिया गया) । विरोध प्रकट करने का आंदोलन शुद्ध साहित्यिक क्षेत्रो तक ही सीमित नहीं रहा (देखिए परिशिष्ट २ और ३) ।

मुकदमे के दौरान अदालत मे बहुत सावधानी से चुने गये कुछ लोगों को ही उपस्थित रहने की अनुमति दी गई । मुकदमे की कारवाई के दौरान सोवियत समाचारपत्र इस बात पर निरन्तर जोर देते रहे कि "मुकदमा सार्वजनिक रूप से चलाया जा रहा है और इसके समाचार सोवियत समाचारपत्रों मे प्रकाशित किये जा रहे हैं ।" (प्रावदा, २२ फरवरी १९६६) और वह भी कहा गया कि प्रतिवादियों को उनके पूरे अधिकार दिये गये हैं । लेकिन इन सब बातों ने न्याय के हनन को कहीं अधिक स्पष्ट करने मे सहायता दी । जैसाकि न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून (१४ फरवरी १९६६) ने लिखा : "इन अधिकारों में सावधानी से चुने गये ७० लोगो द्वारा खिल्ली उडाये जाने का अधिकार शामिल था, इसमें अपने प्रश्नो के उत्तर मे, यह सुनने का भी अधिकार शामिल था कि तुमने जो कुछ कहा है वह झूठ है, इसमे केवल इस्तगासे के दृष्टिकोण को ही और इस्तगासे द्वारा कही गई बातो को ही विस्तार से समाचार-पत्रो मे प्रकाशित करने का अधिकार भी शामिल था, जबकि इसके विपरीत वे लोग जो दूसरे पक्ष का दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकते थे, उन्हे "खुले" मुकदमे मे इसलिये उपस्थित होने का मौका नही मिला क्योकि उन्हे अनुमति-पत्र प्राप्त नही थे ।" अदालत के छोटे कमरे मे, जिसमे अन्तिम क्षण मे मुकदमे की सुनवाई का निश्चय किया गया था, "जगह की कमी होने के कारण" विदेशी पत्रकारों और प्रेक्षकों को प्रवेश की अनुमति नही दी गई । यही स्थिति प्रतिवादियो के मित्रों की थी, जो अदालत के बाहर इकट्ठा हुए थे और जिन्होने, दि गार्डियन (११ फरवरी १९६६) के अनुसार पुलिस से कहा "स्पष्ट है कि यह एक खुला मुकदमा है देखो न हम यहा खुले मे ही तो खडे हैं ।"

ले मोन्द (१२ फरवरी १९६६) ने उचित रूप से ही यह दावा किया कि सोवियत समाचारपत्रो मे प्रकाशित टिप्पणिया पूरी तरह से निरपेक्षता रहित थीं । इनमें से कुछ टिप्पणियों में जो वंचकता प्रदर्शित की गई है, उसके प्रति स्वयं तारतूफ को ईर्ष्या हो सकती थी । फियोफानोव ने, जिसने समाचारपत्र इजवेस्तिया की ओर से मुकदमे में उपस्थित रहकर समाचार भेजे, मुकदमा शुरू होने से पहले ही लिखा (३० जनवरी १९६६) ।

"कानून को अनुराग और भावनाओ से ऊपर रहना चाहिये । यदि वे लोग जो कानून की सेवा मे नियुक्त हैं, इस पहले आदेश का उल्लघन करते हैं तो हम सब को कष्ट भोगने होंगे, क्यों कि कानून के निर्देशों से ज़रा भी हटने का अर्थ, मनमाने शासन की दिशा में अग्रसर होना होता है । कानून को अपना काम करना चाहिये, किसी भी (बाहरी) प्रभाव से मुक्त रहकर ।" यह अभियान उस समाचारपत्र में मुकदमे के दौरान और उसके बाद भी जारी रहा, जिस समाचारपत्र ने उस समय सिन्यावस्की और डेनियल के विरुद्ध बदनामी फैलाने का अभियान छेड़ा था जब उनका मामला अदालत मे विचाराधीन था और जब उन्हें

जेल मे मुकदमे के लिये आवश्यक कारवाई और जाच के लिये हिरासत मे रखा गया था। मुकदमे की पहले दिन की कारवाई का, फियोफानोव ने जो समाचार भेजा उसका शीर्षक था · 'यहा कानून का शासन चलता है,' प्रावदा ने तास समाचार एजेंसी द्वारा दिया गया यह शीर्षक दिया : "प्रवाद फैलाने वालो का असली चेहरा।"

मुकदमे के दूसरे दिन फियोफानोव ने अपने पाठको को आश्वस्त किया : "अदालत उस समय तक (अपने निर्णय के बारे मे) निर्णय पर नही पहुच सकती जब तक उन सब बातो का पूरी तरह से स्पष्टीकरण नहीं दे दिया जाता, जो अभियुक्तो के अपराध को बढाती अथवा घटाती हैं।"

इस प्रकार अभियुक्तो का निर्णय से पहले निर्दोष मानने का स्थान, उन्हे दोषी मानने ने ले लिया। बस अदालत के सामने तो यही प्रश्न रह गया था कि अभियुक्त किस सीमा तक अपराधी हैं।

अभियुक्तो द्वारा यह कहना कि उन्हे "अपराध स्वीकार नही है" समाचारपत्रो के क्रोध का कारण बना। तास समाचार एजेंसी ने खबर दी :

"सिन्यावस्की और डेनियल अपने अपराध के दायित्व से बच निकलने का प्रयास कर रहे है यद्यपि उनका शत्रुतापूर्ण रवैया, केवल उनकी सोवियत विरोधी रचनाओ से ही पुष्ट नही हुआ है, बल्कि विशेषज्ञो और गवाहो के बयानो से भी पुष्ट हो गया है· · · ·"

और मास्को रेडियो ने कहा . कैसी धृष्टता है ! वे प्रस्तुत प्रमाणो को स्वीकार करने से इनकार करते है, लेकिन इस्तगासे ने उनके सब प्रयासो को पूरी तरह विफल कर दिया।"

इसी प्रकार प्रतिवादियो के "अपने कानून के अन्तर्गत दण्डनीय कार्यो को, शुद्ध साहित्यिक मामला बताने के प्रयास" से भी समाचारपत्रो मे "रोष" फैला और फियोफानोव ने शिकायत की "दोनो अभियुक्तो के मुह से फिर कलाकार के आत्माभिव्यक्ति के अधिकार · ··· ····· साहित्यिक परम्पराओ, अतिशयोक्ति और अन्य ऐसी ही बातो के बारे मे चिर-परिचित घिसे-पिटे और कानो को असुखद लगने वाले शब्द सुनाई पडे।" उसने आगे कहा कि "अदालत ने उनकी बाहरी धोखे की टट्टी को फाड़ कर फैंक दिया और उनके शत्रुतापूर्ण इरादे को उसके नग्न रूप मे प्रस्तुत किया।" (इज्वेस्तिया, १६ फरवरी, १९६६)। उसने आगे लिखा, "इससे अधिक नैतिक पतन की कल्पना कर पाना कठिन है।"

अदालत द्वारा फैसला सुनाये जाने के कुछ ही समय बाद, एक सरकारी प्रवक्ता ने आश्वासन दिया कि समाचारपत्रो द्वारा प्रस्तुत चित्र को और पूर्ण बनाने के लिये मुकदमे की कारवाई का "विस्तृत विवरण" प्रकाशित किया जायेगा। अब तक यह नहीं हुआ है।

वास्तव में, मुकदमे की कारवाई का विवरण और उदारतावादी सोवियत बुद्धिवादियों का विरोध प्रदर्शन, जिसे इस पुस्तक मे प्रकाशित किया गया है लेकिन जिनका सोवियत संघ में प्रकाशन नही हुआ है सफाई पक्ष की ओर से दिये गये तर्कों और प्रारम्भिक जांच के दौरान जो कुछ हुआ तथा अदालत के कमरे में जो घटनाएं घटीं, उसका विवरण प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार, अभियुक्तो की पत्नियों के पत्रो से हमें पता चलता है कि गवाहों को डराया-धमकाया गया, जबकि इस पुस्तक में प्रस्तुत मुकदमे की कारवाई का विवरण अदालत के कमरे मे हुए नाटक को दर्शाता है, अदालत के जिस कमरे मे, "अत्यधिक उद्रेकपूर्ण वातावरण" था और "भ्रांति अथवा सत्य को समझने की अनिच्छा के कारण निर्मित दीवार" ने, जिसकी उपस्थिति का सिन्यावस्की ने अनुभव किया था और जिसे "तोड कर किसी भी प्रकार के सत्य पर पहुच पाना असभव था" का परिचय हमे मिलता है। मुकदमे की कारवाई का विवरण वकीलों द्वारा कानूनी सूक्ष्मता के प्रति आश्चर्यजनक सीमा तक दिखाई गई उपेक्षा को प्रकट करता है : यह पूछे जाने पर कि क्या उसने अपनी "पाण्डुलिपि गैर-कानूनी तरीके से" विदेश भेजी है, सिन्यावस्की ने उत्तर दिया, "नही, गैर-सरकारी तौर पर।" किसी ने भी उसकी इस बात का विरोध नही किया, क्योकि स्पष्ट कारण यह था कि विदेशों को पाण्डुलिपियां भेजना गैर-कानूनी नही है। लेकिन इस बात की चिन्ता किये बिना ही सरकारी वकील ने अपने अन्तिम भाषण मे फिर इस बात का उल्लेख किया कि कैदियों ने अपनी पाण्डुलिपियो को गैर-कानूनी तरीके से विदेश भेजा। इससे अदालत द्वारा साहित्य सम्बन्धी सिद्धातों का अज्ञान अथवा उपेक्षा भाव प्रकट होता है और अदालत की वह दिलचस्पी भी जो उसने संदर्भ से हटाकर प्रस्तुत उद्धरणो मे दिखाई। इस प्रकार इन उद्धरणो को सोवियत विरोधी दर्शाया जा सकता था—यद्यपि, जैसा कि सिन्यावस्की के वकील ने कहा, कानून केवल सोवियत विरोधी दृष्टिकोण का ही प्रमाण नही मागता (चाहे इसका कुछ भी अर्थ क्यो न होता हो, देखिए गिन्जबर्ग का पत्र, पृष्ठ ९६) बल्कि इस बात का भी प्रमाण चाहता है कि राज्य को क्षति पहुंचाने की जानबूझ कर की गई कारवाई सिद्ध हो गई है।

यह दायित्व सोवियत बुद्धिवादी वर्ग के विरोध प्रकट करने वाले उन सदस्यो के ऊपर ही रह गया कि वे उन बुनियादी अथवा प्रारम्भिक कानूनी सरक्षणो, जिन्हे विधिवत् सोवियत सविधान मे हर नागरिक को प्रदान किया गया है, के उल्लघन की ओर ध्यान आकृष्ट करें जिन कानूनो का पालन करने मे समाचारपत्र और अदालत असफल रहे। इस प्रकार मैनीकर (देखिए पृष्ठ १४८) ने यह कहा कि मुकदमे से पहले समाचारपत्रों में छेड़ा गया अभियान, दण्ड संहिता की धारा १६ का उल्लंघन है, जिस धारा के अनुसार न्यायाधीशो और जनवादी असेसरों को एक ऐसे वातावरण में और परिस्थितियो मे अपने निर्णय पर पहुचना चाहिये, जिनमे उनके "बाहर से प्रभावित होने की" कोई गुंजायश न हो। रोदन्यास्काया (पृष्ठ १४४) ने "अदालत और इसके महत्वपूर्ण कार्य के प्रति

खुल्लम खुल्ला असम्मान प्रदर्शन, एक ऐसा असम्मान प्रदर्शन जो हेत्वाभासवादियों के इस विचार को छूता है कि न्याय प्रक्रिया एक थोथी औपचारिकता के अलावा अन्य कुछ नही।" की ओर ध्यान आकृष्ट किया।

लेकिन विरोध प्रदर्शन यहीं समाप्त नही हुआ। विरोध प्रकट करने वालो ने स्वयं मुकदमे के कानूनी आधार को ही चुनौती दी और इसकी व्यापक नैतिक और बौद्धिक ही नही, बल्कि कानूनी जटिलताओं को भी प्रस्तुत किया।

लीदिया चुकोवस्काया ने ज़ोर दे कर कहा (पृष्ठ ३५०) कि "सिन्यावस्की और डेनियल के विरुद्ध मुकदमा चलाना ही गैर-कानूनी बात थी"; और भाषा विज्ञान सस्था के पांच सदस्यो (पृष्ठ ३५५) ने घोषणा की.

"सोवियत राज्य के इतिहास मे इससे पहले ऐसा कोई उदाहरण प्राप्त नही है कि कभी किसी लेखक को सोवियत विरोधी और राज्य विरोधी गतिविधियों के लिए, जो केवल उसकी रचनाओ तक ही सीमित थी···चाहे यह देश मे अथवा विदेश मे प्रकाशित हुई है, गिरफ्तार किया गया हो और उस पर सार्वजनिक रूप से मुकदमा चलाया गया हो[1]। इतना ही नही, यह ज़ारशाही के रूस के इतिहास मे भी (अभूतपूर्व) है।

मामले के इस पक्ष ने उदारतावादी बुद्धिवादियो को बडी गहराई से प्रभावित किया। इस्तगासे और समाचारपत्रो द्वारा यह जोर दिये जाने के बावजूद कि अभियुक्तो पर "लेखकों के रूप मे नही" बल्कि "अपराधियो के रूप मे" मुकदमा चलाया जा रहा है, यह स्पष्ट था कि उनका 'अपराध" उनकी साहित्यिक रचनाएं ही थी और मुकदमे के

१—जब, मुकदमे के ७ महीने बाद विभिन्न प्रकार की आलोचना के दमन के उद्देश्य से दण्ड सहिता मे परिवर्तन किये गये, तो इन परिवर्तनो पर २१ प्रमुख विद्वानो और कलाकारो ने जिनमे शोस्ताकोविच, ताम्म, नेकरासोव, ऐंजिल गार्त, सखारोव और रोम्म शामिल थे—इसका विरोध करते हुए एक पत्र भेजा। इन विद्वानो और कलाकारो ने यह तर्क दिया कि "वर्तमान समय मे ऐसे कानूनो को पारित करना, हमे पूरी तरह से अनुचित कारवाई मालूम पडती है, जिसके परिणामस्वरूप न्याय व्यवस्था के दुरुपयोग, कानून के उल्लघन और सदेह और मिथ्या आरोप लगाये जाने के वातावरण के निर्माण की संभावना है।" इसके बाद मास्को मे युवको ने एक प्रदर्शन भी किया (२२ जनवरी १९६७ को) और इस प्रदर्शन मे १६ सितम्बर १९६६ को पारित कानून और दण्ड सहिता की धारा ७० की समाप्ति के लिये, सविधान के विरुद्ध होने के कारण, मांग की गई (धारा ७० के अन्तर्गत सिन्यावस्की और डेनियल के विरुद्ध मुकदमा चलाया गया था और इसके बाद अनेक युवक लेखकों और कवियों के विरुद्ध भी मुकदमा चलाया गया, जिनमे नताली लासकोवा, अलैक्जेंदर गिन्ज़बर्ग, यूरी ग्लास्कोव, वालेनतिन खोमोव शामिल है।)

दौरान केवल उनकी रचनाओं को ही ठोस प्रमाण के रूप मे प्रस्तुत किया गया और उनके विरुद्ध लगाये गये अभियोगों का भी यही आधार था। इस्तगासे की बहस से यह स्पष्ट हुआ कि ये लेखक एक खास तरीके से लिखने के "दोषी" थे, जो "समाजवादी यथार्थवाद से भिन्न है। सिन्यावस्की और डेनियल को इन अभियोगो के विरुद्ध सफाई देनी थी कि उनकी रचनाओं में कोई "सकारात्मक नायक" नही है और उन्होने अनुपयुक्त उपमाओं और रूपकों का प्रयोग किया है। (इस विषय पर पश्चिम के किसी भी लेखक की प्रतिक्रिया की कल्पना की जा सकती है, जिसके अन्तर्गत एक अदालत ऐसी बातों के आधार पर मुकदमे की सुनवाई करे; क्योंकि यह याद रखा जाना चाहिये कि यह कोई साहित्यिक अथवा सैद्धांतिक विवाद नहीं था बल्कि यह अदालत मे होने वाली कानूनी कारवाई थी।)

यह विश्वास कि इन लेखको पर उनकी रचनाओ के लिये मुकदमा चलाया गया और दण्ड दिया गया, मास्को के उन ६३ लेखकों के पत्र से प्रकट हो जाता है, जिन्होने इनकी जमानत देने का प्रस्ताव किया। इन लेखको ने यह उल्लेख करते हुए कि इस्तगासा अभियुक्तों के तोड़ फोड़ के इरादे को सिद्ध करने मे असफल रहा है, उन्होने जोर देते हुए कहा कि "व्यंग्य रचनाएं लिखने के लिये लेखको को दण्डित करने की कारवाई एक अत्यधिक खतरनाक उदाहरण है। यदि विरोधाभासपूर्ण विचारो को प्रकट न किया जाये, यदि अतिशयोक्तिपूर्ण बिम्बों का प्रयोग न किया जाये तो साहित्य और कला जीवित नहीं रह सकते।"

ज़ारशाही के रूस और सोवियत रूस, दोनों मे लेखको को अक्सर सताया गया; अनेक लेखकों को जेलों में डाला गया, बलात् श्रम शिविरो मे भेजा गया और कुछ को गोली से भी उड़ा दिया गया। लेकिन इससे पहले किसी भी लेखक पर, उनकी रचनाओं के आधार पर एक नियमित अदालत में इस प्रकार मुकदमा नही चलाया गया। इससे पहले लेखकों के विरुद्ध, जैसा कि इस भयावह रूसी उक्ति से स्पष्ट होता है "प्रशासनिक स्तर पर" कारवाई की गई, अथवा उनके विरुद्ध उनकी साहित्यिक रचनाओ के अलावा अन्य कोई अभियोग लगा कर मुकदमा चलाया गया।

कैथेरीन महान् ने रादिशचेव को उनकी रचना "जर्नी फ्रॉम सेंट पीटर्सबर्ग टू मास्को" के लिये एक निरंकुश शासक के शाही आदेश के द्वारा साइबेरिया भेज दिया। दोस्तोएव्स्की को एक आतंकवादी बताकर कठोर श्रम का दण्ड दिया गया। गुमलियोव को सन् १९२१ में एक क्रांति विरोधी षड्यंत्र मे हिस्सा लेने का अभियोग लगाकर गोली से उड़ा दिया गया। स्तालिन के शासनकाल मे, पिलन्याक, मण्डेलशताम, बाबेल और अन्य हजारों बुद्धिवादियों और लेखकों को जेलो मे डाला गया अथवा साइबेरिया के बलात् श्रम शिविरो मे भेजा गया, जहां उनमें से अनेक की मृत्यु हो गई। लेकिन (यहूदी लेखको को छोड़ कर, जिनके ऊपर बन्द अदालत में मुकदमा चलाया गया और जिन्हे, "सार्वभौमवादी" होने के कारण गोली से उड़ा दिया गया) किसी के विरुद्ध भी मुकदमा नहीं चलाया गया। सोवियत गुप्तिया पुलिस के विशेष मण्डलों ने इन लोगों को बिना किसी कानूनी सुनवाई के सजाएं

दी और इस मनमानी कारवाई की स्तालिन के उत्तराधिकारियों ने अधिकृत रूप से भर्त्सना की है।

स्तालिन के बाद, आइविन्सकाया को एक अदालत में मुद्रा सम्बन्धी किसी अभियोग पर ८ वर्ष श्रम शिविर मे रखे जाने की सजा दी,—लेकिन यह सजा पास्तरनेक के प्रति उसकी वफादारी के लिये नही दी गई। ब्रोदस्की को एक "सामाजिक परजीवी" के रूप मे आर्कटिक क्षेत्र के श्रम शिविर मे भेजा गया—एक कवि के रूप में नहीं।

यदि वचकता वह अभिनन्दन है, जो अवगुण, गुणो का करते हैं तो ये झूठे अभियोग वह अतिवचकतापूर्ण अभिनन्दन थे, जो सोवियत अदालतो ने रूसी साहित्य का किया।

सिन्यावस्की और डेनियल के मामले के समय तक, एक कलाकृति केवल सिद्धांतकारों की नजर मे ही एक अपराध हो सकती थी, न्यायपालिका की नजर मे नही। भ्दानोव अथवा इलियिचेव जैसे, सैद्धातिक उल्लघनो पर नजर रखने वाले अधिकारियों के लिये कला और प्रचार दोनो एक ही बात थे, जो या तो प्रकाश पुत्रों (अर्थात् सोवियत राज्य) या अन्धकार पुत्रो (अर्थात् शत्रु) की सेवा करते थे। कलाकार का चाहे कुछ भी "सकारात्मक" विचार क्यो न हो, यह बात जोर देकर कही जाती थी कि किसी भी साहित्यिक रचना के मूल्याकन की सच्ची माप यह है कि इस का महत्व उक्त दोनों पक्षों मे से किस के लिये है। यद्यपि पूरे सोवियत जीवन मे यह दृष्टिकोण व्याप्त हो चुका था, लेकिन इसे कानून सहिता मे विधिवत् नही रखा गया और न्यायपालिका इस बात को साहित्य पर लागू नही करती थी। स्तालिन ने, जो राजनीतिक नाटकीयता में विश्वास करते थे, मास्को के मुकदमो का नैतिकता का उपदेश देने वाले नाटको के रूप में उपयोग किया। लेकिन सिद्धातकारो के आदेशो के अनुसार न लिखने वाले लेखकों के विरुद्ध, स्तालिन के शासनकाल मे ही अदालतो मे मुकदमे नही चलाये गये।

स्तालिन की मृत्यु के बाद, उदार बुद्धिवादियो ने यह आशा की कि "वैधानिकता" के विकास से कलाकारो और लेखको को और अधिक संरक्षण मिलेगा, क्योकि उनका यह निश्चित विश्वास था कि कानूनी दृष्टि से उनके विरुद्ध, लेखक होने के कारण अथवा उनकी रचनाओ के आधार पर मुकदमा नही चलाया जा सकता।

सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे मे इस आशा को ध्वस्त कर दिया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि निर्दोष व्यक्तियो को सताये जाने के विरुद्ध, सुरक्षा प्राप्ति की समस्या कानून से भी ऊची है, चाहे लेखको और व्यापक रूप से सोवियत जनता के लिये यह देखना अथवा दिखाया जाना महत्वपूर्ण हो कि कानून का पालन किया जा रहा है। इससे यह तथ्य प्रकट हुआ कि कुछ रचनाओ को अपराध बताया जा सकता है और यह भी संभव है कि ऐसी रचनाओ के लिये लेखको को दण्डित करने के लिये कोई नया कानून बनाया जा सकता है।

सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे के दौरान और उसके बाद वस्तुतः यही

हुआ। इन लेखको पर रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड सहिता की धारा ७ के अन्तर्गत अभियोग लगाया गया, जिस धारा का सम्बन्ध "राज्य को क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से किये गये प्रचार" से है और जिसे, पहली बार कथा साहित्य और अन्य साहित्यिक कृतियों पर लागू किया गया। सरकारी सिद्धातकारों द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप, साहित्यिक रचनाएं न लिखने वाले लेखको के दमन को भविष्य मे और आसान बनाने के लिये, सोवियत विधानपालिका ने १६ सितम्बर १९६६ को रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य की दण्ड सहिता की धारा १४२ और धारा १९० मे उपयुक्त संशोधन किये।

अब यह कानून का उल्लघन कर मनमाने ढग से निर्णय लेने का मामला नही रह गया, बल्कि एक ऐसा मामला बन गया, जिसमे कानून को ही इस प्रकार बनाया गया था, जिससे इसका उपयोग लेखको और साहित्य के विरुद्ध किया जा सकता था। यदि यह बात सच है कि स्तालिन के शासन मे, सिन्यावस्की और डेनियल को निश्चित रूप से गोली से उडा दिया जाता, तो यह भी सच है कि उनके मुकदमे ने केवल वर्तमान कानूनो का उल्लघन ही नहीं किया बल्कि ऐसी कारवाइयो को भी निश्चित बना दिया, जिनका उद्देश्य यह व्यवस्था करना था कि भविष्य मे साहित्य के आधार पर कानूनी रूप से मुकदमे चलाने और दण्ड देने के मार्ग मे कोई कानून सम्बन्धी समस्या न रहे।

लेकिन, नि.संदेह, सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे का सोवियत बुद्धिवादियो के लिये सर्वाधिक महत्व इस तथ्य मे निहित है कि प्रतिवादियो के आचरण मे पहली बार बुद्धिवादियो के स्वतन्त्र विचार के अधिकार के प्रश्न को उठाया। बुद्धिवादियो ने इस मुकदमे के विरुद्ध जो विरोध प्रकट किये, उनमे विचार की स्वतन्त्रता, अपने अन्तःकरण के अनुरूप लिखने की स्वतन्त्रता, कलाकार की सृजनात्मक स्वतन्त्रता के अधिकार के प्रति स्पष्ट चिन्ता प्रकट की गई थी, क्योकि इन स्वतन्त्रताओ के बिना साहित्य अपने सच्चे लक्ष्य को प्राप्त नही कर सकता। गोलोमश्तोक ने लिखा :

"(टेरट्ज की रचनाओ को) एक प्रौढ लेखक की रचनाए बताया जा सकता है, जिनमे आधुनिक व्यक्ति को चिंतित और पीड़ित करने वाले विरोधाभासों मे गहरी अन्तर्दृष्टि प्रकट हुई है—और यह विरोधाभास केवल एक समाजवादी समाज मे ही मौजूद नहीं है। लेखक ने जो समस्याएं उठाई हैं—व्यक्ति का समाज से विलगाव अथवा अपरिचय, मनुष्य की तकनीकी उन्नति और उसके आध्यात्मिक थोथेपन के अत्यधिक अन्तर, साधन और साध्य के पारस्परिक सम्बन्ध आदि—ऐसी समस्याए है, जो आधुनिक सस्कृति के केन्द्र बिन्दु पर स्थिर हैं। ये समस्याएं काफ्का और जॉयस, फॉकनर और हेमिंग्वे, बूल और स्टीनबेक, बाबेल और पास्तरनेक की रचनाओं के आन्तरिक अर्थ को सार्थक बनाती

है······आधुनिक व्यक्ति पर २० वी शताब्दी के जीवन की अत्यधिक जटिलताओ ने इन समस्याओ को थोपा है······इस बात से इन्कार करना कि ये समस्याए स्वय हमारे समाज तथा अन्य समाजो के समक्ष मौजूद हैं, मार्क्सवाद की बुनियादी शिक्षाओ का ही विरोध करना नही है, बल्कि सामान्य सूझ-बूझ और दैनिक अनुभव पर आधारित तथ्यो पर आख बन्द करने के ही समान है। जो व्यक्ति, एक आधुनिक लेखक होने का दावा करता है, इन समस्याओ की ओर से अपनी आखें नही मूंद सकता।"

लेखक से यह अपेक्षा नही की जा सकती कि वह सरकार द्वारा निर्धारित नारो का ही बखान करता रहे बल्कि उसका कर्त्तव्य है कि वह अपने युग की समस्याओ के उस समय तक अगम्य सागर मे यात्रा करे और नये मार्गों का अन्वेषण करे। उसे देशभक्ति को अन्धानुकरण का पर्याय नही समझ लेना चाहिये।

मुकदमे के विरुद्ध प्रतिवाद करने वाले दो बुद्धिवादियो, यु० जे० लेविन और ए० याकोबसन (देखिए पृष्ठ १३२ और १६५) ने छादायेव के इन विख्यात शब्दो का उद्धरण दिया :

"मैंने अपने देश को आख बन्द कर, सिर झुका और होठो पर ताला लगा कर प्यार करना नही सीखा है। मैं समझता हू कि कोई भी व्यक्ति उस समय तक अपने देश के लिये उपयोगी नही हो सकता, जब तक वह हर बात को स्पष्ट रूप से नही देखता। मैं समझता हू कि अन्धमोह का समय बीत चुका है। मैं समझता हू कि अन्य लोगो के बाद हमारा आगमन इसलिए हुआ है, कि हम उनकी गलतियो, उनकी भ्रान्तियो और उनके अन्ध विश्वासो से बचें।"

सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे ने सोवियत इतिहास मे पहली बार, सोवियत बुद्धिवादियों को यह घोषणा करने का अवसर प्रदान किया कि अब वे "अपनी आखें बन्द कर, सिर झुका और होठो पर ताला लगा कर" नही रहना चाहते। क्योकि वे विभिन्न सम-सामयिक समस्याओ का समाधान ढूढने मे अपनी विवेचनात्मक प्रज्ञा का प्रयोग करना चाहते हैं। अतः इस मुकदमे ने नाटकीय ढग से उन सीमाओ को उद्घाटित किया, जिनके भीतर वे बंधे हुए थे।

इन परिस्थितियो मे, प्रश्न जितना "सत्य" का है, उतना ही "स्वतंत्रता" का भी। इस बात पर टिप्पणी करते हुए, जिसे इसने "कलाओं मे सत्य की पुरानी समस्या" बताया, नोवीमीर, (वह पत्रिका जिसके लिये सिन्यावस्की और डेनियल दोनो लिखते थे) ने घोषणा की (नवम्बर १९६५) :

(उन लोगो के लिये जो कहते हैं कि) "पूर्ण सत्य की आवश्यकता नहीं है, हमारा उत्तर है :

'नही, हमारी कला को पूर्ण सत्य की आवश्यकता है[२] ।',

यह, जैसा कि मुकदमे ने प्रकट किया, पूरी समस्या का मूल है । सबसे पहले अतीत सम्बन्धी सत्य है, जिसके बिना वर्तमान सम्बन्धी सत्य का मुकाबला कर पाना असभव है । यह पूछे जाने पर कि उसने सोवियत प्रकाशको को अपनी पाण्डुलिपिया न दे कर विदेशो में प्रकाशन के लिये क्यो भेजी, डेनियल ने स्तालिन के शासनकाल के निषेधो का उल्लेख किया · "मैं जिन विषयो पर लिखता हू उनके बारे मे हमारा साहित्य और हमारे समाचारपत्र मौन हैं । लेकिन साहित्य को किसी भी युग और किसी भी प्रश्न पर विचार करने का अधिकार है । मैं अनुभव करता हू कि समाज के जीवन मे कोई भी निषिद्ध विषय नहीं होना चाहिये ।"

अपनी अन्तिम अभियुक्ति में डेनियल ने इसका आगे स्पष्टीकरण दिया .

जन अभियोक्ता, लेखक वासिलयेव ने कहा है कि वह हमारे ऊपर जीवित व्यक्तियो और उन लेखको के नाम पर अभियोग लगा रहा है, जिन्होने युद्ध मे अपना बलिदान दिया··· उनकी स्मृति मेरे लिये भी पवित्र है । लेकिन वासिलयेव ने सिन्यावस्की के लेख से यह उद्धरण दिया : "ताकि रक्त की एक बूद न गिरे, हमने हत्याए की, और हत्याए की और हत्याए की···" तो वासिल्येव ने हमे अन्य नामो का स्मरण क्यो नही दिलाया । अथवा क्या ये नाम उनके लिये अपरिचित है ? मेरा तात्पर्य वावेल मन्डेलशतम, ब्रनो जासिएन्स्की, आइवन कातायेव,

---

२—इसके बाद से, नोवीमीर पर, जिसे पहले भी अनेक बार प्रहारो का सामना करना पडा था, और अधिक दबावो का सामना करना पडा । २७ जनवरी १९६७ को प्रावदा ने इस पत्रिका पर "गलत दृष्टिकोणो का समर्थन करने मे हठधर्मिता" दिखाने के लिये प्रहार किया, १९ फरवरी १९६७ को इजवेस्तिया ने "निष्क्रिय मानववाद" का उपदेश करने के लिये इसकी आलोचना की, इसके स्थुपत सहायक सम्पादक, ए० जी० देमेनतियेव और इसके पत्र सज्जा-सम्पादक, बी० जी० जाक्स को उनके पदो से हटा दिया गया; पत्रिका के सम्पादक तवार दोवस्की को, जो इससे पहले मार्च के महीने तक अपनी इस बात पर डटे हुए थे कि वे केवल उसी आलोचना को स्वीकार करेंगे "जो सोवियत समाज की साहित्य सम्बन्धी महान् कल्पना पर आधारित हो, और जो गौरव ग्रन्थो से विरासत मे प्राप्त रूसी यथार्थवाद की महान् परम्परा के अनुरूप हो ।' पीछे हटने के लिये वाध्य किया गया । लेखक सघ की, नोवीमीर पत्रिका की "कमियो" पर विचार करने के लिये बुलाई गई एक विशेष बैठक मे, त्वारदोवस्की ने एक वक्तव्य दिया, जो २६ मार्च १९६७ को प्रावदा, इजवेस्तिया और साहित्यिक गजट मे प्रकाशित हुआ, जिसमे उन्होंने यह वचन दिया कि वे "समालोचनात्मक टिप्पणियो का ध्यान से अध्ययन करेंगे और भविष्य मे पत्रिका सम्बन्धी कार्यों मे इसे ध्यान मे रखेंगे ।"

कोलमोव, त्रेत्योफोव, विवतको, मार्किश और अन्य अनेक लोगों से है । सभवतः वासिलयेव ने कभी भी इनकी रचनाए नही पढी, अथवा इनके नाम नही सुने ? लेकिन सभवत साहित्य विशेषज्ञा केदरीना, लेरीदोव और नूसीनोव के नामो से परिचित हो ? लेकिन यदि वे साहित्य सम्बन्धी मामलो से इस सीमा तक अनभिज्ञ हैं तो सभवतः मीयरहोल्द का नाम उनकी तन्द्रा तोड सके अथवा यदि वे कला सबधी मामलो से व्यापक रूप से अपरिचित हैं तो भी सभवत उन्होने पोस्तीशेव, तुखाचेवस्की, ब्लूचर, कोसिओर, गमार्निक, और याकिर के नाम सुने होगे । स्पष्ट है कि यदि हम इस तथ्य को स्वीकार करे कि हमने इन लोगो की हत्याए नहीं की तो यह स्पष्ट है कि इन लोगो की जुकाम के कारण अपने बिस्तरो पर ही मृत्यु हुई होगी । लेकिन सत्य क्या है—हमने हत्याए की या हमने हत्याए नही की । क्या यह सब कुछ हुआ अथवा नही हुआ ?"

कहना न होगा कि ये प्रश्न अनुत्तरित ही रहे । सिन्यावस्की और डेनियल ने यह बात जोर दे कर कही कि उन्होने अपनी रचनाओ मे जिसकी आलोचना की है वह मुख्यत अतीत है, यद्यपि वह वर्तमान पर इसके प्रभाव और इसके पुनर्जन्म की सभावना के लिये भी चितित थे । स्पष्ट है, यदि सोवियत सरकार ने "व्यक्ति पूजा के दौर के अवशेषो" को पूरी तरह समाप्त करने का निश्चय कर लिया था तो उन्हे इन दोनो लेखको और उनके समर्थन का स्वागत करना चाहिये था, लेकिन राज्य इस परीक्षा मे असफल रहा । यह स्थापित करना सरल था, जैसा कि टेरट्ज ने दि ट्रायल बिगिन्स मे कहा है कि "उन्होने जो कुछ भी लिखा है वह शुद्ध कल्पना है ।" डेनियल के शब्दो मे, "अपवाद" प्रतिवादियो के प्रत्येक कथन का, सबसे आसान उत्तर था ।

इसके अलावा वर्तमान सम्बन्धी सत्य का भी प्रश्न था । इस्तगासे ने इसका जिस प्रकार सचालन किया, वह सिन्यावस्की और डेनियल को यहूदी विरोधी बताने से पूरी तरह प्रकट हो जाता है । सिन्यावस्की ने कटु व्यग्य से कहा, "अब क्योकि डेनियल को यहूदी विरोधी बता पाना कठिन है, अत फासिस्टवादी डेनियल, यहूदी विरोधी सिन्यावस्की के कन्धे से कन्धा मिलाकर हर पवित्र वस्तु को रौद रहा है··· ··· " बाद मे, डेनियल ने यह बताया कि अभियोग का पागलपन यही समाप्त नही होता, यह इससे बहुत आगे बढता है :

"सिन्यावस्की को यह नही सोचना चाहिये कि केवल उसे ही इस तरीके से यहूदी विरोधी घोषित किया गया है । यूली मार्कोविच डेनियल भी, जो एक यहूदी है, यहूदी विरोधी है । और यह केवल इस कारण से कि मेरा एक पात्र, एक बूढा बैरा कभी-कभी यहूदियो के बारे मे कुछ कहता है और इस कारण से मेरे चरित्र और जीवन सम्बन्धी विस्तृत विवरण मे यह लिख दिया जाता है : निकोलाई अर्जहक डेनियल 'एक उग्र और कट्टर यहूदी विरोधी है ।' क्या आप समझते है कि यह किसी अनुभवहीन गरामर्शदाता ने लिखा, यह रिपोर्ट अकादेमेशियन युदिन ने लिखी है ।"

दि ट्रायल बिगिन्स मे सरकारी वकील ग्लोबोव के शब्दो मे इस संदर्भ मे दोहरा और भविष्यवाणीपूर्ण विद्रूप है। इस उपन्यास मे सरकारी वकील ग्लोबोव कहता है :

"नही, राबिनोविच जैसे लोग, हमारे समाज के आधार को क्षति पहुंचायेंगे। हम अपने शत्रुओं को, हमे बर्बाद नही करने देंगे। स्वयं हम ही इन्हे कष्ट देंगे।"

यदि अभियुक्तो की रचनाओ मे "सत्य" और "स्वतन्त्रता" विचार के विषय थे तो—एक भिन्न लेकिन प्राय: समानरूप से महत्वपूर्ण स्तर पर······व्यग्य और विनोद भी ऐसा ही विषय था।

डेनियल ने मुकदमे के दौरान, दिस इज मास्को स्पीकिंग लिखने के अपने उद्देश्यो का स्पष्टीकरण देने के जो असफल प्रयास किये थे और सार्वजनिक हत्या दिवस के उकसाने वाले पक्ष के विपरीत, व्यग्यात्मक पक्ष को समझाने की कोशिश की थी, उसका एक अन्य व्यंग्य—विद्रूपपूर्ण पुनश्च : उस समय लिखा गया, जब डेनियल को एक "कठोर श्रम" शिविर मे एक वर्ष बीत चुका था। अपनी अन्तिम अभियुक्ति मे डेनियल ने शिकायत की थी कि ग्लावलित संगठन की "विशेषज्ञता पर आधारित रिपोर्ट" मे उनकी कहानी के केवल अभिधार्थ को ही लिया गया है . "इस कहानी का लेखक यह सभव समझता है कि हमारे देश मे "सलिंग-मैथुन दिवस" मनाये जाने तक की सभावना है।" लेकिन इस बात की उसे कल्पना नही थी कि जब दण्ड सहिता मे सशोधन के द्वारा यह सभव बनाया गया कि "सोवियत विरोधी" चुटकले और मजाक सुनाने के लिये, किसी भी सोवियत नागरिक को तीन वर्ष तक की सजा दी जा सकती है, तो सोवियत समाचारपत्रो मे इस बात पर गभीरतापूर्वक विचार हुआ कि सरकारी तौर पर एक "हास्य दिवस" की व्यवस्था की जानी चाहिये। इन परिस्थितियों मे, "चुटकुलो अथवा हसी मजाक की सार्वजनिक हत्या सम्बन्धी दिवस" का विचार दुःखपूर्ण हास्य से रहित नही है। मुकदमे के दौरान, अधिकारियो ने अपनी स्वभावगत विशिष्टता के द्वारा, ऐसी प्रत्येक उक्ति के प्रति अपना भय प्रकट किया, जो अपने स्वर के कारण मान्य सूत्रो से संघर्ष मे आती है, क्योकि इन मान्य सूत्रो को एक पवित्र वचन का स्थान दिया जा चुका था और इन अधिकारियो ने इसी प्रकार हास्य-विनोद के प्रति भी भय का भाव प्रदर्शित किया।

टेरट्ज ने अपने निबन्ध, आन सोशलिस्ट रियलिज्म, मे कहा है कि (कैथरीन महान् के युग की तरह ही) सोवियत युग मे भी हास्य-विनोद के लिये कोई स्थान नही था—मायाकोवस्की ने अपनी रचनाओ में, आरम्भ मे, अनेक बातो और वस्तुओ का मजाक उड़ाना शुरू किया था, लेकिन बहुत जल्दी ही उन्हें सबक मिल गया। यह सचाई सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे के दौरान जितनी अधिक स्पष्टता से प्रकट हुई, उतनी अधिक स्पष्टता में

प्रकट होना सभव नही था। गभीरता का वातावरण इतना गहन था कि स्वयं लेखकों द्वारा भद्र विनोद करने के अपने दावे की माग करना असभव दिखाई पडता था।

स्वय हास्य-विनोद (यद्यपि इस बात का उल्लेख नही हुआ) पर ही मुकदमा चलाया जा रहा था और यह कहा जा सकता है कि प्रकारान्तर से स्वय कला को हास्य-विनोद के अधिकार से वचित किया जा रहा था।

यह बात सिन्यावस्की के लिये विशेष रूप से दुर्भाग्यपूर्ण थी, जिसके लिये हास्य और व्यंग्य ही वे गुण है, जिनके माध्यम से वे सम्पूर्ण जीवन को एक नयी दृष्टि से देख पाते हैं और समाज के जीवन का यह चित्र उससे कही अधिक स्पष्ट, व्यापक और गहन होता है, जिसे उन्होंने "इसका पासपोर्ट जैसा चित्र" बताया है।

यदि कभी यह दर्शाने का अवसर आया कि सोवियत कलाकारो से मान्य और घटिया "सत्यो" का निष्ठावान और सम्मान का भाव रखने वाला सेवक होने की अपेक्षा की जाती है, तो एक ऐसा ही अवसर था।

यद्यपि हम इसे खेदजनक पाते है,—क्योकि हमारे लिये हास्य-विनोद और पूर्वाग्रहर-हित मजाक, कला का एक अनिवार्य अंग है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार यह बात नाटको पर लागू होती है—हम नि सदेह एक लेखक सम्बन्धी इस सोवियत दृष्टिकोण से पर्याप्त परिचित हैं कि लेखक राज्य की नीति का प्रवक्ता होता है और इस दृष्टि से हमे आश्चर्य-चकित नही होना चाहिये। लेकिन हमारे मन मे अभियुक्त के कटघरे मे खडे, लेखक के प्रति अतिरिक्त सहानुभूति उपजती है, जिसे सिद्धात की अभिव्यक्ति के अपने अधिकार की रक्षा के लिये ही बाध्य नही किया गया हैं, बल्कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त भावो मे से सर्वाधिक हल्के भाव—अर्थात् मुक्त हास्य के ईश्वर प्रदत्त वरदान के अधिकार की रक्षा के लिये भी बाध्य किया गया।

हास्य-विनोद के प्रति एक ऐसा ही दृष्टिकोण इसे अनिवार्य (जैसाकि "हास्य दिवस" मे होगा) अथवा गैर-कानूनी (जैसाकि "रेडियो इरेवान" के चुटकलो मे हास्य-विनोद की अभिव्यक्ति) बना देता है। इससे यह प्रकट होता है कि सोवियत राज्य अपनी प्रजा की बाइजेन्टाइन युग जैसी और मौखिक श्रद्धा—भय के आधार पर एक धार्मिक कृत्य के रूप मे प्रकट की जाने वाली श्रद्धा—के ऊपर इतना अधिक निर्भर करता है कि वह स्वय को किसी भी मुक्त हास्य-विनोद के द्वारा सच्चे मानो मे "क्षति पहुचाये जाने" और "कमजोर बनाये जाने" के भय से काप उठता है और इस प्रकार उसे बाध्य होकर हास्य-विनोद को दण्ड सहिता की परिधि मे लाना होता है।

इस मुकदमे के परिणामस्वरूप सोवियत बुद्धिवादी वर्ग के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सदस्यो मे से अनेक ने एक नई प्रतिक्रिया प्रकट की है।

१० वर्ष का समय नही हुआ है (अक्तूबर १९५८ मे मास्को के लेखकों की एक सभा मे) कि मार्तीनोव और स्लूत्स्की जैसे प्रशंसनीय कवि भी पास्तरनेक के खिलाफ छेडे गये अभियान और इस आवाज उठाने मे शामिल हुए कि पास्तरनेक को रूस से निकाल दिया जाना चाहिये'। इस लज्जाजनक दासता का एक स्थान अब, केवल गरिमापूर्ण मौन ने ही नही, बल्कि विरोध प्रदर्शन की एक अभूतपूर्व लहर ने ले लिया है।

ऐसा लगता है कि जब अधिक उदार सोवियत बुद्धिवादियो मे से कुछ को यह पता चला कि सिन्यावस्की और डेनियल, टेरट्ज और अर्ज़हक के नाम से अपनी रचनाएं प्रकाशित कर रहे हैं तो आरम्भ में उन्हे इस "दुरंगी चाल" से, विदेशो मे अपनी रचनाएं और वह भी छद्म नामो से प्रकाशित करने से आघात पहुचा। उन्हे हो सकता है कि यह जानकारी न हो कि यह कार्य गैर-कानूनी नही था। लेकिन यह निश्चित है कि यदि सिन्यावस्की, टेरट्ज के नाम से विदेशो मे प्रकाशित रचनाओ मे से पहली रचना अपने नाम से प्रकाशित करता, तो उसके लिये कोई दूसरी रचना प्रकाशित करना असभव हो जाता। क्या उसे स्वय अपने नाम से रचनाए प्रकाशित करने के इस परिणाम को स्वीकार करना चाहिए था? जो लोग यह सोचते हो कि कानून का हर स्थिति मे पालन होना चाहिए, चाहे कानून कितना भी अनुचित क्यो न हो (यद्यपि यह विश्वास करना उन देशो मे आसान है, जहा जनमत के दबाव से कानूनों को बदला जा सकता है), उन्हे यह नही भुलाना चाहिये कि इस मामले मे सुकरात जैसे ऐसे वीरतापूर्ण दृष्टिकोण की आवश्यकता नही थी: इन दोनों लेखकों को छद्म नामों से और विदेश मे अपनी रचनाए प्रकाशित करने का ही कानूनी अधिकार प्राप्त

२—इस सभा का पूरा विवरण, जिसे एक स्टेनोग्राफर ने पूरी तरह लिखा है, 'सर्वे' पत्रिका की संख्या ६०, १९६६, पृष्ठ १३४-६३ मे "जजमेंट आन पास्तरनेक" शीर्षक से प्रकाशित हुआ। सभा मे हुई "बहस" का अनुमान सभवत- बोरिस पोलेवोय के वक्तव्य के एक उद्धरण से लगाया जा सकता है: "पास्तरनेक, मेरे दृष्टिकोण से, एक साहित्यिक व्लासोव है, एक ऐसा व्यक्ति जो हमारे साथ रहता है, और हमारी सोवियत रोटी खाता है, अपनी जीविका हमारे सोवियत प्रकाशनगृहों के माध्यम से अर्जित करता है, और जिसे एक सोवियत नागरिक को प्राप्त सब सुविधाएं और लाभ प्राप्त हैं, हमारे साथ विश्वासघात करता है, शत्रु के खेमे मे जा मिलता है और अब उनकी ओर से लड रहा है। एक सोवियत अदालत ने जनरल व्लासोव को गोली से उडाने का आदेश दिया, (श्रोताओ मे से कोई चिल्ला कर कहता है "फांसी पर लटकाया गया") और सब लोगो ने इस बात पर सहमति प्रकट की और जैसा कि हमने उचित रूप से कहा है, गंदगी से छुटकारा पाने का यही अच्छा तरीका था। मैं समझता हूं कि शीतयुद्ध के दौर के एक देशद्रोही को, एक उपयुक्त और अत्यधिक कठोर दण्ड दिया जाना चाहिये: "हमारे देश से निकल जाओ, मिस्टर पास्तरनेक। हम उस हवा में सास नही नही लेना चाहते जिस हवा मे तुम सास ले रहे हो।" (करताल ध्वनि)।"

नहीं था—बल्कि सोवियत सेंसर अधिकारियो को अपनी रचनाएं दिखाये बिना ही उन्हे विदेश भेजना तक गैर-कानूनी नही था, क्योकि सरकारी रूप मे सेंसर व्यवस्था लागू नहीं है। सिन्यावस्की और डेनियल ने कानूनो की अवहेलना कर जेल जाने की जोखिम नही उठाई थी बल्कि उन्होने परम्पराओं को तोडकर यह जोखिम उठाई थी क्योकि वे यह जानते थे कि चाहे इस सम्बन्ध मे पुलिस और अदालतो को कानून का समर्थन प्राप्त हो अथवा नही, लेकिन इन परम्पराओ को कायम रखा जायेगा। "दुरगी चाल चलने" के अभियोग का सिन्यावस्की ने सीधा सादा और सचाई से भरा यह उत्तर दिया कि यदि उन्हे सोवियत पत्र-पत्रिकाओ और प्रकाशको के लिये "एक आदर्शवादी दृष्टिकोण से" लिखने की छूट होती तो वे यह अवश्य करते। और उन्होने सोवियत सघ मे स्वय अपने नाम से प्रकाशित रचनाओ मे "अपने सच्चे विचार प्रकट करने का हर सभव प्रयास किया है।" स्वदेश मे और विदेशो मे उन्होने जो रचनाए प्रकाशित की है, उनकी तुलना से इस बात की पुष्टि होती है। इन लेखको ने, प्रतिवादियो ने, अपनी रचनाए विदेशो मे क्यो प्रकाशित की इसका कारण जानने के लिए न्यायाधीश और इस्तगासा हरजेन के ग्रन्थ सिलैक्टेड फिलासोफिकल वर्क्स (मास्को मे १९५६ मे प्रकाशित) को देख सकते थे, जिसमे उन्हे पृष्ठ ५६२ पर यह स्पष्टीकरण मिल सकता था :

"क्या कभी भी कोई ऐसा देश हुआ है, जिसमे सेंसर व्यवस्था रही हो और जिसमे मनमाना शासन करने वाली सरकार रही हो, और जिसमे एक बार बुद्धिवादी आदोलन शुरू हो जाने और स्वतन्त्रता की इच्छा उत्पन्न हो जाने के बाद गुप्त छापेखाने और छिपे तौर पर पाण्डुलिपियो का वितरण न हुआ हो ? यह बात उसी प्रकार स्वाभाविक है, जिस प्रकार विदेशो मे पाण्डुलिपियो का प्रकाशन ···।"

सोवियत बुद्धिवादी जिस वातावरण मे रहे है, उसको देखते हुए सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे के कारण उत्पन्न प्रश्नो का सामना करने मे बहुत से सोवियत बुद्धिवादियो ने, जिनमे बहुत से उदारतावादी भी शामिल थे, आरम्भ मे जो थोडी बहुत अनिच्छा दिखाई वह आश्चर्यजनक नही है। कुछ समय बाद ही, इन दोनो लेखको और इन्होने मुकदमे के बारे मे जो साहसपूर्ण और सम्मानजनक दृष्टिकोण अपनाया, उसके प्रति सहानुभूति सोवियत बुद्धिवादियो मे जगने लगी। केवल धीरे धीरे ही सोवियत बुद्धिवादी असली मसलो को समझ सके। यदि कोई आश्चर्य की बात है तो यह कि उनमे से अनेक लोगो ने, जिन्होने अपने विचारो मे परिवर्तन किया अथवा जिन्हे अपने विचारो मे परिवर्तन करने की आवश्यकता नही हुई, मुकदमे से पहले और उसके बाद निर्भयतापूर्वक अपने विचार प्रकट किये।

बारी-बारी से सरकारी आदेशों की अवहेलना करने और उनका पालन करने का चाहे इसका अर्थ केवल यही क्यो न रहा हो कि पहले दो कदम आगे बढाये गये हो और फिर डेढ कदम पीछे हटा दिया गया हो—प्रभाव अवश्य हुआ। सोवियत रूस मे साहस की

एक नई लहर आई हुई है। पश्चिम के लोगों को यह समझ पाना बडा कठिन है कि खुले तौर पर विरोध प्रकट करने, केवल व्यक्तियो द्वारा ही नही बल्कि व्यक्तियो की टोलियो द्वारा खुला विरोध प्रकट करने का कितना महत्व है। और वह भी एक ऐसे देश में, जहां इतने लम्बे अरसे से एक "टोली" को "षड्यंत्र" का सामानार्थक माना जाता रहा है और जहा "प्रदर्शन" या तो "सरकार समर्थक" होता है अथवा एक "अपराध"।

मुकदमे के दौरान, सिन्यावस्की ने न्यायाधीश को साहित्यिक समालोचना का एक पाठ यह सिद्ध कर पढाया कि लेखकों को उनकी पुस्तको के पात्रों का समरूप नही माना जा सकता। दि मेकपीस एक्सपेरिमेट की प्रस्तावना मे वाचक कहता है ·

"यदि मुझे पकड़ लिया जाता है तो मैं हर बात से इन्कार करूंगा। यदि मेरे ऊपर मुकदमा चलाया जाता है और मुझे एक अदालत मे हाथ और पांव बाध कर एक भयंकर न्यायाधीश के मुंह के सामने ला कर खडा किया जाता है तो मैं अपने सब अपराध स्वीकार कर लूगा।"

न्यायाधीश स्मिरनोव ने सिन्यावस्की से पूछा (सभवतः कुछ आशापूर्वक) :

यहा तुमने प्रोफेरान्सोव के भयो के बारे मे लिखा है (प्रोफेरान्सोव उपन्यास का एक पात्र है) · "यदि भयावह न्यायधीश मुझ से अपना अपराध स्वीकार करने को कहेंगे" : सैंमसन सैंमसनोविच के ये विचार क्या स्वय तुम्हारे भयों और चिन्ताओ को व्यक्त करते हैं ?

सिन्यावस्की ने बडी शुष्कता से उत्तर दिया :

"यह बात सैंमसन सैंमसनोविच ने नही कही है बल्कि सावेली कुजमिच ने कही है (जो अन्य प्रोफेरान्सोव का वशज है), और ये मेरे विचार नही है।"

बाद मे, इसी न्यायाधीश स्मिरनोव ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के कानून स्कूल के प्रोफेसर हैरोल्ड बर्मन से, अगस्त १९६६ मे, अपनी बातचीत के दौरान सिन्यावस्की को एक 'धूर्त' बताया।

यदि सिन्यावस्की "अपना अपराध स्वीकार कर लेता" तो संभवत' उसे हल्की सज़ा मिलती। इसके अलावा अन्य कोई बात उसकी सहायक नहीं हो सकती थी, क्योंकि उसकी सिन्यावस्की टेरट्ज के रूप मे दोहरे व्यक्तित्व के कारण नही, बल्कि अदालत की अवहेलना और सोवियत शासन के प्रति शत्रुभाव के कारण उसे अवश्य सज़ा दी जानी थी।

इजवेस्तिया (१३ जनवरी १९६६) को भेजी गई अपनी रिपोर्ट में फियोफानेव ने चमत्कारिक भाषा मे, लेकिन संगत, प्रश्न पूछा, जिसे उसने सदा की तरह अपने मन चाहे परिप्रेक्ष्य मे रखा।

"यह कैसे हुआ…कि दो अपेक्षाकृत कम उम्र के व्यक्ति, जो हमारे बीच मे रहते थे, जिन्हे सोवियत स्कूलो और विश्वविद्यालयो मे शिक्षा मिली, अचानक हमारे सबसे कट्टर शत्रुओ के सहयोगी बन गये ?"

इसका कारण बताते हुये फियोफानोव ने अपने सामान्य घिसे-पिटे तरीके से कहा कि इसका कारण "अभियुक्तो मे सैद्धान्तिक अनुशासन और नैतिक दायित्व की आत्यधिक कमी है।" यह स्पष्टीकरण वस्तुत. सगत है · केवल इसे प्रश्न की अपेक्षा है। सिन्यावस्की और डेनियल की अपने चारो ओर मौजूद ऐतिहासिक यथार्थ के प्रति प्रतिक्रिया के "निरपेक्ष कारणो" की उपेक्षा करते हुए, उसने इन कारणो के स्थान पर "सापेक्ष" राक्षस-सिद्धान्त को रख दिया है।

सिन्यावस्की ने उस समय इस सर्वाधिक नाजुक तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया, जब उन्होने अपनी अन्तिम अभियुक्ति मे व्यग्यपूर्वक कहा .

"कोई भी व्यक्ति स्वय से यह प्रश्न पूछे बिना नही रह सकता कि ये राक्षस कहा से आये हैं, किस दलदल से उत्पन्न हुए है, किस अपराधी दुनिया मे इनका जन्म हुआ है ? प्रकट रूप से एक सोवियत अदालत (मुझे इसकी जानकारी पुस्तको से मिली है) अपने निर्णय पर पहुचने मे, सामान्यत. अपराध के मूल पर विचार करती है, इसके कारण पर विचार करती है। इस मामले मे इस्तगासे को इस बात मे कोई दिलचस्पी नही है। खैर कुछ भी हो, हम कहा से आये, डेनियल और मैं ? हमे तो अवश्य अमरीका से लाकर सीधा पैराशूट से गिराया गया होगा और हमने तुरन्त अपनी विनाश लीला शुरू कर दी—क्योकि ऐसे ही धूर्त है हम ··क्या इस्तगासे ने वस्तुत हमारे उद्गम हमारे मूल के प्रश्न पर विचार नही किया है ? हमारे मध्य, किस प्रकार एक फासिस्ट का उदय हो सका ? निश्चित है, कि यदि आप इस बात पर विचार करे, तो यह आपको दो पुस्तको के प्रकाशन से कही अधिक भयकर मामला दिखाई पडेगा, चाहे ये पुस्तकें अपनी विषय वस्तु की दृष्टि से कितनी भी सोवियत विरोधी क्यो न हो। इस्तगासे ने यह प्रश्न उठाया तक नही है।"

केवल "व्यक्तिपूजा" को ही नही, बल्कि इसके प्रति आज प्रदर्शित होने वाली प्रतिक्रियाओ को भी, इस मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य मे कुछ व्यक्तियो के केवल अपने तक ही सीमित अतिरेको के रूप मे घटाना होगा। इसके बावजूद सरकारी दृष्टिकोण यह दिखाई पडता है कि स्तालिन के शासनकाल मे जो अपराध हुये थे, वे उन लोगो के अपराधो की तुलना मे फूल समान है, जो स्तालिन के दौर के इन अपराधो की सचाई जानने की चिन्ता दिखाते हैं। यह निश्चित है कि राक्षस मौजूद हैं, चाहे ये भीतर हो अथवा बाहर, सरकारी मिथक के मनोवैज्ञानिक ढाचे के भीतर वास्तविक व्यक्तिगत उत्प्रेरणाए अगम्य ही बनी हुई हैं।

विदेशी साहित्य नामक पत्रिका के जनवरी १९६२ के अक मे प्रकाशित "समाजवादी यथार्थवाद और इसके आलोचक" शीर्षक लेख मे बोरिस रयूरिकोव ने टेरट्ज़ के निबन्ध आन सोशलिस्ट रियलिज्म के पश्चिमी समालोचको की यह कह कर भर्त्सना की है

कि उन्होने इस तथ्य को ध्यान मे नही रखा कि टेरट्ज एक श्वेत रूसी प्रवासी है, जो स्वयं को सोवियत रूस मे रहने वाले एक सोवियत लेखक के रूप मे प्रकट करने का ढोंग रच रहा है।

"एस्प्रित मे प्रकाशित अनाम लेखक का नाम जानने मे हमे कोई दिलचस्पी नहीं है। किसी भी व्यक्ति का, उसके गुमनाम रहने के रहस्य को उद्घाटित करने का इरादा नहीं है। यदि इस लेख का लेखक नकाब पहने रहना चाहता है, तो पहने। पर वह चाहे कोई भी क्यो न हो वह अपना कार्य बड़े भौंडे तरीके से कर रहा है। इस लेख को भावना, इसकी शैली इसमे "पण्डिताऊपन से भरे तर्कों का स्वरूप यह प्रकट करता है कि यह लेख बुद्धिवादी ढोंगियो के उसी सम्प्रदाय ने गढ़ कर तैयार किया है, जो सभवत प्रवासी व्हाइट गार्ड क्षेत्रो मे सवधित है" और जो वेखी की परम्परा और धार्मिक-दार्शनिक समाज की परम्पराओं को जीवित रखने का प्रयास कर रहा है और जिसने भौतिकतावाद के विरुद्ध अभियान छेड़ा है। रूस के सामाजिक विचार के सर्वाधिक लज्जाजनक युग मे प्रतिक्रियावादी प्रचारकों ने जो कुछ कहा है, उसे दोहरा कर लेखक ने स्वय को अभियुक्तो की कतार मे ला खड़ा किया है।

"ब्रिटेन, अमरीका, पश्चिम जर्मनी की अनेक पत्रिकाओ ने बड़ी तत्परता से इस अनाम लेख को प्रकाशित किया। इतना ही नही उन्होने यहां तक टिप्पणी की कि यह एक ऐसे व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत प्रामाणिक और सच्चे प्रमाण है, जिसने इन सब बातों को अपनी आंखों से देखा है। निश्चय है कि इन प्रकाशकों ने जालसाजी को समझ लिया था—क्योंकि यह जालसाजी अत्यधिक बचकानी है—लेकिन उन्हे साम्यवाद के प्रति उनके घृणा भाव ने अन्धा बना दिया और घृणा, प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है, विवेक को समाप्त कर देती है।"

टेरट्ज के एक श्वेत रूसी प्रवासी के रूप मे पेरिस मे रहने का हास्यास्पद विचार अदालत मे कायम नही रह सका, लेकिन इसके बावजूद, अभियोगो की शैली मे कोई परिवर्तन नही हुआ। यह सिन्यावस्की द्वारा अनगार्डेड थॉट्स मे प्रदर्शित गहन दार्शनिक गभीरता से कितनी विपरीत है

"व्यक्ति उसी समय सच्चे मानो मे निष्ठावान और मूल्यवान मनुष्य बनता है, जब वह अपनी सरकारी उपाधियो, अपने पेशे, अपने नाम, अपनी उम्र····· से मुक्त हो जाता है।"

स्वय अपने नाम से और अपने साहित्यक नाम से सिन्यावस्की ने जो कुछ भी लिखा उसमे उनकी स्वयं अपने प्रति निष्ठा और सचाई मे कोई अन्तर नही आया। सिन्यावस्की के लिये निष्ठा के बिना सच्चे साहित्य का सृजन असभव है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सोवियत समालोचक तोमेरान्सेव ने स्तालिन की मृत्यु के बाद पहली बार यह आवाज उठाई थी। 'समाजवादी यथार्थवाद' केवल एक भिन्न साहित्यिक शैली नही है, बल्कि यह एक साहित्यिक सृजनात्मकता के मार्ग मे एक बुनियादी बाधा है : यह लेखक को अपने मनोभावों और विचारों की सच्ची अभिव्यक्ति को रोकता है।

"समाजवादी यथार्थवाद" की शैली के अनुरूप दुखान्त रचना को 'आशापूर्ण" होना पडता है, और नाटक को कुछ छद्म भावो के मामूली उतार चढाव तक ही सीमित कर दिया जाता है। सोवियत इतिहास और इसके दुर्भाग्यपूर्ण नाटको का सामना करते हुए सिन्यावस्की के लिये अतिशय कल्पनाशीलता और अत्यधिक विचित्र चित्रण, मनोभावो के असत्यीकरण और उन्हे अत्यधिक क्षुद्र बनाने से बचने के तरीके हैं, और ये इसी प्रकार इन तरीको से सरकार द्वारा निर्दिष्ट वादो के थोथे स्तर पर अपने विचारो को उतार लाने से बचने के भी तरीके हैं। सिन्यावस्की के मन मे यातनाओ, जीवन और मृत्यु के प्रति वैसा ही श्रद्धा भाव है, जैसा उन अन्य लेखको के मन मे है, जिन्होने दुखान्त के मर्म को समझ लिया है। और इन लेखको की कोटि मे आते है—पास्तरनेक, अखमातोवा, सोल्झनितसीन।

सिन्यावस्की की रचनाओ मे या स्वय सिन्यावस्की मे वचकता अथवा "दोरंगी चाल चलने" का कोई चिन्ह नही है, और ये दो ऐसी बातें हैं, जिनके आधार पर सिन्यावस्की के आलोचकों ने अभियोग लगाये हैं, और उसका दृष्टिकोण निरन्तर, उदाहरण के लिये, शोलोखोव के दृष्टिकोण से भिन्न रहा, जिसने पार्टी की नीतियो मे, परिवर्तन के अनुरूप, अपने उपन्यासो को दोबारा लिखा और जिसने स्तालिन की प्रशंसा करने के बाद, ख्रुश्चेव से भी सर्वोत्तम सम्बन्ध कायम किये।

सिन्यावस्की ने ख्रुश्चेव के भाषण के बाद, उनकी पीढी को स्तालिन के अपराधो के कारण पहुंचे आघात के अनुभव को अभिव्यक्ति दी, लेकिन उसने अपराध उन लोगो के मत्थे मढा जो इसके लिये जिम्मेदार थे और स्तालिन की पुत्री स्वेतलाना[४] के प्रति अपनी सहानुभूति प्रदर्शित करने मे कोई हिचकिचाहट नही दिखाई।

अभियुक्तो और अभियोग लगाने वालो की विचारशैली और उनकी भावनाओ के परिष्कृत स्वरूप का अन्तर समसमायिक रूसी साहित्य के सर्वोत्तम और निकृष्टतम प्रतिनिधियो के अन्तर को भी स्पष्ट करता है। दो नोबेल पुरस्कार विजेता लेखको, पास्तरनेक और शोलोखोव, का व्यवहार इस अन्तर का प्रत्यक्ष उदाहरण है। पास्तरनेक के प्रति सिन्यावस्की का दृष्टिकोण और दूसरी ओर पास्तरनेक और सिन्यावस्की के प्रति शोलोखोव का दृष्टिकोण दो मनोवृत्तियो, रूस के साहित्यिक जीवन की दो परम्पराओ का प्रतीक है। शोलोखोव के नाम अपने खुले पत्र मे अभियोग लगाते हुए लीदिया चुकोवस्काया ने यह बात बडे स्पष्ट और कडे शब्दो मे कही है

४--अमरीका पहुंचने के बाद अपने संवाददाता सम्मेलन मे स्वेतलाना ने कहा कि सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे से "रूस के सब बुद्धिवादियो के ऊपर और स्वयं उसके ऊपर इस वात का भयकर असर पडा और मैं यह कह सकती हूं कि मेरी पहले की ये आशाए समाप्त हो गई कि सभवत किसी न किसी प्रकार हमारा देश उदारतावादी बनने जा रहा है" टाइम, ५ मई १९६७।

"रूसी संस्कृति के पूरे इतिहास मे मुझे किसी लेखक के ऐसे मामले का ज्ञान नही है, जिसने सार्वजनिक रूप से उस प्रकार का खेद प्रदर्शन किया हो, जैसा तुमने किया (कम्युनिस्ट पार्टी के २३ वें अधिवेशन मे) और यह खेद प्रकाशन, दण्ड की कठोरता के लिये नही, बल्कि इसकी उदारता के लिये किया गया······अपने भाषण मे तुमने कहा कि तुम्हे उन लोगो के लिये लज्जा है, जिन्होंने (सिन्यावस्की और डेनियल को क्षमादान दिलाने के लिये जमानत देने का प्रस्ताव किया है,), लेकिन मैं स्पष्टता से कह देना चाहती हूं कि मैं उनके कार्य के लिये लज्जित नही हूं अथवा अपने लिये लज्जित नहीं हूं, बल्कि मुझे तुम्हारे इस कथन के लिये लज्जा[5] है। जिन लेखकों ने सिन्यावस्की और डेनियल की जमानत देने का प्रस्ताव किया वे सोवियत और सोवियत पूर्व रूसी साहित्य की उत्तम परम्परा का अनुसरण कर रहे थे, जबकि तुमने, अपने भाषण के द्वारा, स्वय को इस परम्परा से काट कर अलग कर दिया है।"

यह एक विरोधाभास पूर्ण सयोग है कि जब सिन्यावस्की—पास्तरनेक का एक अनुयायी और पास्तरनेक की कविता का एक प्रमुख सोवियत व्याख्याकार (पृष्ठ २०)—को गिरफ्तार किया गया, शोलोखोव (जिसने पास्तरनेक को "बूढी अविवाहित स्त्रियो का कवि बताया था) को साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया। फ्रास के अखबार ल मोंद ने तुरन्त सुझाव दिया कि अब शोलोखोव को, "महालेखकों के समुदाय" मे सम्मिलित हो जाने के कारण, सिन्यावस्की की ओर से सोवियत सरकार से हस्तक्षेप करना चाहिये . यह कर के वे केवल अभिरुचि की दृष्टि से ही नही, बल्कि नैतिक दृष्टि से भी यह सिद्ध कर देंगे कि उन्हे जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान मिला है, वे उसके योग्य थे। पुरस्कार समारोह के पहले दिन, सिन्यावस्की के अ ग्रेजी प्रकाशक के प्रतिनिधी मार्क वोनहैम कार्टर, शोलोखोव को यह समझाने बुझाने के लिये स्टाकहोम गये, लेकिन वे उन तक पहुच नही सके और यह बात उस समय के शोलोखोव के पत्रदाता सम्मेलन मे कही गई बातो और बाद मे सिन्यावस्की के दण्ड के "उदार" होने पर प्रकट किये गये खेद को देखते हुए आश्चर्यजनक नही लगती। अतः यह बात काव्य के न्याय से अधिक नही थी, जब पीकिंग पीपुल्स डेली (१५ मई १९६६) ने स्वयं शोलोखोव को नोबेल पुरस्कार स्वीकार करने के लिये देशद्रोही करार दिया।

यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि सिन्यावस्की और डेनियल को दिये गये दण्ड की

५—इसी समय पश्चिम मे, अलबर्तो मोराविया ने भी "शोलोखोव के नाम एक खुला पत्र" लिखा था और इस पत्र मे भी प्राय. इन्ही शब्दों का प्रयोग किया था : "जब तुम यह घोषणा करते हो कि सिन्यावस्की और डेनियल के समर्थकों को अपने कार्यों के लिये लज्जा अनुभव करनी चाहिये, हम तुम्हें बता देना चाहते हैं कि केवल तुम्हे अपने कार्य के लिये लज्जित होना चाहिये··· (एसप्रैस्सो, १० अप्रैल १९६६।)

कठोरता पर संसार भर मे जो प्रतिक्रिया हुई—जिन प्रतिक्रियाओ ने ल' ह्यूमेनाइट और ल' पिगारो, ल' यूनिता और ल' स्ताम्पा, दि डेली वर्कर और दि डेली टैलीग्राफ एक राय थे—सोवियत अधिकारियों को केवल एक ही स्रोत से समर्थन प्राप्त हुआ, जो चीन और रूस के वर्तमान सम्बन्धों को देखते हुए केवल एक दूषित स्रोत ही माना जा सकता है। चीनियो ने अदालत के फैसले पर अपनी सहमति प्रकट की और बेल्जियम की चीन समर्थक पत्रिका, ल वोइज़ डु पीपुल (२५ फरवरी १९६६) ने बडे उत्साह से इसका समर्थन किया और इसे "एक सच्चा राजनीतिक मुक़दमा" बताया। लेकिन इस पत्रिका ने यह भी कहा कि यह मुकदमा "सशोधनवादी" ब्रेझनेव और कोसीगिन के लिये अधिक सहायक नही होगा, जो "सिन्यावस्की और डेनियल को दिये गये दण्ड के पीछे छिपे हैं, मानो यह उनके देशद्रोह पूर्ण गन्दे कार्यों को छिपाने की आड हो…"

ऐसा लगता है कि सोवियत अधिकारियो ने इन संदिग्ध प्रशसाओ पर उसी प्रकार कोई ध्यान नही दिया, जिस प्रकार उन्होने साहित्यिक मुकदमा चलाने और इन दो लेखको को दण्ड देने के विरुद्ध विश्वव्यापी आवाज़ और अपीलो की उपेक्षा की।

बाद मे अधिकारियो के दृष्टिकोण को प्रभावित करने के लिये और प्रयास किये गये और प्रमुख बुद्धिवादियो, नागरिक अधिकार सस्थाओ और लेखक संगठनो ने क्षमादान की नई अपीलें की।

इस सम्बन्ध मे अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सगठन (पी० ई० एन०) और यूरोपीय लेखक समुदाय (सी०ओ०एम०ई०एस०) ने बडे प्रयास किये जिनके महासचिव सोवियत लेखक सघ और सोवियत अधिकारियो से बातचीत के लिये मास्को गये। उन्हे सोवियत अधिकारियो से मिलने का अवसर नही मिला और उनके सब प्रयास विफल हो गये। यद्यपि सोवियत सरकार को इस बात की पूरी जानकारी होगी कि ससार भर के बुद्धिवादियो पर उनके इस रवैये का क्या प्रभाव पडेगा।

इस बीच, यह पता चला कि सिन्यावस्की और डेनियल "कठोर व्यवस्था वाले" मोरदोविया के स्वशासी गणराज्य के बलात् श्रम शिविरों में सज़ा काट रहे हैं। इन शिविरो की स्थिति बहुत बुरी है, इन दो "साहित्यिक कैदियो" को आवश्यकता से अधिक काम दिया जाता है और पर्याप्त पौष्टिक भोजन नही मिलता। डेनियल के एक पुराने घाव मे, जो दूसरे महायुद्ध के दौरान लगा था, फिर कष्ट शुरू हो गया है और सिन्यावस्की का पहले से ही नाजुक स्वास्थ्य और बिगड रहा है।

जिन शिविरो—सख्या ११ और सख्या ७ए क्रमश—में इन्हे भेजा गया है वे मध्य वोल्गा मे, मास्को से लगभग ३ सौ मील दूर, पोतमा क्षेत्र मे दुब्रोव्लाग योजना के अंग हैं। (दि डेली टेलीग्राफ १४ मार्च १९६७)। इन शिविरो का नियन्त्रण, कैद मे रखने के स्थानों के मुख्य प्रशासक (जी यू एम जैड, जिसे पहले जी यू एल ए जी कहा जाता था) के निर्मन्त्रण मे है और यह विभाग कानून और व्यवस्था बनाये रखने सम्बन्धी मन्त्रालय के अन्तर्गत है।

(इस मन्त्रालय को एम ओ ओ पी" कहा जाता है और पहले इसका नाम एम वी डी था।) जिन दो बलात् श्रम शिविरों में सिन्यावस्की और डेनियल "सजा काट रहे हैं", उनमे कैदियों से बहुत कड़ा शारीरिक श्रम लिया जाता है, जो कभी-कभी उनके स्वास्थ्य के लिये खतरनाक सिद्ध होता है। वे शिविर की दुकान से ५ रूबल महीने से अधिक का समान नही खरीद सकते और कैदियों की पत्नियां वर्ष मे केवल एक बार उससे मुलाकात कर सकती हैं। (इन लेखकों की पत्नियों ने मुकदमे के सम्बन्ध मे जो दृष्टिकोण अपनाया उससे दिसम्बरवादियों की पत्नियों के दृष्टिकोण का स्मरण हो आता है, जिनके बारे में लेनमोरतोव ने मर्मस्पर्शी विवरण दिया है। यह एक ऐसी वीरतापूर्ण परम्परा है, जो रूस के बुद्धिवादी वर्ग के लोक-गीतों में अमर हो चुकी है। श्रीमती सिन्यावस्की और श्रीमती डेनियल ने जो शानदार पत्र लिखे हैं, और जो इस पुस्तक मे पृष्ठ ७४-८२ पर दिये गये है, उनसे यह प्रकट हो जाता है कि उनकी वफादारी, और साहस तथा चरित्र की दृढ़ता दिसम्बरवादियों की पत्नियों से किसी भी रूप से कम नहीं है।)

यद्यपि शिविरो की स्थिति उतनी भयंकर नहीं है जितनी स्तालिन के शासनकाल में थी। लेकिन फिर भी स्थिति बहुत कठोर है। प्रत्येक शिविर मे लगभग एक हजार कैदी रहते हैं जो मुख्यत: राजनीतिक कैदी होते हैं, अथवा बैपटिस्ट और जेवोहाज विटनेसेज जैसे धार्मिक सम्प्रदायों के सदस्य होते है।

मार्च १९६७ मे यूरोपीय लेखक समुदाय के अध्यक्षमण्डल की बैठक रोम मे हुई और जिसमें एक वक्तव्य जारी कर इस बात पर सहमति प्रकट की गई कि रूसी अधिकारियो से "इस आशा से फिर बातचीत शुरू की जायेगी कि यूरोपीय लेखक समुदाय द्वारा सद्भावना के इस प्रकार प्रदर्शन की प्रतिध्वनि हुए बिना नहीं रह सकती" अर्थात् "बहुत सदूर भविष्य मे नही बल्कि जल्दी ही सिन्यावस्की और डेनियल के भाग्य का निपटारा ऐसे रूप मे कर दिया जायेगा, जो विश्व जनमत के लिये अपेक्षाकृत संतोषजनक होगा।" (दि टाइम्स १ अप्रैल १९६७, यूरोपीय लेखक समुदाय के ब्रिटेन के उपाध्यक्ष जान लेहमन के पत्र के लिये देखिए परिशिष्ट (घ)। यह आशा सोवियत अधिकारियो के इस संकेत और मास्को मे फैली इस आशय की अफवाहो पर आधारित थी कि अक्तूबर क्रान्ति की ५० वी वर्षगाठ के अवसर पर, कैदियो को क्षमादान दिया जायेगा, उससे सिन्यावस्की और डेनियल को भी लाभ मिल सकता है।

इस बीच दोनों कैदी बलात् श्रम शिविरो में सजा काट रहे हैं और उन्हें ये सजाएं एक ऐसे राज्य में अपने सच्चे मनोभावो और विचारों को प्रकट करने के पाप के लिये दी गई हैं, जहां के शासक आज भी अपने प्रजाजनो को स्वयं अपने मनोभावों के अनुसार सोचने अथवा अनुभव करने की अनुमति देने के लिये तैयार नही हैं।

सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे और इन दोनो लेखको की आज जो स्थिति है उस पर किसी भी टिप्पणी से कही अधिक प्रभावशाली ढंग से "दि ट्रायल बिगिन्स" के दो भविष्यवाणी मे भरे दृश्य प्रकाश डालते हैं। पहला दृश्य सेरयोभा की गिरफ्तारी के तुरन्त बाद का है, सेरयोभा इस उपन्यास का एक युवक और कुछ धचकाना पात्र है, जो क्रांतिकारी आदोलन के आरम्भिक दिनो के लुप्त आदर्शवाद का स्मरण कर दुखी होता रहता है।

"हा, तो नौजवान" जाच अधिकारी अन्ततः बोला "अब हमने तुम्हारे दृष्टिकोणो को विस्तार से जान लिया है। मैं एक बात को और स्पष्ट करना चाहता हूं—तुमने किस प्रकार विदेशी जासूसो से सम्पर्क कायम किया ?"

"यह कैसा मूर्खतापूर्ण मज़ाक है ?" सेरयोभा ने पीला पडते हुए कहा। "कृपया यह स्मरण रखिए कि अभी तक मैं अदालत द्वारा दण्डित नही हुआ हूं, मेरे विरुद्ध केवल मुकदमा चलाया जा रहा है।"

जाच अधिकारी के चेहरे पर प्रसन्नता का भाव आया और उसने खिड़की का पर्दा खीच कर एक ओर कर दिया......

"वे लोग वहा है। वे लोग, जिन पर मुकदमा चलाया जा रहा है। देखो कितने अधिक हैं ये लोग ?

जाच अधिकारी ने नीचे सड़क पर ज़बरदस्त भीड की ओर इशारा करते हुए कहा। इसके बाद उसने सेरयोभा के घुटे हुए सिर को हाथ से थपथपाया और बहुत मुलायम स्वर मे समझाते हुए कहा :

"अब तुम भिन्न हो, मेरे लड़के। तुम्हारे ऊपर मुकदमा नही चलाया जा रहा, तुम दण्डित हो चुके हो।"

यदि, वाल्तेयर के समय मे, लेखक का "कोई आश्रय नही था", वह "एक उडने वाली मछली" की तरह था, तो उस स्थिति के बारे मे क्या कहा जा सकता है, जिसमे सिन्यावस्की और डेनियल का जन्म हुआ था। वे अधिकारियो के समक्ष असहाय थे। वे "गोता" नही लगा सकते थे; और न ही वे जनमत को प्रभावित करने के लिये "स्वय को ऊपर उठा सकते थे।" वे वाल्तेयर के दो शताब्दी बाद, एक ऐसी स्थिति का सामना कर रहे थे जो लेखक के अन्त करण से की जाने वाली मागो की दृष्टि से कही अधिक व्यापक थी और जो अपने विचारधारा सम्बन्धी दावो मे अतुलनीय रूप से उग्र थी। सेरयोभा की तरह, उन पर मुकदमा नही चलाया जा रहा था, वे तो अदालत द्वारा निर्णय दिये जाने के बहुत पहले ही, दण्डित हो चुके थे।

दूसरे दृश्य का विवरण "दि ट्रायल बिगिन्स" के अन्तिम पृष्ठ पर दिया गया है, जब वाचक और उपन्यास का एक अन्य पात्र राबिनोविच, जो दोनो उस समय तक बलात् श्रमशिविर मे पहुच चुके हैं, अपने अनुभव के आधार पर मानव जाति के भविष्य पर

विचार कर रहे हैं। राबिनोविच इतिहास मे साधनो के साध्य मे बदल जाने का उल्लेख करता है और कहता है :

"अब ईश्वर नही है, केवल द्वन्द्वात्मकतावाद ही है। एक नये उद्देश्य के लिये, तुरन्त एक नये छुरे का निर्माण करो।"

यहा आकर, वाचक उपसहार का समापन करता है :

"मैं इस कथन के प्रति अपनी आपत्ति प्रकट करने ही जा रहा था कि वह सैनिक जो हमे भागने के खतरे से बचाने के लिए हमारी रक्षा कर रहा था, पहाडी की चोटी पर बैठा-बैठा अचानक जाग उठा और जोर से चिल्ला कर बोला :

"ए सुनो, खाई मे काम करने वालो! तुम बहुत देर से जबान चला रहे हो। अब अपना काम करो।"

हम दोनो ने, मानो हम एक ही व्यक्ति हो, तुरन्त अपनी कुदाले उठा ली।

यदि वे दोनो एक साथ एक शिविर मे होते, तो वार्तालाप हो सकता था—एक उपन्यास के दो पात्रो के बीच नही—बल्कि सिन्यावस्की और डेनियल के बीच। वे लोग भी "खाइया खोद रहे है"। लेकिन यह उपसहार का अन्त नही हो सकता था और न ही हो सकता है, क्योकि सिन्यावस्की-टेरट्ज ने अपने उपन्यास मे एक कारण दिया है, जिसमे उसने अत्यधिक आश्चर्यजनक ढंग से अपने इस भावी दुर्भाग्य की पूर्व कल्पना की है।

"इस अदालत की कारवाई चालू है, इसको कारवाई ससार भर मे चल रही है और केवल राबिनोविच से ही नही, जिसे नगर के सरकारी वकील ने बेनकाब कर दिया है, बल्कि हम सबसे, चाहे हमारी संख्या कितनी भी बडी क्यो न हो, रात दिन, पूछताछ की जा रही है और हमारे ऊपर मुकदमा चलाया जा रहा है। इसे इतिहास कहते है।"

परिशिष्ट—१

इन चार सस्मरणो के लेखक सिन्यावस्की और डेनियल के फ्रासीसी मित्र है, जिन्होने मास्को मे सिन्यावस्की के आधीन अध्ययन किया और जो अब पश्चिम के विभिन्न विश्वविद्यालयो मे रूसी साहित्य का अध्यापन कर रहे है।

सिन्याविस्की और डेनियल

लेखक—व्लाद फ्रिश्रोऊ

जब सन् १९५४ मे पहली बार सिन्यावस्की और डेनियल से मिला उस समय भी ऐसा लगता था, मानो रूस किसी सम्मोहन क्रिया के द्वारा वशीभूत कर लिया गया है। एक अत्यधिक सरलीकृत, मानिकीवादी दर्शन यह दावा करता था कि २० करोड रूस वासियों की अविभाज्य निष्ठा उसे प्राप्त है—यह एक ऐसा दर्शन था जो क्रातिकारी विचारधारा के मुख्य विषयो पर आधारित है, जिसके प्रति सोवियत जनता बहुत अधिक सीमा तक आभारी है और जिसके निर्माण मे सोवियत जनता ने बहुत अधिक योगदान किया है। लेकिन कल्पनातीत ढग से शब्दश. व्याख्या के द्वारा, जिसे पहचान पाने की सीमा से अधिक विकृत कर दिया गया था। और एक व्यापक वचना के द्वारा ही इसे यथार्थ के अनुरूप बताया जा सकता था। अलगाव और सचार साधनो पर राज्य के असीम नियत्रण मे, अतीत को अपने ढग से फिर लिखने और एक नया विस्तृत और आश्वस्त करने वाला इतिहास का संस्करण तैयार करने को सभव बना दिया था। यह वह युग था, जब पुस्तकालयो मे रखी गई पुस्तको के कुछ पृष्ठ फाड लिये जाते थे, अथवा कुछ नामो को निकाल दिया जाता था। जब पश्चिमी सस्कृति, डिकेन्स और बालजक पर आकर समाप्त हो जाती थी, जब विज्ञान या तो सर्वहारावादी था अथवा बुर्जुआ। प्रत्येक व्यक्ति का मूल्याकन इसके सामाजिक सदर्भ के अपरिष्कृत से अपरिष्कृत पैमाने से होता था और अन्तिम लक्ष्य से इसका मेल खाता है अथवा नही, यही प्रत्येक वस्तु के अच्छा अथवा बुरा होने का आधार बनता था। इस अन्तिम लक्ष्य का क्या समर्थन करता है और किस वस्तु का उपयोग इसके लिये किया जा सकता है—बस इसी बात का महत्व था। दोनो पक्षो को दर्शाने वाली कोई वस्तु नही थी। द्वन्द्वात्मक विचारधारा का चिह्न मात्र शेष नही रहने दिया गया था, प्रत्येक वस्तु काली थी अथवा सफेद।

इस वातावरण के कारण सोवियत जनता के अधिकाश हिस्से को जितने कष्ट उठाने पड़े होगे उसका जो अनुमान लगाया जा सकता है उससे कुछ कम ही कष्ट उन्हे उठाने पड़े। स्तालिन के युग मे कल्पनातीत पैमाने पर कुछ लोगों की सामाजिक उन्नति हुई। सरकार और उसका समर्थन करने वाले नये सदस्य, जो श्रमजीवी वर्ग से ही सीधे उन्नति कर इन पदों पर पहुंचे थे, अभी तक परिपक्व नही हो पाये थे और वहुत कम मागे करते थे। स्तालिन की शिक्षाओं की विलक्षणता ने इन्हे दबाये रखा। उन्हे इस बात मे एक निश्चित आश्वासन मिलता था और वे इसे राज्य के प्रति आभारी होने का एक और कारण समझते थे।

ऐसा भी नही था कि सभी बुद्धिवादी दुखी हो। बुद्धिवादी वर्ग के नवागतुकों को जो सरकारी दृष्टिकोण के बचकानेपन मे सच्चे हृदय से विश्वास करते थे, उन वस्तुओ का कोई अभाव नही खला, जिसे 'बुर्जुआ' यूरोप ने पिछली अर्द्ध शताब्दी में प्रस्तुत किया था, और यह वही अवधि थी, जिसे झदानोव ने सभ्यता के नाम पर कलक का युग बताया है। अन्य लोग, साहित्यिक अभिरुचि और आदतो वाले वृद्ध भद्र पुरुष, प्रशासन द्वारा निर्दिष्ट नियोक्लासिकल, उपदेशात्मक और आश्चर्य मे डाल देने वाले विचार क्रम को देख कर मन ही मन मुस्कराते थे और इसी प्रकार इसका समर्थन करने वाले नये वर्गों पर भी उन्हे तरस आता था; हर सभव राजनीतिक गतिविधि से अलग होकर और लेनिन अथवा स्तालिन के कुछ उद्धरण देने के धार्मिक कृत्य जैसे कार्य के पीछे शरण लेकर, ये लोग अपने प्रिय, परिचित और परिश्रमसाध्य अध्ययन के व्यसन मे फिर शान्तिपूर्वक लग गये थे। सोवियत नैतिक सहिता हमारी पडदादियो जैसी थी, बस इसे कम्युनिस्ट विचारधारा के रंग मे रग दिया गया था। इस बुद्धिवादी ससार से अधिक आश्चर्यजनक कोई भी बात नही हो सकती थी, जिसका जन्म हमारे युग के महान्तम राजनीतिक उथल-पुथल के फलस्वरूप हुआ था, जो अपनी विचित्र मान्यताओ, अपने निषेधो, अपने कालिमापूर्ण अशो, अपनी मानसिक वय के कारण पिछली शताब्दी के ९ वें दशक के बुद्धिवादी समाज जैसी ही थी। लेकिन इसके वावजूद यह सब कुछ सच्चा जीवन, स्वय स्फूर्त और आकर्षक था—यह एक ऐसा सुखद खेल था जिसमे विश्वविद्यालय के वड़े प्रोफेसर और बॉय स्काउट दोनो समान रूप से, हमारी शताब्दी की महानतम और सर्वाधिक परिष्कृत उपलब्धियो के प्रति अनभिज्ञ रह कर अथवा घृणा का भाव रखते हुए यह खेल खेलते थे। मोजरट से लेकर अति-यथार्थवादियो तक, "आधुनिक" का अर्थ उनके लिये बुरा था। रूसी और सोवियत आतिथ्य की परम्परागत सहृदयता और सचाई के बावजूद, किसी भी व्यक्ति के साथ किसी भी विषय पर गंभीरतापूर्वक बात करना असंभव था। इसके कुछ गिने-चुने ही अपवाद थे। इन अपवादों के रूप मे मुझे सिन्यावस्की और डेनियल मिले। इन लोगो का परिचय प्राप्त करना किसी महान् ज्ञान की प्राप्ति के समान था, मसीहाई और स्कूल मे पढ़ने वाले छात्रो की भावना के उस अविदवसनीय मिश्रण से यह छुटकारा था, जो सर्वत्र व्याप्त था। यही वे व्यक्ति थे

जिन्होंने मुझे यह समझने और अनुभव करने मे सहायता दी कि प्रकट रूप से जो कुछ दिखाई पड़ता है, उसके बावजूद, सोवियत सघ वस्तुत. एक महान् और आधुनिक प्रयोग था और यह केवल महत्वाकाक्षा से भरी विवेकहीनता का भौडा, वचना से भरा और जानबूझ कर बचकाना प्रयोग नही था, जैसा कि ऊपर से दिखाई पडता है।

ये लोग युवक थे—केवल वर्षों की दृष्टि से ही युवक नही थे, बल्कि इसलिये भी कि वे सोवियत जीवन की तत्कालीन गभीर और वयोवृद्ध पृष्ठभूमि से बिल्कुल भिन्न दिखाई पड़ते थे। दाढी रखने वाले अकादेमिशियनो के उदाहरण के पीछे चलना इसका एक बहुत मामूली सा पहलू था। सर्वाधिक आश्चर्यजनक बात तो यह थी कि प्रशासन के युवक सदस्यो का दृष्टिकोण, इसके वृद्ध सदस्यो के समान ही था—इन लोगो को भी अपने शासन के आरम्भिक उथल-पुथल से भरे वर्षों के विचार पर शरमाने की शिक्षा दी गई थी। आप यह समझते होंगे कि क्राति का जन्म, मिनर्वा की तरह, अक्तूबर विद्रोह से हुआ और उस समय भी इसके पास, पूरी तरह से सशस्त्र, और चौराहो पर खडे चुस्त मिलशिया के सैनिको की टुकडिया और वोरोवस्की मार्ग पर स्थित लेखक सघ आज की तरह ही मौजूद थे। स्तालिन-वादी इस बात पर लज्जा का अनुभव करते थे कि एक समय उनका देश, उनका सोवियत राज्य, वस्तुतः अपनी बाल्यावस्था मे था।

सिन्यावस्की और डेनियल दो सोवियत विद्वान थे। अपने स्वभाव और अपने व्यवसाय की दृष्टि से बहुत भिन्न थे, दोनो प्रतिभाशाली थे और अपने पूरे हृदय से सोवियत संस्कृति की सेवा मे लगे हुए थे। उनका जीवन रूस के अपने घनिष्ठ परिचय के लोगो जैसा ही था, वे इस टोली के लोगो की अभिरुचियो, इसकी आदतो, इसकी कठिनाइयो और इसके आनन्द के अवसरो, सब मे सहभागी थे। सिन्यावस्की के फ्लैट पर विद्यार्थियों का आनन्दमय आना-जाना निरन्तर लगा रहता था। आस-पास की सडको पर आप यदि उनके सा टहलने निकल जायें, तो आपको यह पता चल जायेगा कि प्रेक्षण का उनमे कितना असाधारण गुण था—सोवियत जीवन की दैनिक दिनचर्या के रगीन पक्ष के आनन्द भरे और स्नेहमय प्रेक्षण, जिनका आगे चलकर उन्होने अपनी पुस्तको मे कितना प्रतिभापूर्ण वर्णन प्रस्तुत किया है। डेनियल असाधारण दुखान्त क्षमता वाली युद्ध सम्बन्धी कहानिया सुनाते थे। डेनियल और सिन्यावस्की की तुलना मे, सरकार द्वारा मान्य, अधिकृत रूप से स्वीकृत और साहित्यिक सस्थाओ मे उच्च पदो पर आसीन ऐश आराम की वस्तुओ से सज्जित अपने देहात स्थित विशाल भवनो मे बैठे बुद्धिवादियो की बातचीत, उनकी साहित्यिक राज-नीति की घिसी-पिटी भाषा तक ही सीमित रहती थी और वे सोवियत जीवन के यथार्थ से अनभिज्ञ "आतरिक प्रवासी" दिखाई पड़ते थे।

यदि सिन्यावस्की और डेनियल इन वास्तविकताओ के प्रति, इतने अधिक सवेदन-शील थे तो अशत इसका यह कारण था कि उनकी सोवियत शासन के समारम्भ मे रागात्मक रुचि थी, क्राति के उस महान् दशक मे उनकी भाव भरी दिलचस्पी थी, जिसका

उन्होने अपने मार्ग में जानबूझ कर उपस्थित की गई सब बाधाओ के बावजूद गहराई से अध्ययन किया था। वे इस दशक के प्रति अपने माता-पिताओं के संस्मरणो के कारण आर्कषित हुए थे और उनके पिताओ ने इन वर्षों के घटनाक्रम के निर्माण मे सहायता दी थी और वे अपने बच्चो के लिये इस दशक की शैली, इसकी भावना तथा इस दशक से सबंधित अनेक वस्तुए छोड गये थे। लेकिन इन सब बातो से अधिक, यूली और आंद्रेय इन दिनो के क्रान्तिकारी बिम्ब के प्रति आर्कषित हुए थे, जो स्वभाव की दृष्टि से उनके कही अधिक समीप था, जो उनकी नैतिक और बौद्धिक महत्वकाक्षाओ से कही अधिक समानता रखता था—और यह एक ऐसा भाव था जिसका समस्त रूस ने सन् १९५६ के बाद अनुभव किया।

ये दोनो व्यक्ति गहन और व्यापक संस्कृति वाले व्यक्ति थे, यह एक ऐसी सस्कृति थी, जिसमे वे आश्चर्यजनक अतराल नही थे, जिनका प्रदर्शन, अनिवार्य रूप से उन दिनो, सर्वाधिक आकर्षक सोवियत बुद्धिवादी तक करते थे। उनकी जिज्ञासा सर्व-व्यापी थी, उन्हे रूस की आरम्भिक कला का असाधारण ज्ञान था, जो सरकारी नीति की भ्रांत नास्तिकता के कारण उपेक्षा के गर्त मे जा गिरी थी। पश्चिम के २० वी शताब्दी के साहित्य के इतिहास मे, जो कुछ भी जाने योग्य था, वे जानते थे, जिस की झदानोव ने भर्त्सना की थी और जिससे जन-सामान्य अपरिचित था और उन्होने तीसरे दशक के रूमानी क्रातिकारी लेखको की समस्त रचनाए पढी थी, जिन्हे नष्ट करने मे स्तालिनवादियो ने कोई कोर कसर नही उठा रखी और केवल रचनाओ को ही नही बल्कि उनके लेखको को भी, एक के बाद एक होने वाले शुद्धि अभियान मे नष्ट करने का हर संभव उपाय किया गया। इस ज्ञान के लिये वे विशेष रूप से प्रशंसा के पात्र थे, क्योकि इसे प्राप्त करने के लिये, सब्र और लगन का, यहा तक कि इन रचनाओ की पाण्डुलिपियो को प्राप्त करने के सब्र और लगन का चमत्कार प्रस्तुत करने की आवश्यकता थी, क्योकि इन रचनाओ को जानबूझ कर छापा नही गया अथवा इनका अनुवाद नही कराया गया—ये वे रचनाएं थी जिन्हे सार्वजनिक रूप से नही जलाया गया था। लेकिन जिनकी स्मृति को विधिवत् छिपाव और उपेक्षा के द्वारा मिटाया जा रहा था। इन रचनाओ का उद्धार करना एक वस्तुतः महान वीरतापूर्ण कार्य था। अति-यथार्थवाद जैसे विषयो पर अत्यधिक सूझ-बूझ और बुद्धिमत्ता से सिन्यावस्की को बोलते हुए सुन कर और फिर उसके बाद अपनी पुस्तको की अलमारी के किसी कोने से कुछ फटी-टूटी पुस्तके निकाल कर, जिन्हे सार्वजनिक पुस्तकालयो से बाहर रखा गया था और जो पिछले दस वर्षों में हाथों हाथ प्रचारित होकर पढ़ी जा रही थी और जिनके अध्ययन ने सिन्यावस्की के विचारों को स्वरूप दिया था और विकसित किया था, चर्चा करते हुए देख कर मेरा मन सदा भर आता था।

यद्यपि इन दोनो लेखको को दम घोटने वाले इस बौद्धिक वातावरण मे अनेक कष्ट उठाने पड़े थे, लेकिन उनके मन मे कोई कटुता नहीं थी। इतनी व्यापक सूझ-बूझ और इतने

उदार दृष्टिकोण के साथ-साथ एलुआर्ड, क्लाऊडेल अथवा पिकासो सम्बन्धी अपनी सुविज्ञ टिप्पणियो के साथ-साथ वे मुझे यह समझाते थे कि सोवियत सस्कृति का यह हाल क्यो हुआ। इस सकट के कारण वे नही है, जिन्हे सामान्यत पश्चिम मे समझा जाता है। इस का कारण कुछ अधिकारियो की मूर्खता अथवा धूर्तता नही है सभवत एक देश के विकास के दौर मे आने वाले ये अनिवार्य कष्ट थे—क्योकि इस देश का सामाजिक ढाचा इतनी तेजी से और इतनी उग्रता और अमानुषिकता से बदला—कि जिसमे मानवतावादी आदर्शो और उपलब्धियो के प्रति उत्साह ने विचार के आदिम और सत्ता पर आधारित क्रम को चुनौती दी। उन्होने इस सघर्ष को एक दुखपूर्ण घटना के रूप मे देखा, यह घटना बहुत महगी थी, लेकिन वे इसे बहुत समय तक जीवित रहने वाली नही समझते थे और उन्होने मुझे जो कुछ बताया उसके आधार पर मैं समाजवाद के निर्माण के प्रत्येक चरण की सवेदनाओ और गरिमाओ को देख और समझ सका और मुझे यह अनुभूति उससे कही अधिक गहराई से हुई, जो सरकारी उपदेशको की अपनी विशिष्ट शब्दावली से हुई थी। उनके इस गहन विश्वास ने मेरे मन मे भी इस विश्वास को कही अधिक दृढता से उत्पन्न किया कि सम्पूर्ण संस्कृति का पुनर-एकीकरण सोवियत जीवन मे अनिवार्य रूप से होगा। सभवत, उन्होने सन् १९५४ मे मुझे जो कुछ बताया उसके आधार पर ही सन् १९५६ के बाद जो घटनाए हुई वे मुझे सम्भावित दिखाई पडी।

साहित्य का व्यसन होने के कारण, वे जैसे-जैसे प्रौढ हुए, उनके मन मे लेखन के प्रति अनुराग जगा। हो सकता है कि वे बहुत समय से अभिव्यक्ति की आवश्यकता को अनुभव कर रहे हो, लेकिन इस विश्वास के कारण उन्होने कलम न उठाई हो कि वर्तमान परिस्थितियो मे उनकी रचनाए प्रकाशित नही हो सकती और उस आत्म-त्याग के नियम के कारण भी जो तत्कालीन परिस्थितियो ने उनके ऊपर कुछ विशेष आदर्शो के नाम पर थोप दिया था। आरम्भ मे उन्होने "अपनी मेज की दराज" के लिये और अपने मित्रो के लिये ही लिखा, और एक बार फिर समाज से बुद्धिवादी के सम्बन्ध के महान्, प्राचीन रूसी नाटक की पुनरावृत्ति की। यह वह दौर था जब लेखको के मेजो की दराजे पाण्डुलिपियो से भरी पडी थी, झिवागो, त्वार्दोवस्को का 'त्योरकिन इन दि नैक्स्ट वर्ल्ड', अखमातोवा का काव्य 'रेक्वीम', ईवतुशेन्को की कविता "बाबी यार" सोलझनित्सीन का उपन्यास "आइवन डेनिसोविच।" सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के २० वे अधिवेशन से प्रेरित हो कर, लेकिन सोवियत साहित्यिक नौकरशाहो को आतकित करते हुए जिन्हे हर ओर से बाध की दीवारो मे दरार पडती हुई दिखाई पड रही थी, सोवियत सस्कृति मे व्यापक साहित्य एक महान् आदोलन बन रहा था। सिन्यावस्की और डेनियल इसका अग थे।

इस विशाल मोर्चे, नये और पूरी तरह से परिभाषित मोर्चे का उन्होने स्वय अपना भिन्न क्षेत्र चुना। जैसा कि स्वाभाविक था वे सामान्य मनोभाद के सहभागी थे, जो उन सब अन्य लेखको के मनोभावो के ही अनुरूप था, जो शुद्ध और अदूषित सत्य के अनुसधान मे

लगे थे—जो उन सब सत्यो के अनुसंधान मे लगे थे, जिन्हे विकृत कर दिया गया था अथवा छिपा दिया गया था—और जिन लेखको ने वास्तविकता युद्ध, नौकरशाही और निरकुश शासन के अत्याचारों और विनाश, तथा बलात् श्रम शिविरों सम्बन्धी तथ्यगत सत्य को लिखा। लेकिन सिन्यावस्की और डेनियल ने इन बड़े विषयों में से किसी के बारे मे भी नही लिखा और न ही यथार्थ के किसी विशेष रूप से अन्धकारपूर्ण पक्ष को उद्‌घाटित करने का कटिबद्ध प्रयास किया। उनका विषय सोवियत रूस के सामान्य व्यक्ति का दैनिक जीवन था, जिसमे छोटी-मोटी और मूर्खतापूर्ण घटनाएं पूरे नाटक को, उसकी समग्रता मे प्रकट कर देती है। इस दृष्टि मे उनका तरीका अत्यधिक मौलिक था, और यह वर्णनात्मक उपन्यासकारो के तरीके से भिन्न था और एक प्रकार से उसका पूरक भी था। इसके लिये उस ससार के रग, गठन, उसके पात्रो, उसकी पृष्ठभूमि, उसके तौर तरीको, उसकी शब्दावली और दिवा-स्वप्नो—सब का गहन और स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक था। सोवियत साहित्य मे जिन लेखको ने सत्य के अन्वेषण के अभियान मे हिस्सा लिया—और सोवियत साहित्य एक ऐसा साहित्य है, जो नाटकीय तार्किकता मे अपना सानी नही रखता—उन सब से अधिक डेनियल और सिन्यावस्की को इन तत्वो का ज्ञान था। सिन्यावस्की के प्रकृति चित्रण, घरेलू वातावरण का वर्णन, दैनिक जीवन के दृश्यो का चित्राकन, उनके कथोपकथन और स्वगत कथन, सोवियत जन सामान्य के मनोवैज्ञानिक रेखा चित्र आश्चर्यजनक सीमा तक जीवंत हैं। उनकी भाषा का प्रवाह उनकी अभिव्यक्ति, उनकी वर्णन प्रतिभा, इस शताब्दी के तीसरे दशक के महान् लेखको के समान है जो अपने सशक्त और जीवंत, चरित्र चित्रणो के लिये प्रसिद्ध हैं। एक जरा भिन्न स्वर मे, डेनियल के कुछ बुद्धिवादियों की टोलियों के दैनिक और रात्रि जीवन के विवरण (उदाहरण के लिये "अटोनमैंट" मे) मन पर गहराई से छा जाने वाली सीमा तक विश्वासप्रद है। यदि साहित्य पर "नव-यथार्थवाद" शब्द को लागू किया जा सकता है, जिस प्रकार इसे सिनेमा पर लागू किया जाता है, तो पूर्ण ग्राह्यता, यथार्थ को स्वीकार करने की क्षमता की दृष्टि से, सिन्यावस्की और डेनियल को भी अन्ततः नव यथार्थवादी स्वीकार किया जायेगा—यह एक ऐसी पीढ़ी, एक ऐसे देश मे एक पर्याप्त उपलब्धि होगा जो ससार को उसके सच्चे रूप मे देखना एक बार फिर सीख रहा है।

लेकिन उनका लक्ष्य कहीं अधिक व्यापक था और नव-यथार्थवादी तरीके की परिधि इस लक्ष्य की पूर्ति की दृष्टि से आवश्यकता से अधिक सीमित है। उनका विश्वास था कि सोवियत सामूहिक दृष्टिकोण की कमजोरी केवल खराब नेत्र-दृष्टि के कारण ही नहीं थी बल्कि यह कमजोरी सोवियत विचारक्रम के ढाचे में भी निहित थी। सिन्यावस्की के निबंध "आन सोशलिस्ट रियलिज़म" का यही मुख्य विषय था। सोवियत समाज की अनेक कठिनाइयों मे से एक कठिनाई यह थी कि कुछ समस्याओ के प्रति इसका दृष्टिकोण पुराना और १६ वी शताब्दी के दृष्टिकोण से मुख्यत. अज्ञात था। मनुष्य की स्थिति का मूल्याकन भी एक तर्कवादी के चकाने आशावाद, इच्छाशक्तिवाद, जो अच्छे और बुरे, प्रकाश और अंधकार

के अन्तर को कम कर देता है और इसे यन्त्रचालित ढग से निर्णय देने और मानव सद्भावना जैसी सीधी-सादी शब्दावली मे बदल देता है, जैसे वचकाने दृष्टिकोण से किया गया। अन्य सोवियत लेखको के विपरीत जो अतीत से अपना प्रतिशोध ले रहे थे, सिन्यावस्की और डेनियल प्रथमत: और मूलतः नैतिकतावादी थे। किसी राजनीतिक घटना मे उन्हे इस बात मे दिलचस्पी होती कि वह क्या उस मन:स्थिति थी, जिसके कारण यह घटना हुई। जिन बुराइयो पर उन्होने सब से अधिक प्रहार किया, वे स्तालिन के दौर की वचकता और नैतिक अंधश्रद्धा थी। रूस के लोगो की कुछ स्वभावगत विशेषताओ से सम्बद्ध हो कर, इस दृष्टि-कोण के जो प्रभाव हुए वे सर्वविदित हैं—नेता की पूजा, मिथ्या विनय, कुछ नैतिक परम्पराओ के प्रति अटूट सम्मान का भाव और इसी प्रकार प्रार्यरियो मे उपजने वाले विचारो के प्रति अटूट सम्मान का भाव। सोवियत जीवन निषेधो से भरा था, यहा तक कि भाषा सम्बन्धी निषेध भी थे, जिनका सेंसर व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नही था जैसे स्त्रिया किसी अपरिष्कृत शब्द की ध्वनि सुनते ही, बडे दिखावे के साथ कमरे से उठ कर बाहर चली जाती थी।

इस समस्या की अपनी स्वतत्रता अथवा अलग सत्ता दर्शाने के लिये डेनियल और सिन्यावस्की ने इसे इसकी सामान्य राजनीतिक पृष्ठभूमि से अलग किया। उदाहरण के लिये यदि वंचकता पर सदा अनिवार्य रूप से केवल राजनीतिक सदर्भ और शब्दावली मे ही विचार किया जाता है और यदि स्तालिनवाद के विरुद्ध सघर्ष के नाटक मे केवल खल नायकों को ही वंचक दिखाया जाता है, तो इसे एक अस्थायी राजनीतिक दौर की बुराई के रूप मे आसानी से प्रदर्शित कर इसकी उपेक्षा की जा सकती है। इस बात पर जोर देने के लिये कि वे उन समस्याओं पर विचार कर रहे है जो सब व्यक्तियो और सब युगो से सम्बन्ध रखती है, सिन्यावस्की और डेनियल ने यह कहने का साहस किया कि स्तालिनवाद विरोधी उपन्यासो और कहानियो के नायका तक मे कुछ पुरानी बुराइया पाई जा सकती है। जैसे डेनियल की कहानी "अटोनमेंट" मे निर्दोष लोगो का दमनचक्र का शिकार होना अथवा सिन्यावस्की की कहानी, "ग्रैफोमेनियाक्स" मे सेंसर व्यवस्था के शिकार लेखक। स्वतत्र नगर ल्यूबीमोव मे (दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट मे)—एक ऐसे नगर मे जो वर्तमान सोवियत व्यवस्था से अलग हो गया दिखाई पडता है—व्यापक पैमाने पर जन समुदाय को सम्मोहन क्रिया द्वारा वश मे करने की घटना विभिन्न रूपो मे सामने आती है, और जिसमे यहूदी समस्या पर भी गहराई से विचार हुआ है। इस समस्या पर सिन्यावस्की ने जान-बूझ कर अस्पष्टता से विचार किया है। इसमे एक ओर तो रेगिस्तान के प्रति यहूदियो का घर जैसा लगाव होने सम्बन्धी हृदय स्पर्शी अश मे और दूसरी ओर एक अनाकर्षक यहूदी वेश्या के वर्णन मे इस पर विचार हुआ है। डेनियल और स्तालिन के दमन चक्र का शिकार हुए अनेक लोगो के घनिष्ठ मित्र, सिन्यावस्की ने जानबूझकर इन विरोधाभासपूर्ण उदाहरणो को यह दर्शाने के लिए चुना कि लोगो को गुमराह करने के लिए द्वन्द्वात्मकता का किस प्रकार

उपयोग किया जा सकता है । "यहूदी विरोध का विरोध" अनेक रूप धारण कर सकता है । आखिरकार यहूदियो के सम्मान की रक्षा के लिये मदाम केदरीना ने[1] डेनियल को बलात् श्रम शिविर मे भेजने की माग की थी ।

इसी प्रकार डेनियल और सिन्यावस्की के स्थूल दृष्टिकोण पर विचार करने का महत्व है । स्तालिनवादी साहित्य की मिथ्या विनय इसकी वंचकता का अभिन्न अंग थी और यही कारण है कि सिन्यावस्की के पात्रो मे काम सम्बन्धी विकृतिया दिखाई गई हैं । यही कारण है कि एक सुन्दर स्त्री अपने चारो हाथो और पावों पर, एक आइने के सामने एक ग्रीक मूर्ति की तरह झुकी हुई है, जिसका सिर किसी अति यथार्थवादी ने तोड कर अलग कर दिया हो । इसका कारण यह है कि सिन्यावस्की हर रूप मे वंचकता के प्रति अपना विरोध, चिल्ला-चिल्ला कर प्रकट करते हैं ।

डेनियल और सिन्यावस्की दोनों की रचनाओ का एक अन्य विषय, कलाकार व्यवसाय का है । यहा भी एक अन्य सोवियत निषेध सामने आता है, जो विशेष रूप से कठोर है और जो पूरी तरह से रूसी अतीत से विरासत मे मिला है । वर्षों से जिस मान-दण्ड को कला पर लागू किया जा रहा है—जनता और समालोचको दोनों के द्वारा…वह मार्क्सवादी शब्दावली और अब पुराना पड चुके सामाजिक सापेक्षतावाद का भ्रांतिपूर्ण सम्मिश्रण है, जो १६ वी शताब्दी के मध्य मे शुरू होता है और जिसका रूप मे समाजवादी लोकतन्त्रवादियो ने समर्थन किया, जिनके अपने विचार सीधे-सादे और कट्टर थे । संक्षेप में, कला की दो और केवल दो ही वैध भूमिकाए हो सकती हैं . किसी काल का समाज का इतिहास अथवा उसका बिम्ब और समाज की उस टोली या समुदाय के विचारों का उपदेश जो प्रगति का हामी है । और यह कार्य भी अधिक से अधिक प्रत्यक्ष तरीके से किया जाना चाहिये । इस प्रकार सिद्धातकारो और जनता दोनो की यह अप्रकट माग है कि एक कला-कृति को या तो कुछ फोटो चित्रो का एक सैट होना चाहिये अथवा एक प्रचार पुस्तिका और इससे भिन्न जो कुछ भी है, उसे कुछ अश तक बिम्ब की अनावश्यक और खेदजनक विकृति के रूप मे ही बरदाश्त किया जाता है ।

स्तालिन के शासनकाल मे यह सिद्धात एक शिकंजा बन गया था । सिन्यावस्की और डेनियल इससे मुक्ति चाहते थे । वे यह दिखाना चाहते थे कि कला के कही अधिक व्यापक और कही अधिक विविध उपयोग है, कि कला को सामाजिक समस्याओ के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक समस्याओ को भी उठाना चाहिये (क्योकि आध्यात्म और नैतिकता के प्रति, द्वन्द्वात्मक दृष्टिकोण के अभाव के परिणामस्वरूप, सामाजिक व्यवहार मे भी इसकी समाप्ति हो जाती है), कि इसे महाकाव्यों जितना विराट होने के बहाने परम्परागत नहीं बन जाना चाहिये, कि इसका सबसे बड़ा उपयोग समाज को सिद्धात के निष्क्रिय पालन के

---

[1]—साहित्यिक गजट में प्रकाशित केदरीना के लेख के लिये देखिए पृष्ठ १११ ।

विभिन्न प्रलोभनो से मुक्ति दिलाने के लिये, उसे आघात पहुंचा कर उसकी तन्द्रा तोड़नी चाहिये।

इन सब कारणों से सिन्यावस्की और डेनियल अतिशय विलक्षण और काल्पनिक बातों के प्रति, एक कला विधा के रूप मे आकर्षित हुए—क्योकि यह मानव भावना की स्वतन्त्रता का एक बडा उदाहरण है और इसी कारण से इसकी सृजनात्मक क्षमता का भी (और उनकी अपनी प्रबल अन्वेषक कल्पना का, जो दुखान्त के साथ-साथ सुखान्त घटनाओं से भी गहराई से परिचित है, असाधारण काव्यात्मक गुण है); क्योकि यह नैतिकतावादी के हाथ मे सबसे पैना हथियार है और इससे भी अधिक यह कारण है कि यह यथार्थवादी सम्प्रदाय के मतली उत्पन्न करने की सीमा तक घटिया नारो के विरुद्ध, कानून सम्मत विद्रोह है।

उनकी रचनाए शब्दावली के जानबूझ कर विलक्षण प्रयोग के बावजूद, प्रचार पुस्तिकाओ अथवा अमूर्त पत्रकारिता के स्तर पर नही उतरी। अपने नवीन ढाँचे और मूल्यो के क्रम के भीतर, यह जीवन का एक ऐसा चित्र है, जो अपनी समस्त राजनीतिक वास्तविकता से प्रज्ज्वलित है, लेकिन यह एक ऐसा चित्र है, जिसमे अतिशय काल्पनिक और अत्यधिक परिचित का निरन्तर सम्मिश्रण हुआ है और जिसमे एक नैतिकतावादी, एक राजनीतिक इतिहासकार का उपहास करता है। बहुत लम्बे अरसे के बाद, सोवियत साहित्य ने परिप्रेक्ष्य की व्यापकता और यथार्थ की ग्राह्यता की दृष्टि से ऐसी रचनाए प्रस्तुत की हैं।

इस नयें दृष्टिकोण से सर्वप्रथम आश्चर्यचकित और स्तब्ध रह जाने वाले लोग वे सम-सामायिक सोवियत लेखक थे, जो सत्य का अन्वेषण करने मे लगे थे। स्वय उनकी रचनाए विषय के चुनाव, युद्ध अथवा बलात् श्रम शिविरो सम्बन्धी उनके रहस्योदघाटनो की दृष्टि से अवसर क्रातिकारी दिखाई पडती थी, लेकिन बुनियादी तौर पर, वे पहले के एक युग के लेखको की अत्यधिक परम्परावादी, प्रकृतिवादी, द्वन्द्वात्मक सौन्दर्य भावना से प्रभावित और सचालित थे और इन लेखको से उनकी शैली भी अधिक भिन्न नही थी। उन्होने यह कहने के लिये कि बलात् श्रम शिविरो मे क्या हुआ और राजनीतिक मानवतावाद के एक सामाजिक दृष्टि से उपयोगी कार्य के रूप मे, उन्होने बलात् श्रम शिविरों की चर्चा की। सिन्यावस्की और डेनियल की कला—अपने अतिशय काल्पनिक बिम्बो, अपनी नैतिक चिन्ताओं, यथार्थ के चित्रण मे गंभीरता और हास्य के उपयोग के कारण, सोवियत साहित्य के भविष्य के लिये क्रातिकारी महत्व रखती है, जिसके लिये इसने नये द्वार उन्मुक्त किये हैं। लेकिन यह मान्य सिद्धातो का अत्यधिक सीमित उल्लघन था और इस कारण से इसे सोवियत बुद्धिवादियो का प्रभावशाली समर्थन प्राप्त नही हो सका, जिनमें से अधिकाश बुद्धिवादी स्तालिनोत्तर क्राति को केवल तथ्यगत सत्य की पुन स्थापना की दृष्टि से ही देखते हैं। १९८० के बाद के वर्षो के नारो के द्वारा, २० वी शताब्दी के मध्य की कला को पुनरुज्जीवित नही किया जा सकता। सिन्यावस्की और डेनियल ने, सोवियत जीवन को

वास्तविकताओं का गहन ज्ञान होने के कारण, स्वयं को चिन्ता और पुनर्निर्माण की कला को समर्पित किया, जो सच्चे अर्थों मे २० वी शताब्दी की कला है ।

इसका तर्कसंगत निष्कर्ष, अपनी रचनाएं विदेशों में प्रकाशित करने का उनका निर्णय और कालांतर मे उनका अपमानजनक मुकदमा ही था । यहां भी उन्होंने नैतिकवादियों की तरह ही आचरण किया । उनका दृष्टिकोण यह था कि उन्होंने अनेक उदारतावादी लेखको के पद-चिह्नों पर चलने से जानबूझ कर इनकार किया—जो थकान, आदत अथवा आलस्यपूर्ण निराशा के कारण, अपनी सर्वोत्तम रचनाओं को ताले में बन्द रखते थे और उन्हे केवल कुछ घनिष्ठ मित्रों को ही दिखाते थे और इनका उल्लेख एक आह और स्वीकृति सूचक सिर हिला कर अपने विदेशी मित्रों से करते थे ("आप इस बात को समझते ही हैं")—और यह कार्य उन्होने यह दिखाने के लिये किया कि वे कितने स्वतंत्र और कितने साहसी हैं । रूस मे कहा जाता है कि मूर्ख सेंसर अधिकारियों से लड़ना निरर्थक है, रचनाओ के पाठ की मूर्खतापूर्ण कांट-छाट के विरुद्ध विरोध प्रकट करना बेकार है; सेंसर अधिकारी दुष्ट होने से अधिक मूर्ख है, एक मात्र रास्ता प्रतीक्षा करने का है । आज सचमुच रूस के लेखको के समक्ष उससे कही कम जोखिम मौजूद है, जो स्तालिन के पुलिस राज के अन्तर्गत थी । सभवत. आज उन्हे जिस बात की जोखिम उठानी पडती है, वह आय अथवा अन्य सुविधाओ की हानि ही है जिसके वे स्तालिन के शासनकाल से ही आदी हो चुके हैं, लेकिन यह बात उन्हे गोद की तरह चिपका देती है । इससे भी अधिक भयावह यह बात है कि रूस के लेखको को सामान्य सोवियत पाठको के प्रति अपने दायित्व का त्याग करना पडता है और इस प्रकार ये पाठक कलाकार की रचनाओ का उसकी समग्रता मे परिचय नही पाते । उन्हे केवल वही रचनाए देखने को मिलती है, जो उन्हें नये विचारो का परिचय नही देती और उन्हे नये प्रश्न उठाने की प्रेरणा नही दे सकती । ऐसा कुचक्र कायम हो चुका है । कलाकार और जनता के बीच एक दूरी कायम कर दी गई है; जिसके परिणामस्वरूप वे यदाकदा ही एक दूसरे को अच्छी तरह समझ पाते हैं, अथवा एक दूसरे के दृष्टिकोण से परिचित हो पाते हैं अथवा एक दूसरे की मदद कर पाते हैं । सिन्याव्स्की और डेनियल का यह कार्य उन बाधाओ के विरुद्ध विरोध प्रदर्शित करना था, जो लेखकों को अपनी रचनाए विदेशो मे प्रकाशित करने से रोकती हैं, और यह उन लोगो को एक चुनौती भी थी जो अपनी रचनाओ मे दोहरे आचरण को स्वीकार कर चुके हैं और जिन्होंने यह मान लिया है कि अब कोई अन्य रास्ता नही है—यह लेखकों को सोवियत जनता के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करने के प्रति जागृत करना था । यह एक महान् देश के नागरिको मे अटट विश्वास का भी चिह्न था, जिनकी नैतिक पवित्रता पर चिर-कुमारी की निष्ठा से निगरानी करना हास्यस्पद है । यदि यह पुस्तक—यदि कोई भी पुस्तक—सोवियत राज्य के लिये वस्तुतः खतरा बन सकती है, यदि कोई भी कलाकृति इसके विरुद्ध किया गया अपराध हो सकती है, तो इसका केवल यह अर्थ हो सकता है कि सोवियत

नागरिकों की वफादारी और सोवियत शासन की नीव वस्तुत बहुत कमजोर है। और यह बात एकदम गलत है। सिन्यावस्की और डेनियल के मामले मे राजनीति को लाना वस्तुत हास्यास्पद था। यदि सोवियत सघ को वस्तुत इस मामले से कोई क्षति पहुंची तो दोष मुकदमे का आयोजन करने वालो का है। सिन्यावस्की और डेनियल ने अपने जानबूझ कर किए गए और वीरतापूर्ण निश्चय के द्वारा, नागरिक गौरव का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

यदि कोई आश्चर्य का विषय है तो यह कि इस मामले के प्रति यूरोप के बुद्धिवादियों ने अपनी प्रतिक्रियाओ मे कुछ मृदुता दिखाई है। कुछ सिद्धान्तो से जुडी हुई पार्टियो के सदस्यो को छोड कर, ऐसे लोग भी थे, जिन्होंने इसलिए बोलना पसन्द नही किया कि इससे सोवियत विरोधी भावनाए भडक सकती है। ऐसे दृष्टिकोण इस विचित्र स्थिति पर प्रकाश डालते हैं कि पश्चिम के वामपथी बुद्धिवादियो के एक बडे भाग पर सोवियत सघ की कितनी नैतिक माग कायम है। १६ वी शताब्दी मे स्वर्गिक नगर को, जिसमे सब मानवीय समस्याओ को सुलझा लिया जाता है, दृढता से आदर्श के क्षेत्र मे रखा, २० वी शताब्दी को यह आवश्यकता हुई कि यह नगर हर कीमत पर कायम रहे, अपनी समग्रता और पूर्णता मे पृथ्वी पर ही किसी स्थान पर कायम रहे। सदा सर्वदा के लिये यह निश्चय कर लिया और मान लिया गया कि सोवियत रूस ऐसा एक नगर है, कि इससे सम्बन्धित प्रत्येक वस्तु सौहार्दपूर्ण है, इसमे व्यक्ति अपनी परिस्थितियो सहित पूरी तरह शान्तिपूर्वक रह रहा है और इससे भी अधिक महत्व की बात यह है कि इसमे गरिमापूर्ण, सब दोषो से मुक्त और सरल वन्य प्राणी के ससार का युवावस्था जैसे उत्साह और पुनर्जीवनदायक वातावरण भी मौजूद है। स्तालिन के युग के घटिया से घटिया उपन्यास का शुद्ध हवा के झोंके के रूप मे स्वागत किया गया, और ऐसे समालोचक मौजूद थे, जिन्होने इन उपन्यासो के बचकानेपन के नीचे छिपी महानता को प्रकट करने के लाइसेंसशुदा टिप्पणीकार का दायित्व अपने ऊपर लिया।

किसी भी व्यक्ति के मन मे यह बात नही आई कि रूस मे जिस घटनाक्रम का उद्‌घाटन हो रहा है, वह हर दृष्टि से पूर्ण नही है। इस घटनाक्रम का उद्‌घाटन इस प्रकार नही हो रहा है जैसे किसी आधुनिक स्टेडियम मे खेल शुरू होने से पहले शुरु होने वाली परेड का दृश्य होता है, बल्कि यह अन्वेषण की एक कठोर और जटिल यात्रा है, आदर्श और यथार्थ के बीच कीचड भरे मैदान मे चल रही निर्मम लडाई है और इस युद्ध मे वे लोग हिस्सा ले रहे हैं, जो डगमगाते कदमो से भयावह प्रौढता की ओर अग्रसर हो रहे है, जो एक केफै के बरामदे मे दार्शनिक विचार विनिमय से भिन्न तरीको से "दुविधा," "त्रास," "चिन्ता", "दुखान्त रचना," "द्वन्द्वात्मकता," "मानव स्वभाव की जटिलता," "व्यक्ति की नियति का नाटक," "पूर्णसत्ता का कभी समाप्त न होने वाला सतत अन्वेषण" जैसे शब्दो के अर्थ सीख रहे हैं। जिन लोगो ने बांध बनाये, जिनकी अगुलिया ठण्ड मे ठिठुर कर नीली पड चुकी हैं, और जिनके स्वस्थ चेहरे उन पत्रिकाओ के मुख-पृष्ठो पर दिखाई पडते हैं

जिन्हें पढ़ना हम एक अच्छी बात समझते है, उन लोगों के लिये ये शब्द केवल शब्द ही नही थे।

और जब वहां से हमें आज पुस्तकें प्राप्त होती हैं और ये पुस्तकें हमसे, बिना किसी मध्यस्थ के सीधे वार्तालाप करती हैं, हमसे एक महान्, सार्वभौम, आधुनिक, पूरी तरह से वयस्क भाषा में बातचीत करती हैं, तो हमें यह असंगत, और आघातजनक दिखाई पड़ता है। या तो हम इन पर अपनी आंखें मूंद लेते है अथवा हम एक राजनीतिक सनसनी फैलाने की बात करते हैं। हम पश्चिम यूरोप मे, अपनी शताब्दी के महान् और उद्रेक भरे युवाजन से इनकी घनिष्ठता की अपेक्षा करते हैं। हम यह देखने और स्वीकार करने मे असफल रहते हैं कि ये ही वे लोग हैं, जिन्होने, संभवतः पहली बार, स्वप्नदर्शियो और उनके स्वप्नों ने अपना क्या स्वरूप बना लिया है के बीच की कड़ी जोडते हैं, एक वार्तालाप शुरू करते हैं, और यह वार्तालाप ऐसा होता है जैसा समान प्रौढता के वयस्कों के बीच होना चाहिये। कोई भी व्यक्ति जो, 'दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट' जैसी पुस्तक पढ़ता है, और इस पर केवल आधे मन से ही विचार करता है, कोई भी व्यक्ति जो यह स्वीकार कर लेता है कि सिन्यावस्की और डेनियल एक बलात् श्रम शिविर मे सड रहे हैं, वह कालांतर मे सच्चाई को देखने मे असफल रहने की दुविधा और इस घटना को रोकने का प्रयास करने में असफल रहने की लज्जा का सामना करने का जोखिम उठाता है।

आन्द्रेय सिन्यावस्की और यूली डेनियल

लेखक माइकेल ओकूतूरियर

आन्द्रेय सिन्यावस्की से मेरी पहली बार भेंट १२ वर्ष पूर्व हुई। क्लाद फ्रीओक और मैं हाल ही मे मास्को विश्वविद्यालय मे भरती हुए थे। किसी पूंजीवाद देश के छात्रवृत्ति पाने वाले हम पहले विद्यार्थी थे। हमे वहां नम्रता, मित्रता और जिज्ञासा मिली, लेकिन व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थी और अध्यापक बडी सतर्कता से ही हमसे सम्पर्क करते थे। हमने जल्दी ही यह समझ लिया कि कुछ विषयो, साहित्यिक तथा राजनीतिक, पर बातचीत न करना ही अच्छा है। उदाहरण के लिये, दोस्तोएवस्की और ऐसेनिन का उल्लेख, सामान्य रूप से नही किया जा सकता था, जबकि बाबेल, पिलन्याक, मैंडेलशतम और यहां तक कि पास्तरनेक और अख़मातोवा के बारे मे तो चर्चा ही नही की जा सकती थी। जहा तक सम-सामयिक कला और साहित्य के पश्चिमी व्याख्याताओ का सम्बन्ध है, इसे विदेशी भाषा के विशेषज्ञों तक को, कुछ कम्युनिस्ट लेखकों और कलाकारो के बारे मे ही चर्चा करने की अनुमति थी।

उन दिनो आन्द्रेय सिन्यावस्की विश्व साहित्य की गोर्की संस्था मे प्रतीकवादियों के बारे में कक्षाएं ले रहे थे। निरन्तर सिगरेट पीते हुए, वे अलैक्जेन्डर ब्लोक के बारे मे इतनी सहृदयता और बुद्धिमत्ता से भाषण करते थे, कि उन्होंने अपनी कक्षा के छोटे से

कमरे मे स्तब्ध रूप से ध्यान केन्द्रित करने का वातावरण बना लिया था, जो उन विशाल कक्षाओं के ऊबा देने वाले वातावरण से एकदम भिन्न था, जिनका अब तक हमे अनुभव प्राप्त हुआ था। मैं रूसी कविता और क्रान्ति' पर एक शोध प्रबन्ध लिख रहा था। मैंने जब इस विषय का उल्लेख उस पहले प्रोफेसर के समक्ष किया, जिसके पास मुझे भेजा गया था उसने मुझे तुरन्त यह सुझाव दिया कि मैं इस विषय के शीर्षक को बदल कर 'क्राति और रूसी कविता' कर दू तथा मुझे जोर देते हुए यह भी सलाह दी कि मैं केवल कुछ "सुरक्षित" लेखको तक ही अपने शोध कार्य को सीमित रखू। प्रोफेसर महोदय ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा कि अन्य कवियो की रचनाए गलतियो से दूषित है और उनमे खतरनाक विरोधाभास भरे पडे है। सिन्यावस्की ने मुझे ऐसी किसी सतर्कता का सुझाव नही दिया। विषय मे उनकी दिलचस्पी उत्पन्न हुई। वे पहले ही इस विषय पर एक छोटा निबन्ध लिख चुके थे। इस निबन्ध को उन्होनें बाद मे विस्तृत किया और यह क्राति के बाद के आरम्भिक वर्षों की रूसी कविता पर एक अच्छा और प्रमाणिक ग्रन्थ है। हमारी पहली मुलाकात उनसे उस समय हुई, जबकि हम विश्वविद्यालय के एक बरामदे से गुजर रहे थे। हमारे शोध प्रबन्ध के विषय की जानकारी होने के कारण वे रुके और हमे अपने अनुसधान कार्य मे सहायता देने का आश्वासन दिया और हमे १९१७-१८ के कुछ दुर्लभ लेखो को देने का आश्वासन दिया, जो उनके पुस्तकालय मे थे। वे विश्वविद्यालय और लेनिन पुस्तकालय के बहुत पास के एक पुराने मौहल्ले अरबात मे रहते थे और हम जल्दी ही उनके घर अक्सर आने जाने लगे, पहले विद्यार्थियो के रूप मे और फिर मित्रो के रूप मे।

यद्यपि वह इमारत जिसके एक सामूहिक फ्लैट मे उन्हे एक कमरा मिला हुआ था, नई थी, लेकिन इसकी हालत पर्याप्त खस्ता हो चुकी थी। यह मकान एक ऐसे चौक के अन्त मे था, जिससे मास्को से परिचित प्रत्येक व्यक्ति अच्छी तरह परिचित है, जिसमे बाडे छप्परो, ईंटो, रेत और कोयले के ढेरो का जगल सा था और जिसकी कुछ बैंचो पर दिन के समय बाबुशका शाल ओढे कुछ वृद्ध स्त्रिया बैठी गप्पें मारती थी और जहा रात के समय टोपी धारी युवक, अकार्डियन वादक के चारो ओर जमा हो जाते थे। सिन्यावस्की का कमरा हवादार था, अपेक्षाकृत बडा था और इसका फरनीचर सादा था। वे इसी कमरे मे रहते थे और अपने मित्रो का स्वागत सत्कार भी इसी कमरे मे करते थे। आगे चलकर हमे आन्द्रेय के अध्ययन कक्ष मे आने की भी अनुमति मिली, यह कमरा इसी इमारत के तहखाने मे था। एक छोटी सी खिड़की से थोडा सा प्रकाश इसमे आता था और खिड़की चौक मे खुलती थी। इस कमरे मे एक बड़ी मेज थी, जिसपर पुस्तकें और कागज फैले रहते थे, एक दीवान और कुछ कुर्सिया रखी थी। उत्तर रूस की यात्रा के बाद उन्होंने इस कमरे का इस्तेमाल यात्रा के दौरान लिये गये चित्रो के फोटो तैयार करने के लिये एक डार्क-रूम के रूप में शुरु किया। ये चित्र उत्तर रूस के गांवो, इनकें निवासियों, इनके मकानो और

पोशाकों के थे।

यहां भी उन्होने धार्मिक चित्रो, पुरानी पाण्डुलिपियो और कृष्यक कला कृतियों का संग्रह किया और उन्हे अपने साथ लाये। आन्द्रेय अक्सर दिन छिपने के बाद अपने इस "तहखाने" मे काम करते थे। तो जब हम उधर से गुजरते और इसकी खिड़की मे रोशनी देखते, तो हम उनसे मिलने चले जाते थे। कभी-कभी हम देखते कि अन्य विद्यार्थी और उनके सहयोगी वहा से पहले से ही मौजूद हैं और विचार विनिमय जारी है, जो आधी रात के बहुत बाद तक जारी रहेगा।

सिन्यावस्की की उम्र उस समय ३० वर्ष से कम ही थी और उन्होने उस समय तक वह दाढी नही रखी थी, जो मुकदमे सम्बन्धी सब फोटोग्राफों में दिखाई पडती है। उनकी हलके सफेद रंग की त्वचा उनके गालो की उठी हुई हड्डियां, बड़ी नाक और अखरोट के रंग के बालो ने,—जिन्हे वे अधिकांश रूसियो की तरह काफी लम्बा रखते थे—और अपने हाथ से निरन्तर अपने माथे से पीछे हटाते रहते थे—उनके व्यक्तित्व को सामान्य और अत्यधिक रूसी बना दिया था। लेकिन जो बात एकदम सामान्य नही थी, और जिसे प्रत्येक व्यक्ति तुरन्त अनुभव करता था, वह उनकी सहृदयतापूर्ण और कुछ सीमा तक शरमालू घनिष्ठता की अभिव्यक्ति थी, जो बातचीत के समय उनकी आख के पर्याप्त बन्द होने और उनकी मुस्कुराहट से अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली हो उठती थी और जिससे एक ऐसे मस्तिष्क का पता चलता था जो आकर्षक और प्रज्ञा सम्पन्न होने के साथ-साथ सहृदय और उदार भी था।

जैसाकि स्वाभाविक है, १२ वर्ष बाद मै उन शब्दो का पूरी तरह स्मरण नही कर सकता, जिनका हम प्रयोग करते थे, लेकिन मुझे अपने वार्तालापो के विषयों और स्वर का पूरी तरह स्मरण है। हम १९२० के बाद के वर्षों की रूस की कविता, ऐसेनिन, पास्तरनेक और मायाकोवस्की की चर्चा करते थे। आन्द्रेय सिन्यावस्की मायाकोवस्की की कविता मे भविष्यवादी गुण और गीतात्मकता की उग्रता को पसन्द करते थे और बडे उत्साह से इसके बारे मे तर्क करते थे। हम फ्रांसीसी चित्रकारी और अमरीकी साहित्य और सेलीन, वह अन्तिम फ्रासीसी उपन्यास, जिसकी रचनाओ का स्तालिन द्वारा पाबन्दी लगाये जाने से पहले रूसी भाषा मे अनुवाद हुआ, के बारे मे चर्चा करते थे। लेकिन साहित्य से भी अधिक, जीवन मे सिन्यावस्की की दिलचस्पी थी। उन्हे किसानो के हास्य-विनोद की कहानियो, कैदियों के रूमानी गीतो, हास्यपूर्ण, विलक्षण अथवा अद्भुत किस्सों मे गहरी रुचि थी। यद्यपि वे बुद्धिवादी थे, लेकिन उनके मन मे मनुष्यों के प्रति गहरी जिज्ञासा थी और उन मनुष्यों के प्रति विशेष रूप से यह भाव मौजूद था, जो सीधे सादे त्रसित अथवा झक्की होते हैं। मुझे याद है कि वे किस प्रकार आनन्दपूर्ण आश्चर्य के स्वर मे एक चोर से हुए अपने लम्बे वार्तालाप को दोहराते थे, जिसने उनके पुस्तकालय मे चोरी की थी और जो अर्द्ध रात्रि को उनके पास

यह प्रस्ताव करने आया कि वे अपनी पुस्तकें उससे खरीद लें।

सिन्यावस्की के लिये, पश्चिम के लोग मानवता की कुछ भिन्न 'स्पीशज' (जाति) का प्रतिनिधित्व करते थे। हमारी जीवन प्रणाली, राजनीति और अर्थशास्त्र के सदर्भ मे (जिसके बारे मे हमसे अक्सर प्रश्न किये जाते थे और जिनके हम आदी बन चुके थे), उनकी पश्चिम के लोगो के आध्यात्मिक जीवन, आधुनिक विकास के प्रति उनके दृष्टिकोण और 'अस्तित्व के प्रति उनके सामान्य दृष्टिकोण मे अधिक दिलचस्पी थी। विचार के लिये उनका एक प्रिय विषय, रूस और पश्चिम की भिन्नता थी। हमारी पहली मुलाकात के दो वर्ष बाद वे मुझे पेरेसलावत-जालेस्क ले गये। यह एक प्राचीन नगर है, इसमे प्राचीन गिरजाघरो की भरमार है यह स्थान काफी बडा हो चुका है, लेकिन सचार साधनो की कमी के कारण यह अभी भी सुदूर बना हुआ है। अपने विशाल पत्थरो की सडको, कच्चे, घास से भरे पैदल रास्तो, अपने बाज़ारो और अपने किसानो की घोडा-गाडियो सहित, यह नगर प्रान्तीय रूस के एक धूल धूसरित कोने के सब आकर्षणो से सम्पन्न था।

सिन्यावस्की ने इस रूस के प्रति मेरी प्रतिक्रियाओ को सवेदनशील जिज्ञासा से देखा, जो रूस उस रूस से अत्यधिक भिन्न था, जिसे अक्सर विदेशियों को दिखाया जाता है। मैं समझता हूं कि वे मुझे यह बताना चाहते थे कि यह रूस उन्हे कितना प्रिय है और यह भी चाहते थे कि मैं अपनी पश्चिमी नज़र से इसे देखू। वे हमारे आराम, सभ्यता और स्वतन्त्रता के मानकों से अपने देश का मूल्याकन करने की क्षमता रखते थे—और इन बातो मे वे नि.सदेह पश्चिम की श्रेष्ठता को स्वीकार करते थे—लेकिन रूस की जिन बातो से वे प्यार करते थे, उन्हे इन पैमानो से नही मापा जा सकता था और वे यह समझते थे कि उनके देश की कमिया भी उनके देश की नैतिक और आध्यात्मिक श्रेष्ठता की परिचायक हैं।

इस बात का राजनीति से कोई सम्बन्ध नही था। हम राजनीति पर चर्चा नहीं करते थे। सन् १९५४ मे सोवियत सघ मे ऐसा करने का अर्थ था घिसी-पिटी शब्दावली को दोह-राना, अथवा खतरनाक और निरंथक कल्पनाशीलता मे उलझना। हम सिन्यावस्की के इस बात के लिये आभारी थे कि वे हमारे विचार के विषयो के सम्बन्ध मे नारो अथवा सिद्धातों की शब्दावली मे बात नही करते थे और वे इन विषयो पर स्वतंत्र निर्णय की क्षमता रखते थे। पर इसके बावजूद वे सोवियत विचारधारा द्वारा निर्मित व्यक्ति थे, जिसके लिये समाज-वादी शासन और रूस समरूप थे, जो रूस और स्वयं उसकी नियति का अभिन्न अंग था। उनमे इस शासन की अच्छाइयो और इसकी असुविधाओं का मूल्यांकन करने की क्षमता अवश्य रही होगी। लेकिन मैं यह कल्पना नही कर सकता कि वे स्वयं को इससे असम्बद्ध कर सकते थे।

जब मैं सन् १९५५-५६ मे फिर रूस गया, तो वातावरण पर्याप्त बदल चुका था, रूसियो से सम्पर्क कही अधिक आसान हो गया था और आन्द्रेय से हमारा सम्बन्ध अब कोई अपवाद-

जनक बात नही रह गई थी। अपनी इस मास्को यात्रा के दौरान ही मै पहली बार यूली डेनियल मे मिला। मेरी यह मुलाकात हमारे एक पारस्परिक मित्र के घर पर हुई और उस समय मुझे इस बात की कोई जानकारी नही थी कि वे सिन्यावस्की को जानते है। वे उन दिनो जारशाही के जमाने के एक मकान मे, अपनी पत्नी लारा और अपने छोटे पुत्र के साथ रह रहे थे। इस मकान को सामूहिक फ्लैटो मे विभाजित कर दिया गया था। इसके परिणाम स्वरूप कुछ कमरो की शक्ल बडी बेढंगी हो गई थी। डेनियल का कमरा एक गुम्बद का हिस्सा था और यह एक ऐसे वृत्ताकार रास्ते जैसा दिखाई पड़ता था, जो स्वयं अपने चारो ओर चक्कर लगाता है। यूली और लारा दोनो ही अध्यापक थे और मुझे यह भी बताया गया था कि यूली डेनियल लिखते भी थे। वे अपनी रचनाओ का सस्वर पाठ करना अथवा अपने प्रिय लेखको, बावेल, पास्तरनेक, वाग्नितस्की की रचनाओ को पढ कर सुनाना पसन्द करते थे। उनका स्वर सशक्त था और उनके पढने मे बडा उतार-चढ़ाव था। हमारा सम्बन्ध बहुत जल्दी ही मित्रता और विश्वास का बन गया।

हम मुख्यत. जिन विषयो की चर्चा करते, जिन्हे डेनियल ने आगे चल कर अपनी कहानियो "दिस इज मास्को स्पीकिंग" और "अटोनमेट" मे विकसित किया। सिन्यावस्की की तरह ही वे उस पीढी के थे, जिसका लालन पालन स्तालिन की व्यक्ति पूजा के दौर में हुआ था और जिस पीढी ने उसे कम्युनिस्ट आदर्श के प्रतीक के रूप मे देखा था। जब ख्रुश्चेव ने स्तालिन के अपराधों का भण्डा फोड किया, तो इस पीढी के लोगों ने अपने व्यक्तिगत दायित्व को समझा। समाजवाद का जो चित्र उनके मन पर अंकित था, वह वही था जो उन्होने स्तालिन के जीवनकाल मे देखा था। अतः अब, जैसाकि स्वाभाविक था, यह जानना चाहते थे कि क्या समाजवाद और आतंक के बीच सम्पर्क मूलभूत है, अथवा ऐतिहासिक आवश्यकता है अथवा शुद्ध सयोगवश है। वे समाजवादी शासन के अन्तिम क्रमविकास के प्रति चिंतित थे और यह जानना चाहते थे कि क्या ऐसे सरक्षण है, जो स्तालिनवाद की पुनरावृत्ति को असंभव बना सकते है। ये ऐसे प्रश्न थे, जिनका उस समय तक निश्चित उत्तर देने की जोखिम उठाने के लिये कोई भी तैयार नही था। आशावादी तक सतर्कता बरतते थे, निराशावादी तक इस बात पर सहमत थे कि कुछ बेहतर परिवर्तन हुआ है और इस बात पर प्रसन्न थे कि वे कुछ अधिक स्वतंत्रता से बातचीत कर सकते हैं और सोच सकते है।

इन वार्तालापो के दौरान ही मुझे पता चला कि आन्द्रेय सिन्यावस्की के पिता को १९५१ मे गिरफ्तार कर लिया गया था और स्तालिन की मृत्यु के बाद ही उन्हे अपराध मुक्त कर पुनः प्रतिष्ठित किया गया था। मुझे उनसे एक बार मिलने का अवसर मिला। वे मौन रहने वाले और बुद्धिमान दिखाई पड़ने वाले व्यक्ति थे। इस घटना से सिन्यावस्की को जो पीडा पहुची, उसके अलावा अन्य सब सोवियत बुद्धिवादियो की तरह वे विचार और

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अभाव से पीडित थे, जो उस युग की अपनी विष्टिता थी, लेकिन इसके बावजूद मुझे उनके इन शब्दो का स्मरण है 'जब स्तालिन जिन्दा थे, तब विचार करने की कीमत चुकानी पडती थी। उस समय यह खतरनाक था, आप भयभीत रहते थे, लेकिन अब यह बात आसान होने जा रही है।" यह एक विचार तरग थी, लेकिन मुझे निश्चय है कि उनका विश्वास था कि इसमें सत्य का अकुर है, क्योकि उनकी यह मान्यता थी कि मन और मस्तिष्क का उपयोग, यदि यह सच्चे अर्थों मे स्वतन्त्र और मौलिक है, यदि इसे निरर्थक ऐयाशी नही बन जाना है, तो इसमे कुछ न कुछ जोखिम अवश्य रहेगी (मैं समझता हू कि यह मन-मस्तिक की उपयोगिता और कर्तव्यो की विशिष्ट रूसी धार्मिक और कट्टरपंथी संकल्पना है)। उनका यह दृष्टिकोण अशतः रूसी बुद्धिवादियो को प्रभावित करने वाले, पश्चिम के और उदारतावादी विचारो के प्रति आशिक प्रतिक्रिया थी। सिन्यावस्की को पश्चिम से प्रेम था और वे स्वतन्त्रता को प्यार करते थे। लेकिन वे इनके लिये उसका बलिदान देने को तैयार नही थे, जिसे वे रूस की नियति की गरिमा और नाटकीयता समझते थे। वे मुझ से प्राय. यह कहा करते : "तुम यह सोचते हो कि तुम्हारी स्वतन्त्रता, तुम्हारी सस्कृति तुम्हारी ससदें हमारे लिये आदर्श बन सकती है ? हमारे लिये ? हमारे लिये, जिन्होने क्राति की, जिनकी साम्यवाद मे आस्था है, जिन्होंने अपना रक्त इसलिये बहाया कि ससार पर सदा-सर्वदा न्याय और स्वतन्त्रता का शासन रहे।"

मैं यह बात ज़ोर दे कर कहना चाहता हूं कि उन्हे स्तालिनवाद का मोह नही सता रहा था, बल्कि बात यह थी कि गैर-स्तालिनीकरण सम्बन्धी उनकी भावनाए दो स्तरो पर सचालित थी : व्यावहारिक, राजनीति और तार्किक स्तर पर वे उस परिवर्तन से प्रसन्न थे, जो उन्हे साहित्य सम्बन्धी अपनी अभिरुचियो और अपने विचारो को निरतर विस्तृत होती स्वतंत्रता मे अभिव्यक्त करने देंगे। लेकिन, इसके साथ ही, गैर-स्तालिनीकरण ने उन्हे एक सच्चे धार्मिक सकट मे डाल दिया था। इस बात से आश्वस्त होने के लिये केवल दि ट्रायल बिगिन्स और उनका निबन्ध आन सोशलिस्ट रियलिज्म पढ़ने भर की आवश्यकता है। स्तालिन के मर जाने और उसकी पूजा की भर्त्सना का अर्थ था कि साम्यवाद के रहस्यात्मक और धार्मिक आधारो को ध्वस्त कर दिया गया है। सिन्यावस्की को आतक पर आधारित एक रहस्यात्मकता के निधन पर खेद नही था। लेकिन उन्हे एक धर्म, एक आस्था की आवश्यकता कही अधिक गहराई से अनुभव हो रही थी। इस आवश्यकता को, इस रहस्यमयता मे निष्ठापूर्ण अभिव्यक्ति मिली थी, तर्कसम्मत, धर्म निरपेक्ष, और उदार ख्रुश्चेववादी साम्यवाद इस आवश्यकता को पूरा नही करता था।

आन्द्रेय की रचनाए, इस द्वैत को प्रकट करती हैं। समालोचक सिन्यावस्की थे जो कड़े प्रतिबन्धो मे "ढील" और बहुत अधिक साहस और लगन के कारण, अब पास्तरनेक, पिकासो और अख़मातोवा की चर्चा कर सकते थे, जो अब सिद्धातकारो के विरुद्ध युवक कवियो और गीतात्मक कविता का पृष्ठ पोषण कर सकते थे, स्तालिनवाद के दुष्परिणामो

के विरुद्ध नोवो मीर द्वारा छेड़े गये अभियान मे हिस्सा ले सकते थे। लेकिन टेरट्ज़ भी था, उपन्यासकार, दार्शनिक और निबन्धकार टेरट्ज़ जो, दि ट्रायल बिगिन्स में उस संसार की कहानियो मे इस विषय को विकसित करता है कि अतिशय काल्पनिक की कला ही आधुनिक मनुष्य की धार्मिक उलझनो का विकल्प बन सकती है। दि मेकपीस एक्सेपेरिमेंट मे टेरट्ज़ कम्युनिस्ट स्वप्न के प्रति अपनी बुनियादी, तर्कहीन निष्ठा की स्वीकारोक्ति करता है, वह इसके बारे मे अपने गुप्त संदेहो और आतंक की स्वीकारोक्ति करता है जो उसे इन सदेहों से भरते है। यदि एब्राम टेरट्ज़ ने सोवियत सेंसर अधिकारियो के समक्ष अपनी पुस्तको को पेश करने का प्रयास किये बिना ही, इन्हें विदेशो मे प्रकाशित करा दिया, तो इसका कारण यह था कि वह अपनी भावना के गुप्त विरोधाभासों को, जो पूर्ण सत्ता की पिपासा से पीडित थी, तुरन्त प्रकाश मे लाना चाहता था। इस प्यास के कारण ही, उसे अपनी कल्पना को पूर्ण रूप से उन्मुक्त करने की आवश्यकता हुई। यदि उसने एक छद्म नाम का उपयोग किया तो यह इस कारण से इतना अधिक नही था कि वह इसके पीछे छिपना चाहता था, बल्कि इस-लिए कि स्वयं अपने स्व के अनुसधान में वह अपनी खोज को विसगति (एबसर्ड) के प्रयोग द्वारा अन्तिम सीमा तक ले जाना चाहता था।

जिन न्यायाधीशो ने सिन्यावस्की और डेनियल को सजा सुनाई, उन्होंने कभी भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न न पूछने की सतर्कता दिखाई · ऐसा क्यों और कैसे हुआ कि उन दो व्यक्तियो ने, जिनके विचारो का निर्माण कम्युनिस्ट शासन के द्वारा हुआ। ऐसी पुस्तकें लिखी, जिन्हे स्वयं उनके देश मे प्रकाशित नही किया जा सकता था। इसके प्रत्यक्ष और सीधे उत्तर का अर्थ होगा उनकी रिहाई, क्योकि उनकी बुद्धिमत्ता, उनकी प्रतिभा और उनके साहस के अलावा, सिन्यावस्की और डेनियल अपने शेष देशवासियों की तरह ही सोवियत व्यक्ति हैं। उनका एक मात्र अपराध यह था कि उन्होने उस क्राति को, जो स्तालिन के मृत्यु के बाद हुई, अपने गहन व्यक्तिगत स्तर पर ही जीना चाहा। उन घटनाक्रमों से निर्मित होने के कारण, जिन्होने आज के रूस का निर्माण किया है, वे सभवत. हमारे समक्ष आज ही रूस के उस चित्र की पूर्व-कल्पना करने का अवसर प्रस्तुत करते है, जो रूस का कल का चित्र होगा।

अपनी गिरफ्तारी से पूर्व आन्द्रेय सिन्यावस्की

लेखक—अलफ्रेवा ओकूतूरियर

मुझे सिन्यावस्की दम्पत्ति से मिले ५ वर्ष हो चुके थे और मैं उनसे मिलने के लिये ही मुख्यतः मास्को गई थी। आन्द्रेय के एक पहले सवाल से मुझे आनन्द मिला : "तुम्हारे बच्चे मृत्यु के बारे मे क्या सोचते हैं?" उस समय मेरे बच्चों की उम्र चार वर्ष थी। मेरे उत्तर की

प्रतीक्षा करते हुए, उनके चेहरे का भाव ध्यानावस्थित व्यक्ति जैसा, मित्रतापूर्ण और गह
दिलचस्पी से भरा था। लेकिन सदा की तरह उनकी एक आख कुछ दबी होने के कारण य
विचित्र आभास देती थी कि अशत. उनका मन मस्तिष्क वहा मौजूद नही है। मुझे लगा कि
यहा एक ऐसा व्यक्ति मौजूद है, जो सत्य के अन्वेषण मे लगा है, जो यह सोचता है कि ए
छोटे बच्चे की जीवन के प्रति प्रतिक्रिया के माध्यम से इस सत्य को जाना जा सकता है
मुझे लगा कि यहा एक यथार्थ का एक विद्यार्थी और एक ऐसा व्यक्ति मौजूद है, जिसक
जीवन संकटपूर्ण और सुखी दोनो है।

सिन्यावस्की दम्पति के कुछ अत्यधिक घनिष्ट मित्र थे और जिनकी मित्रता क
सबसे मजबूत कडी यथार्थ मे उनकी गहरी दिलचस्पी थी। इसी मित्र मण्डली मे, जिस
मुझे मानव सम्बन्धो की वह घनिष्ठता और सहृदयता अनुभव होती थी, जो रूस मे अन्य
मुश्किल से ही उपलब्ध होती है, मैं फिर आ कर शामिल हो गई। इन मित्रो मे अधिका
सिन्यावस्की दम्पत्ति के सहयोगी थे। ऐसे ही एक मित्र थे मेनशुतिन, गभीर, सफेद बाल
सफेद-दाढी और मुख पर छाये अनमने भाव और खोये खोये से रहने वाले कृषका
मेनशुतिन। आन्द्रेय सिन्यावस्की ने इनके सहयोग से ही क्राति के बाद के आरम्भिक वर्ष
की कविता शीर्षक पुस्तक लिखी थी। ऐसे ही थे गोलोमश्तोक—युवक, गभीर और पैनी
दृष्टि, साफ सुथरी काली दाढी और उदासीनता से भरी लेकिन बेधक दृष्टि वाले गोलमश्तोक
वे कला इतिहासकार थे और माशा सिन्यावस्की के सहयोगी रह चुके थे।

माशा से फिर मिलना अत्यधिक आनन्द का विषय था। उनका अपना स्वतन्त्र
व्यक्तित्व हैं, वे अपने मित्रो के प्रति व्यग्रता और सहृदयता दोनो प्रकट करती है। यद्यपि
अन्य व्यक्तियो के सम्बन्ध मे यदा-कदा उनके निर्णय भयकर हो सकते हैं (अक्सर उनके
दयावान पति इन निर्णयो का स्पष्टीकरण देते)। सुन्दर और सदा आकर्षक वस्त्र पहनने
वाली माशा सिन्यावस्की हाजिर जवाबी मे बडी तेज है, उनमे ऐसा साहस है जो आसानी
से किसी भी परिणाम की चिन्ता न करने वाली वीरता मे आसानी से बदल सकता है
(वस्तुतः उसकी विवेकहीन वीरता के कार्य, उनकी मित्र मण्डली मे किस्से-कहानियो की
बातो जैसे माने जाते हैं, यद्यपि उनके पति बडी मृदुता से इन बातो की आलोचना करते हैं)
और वे यह अनुभव होने पर कि उनके अधिकारो को छीना जा रहा है, बहुत दृढता से
विरोध करने को सदा तत्पर रहती हैं।

उनके कार्यों मे, सलाव जाति की महानता मे उग्र आस्था रखने वाले व्यक्तियो की
दाढिया छाटना भी शामिल है, जो सोवियत संघ मे काफी बड़ी सख्या मे उत्पन्न हुए हैं
मानो यह स्मरण दिलाने के लिये कि तकनीकी उन्नति के इस युग मे "आत्मा की ओर कुछ
अधिक ध्यान देना आवश्यक है।" अपनी इस भावना से गहराई से प्रभावित होने के कारण,
एक बार आन्द्रेय सिन्यावस्की ने मुझसे कहा कि यदि कभी मेरा पुत्र (जो उन गर्मियो मे
केवल ७ महीने का था) इंजीनियर बनने का निश्चय करेगा, तो मैं उसे त्याग दूगा और उसे

कोसूंगा ठीक उसी तरह, जिस तरह पुराने जमाने मे रूस के लोग, अपने उन बच्चों को कोसते थे जो अनुपयुक्त विवाह कर लेते थे।

अपने बच्चे के जन्म से पूर्व, माशा कला का इतिहास पढाती थी। वे विद्यार्थियो को अपने विषय के बारे मे अधिक मे अधिक जानकारी देने का भरसक प्रयास करती थी। मुझे याद है कि अक्तूबर की एक शाम को, जब जमीन बर्फ से सफेद बनी हुई थी, वे कक्षा से घर लौटी तो अत्यधिक थकी और दुखी थी। उन्होने हमे अपनी निरन्तर कायम निराशा के बारे मे बताया : इन विद्यार्थियो को पिकासो के बारे मे अथवा सामान्य रूप से कला के बारे मे आरम्भिक बातें समझा पाना ही असभव है......वे तर्क देती रही, क्रोध करती रहीं और फिर अचानक निष्कर्ष निकालते हुए बोली : "तो मरने दो इन्हे इस अज्ञान मे ही—क्यों क्या तुम इस बात से सहमत नही हो !"

कोई भी बात एक ऐसे मस्तिष्क की जीवन्तता को धूमिल नही बना सकती थी, जिसमे प्रत्येक विषय को हलकेपन मे, ऊपर से अस्थिर और क्षणिक भाव से भरने की क्षमता मौजूद थी और इन्ही संदर्भो मे, इसी शब्दावली में और इसी सहृदयता और विनोदपूर्वक, मनुष्य के यथार्थ के सम्बन्धो पर विचार किया जाता था। प्रत्येक तर्क को किसी न किसी चुटकले या किस्से से जीवन्त बना दिया जाता था और इन किस्सों के बारे मे सिन्यावस्की कहा करते थे, "यह हमारा मौखिक साहित्य है" और यह भी कहते कि वे केवल यथार्थ को ही, वास्तविकता के भाव को ही अभिव्यक्त करने के कारण "लिखित" पुस्तको को दिलचस्प बना देते हैं। ये कुछ पत्रिकाओ, जैसे नोवी मीर को उसकी जीवन्तता प्रदान करते हैं और इस पत्रिका के कुछ लेखको की भूमिका को, अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं। नोवी मीर के सम्पादक त्वार्दोवस्की के प्रति सिन्यावस्की के गहरे स्नेहभाव मे सदा यह भय बना रहता था कि कही उन्हे सम्पादक पद से न हटा दिया जाये। उन्होने मुझे बताया कि माशा और उनके मन मे नोवी मीर के बारे मे ऐसा अंधविश्वास से भरा भय बसा हुआ है कि इसे किसी भी क्षण बन्द कर दिया जायेगा और इस कारण से उन्होने कभी भी इस पत्रिका का पूरे एक वर्ष तक चन्दा जमा नहीं किया।

इस पत्रिका मे जिन लेखको की रचनाएं प्रकाशित होती थी उन पर कभी समाप्त न होने वाली बहस जारी रहती थी। सिन्यावस्की दम्पत्ति सहित मैं विचारो के इस उद्रेक के केन्द्र बिन्दु पर थी, जो हमारे पास तक पहुचता था यद्यपि काफी सयत और मद्धिम होने के बाद, समाचारपत्रो और पत्रिकाओ के माध्यम से। प्रत्येक व्यक्ति स्योमिन की कहानी सेवेन अण्डर वन रूफ (यह हाल मे नोवी मीर मे प्रकाशित हुई थी और इसने एक ऐसा विवाद खड़ा किया है, जो काफी समय तक चलेगा) की ही चर्चा करता था और इससे भी अधिक उस शब्दजाल की जिसे इस कहानी ने जन्म दिया था।

एक प्रिय खेल "सकारात्मक नायक" की खोज का था, जिसके अभाव की कट्टरपंथी समालोचक निन्दा करते थे और जिन्हे खोज निकालने के लिये उदारतावादी लेखक निरर्थक

प्रयास करते थे। उस समय भी सोल्भनित्सीन की काफी चर्चा होती थी, जिनका उपन्यास "वन डे इन दि लाइफ आफ आइवन डेनिसोविच" सन् १९६२ मे प्रकाशित हुआ था। लेकिन जिस पर अभी भी तीखी असहमति थी। यह ज्ञात था अथवा किसी न किसी प्रकार कहा जाता था कि उनका एक नया उपन्यास सम्पादकीय कार्यालय मे पहुचते ही हवा मे गायब हो गया। सोल्भनित्सीन की रचनाओ की पाण्डुलिपिया, बडी व्यग्रता से कोटो के भीतर छिपा कर इधर उधर पहुचाई जाती थी।

इसके अलावा आशावादिता के कारण थे। पास्तरनेक का हाल ही मे प्रकाशन हुआ था[३]। स्वेताएवा के कविता सग्रह की व्यग्रता से प्रतीक्षा की जा रही थी और इसी प्रकार मैंडेलश-तम के कविता सग्रह की भी; काफ्का का एक अनुवाद बहुत जल्दी ही प्रकाशित होने वाला था—सिन्यावस्की ने इसकी समालोचना करने की तैयारी पहले ही शुरू कर दी थी।

कला सिन्यावस्की के जीवन का अभिन्न अग थी। उनके कमरे की एक दीवार उनके मित्र पेत्रोव के हल्के, गहरे रगो से चित्रित और प्रसन्नतानायक चित्रो से भरी हुई थी। पेत्रोव एक युवक और सीधे सादे कलाकार थे और उनकी रचनाओ मे हास्य का प्रबल पुट रहता[४] था। पेत्रोव की आन्द्रेय और माशा के प्रति गहरी निष्ठा थी। सिन्यावस्की दम्पत्ति, अपनी गर्मी की छुट्टियो के कुछ दिन पेत्रोव के देहात स्थित मकान पर बिताते थे और माशा तथा पेत्रोव मिल कर गहने भी तैयार करते थे, जिनके डिजाइन परम्परागत गहनो से लिये जाते थे। उनकी एक अगूठी को एक कारखाने ने बडे पैमाने पर उत्पादन के लिये स्वीकार कर लिया था।

एक दिन माशा ने मुझे ताबे की एक तख्ती दिखाई और बताया कि इस पर ससार भर के समस्त जानवरो को देखा जा सकता है—और वस्तुत वे सब वहा मौजूद भी थे—सीधी-सादी तीखी रेखाओ मे। उन्हे ताबे की यह तख्ती विशेष रूप से प्रिय थी और उस समय वे अत्यधिक क्रोधित हुई, जब इसके प्रदर्शन के बाद उन्हे अमूर्त कला का अनुयायी बता कर उनकी आलोचना की गई।

एक दीवार पर गहरे चमकदार प्राचीन धार्मिक चित्र लगे थे, जिनमे एक अत्यधिक सुन्दर १६ वी शताब्दी का पसकोव शैली का "सेंट जार्ज और ड्रैगन" चित्र था, जिसकी अनुकृति हाल ही मे, समीक्षा पत्रिका देकोरेतिवनोए इस्कोस्तवो[५] मे प्रकाशित हुई थी।

पुराने नक्काशीदार और चित्रित करचे, बिर्च वृक्ष की छाल के कटोरे और दूध

३—जैसा कि स्पष्ट है डाक्टर झिवागो नही—केवल उनका एक कविता सग्रह ही प्रकाशित हुआ था।

४—मुकदमे मे पेत्रोव की पेशी के लिये देखिए पृष्ठ २८७।

५—अलकरण कला।

रखने के जग तथा सीग की नक्काशीदार आकृतियो से कमरा भरा पड़ा था। सिन्यावस्की हमे ये वस्तुए उपहार मे देना पसन्द करते थे और हमारे लिये ये वस्तुएं इसलिये बहुत अधिक मूल्यवान थी, क्योकि न तो यही चीजे और न ही माशा के बनाये हुये गहने या कृषक कला-कृतियां, जो वे उत्तर रूस की यात्रा से अपने साथ लाये थे, मास्को में नही मिल सकती थी।

सिन्यावस्की के कमरे मे यह अनुभव होता था मानो आप रूस के हृदय पर मौजूद हो, क्योंकि यहा देश की समस्त परम्परागत विरासत मौजूद थी। और उस जीवन को आधार प्रदान कर रही थी, जो भविष्याभिमुख था—यह एक ऐसा भविष्य था, ऐसा हमें लगता था, जिसका निर्माण सिन्यावस्की और उनके मित्रो जैसे लोग कर रहे है।

यह फ्लैट आन्द्रेय के माता-पिता को मिला था। मैंने उनके फोटो देखे थे। इनके रूसी बुद्धिवादियो जैसे गभीर और भावप्रवण चेहरे थे। आन्द्रेय के पिता ने क्राति के लिये हथियार उठाये थे और उनकी माता ने एक नर्स के रूप मे काम किया था। आगे चल कर सिन्यावस्की आतक के शिकार हो गये। रात को दो बजे उनकी गिरफ्तारी के बाद उनके घर की तलाशी शुरू हुई, जो ४८ घन्टे तक चली। पुस्तकालय की ओर विशेष ध्यान दिया गया। एक पुलिसमैंन को ऐसेनिन के एक दुर्लभ संस्करण की कुछ प्रतिया उठाते हुये देख कर आन्द्रेय ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यो कर रहा है और उन्हे उत्तर मिला कि ऐसेनिन की कविता अश्लील हे। आन्द्रेय के लिये यह एक बहुत बड़ा समाचार था। उन्होने पुलिस मैंन को बताया कि इस सकलन मे कोई अश्लील बात नही है और यह सुझाव दिया कि वह स्वय इसके पन्ने उलट कर देख सकता है। इस सुझाव को स्वीकार नही किया गया। आन्द्रेय ने बडी विनम्रता से एक साहित्यिक विशेषज्ञ होने के बल पर पुलिसमैंन को आश्वासन देते हुए कहा कि ऐसेनिन की अश्लील कविताएं, उसके रचनाकाल की एक बाद की अवधि हैं। पुलिसमैंन ने प्रकाशन की तारीख देखी और सकलन के खण्डो को वापस आलमारी मे रख दिया। लेकिन जब थोडी देर बाद बेली की पुस्तको को जब्त किया जा रहा था और आन्द्रेय ने अपनी चिन्ता प्रकट की तो पुलिसमैंन ने उत्तर देते दए कहा: "क्यो ठीक तो है, वह श्वेत है[६]?"

सिन्यावस्की के मन मे ऐसी घटनाओ से विद्रोह का भाव नही जगा, वे समझते थे कि ये घटनाए किस प्रकार हो सकती हैं। लेकिन इसके बावजूद वे इससे चिंतित थे और तलाशी का एक दृश्य उन्हे अत्यधिक महत्वपूर्ण लगा। एक मित्र, जो किसी काम से मास्को पहुंचा था, तलाशी के दौरान उनके घर मिलने आ गया और इसके बाद पुलिस ने उसे बाहर नहीं जाने दिया। जब इस मित्र ने ड्यूटी पर तैनात पुलिसमैंन से उसे चले जाने देने का अनुरोध किया तो उसे बस यह कह दिया गया: 'क्या जब तुम यहा आये तब तुम्हे यह नही दिखाई पड़ रहा था कि यहा कुछ हो रहा है? तुम्हारे यहा से निकल चलने का वही

६—रूसी भाषा मे बेली का अर्थ श्वेत होता है।

क्षण था, कुछ देखने से पहले निकल जाने का मौका था।" इस घटना का सबक मिल जाने पर, जब सिन्यावस्की ने एक व्यक्ति को अपने घर की ओर आते हुये देखा तो उन्होंने हाथ के इशारे से उसे चले जाने को कहा। पुलिस ने ऐसा दिखाया मानो उन्होने कुछ देखा ही न हो।

ऐसी घटना के बावजूद आन्द्रेय का मानव स्वभाव मे विश्वास बना रहा। सभवत: यह स्वय उनके अपने चरित्र की उदारता थी, जो दूसरे लोगो को भी इसी भाव से भर देती थी; निश्चित है कि उनकी सहृदयता और सब की ओर पर्याप्त ध्यान देने का गुण पहले की तरह ही बना रहा। मुझे याद है कि उन्होने मुझे बताया था कि सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के ०वे अधिवेशन के बाद उन्हे स्तालिन की पुत्री, स्वेतलाना के प्र ति जो गोर्की सस्था मे काम करती थी, अपने सहयोगियो के व्यवहार मे परिवर्तन से कितना गहरा आघात पहुचा था। एक शाम को, जब वे इमारत से बाहर जा रहे थे उन्होने अचानक देखा कि वे उसके बराबर खडे हैं। उन्होने बडा कोट पहनने मे उसे मदद दी बस स्वेतल ना रोने लगी। सिन्यावस्की का यह व्यवहार पूरी तरह से स्वाभाविक और स्वय-स्फूर्त था—आन्द्रेय निरन्तर यह चिन्ता करते रहते थे कि कोई ठण्ड तो नही मान रहा है या भूखा तो नही है और चाहे वह बातचीत मे कितने भी क्यो न खोये हुए हो, यदि सडक ऊबड-खाबड हो तो वे अपने साथ चलने वाले व्यक्ति का हाथ पकड कर उसे सहारा दिये बिना न रहते--लेकिन स्वेतलाना के मामले मे यह कार्य एक सिद्धात पर जोर देने की ही बात थी।

एक समालोचक के रूप मे भी सिन्यावस्की ने कभी समझौता नही किया। उनका मस्तिष्क जिज्ञासु और प्रत्येक वस्तु की गहराई मे पैठने वाला होने के कारण वह अनिवार्यत: कला के कटकाकीर्ण मार्ग की ओर खीच आये और उन्होने पाया कि वे ऐसे विषयो से उलझे हुए हैं, जो बडे नाजुक हैं। उन अन्तिम गर्मियो मे, वे "पृथ्वी और आकाश" शीर्षक एक रचना को पूरा करने के लिये तेजी से काम कर रहे थे। यह प्राचीन कला-कृतियो और विशेष रूप से धार्मिक चित्रो मे व्यक्त रूसियों की जीवन दृष्टि के विश्लेषण के बारे मे थी। इस विषय के प्रति आकर्षित होकर वे इसमे खो गये। लेकिन उनके अनुसधानो ने इस पुस्तक को एक व्यक्तिगत स्वरूप दिया, जिसने इसके कभी भी प्रकाशित होने की सभावना को बहुत कम कर दिया। वे यह जानते थे, लेकिन उन्होने इसी रूप मे पाण्डुलिपि को प्रकाशन के लिये भेजने का निश्चय किया। उन्होने अनुभव किया कि उन्हे मौन न रह कर, स्वय को अपने आलोचको के प्रहार के लिये प्रस्तुत करना चाहिये।

उन्होंने इसी भावना से पास्तरनेक की कविता की भूमिका लिखी थी। इस सकलन की तैयारी मे सात वर्ष लगे और अततः इसका प्रकाशन 'कविता पुस्तकालय" ने जुलाई १९६५ मे किया, जिसके सम्पादको को हाल मे उपयुक्त सहयोगियो के चुनाव का प्रयास करने के लिये कष्टो का सामना करना पडा। खैर कुछ भी हो, भूमिका से पहले जो

सम्पादकीय टिप्पणी दी गई, उसका उद्देश्य पाठक को पास्तरनेक के प्रभाव से सुरक्षित बनाना था, जिसकी आन्द्रेय ने, भूमिका के ५० पृष्ठो मे, मुक्त कठ से प्रशंसा की थी। यह तथ्य कि सम्पादकों ने यह टिप्पणी देने की आवश्यकता अनुभव की, स्वयं अपने देश में सिन्यावस्की की प्रतिष्ठा के प्रति श्रद्धाजलि है। इन दोनो, सम्पादकीय टिप्पणी और भूमिका को साथ-साथ देने की बात से वह बड़े आनन्दित थे और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं सम्पादकीय टिप्पणी पढे बिना उनकी भूमिका न पढू।

पास्तरनेक के जीवन के अन्तिम वर्षो मे, सिन्यावस्की उनके बहुत समीप आ चुके थे। पास्तरनेक के प्रत्येक परोक्ष और जटिल सकेतो को तुरन्त समझने की क्षमता रखने के कारण, वे उन थोडे से गिने-चुने लोगो मे है जो पास्तरनेक के साहित्य पर बोल सकते हैं। सिन्यावस्की ने जीनेदा पास्तरनेक की यह कह कर प्रशसा की कि सभवत. वे ही एक ऐसी व्यक्ति है, जो अपने पति की कविता को सर्वोत्तम रूप से समझती है। पास्तरनेक के प्रति स्नेहभाव और सामान्य रूप से कविता के समझने की सवेदनशील अन्तर दृष्टि के कारण, सिन्यावस्की की गभीर भूमिका कवि की रचनाओ की गहनता को समझने का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

लम्बे समय से प्रतीक्षित यह कविता सग्रह हाथो हाथ बिक गया। आन्द्रेय इस बात से दुखी थे कि कुछ कविताओं को निकाल दिया गया था—यद्यपि उन्होने कभी भी यह आशा नही की थी कि "हैमलेट" जैसी कविताओ के प्रकाशन का समय आ गया है। लेकिन उन्होंने हार स्वीकार नही की। और वस्तुत. युनोस्त पत्रिका के अगस्त अक मे पास्तरनेक का एक विशेष रूप से नाटकीय चित्र और पास्तरनेक के बारे मे कोरनेय चुकोवस्की के लेख के साथ-साथ तीन कविताए, जिनमे "अगस्त", भी शामिल थी, प्रकाशित हुई, जिन्हे कविता संग्रह मे से निकाल दिया गया था। सिन्यावस्की और मैं उस समय पेरेदेलकिनो मे पास्तरनेक के पुत्र के साथ थे, जब युनोस्त का अगस्त अक आने की आशा की जा रही थी। इस अक मे इन कविताओ को प्रकाशित करने को बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा था और मैं यह देख पा रही थी कि वे यह देखने के लिये कितने अधिक व्यग्र थे कि अन्तिम क्षण मे तो इस सम्बन्ध मे कोई परिवर्तन नही कर दिया गया है। यह वस्तुतः युनोस्त का एक साहसपूर्ण अक था और अपने प्रकाशन के दिन ही इसकी सब प्रतिया बिक गई।

जिस दिन पास्तरनेक को दफनाया गया, उस दिन आन्द्रेय पेरेदेलकिनो मे ही थे और उन्होने मुझे इसका हृदयस्पर्शी वर्णन सुनाया। एक लारी कवि के मकान के सामने आ खडी हुई थी और ताबूत को इस पर लादने का आदेश स्पष्टत. दिया जा चुका था। लेकिन जैसे ही ताबूत को कंधा देने वाले लोग दरवाजे पर पहुचे। उन्होने आहिस्ता से दरवाजे पर खड़े कानून के प्रहरियो को एक ओर हटा दिया और कब्रिस्तान की ओर बढ चले। इस पूरे काम में कुछ क्षणो से अधिक समय नही लगा और पुलिस इतनी अधिक आश्चर्यचकित थी कि इसे रोकने की कोई भी कारवाई न कर सकी। इस दृश्य का विवरण

देते हुये, आन्द्रेय ने अनजाने ही कन्धे के उस धक्के को फिर प्रदर्शित किया, जिसके द्वारा मार्ग प्रशस्त हुआ था। कवि को अपनी अन्तिम श्रद्धाजली अर्पित करने के लिये जो लोग एकत्र हुए थे, उनमे यूली डेनियल भी थे। (देखिये पृष्ठ २४० के सामने दिया गया चित्र)।

इस यात्रा के दौरान मैंने सिन्यावस्की को बहुत थका हुआ पाया। वे बेहद काम कर रहे थे। और उनका स्वास्थ्य अच्छा नही था। लेकिन एसा लगता था कि उन्हे इस बात का निश्चय है कि अन्त मे सब कुछ सही हो जायेगा। उनका बच्चा ठीक से बढ रहा था और अप्रैल के महीने मे वे एक नई इमारत के फ्लैट मैं जाने वाले थे, जिसके उस समय तक बन कर तैयार हो जाने की आशा थी। वस्तुतः यह उनके लिगे बडा कष्टप्रद निर्णय था, क्योकि वे अपना सध्या का समय तहखाने के छोटे कमरे के अलावा अन्य कही बिताने की कल्पना मुश्किल से ही कर पाते थे। लेकिन नये फ्लैट मे जाना विवेकपूर्ण बात थी और उन्होने इमे काफी बलिदान देकर प्राप्त किया था। उन्हे इसके लिये कई दुर्लभ पुस्तके तक बेचनी पडी थी।

आन्द्रेय अपनी पुस्तक "पृथ्वी और आकाश" के लेखन मे अत्यधिक व्यस्त थे और कठोर परिश्रम कर रहे थे। लेकिन मैं इस बात से आश्वस्त थी कि उनकी थकान का वास्तविक कारण, सृजनात्मक लेखन मे स्वय को लगाने की अदम्य चाह थी और यह न कर पाने के कारण उन्हे बेहद निराशा थी। तर्कसगत तरीके से इसका स्पष्टीकरण न दे पाने के कारण, उन्होने मुझे बताया कि वे यह अनुभव करते हैं कि उनके पास बहुत कम समय शेष रह गया है, लेकिन उन्हे बस दो वर्ष, अधिक से अधिक तीन वर्ष के समय की ही आवश्यकता है। ऐसा लगता था कि वे कुछ और समय मिल जाने के लिये प्रार्थना कर रहे हो। मुझे निश्चय है कि इसका कारण अशत. उनकी थकान थी। लेकिन अंशत सृजन की आवश्यकता भी थी, जो उन्हे जीवित रखे हुये थी, क्योकि अभी तक यह आवश्यकता पूरी नही हुई थी। अत जिन विचारो को अभिव्यक्ति नही मिली थी, वे उनके भार के तले दबे जा रहे थे। लेकिन आज मैं यह सोचती हूं कि उनकी उस समय की मन स्थिति मे भविष्य की घटनाओ का आभास झलक रहा था।

"अनगार्डेड थॉट्स" के बाद उनकी मौलिक रचनाए समाप्त-हो गई। लेकिन यह पुस्तक उन विचारो को पूरी तरह से प्रतिबिम्बित करती है, जो उस समय उनके मन मे भरे हुए थे, जब मैं उनसे अन्तिम बार मिली। मूलत. विनयी और सहृदय होने के कारण, वे कभी-कभी इसके प्रकाशन पर खेद प्रकट करते हुए भी दिखाई पडते थे। मैं समझती हू कि इसका कारण यह था कि वे स्वयं को एक "विचारक" के रूप मे प्रस्तुत करना पसन्द नही करते थे और अपने कथा-साहित्य के माध्यम से अपने विचारो को व्यक्त करना उन्हे कही अधिक पसन्द था। "अनगार्डेड थॉट्स" मे उन्होने अपने विचारो को प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति दी और यह अभिव्यक्ति गभीरता और हास्य के उस मिश्रण के साथ हुई, जो उनके सरल और मौलिक विचारो के स्वर और गहराई को उद्घाटित करता है। मेरी दृष्टि से यह पुस्तक उनके

विचारो के विकास का एक नया और अधिक प्रौढ चरण है, जो इसमे अमूर्त, और काल्पनिक भर नही रह जाते, लेकिन स्वय उनके व्यक्तित्व मे साकार होते हैं और उन्हे वह शक्ति और आन्तरिक स्वतंत्रता प्रदान करते है, जिससे उन्हे कोई वचित नहीं कर सकता। वे अनगार्डेड थॉट्स मे जिस रूप मे प्रकट हुए है, हमने उन्हे उनकी गिरफ्तारी से कुछ ही दिन पहले उसी रूप मे देखा।

इससे पहले, सन् १९६० मे, वे आधिभौतिक कहानिया लिखने मे खोये हुए थे। उन्हे जादुगरनियो के क्रिया-कलापो और जादु-टोने के प्रामाणिक विवरणो मे सर्वाधिक दिलचस्पी थी। स्पष्ट था कि इन वातो के तर्कसगत स्पष्टीकरण ढूढे जा सकते है। लेकिन ये कम आकर्षक थे और उस तर्कहीनता से महत्व की दृष्टि से कही कम थे, जो स्वयं अपने आप मे और अपनी अभिव्यक्ति के रूपो मे, मन्त्र मुग्ध कर लेने वाली थी। ऐसी ही कहानी एक देहाती लडकी की थी, जिसे नृत्य का अपना साथी उपलब्ध नही था और जिसने सन्त निकोलस के एक चित्र के साथ नृत्य किया और तुरन्त पक्षाघात से पगु हो गई। न तो डाक्टर ही और न ही पुलिस के सिपाही उसके आलिगन से इस चित्र को मुक्त करा सके। इस मकान पर निरन्तर पुलिस का पहरा बैठा दिया गया और रात को ड्यूटीपर तैनात पुलिस मैन ने एक वूढे आदमी को उस मकान में घुसते, मकान से वाहर आते और फिर अचानक अन्तरधान होते देखा। अगले दिन लडकी के पास वह चित्र नही था : सन्त निकोलस अपना चित्र वापस ले जाने के लिये स्वयं आये थे···अफवाहो मे जिन रहस्यात्मक तथ्यो का वखान किया जा रहा था, उन्हे जैसा कि स्वाभाविक था, स्थानीय अखबारो ने झूठा वताया। सिन्यावस्की को यह कहानी ड्यूटी पर तैनात पुलिस मैन की पत्नी ने वताई थी। दूसरी कहानी कुछ अभिनेताओ के दुर्भाग्य के वारे मे थी, जिन्होने एक धर्म विरोधी फिल्म मे अभिनय किया था और इसके कारण, स्पष्टतया अभिशप्त हुए थे।

"दि मेकपीस एक्सपेरिमेट" मे ऐसे किस्सो की प्रतिध्वनि हुई है। सिन्यावस्की को यह पुस्तक विशेष रूप से प्रिय थी और जव उन्हे यह पता चला कि इस पुस्तक के इटली मे प्रकाशित सस्करण के आवरण पर चगाल का एक चित्र छापा गया है तो वे भाव विभोर हो उठे, क्योंकि इस वात से उन्होने यह अनुभव किया कि उनकी रचना के वास्तविक महत्व को कितनी अच्छाई से समझा गया है। रूस के सुदूर क्षेत्रो मे खोये हुए गावो के जीवन-क्रम ने इस कहानी को जन्म दिया है, जिससे सिन्यावस्की गहराई से परिचित थे और जिससे वे प्यार करते थे और उन्होने इस जीवन-क्रम को एक काल्पनिक दुनिया से जोड दिया, जो सब युगो मे मौजूद रहती है। दि मेकपीस एक्सपेरिमेट भयावह कथानक पर आधारित उपन्यास है—और वे इसे विनोदपूर्ण भी वनाना चाहते थे—लेकिन इसका एक प्रतीकात्मक अर्थ भी है, जिसे वे बहुत महत्व देते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि अतिशय काल्पनिक कथानक के माध्यम से, यथार्थ का स्पष्टीकरण चतुरतापूर्वक किया जा सकता है और इसके साथ ही एक रहस्य को भी अकित किया जा सकता है। ऐसी अतिशय काल्पनिक कथाओं को अनेक स्तरो पर पढ़ा जा सकता है, जो एक दूसरे का उदाहरण वनते है और एक दूसरे को समझने मे सहायक होते हैं। यह

सिद्ध करने के लिये कि यह पुस्तक बदनामी फैलाने वाली है, इस्तगासा इसके कथानक को विकृत करने में जिस हद तक आगे बढा, वह साहित्य की इस नई विधा की शक्ति और प्रभाव को अथवा अतिशय काल्पनिक पर आधारित यथार्थवाद की शक्ति और प्रभाव को प्रमाणित करता है।

सिन्यावस्की अपनी पुस्तकों की योजना के बारे में बहुत कम चर्चा करते थे। लेकिन मुझे ऐसा लगता था कि कुछ कथानक उन्हें प्रेरित कर रहे हैं। ये कथानक अनेक रूपों में हमारे वार्तालाप में आते थे, उपन्यासों और कहानियों की परस्पर सम्बन्धित सामग्री दिखाई पडते थे। एक मरणासन्न वृद्ध पुरुष था, जो अत्यधिक भयभीत होकर आन्द्रेय से लिपटा हुआ था और स्पष्टीकरण प्राप्त करने पर अडा हुआ था, और एक आकर्षक, जटिल विचारों वाला नास्तिक था "मैं इसके बारे में कुछ विस्तार से बताऊंगा—उसकी आध्यात्मिक समस्याओं के बारे में उतना नही, स्वय उसके, स्वय उसके अस्तित्व के बारे में बताऊंगा", और वह सन्त जिसके बारे में वे मृत्यु के विराट विरोधाभास के सदर्भ में लिखना चाहते थे, जिसे सवेदनहीन बना कर उन्होंने एक जीवन प्रणाली में बदल दिया था,, और ऐसे ही अन्य अनेक लोग थे ..मैं यह नही समझती कि ये सब लोग उनकी किसी भावी पुस्तक के पात्र बनने जा रहे थे। लेकिन ये ऐसे विषय थे, जो उनके मन मस्तिष्क पर छाये हुए थे और जिन्होंने उन के अनगार्डेड थॉट्स को प्रभावित किया अथवा कम से कम इस पुस्तक को पढते समय मैं ऐसा ही सोचती थी। सिन्यावस्की ने १९६१ या १९६२ में मास्को से लगभग सौ किलोमीटर दूर देनकोवो[७] में जो लम्बा समय बिताया था, उसके दौरान सभवत यह ससार अस्तित्व में आया। वे इस समय को एक आश्रय, एक अत्यधिक उपयोगी समय, एक विलक्षण अनुभव बताते हैं। वे एकात में खोये हुए थे और एक ऐसी स्तब्धता में एक के बाद एक दिन, एक अनन्त क्रम के रूप में गुजरता जा रहा था, जिसकी कल्पना से उनका सिर चकराने लगता था। और सर्दियां आने पर बर्फ से ढके विस्तृत मैदान दूर-दूर तक दिखाई पडते थे—"ससार में मैं सबसे अधिक बर्फ को ही पसन्द करता हू" वे अनगार्डेड थॉट्स में कहते हैं।

जब ७ सितम्बर १९६५ को मैंने सिन्यावस्की दम्पत्ति से विदा ली तो मुझे जुकाम हो रहा था। मैंने माशा से कहा कि मुझे एक रूमाल दे दें। लेकिन रूमाल देने से पहले वे बहुत हिचकिचा रही थी, क्योंकि हम तीनों अन्धविश्वासी हैं, और यह कहा जाता है कि इस प्रकार रूमाल देने का अर्थ, एक लम्बी जुदाई, आसू भरी जुदाई होता है।

अगले दिन मुझे ब्रेस्त-लितोवस्क में सीमा पर रोका गया और एक पूछताछ के दौरान, जो घण्टों चली, खुफिया पुलिस के दो आदमियों ने, जो असैनिक वस्त्र पहने हुए थे,

---

७ पृष्ठ ८० के सामने दिया गया सिन्यावस्की का चित्र देनकोवो में लिया गया था।

मुझसे यह स्वीकार कराना चाहा कि सिन्यावस्की ही टेरट्ज़ हैं। मैंने तुरन्त सोचा कि अवश्य ही उन के घर मे गुप्त रूप से माइक्रोफोन लगाये गये हैं। लेकिन स्वय यह तथ्य कि पुलिस ने मुझ से पूछताछ करना आवश्यक समझा, इस वात का प्रमाण था कि उनके पास अंतिम प्रमाण नहीं हैं।

लेकिन जब खुफ़िया पुलिस के इन एजेंटों में से एक ने स्योमिन की चर्चा करते हुए ज़ोर से कहा कि "ऐसा साहित्य तुम और तुम्हारे मित्र सिन्यावस्की दम्पत्ति ही पसन्द करते हैं···हम नही" तो मेरी समझ में यह बात आ गई कि "उनके" मन मे एब्राम टेररट्ज़ के प्रति जो घृणाभाव था, उसका मुकावला केवल समालोचक आन्द्रेय सिन्यावस्की के प्रति उनका घृणाभाव ही कर सकता था।

साहित्यक विद्वान् सिन्यावस्की

लेखक : जे० बोलअमूर

"जैसाकि सिन्यावस्की ने कहा था···" "तो क्या तुम भी सिन्यावस्की की तरह ही यह सोचते हो···" मैंने रूसी बुद्धिवादियों के मुह से विचार-विमर्श के दौरान अक्सर ये शब्द सुने। सामान्यतः किसी तर्क के आरम्भ मे ये शब्द नही कहे जाते थे। लेकिन जब वार्तालाप में कोई विशिष्ट मोड़ आता और वक्ता की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित होता और ऐसा लगता कि वह कोई महत्वपूर्ण बात कहने जा रहा है तो इन शब्दों का प्रयोग होता। यदा-कदा लोग अचानक यह अनुभव करते कि उन्होंने सिन्यावस्की का नाम कितनी बार लिया है और वे यह सोच कर खिलखिला कर हंस पड़ते।

सिन्यावस्की से, वाद मे, भेंट होने तक मेरी समझ मे उनके प्रभाव का कारण नही आया। दुर्भाग्यवश मेरी यह भेंट मास्को मे मेरे निवास के अन्मित दिनो मे हुई। सर्दियों की एक शाम को मैं उनके फ्लैट पर गया। वहा बडी सख्या मे विलक्षण अस्तव्यस्तता, लेकिन आरामदेह अस्त-व्यस्तता से फैली हुई पुस्तको के ढेर मुझे दिखाई पडे, जो सब रूसी बुद्धिवादियों को अत्यधिक प्रिय हैं, लेकिन मैं इन पुस्तको के वीच प्राचीन धार्मिक चित्रो और अनेक रूपक कला-कृतियों को देख कर आश्चर्यचकित रह गया। सिन्यावस्की ने वताया कि इनमे से अधिकांश कला-कृतियां उत्तर रूस के सुदूर गावो के किसानो ने दीं है, जहा वे अक्सर जाकर रहते थे और जहा उनके अनेक मित्र थे। वे इन कलाकृतियो के वारे मे कलाकृतिया सग्रह करने वाले एक व्यक्ति के स्वर मे नही वोलते थे। उनके लिये प्रत्येक वस्तु का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व था, प्रत्येक की अपनी कहानी थी और उन्हें आज भी उन गावो का स्पष्ट स्मरण था, जहां इन कला-कृतियो का निर्माण हुआ था। लेकिन मैंने जल्दी ही यह अनुभव किया कि उनमे उस प्रत्येक वस्तु को जीवन्त बना देने की क्षमता है, जिसे वे स्पर्श करते है। किसी भी व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के आकर्षण से सम्मोहित कर लेने मे, उन्हे कुछ मिनट से अधिक समय नही लगता

था वार्तालाप अनन्त काल तक चलता रह सकता था और इसमें किसी भी विषय पर चर्चा हो सकती थी—वे प्रत्येक विषय को, प्रत्येक चर्चा को अत्यधिक दिलचस्प बना देते थे और उनसे बात करते हुए मैंने वही बौद्धिक उत्तेजना अनुभव की, जो मैंने उनके अन्य मित्रो मे देखी थी। वे एक अत्यधिक आकर्षक कहानी सुनाने वाले थे। उनके विचार, अथवा उनके तर्क या स्वयं उनका ज्ञान इतना गहरा प्रभाव उत्पन्न नही करता था। चकाचौंध करने वाली शैली के प्रवाह से, जो अक्सर कथा मे निहित विचार को गौण वना देती है, अधिक उन्हें एक सामान्य बिम्ब अथवा एक चुटकला ही अधिक पसन्द था, जो सुनने वाले व्यक्ति को पहले तो एक सामान्य हास्य विनोदपूर्ण चुटकला, कुछ वस्तुओं का सहृदयतापूर्वक मज़ाक उडाने का एक तरीका दिखाई पड़ता था, लेकिन गहराई से सोचने पर यह स्पष्ट हो जाता था कि यह विम्व, यह मज़ाक, विषय को समझने, विषय के सच्चे महत्व को गहराई से समझने का छोटा रास्ता है; और इसके वाद इस बात को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता था। वे बहुत धीरे-धीरे बोलते थे। ऐसा लगता था कि उनकी आधी आवाज़, उनकी दाढी मे ही खो जाती है, लेकिन फिर भी उनकी आवाज की असाधारण रूप से विस्तृत परिधि थी और वे अपने स्वर के उतार-चढाव से असाधारण प्रभाव उत्पन्न करते थे। उनके बोलने का तरीका धीमा और अस्थायी था और वे यदा-कदा अपने हाथो से—जो बहुत सुन्दर थे कोई सकेत करते थे। किसी बात को स्पष्ट करते थे और ये सब बातें अत्यधिक स्वाभाविक कला के रूप मे होती थी, इसमे कोई बनावट या दिखावा नही था।

इस प्रकार, अपनी भाषा की सूक्ष्मता और अपने विचारो की शक्ति सहित, आन्द्रेय स्वय को अपनी उक्तियो से कुछ आगे ही रखते थे। इसका कारण केवल अपने विषय का गहरा बौद्धिक ज्ञान ही नही था, बल्कि इसलिए कि उनके शब्द आन्तरिक सामजस्य को अभिव्यक्त करते थे, जिसे, एक वेहतर शब्द के अभाव मे, जीने की कला कहा जा सकता है, जो अन्य सब बातो से अधिक, रूसी आध्यात्मिकता की गहनतम परम्पराओ का प्रतीक थी (यह स्थिति, मध्य युगो से लेकर दोस्तोएवस्की, और रेमेजोव और अन्य अनेक लेखको के लघु पात्रों पर लागू रही है।) सभवत यही कारण था कि मैंने सिन्यावस्की से कभी भी राजनीति के वारे मे चर्चा नही की मुझे ऐसा लगता था, मानो वे अधिकाश वर्तमान सघर्षो से एक ऊंचे स्तर पर पहले से ही रह रहे हैं, वे एक ऐसी दुनिया मे रह रहे है, जिसमे रूस ने सदा एक ऐसी जीवन प्रणाली का अन्वेषण करने का सतत् प्रयास किया है जो केवल उसकी अपनी विशिष्ट जीवन प्रणाली है और जो इसके वावजूद हमारे लिये अपरिचित नही है।

कुटिल उक्तिया, जो निन्दात्मक न होते हुए भी तीखी होती थी, करुणा मिश्रित तीक्ष्ण अभिव्यक्ति, पात्रो को जीवन्त बना देने की कलाकार की क्षमता और इससे भी अधिक उनकी अपने विषय की सूक्ष्म परिभाषा—इन सब बातो ने मुझे एब्राम टेरट्ज़ की कहानी "दि आइ-सिकल" ने प्रभावित किया है। अब मैं यह देखता हू कि यह सब उस सिन्यावस्की के गुण हैं,

जिनका परिचय प्राप्त करने का मुझे अवसर मिला। लेकिन पूरी तरह से प्रशसनीय "दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट" में ही वे अपने सच्चे रूप मे सामने आये है। व्यग्य करने की उनकी क्षमता, जिसने उनके समीक्षकों को अत्यधिक प्रभावित किया (जिन्होने उनकी तुलना गोगोल, शचेद्रिन और जोशचेंको से की), इस रचना में रूसी गद्य की अन्य परम्पराओ से बडी घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध हुई है, विशेष रूप से विस्तृत अलंकृत भाषा शैली से, जिसके रूपों को पिलन्याक से लेकर गोगोल तक की रचनाओ मे देखा जा सकता है। विषय की सूक्ष्मता, बिम्बो की भरमार, कविता, व्यंग्य, गीतात्मक हास्य—सदियो के ये वरदान पुंजीभूत होकर, साहित्य और लोकप्रिय भाषा की अनादि पृष्ठभूमि मे आतिशबाजी के एक प्रदर्शन के रूप मे प्रकट हुए है, जो सुदूर उत्तर मे—संभवतः ल्यूबीमोव मे—धार्मिक चित्रो के चित्रकारों का सदा परिचित विषय रहा है। क्या एक विद्वान् के लिये, ये छिटपुट बाते हैं? नही निश्चित रूप से इससे बहुत अधिक: अतीत के इस अन्वेषण का परिणाम, अतिशय काल्पनिक की कला का पुनर्जन्म हुआ और इस बात मे सदेह नही है कि इससे भविष्य के सोवियत साहित्य के लिये एक नया मार्ग प्रशस्त हुआ है। आन्द्रेय सिन्यावस्की सोवियत शासन के केवल एक शिकार भर नही हैं, उन्हे रूसी बुद्धिवादियो की एक प्रेरणा भी बनना है।

परिशिष्ट—२

स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क फिनलैंड, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, इटली, स्विटजरलैंड और फ्रांस में कम्युनिस्ट प्रतिक्रियाएं

स्वीडन

१५ जनवरी १९६६ के "स्टाकहोम तिदनिनजेन" मे स्वीडन की कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव सी० एच० हरमनसन ।

मैंने इनमें से किसी भी लेखक की कोई भी पुस्तक नही पढी है और इस बात की सभावना है कि यदि मैं कोई किताब पढता, तो वह शायद मुझे पसन्द न आती । लेकिन प्रश्न यह नही है । विचारो का सामना विचारो से किया जाना चाहिये । पुलिस अथवा अदालतो के माध्यम से नही । यह बात मेरी लोकतंत्र की संकल्पना के अनुरूप नही है कि राज्य के संगठनो अथवा किसी राजनीतिक पार्टी को यह निर्णय करने का अधिकार है कि कौन से विचार "निषिद्ध" हैं और कौन से विचार "मान्य" । कला मे प्रत्यक्ष राजनीतिक हस्तक्षेप, और एक कलात्मक विधा या शैली की तुलना मे किसी दूसरी विधा अथवा शैली को बलपूर्वक थोपना, विशेष रूप से घृणास्पद है । ये तरीके केवल अलोकतंत्री ही नहीं हैं, बल्कि ये कट्टरपंथी और फिलस्तीनवादी शक्तियो के प्रभुत्व का मार्ग प्रशस्त करते हैं । लोगो पर यह विश्वास किया जाना चाहिये कि वे स्वय इस बात का निर्णय करें कि उन्हे कला की किन विधाओ से सहानुभूति है और वे किन विधाओ का समर्थन करते हैं । स्वतन्त्र विचार-विमर्श ही एक मात्र रास्ता है । अनुभव यह बताता है कि राज्य और पार्टी द्वारा, कला और विज्ञान के नियमन के लिये कानून बनाने के प्रयासो का परिणाम केवल इनकी मुक्त धारा को अवरुद्ध करना ही होता है ।

नार्वे

नार्वे की कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र फ्रीहेतेन के २२ जनवरी १९६६ के अक मे मार्टिन नाग ।

मैंने अभी सिन्यावस्की के पास्तरनेक सम्बन्धी निबन्ध का अनुवाद किया है। सिन्यावस्की केवल पास्तरनेक के साहित्य के एक महान् अधिकारी विद्वान् ही नही है, वे आज सोवियत सघ के गिने-चुने विशिष्ट साहित्य समालोचकों मे से हैं। सिन्यावस्की जेल में हैं। उन्होने अपने जो व्यंग्यात्मक उपन्यास विदेशो मे प्रकाशित किये हैं……उन्हे रूस विरोधी और सोवियत विरोधी बताया गया है। ऐसी कोई बात नही है। ये उपन्यास उससे अधिक रूस विरोधी नहीं हैं, जितने लेरमोनतोव का 'हीरो आफ आॅवर टाइम,' अथवा गोगोल का 'डैड सोल्स' है। वे मायाकोवस्की की हास्य रचनाओं, "दि बाथ" और "दि बैड बग" या पास्तरनेक के डाक्टर झिवागो से अधिक सोवियत विरोधी नही है। व्यंग्योक्ति और व्यंग्य चित्रण को रूस विरोधी या सोवियत विरोधी समझना, रूस के बौद्धिक जीवन की एक दुर्भाग्यपूर्ण परम्परा है। इसके बावजूद अगले दस वर्षों मे, सिन्यावस्की की व्यंग्य शैली, प्रकट रूसी साहित्य का दिलचस्प और अभिन्न अंग बन जायेगी।

इरेमिन ने इजवेस्तिया मे एक पुराने तरीके का इस्तेमाल किया है, जो स्तालिन के शासनकाल मे प्रचलित था : पश्चिम मे जो लोग सिन्यावस्की के साथ हुए व्यवहार से चिंतित, रुष्ट और वस्तुतः आश्चर्यचकित हैं, उन सब को सोवियत सघ का शत्रु बताया गया है……निश्चित है कि मैं सोवियत सघ का शत्रु नही हूं, बल्कि स्थिति ठीक इसके विपरीत है, और न ही स्वीडन, नार्वे और डेनमार्क के लेखक सगठन ही सोवियत विरोधी हैं, जिन सबने इस कारवाई के विरुद्ध विरोध प्रकट किया है और न ही सी० एच० हरमनसन ही सोवियत विरोधी हैं, जिन्होंने स्टाकहॉम के तिदनिनजेन मे अपना विरोध प्रकट किया है। समाजवाद और जेलें दो ऐसी बातें हैं, जो आपस मे मेल नही खाती।

नार्वे की कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र फ्रीहीतेन के २६ फरवरी १९६६ के अक मे ओल पीतर मोज़ेविक।

कुछ ऐसे कम्युनिस्ट हैं (जैसे वर्ज और त्रोवर, जो मार्टिन नाग पर प्रहार करते रहे हैं), जो तथ्यो से अप्रभावित ही रहते हैं। मार्टिन नाग आज यूरोपीय साम्यवाद के सर्वोत्तम पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्वीडन मे सी० एच० हरमनसन, इंगलैंड में जान गोलान, इटली में लयूनीता आदि उनके विचारों से सहमत हैं। यह मामला क्या है, जिसके प्रति इतने प्रमुख और जिम्मेदार कम्युनिस्ट इतनी उग्र प्रतिक्रिया प्रकट कर रहे हैं? दो मुख्य प्रश्न इससे संबधित हैं :

१—हम किस सीमा तक उस कानून को स्वीकार कर सकते है, जो सोवियत समाज की आलोचना का निषेध करता है?

२—हम किस सीमा तक सिन्यावस्की और डेनियल को इस कानून का उल्लघन करने का दोषी समझते हैं?

सिन्यावस्की और डेनियल का गभीर अपराधो का दोषी बताया गया है……लेकिन उन्होंने जो स्पष्टीकरण दिये हैं और उनके वकीलो ने जो सफाई दी है, उसे प्रकाशित क्यो नही करते ? सोवियत जनता को इन लोगो के दोषों का मूल्याकन करने का क्या अवसर मिला। जब वे इनकी पुस्तकें तक पढने की स्थिति मे नही थे ?……

जहा तक कानून का सम्बन्ध है…हम कम्युनिस्ट, अनुभव से यह जानते हैं कि जो भी कानून वर्तमान परिस्थितियो की आलोचना करने का निषेध करता है, वह प्रतिक्रिया-वादी होता है।…… यह जान पाना असभव है कि ऐसे कानून के अन्तर्गत क्या-क्या बाते आती है। इसके परिणामस्वरूप इसे मनमाने ढग से लागू किया जाता है और अधिकारी इसका इस्तेमाल जिसे चाहे दण्ड देने के लिये करते हैं……दूसरे शब्दो मे यह हो सकता है कि दोनो अभियुक्त पूरी तरह से निर्दोष हो …..सोवियत सघ का इतिहास यह बताता है कि हजारो, लाखो निष्ठावान कम्युनिस्टो को सुदूर स्थानो पर निष्कासित किया गया अथवा जल्दबाजी मे चलाये गये उन मुकदमो के द्वारा उन्हें गोली से उड़ा दिया गया, जो न्याय का उपहास थे।

……नार्वे के लोगो के मन मे लोकतंत्र और न्याय के प्रति गहरा लगाव है। हमारा इतिहास यह दर्शाता है और अब समय आ गया है कि कम्युनिस्ट लोग इस बात की बुद्धिमत्ता को समझे।

डेनमार्क

डेनमार्क की कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र "लैंड ओग फोक" के १५ फरवरी १९६६ के अक का सम्पादकीय।

सोवियत सघ युद्धरत नही है। देश मे सकटकालीन स्थिति भी नही है। साम्यवाद के विकास के लिये इसके साधन……अपार है। इस पृष्ठभूमि को देखते हुए दो सोवियत लेखको को जो दण्ड दिया गया है, वह समझ के बाहर की बात लगती है।

फिनलैंड

फिनलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी की पत्रिका आइकालेनेन (१५ फरवरी १९६६) के सम्पादक और लेखक, पेन्ती सासीकोस्की।

सोवियत सघ का एक सच्चा मित्र होने के कारण, मैं इन दो लेखको पर मुकदमा चलाये जाने पर केवल खेद ही प्रकट कर सकता हूं और मैं वस्तुत. इस घटना से बहुत निरुत्साहित हुआ हू।

ब्रिटेन

ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव, जान गोलान "दि डेली वर्कर" के १५ फरवरी १९६६ के अंक मे।

मुकदमे से पहले सोवियत समाचारपत्रो मे जो टिप्पणिया की गई, उससे जो वातावरण तैयार हुआ और मुकदमे की कारवाई की रिपोर्टो से पश्चिम मे सोवियत विरोधी तत्वों को प्रचार का अवसर मिला। सोवियत समाचारपत्रो मे, मुकदमे से पहले अभियुक्तो पर जो प्रहार किये गये, उनमे उनके अपराध को पहले से ही सिद्ध मान लिया गया। और इसी प्रकार अदालत की कारवाई के बारे में 'तास' समाचार एजेंसी ने जो समाचार भेजे, उनकी भी यही स्थिति थी। मुकदमे की कारवाई का कोई पूर्ण और निरपेक्ष विवरण प्रकाशित न होने के कारण, सोवियत सघ के बाहर के लोग अपनी सही राय कायम नही कर सकते। अभियुक्तो को अपराधी करार दिया गया है। लेकिन इस्तगासे और सफाई पक्ष द्वारा जो बयान और अन्य प्रमाण दिये गये और जिनके आधार पर अदालत ने अभियुक्तो को अपराधी ठहराया, उन्हे प्रकाशित नही किया गया है। केवल यही आवश्यक नही है कि न्याय हो, बल्कि यह भी आवश्यक है कि लोगो को यह विश्वास हो कि न्याय हुआ है। दुर्भाग्यवश इस मुकदमे के बारे मे यह नही कहा जा सकता। इस मामले के सम्बन्ध मे जिस प्रकार कारवाई की गई उससे सोवियत सघ को सिन्यावस्की और डेनियल की रचनाओ से कही अधिक क्षति पहुची है, जिनके बारे मे ब्रिटेन मे उस समय तक विशेष जानकारी नही थी, जब तक सोवियत समाचारपत्रो ने इन पर प्रहार करना शुरू नही किया। वे सब लोग, जो निष्ठापूर्वक सोवियत सघ की भलाई चाहते हैं, इस घटना और इसके परिणामो को चिन्तापूर्वक देखेगे।

आस्ट्रिया

आस्ट्रिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सचिव इर्विन शार्फ, पार्टी के मुखपत्र "वोक्सस्तीम", १६ फरवरी १९६६ मे।

हम इस बात पर पहले ही खेद प्रकट कर चुके है कि यह मुकदमा चलाया गया। इस बात ने दो लेखको को, जिन पर सोवियत विरोधी प्रचार करने का अभियोग लगाया गया था, इसलिए कठोर दण्ड देना कि उनकी पुस्तको को विदेशो मे रूसी प्रवासी प्रकाशको ने प्रकाशित किया है, हमे अत्यधिक शकित कर दिया है, क्योकि हम सोवियत संघ से अपना घनिष्ठ सम्बन्ध समझते हैं।

आस्ट्रिया के कम्युनिस्ट मासिक, तागेबुच, (खण्ड २१, सख्या ३, मार्च १९६६, पृष्ठ ७) मे अर्नेस्ट फिशर।

महान् सोवियत जनता के हौसले के बारे मे हमारी इतनी ऊची राय है और सोवियत राज्य की शक्ति के ऐसे अकाट्य प्रमाण हमे उपलब्ध है कि हम यह कल्पना नही कर पाते कि दो-चार पुस्तकें उसे किस प्रकार कमजोर बना सकती है......स्वयं अदालत ही सोवियत विरोधी प्रचार की दोषी है, क्योकि उसकी कारवाई से इतनी क्षति पहुंची है जो कोई भी पुस्तक नही पहुंचा सकती। यह पूछा जा सकता है : एक समाजवादी देश मे

चलाये गये एक ऐसे मुकदमे की आलोचना क्यो की जाये, जो शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय न्याय के लिये कार्य करता है ? क्या अन्यत्र इससे भी बुरी घटनाएं नही घटती ? हा, निश्चित रूप से ऐसा होता है ! यही कारण है कि हम मार्क्सवादी बने · हम एक सकटपूर्ण ससार मे रहते हैं। यही कारण है कि एक समाजवादी देश को स्पष्ट और प्रकट रूप से उदारता, स्वतन्त्रता और मानवीय दृष्टिकोण के व्यावहारिक उपयोग मे अन्य सब देशो से भिन्न होना चाहिये ··· यह बात कि सोवियत सघ मे एक साहित्यिक व्यग्य लिखने के लिये (और चोरी छिपे इसे विदेश में प्रकाशित कराने से इसका सही उद्देश्य ही खत्म हो जाता है) ७ वर्ष की कैद की सजा दी जा सकती है, समाजवाद के सार के विपरीत है और इसलिए यह आवश्यक है कि सब समाजवादी, सोवियत सघ के सब मित्र इस का विरोध करे। सोवियत सघ एक महान् शक्ति है और हम, जिन्हे इस मुकदमे और इन दण्डो से कष्ट पहुचा है, शक्तिहीन है। लेकिन एकजुटता, एकपक्षीय नही होनी चाहिये। यह बात हमारे उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक होगी, यदि सोवियत सघ केवल अपनी प्रशसा और समर्थन की ही बाते सुनने को तैयार न हो, बल्कि, यदा कदा, अपने मित्रो की असहमति को भी सुने।

इटली

इटली की कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र "रिनासिता" के १९ फरवरी १९६६ के अक मे, जियान कार्लो पाजेता।

इस मुकद्दमे से सोवियत विरोधी गतिविधिया फिर शुरू हो गई है। हमे इन प्रदर्शनो की कड़ी निन्दा करनी चाहिये ··· लेकिन इसके साथ ही हम यह स्वीकार करते हैं कि इस मुकदमे से बुद्धिवादियो और श्रमिको मे उचित असतोष फैला है ·· नागरिको और राज्य के पारस्परिक सम्बन्धो की समस्या और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की समस्या··· ·· अनेक तरीको से अभी भी समाजवादी समाजो तथा पूजीवादी देशो दोनो मे ही सुलझायी नही जा सकी है।

"रिनासिता", १९ फरवरी १९६६, मे मारियो अलवर्ती।

कामरेड तोलियाती ने अपनी याल्टा स्मारिका मे यह लिखा है कि सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो की एक मुख्य समस्या यह है कि "स्तालिन द्वारा लोकतन्त्री और व्यक्तिगत स्वतन्त्रताओ को सीमित करने और दवाने के लिये जो कारवाइया की गई हैं···" उन्हे समाप्त किया जाये। मास्को मे चलाये गये मुकदमे को ध्यान मे रखते हुए हमे यह खेदपूर्वक कहना पडता है कि आज भी सोवियत सघ मे यह व्यवस्था कायम है। यह बात हमे मनुष्यो के रूप मे और इससे भी अधिक कम्युनिस्टो के रूप मे गहरा आघात पहुचाती है।

स्विटजरलंड

स्विट्जरलंड की मजदूर पार्टी (कम्युनिस्ट पार्टी) के मुखपत्र "वोइज ओउरिएरे", जिनीवा २२ फरवरी १९६६, मे ज्यां मेरी शोवियर

हमे सफाई पक्ष के तर्कों और प्रमाणो के बारे में क्या जानकारी है ? किन तर्कों के आधार पर सफाई पक्ष ने अपना मामला पेश किया। हमे उसकी क्या जानकारी है ? सचाई यह है कि हम प्राय कुछ नही जानते। यह समझा जाता था कि मुकदमा सार्वजनिक रूप से चलाया जा रहा था। लेकिन कुछ निमंत्रित व्यक्तियों को ही और साहित्य जगत के कुछ प्रमुख व्यक्तियो को ही अदालत के कमरे मे मौजूद रहने की अनुमति मिली। मास्को के समाचारपत्रो ने अदालत मे हुई वहस का बेहद एकतरफा समाचार दिया है और प्रतिवादियो के वकीलो ने क्या कहा होगा, इस बात का अनुमान केवल उनकी बातों पर क्रोधपूर्ण अथवा व्यग्यपूर्ण टिप्पणियों से ही लगाया जा सकता है। निर्दोष लोगो को अपराधी करार दे दिया गया है। इन पत्रो को पढ कर मन मे यह प्रश्न उठता है कि क्या आरम्भ से ही यह निश्चित नही था कि अभियुक्तो को कठोर दण्ड दिया जायेगा।

फ्रांस

फ्रास की कम्यूनिस्ट पार्टी के मुखपत्र "ल ह्यूमेनाइत", १६ फरवरी १९६६, मे "एरागो का एक वक्तव्य"

मास्को मे सिन्यावस्की और डेनियल को जो सजाए सुनाई गई है, उनकी कोई कम्युनिस्ट उपेक्षा कर सकता है, मैं इस वात की कल्पना भी नही कर सकता। इस की अत्यधिक दूरगामी जटिलताओ और प्रभावों के कारण यह मामला अत्यधिक गंभीर है और विशेष रूप से फ्रास के लिये। एक श्रम शिविर मे सात वर्ष और पाच वर्ष की सजा उन लोगो को दिया जाना, जिनके ऊपर लिखने और अपनी रचनाओ को प्रकाशित करने के अभियोग लगाये गये थे—और जिसके विरुद्ध प्रतिवादियों ने अपना विरोध प्रकट किया है— और जिन रचनाओ को सोवियत विरोधी बताया गया है, उचित नही है। इस समस्या का दण्डित लोगो के व्यक्तित्व से अथवा लेखको के रूप मे उनकी प्रतिभा से कोई सम्बन्ध नहीं है। एक घटिया लेखक को भी स्वतन्त्रतापूर्वक रहने का अधिकार है। लेकिन यहां एक बिल्कुल भिन्न वात दाव पर लगी है। कोई व्यक्ति इस वात से असहमत हो सकता है कि इन लोगो ने जो कुछ लिखा है वह उचित नही है और इन लेखको को यह वात कही भी जा सकती है···इन लोगों के ऊपर अपनी रचनाओ को बिना लाइसेंस लिये निर्यात करने के लिये संबधित कानून के उल्लंघन के लिये और इस कानून के अन्तर्गत जुर्माना किया जा सकता है······चाहे एक ऐसे कानून के बारे मे मेरे अपने व्यक्तिगत विचार कुछ भी क्यों न हो। लेकिन इन लोगो को उनके उपन्यासो अथवा कहानियों की विषय वस्तु के आधार पर स्वतन्त्रता मे वंचित करना गलत राय को अपराध बना देने और एक ऐसा उदाहरण

प्रस्तुत करने की बात है, जो समाजवाद को इतनी अधिक क्षति पहुचा सकता है, जितनी क्षति इन लेखको की रचनाएं किसी भी स्थिति मे नही पहुचा सकती थी। इस बात के प्रति आशकित रहने की आवश्यकता है कि ऐसी कारवाइयो से लोग यह सोच सकते हैं कि ऐसे तरीके साम्यवाद के स्वरूप मे निहित हैं और यह घटना इस बात का पूर्वाभास देती है कि एक ऐसे देश मे न्याय का क्या स्वरूप होगा जिसने मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का उन्मूलन कर दिया है। यह घोषणा करना हमारा कर्तव्य है कि ऐसी बात नही है और यह स्थिति फ्रास मे कदापि न होगी। हमारी पार्टी की नीति कुछ बुनियादी मान्यताओ पर आधारित है—कि शान्तिपूर्ण तरीको से, बहुमत प्राप्त कर, समाजवाद की स्थापना करना सभव है, कि केवल एक पार्टी ही होनी चाहिये हम इस मान्यता को अस्वीकार करते हैं; और इसके परिणामस्वरूप हम यह समझते हैं कि समाजवादी और अन्य लोकतत्री पार्टियो की एकजुटता समाजवाद मे सक्रमण, इसके निर्माण और इसे बनाये रखने का मार्ग प्रशस्त करेगी। यह तभी सभव है जब फ्रांस की कम्युनिस्ट पार्टी, देश मे इसकी शक्ति चाहे कितनी भी क्यो न हो, यह निर्विवाद रूप से दर्शा सके कि लोकतंत्र के सिद्धातो मे उसका कितना गहरा विश्वास है, जो फ्रांसीसी परम्परा का एक अग हैं और विशेष रूप से यह घोषणा करके कि किसी भी व्यक्ति के ऊपर, उसकी राय, उसके विचारो के लिये अदालत मे मुकदमा नही चलाया जायेगा। हम आशा करते हैं, कि उस उद्देश्य की भलाई के लिये, जिसका हम सब समर्थन करते हैं, कल जो सज़ाए सुनाई गई है, उनके विरुद्ध अपील होगी। हम एक महान् मित्र देश को हुक्म नही दे सकते, लेकिन अपनी सच्ची राय को छिपाना अक्षम्य होगा।

लोकतत्री वकीलो के अन्तर्राष्ट्रीय सगठन की फ्रांसीसी शाखा की, "ल ह्यूमेनाइत", १८ फरवरी १९६६ मे प्रकाशित घोषणा।

दो सोवियत लेखको को, उनकी रचनाओ की विषय वस्तु के लिये, सज़ाए दिये जाने से लोकतंत्री वकीलो के फ्रांसीसी संगठन को गहरी चिंता है.... सगठन का विचार है कि यह उसका कर्तव्य है कि वह अपने सोवियत सहयोगियों से इस बात को न छिपाये कि सगठन के सदस्यो को मुकदमे की कार्यविधि, अदालत द्वारा दण्ड दिये जाने, और दण्ड की अत्यधिक कठोरता से गहरा आघात पहुचा है।

लेखको की राष्ट्रीय समिति का ल'मोद, २२ फरवरी १९६६, मे प्रकाशित विरोध।

एक मित्र देश के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप करने की इच्छा न रखते हुए, लेखको की राष्ट्रीय समिति की निर्देशन समिति, जिसने सदा लेखको द्वारा अपने विचारो की स्वतत्र अभिव्यक्ति के अधिकार का समर्थन किया है, सिन्यावस्की और डेनियल को दण्ड दिये जाने पर अपना आश्चर्य और चिन्ता प्रकट करना चाहती है। यह केवल दण्ड की

कठोरता के प्रति ही विरोध नही प्रकट करती, बल्कि ऐसा मुकदमा चलाये जाने के सिद्धात के प्रति भी अपना विरोध प्रकट करती है। यह आशा करती है कि अदालत के फैसले पर फिर विचार करना सभव होगा, जो अपने आप मे इतना गभीर मामला है और जो सोवियत सघ की तस्वीर को उसके सर्वोत्तम मित्रों की आखो में बदलने और गिराने का खतरा बन गया है।

(लेखको की राष्ट्रीय समिति, यह सगठन कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियो का कड़ाई से अनुगमन करता है, का नेतृत्व कुछ कम्युनिस्ट और कुछ गैर-कम्युनिस्ट लेखको के हाथो मे है, जिनमे जक्वीज मादोल, लुई एरागो, एलसा त्रायोले, आर्थर, अदामोव, ज्या-पाल सार्त्र, ब्लादिमिर पोजनेर, जार्ज सादूल, राबर्त मर्ल और ज्यां-लुई बोरी शामिल है। सन् १९५६ मे लेखको की राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष, लुई द विलेफोस ने इस सगठन से इसलिए इस्तीफा दे दिया था कि यह सगठन हगरी मे सोवियत रूस के हस्तक्षेप पर अपना विरोध प्रकट करने को तैयार नही था। उनके स्थान पर लुई एरागो अध्यक्ष बने।)

परिशिष्ट—३

विदेशी बुद्धिवादियों की प्रतिक्रिया

(ब्रिटेन, अमरीका, फ्रांस, जर्मनी और इटली के लेखकों के "दि टाइम्स" के नाम पत्र, कुछ अन्य वक्तव्यों और उनपर हस्ताक्षर करने वालों की सूची)

क—"दि टाइम्स" के नाम ब्रिटेन, अमरीका, फ्रास, जर्मनी और इटली के लेखको के पत्र

महोदय,

मास्को रेडियो से और सोवियत समाचारपत्रो मे यह घोषणा की गई है कि आन्द्रेय सिन्यावस्की और यूली डेनियल को, जिनके बारे मे यह कहा गया था कि उन्होने "एब्राम टेरट्ज" और "निकोलाई अर्जहक" के नामो से विदेशो मे अपनी रचनाए प्रकाशित की है, "स्वय अपने देश के विरुद्ध दुष्टतापूर्ण बाते गढने और विदेशो मे स्वय अपने देश के विरुद्ध प्रचार करने के लिये उत्तर देना होगा।"

हम एक बार फिर यह कहना चाहते है, जिसे विभिन्न देशो के अनेक लेखको और सास्कृतिक सस्थाओ ने पहले ही सार्वजनिक रूप से कहा है, कि हम इन दोनो प्रतिष्ठित लेखको मे से किसी की भी रचना को प्रचार नही मानते और हम यह फिर जोर देकर कहना चाहते है कि उनकी रचनाओ के प्रति हमारे मन मे केवल उनके साहित्यिक और कलात्मक गुणो के कारण ही सम्मान का भाव है।

हमारा यह भी विश्वास है कि यदि ये लेखक हमारे किसी देश मे रहते होते तो इनकी रचनाए हमारे समाजो के कुछ पक्षो की अवश्य आलोचना करती। अन्तर केवल इतना होता कि इनकी पुस्तकें प्रकाशित होती और इन्हें जेलो मे न जाना पडता।

हम केवल यही आशा कर सकते हैं कि सोवियत अधिकारी, लेखक जगत की अन्तर्राष्ट्रीय आवाज के प्रति सवेदनहीन नही बने रहेगे, जिसने ससार के प्राय प्रत्येक देश मे स्थित अपने प्रतिनिधियो के माध्यम से, जिनमे अन्तर्राष्ट्रीय पी० ई० एन० और सी० ओ० एम० ई० एस० (यूरोपीय लेखक समुदाय) शामिल हैं, अपने दृष्टिकोण को पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है।

यह विश्वास होने के कारण कि लेखकों को अपनी रचनाएं प्रकाशित कराने का अधिकार है, हम एक बार फिर सोवियत अधिकारियो की सहिष्णुता और सद्विवेक के प्रति अपील करते हैं और उनसे यह अनुरोध करते हैं कि वे हमारे इन दो सहयोगियों को रिहा कर दें, जिनकी रचनाओं को हम सम सामयिक साहित्य का विशिष्ट अंश मानते हैं।

भवदीय,

फ्रांस :

मारिस ब्लैंको, एंद्रे ब्रेटन; ज्यां कासो; मारग्रेट डूरस; पियरि एमानुयल; एन्द्रे फ्रेनोद; न्या गुएहेनो. फ्रांसिस मारिस

जर्मनी :

हीनरिच बोएल; गुएनटर ग्रास; उवे जानसन; हन्स मैगनस एन्जेन्समबर्गर; क्लास हाग्रेच्ट मार्टिन वालसर

इटली :

लाइबेरो विजियारेत्ती; इटांलो कालवीनो; दीगो फैब्री, अलवर्त्ती मोराविया; इगनाजियो साइलोन; ज्योकार्लो विगोरेली

अमरीका :

हन्ना अरेन्डत; डब्ल्यू० एच० औदेन; साल बेलो; माइकेल हैरिंगटन; एल्फ्रेड काजिन मैरी मैकार्थी; ड्वाइट मैक्डानल्ड; आर्थर मिल्लर; फिलिप राव; फिलिप रोथ; मीयर श्कापिरो; विलियम स्टाइरन।

ब्रिटेन :

ए० अलवारेज; ए० जे० आयर, डेविड कारवर; ब्रायन ग्लांविले; ग्राहम ग्रीन; जूलियन हक्सले; रोजामन्ड लेहमन;, डोरिस लेसिंग; आइरिस मरडोच, हर्बर्ट रीड; क्लेन्सी साउगल; मुरियल स्पार्क; फिलिप टायनवी, जान वने, वर्नार्ड वाव; सी० वी० वेजवुड,; रिबेका वेस्ट।

३१ जनवरी, १९६६

महोदय,

लगभग एक वर्ष पहले (३१ जनवरी १९६६) अधोहस्ताक्षरी व्यक्तियो ने आपके समाचारपत्र के माध्यम से सोवियत अधिकारियो से अपील की थी कि वे हमारे सहयोगियो, लेखक आन्द्रेय सिन्यावस्की और लेखक यूली डेनियल पर मुकदमा न चलायें। अब ये लोग "कठोर व्यवस्था वाले" सुधार श्रम शिविरो मे लम्बी सजाएं काट रहे हैं, इन्हें सोवियत

विरोधी रचनाए लिखने और छद्म नामो से विदेशो मे प्रकाशित करने के आरोप पर सजाए दी गई है ।

सिन्यावस्की को सात वर्ष की और डेनियल को पांच वर्ष की सजा दी गई है । हमे अभी हाल मे यह समाचार मिला है कि डेनियल का एक पुराना घाव जो उन्हे युद्ध के दौरान लगा था अब फिर कष्ट देने लगा है और सिन्यावस्की का स्वास्थ्य भी खराब हो गया है ।

इगलैंड मे रूस के प्रधानमत्री श्री कोसिगिन के आगमन से प्रेरित होकर हम उनसे इन दोनो लेखको को रिहा करने की अपील करना चाहते हैं । हम इस अपील मे एमनेस्टी इन्टरनेशनल की कारवाई मे अपने सहयोगियो की ओर से सम्मिलित होते हैं ।

१९६७ मे रूस की क्राति की ५० वी वर्षगाठ मनाई जा रही है । हम आशा करते है कि इस अवसर पर सोवियत अधिकारी सब राजनीतिक कैदियो को, जो उनकी सीमाओ के भीतर बदी हैं, क्षमादान देने की घोषणा करेंगे । हम विशेष रूप से यह आशा करते है कि श्री कोसिगन सोवियत रूस के भीतर के और बाहर के बुद्धिवादिया और लेखको की इच्छा का सम्मान करते हुए सिन्यावस्की और डेनियल को रिहा कराने की व्यवस्था करेंगे और यह व्यवस्था भी कि उनकी रचनाओ का मूल्याकन केवल कलात्मक आधार पर ही किया जाता है ।

अन्तर्राष्ट्रीय सास्कृतिक सम्बन्धो मे सुधार करने की दिशा मे यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा ।

भवदीय

फ्रांस :

मॉरिस ब्लैंको; ज्यां कामो, पियरि इमानुएल

जर्मनी :

गुएनटर ग्रास, हन्स मैगनस एजेन्सबर्जर, मार्टिन वालसर ।

इटली :

लाइवेंरो विजियारेत्ती; अलवर्तो मोराविया, इगनाजियो साइलोन ।

अमरीका :

हन्ना अरेन्ड्त, डब्ल्यू० एच० ओदेन, सॉल वेलो, माइकेल हैरिंगटन, एल्फ्रेड काजिन, फिलिप रोथ, मीयर स्कापिर, विलियम स्टाइरन ।

ब्रिटेन :

ए० अलवारेज़, ए० जे० आयर, डेविड कारवर, ब्रायन ग्लाविले, ग्राहम ग्रीन, जूलियन हक्सले, रोज़ामन्ड लेहमन, डोरिस लेसिंग, हर्बट रीड, क्लेन्सी साइगल, मुरियल स्पार्क, फिलिप टायनवी, जॉन वेन, वर्नार्ड वॉल, सी० वी० वेजवुड, रिवेका वेस्ट ।

४ फरवरी, १९६७

ख.—कुछ अन्य वक्तव्यों और उन पर हस्ताक्षर करने वालो की सूची

इन लेखकों पर मुकदमा चलाये जाने और इन्हे दण्ड देने के विरोध मे जो अनेक पत्र और तार भेजे गये उन्हे यहां विस्तार से देना संभव नही है। लेकिन यहां कुछ, यद्यपि सब नहीं, वक्तव्यो आदि पर हस्ताक्षर करने वालो के नाम दिये गये है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा विरोध

एमनेस्टी इन्टरनेशनल—श्री कोसिगिन की ब्रिटेन यात्रा के दौरान उन्हे दी गई अपील

मार्टिन एन्थोवेन, पीटर आर्चर, एम० पी० और आर बोडी, एम० पी०

यूरोपीय लेखक समुदाय—समुदाय की अध्यक्ष परिषद् का प्रस्ताव

जीयूसेप उगारेत्ती, ज्या-पाल सार्त्र, लूई एराजूरेन, हल्दोर लैक्सनेस, जान लेह्मन।

यूरोपीय लेखक समुदाय,—समुदाय के महासचिव द्वारा फिएरा लितेरारिया को लिखा गया पत्र

जियाकार्लो विगोरेली

यूरोपीय लेखक समुदाय—"दि टाइम्स" को पत्र

जॉन लेह्नन (उपाध्यक्ष)

अन्तर्राष्ट्रीय पी० ई० एन०—कोसिगिन को तार

"आज सिन्यावस्की और डेनियल को, जो वर्बर और अमानुषिक दण्ड दिये गये है, उनसे हमे गहरा आघात पहुचा है। हम अधोहस्ताक्षरी, जो ससार भर के हजारो लेखको का प्रतिनिधित्व करते है, और अन्तर्राष्ट्रीय पी० ई० एन० के सदस्य है, आपसे, प्रधानमत्री होने के नाते, अपने क्षमादान के अधिकार का उपयोग कर सोवियत न्याय और मानवता मे लोगो के विश्वास को फिर कायम करने का अनुरोध करते है।"

स्टॉर्म जेम्सन, विक्टर ई० वान व्रीसलैंड, डेविड कार्वर।

अन्तर्राष्ट्रीय पी० ई० एन०—सुरकोव को तार

"सिन्यावस्की और डेनियल को दिये गये वर्बर दण्डो से हम स्तब्ध हैं। सोवियत लेखक सघ को अपने देश के अधिकारियों से इस सम्बन्ध में हस्तक्षेप करने और ससार भर के सृजनात्मक कलाकारो को जो आघात पहुचा है, उससे सोवियत अधिकारियो को अवगत कराने का अनुरोध करने के लिये हमारे पास पर्याप्त शब्द नही है।"

डेविड कारवर

पी० ई० एन० के राष्ट्रीय केन्द्रो से भेजी गई अपील

आस्ट्रेलिया : सिडनी पी० ई० एन० केन्द्र

आस्ट्रिया : आस्ट्रिया का पी० ई० एन० क्लब—गैरी हॉसर

कनाडा : कनाडा का पी० ई० एन० केन्द्र—कैथेरीन रॉय

चेकोस्लोवाकिया : चेकोस्लोवाकिया का पी० ई० एन० केन्द्र

बेल्जियम . पी० ई० एन० क्लब का बेल्जियम स्थित केन्द्र—रावर्ट गोफिन पी० ई० एन० क्लब का बेल्जियम फ्लेमिश केन्द्र—रिचर्ड डिक्लार्क

जर्मनी—पश्चिम जर्मनी का पी० ई० एन० केन्द्र—एच० डब्ल्यू० सावेज, विदेश मे जर्मन भाषा बोलने वाले लेखको का पी० ई० एन० केन्द्र—जी० लारसेन

हालैंड—हालैंड का पी० ई० एन० केन्द्र

आइसलैंड—आईसलैंड का पी० ई० एन० केन्द्र—क्रिस्तजन कार्लसन

भारत—अखिल भारत पी० ई० एन० केन्द्र—सोफिया वाडिया

ईरान—ईरान का पी० ई० एन० क्लब—जैड० रेहनेमा

इटली—इटली का पी० ई० एन० क्लब—मारिया वेलोसी

जापान—जापान का पी० ई० एन० क्लब—नोबुयुकी तातेनो

नार्वे—नार्वे का पी० ई० एन० केन्द्र—एच० गीलमुइदेन ई० गर्विन, ई० हासमण्ड, जे० वोग्ट

स्काटलैंड—स्काटलैंड का पी० ई० एन० केन्द्र—एन० ए० मुइर

स्वीडन—स्वीडन का पी० ई० एन० केन्द्र—जोहानेस एडफेल्ट

पोलैंड—पोलैंड का पी० ई० एन० क्लब

अमरीका—अमरीका का पी० ई० एन० केन्द्र—एडवर्ड एलबी, लूईस आचिनक्लोस, सॉलबिलो, नार्मन कजिन्स, लियोन ईडेल, राल्फ एलीसन, एल्फ्रेड का ज़िन आर्थर मिलर, बारबरा तुचमैन

न्यूयार्क का यहूदी पी० ई० एन० क्लब—ग्लाज़ लेयेलेस, एस० एप्टर।

विएतनाम—विएतनाम का पी० ई० एन० केन्द्र

युगोस्लाविया—स्लोवीन का पी० ई० एन० केन्द्र—मातीज बोर

निर्वासित लेखक—फ्रासीसी विभाग—जान सेप; लतविया का पी० ई० एन० केन्द्र

विश्व उदारतावादी संघ—पोदगोर्नी को विश्व उदारतावादी सघ का तार

जियोवानी मालागोदी, इटली; ओमर कनाउदेनहोवे, बेल्जियम; पाल हार्टलिंग, डेनमार्क, पेर फेदरस्पील, डेनमार्क; हरमोद लानुंग, डेनमार्क, एरिक; मैंड, जर्मनी; जो ग्रीमोड ग्रेट ब्रिटेन; ई० एच० टोक्सोपियस, नीदरलैंड; एम० आर० मसानी, भारत, पिनहास रोसेन, इजराइल, गासतोन थॉर्न लक्समबर्ग; गुन्नार गार्बो, नार्वे; वेरनिल ओहलिन, स्वीडन, विली ब्रेस्त्वर, स्विट्जरलैंड।

ब्रिटेन, फ्रास, बेल्जियम, स्पेन पुर्तगाल, इटली, जर्मनी, स्वीडन, डेनमार्क, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, जापान, भारत, फिलीपीन्स, उगाण्डा, कनाडा, अमरीका, मैक्सिको, अर्जेनटीना, चिली, पेरागुए और आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय संगठनो और वहा के लोगो द्वारा व्यक्तिगत रूप से विरोध प्रदर्शन

ब्रिटेन—सोवियत अधिकारियो को भेजा गया खुला पत्र जो 'दि टाइम्स' के २४ नवम्बर, १९६५ के अक मे प्रकाशित हुआ।

क—अलवारेज, साइरिल कोनोली, ब्राइन ग्लैनविले, गोरनवी रीस, क्लासी साइगल, फिलिप टायनवी, जॉन वेन, सी० वी० वेजवुड, रिबेका वस्ट।

ब्रिटेन—गार्जियन के फरवरी १९६५ के अंक मे प्रकाशित ब्रिटिश विश्वविद्यालय के अध्यापको के पत्र

आर० एफ० क्रिस्चियन (वरमिंघम), रिचर्ड फ्रीबॉर्न (मानचेस्टर), मैक्स हेवार्ड (आक्सफोर्ड), फ्रैंक करमोद (ब्रिस्टल), जार्ज स्टीनर (कैम्ब्रिज), हैरी विलेटस (आक्सफोर्ड)

ब्रिटेन—मारगारेट गार्डनर का 'इज़वेस्तिया' के नाम पत्र, फरवरी १९६६

ब्रिटेन—वर्नार्ड लेविन का 'दि टाइम्स' के ६ अप्रैल, १९६६ के अक मे छपा पत्र

फ्रांस—स्वतंत्रता और मानव अधिकार संस्था का सोवियत राजदूत को पत्र निकोलस जैकब, एवोकत एला कोर्त

फ्रांस—शोलोखोव को पत्र

मारिस ब्लैंको, ज्या कासो, ज्या केवरल, मारग्रेट डूरस, पियरे इमेनुयल, एन्द्रे फ्रेनाड, माइकल लियेरिस, एलेन रोवी ग्रिलेट।

फ्रांस—लोकतत्री वकीलो की अन्तर्राष्ट्रीय सस्था की फ्रांसीसी शाखा की घोषणा पियरे कोट, चार्लस लेडरमैन, जो नार्डमन, जे० मजार्ड, रेने विलियम थार्प

फ्रांस—कोसिगिन को फ्रास के विश्वविद्यालय के तीन सौ अध्यापको का पत्र

पेरिस—एलेन, वेरोप, बारतोली, वासती, वाजोऊ, वेतिलहीन, ब्लांक, केलोज, कासो, चौकार्द, चोम्वार, द लोवे, चोम्वर द लोवे (श्रीमती), कोत पी०, कूलियोली, दालसेज, दुचेमिन, दुप्रेन, फ्रे, गांगुलहेम जार्ज, जर्नेत्त, गनजार्द, ग्रापिन, ग्रिमा, गुइयार्द, हिपोलाइत, कास्तलर लानकोम्वे, लाफीत पी०, लाफीत एस०, लास वर्गनास, लेवेग्यु. लेमर्ले, लेमेरी, लोस्की एन०, लोस्की वी०, मार्सेल जी०, मारो, मीचा, मिचाद जी०, मोनोद जे०, पास्कल पी०, फिलिप ए० पोइरियेर, पोमो, रोगुइन, रिगाइत, रोविन्सन, रोवेले, रोवेरोत, रोजियर, मोथीज, शवार्ज एल०, सीवाचेव, सेमन ज०पी०, सेमन एम० मेनेज, तापिएव एल०, त्रेन वेदेल, वेपदेवोए, वीसवीन।

रेनीज़—आउल, ब्रून वुगार्द, कासी, कारपेंतियर, कोतमेलिक, दीवियर, दुरान्द, एसतियोन, पोलियो, फौकाद, फ्रीओऊ, गवोरियओ, ग्लेजर, गोउपलो, ग्रैगरी, गुएरिस्दो, गुइवार्च, लाग, लेबोत्त, लेकाल्व, लेकोहन, लेगोउपिल, लेमेत्र, लेमोतानेर, लिवरमन,मेरियु, मेतीवियर, मेवल, मिलन, पेरीज, प्रीजेंन्त, रिवियार्द, रिचार्द, राइवेत पी०, राइवेत आर०, रोबिन, रोवोद, साकूएद, वाचेर, वियालार्द, विगनेरो, विलारे, वातात, वोदेरेल, वोसववेत, लिरोद, माराके, मारास्त, आर०, मुसात्त, सोकोलोगोरस्की।

बोर्दो—कैंलोनीन, वेरे

केन—जोहानेत

क्लेरमोंत—पेरांद—देमेरसो

दिजों—अरमेनगोद, ब्रून, कोर्वेंत, लाइजो, वील

जीनोव—अकुवुरियर, ग्रेनोवल,—कास्तलर

लिले—बोन अमूर, वोवीयर, क्रौजेत एम०, देरविल ए०, दुचित, फ्रेचित, फ्रेचित एल० जियाचेती, ग्लातिनी, लिराय जे० पी०, लेवियर, लेवियर जे०, मालिनग्रे ए०, मोरेल, मोरो जे० एल० ।.

लीओन—एर्हार्ड

मार्सील—वाकरी, कास्तलर, मनडेलब्रान, विसकोती, जरनर

मोंतपेलीर—ब्रूनन जे० सी०, डेमोगोत, फ्लामात, जालावर्त, बेसेदे, क्रास ई०, रोक्म

नान्सी—रोबोल्

नीस—ओनीमस

पोइतीर्स—कोयेराल्ल, फ्रादन, गातेयू, हेरवीर, माइकात, दि ओयार्त, तेरासोऊ, तूर्जेंत

तूर्स—बारावोएन, वोरस, चेवेलियर, कोलिन जे० पी०, लाफोद जे०, लेनोर जी०, मारकोलिन म्योनीर, राइचेत, रोगेत जे० रोगेरी, साब्लेग्राक्स, साइमनडन

एक्सन प्रान्त—आगुलहन, आउवेनक्यू, बोनकोर्त, वोइसन, कालमेती ई०, कालमेती जे०, कौरेरे, डेफोस द राऊ, डोरीज, दूवी, एस्कूदाई, फलामेत, फलैक्सास, गावेर्त, गार्दे गेरार्द, गोल्विन, ग्राजत, गुइग्रोन, जीन, काइस कोलोदजीत, लाइवेत, मानेसी, मातरान, मार्तनिज़ माऊरोन, मेरलीर, मेयर, मौलीनीर, मौनिन, नौज, ओरसिनी, रायबौन, दि रापाराज, रोचे, रोचे मदाम, तालादोरे, तेती वेरनहेस, वेनी, वर्जनी, फ्लोसेलीर, विनसेंट, वोकोविल्स्च,

स्ट्रासबर्ग—बारेयू, ब्रौन, कारतीर, देलेग्यू, देजाले, दुप्रात, मदाम, गोतस्चेल ट्राप, कापलर, लागारीग्यू, पारेंत, मारोस्वी, वील, वेरे,

तौलौस—आद्रेयू, अर्नाद, वासताइद जी० दानासार, ब्लाचे, ब्रूनेत, ब्रूनेत मदाम, वालेवात, केपीलियर, कैरियर, कास्ताइग केतेयू, कोरोस, कोस्ता, देलगादो, दुमस, दूपियस, दुरलिग्रान फौचेर, फेनेत-गार्दी, फोनक्युएरने, फ्रायदूर, फ्रामि लहेग, गोदेचो, गानेल, ग्राइएहल, जेम्ज जानी, गायेसेर, ला कोम्ब्रेद, श्रमती ला काम्ब्रेद, लोफोरकेद, लववर, लिबोई, ल्यूको, मागनो, मौरी, मौरेल्स, मोनचोज, नाइक्यू, नाइवात, श्रीमती नाइवात, श्लेफर, सेगुएला, सेगाए, सेन्तो, सेरका, सेरका, सेराल्ता, सोविरान, तेलेफर, टामस, त्रोवे, वीयर, वोल्फ जामोजस्का, बोयर, ब्रिमो, वोलीनेली, एसकापास, लोपोर्त, वाई० राइजर तेपी जे०, वोरेल, देवीलर, दूरन एस०, कौम्प्लेज, लेग्रोस, जे० पी०, लेग्रोस आर०, मेफ्रेराल मान्लाप्लेत माजदुपाए, मैथी एफ०, मैथी आर०, मूनोज़ ए०, नावेक, सेक्वेस, ए०, वोल्फ आर०, हामा

फ्रांस—"प्रावदा" के नाम फ्रासीसी बुद्धिवादियो का पत्र

ज्यां-लूई वेरौल, डेनियल डेलोर्म, जोरिस आइवेन्स, अरमांद लानो, माइकेल लीरीज, वाइवीज मोतांद, हेलेने पार्मेलिन एन फिलिप। एदुआर्द तिगनोन, जेकीज प्रीवर्त, मैदेलीन रीनो, वाइवीज राबर्ट, साइमल सिगनोरे, वर्को

बेल्जियम—वेल्जियम लीग द्वारा मानव अधिकारो की रक्षा के लिये तयार प्रतिवेदन

वर्ट्रेन्ड रस्सेल पीस फाउडेशन—दि इन्टरनेशन फेडरेशन फार दि राइट्स आफ मैन दि फ्रेंच लीग आफ दि राइट्स आफ मैन, दि स्पेनिश लीग आफ दि राइट्स आफ मैन (निष्कासन मे) ला यूनियन इतियालाना पर इल प्रोग्रेसी देला कचचुरा, दि वर्ल्ड कलचरल कौंसल—रेमंड आरों मार्सेल ब्रियों, रेनी कासिन, जेववीज चेस्तनेत, अर्नेस्ट्र वेलीज ए० फ्रैंको कोसे, जार्ज इर्श जोसिफ चेसिर, ज्यां लेपाइन जेब्रीयल मार्सल, डेनियल मायेर, जूल्स रोमां, ज्यो रोस्ताद, जे० शलुम्बरफ़र, चाल्सर्स विलद्राक, मारिस जिनिवोई, रेनी तवातियर, जार्ज' कौनचों, मार्क बर्नार्ड, गिलवर सेसब्रों, जे० ग्रीतवैक, ज्या-मेरी दोमेनाक, डेनिस द रूजमोंत, एलिजाबेथ गूज, ग्राहम ग्रीन एल० पी० हार्टले

स्पेन—शोलोखोव के नाम स्पेन के बुद्धिवादियो का खुला पत्र

अर्नेस्तो सवातो, रोदोल्फो मोंदोल्फो, नोर्वेको रोद्रिगुएज बुस्तामांत, कारलोस एस फायत, इजेकिल वर्नादों कोरिमब्लित, अरवर्तो सीरिया, जोस एस० कैम्पोबस्सी, लियों दूजोमने मारियो मारगुलिस जेम ग्रिमवर्ग, एमील्यो द सेको, जोस मैनुयल कारो अमेरिको गीहओलदी, होरासिया सेंगुईनेती, जार्ग ओचुवा द एगुइलियोर, अर्नेस्तो बोनासो, मार्सेल टी अलवर्तो, वालेनतीन गुतीएरेज, मार्केर कापलन, ओसवाल्दो वेयर, एलिजावेथ अजकोना क्रानवेल,

पुर्तगाल—एडोल्फो फेरेसियो, विक्टर फ्लेका, डा० एनरीक्यू साइमन, डा० लौरेनो, पेलायो गेरसिया, विक्टर कासरतेली, डा० लोरेंजो लिविरेस (एच) सर एनरीक्यूज मारेस सर कारलोस ए० पास्सीनेरो, सर रेइनाल्दो मोनतेलफिल्पो कारवालो, डा० एन्टोनियो रामोस, सर दोमिन्गो एम० रिवारोला, रोत्ती स्कूल डा० जोर से लूइस एप्लेयर्न्दे, डा० कारलोस जुबीजोरेता, सरा जोसेफिना प्ला, डा० कारलोस ए० गोनजालेज, डा० जूलियो सैसर कावेज, सर कारलोस सागुयेर, सर जोसे मारिया गोमेज सनजूरजो, डा० जूलियो केसर ओचे, मारियो हेले मोरा, डा० दारियो कास्तागनीनो, सर हेरमान मुग्गीआरी, सर लूइस ए० वारिओस, ओलगा ब्लाइदेर, जुआं कारलोस दा कोस्ता, एदित जिमेनेज, पेदरो दि लासकियो, डा० विनसेन्ते सोसा, कारलोस कोलोमविनी, इदा तालावेरा, सर जोस ए० विलबाओ, लोरा कारक्यूज, सर कारलोस पोदेस्ता, रोवेरतो थाम्पसन मोलिनास

इटली—इटलीवासी लेखको का शोलोखोव को तार

गोरगिओ बासानी, कारलो कासोला, निकोला चेरोमोते, दीगो फेबरी, पाओलो मिलानो, इयुगेनियो मोनयाले, एगेलोमोते एलसा मोरान्ते, एलबेरतो मोराविया, अम्बेरतो मोरा, मारिओ प्राज, लूईगीसालवातोरेली, इगनाजिओ सिलोने, गिआनकारलो विगोरेली

इटली—इटली की सांस्कृतिक संस्थाओ और बुद्धिवादियों का विरोध

एसोसियाजिओने नाजिओनाले ओतोरी साइनमातोग्राफीकी (ए एन ए सी
सेन्त्रो पोपोलारे पर ला लिबेता देला कलचुरा
सेन्तरो स्तुदीए राइसेचे सूई प्रोवलेमी इकोनोमिको सोसिली (सी ई एस इ एस)
सरकोलो 'कार्लो पिसाकेन'
फेदराजिओने गाइओवानिले सोसिलिस्ता
रेदाजीओने देला 'फीरा लेतेरारिया'
यूनियने इतालिआना पर इल प्रोग्रोस्सो देला कलचुरा (यू आइ पी सी)
वितोरिओ एन्जो एलफिएरी, एयेतानो अरफे, पासकुआले बादेरीनी, एन्टों यो बारोलीनी, मारिया बेलोनकी, आरीगो बेनेदेती, लिबेरो विगीआरेती, नोरबेतो बोबियो, लामबेरतो घोरगी, गाइओवानी कालो, इतालो कालविनो, लुइगी दाला पाइकोला, गाइनो दोरिआ, एन्रिको इमानुएली, फ्राको फेरारोती, राफाएलो, फ्राचीनी, पीएरो गादा कोती, फ्रांको गेरारदी, लोरेंजो गिगली, मसतावो हेरलिंग, वित्तोरिओ लिबेरा, फ्राको लोम्बारदी, पीतरो नुवोलोने, फ्लाविओ ओरलादी, रोबेतो पाने, इतालो पीतरा, मारिओ रेमोन्दो. पौलो सनतारकान्गेली, वित्तोरिया सानतोली, गियुसेपी सान्तोमासो, बोनावेनतुरा तेची, कोरादो तुमिआती, दीगो वालेरी, नीनो वालेरी, गियुलिआनो वासाली
इटली—मिलान के समाजवादी सिंडीकिस्टो का विरोध
ब्रूनो दि पोल, ग्राब्रीएले वाकालिनी
जर्मनी—जर्मनी के बुद्धिवादियो का शोलोखोव को पत्र
कार्ल गमेरी, मुनचेन, अरनस्त बुचोल्ज, हमबर्ग, पीटर कौलमास, हमबर्ग, विलहेम पलितनेर, हमबर्ग, वरनेर फ्रीदमान, मुनचेन, हन्स मेसमैन, हमबर्ग, वारनेर हेबेबरान्द, हमबर्ग-रेगेन्सबर्ग, इयुगेन कोगोन, दार्मस्तादृत, इरविन कोसचमीदेर, मुनचेन, वेरहार्ड एफ० क्रामेर, हमबर्ग, डी० हीनरिच लान्दाल, रुडोल्फ वाल्टर लिओनभारदृत, हमबर्ग इरिक लूथ, हमबर्ग, गोलो मैन, जूरिच, ल्योनहर्ड रीनीस्च, मुनचेन, कार्ल हीज रेंगस्टोर्फ, मस्टर आई. वेस्त्फ. हैन्स रीनफेलखेन, मुनचेन, कार्ल स्किलेर हमबर्ग, कार्ल लुडविग स्कनेदेर, हमबर्ग, हरबर्ट सिगेर, हमबर्ग, ब्रूनो स्नैल, हमबर्ग, गेरहार्ड स्जेजेसनी, मेनचेनथ्रो सोमेर, हमबर्ग, मारतिन वालसेर. फ्रीदरिचशाफेन, कार्ल फ्रीदरिच फरहर० वोन वेजसाकेर
स्वीडन—स्वीडन के विद्यार्थियो की सस्था वेरडांडी का सोवियत लेखको के सघ को पत्र
वेरतिल एस० ओरबेरग, एलिजाबेथ सादबर्ग
डेनमार्क—फर्तसेवा को डेनमार्क के बुद्धिवादियो का विरोध
बेनी एन्देरसेन, एन्देरस वोदेसेन, नील्स वारफोएद, जोरगेन गुसतावा ब्रान्दृत, तोरदेत ग्रोसओन, मारिआ गियाकोवे, थोरकिल्ड हनसेन, ग्रूफेहारदेर, हैन्स हारतेल, वनूद होल्स्त, पेर होभोल्त, येसपर जेनसेन, इरिक वनूदसेन, इवान मालीनोवास्की, क्लास रिफब्जेर्ग, पीतर रोनिल्ड, जोरगेन स्वलीमैन, जोर्गन सोने, लिसे सोरेनसेन, विली सोरेनसेन, जेस ओर्नस्बो, लीफ तान्दुरो

पोलैंड—पोलैंड विश्वविद्यालय के अध्यापकों का "प्रावदा" को भेजा गया विरोधपत्र

जानिना वालुश्रोवा, जानिना वोरोस्जिलस्का, एन्दरजेज कीलवासिन्स्की, एन्टोनी जाम्ब्रोवस्की वीसला लोगोदजीन्स्की, क्जीस्जतोफ पोमिश्रान, मैरिला लागोदजीन्स्का

जापान—जापान के बुद्धिवादियो का शोलोखोव को पत्र

केनजो तकायानागे, ताइको हीरावायाशी, माइको ताकेयामा, इचीरो फुकुजावा, योशिहीको सेकी, किकयुश्रो नाकामुरा, जेन्गो श्रोहिरा, माइको हीरामात्सू

भारत—भारतीय संसद सदस्यो का पोदगोर्नी को तार

विजयलक्ष्मी पण्डित, लक्ष्मी मेनन, एन० जी० रगा, एम० आर० मसानी, राममनोहर लोहिया, एच० वी० कामथ, गगाशरण सिंह, डाह्याभाई पटेल, एच० सी० हेडा, एम० एस० अणे, अटल बिहारी वाजपेयी, पी० एन० सप्रू, एम० रत्नेस्वामी, के० मनोहरन, अकवर अली खा, रवीन्द्र वर्मा, वी० वी० गाधी

भारत—भारतीय बुद्धिवादियो का कोसिगिन को तार

वी० वी० कार्निक, ए० बी० शाह, जमशेद, एच० बी० वाडिया, एम०आर० मसानी (ससद सदस्य), प्रभाकर एय्यर, विजय सिन्हा, गुलाबदास ब्रोकर, ए० याज्ञनिक, वसन्त दावतर, दिलीप चित्रे, प्रभाकर पाधे, नसीम इज्रेकील, कल्याण कुमार, के० के० सिन्हा, मनीबेन कारा, सत्येन्द्र कुमार, डी० ई० श्री निवासन, लक्ष्मण शास्त्री जोशी, गोविन्द कामत, मेघश्याम रेगे, यशवन्त चित्तल, आर० पानकर

भारत—भारतीय लेखको और विश्वविद्यालय के अध्यापको की शोलोखोव से अपील

नसीम इजेकील, बम्बई, गगाधर, बम्बई, गुलाबदास ब्रोकर, बम्बई, माधव अचवाल, बडोदा, ए० आर० देशपाण्डे, नागपुर, अन्नदा सजानकर राय, बंगाल, एम० गोविन्दन मद्रास, एम० एस० कल्याण, मद्रास, जी० शकरकुरूप, केरल, के० एस० कारन्त, मैसूर, डी० आर० वेन्द्रे मैसूर, आरसी प्रसाद सिंह, बिहार, आर० एम० चाला, आध्र प्रदेश, जगदीश गुप्ता, उत्तर प्रदेश, इन्द्रनाथ, पंजाब, डी० के० वेडेकर, पूना, वी० एस० खाडेकर, महाराष्ट्र, के० वी० जगन्नाथन, मद्रास, पी० श्री आचार्य, मद्रास, बी० एम० अग्रवाल, कलकत्ता, जे० वी० अप्पा स्वामी, मद्रास, सुकुमार अभीकोद, केरल, जगदीश बैनर्जी, कलकत्ता, उत्पल के० वसु, कलकत्ता, सुशील भद्रा, कलकत्ता, एन० रामा भाद्रन, मद्रास, राज्य, यू० एम, भेदे, बम्बई, प्रदीप बोस, कलकत्ता, सी० बुल्के, रांची, प्रेमचन्द, दिल्ली, एन० जी० दामले, पूना, एम० पी० दवे, सूरत, (गुजरात), एम० एस० दीपक, नयी दिल्ली, वामन रावजी घावले, बम्बई, विमल घोप, कलकत्ता, सुमठ नाथ घोप, कलकत्ता, एन० एस० गोरेकर, बम्बई, जी० बी० ग्रामोपाध्याय, बम्बई, के० सी० गुप्ता, कलकत्ता, डी० गुरुमूर्ति, बगलौर, जाफर हसन, हैदराबाद, इलियानोर एम० होघ, एन० सी० जैन, नयी दिल्ली, एम० आर० जम्बुनायन, बम्बई, के० नारायन काले, पूना, एम० एस० कल्याणसुन्दरम, मद्रास राज्य, सी० एम० कामदार, सौराष्ट्र, अनन्त कानेकर, बम्बई, के० एस० कारान्त, एस० कनारा, के० सी०

खरन, मद्रास, विन्दा करदीकर, बम्बई, कृष्ण, मुरादाबाद, एस० कृष्णमूर्ति, मद्रास, टी० एन० कुमार स्वामी, मद्रास, मैथ्यू एम० मुझीवेलिल, केरल राज्य, जे० एम० मजमुदार, कलकत्ता, प्रतापराय मोहनलाल मोदी, बडोदा, डी० एन० मुकर्जी, कलकत्ता, ए० के० मुकर्जी, दिल्ली, एस० सी० नागर, अमरावती, के० वी० नायर, त्रिवेन्द्रम, एम० के० नायर, केरल राज्य, एस० जी० नायर, केरल राज्य, एच० जी० नरहरी, पूना, ब्रज किशोर 'नारायण', पटना, ए० एन० नरसिंह, मैसूर, एस० नारायण, बिहार, डा० इन्द्रनाथ, चडीगढ (पजाब), शिवनाथ, पश्चिम बंगाल, जी० ए० परदेसी, पूना, जे० पार्थसार्थी, आगरा, बी० पटनायक, कटक, डी० सी० पट्टाभिरमण, मद्रास, जे० के० पिल्ले, केरल, के० एम० पिल्ले, त्रिवेन्द्रम, वी० पुराणिक, मद्रास, के० आर० राघवन, मद्रास, टी० जे० रगनाथन, मद्रास, ए० नागा जी० राव, आन्ध्र प्रदेश, सी० के० एन० राव, बगलौर, एन० वी० रत्नम, नलिन रावल, अहमदाबाद, ए० एस० राय, शातिनिकेतन, एस० एस० रेगे, बम्बई, पी० जी० सहस्त्रबुद्धे, पूना, फासिस सालेस, केरल, एस० आर० मार्गबन्धु, शर्मा, एन० अर्कोत, ए० पी० सिंह, दरभगा, मोहन सिंह, जालधर, एच० एम० एल० श्रीवास्तव, दतिया, प्रोफेसर आर० सुब्बाराव, उस्मानिया विश्वविद्यालय, एन० चिदम्बर सुब्रह्मणयम्, मद्रास, के० सुरेन्द्रन, त्रिवेन्द्रम, ए० सूर्यनारायणमूर्ति, आन्ध्र, वी० वी० तिलक, तिरुवनमलाई, एन० ए०, पी० तण्डवरयन, मद्रास, एम० वरदराजन, मद्रास, रामण वकील, वम्बई, एम० वैंकटरामैया, कुरनूल, एम० टी० वासुदेवन् नायर, कालीकट, जी० शकर कुरुप, काज़ी अब्दुल वदूद, कलकत्ता, एम० एम० कोठारी, वम्बई।

फिलीपीन्स—सोवियत लेखक सघ के सुरकोव को फ़िलीपीन्स के अतर्राष्ट्रीय पी ई न केन्द्र का विरोध।

उगाण्डा—उगाण्डा मे विश्वविद्यालय के अध्यापको और लेखको का सोवियत राजदूत को विरोध

एम० एम० कार्लिन, इरिसा किरोन्दे, गेराल्ड मूरे, वी० एस० नाइपाल, राजात नियोगी डेविड रूबादिरी पाल तेरौक्स

कनाडा—कनाडा के बुद्धिवादियो का कासिगिन को तार

मारग्रेट एवीसन, एल्फ्रेडे वेले, एवी वोक्सर, मोर्ले कालाघन, कैथलीन कोबुरन, फ्रेड कोग्सवैल, जान कोलोम्वो, रावर्टसन डेवीस, किलदारे दोव्वस, लूडस डुडेक, विलाफिड इफ्लेसटन, जैक्यूज फोच, नार्थापे फ्रीये, रावर्ट गिब्बस, जक्यूज गोदबौत, फिलिस गोतलीव, जानग्रे, हग हुड, माइकेल हार्नीआस्की, चार्लेस इस्राइल, क्लादे जस्मिन, जार्ज जानस्तन, विलियम किलव्रर्न, आइरविंग लेटन, डगलस ले पान, नार्मन लेविने, डेविड लेवी, जान मारलिन, जान मेसल, हेनरी मोसकोविच, जे मैकफेरसन, ग्वेदोलिन, मक्इवेन, डेसमण्ड पोसी, जान पीटर, एल्फ्रेड पुर्डी, जेम्स रेनी, फ्रैंक स्काट, रोविन स्केलटन, वाइवीसथेरिआल्त, फ्रैंक वाट. फिलिस वेब्ब, जार्ज ह्वाले, एदेले विसेमन, जाक विन्टर, हग मैंकलेनन,

अमरीका—अमरीकी लेखकों और बुद्धिवादियों का शोलोखोव को तार और कोसिगिन को पत्र।

चडवर्थ एलबी, हन्ना एरेंद्, डब्लयू० एच० आदेन, साल बैलो माइकेल हेरिंगटन, लिलियन हैलमैन, जान हरसे, राबर्ट लोवैल, ड्वाइट मैक्डोनल्ड, नार्मन मेलर, लेविस ममफोर्ड, रेनहोल्ड नेबर, रावर्ट पेन वारेन, फिलिप राव, मेयर स्काविरो, विलियम स्टाइरन, लाइग्रोनेल ट्रिलिंग फिलिप रोथ

अमरीका—मैरी मैकार्थी का कोसिगिन को एक पत्र

अमरीका—कोलम्बिया विश्वविद्यालय का कोसिगिन को विरोधपत्र

चार्लस एब्राम्स, क्वेनटिन एडरसन, हरमैन असुवेल, हैरोल्ड वार्गर, जैक्यूज वारज़ुन, राबर्ट बैकनैप, डेनियल बैल, एरिक बेंटले, हैन्स वेलेनस्टेन, जोसफे, एल० ब्लाऊ, ओत्तो ब्रेनदेल, जविगनियो ब्रेजेज़िस्की, जसटस बुचलर, विलियम एल० कैरी, एन्ड्यु जे० चेपी, शैफर्ड बी० क्लोघ, जेम्ज ए० कौलटर, राबर्ट डी० क्रास, रावर्ट कम्मिंग, इलैक्जेन्डर डलिन, आर्थर सी० डान्तो, विलियम-थ्योडोर दि वेरी, हर्बट डीन, सैमुयल डेवोन्स, जोसफ डार्फमैन, एफ० डब्ल्यू० डूपी, इलैक्जेन्डर एरलिक, गैरी फेनबर्ग, हैनरी एम० फोले, डोनल्ड एम० फ्रेम, होरेस एल० फ्रेस, जान ए० गैराती, वाल्टर गेलहार्न, विलियम जे० गूदे, पेरसाइवल गुनमैन, लूड्स एम० हाकर, विलियम ए० हैन्स, टेरु हेयाशी, मिल्टन हैडलर, मार्विन हारिस, जूलियस, ए० हेल्ड, एलवर्ट, हाफस्ताद्तर रिचर्ड हाफस्ताद्र, कार्ल ह्वोदे, जे० सी० हुरेविल्ज, चार्लस, इसावी, चार्लस कादुशिन, डोनल्ड कीन, पीटर वी० केनेन, लारेंस सी० कोल्ब, रिचर्ड एफ० खन्स, पाल हेनरी लॉग, विलियम लाचतेनबर्ग, ओलीवर जे० लिसीटजन, स्टेवेन मार्कस, रूफस डब्ल्यू मैथुसन, सिडनी मोरगेनबेसर, रावर्ट, एफ० मर्फी, जोसफ ए० माज्जओ, रावर्ट के० मरटन, डब्याइट सी० मिनेर, विलियम जे० मिचेल, अर्नेस्ट नागेल, थामस एफ० ओदा, हरवर्ट पासिन, मॉनराड जी० पालसेन, आई० आई० रावी, विलिस जे० एम० रीसे, ओरेस्ट रानुम, जोसफे रोथशिचल्ड, डाकवर्ट, ए० रूसतोव, जोसेफ स्काच्त, फ्राइत्ज स्टर्न, जैकब टौवेस, डब्ल्यू० वाई० टिंडल, लायनल ट्रिलिंग, जान अनतरेकर, मारिस वैलैंसी, विलियम विकरी, इमानुयल वालेरस्टीन जेम्स जे० वाल्श, रावर्ट के० वैब०, उरियल वेनरीच, सी० मार्टिन विलवर, रुडोल्फ विल्कोवर, रावर्ट पाल वोल्फ, जोसेफ जूबिन, ए० डोक बारनेत, रावर्ट ब्रूस्टीन, राबर्ट जी० डेविस, मार्टन एच० फ्रीद, पीटर गे, हेनरी एफ० गाफ, हैरी डब्ल्यू० जोन्स, जान लोत्ज, एरिक एल० मैकितरिक, एन्ड्रयू एल० मार्च, जेम्स आई० नाकामुरा.

अमरीका—प्रिसटन और रुतगर विश्वविद्यालयों का कोसिगिन को विरोध

प्रिसटन विश्वविद्यालय—राल्फ अब्राहम, एफ० जे० अलमग्रेन, जूनियर पाल वाम, ल्योनार्डो कास्टीलेजो, जान ए० हार्टिगन, विलवर्ट हन्ट, रावर्ट पी० लैंगलैड्स, जान डब्ल्यू० मिलनर, एडवर्ड नेलमन, नार्मन ई० स्टीनरोड. एलिआस एम० स्टेन, सैमुयल ट्रैमैन, हेल एफ० ट्रोटर.

गेरार्ड वाशनितजर, आर्थर एस० ह्वेटमैन, इयुगेन पी० विगनर, डब्ल्यू० आर० कोनर, जान वी० ए० फाइन, जी० के० गालिस्की, जे० जे० कीने, टी० जे० लूस, जूनियर डब्ल्यू० जी० होनमैन, ई० लामर्ट, विक्टर लागे, जान नेबर, ए० के० फोसिओन, एल्फ्रेड एल० फौलेट, ए० वी० गियामात्ती, स्टर्लिंग हेग, एल० एफ० हाफमैन, राबर्ट वी० होलैंडर, जेम्स इ० इर्वी, आन्द्रे माना एफ० ओब्रादी, डब्ल्यू जे० एस० सेयरर्स, अलबर्ट, सोनेनफेल्ड, एडवर्ड डी० सुलीवन, के० डी० ऊत्ती, सी एच० बेकर, इरविंग डिलीआर्ड, वी० ए० डोएनो, सी० के० फिश, जान वी० प्लेमिंग, लारेंस वी० हालैंड, जान आर० कूए हेल ए० डब्ल्यू० लिंडस, हेनरी के० मिलर, रेमिंगटन रोज, एलान एफ० सै० डी, वी० एस० एफ स्वान, ए० वेरेथीन, जेम्स वैलिंग्टन, लूई० फिशर, राबर्ट ट्रकर, डब्ल्यू० जी० बोवेन, एन० आर० क्लिफर्ड, सी० सी० गिलसपाई, रिचर्ड ए० लेस्टर, फिट्ज माचलुक, बी० जी० मालकील, जे० डी० मूनी, एल्फियस टी० मैसन, ह्यूगो वेदो, पाल बेनासराफ, आर० बोन द सूसा फर्नीज, रस्सल एम० डान्सी, एस० एन० हैम्पशायर, जे० एस० सोलेंडे०, जूनियर, डब्ल्यू० ए० काफमन, जी० एच० ओल्का, टेरीपेन्नर, अमेली रोर्ती, रिचर्ड एम० रोर्ती, जेम्ज एम० स्मिथ, ए० जात्मेरी, जी० एफ० टामस, ग्रेगरी ग्लास्टोज, एफ० डब्ल्यू० यग,

उच्चाध्ययन संस्था प्रिंस्टन—एन्ड्रयू एलफोल्डी, विलियम डब्ल्यू बून, हैरोल्ड एफ० चर्निस, फ़ेलिक्स गिलबर्ट, कग्सन हुआग, मार्सटन मोर्स, एटले सेलबर्ग, होमर ए० टामसन, सी० वी० वैजुवुड, हैसलर व्हाइटनी,

रूटजर्स विश्वविद्यालय—रिचर्ड एम०कोहन, ल्योन गीनबर्ग, विलियम जे० होयत, बेन्जामिन मुकिन होप्त, एलिन बीरोबिन्स, बर्नार्ड सेरिन, हेनरी टोरे, कैनेथ जी०वोल्फसन, बेजामिन बेकर, इलैक्जेंदर वालिकी, वाल्टर ई० वेजानसन, पीटर चरानिस एम० दत्त, टामस आर० एडवर्डस, जूनियर फ्रांसिस फर्गुसन, रिचर्ड मैककार्निक, मैक्स गिडेओनूस, डेनियल एफ० होवार्ड, ए० एल० कोलोग, ग्लैडीज एस० क्लीनमन, डी० एफ० मेन, साइमन मार्कसन, जान मैककोर्मिक, रिचर्ड मोएबूस, जान जे० ओ कोनोर, विलियम फिलिप्स, मार्टिन पिवकर, रिचर्ड ओरियर, सिडनी रैटनर, हरबर्ट एच० रोबेन, मार्टिन ए० शेरमन, जैक्सन टोगी, एफ० आस्टिन वाल्टर, साइमन एन० व्हिटनी, हेनरी विकलर, गाइडो वीजेंड ।

संयुक्त राज्य अमरीका—अमरीकी लेखकों और बुद्धिवादियों का कोसीगिन के नाम पत्र डेनियल आरो, लियोनेल एबल, हेनरी डी० आइकिन, विलियम एलफ्रेड, जैक्वीज बार्जुन, एरिक बैटले, जान बेरीमन, मारिस ब्यूली, जान मैलकाम, ब्रिनिन, राबर्ट ब्रूस्टीन, जूल कामट्जकी इलियानोर क्लार्क, मार्शल कोहेन, लेविस कोजर, जेम्स डिकनी, मार्टिन डबरमन, एफ० डब्ल्यू० डुपी, जार्ज पी० इलियट, रिचर्ड एलमन, विक्टर एरलिच, डोनाल्ड फैजर, जूल्स फीफर, लेसली ए० फीडलर, लूई फिशर, आर० डब्ल्यू फ्लिट, जोसेफ फ्रैंक, ब्रूस फ्रीडमन, सेन्फोर्ड फ्रीडमन, एरिक फ्राम, नार्मन फ्रूच, जूजीन डी० जिनोवीज, एलिन गिन्जबर्ग, पाल गुडमन, एडोल्फ वाटलीब, माइकेल हैम्बर्गर, स्टूवार्ट हैम्पशायर, ओसकार

हेंडलिन, एलजावेथ हाडविक, माइकेल हेरिंटन, टाम हेडेन, हीराम हायदन, एन्टनी हेक्त, जोसेफ हेलर, लिलिवन हेलमन, नाट हेन्टोफ, जान हेरस, रिचर्ड होफ स्टाटेर, जान हालेंडर, सिडनी हुक, रिचर्ड होवार्ड, इरविन होवे, एच० स्टूग्रार्ट ह्यूगस चालर्स जैक्सन, पाल जैकवस, जैसपर जान, स्टेनली काफमन, वाल्टर काफमन, एल्फ्रिड काजिम, लूई क्रोनेनबर्जर, स्टेनली कूनिड्स, जैरेमी लार्नर, राय लिचटेंन्सप्रीन, राबर्ट लोवेल, जैक लुडविग, स्टाटन लिड, केनेथ एस० लिन, रोवी मैकाले, ड्विट मैक्डोनाल्ड, रामन मेलर, बर्नार्ड मालामुड, स्टीवन मार्कस, हरवर्ट मारक्यूज, पैटरिशिया मार्कस, रूफुस मैथुसन, विलियम मेरेडिथ, राबर्ट मार्टन, मेरियान सी० मूर, फ्रैंडिक मार्गन, हन्स मोरगेंथो, राइट मोरिस, राबर्ट मदरवैल, होवार्ड मिनेरोव, वार्नेट न्यूमन विलियम फिलिप्स, मर्लिन एस० पिटजेल, नार्मन पोदोरेत्ज, रिचर्ड पोरियर, टामस पाइचोन, फिलिप राह्व, जान हेनरी रैले, एडरीनहार्ट, डेविड रीसन, लारी रीवर्स, हैरोल्ड रोजिवर्ग, मार्क रोत्को, रिचर्ड एच० रोवेरे, मीयर शैपीरोव, रिचर्ड शैलेटर, आर्थर श्लेसिगर, जूनियर, मार्क शोरेर, फ्रेडिक सीडेल, कार्ल जे० शैपिरोव, सूसान सोनस्टाग, मुरियल स्पार्क, स्टीफेन स्पिडर, थ्योडोरस स्टेमोज़, ल्यो स्टीनवर्ग, रिचर्ड स्टर्न, आई० एफ० स्टोन, विलियम स्टाइरोन, वाईन्नी साइफर, एलेन ट्रेट, हैरोल्ड टेलर जान अपडाइक, एनडी वारहोल, एलिन वेस्टिन, रीड व्हिटमोर, जेरेमी वर्ट वीजनेर, रिचर्ड गिलवर, विलियम टेलर

मैक्सिको—मैक्सिको के लेखकों का शोलोखोव को तार

एल्फ्रेडो कार्डोनोपेना, डोलोरीज़ कास्त्रो जूआन वानुग्लास, जेवियर पेनालोजा, मेरिया लूइसा मेन्दोजा, आर्चिवाल्ड वार्नेट, चानेका माल्डोनाडो जार्ज लोपेज पागज, एनरिक गोंजालेज कासानोवा, अली चुमासेरो, एन्टोनियो रोवल्ज, एलेना पोनियार्तोवस्का, मेरिया एलवीरा वेरमुडेज, कार्लोस सोलोरजानो, फरनान्दो सानचेज, मायन्स, वाइसेन्ट लेनेरो, जोवाकिवन डायज़ कानेडो, जोस रोवूएलतास, गुटिरेज टाइवन, फ्रासिस्को मोतवर्दे, अनेस्तो मेजिया साचेज, टामस मोजारो, एडमण्डो, वालाडेस, रैमन जिराळ, माइगुएल गार्डिया इम्पारो डाविला, जोस एमिलियो पाचेको, लूई गुइलेरमो, पियाजा, मारिया डोलोरीस एराना, गेब्रीएल कारीगा, मेरिया जोस दे चोईटा, जोस एन्टोनियो नावा तागले, सैल्वाडोर रेयीज़ नेवारीज, एल्फोसो डीयज, दियाट्रीज रेरीज नेवारीज,

अर्जनटीना—अर्जनटीना के बुद्धिवादियों का शोलोखोव को तार

जोस मैनुअल कारो जोरगे, ओचोआ द एगुईलेओर, होरासियो सेनगुइएरती, अर्नेस्तो वोनारसी, एच० ए० अलवर्टी और अन्य

चिली—चिली के लेखकों का शोलोखोव को तार

कार्लोस मुरान्द, लूई सानचेज, लातोरे, गारियो सानचेज, मार्तिनसेरदा, आलियो आरेनारा मार्सेलो सेगाल, जेम कास्तिलो,

पैरागुए—पैरागुये के बुद्धिवादियो का शोलोखोव को पत्र

डाक्टर एफ्रेम कार्दोजो, फ्रासिस्को पेरेज मारिसेविच, जीसस ब्लाको सोनचेज, डा० पेन्टर उरबीदा रोजाज, डा० जोस मारिया राइवारोलो मातो, गुइलेरमो हीसेके, डा० लूई द गास्पर्री एनरिक चेज, एना आइरिस चोवज, जे० ए० रास्किन, डा० जुआन वोगिनो, डा० एनिरक कोदाज गोरोमतियागा, माइगेल चेअ सार्दी, अर्क माइकेल वर्ट, एल्सालो एरियाज, डा० मैनुअल, ई० आर्गूएलो, डा० ओसकार ट्रिनीडाड, राउल द ला फोरेत, जीसस रूईज नेस्तोसा मारियेला द एदलर, गुइलेरमो केतेरेर, ग्लेदीज कारमागनोला, ओसकार फ़ेरिरो, लिक लूई ए० रेस्क, अलवर्ती मिल्तोम

आस्ट्रेलिया—आस्ट्रेलिया के लेखकों का खुला पत्र

जेम्स मैकाले, आर० एफ गीसीनदेन, विन्सेंट वकले, मैनिग क्लार्क, पीटर कोलमन, रोजमेरी दोब्सन, मैक्स हैरिस, डोनाल्ड हार्न, इवान जोन्स, एच० जी० किपावस, क्रिस्टोफ़र कोच, जोफरे लेहमन, हैनरी मेयर, स्टीफन मुराए—स्मिथ, ए० पोर्टिअस, जे० एम० डागलस पिगल, शिवनारायण राय, लायड रोस, क्लीमेंट सेमलर, पीटर श्रव, आर० ए० सिम्पसन विवियन स्मिथ, डागलस स्टीवार्ट, नार्मन टालबोट, केन टर्नर, इयान टर्नर

परिशिष्ट—४

'दि टाइम्स' में पत्राचार

रोम मे सभा

महोदय,

श्री अलेक्जेन्डर त्वार्दोवस्की और नोवी मोर के बारे मे आपका प्रशसनीय अग्रलेख (३० मार्च) मुझे यह विश्वास करने के लिये प्रेरित करता है कि संभवतः आपके पत्र के पाठको को यह जानने मे दिलचस्पी हो कि ईस्टर से पहले के सप्ताहात मे मुझे रोम मे श्री त्वार्दोवस्की से मिलने का सौभाग्य मिला।

यह अवसर यूरोपीय लेखक समुदाय के "अध्यक्षमण्डल" की बैठक था, जिसकी गतिविधिया सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे के समय से स्थगित ही थी। पिछले वर्ष मार्च मे मण्डल की वैठक हुई, जिसमे श्री ज्या-पाल सार्त्र श्री जीउसिप उगारेत्ती और मैं उपस्थित थे। लेकिन कोई भी रूसी (उन्होने वैठक मे आने से इनकार कर दिया था) बैठक मे उपस्थित नही था। इस वैठक के बाद इस मुकदमे की निन्दा करते हुए एक वक्तव्य जारी किया गया, जिसे आपने मेरे हस्ताक्षर से प्रकाशित करने की मेहरबानी की।

पिछले कुछ महीनो मे रूसियो ने पूर्व और पश्चिम के बीच फिर "बातचीत" शुरू कराने की चिता दिखाई जो यूरोपीय लेखक समुदाय के मुख्य उद्देश्यो मे से है और इस बात के सकेत दिये हैं—यद्यपि ये सकेतो से अधिक कुछ नही हैं—कि सिन्यावस्की और डेनियल के भाग्य का निवटारा, वहुत अधिक सुदूर भविष्य मे नही, वल्कि जल्दी ही, इस तरीके से हल किया जा सकता है जो विश्व जनमत को अपेक्षाकृत संतोषजनक लगेगा। अत: लेखक समुदाय के महासचिव, श्री ज्या कार्लो विगोरेली ने १८ मार्च को समुदाय के अध्यक्षो और उपाध्यक्षो की वैठक बुलाने का निश्चय किया और यह बात महत्वपूर्ण थी कि श्री त्वार्दोवस्की, श्री अलेक्जेई सुरकोव सहित, वैठक मे हिस्सा लेने का समय निकाल सके।

काफी लम्बी और उत्तेजनापूर्ण बहस के वाद, एक वक्तव्य जारी किया गया कि समुदाय, यद्यपि सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे की भर्त्सना करने वाले अपने १६ मार्च के वक्तव्य पर कायम है, फिर अपना कार्य शुरु करने पर सहमत हो गया है और "यह आशा करता है कि सद्भाव के इस प्रदर्शन को अवश्य प्रतिध्वनि मिलेगी" अर्थात् सोवियत सरकार

की ओर से यह प्रतिध्वनि होगी। इस वक्तव्य पर इटली की ओर से लेखक समुदाय के अध्यक्ष ऊगारेत्ती ने और सात उपाध्यक्षो ने हस्ताक्षर किये : त्वार्दोवस्की ने सोवियत सघ की ओर से, ताइवर देरी ने हगरी की ओर से, हालदोर लैक्सनेस ने आइसलैण्ड की ओर से, जारोस्लाव आइवाज़कीविक्ज ने पोलैंड की ओर से, बर्नार्ड पिंगो ने ज्या पाल सार्त्र की ओर से और स्पेन के एक प्रतिनिधि ने जोस लुई अरागुरेन की ओर से और मैंने हस्ताक्षर किये।

श्री त्वार्दोवस्की सतर्कता बरतने की चिंता से बडे व्यग्र दिखाई पड रहे थे। लेकिन उन्होंने सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे की कडी भर्त्सनाओ को अत्यधिक सब्र और शान्ति से सुना (ताइवोर देरी ने और पश्चिम के प्रतिनिधियो ने यह निन्दा की), और त्वार्दोवस्की ने निकट भविष्य मे नोवी मीर मे यह वक्तव्य प्रकाशित होने की सभावना के बारे मे कुछ रूखे मज़ाक किये और इस अवसर पर उनकी नीली आख मे एक क्षीण चमक दिखाई पडी।

भवदीय

जान लेहमन

अप्रैल १९६६

रोम में बैठक

महोदय,

मैं इस बात से बेहद खुश हूं कि श्री जान लेहमन ने, जैसा कि उन्होने हमे अपने पत्र (एक अप्रैल) मे बताया है, पूर्व और पश्चिम के बीच फिर "बातचीत" शुरू कराने मे यूरोपीय लेखक समुदाय की बैठक के माध्यम से सहायता दी है और यह बातचीत श्री सिन्यावस्की और श्री डेनियल के "मुकदमे" के समय से समुदाय का काम ठप्प हो जाने के बाद शुरू हुई है · मैं—और मुझे विश्वास है कि श्री लेहमन भी—यह समझता हू कि हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने की निष्क्रियता को समाप्त करना महत्वपूर्ण है, जो विभिन्न देशो को विभाजित करती है और इस प्रकार, आप उसे क्या कहते हैं, एक सम्पर्क कायम करना आवश्यक है। लेकिन एक या दो उलझन मे डालने वाले प्रश्न मन मे उठते रहते हैं।

पहली बात तो यह है कि यदि दो रूसी लेखको को मिथ्या अभियोगो के आधार पर दण्ड देने के कारण यूरोपीय लेखक समुदाय का काम बन्द किया गया था तो अब ऐसा क्या हुआ है जिससे यह स्थिति बदल गई है ? ये दोनो लेखक अभी भी जेल मे हैं, भयकर स्थिति में रह रहे हैं और यह कहा जाता है कि उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया है। श्री लेहमन हमें, अनजाने और अनचाहे मियोसिस की अद्भुत अभिव्यक्ति के द्वारा, बताते हैं कि रूसियों

ने "मकेत दिये हैं—यद्यपि यह सकेत से अधिक कुछ नही है—कि सिन्यावस्की और डेनियल के भाग्य का निवटारा, बहुत दूर भविष्य मे नही, वल्कि जल्दी ही इस तरीके से हल किया जा सकता है, जो विश्व जनमत को अपेक्षाकृत संतोषजनक लगेगा।"

लेकिन इस तथ्य के अलावा कि इन दो लेखकों के भाग्य का निबटारा विश्व जनमत को सतोषजनक लगने वाले तरीके से नही, वल्कि स्वयं इन लेखकों को संतोषजनक लगने वाले तरीके से किया जाना चाहिये, क्या मैं यह प्रश्न पूछ सकता हूं कि यह मामला कैसे कभी भी हल किया जा सकता है ? निश्चित है कि केवल इन कैदियो को रिहा करना ही काफी नही होगा; इन लोगों ने सार्वजनिक रूप से अपने विरुद्ध छेड़े गये निन्दा अभियान का सामना किया है, उनकी रचनाओं को नष्ट कर दिया गया है, भूखे न्यायाधीशो ने उन्हे अपराधी ठहराया है, जेल मे डाला है और उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया है। और यदि अब इन्हे केवल रिहा कर दिया जाता है, तो इससे इन सब बातो का हल नही निकलता। ये सब घाव नही भरते।

तो उन्हे किस प्रकार क्षतिपूर्ति दी जायेगी ? क्या उनसे सार्वजनिक रूप से क्षमा याचना की जायेगी ? क्या उनके ऊपर सम्मान की वर्षा की जायेगी और सताने वाले अधिकारियो को दण्ड मिलेगा ? क्या उस पतित प्रणाली को, जिसने उनके साथ ऐसा व्यवहार किया है, समाप्त कर दिया जायेगा। यदि इन मे से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नही है, जैसा कि लेहमन अच्छी तरह जानते हैं, यही उत्तर है, तो, "सोवियत सकेतो" का क्या अर्थ समझा जा सकता है, यदि यह मान भी लिया जाये कि इसका अर्थ उससे अधिक है, जिसे जेक्स 'सब मूर्खों को एक वृत्त मे एकत्र करने का ग्रीक उद्बोधन" करते है ?

दूसरी बात यह है कि यह बात "महत्वपूर्ण" कैसे है कि श्री त्वार्दोवस्की समुदाय की बैठक मे उपस्थित होने का "समय" निकाल सके ? उन्होने अपनी पत्रिका को और बधनो मे बाधने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। यह एक सुखद विद्रूप ही है कि त्वार्दोवस्की का रूसी अधिकारियो को अपने अच्छे आचरण का वचन देने का समाचार श्री लेहमन की इस रिपोर्ट के प्राय साथ-साथ प्रकाशित हुआ कि त्वार्दोवस्की ने समुदाय की बैठक मे, सिन्यावस्की और डेनियल के "मुकदमे" की कडी भर्त्सना को "अत्यधिक सब्र और शान्ति" से सुना।

इन परिस्थितियो मे मैं इस बात से प्रभावित नही हुआ हूं कि त्वार्दोवस्की ने अपनी पत्रिका मे ऐसी भर्त्सनाओ के प्रकाशन की सभावना के बारे मे 'कुछ रूखे मजाक किए और उनकी नीली आख मे एक क्षीण चमक दिखाई पडी।" (क्या प्रसंगवश मैं यह पूछ सकता हूं कि उनकी दूसरी आख का रग कैसा था ?) और विशेष रूप से मैं इसलिए प्रभावित नही हूं कि ये भर्त्सनाए इस पत्रिका मे पहले कभी प्रकाशित नही हुई हैं, और भविष्य मे भी कभी नही होगी।

मुझे एक ऐसे व्यक्ति के बारे मे सुनने का अवसर मिला है, जिसे उस डण्डे का चुम्बन करने पर दण्ड मिला, जिससे लोगो को पीटा जाता था। मैं आशा करता हूं कि मुझे यह कहने की अनुमति होगी कि मैं श्री लेहमन के इस कार्य को, उस डण्डे का चुम्बन करने के कार्य को, जिससे किसी अन्य को दण्डित किया गया है, आवश्यकता से अधिक आकर्षक नही पाता।

भवदीय

६ अप्रैल, १९६६ — बर्नार्ड लेविन

रोम मे बैठक

महोदय,

यदि श्री बर्नार्ड लेविन ने यूरोपीय लेखक समुदाय की रोम मे हुई बैठको मे हिस्सा लिया होता, तो मैं नही समझता कि वे वह असतुलित पत्र लिख सकते थे, जिसे आपने ६ अप्रैल को प्रकाशित किया। उस स्थिति मे वे यह अनुभव कर पाते कि अध्यक्षमण्डल के किसी भी सदस्य द्वारा (अथवा कार्यसमिति के किसी भी सदस्य द्वारा जो बैठक मे मौजूद था) "उस डण्डे का चुम्बन" करने का सवाल ही नही था "जिसने किसी अन्य को दण्डित किया था" जैसा कि उन्होने वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने के कार्य को बडे ही सजीव ढग से चित्रित किया है, और इसी प्रकार पिछले वर्ष जिन लोगो ने वक्तव्य पर हस्ताक्षर किये थे और जिस वक्तव्य मे सिन्यावस्की और डेनियल के साथ हुए व्यवहार की स्पष्ट शब्दो मे निन्दा की गई थी, उनका भी इस बात से बदल जाना किसी भी स्थिति मे सभव नही है।

इस पत्र मे श्री त्वार्दोवस्की पर जो छिपा प्रहार हुआ है, मैं उसकी विशेष रूप से निन्दा करता हू, जैसा कि सोवियत लेखक सघ के भीतर पुरातन पथियो और युवक उदारतावादी गुटो के बीच चल रहे सघर्ष का कोई भी सामान्य विद्यार्थी जानता है, श्री त्वार्दोवस्की ने इन पुरातनपथियो का जिस साहस से सामना किया है, उसका हम इस देश के निवासी मुश्किल से ही अनुमान लगा सकते है। अभी तक उन्हे दबाया नही जा सका है और उनकी पत्रिका के एक नये सहायक सम्पादक ने सिन्यावस्की-डेनियल के निन्दनीय मुकदमे के विरुद्ध जबरदस्त विरोध प्रकट किया था, यह सब जानते हैं।

श्री लेविन सोवियत लेखको और पश्चिम के लेखको के बीच सूझ-बूझ और एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का वातावरण तैयार करने के हर प्रयास का उपहास कर सकते है। लेकिन हमे इस बात की जानकारी है कि सोवियत लेखको की एक बडी सख्या हमारे साथ अधिक से अधिक मुक्त रूप से विचार करने को उत्कण्ठित है और आज भी जो प्रतिक्रियावादी अपना सिक्का जमाये बैठे हैं, उनका प्रभाव समाप्त करने के लिये प्रयत्नशील

है। हमारा विश्वास था कि हम फिर इस सम्पर्क का अवसर दे कर. उनके हितों की रक्षा कर सकते हैं और यह कार्य उनके अभागे सहयोगियो के हितों का बलिदान किये बिना भी किया जा सकता है।

अब कोई भी व्यक्ति उस भयकर व्यवहार को समाप्त नही कर सकता, जिसे सिन्यावस्की और डेनियल को भोगना पडा है। लेकिन हम इस आशा से कोई भी अच्छा काम कर सकते है कि निकट भविष्य मे उनके कष्टो का अन्त होगा। यदि ऐसा नही होता, तो मैं श्री लेविन को यह आश्वासन दे सकता हू कि लेखक समुदाय के पश्चिमी सदस्य, जैसा कि रोम मे उपस्थित सोवियत प्रतिनिधिमण्डल को पष्ट कर दिया गया था, यह निश्चय करेंगे कि इस सम्पर्क को बनाये रखने की कोई तुक नही है।

मैं यह कहना चाहूगा कि श्री ऐंगस विल्सन और बर्नार्ड वाल, जो इस देश मे यूरोपीय लेखक समुदाय के प्रमुख अधिकारियो मे से है, इस पत्र के साथ अपने नाम सम्बद्ध करना चाहते है। व्यक्तिगत रूप मे मैं यह कहना चाहता हू कि मै लम्बे अर्मे से श्री लेविन द्वारा अपने डेली मेल के स्तम्भ में इस और अन्य देशो मे विभिन्न टोलियां और संस्थाओं द्वारा ऐसी बातो के प्रति कडा रुख न अपनाने और कम्युनिस्टो के पीछे चलने की जो आलोचना की है, उसकी मैं प्रशंसा करता रहा हूं और इस कारण से मुझे उनके इस आरोप पर और भी गहरा खेद है कि यूरोपीय लेखक समुदाय भी इन्ही भ्रात सस्थाओ की कोटि मे आता है।

भवदीय,

जान लेहमन

१० अप्रैल, १९६६

पहली स्वतन्त्रता

महोदय.

हाल मे जान लेहमन और बर्नार्ड लेविन के बीच जो पत्र व्यवहार हुआ है (दि टाइम्स, १, ६ और १० अप्रैल) वह सिन्यावस्की और डेनियल के वर्तमान दुर्भाग्य और लेखक सगठनों द्वारा उन्हे रिहा कराने के प्रयत्नों की ओर ध्यान दिलाता है। इन प्रयासों में अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सगठन पी० ई० एन० ने हिस्सा लिया है।

इस संगठन के अध्यक्ष, आर्थर मिलर, और मैं, इसके सचिव के नाते निरन्तर सोवियत लेखक संघ के पदाधिकारियों से सम्पर्क बनाये रहे है और हमने इन दोनो लेखको की ओर से अधिकारियों से बातचीत करने और उन्हें क्षमादान दिलाने के लिये अनुरोध किया है। हमारे इन प्रयासो के परिणामस्वरूप, मैं अप्रैल १९६६ में मास्को गया और वहां मैंने यूरोपीय लेखक समुदाय के मंत्री, श्री विगोरेली सहित इन दोनों लेखको को क्षमादान दिलाने के प्रयत्न किये। सोवियत लेखक संघ के पदाधिकारियो ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय पी०

ई० एन० मे सम्मिलित होने और यूरोपीय लेखक समुदाय से फिर अपना सम्पर्क कायम करने की इच्छा के बावजूद हमे अस्पष्ट संकेतो के अलावा अन्य कुछ नही दिया। इसके बाद श्री अलैक्जेई सुरकोव के साथ जो पत्र व्यवहार हुआ, उसका अभी तक ऐसा कोई परिणाम नही निकला है, जो सबके लिये संतोषजनक हो और जिसे सामान्य विवेक की विजय कहा जा सके। अर्थात् दोनो लेखकों की रिहाई और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन पी० ई० एन० मे सोवियत लेखको का सम्मिलित होना।

यह सोवियत अधिकारियो द्वारा सद्भाव प्रदर्शन के बिना नही हो सकता, जिसमे उनका यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि वे हमसे इस बात की आशा नही करते कि हम पी० ई० एन० के घोषणापत्र के विरुद्ध आचरण करेंगे। लेखको और कलाकारो की सृजनात्मक स्वतन्त्रता के मामले पर, पश्चिम का कोई भी आत्माभिमानी सगठन, समझौता नही कर सकता।

अतः हम इस समाचार का स्वागत करते है (दि टाइम्स, १२ अप्रैल) कि इन गर्मियो मे बी० बी० सी० सिन्यावस्की और डेनियल के मुकदमे के बारे मे एक टेलीविज़न वृत्त चित्र प्रसारित करेगा। लेकिन आपकी टिप्पणी का यह सकेत कि इस बात की संभावना है कि ब्रिटेन सरकार बी० बी० सी० के ऊपर इस प्रसारण को रद्द करने अथवा इसमे आवश्यक काट-छांट करने के लिये दबाव डाल सकती है, चिंताजनक है। इस कारण से कि सोवियत सघ मे कभी भी इस मुकदमे की कारवाई का पूरा विवरण प्रकाशित नही हुआ। यद्यपि सोवियत सरकार के एक प्रवक्ता ने इस बात का आश्वासन दिया था, ब्रिटेन की जनता को इस मुकदमे पर आधारित टेलीविजन चित्र देखने से वंचित करना उचित नही है।

यह सुझाव देना कि बी० बी० सी० अपने टेलीविजन चित्र को सोवियत अधिकारियो द्वारा सेंसर करने के लिये प्रस्तुत कर सकता है, अथवा यह सुझाव कि ब्रिटेन सरकार इस अकल्पनीय कारवाई पर विचार कर सकती है कि वह बी० बी० सी० पर यह वृत्त चित्र प्रसारित न करने के लिये "दबाव डाले", निश्चित रूप से सोवियत अधिकारियो को आश्चर्य चकित कर देगा, क्योकि हमारा सदा यह दावा रहा है कि हमारा रेडियो, टेलीविजन और समाचारपत्र पूरी तरह स्वतन्त्र हैं। आखिरकार स्वय सोवियत सरकार इस बात पर जोर देती है कि सिद्धातो की बलि देकर पूर्व और पश्चिम के देशों के बीच बेहतर सम्बन्ध कायम नही किये जा सकते। यह वस्तुत एक विडम्बना होगी कि यदि मुकदमे पर आधारित एक वृत्त चित्र, जिसमे विचाराधीन विषय पहली स्वतत्रता है, इस बात का पहला उदाहरण बने कि स्वय हमारी पहली स्वतंत्रता मे किस प्रकार बाहर से एक अन्य देश द्वारा प्रभावशाली रूप से हस्तक्षेप किया जा रहा है।

भवदीय,
डेविड कार्वर
महासचिव, अन्तर्राष्ट्रीय पी ई एन

परिशिष्ट—५

सिन्यावस्की एक पश्चिमी समालोचक की नजर में

लेखक फ्रैंक करमोद

पश्चिम के देशों मे यह विषय भर्त्सना अथवा सामान्य टिप्पणी का भी नही होता कि राजनीतिक समालोचकों मे अक्सर राजनीतिक लगाव का अभाव होता है। और वे उन रचनाओं के द्वारा जिन्हें प्रायः "फॉर्मेलिस्ट" कहा जा सकता है कुछ सीमा तक ख्याति अर्जित कर लेते हैं। अथवा जहा कोई पहले से विद्यमान विचार अथवा सिद्धात, साहित्य या समालोचना का स्वरूप निर्धारित करता है, वहां लेखक के ऊपर सिद्धात का पिच्छलग्गू होने की गलती करने का आरोप लगाया जा सकता है और स्पष्टतया यह एक ऐसा आरोप है, जिसमें न्यायपालिका को कोई दिलचस्पी नही होती।

हमारी साहित्यिक उप-सस्कृति का एक प्रकट अथवा नियमबद्ध सामाजिक ढाचे से पारस्परिक सम्बन्ध न होने के कारण, कम्युनिस्ट देशो के सिद्धातकारो ने ऐसे स्पष्टीकरण दिये हैं, जो उनके देशों में जितने स्वय सिद्ध दिखाई पड़ते हैं, पश्चिम के देशों मे उतने ही असगत भी दिखाई पड़ते हैं। समाज द्वारा हमारी रचनाओ पर आरोपित प्रतिबन्धों की परिभाषा देना और उनको प्रकट करना वड़ा कठिन है, अतः हमारे प्रतिवाद मुश्किल से ही साहित्यिक होते हैं। यदि कोई व्यक्ति बहुत साहसी हो तो, सोवियत अधिकारियो द्वारा निर्दिष्ट संस्कृति के विरुद्ध, विद्रोह करने के लिये शब्द और विधायें प्राप्त करना आसान है: वहां स्पष्ट रूप से परिभाषित सिद्धांत है, जिसने स्पष्टतया एक सरकारी साहित्य को जन्म दिया है और कोई लेखक इसके सौंदर्यानुभूति के पहलुओं की दृष्टि से इसका विरोध करना चाहेगा, क्योंकि यह साहित्य, दूसरे लोगो के लिये हानिप्रद और स्वय एक लेखक के रूप में, उसके अस्तित्व और शक्तियो के लिये भी हानिकारक रहा है। ऐसा लेखक यह जान लेगा कि इच्छा न होते हुए भी इस बात की सभावना है कि वह राजनीतिक अधिकारियों को रुष्ट कर दे, क्योकि किसी भी रचना की केवल इसी कारण से निन्दा की जा सकती है कि उसमें सरकार द्वारा मान्य और निर्दिष्ट राजनीतिक दृष्टिकोण को स्पष्टतया प्रकट नहीं किया गया है।

यह स्थिति होने के कारण सिन्यावस्की के लिये ऐसी पुस्तकें लिखना, प्राय: संभव नही था, जिनमे समाजवादी यथार्थवाद के नियमो की ओर कोई ध्यान नही दिया गया हो अथवा उन्हे एक ऐसे देश मे प्रकाशित करना, जहा उनका मूल्यांकन केवल इस दृष्टिकोण से होना था कि इन पुस्तको ने इतिहास और न्याय के, सरकार द्वारा मान्य सिद्धांतो को सहायता पहुंचाई है या उनके मार्ग मे बाधक बनी है। इसके बावजूद उन्होंने अपनी रचनाओं को पश्चिम मे प्रकाशित किया, जहा दुर्भाग्यवश उनकी गलत व्याख्या होने की भी आशंका है। उन्होने मुश्किल से यह सोचा होगा, जैसा कि उनके विरुद्ध मुकदमा चलाने वालों ने सोचा कि समाजवादी यथार्थवाद का विरोध करने का अर्थ पश्चिम के दृष्टिकोण का समर्थन है। पर समस्त गहराई से पैठे हुए नियमानुकरणवाद के बावजूद हमे, यदि हम इस बात का जरा सा भी आभास चाहते हैं कि उनकी महत्वपूर्ण रचनाए किस बारे मे हैं, यह समझने की आवश्यकता होगी कि वे एक ऐसा कार्य कर रहे हैं, जिसे करने का हम प्रयास तक नही कर सकते, और यह कार्य करने के लिये उन्हें रूसी (जिसमे सोवियत साहित्य भी शामिल है) साहित्य और सौंदर्यानुभूति के संदर्भ मे अथवा उसके विरुद्ध आचरण करने की आवश्यकता थी।

यह कहा जा सकता है कि पश्चिम मे केवल कैथोलिक लेखको को ही इस प्रकार की स्थिति का वास्तविक अनुभव है, और हमे वस्तुत: एक समानान्तर उदाहरण और अनुभव उपलब्ध है। एक विचारपूर्ण कैथोलिक यह तर्क दे सकता है कि कला के लिये, यदि चमत्कृत कर देने वाला होने की आवश्यकता नही है, तो यह भी आवश्यकता नहीं है कि यह चमत्कारहीन हो। और यह भी आवश्यक है कि यह अपने अनुकरण को शुद्ध रखे और पाप से प्रवादपूर्ण साठगाठ करने से बचे। लेकिन एक कैथोलिक यह भी कह सकता है कि कला को धार्मिक आस्था से अलग नही किया जाना चाहिये और इसके साथ ही वह मारितेन के इस आदेश से भी सहमत हो सकता है कि "जो अस्पष्ट है उसे स्पष्ट रूप से छोड दो।" यह दृष्टिकोण रूस के सरकारी दृष्टिकोण से कम कठोर है। अत: अन्तत. सिन्यावस्की को सीधे सघर्ष का सामना करना पडा : इस्तगासे के अनुसार साहित्य एक प्रकार का प्रचार है……मैं इस विचार से सहमत नही हो सकता। "लेकिन मुकदमे से बहुत पहले ही वे इस विचार के अस्तित्व से परिचित थे और उनकी पुस्तको ने इस विचार पर स्पष्ट रूप से प्रहार किया और इसकी पूरी तरह से अवहेलना की। जैसा कि लियो नावेदज ने कहा है ये रचनाए साहित्य की परिधि से बाहर के खतरो की विडम्बनापूर्ण चेतना से भरी हैं, जिन खतरो को इन पुस्तको ने अपने लेखक के ऊपर डाल दिया है; उनका कम से कम एक आयाम ऐसा है, जिसे समाजवादी यथार्थवाद कहा जा सकता है।

यदि राज्य द्वारा मान्य और निर्दिष्ट सौंदर्यानुभूति के सिद्धांतों को कड़ाई से लागू किया जाता तो सिन्यावस्की द्वारा लिखित समालोचनाओं की भी भर्त्सना की जा सकती थी। पास्तरनेक पर लिखा गया निबन्ध, केवल इस कारण से सरकारी क्रोध से बच सका

कि उन कविताओं की तरह, जिनपर इस निवन्ध मे विचार हुआ है, यह निवन्ध डाक्टर झिवागो से अपेक्षाकृत कम स्पष्ट है, लेकिन यह निश्चित है कि सिन्यावस्की ने सोवियत समाजवादी यथार्थवाद के पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण, "पूर्ण अथवा समग्र" के प्रति आख मूदने की प्रवृत्ति के लिये, इसकी निन्दा करने में पास्तरनेक का अनुसरण किया है— यह किसी भी रूप में यथार्थवादी नहीं है, बल्कि अनाकर्षक और एकरूपता पर आधारित चुनाव है, जिसमें विविधता और विलक्षणता को समाप्त कर दिया गया है, जो पूरी तरह से "उस विकसित ग्राह्यता और कलाकार की ईमानदारी" से विपरीत है "जब वह वास्तविक मनुष्यों से", प्राणियो से सम्पर्क करता है, जो एक जीवित मानव पात्र की तरह, सदा पूर्ण और विलक्षण होता है"। यथार्थवाद, एक नौकरशाह की कल्पनाहीनता से बचता है, लेकिन वह शुद्ध "रूमानियत अथवा कल्पनाशीलता से भी बचता है", जो आसानी से अतिशय काल्पनिक के गर्त मे जा गिराती है, अभिव्यक्ति की, सचाई की उपेक्षा करती है। पास्तरनेक की क्रांति की उदास संकल्पना ने, समाजवादी यथार्थवाद को एक कही बडी गलती का महत्वपूर्ण परिणाम बना दिया था; साहित्य से विश्वासघात, इस व्यापक विश्वासघात का एक अंग था; अर्थात् क्राति को एक यात्रिक तरीके से स्तालिनवाद मे बदल देना। यदि स्वयं मनुष्य की विलक्षणता से ही उसके अपने स्वतन्त्र अस्तित्व से ही विश्वासघात किया जाता है, तो कलाकृतियों के लिये क्या आशा की जा सकती है? अतः उन्होंने ऐसी कविताएं लिखी, जिनमे मनुष्य की इस विलक्षणता, इस स्वतन्त्र सत्ता पर फिर जोर दिया गया, जो सिन्यावस्की के अनुसार वास्तविक के चमत्कार से प्रभावित थी। उन्होंने केवल पास्तरनेक की कविताओ को ही नही, वलिक स्वयं अपनी गुप्त रचनाओ को भी ठीक इसी दृष्टि से देखा।

लेकिन उन्होंने अपनी रचनाएं पश्चिम मे प्रकाशित की। हमारे अपने यात्रिक तरीकों से निष्कर्ष निकालने के तरीके है। उनके सन् १६५६ मे प्रकाशित प्रवन्ध "आन सोशलिस्ट रियलिज्म" के पाठक वे लोग थे, जो समाजवादी यथार्थवाद के भीतर से सीधे जाकर दूसरे छोर पर पहुंचने की आवश्यकता अनुभव नही करते थे, जो पहले ही महान् लक्ष्य और इसकी पूर्ति के लिये चुने गये तरीको के प्रति सदेह से भरे थे (जिसमे कलाओ और महान् लक्ष्य के निर्दिष्ट सम्बन्ध शामिल हैं, जिसे पुलिस के सिपाही और नौकरशाह तक समझ सकते हो), अत इस पुस्तक की प्रतिध्वनि, कुछ सीमा तक, प्रभावहीन ही रही। यह प्रबन्ध जीवन को एक योजना मे बदल देने, सगत अतीत के अस्वीकरण, और प्रत्येक व्यक्ति के समान भविष्य के विचार को, पास्तरनेक की तरह ही, अस्वीकार करता है। सिन्यावस्की ने १८ वी शताब्दी के एकरूपतावाद से जो तुलना की है, वह इसके सार को पूरी तरह प्रकट करती है, ऐसी राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक और सार्वभौम, व्यवस्था, जिसकी स्थापना ऐसी प्रत्येक वस्तु की कीमत चुका कर हुई, जो किसी भी वस्तु का अलग स्वतन्त्र अस्तित्व सिद्ध करती हो, जिससे, केवल अत्यधिक व्यक्तिवादी प्रतिभा-

सम्पन्न लोगो को छोडकर, जैसे मायाकोवस्की जैसी प्रतिभाग्रो को छोड़ कर, इस स्थिति मे केवल "अर्द्ध परम्परावादी अर्द्धकला" ही प्राप्त हो सकती है।

यह निष्कर्ष पूरी तरह से स्पष्ट मालूम पड़ सकता है, क्योकि हम इन्हे इनके विकास क्रम से अलग करके देखते हैं, क्योकि हम इनके और उस सस्कृति के बीच के तनाव से इन्हे अलग करके देखते हैं, जिस संस्कृति मे इनका प्रतिपादन हुआ। लेकिन इन बातो का सिन्यावस्की के अपने व्यक्तिवाद के सार से सम्बन्ध है, जैसा कि हम अनगार्डेड थॉट्स शीर्षक के अन्तर्गत सकलित अमूर्त विचारो मे देखते हैं। मुझे बताया गया है कि रूस मे पहले भी ऐसे सग्रह प्रकाशित हुए है। लेकिन यह सत्य है कि यह सकलन मानतेन की परम्परा के अन्तर्गत आता है। यह एक आत्माभिव्यक्ति की पुस्तक है, जो सकारात्मक नायक और सामाजिक एकरूपता के हामियो को आघात पहुचाये बिना नही रह सकती थी। हम लोग जो प्रतिद्वन्द्वितावाली सस्कृति मे रह रहे है, क्या स्वय से यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि यदि हमारे अल्पसख्यको की सख्या इतनी बडी न होती तो क्या हमे यह करना चाहिये था, अनगार्डेड थॉट्स एक व्यक्ति वाले अल्पसख्यक वर्ग का प्रतिवेदन है। कभी-कभी यह कहा गया है कि सिन्यावस्की को अपने मुकदमे के दौरान जिन अनेक अन्यायो को सहना पड़ा, उनमे एक यह चाल भी शामिल थी, जिसके द्वारा इस्तगासे ने उसके पात्रो के उन विचारो और उन आरोपो को स्वय सिन्यावस्की के विचार और आदते बताया जो उन्होने अपने पात्रो को दी थी और कभी कभी यह कार्य, और यदाकदा पात्रो के विचार और आदते एक स्पष्ट उद्देश्य से प्रकट किये गये थे जैसा कि "ग्रैफोमेनियाक्स' मे चेखव पर हुए कटु प्रहार से प्रकट होता है, और जैसा कि यहूदी विरोधी कुछ अभिव्यक्तियो से प्रकट होता है। यह वस्तुत. सही है। लेकिन उन विचारो के बारे मे हम क्या कहेगे, जिनपर, उदाहरण के लिये वासिलयेव द्वारा आपत्ति उठाई गई और जिन्हे अनगार्डेड थॉट्स मे लेखक ने स्वय अपने आत्म चिंतन मे अभिव्यक्त किया है ? वे केवल रूसियो की शराबखोरी की ही चर्चा नही करते, बल्कि सैक्स सम्बन्धी कुछ गैर-प्रगतिशील, गैरअनुसरणवादी है (सभवत इन्हें पश्चिम के देशो मे भी ऐसा ही समझा जायेगा और पूर्व के देशो मे तो इससे भी अधिक) . काम सम्बन्धो के बारे मे कुछ मानसिक विकृति जैसी बात है· ··काम क्रिया मे सदा ब्लैक मास जैसी बात रहती है।" काम के आनन्द मे स्त्रियो पर गन्दगी उलटने, डोना अन्ना को एक कुल्टा मे बदलने जैसी बातें शामिल रहती है: "ओह कितनी पवित्र सुन्दर हो तुम, और मैं तुम्हारे साथ यह करूंगा।" हा, किसी भी व्यक्ति के विचारो मे, यदि लक्ष्य पूर्वाग्रह से मुक्ति है, और यदि इसमे आधी भी सफलता मिलती है, ऐसे तत्व हो सकते है और मुझे इस बात मे संदेह नही है कि सिन्यावस्की के विरोधी इस समाचार पर प्राय. कोई आश्चर्य प्रकट नही करेंगे कि पश्चिम मे कुछ लोग ही इन विचारो को बहुत बुरे समझेंगे। लेकिन वे ऐसा करते हैं, यह बात, सिन्यावस्की के लिए, एक संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे हमे उनकी रचनाएं पढते समय अपनी कल्पना मे फिर मूर्त करना चाहिये। सिन्यावस्की

अपने व्यक्तित्व का स्वछन्द अन्वेषण कर रहे हैं और इस कार्य के कारण—जो उनके मार्क्सवादी इतिहास के क्रमविकास के सिद्धात, व्यक्तिपूजा, आदि पर उनके व्यग्यपूर्ण प्रहारों के अत्यधिक अनुरूप है, वह, मुकदमे के समय उपस्थित इज्वेस्तिया के संवाददाता, फियोफानोव के शब्दों मे, "हमारे सबसे वुरे शत्रुओ का सहायक" बन जाता है। अनगार्डेड थॉट्स जिस आत्मचिंतन का प्रतिनिधित्व करता है, वह एक विलक्षण आत्म सत्ता के लिये आवश्यक है, यह उस कलाकार के लिये आवश्यक है, जिसे, "जीवन से अत्यधिक ईर्ष्यापूर्वक प्यार करना है, अर्थात् जिसे पासपोर्ट के फोटो जैसी एकरूपता से वचना है' और जिसे इस स्वाग का अनुसरण नही करना है कि मनुष्य की प्रवृत्तिया जटिल नही हैं, जिनका सम्वन्ध प्रेम और मृत्यु से है, और जो अनेक महत्वपूर्ण दृष्टिकोणो से महान् भविष्य, गौरवपूर्ण भविष्य से असम्बद्ध है।

इन सब वातो से, जैसाकि मैंने कहा है, सिन्यावस्की अच्छी तरह परिचित थे और हमारे यह नाटक करने से उनकी कोई सेवा नही होगी कि उनकी रचनाएं, जिस रूप से हम उनसे परिचित हैं, किसी भी अन्य परिस्थिति में लिखी जा सकती थी। स्वच्छन्दतावाद मे कानून की पूर्व-कल्पना कर ली जाती है। जब सिन्यावस्की की विलक्षण कल्पनाशीलता, इस सम्वन्ध से सर्वाधिक आक्रान्त होती है तब वह अपनी सर्वोत्तम रचनाए प्रस्तुत करते है। केवल कानून तोड़ने की बात प्रभावहीन कल्पना की उडान है और यद्यपि यह लेखक अत्यधिक प्रवुद्ध और कुशाग्र है, तो यदा-कदा अपनी समालोचनात्मक सजगता को ढीला कर सकता है और अत्यधिक जटिलतापूर्ण अतिशय कल्पनाशीलता के स्तर पर आ सकता है—अथवा स्वयं अपने सूत्र के अनुसार, "रूमानियत" के गर्त मे गिर सकता है। उनके ऊपर एक वास्तविक आतंक का जो दवाव है, उसने उनकी रचनाओ को विशेष शक्ति प्रदान की है। उनकी कुछ कहानिया—उदाहरण के लिये, "पखेनत्ज़" दार्शनिक शक्ति से सम्पन्न हैं। लेकिन इनमें वह कसाव नही है जो, सिन्यावस्की की रचनाओं मे, समाजवादी यथार्थवाद के अनुशीलन के समय आता है। वे जब सर्वाधिक नियमानुकरणवादी (फार्मेलिस्ट) होते हैं, तभी उनकी सर्वोत्तम प्रतिभा प्रकट होती है: उनकी सर्वोत्तम रचना की केन्द्राभिमुख औपचारिक विलक्षणताए, अपने आप मे सरकार द्वारा निर्दिष्ट सौंदर्य भावना के पीछे चलने वाले व्यक्ति के लिये सवसे बड़ी चुनौती हैं। यही वात उनकी अधिक स्पष्ट व्यंग्यपूर्ण अथवा समालोचनात्मक रचनाओ को ऐसी विलक्षण शक्ति प्रदान करती है। यह एक प्रभावशाली सुझाव है कि इतने मौलिक और सृजनात्मक विचारो वाले व्यक्ति के समक्ष, विरोध मे रहने के अलावा अन्य कोई विकल्प नही है।

स्पष्टतया सिन्यावस्की अपनी उन रचनाओ में सवसे अधिक प्रभावशाली हैं, जो अतिशय काल्पनिक और "अभिव्यक्ति की सच्चाई" के जटिल पारस्परिक प्रभाव को उत्पन्न करने के लिये पर्याप्त लम्वी हैं, इस पारस्परिक क्रिया के द्वारा अत्यधिक मौलिक विधाओं का जन्म हुआ है। "दि आइसिकल" शीर्षक कहानी वड़े सामान्य वातावरण मे शुरू होती है।

लेकिन इसका अतिशय काल्पनिक कथानक, एक समाज क अधिकृत सिद्धातो को निरन्तर अधिकाधिक उलझाता जाता है और उन्हे अधिकाधिक मात्रा में अप्रामाणिक सिद्ध करता जाता है। इस प्रभाव को उत्पन्न करने के लिये व्यग्यपूर्ण स्वर मे स्विफ्ट जैसी अस्पष्टता का उपयोग हुआ है, जैसा कि उस समय कहानी का नायक हमारे मरने के तरीके पर विचार करता है, जो पूरी तरह से नियमबद्ध और एकरूपता पर आधारित नही है। जब वह हमारे अस्तव्यस्त तरीके से मरने पर विचार करता है और "बड़ी सामूहिक टोलियो" मे न मरने पर खेद प्रकट करता है और यह कहता है कि इस दृष्टि से जीवन एक समाजवादी से कही अधिक, स्टाक एक्सचेज जैसा दिखाई पडता है और "यही वस्तु ऐसी है, जो हमारे जीवन को उसकी दिलचस्पी प्रदान करती है।" कहानी के नायक की भविष्य कथन की क्षमता नौकरशाहो जैसी है, वह एक चेहरे की ओर देखता है और इस चेहरे के मालिक को कुछ आकडो मे बदल देता है, जन्म की तारीख, वेतन की राशि, पहचानपत्रों की सख्या, गर्भपातो की सख्या······।

लेकिन इसके बावजूद "दि आइसिकल" मे भी असम्बद्ध अतिशय कल्पनाशीलता का तत्व है। टेरट्ज़-सिन्यावस्की की एकमात्र रचना, जिसके बारे मे यह कहा जा सकता है कि यह रचना स्वय अपनी दुनिया की पूर्ण सच्चाई का शक्तिशाली केन्द्रविमुख विधा से समन्वय करती है—कि यह अतिशय काल्पनिक का उपयोग ज्ञान और नियत्रण के माध्यम के रूप मे करती है, तो यह रचना केवल "दि ट्रायल बिगिन्स" है। प्रस्तावना सार्थक कल्पनाशीलता की सीमाए निर्धारित कर देती है, लेखको के पृष्ठ से पत्र चुराने वाला पुलिस मैन (ये पत्र उन कीडो मे बदल जाते है, जिन्हे निर्दयता से नष्ट कर दिया जाता है) अन्त मे उस कल्पना की अर्थहीन गरिमा से समन्वित किया जाता है, जिसका उद्देश्य आरम्भ से ही इस पुस्तक को विभिन्नता की पूरी छूट और कथानक के सचालन की स्वतन्त्रता ही नही देता, बल्कि जो आतक के ऐतिहासिक क्षण मे एक दृढ आधार बनता है। यह पुस्तक एक ऐतिहासिक रूपक बन गई है, इसका कारण आत्मव्यजना नही है, बल्कि इस मामले के स्वरूप के कारण ही ऐसा हुआ है क्योकि समाजवादी यथार्थवादी सौंदर्य भावना बचकाने रूपकवाद पर आधारित है। लेकिन यह होते हुए भी यह बात सगतिहीन है कि राबिनोविच, ग्लोबोव और अन्य पात्रो को इस व्यग्यपूर्ण रूपक से चाहे कितनी भी घनिष्ठता से क्यो न सम्बद्ध किया जाये, यह स्वीकार करना पडता है कि ये पात्र इसके बाहर हैं। इनका अस्तित्व एक निश्चित निर्णय पर न पहुचे हुए लेखक की अवहेलनापूर्ण मुक्त कल्पना मे है। अत ग्लोबोव और उसके पुत्र, मैरीना और कार्लिस्की के परस्पर सम्बन्धित वार्तालापो मे वे स्पष्ट व्यग्य और विडम्बना दिखाई पडती है, जिनसे वाघ की आरम्भिक "फार्मेलिस्ट" रचनाओ के अग्रेज पाठक अथवा मुरियल स्पार्क के पाठक परिचित हैं। स्पष्टतया कुछ अच्छे दृश्य भी हैं, जैसे सगीत गोष्ठी का दृश्य, जिसमे वाद्यवृन्द के सचालक का अत्यधिक प्रतिभासम्पन्न विवरण, गरिमा और उग्रता के वे स्वरूप प्रस्तुत करता है, जो समग्र दृष्टि से

पुस्तक के कथ्य से केवल काव्यमय दृष्टि से ही सम्बद्ध हैं। यह प्रक्रिया रूपक से अधिक आमूल परिवर्तन की है। जैसे वह दृश्य, जिसमे नृत्य करती हुई मैरीना को एक उपमा के माध्यम से एक लम्बी कतार मे खड़े पुरुषो की सेवा मे रत, वेश्या मे बदल दिया जाता है। जब मैरीना की इस घोषणा की कि उसने गर्भपात कराया है, सार रूप मे, एक परमाणु बम के विस्फोट से तुलना की जाती है तो लेखक एक बार फिर अपनी अतिशय काल्पनिक स्वतन्त्रता का दावा करते हुए, ग्लोवोव की प्रतिक्रिया का इन शब्दो मे विवरण प्रस्तुत करता है :

"एकमात्र जीवित व्यक्ति उठ खड़ा हुआ, अपने कपड़े झाड़े और एक चम्मच को अपनी अगुलियो से मरोड़ते हुए खड़ा-खड़ा रह गया—नि.सदेह धमाके से यह चम्मच उसकी आस्तीन मे किसी चम्मच आदि बेचने वाले की दुकान से उडकर खिडकी मे से होती हुई पहुच गई थी। उसने देखा कि इस चम्मच के अलावा उसके पास कुछ नही रह गया है---न तो उसका परिवार और न ही उसका घर। धीरे-धीरे जब उसे और स्मरण आया तो उसने अनुभव किया कि विस्फोट मे उसकी वह पुत्री मर गई है, जिसकी वह लम्बे अर्से से प्रतीक्षा कर रहा था। और—अपने विचारो मे पूरी तरह डूबे रह कर चम्मच को मरोड कर गांठ बाधते हुए—उसके मन मे यह भी विचार आया कि उसकी प्रतिष्ठा समाप्त हो गई है······

और वहा से प्रत्यावर्तन होता है, उस ठोस स्थिति मे प्रत्यावर्तन, जहा सरकारी वकील उसकी काम सवेदनाहीन पत्नी के सामने खडा है। यह रचना पास्तरनेक की रचना सेफ कण्डक्ट की कोटि और शैली की मालूम पड़ती है। लेकिन यह रचना संगतता की ठोस जटिलताओ के कारण, अपनी व्यजना की अतिशयोक्ति से मुक्त हो जाती है—निर्दिष्ट उड़ान के बाद एक यथार्थ आधार पर वापसी के द्वारा, अतिशयकाल्पनिक से मुक्त हो जाती है। नक्षत्रगृह, चिड़ियाघर अथवा नाई की दुकान के सब दृश्यो के माध्यम से व्यंग्यपूर्ण यथार्थवाद और स्थानांतरित होने वाले बिम्ब के ऐसे ही समन्वय को अभिव्यक्ति दी गई है। पूरी रचना मे इतिहास और गर्भपात के विषय एक दूसरे से समन्वित होते रहते है; जब समाजवादी यथार्थ-वाद द्वारा निषिद्ध दुखान्त आयाम पर्याप्त दिखाई नही पड़ता, तो लेखक बड़ी दृढता से इस बधन को तोडता है, उदाहरण के लिये प्राफिती सम्बन्धी अश मे, ताकि इसे, जैसाकि इन परिस्थितियो मे किया जाना चाहिये—जानबूझकर किये गये सचेतन और स्वच्छन्दतावादी कार्य से सम्पन्न कर सके।

इनका उद्देश्य जीवन के झूठे और एकांगी प्रदर्शन की, विस्मृत समग्रता, स्वयं अपनी विधा के नियमो से प्रतिबन्धित कल्पना की समृद्धि की शब्दावली मे आलोचना करना है। सिन्यावस्की इस सम्बन्ध मे असाधारण रूप से स्पष्ट कथन की क्षमता रखते है। उग्र बिम्ब विधान मे हम चतुर कालिन्स्की को आदर्शवादी ("नव-ट्राटस्कीवादी") युवको का मजाक उड़ाते हुए देखते है : मै समझता हू कि तुम एक सहृदय समाजवाद, गुलामी के एक मुक्त

स्वरूप को देखना चाहते हो "लेकिन अधिक भोंडे और अधिक भयकर शत्रु है। पुलिस के वाणी विहीन जासूस, वित्या और टोल्या, जो एक अत्यधिक काल्पनिक वेल्जियन साइकोस्कोप अर्थात् लोगो की मनोभावनाओ को पढ़ने वाले यत्र से लैस है, जहा कथा का वाचक प्रसंग के अनुरूप भोडेपन से आ धमकता है। "मैं भयभीत हू", वह कहता है। जैसाकि मुकदमे के समय मौजूद प्रत्येक व्यक्ति समझता होगा, इस उपन्यास का संकट का क्षण युवा सेर्योझा और जाच अधिकारी की बातचीत है।

इस अश मे सर्वत्र, सिन्यावस्की के कृतित्व की क्षमता पूरी तरह से प्रकट हुई है। लगभग दो पृष्ठो मे आतक की कल्पना, विरोध प्रदर्शन की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति, जिस रूप मे हुई है वह अन्य किसी उपन्यासकार के लिये सभव नही थी और यह बात उनकी प्रतिभा का परिचायक है। उनकी यह रचना एक विलक्षण कल्पना है। यह उस गद्य मे लिखी गई है, जिसमें पास्तरनेक की आरम्भिक रचनाओ के ह्रासोन्मुख रगो का प्रयोग हुआ है, लेकिन जो अत्यधिक गहरे प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता रखता है, जैसे वह दृश्य जिसमे सरकारी वकील के पुत्र से पूछताछ की जाती है। यह दृश्य अपने विरोध प्रदर्शन के कारण उतना महत्वपूर्ण नही है, जितना अपनी विराट कल्पना के कारण। यह, अपनी कल्पना के अनुशासित रूप मे उस प्रश्न पर विचार करता है, जिसके प्रति झूठे अभियोग पर दण्डित यहूदी डाक्टरो को, जो उपन्यास के पात्र हैं, उद्वेलित करता है. "वह सदा ईश्वर, इतिहास, साधन और साध्य की ही चर्चा करता था। यह बात बडी हसी की थी।" एक अत्यधिक कुशाग्र मध्य अध्याय है, जिसमे लेखक गुप्त रूप से, लेकिन पूरी तरह से यथार्थवादी दृष्टि से, एक सक्षिप्त विश्वकोश प्रस्तुत करता है और फिर इसे नौकरशाहो के एक भयंकर स्वप्न के रूप मे प्रस्तुत करता है। एक ऐसे ससार के रूप मे प्रस्तुत करता है, जो कार्टोशियन विभाजन से अभिशप्त है और अततः इस अभिशाप को समझ लिया गया है। सरकारी वकील, जो एक राजनीतिक नपुसक है, उस समय अपने पतित लक्ष्यो को प्राप्त कर लेता है, जब उसकी सुन्दर और निष्ठावान् स्वय को पत्नी बिना किसी प्रेम के, अपने पति के शत्रु के लम्बे घेरे के परिणाम-स्वरूप समर्पण कर देती है और उसी समय स्तालिन की मृत्यु हो जाती है। "दि ट्रायल विगिन्स" एक कवि का उपन्यास है, गठन मे सगीतमय और कसाव मे अद्वितीय। यह एक ऐतिहासिक विन्दु पर आ कर समाप्त होता है, स्तालिन का शव जनता के दर्शनो के लिये पूर्ण लज्जा और समारोह के साथ रखा हुआ है और इसका समानातर विम्ब है, कालिन्स्की का अन्ततः मैरीना के साथ विस्तर मे प्रवेश, लेकिन "अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में" अक्षम रहना। यहा आ कर, ऐसा लगता है कि सिन्यावस्की की अद्भुत कल्पनाशीलता की कोई सीमा नही है, उनकी कुछ विम्बो को प्रस्तुत करने की क्षमता अपार है; उदाहरण के लिये, अखबार बेचने वाले के खोखे पर वे देखते है कि समाचारपत्र "शोकमग्न हैं और उन स्त्रियो की तरह दिखाई पड़ते है, जो अपनी आखो का आवश्यकता से अधिक मेकअप करती हैं।"—एक अन्य चित्र है, संभवतः पास्तरनेक की किसी आरम्भिक रचना जैसा ही, लेकिन जो मेरीना के आगमन से

उचित सिद्ध हो जाता है। मैरीना एक सौंदर्य प्रसाधन बेचने वाली दुकान के शोकेस मे रखी हुई चीज़ों को देख कर कल्पना मे खोई हुई है। यह निष्कर्ष की अभिव्यक्ति का एक दूसरा तरीका है, और इसी प्रकार श्रम शिविर का उपसंहार भी।

"दि ट्रायल बिगिन्स" हमे आज भी प्रायः पूरे भरे श्रम शिविरो, और इतिहास के मिथ्याकरण के दर्शन कराता है, यह शासकवर्ग की स्वार्थपरता, बुद्धिवादियो के मोहभंग, पुराने क्रातिकारियो के आदर्शवाद की ओर सकेत करता है। यह सिन्यावस्की की कल्पना के इस सत्य की और आगे पुष्टि है कि वास्तविक मुकदमा केवल आशिक होना चाहिये था, केवल आशिक ही हो सकता था। यह इस बात की पुष्टि है कि सिद्धांत के प्रति वफादरी, कुटिलता और जालसाजी मे बदल जाती है। यदि उनका उपन्यास उग्र रूप से व्यग्यपूर्ण है, तो इसका यह कारण है कि उनका पहला कर्त्तव्य उस शक्ति का सामना करना है, जो उन्हे कुछ भी लिखने से रोक सकती है, लेकिन उनकी प्रतिभा, स्पष्टतया राजनीतिक न हो कर कवित्वमय है और यदि वे किसी और देश के निवासी होते तो सभवत उनके कार्य का स्वरूप भिन्न होता। उन शक्तियो के विरुद्ध क्रोधपूर्ण विरोध प्रकट करना स्वाभाविक है, जो ऐसी रचनाओं के लेखन और प्रकाशन की अनुमति नही देती। तत्कालीन सरकार को व्यापक बुराइयो का एक ऐसा मामूली लक्षण समझने के लिये, जिसका इलाज कविता कर सकती है, एक पास्तरनेक की आवश्यकता होती है।

अंग्रेजी और रूसी भाषा में प्रकाशित एब्राम टेरट्ज 'आन्द्रेय सिन्यावस्की' और निकोलई अर्ज़हक 'यूली डेनियल' की पुस्तकों की सूची

एब्राम टेरट्ज

आन सोशलिस्ट रियलिज़म

अनुवादक जार्ज डेनिस । प्रस्तावना—जेस्लाव माइलोज़ । न्यूयार्क पेंथियन बुक्स, १९६० ।

(यह रचना सबसे पहले सक्षिप्त रूप मे फ्रासीसी भाषा मे एसप्रित, पेरिस मे फरवरी १९५९ मे प्रकाशित हुई । इस समय इसके लेखक का कोई नाम नही दिया गया था और केवल आगे चल कर ही एब्राम टेरट्ज को इसका लेखक वताया गया । इस रचना और अगली तीन रचनाओ का मूल रूसी भाषा मे प्रकाशन फैंतास्ती चेसकी मीर एब्रामा टेरट्जा वाशिंगटन १९६७ मे हुआ ।)

दि ट्रायल बिगिन्स

अनुवादक—मैक्सहेवर्ड, लन्दन : कालिन्ज एण्ड हार्वेल प्रैस, १९६० । न्यूयार्क · पेंथियन बुक्स, १९६० (सुद इद्योत । पेरिस, १९६० ।)

दि आइसिकल एण्ड अदर स्टोरीज़

अनुवादक—मैक्सहेवर्ड और रोनाल्ड हिगले । लन्दन कालिन्ज और हावर्ड प्रैस, १९६३, न्यूयार्क . पेंथियन बुक्स, फैंटास्टिक स्टोरीज़ शीर्षक से, १९६३ मे प्रकाशित । (फैंतास्तीचेस्कीये पोवेस्ती । पेरिस, १९६१ ।)

दि मेकपीस एक्सपेरिमेंट

अनुवाद और प्रस्तावना—मान्या हरारी । लन्दन · कोलिन्ज एण्ड हार्वेल प्रैस, १९६५ । न्यूयार्क : पेंथियन बुक्स, १९६५ ।

(ल्यूबीमोव । बोरिस फिलीपोव की प्रस्तावना सहित, वाशिंगटन, १९६४ ।)

थॉट अनम्प्रेयर (अनगार्डडथाट्स)

अनुवादक-एन्ड्रू फील्ड और रावर्ट जुल्किन। दि न्यू लीडर, न्यूयार्क, १६ जुलाई १६६५।

(माइसली व्रासप्लोख। एन्ड्रू फील्ड की प्रस्तावना सहित, न्यूयार्क १६६६।)

"पखेनत्ज"

एन्काउटर लन्दन, मार्च १६६६।

(इन फैंतास्चीचेस की मीर एन्नामा टरट्जा।)

"आन ईवतुशेंको"

एन्काउटर, लन्दन, अप्रैल १६६७।

निकोलाई अर्जहक

दिस इज मास्को स्पीकिग

डिसोनैंट वॉयसेज इज सोवियत लिटेरेचर मे प्रकाशित। सम्पादन—पेट्रीशिया ब्लेक और मैक्स हेवर्ड अनुवाद-जान रिचर्डसन। न्यूयार्क हार्पर कोलोफ़ोन बुक्स, हार्पर एण्ड रो, १६६४, लन्दन; एलिम एण्ड अनविन, १६६४। पेथियन बुक्स मे १६६२ मे सबसे पहले प्रकाशन। (गोवोरित मोस्कवा। वोरिस फिलितोव की प्रस्तावना सहित, वाशिगटन, १६६३।)

"हैंड्स"

डिसेन्ट, जुलाई-अगस्त, १६६६।

"हैंड्स" और "दि मैन फ्राम मिनाप"

रुकी : चेलोवेक इज मिनापा। वोरिस फिलिपोव की प्रस्तावना सहित, वाशिगटन, १६६३।

"अटोनमेट"

इस्कुप्लेनी। वोरिस फिलिपोव की प्रस्तावना सहित, वाशिगटन, १६६४।

सोवियत दूतावास में

"अलेक्जेंडर काजनाचीव द्वारा लिखित एव श्री महेद्र भारद्वाज द्वारा हिन्दी मे अनुवादित 'सोवियत दूतावास मे' यह पुस्तक अपने २७९ पृष्ठो मे रूस मे चलनेवाली साम्यवादी कार्य पद्धति के ऐसे अनेकानेक रहस्यो का भडाफोड कर देती है कि प्रजातत्र मे विश्वास करने वाला ससार का कोई भी नागरिक उसे पढकर दिग्मूढ हो जावेगा।

राजनयिक श्री काजनाचीव बर्मा मे रूसी दूतावास मे एक सामान्य प्रतिनिधि के रूप मे नियुक्त किये गये थे। बर्मा जाने पर उन्हे दिन प्रति-दिन जो अनुभव आने लगे उससे उनके मस्तिष्क में एक वैचारिक क्रांति का उदय हुआ। साथ ही सभी बातो को रूस की साम्यवादी कार्यपद्धति को तुलनात्मक ढग से सोचते हुए उन्होने अपने जीवन मे कुछ निर्णय कायम किये और अन्तत यह भी निर्णय लिया कि रूसी दूतावास या रूस मे रहने वाले रूसी व्यक्ति जिस प्रकार की मानसिक गुलामी मे अपना जीवन व्यतीत करते है, उस गुलामी की शृखलाओ को तोडकर संसार मे उपस्थित एवं जनमान्य मानवता के आधार पर सुनिश्चित कार्यपद्धति को अपने जीवन मे उतारा जाय। उन्होने रूसी दूतावास से एक प्रकार से पलायन ही कर अमेरिका को प्रस्थान किया और वहा जाने के बाद अपने अनुभवो को शब्दसृष्टि मे गूथकर विश्व समाज के लिए एक उपन्यास के रूप मे ऐसा साहित्य निर्माण कर दिया कि जिसे पढकर हर कोई उन्हे धन्यवाद दिये बगैर नही रहेगा।

(दैनिक, "युग-धर्म", नागपुर)

"२० अध्यायो मे लिखी गई इस पुस्तक मे औपन्यासिक ढग से उन तथ्यो का उद्‌घाटन किया गया है, जो बर्मा मे अपनी राजनयिक नियुक्ति के बाद लेखक को प्राप्त हुए।"

(दैनिक, "नवभारत टाइम्स" बम्बई)

मूल्य : एक रुपया

राजनीतिक शब्दावली

सम्पादक :

मारिस क्रैन्सटन

हिन्दी सम्पादन ·

महेन्द्र भारद्वाज

"जीवन मे राजनीति का महत्व दिनो दिन बढता जा रहा है । जनतान्त्रिक युग मे यह स्वाभाविक ही है । न केवल ससद, विधानसभाए अपितु क्लवो, मित्रों के गुटो मे, बाजारों मे चलने वाली बहसों में प्रचलित राजनीतिक शब्दों का प्रयोग सहसा चलता रहता है । आत्मनिर्णय, उपनिवेशवाद मार्क्सवाद, प्रभुसत्ता, कई शब्द हैं, जिनके हर व्यक्ति अपने-अपने अर्थ लगाता है । यह नितांत जरूरी है कि न केवल इन शब्दों का अर्थ हम समझें, इनकी सरल, सीमित परिभाषा भी हमें ज्ञात होनी चाहिये । इस दृष्टि से राजनीति शास्त्र के विद्वान खासकर लंदन आक्सफोर्ड एडिनवरा के विश्व-विद्यालयीन प्राध्यापकों द्वारा दिये कार्य और परिभाषाओं से सयुक्त यह छोटी सी किताव न केवल छात्रों अपितु साधारण व्यक्तियों के लिये भी बहुत उपयुक्त और सग्रहणीय है ।"

(दैनिक, "नई दुनिया", इन्दौर)

अन्त में शब्दों की हिन्दी-अंग्रेजी तालिका भी दे दी गई है ।

मूल्य : एक रुपया

पश्चिम के राजनीतिक दार्शनिक

मारिस क्रैंस्टन द्वारा सम्पादित ग्यारह निबन्ध

★ यह पुस्तक पश्चिम के ग्यारह प्रमुख राजनीतिक दार्शनिकों, अफलातून (प्लेटो), अरस्तू, ऐक्वाइनैस, माक्यावेली, हाब्ज, लाक, रूसो, वर्क, हेगल, मार्क्स तथा मिल, के विषय मे किए गए सक्षिप्त विचार-विमर्शो की एक माला है।

★ इसका प्रत्येक अध्याय भिन्न लेखक का लिखा हुआ है और सभी अध्यायों के लेखक जाने माने अधिकारी विद्वान है।

★ पुस्तक सामान्य पाठक व एम० ए० के छात्रो के लिए बहुत लाभदायक है और बहुत ही रोचक ढग से लिखी गई है।

मूल्य : एक रुपया

हमारे कुछ अन्य प्रकाशन